॥ श्रीजिनाय नमः ॥

(श्रीसुधर्मास्वामीए रचेलुं अने श्रीश्रुतकेवलीभद्रबाहुरचित निर्युक्तिसहित)

॥ आचाराङ्गसूत्रम् ॥ भाग बीजो

(मूळ अने शीलाङ्काचार्यें रचेली टीकाना भाषांतरसहित)

जामनगरनिवासी स्व० पण्डित हंसराजभाइ शामजीना स्मरणार्थे

छपावी प्रसिद्ध करनार—पंडित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

प्रति २००

पडतर किंमत रु. २-८-०

संवत १९८९

श्रीजैनभास्करोदय प्रिन्टिंग प्रेसमां छाप्युं जामनगर.

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ श्रीआचारांगसूत्रम् ॥

(मूळ अने शीलांकाचार्यें रचेली टीकानुं भाषान्तर)

(भाग बीजो)

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगर)

नमः श्रीवर्द्धमानाय, वर्द्धमानाय पर्ययैः । उक्ताचार प्रपञ्चाय, निष्प्रपञ्चायतायिने ॥ १ ॥

श्री वर्धमान स्वामीने नमस्कार थाओ जेओ पर्याय (आत्माना उत्तम गुणो) वडे निरंतर वधेला छे. तथा आचारनो विस्तार जेमणे कह्यो छे तथा संसारी प्रपंच (रागद्वेष) थी सर्वथा मुक्त छे अने सर्व जीवोना रक्षक छे.

शस्त्रपरिज्ञाविवरणमतिगहनमितीव किल वृत्तं पूज्यैः । श्रीगन्धहस्तिमिश्रैर्विवृणोमि ततोऽहमवशिष्टम् ॥ २ ॥

शस्त्रपरिज्ञा नामनुं पहेलुं अध्ययन जे घणुं गंभीर छे, तेनुं विवरण गंधहस्तिनामना श्रेष्ठ आचार्ये कहेलुं छे तेमांथी हुं कंइकविशेष खुलासो करुं छुं. ते पहेलुं अध्ययन पूर्वे कही गया. हवे बीजुं अध्ययन कहेवाय छे. तेनो आवीरीतनो संबंध छे.

आ संसारमां मिथ्यात्व-उपशम-क्षय क्षयउपशम ए त्रणमांथी कोइपण सम्यक्त्व प्राप्त थयेला ज्ञानी साधु पुरुषने अत्यन्त एकान्त बाधा रहित परमानंदरूप स्वतत्त्वनुं सुख जे आवरण रहित ज्ञान दर्शन (केवळज्ञान केवळदर्शन) प्राप्त थयेलाने मोक्षनुंज कारण छे. अने आश्रवनो निरोध अने निर्जरानी प्राप्ति छे. तथा मूळ-उत्तर एवा बे भिन्न गुणो छे एवुं चारित्र छे अने बीजा बधा व्रतोनी वृत्ति (निर्वाह) नो कल्प उत्पन्न करेल छे, तथा निर्विघ्ने बधा प्राणीने संघट्टन परिताप अपद्रावण विगेरेथी दुःख न देवारूप जे सर्वोत्तम चारित्र छे. ते चारित्रनी सिद्धि माटे आ अध्ययन छे.

मरणना अभावना प्रसंगथी पांचभूत रहित (चेतनरुप) आत्मानो धर्म केवळज्ञाननी प्राप्ति छे, जेथी एवा चारित्रनी तथा आत्मानी तथा आत्माना गुणज्ञाननी तथा मोक्षनी प्राप्ति माटे आ सूत्रनुं अध्ययन छे ते बताव्युं छे–

" उपरना वाक्यथी ज्ञान प्राप्ति " तेथी बृहस्पतिना नास्तिक मतनुं खंडन कर्युं, कारण के ते पांच भूत माने छे ते भूतो जड छे अने आत्मा चेतन छे. तेनो गुणज्ञान छे ते बताव्युं छे. आ प्रमाणे सामान्यथी जीवनुं अस्तित्व स्वीकारी विशेषपणाथी जीवनो मोक्ष बताववाथी बौद्ध विगेरे मतनुं खंडन थयुं. कारण के जीवत्रणे काळमां होय तो तेना मोक्षनो संभव थाय.

एकेन्द्रिय पृथ्वी, पाणी, अग्नि, पवन, वनस्पति विगेरे भेदवाळा जीवोने बतावी अनुक्रमे समान जातीयवाला पत्थरनी शीला

विगेरेनी उत्पत्ति हरस मसा जे मांसना अंकुरा छे, तेनी माफक पृथ्वीकायनी उत्पत्ति छे.

अविकारवाळी (पडतर) जमीन खोदवाथी देडकानी माफक पाणीनी उत्पत्ति छे, तथा विशेष उत्तम आहारथी वधवुं; अने विपरीत आहारथी हानि थवी. तेज प्रमाणे अर्भक (बाळक) ना शरीरनी माफक अग्निनी तुलना छे.

बीजानो प्रेरेलो अटक्या विना अनियत (एक सरखी नहि) एवी तिरछी गतिवाळो गाय घोडानी माफक पवन बताव्यो अळता (स्त्रीओना शणगारमां वपरातो लाल रंग) थी, तथा झांझरथी शणगारेली जुवान स्त्रीनी लताथी विकार पामता कामीपुरुषनी माफक वनस्पति खीले छे. ए प्रमाणे अनेक प्रयोगो छे, तथा ऊंचा अभिप्रायथी माथुं उघाडीने (खुलासाथी) सूक्ष्मबादर–एकेन्द्रिय बे त्रण चार इन्द्रियवाळा, तथा पांच इन्द्रियवाळा संज्ञी तथा असंज्ञी तथा पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता विगेरे जीवोना भेदो बतावी; तथा तेमना शस्त्र स्व अने परकायवाळां बतावी तेना वधमां बंध, अने कर्मथी छुटवा विरति बतावी, तेनेज चारित्र बताव्युं; एटले जीवनी रक्षा करवी; तेज चारित्र छे, अने जीवरक्षा करनारज चरित्रने अनुभवे छे, तेवुं पहेला अध्ययनमां बताव्युं छे अने आ बीजा अध्ययनमां बताव्युं छे केः—

शस्त्रपरिज्ञा नामना अध्ययनने सूत्रअर्थथी भणेला साधुने अध्ययनमां बतावेला पृथ्वीकाय विगेरे जीवोना भेदने मानतो तेनी रक्षाना परिणामवाळो सर्व उपाधिथी शुद्ध, अने तेना उत्तम गुणथी रंजीत थइ; गुरुए वडीदीक्षारुप पंचमहाव्रत जेने अर्पण कर्या छे तेवा साधुने जेम जेम रागादिकषायवाळा लोक, अथवा शब्दादि विषयलोक (रागद्वेषमां, अथवा इन्द्रियोना विषयमां रंजीत थयेला

जीवो) नो विजय थायछे. अर्थात् जे साधु रागद्वेष, तथा इन्द्रियोनी रमणातामां रागी न थाय. तेणे लोक जीत्यो कहेवाय; ते आ अध्ययनमां वताव्युं छे.

टीकाकार कहे छे के:—जेवुं हुं कहुं छुं, तेज प्रमाणे नियुक्तिकारे पण अध्ययननो अर्थाधिकार शस्त्रपरिज्ञामां पूर्वे कहेलो छे, ते सूत्र आ छे.

"लोओ जह बज्झइ जह य तं विजाहियव्वं"

आ पदवडे सूचव्युं छे के, "लोक (संसारी–जीवो) जेम बंधाय छे, तेम साधुए न बंधातां ते बधानां कारणने छोडवां जोइए;" तेथी पूर्वे पहेला अध्ययनमां बंध वताव्यो; तेम आ बीजा अध्ययनमां बंधने छोडावानुं सूचव्युं; एटले शस्त्रपरिज्ञामां बंध, अने लोकविजयमां बंधथी छुटवानुं वताव्युं छे ते संबंध छे.

तेना चार अनुयोगद्वार छे. तेमां सूत्र अने अर्थनुं कहेवुं, ते अनुयोग छे, तेमां चार द्वार (उपायो, व्याख्यांग) कहेवां ते उपक्रम, निक्षेप, अनुगम, नय छे. उपक्रम बे प्रकारे छे. शास्त्र संबंधी, शास्त्रीय अने लोक संबंधी ते लौकिक छे.

निक्षेपा त्रण प्रकारना छे. ओघ, नाम अने सूत्रालापक निष्पन्ननिक्षेप एम त्रण भेद छे. अनुगमसूत्र, अने निर्युक्ति एम बे प्रकारे छे, नयोनैगम विगेरे छे.

शास्त्रीय उपक्रम,

आ उपक्रममां अर्थ अधिकार बे प्रकारे छे. अध्ययन अने उद्देशानो अर्थ अधिकार छे, तेमां अध्ययननो अर्थ अधिकारशस्त्र

परिज्ञामां में कह्यो छे, अने दरेक उद्देशानो अधिकार निर्युक्तिकार पोते कहे छे.

सयणे य अद्दढत्तं, बीयगंमि माणो अ अत्थसारो अ। भोगेसु लोगनिस्साइ, लोगे अममिज्जया चेव ॥१६३॥

पहेला उद्देशाना अर्थ अधिकार (विषय) मां मातापिता विगेरे संसारी–सगामां साधुए प्रेम न करवो. (न करवो, ए मूळ सूत्रमां नथी; ते उपरथी लीधुं छे,) ते प्रमाणे आगळ सूत्र आवशे के, मारी माता, मारा पिता इत्यादि साधुने न जोइए.

बीजा उद्देशामां संयममां अद्दढपणुं (ढीलापणुं) न करवुं; पण विषय अने कषाय विगेरेमां साधुए अद्दढपणुं करवुं; अने तेज सूत्र कहे छे के, अरतिमां बुद्धिमान पुरुष आसक्ति न करे.

त्रीजा उद्देशामां मान ए अर्थसार नथी; कारणके, जाति विगेरेथी उत्तम साधुए कर्मवशथी संसारनी विचित्रता जाणीने बधा मदनां ठेकाणामां पण मान न करवुं. कह्युं छे केः—कोण गोत्रनो वाद करनारा? कोण माननो वाद करनारा छे?

चोथा उद्देशामां कहे छे के भोगमां प्रेम न धारवो कारण के सूत्रमां कहेशे, स्त्रीओथी लोकमां दुःख पामशे. अने तेनो मोह छोडे तो तेथी तेमां भोगीओने भविष्यमां थतां दुःखो बतावशे.

पांचमां उद्देशामां साधुए पोतानां सगां धन मान अने भोग त्याग्या छतां संयमधारक साधुए शरीरनी प्रतिपालना माटे गृहस्थोए पोताना माटे करेला आरंभथी बनेली वस्तु लेवानी निश्राए विचरवुं. तेज सूत्र कहेशे के समुत्थित अणगार होय विगेरे ज्यां सुधी निर्वाह करे विगेरे छे. छट्ठा उद्देशामां लोकनिश्रामां विचरता साधुए ते लोको साथे पहेलां के पछीनो परिचय थयो होय

जीवो) नो विजय थायछे. अर्थात् जे साधु रागद्वेष, तथा इन्द्रियोनी रमणातामां रागी न थाय. तेणे लोक जीत्यो कहेवाय; ते आ अध्ययनमां बताव्युं छे.

टीकाकार कहे छे केः—जेवुं हुं कहुं छुं, तेज प्रमाणे नियुक्तिकारे पण अध्ययननो अर्थाधिकार शस्त्रपरिज्ञामां पूर्वे कहेलो छे, ते सूत्र आ छे.

"लोओ जह बज्झइ जह य तं विजाहियव्वं"

आ पदवडे सूचव्युं छे के, "लोक (संसारी–जीवो) जेम बंधाय छे, तेम साधुए न बंधातां ते बधानां कारणने छोडवां जोइए;" तेथी पूर्वे पहेला अध्ययनमां बंध बताव्यो; तेम आ बीजा अध्ययनमां बंधने छोडावानुं सूचव्युं; एटले शस्त्रपरिज्ञामां बंध, अने लोकविजयमां बंधथी छुटवानुं बताव्युं छे ते संबंध छे.

तेना चार अनुयोगद्वार छे. तेमां सूत्र अने अर्थनुं कहेवुं, ते अनुयोग छे, तेमां चार द्वार (उपायो, व्याख्यांग) कहेवां ते उपक्रम, निक्षेप, अनुगम, नय छे. उपक्रम बे प्रकारे छे. शास्त्र संबंधी, शास्त्रीय अने लोक संबंधी ते लौकिक छे.

निक्षेपा त्रण प्रकारना छे. ओघ, नाम अने सूत्रालापक निष्पन्ननिक्षेप एम त्रण भेद छे. अनुगमसूत्र, अने निर्युक्ति एम बे प्रकारे छे, नयोनैगम विगेरे छे.

शास्त्रीय उपक्रम,

आ उपक्रममां अर्थ अधिकार बे प्रकारे छे. अध्ययन अने उद्देशानो अर्थ अधिकार छे, तेमां अध्ययननो अर्थ अधिकारशस्त्र

परिज्ञामां में कह्यो छे, अने दरेक उद्देशानो अधिकार निर्युक्तिकार पोते कहे छे.

सयणे य अदढत्तं, बीयगंमि माणो अ अत्थसारो अ। भोगेसु लोगनिस्साइ, लोगे अममिज्जया चेव ॥१६३॥

पहेला उद्देशाना अर्थ अधिकार (विषय) मां मातापिता विगेरे संसारी–सगामां साधुए प्रेम न करवो. (न करवो, ए मूळ सूत्रमां नथी; ते उपरथी लीधुं छे,) ते प्रमाणे आगळ सूत्र आवशे के, मारी माता, मारा पिता इत्यादि साधुने न जोइए.

बीजा उद्देशामां संयममां अदृढपणुं (ढीलापणुं) न करवुं; पण विषय अने कषाय विगेरेमां साधुए अदृढपणुं करवुं; अने तेज सूत्र कहे छे के, अरतिमां बुद्धिमान पुरुष आसक्ति न करे.

त्रीजा उद्देशामां मान ए अर्थसार नथी; कारणके, जाति विगेरेथी उत्तम साधुए कर्मवशथी संसारनी विचित्रता जाणीने बधा मदनां ठेकाणामां पण मान न करवुं. कह्यु छे केः—कोण गोत्रनो वाद करनारा? कोण माननो वाद करनारा छे ?

चोथा उद्देशामां कहे छे के भोगमां प्रेम न धारवो कारण के सूत्रमां कहेशे, स्त्रीओथी लोकमां दुःख पामशे. अने तेनो मोह छोडे तो तेथी तेमां भोगीओने भविष्यमां थतां दुःखो बतावशे.

पांचमां उद्देशामां साधुए पोतानां सगां धन मान अने भोग त्याग्या छतां संयमधारक साधुए शरीरनी प्रतिपालना माटे गृहस्थोए पोताना माटे करेला आरंभथी बनेली वस्तु लेवानी निश्राए विचरवुं. तेज सूत्र कहेशे के समुस्थित अणगार होय विगेरे ज्यां सुधी निर्वाह करे विगेरे छे. छट्टा उद्देशामां लोकनिश्रामां विचरता साधुए ते लोको साथे पहेलां के पछीनो परिचय थयो होय

अथवा परीचय न थयो होय तो पण ममत्व न करवो एटले कमळ पाणीमां उत्पन्न थया छतां निर्लेप रहे छे, तेम साधुए ते गृहस्थोथी गोचरी विगेरेनो संबंध छतां पण तेनाथी लेपवाळा थवुं नहीं. ते सूत्र कहेशे आ मारो छे ते मारापणुं मूके तेज साधु छे विगेरे तात्पर्यवाळुं सूत्र आगळ कहेशे.

आ अध्ययननुं नाम लोक विजय छे.

हवे लोक अने विजय एवा बे पदना निक्षेपा करवा जोइए, तेमां सूत्रा आलापक निष्पन्न निक्षेपमां निक्षेपने योग्य जे सूत्रपदो छे तेमना निक्षेपा करवा, अने सूत्रपदमां बनावेल मूळशब्द (लोक) नो अर्थ कषाय नामनो कह्यो छे तेथी लोकने बदले कषायना निक्षेपा कहेवा जोइए ते प्रमाणे नामनिष्पन्ननिक्षेपामां बतावेला सामर्थ्यथी आवेला निक्षेपामां जे बताववानुं छे ते निर्युक्तिकार गाथाने एकठी करीने कहे छे—

लोगस्स य विजयस्स य गुणस्स मूलस्स तह य ठाणस्स। निक्खेवो कायव्वो जंमूलागं च संसारो ॥ १६४ ॥

लोकोनो विजयनो, गुणनो, मूळनो, स्थाननो, ए प्रमाणे पांच शब्दनो निक्षेपो करवो जोइए. अने जे मूळ छे ते संसार छे तेथी तेनो निक्षेपो करवो जोइए. ते संसारनुं मूळ कषाय छे. कारण के नरकना जीवो तिर्यंचना जीवो तथा मनुष्य अने देवता ए चार गतिरूप संसार वृक्षनुंज स्कंध (थड) छे, तथा गर्भ निषेक कलल अर्बुद (वीर्य अने लोहीथी बंधातुं शरीर) मांसनी पेशी विगेरे तथा जन्म जरा (बुढापो) अने मरण आ संसारझाडनी शाखा (डाळीओ) छे, अने दारिद्र विगेरे अनेक दुःखोथी उत्पन्न थयेला

पांदडांनो समूह छे. वळी वहालांनो वियोग, अप्रियनो संबंध, पैसानो नाश, अनेक व्याधि विगेरे रूप सेंकडो फुलोनो समुह छे, तथा शरीर अने मन संबंधी अत्यन्त पीडाजनक दुःखनो समूहरूप–फळ छे. आ बधुं संसाररूप–झाडनुं वर्णन कर्युं; ते संसार–झाडनुं मूळ कषायो छे. कारणके, कष एटले संसार. अने आय एटले लाभ. जेनाथी संसारनो लाभ थाय छे, ते कषाय छे. आ प्रमाणे ज्यां ज्यां नामनिष्पन्ननिक्षेपामां तथा सूत्र आलापक निक्षेपामां जे जे पदनो संभव थशे (जरुर पडशे) त्यां त्यां ते ते पदो निर्युक्तिकार साचा मित्र बनीने विवेकथी कहेशे.

लोगोत्ति य विजअत्ति य अज्झयणे लक्खणं तु निप्फण्णं । गुणमूलं ठाणंतिय, सूत्तालावे य निप्फण्णं १६५

लोकविजय, अध्ययन, लक्षण, निष्पन्न, गुण, मूळ, स्थान, तथा सूत्रालापकमां निष्पन्न विगेरे टुंकमां जे कह्युं; तेनुं विवेचन करे छे; उद्देश प्रमाणे निर्देशनो न्यायछे, ते प्रमाणे लोक, अने विजयनो निक्षेपो कहे छे.

लोगस्स य निक्खेवो अट्ठविहो छव्विहो उ विजयस्स । भावे कसायलोगो अहिगारो तस्स विजएणं ॥१६६॥

लोकनो निक्षेपो आठ प्रकारे तथा विजयनो छ प्रकारे छे. भावमां कषाय लोकनो अधिकार छे, अने तेनो विजय करवानो छे ते कहे छे.

जे देखाय ते लोक सूत्र प्रमाणे लुक् धातुनो लोक शब्द थयो छे.

लोकनुं वर्णन.

धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायथी व्याप्त थयेलुं तमाम द्रव्यना आधारभूत, वैशाखस्थान एटले, कमरनी बे बाजुए बन्ने हाथ दइने पग पहोळा करी उभा रहेला पुरुषनी माफक जे आकाश, खंड रोकायो छे, ते लेवो; अथवा धर्म, अधर्म, आकाश, जीव, पुद्गल ए

पांच अस्तिकाय. (प्रदेशनो समूह) छे, ते लेवो. ते लोकनो आठ प्रकारे निक्षेपो छे. नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भव, भाव, पर्यव. एम आठ भेद छे, अने विजय, अभिभव पराभव, पराजय एम पर्यायो छे, तेनो निक्षेपो छ प्रकारे छे. अहिंया लोकना आठ प्रकारना निक्षेपा छतां भाव निक्षेपामां भाव लोकनो अधिकार छे. ते छ प्रकारनो औदायिक भाव विगेरे छे. ते औदायिक भाववाळा कषाय लोकवडे अधिकारछे; अने ते संसारनुं मूळ छे.

शिष्यनो प्रश्न—आ बधुं शा माटे कह्युं?

उत्तर—तेनो एटले औदयिक भाव कषाय लोकनो पराजय करवो. (क्रोध विगेरे थाय तो तेने दाबी देवा) लोकना निक्षेपा पछी विजयना छ प्रकारे निक्षेपा छे ते कहे छे—

लोगो भणिओ दव्वं खित्तं कालो अ भावविजओ अ । भव लोग भावविजओ पगयं जह वज्झई लोगो ॥

लोक द्रव्य क्षेत्र, काळ, अने भाव, विगेरेनुं वर्णन करे छे.

चतुर्विंशति स्तव—(चोवीस भगवाननुं स्तवन जेनुं बीजुं नाम लोगस्स) छे, ते बीजो आवश्यक छे. तेनुं आवश्यक सूत्रनी निर्युक्तिमां विस्तारथी वर्णन करेलुं छे.

शिष्यनी शंका—आ वाचानी कइ जातनी युक्ति छे? के लोकोनुं त्यां वर्णन करेलुं छे. अने अहीं तेनो शुं संबंध छे?

उत्तर—अहीआं अपूर्वकरण (आठमुं गुणस्थान) थी अनुक्रमे चढी क्षपकश्रेणि (केवणज्ञान पामवानुं ध्यान जेमां मोहनो सर्वथा

नाश थाय छे.) ए चढनारा पुरुष जेम अग्नि लाकडांने बाळे तेम पोते कर्मरूपी लाकडांने ध्यानरूपी अग्निवडे बाळी मूक्याथी आवरणरूप कर्म नाश थतां निर्मळ(केवळ) ज्ञान प्राप्त थतां देवताओनुं आसन कंपतां तेओना आववाथी केवळ ज्ञानी पूज्य पुरुष तरीके पूजाय छे. अने तेज पुरुष ज्ञान वडे सर्व जीवोनुं हीत थवा उपदेश आपे ते तीर्थ छे. तेने करवाथी तीर्थंकर नामकर्म उदयमां आवे; अने तेमने सामान्य लोकथी विशेष एवा चोत्रीस अतिशयो प्राप्त थया एवा अंतिम तीर्थंकर वर्धमानस्वामीए (लगभग पचीस्सो वर्ष उपर) त्यागवा योग्य अने गृहण करवा योग्य पदार्थनो खुलासो करवा देव अने मनुष्यनी सभामां आचारांगसूत्रनो विषय कह्यो. अने ते सांभळी तेमना महान् बुद्धिवाला गणधरो. जेओ अचिंत्य शक्तिना प्रभाववाळा हता. तेवा गौतम इंद्रभूति विगेरेए ते प्रवचन (महान् उपदेशना वाक्यनो समूह) ने सर्वे जीवोना उपकारमाटे तेनी सूत्र रचना करी तेनुं नाम आचारांग तरीके प्रसिद्ध थयुं. अने आवश्यकनी अंदर रहेलुं चतुर्विंशति स्तवनी निर्युक्ति तो त्यारपछी हमणांना काळमां थयेला भद्रबाहुस्वामीए कह्युं छे तेथी ते अयुक्त छे कारण के पूर्व काळमां बनेलुं आचारांगनुं व्याख्यान करतां पाछळथी थएल चतुर्विंशति स्तवनो अधिकार जोवानुं अथवा कहेवानुं क्यांथी आवे! आवुं कोइ कोमळ बुद्धिवाळा शिष्यने शंकानुं स्थान थाय तेनुं आचार्य समाधान करे छे के आमां कंइ दोष नथी कारण के आ निर्युक्तिनो विषय छे. अने भद्रबाहुस्वामीए प्रथम आवश्यकनी निर्युक्ति करी, त्यारपछी आचारांगनी निर्युक्ति करी तेथी तेम थाय. तेमज कह्युं छे सूत्र—

"आवस्सयस्स दसकालियस्य तह उत्तरज्झमायारे"

आवश्यक–दश वैकालिक–उत्तराध्ययन तथा आचारांगनी निर्युक्ति छे विगेरे जाणवुं—

विजयना निक्षेपा नामस्थापना छोडीने द्रव्यमां ज्ञ शरीर विगेरे सिवाय व्यतिरिक्तमां द्रव्यवडे द्रव्यथी अथवा द्रव्यमां विजय ते छे, के कडवो तीखो कसाएलो विगेरे औषधथी सळेखम विगेरे रोगनो विजय थाय, अथवा राजा के मल्लनो विजय थाय ते द्रव्य विजय छे. क्षेत्र विजय ते छ खंडने भरत विगेरे चक्रवर्त्तिओ जीते छे. अथवा जे क्षेत्रमां विजय थाय ते क्षेत्र विजय छे काळवडे जे विजय थाय छे, ते जेमके भरते साठ हजार वर्षे आखो भरतखंड जीत्यो ते काळ विजय छे कारण के तेमां काळनुं प्रधानपणुं छे. अथवा भृतक (भरवाना) काममां एणे मास जीत्यो अथवा जे काळमां विजय थयो ते पण काळ विजय छे—

भाव विजय ते औदयिक विगेरे एक भावनुं बीजा भावमां बदलाववा वडे एटले औपशमिक विगेरेथी थता विजयनुं स्वरूप बतावीने चालु वातमां जे उपयोगी छे ते कहे छे.

अहीं भाव लोक मूळसूत्रमां लीधेल छे तेथी भाव लोकज कह्यो छे (छंदमां मात्रा वधवाथी भावने बदले भव लीधो छे) (ते प्रमाणे कह्युं छे. निर्युक्ति गाथा १६६ ना छेल्ला बे पदमां कह्युं छे के भावमां कषाय लोकनो अधिकार छे विगेरे जाणवुं) ते औदयिकभाव कषाय लोकनो औपशमिक विगेरे भाव लोक वडे विजय करवो (कषायो मोहनीय कर्मना उदयथी छे, तेने शांत करवा–क्षय करवा ते कहे छे.) चालु विषयमां तेज जाणवानुं छे टीकाकार तेज कहे छे. "आठ प्रकारनो लोक अने छ प्रकारनो विजय ए बन्नेनुं स्वरूप पूर्वे कह्युं. ते बन्नेमां भाव लोक अने भाव विजयथीज अहीआं प्रयोजन छे." आठ प्रकारना कर्म वडे लोक

(जीवोनो समूह) बंधाय छे. अने धर्म करवाथी मूकाय छे. ते पण आ अध्ययनमां बताव्युं छे. ते भाव लोक विजय वडेज शुं फळ छे ते बतावे छे.

विजिओ कसायलोगो सेयं खु तओ नयत्तिउं होइ । कामनियत्तमई खलु संसारा मुच्चई खिप्पं ॥ १६८ ॥

जेणे कषाय लोकनो विजय कर्यो, ते संसारथी जल्दी मुकाय छे. तेथी कषायथी दूर रहेवुं. तेज कल्याणकारी छे. (खु अव्यय "ज" ना अर्थमांज छे.)

प्रश्न—कषाय लोकथीज दूर रह्यो. तेज संसारथी मूकाय छे के बीजा कोइ पापना हेतुओ छे. के जे दूर करवाथी मोक्ष मळे?

उत्तर—काम एटले संसारी विषयनी जे खोटी बुद्धि छे ते पण निवारण करवाथीज मोक्ष मळे छे?

नाम निष्पन्न निक्षेपो पुरो थयो. हवे सूत्र आलापक निक्षेपाने कहे छे तेने माटे सूत्र जोइए ते सूत्र निर्दोष उच्चारवुं जोइए ते आ छे मूळ सूत्र—

"जे गुणे से मुलट्ठाणे जे मूलट्ठाणे से गुणे"

जे गुण छे ते मूळ स्थान छे अने जे मूळ स्थान छे ते गुण छे. एना निक्षेप निर्युक्ति अनुगम वडे दरेक पदे निक्षेपो कराय छे. तेमां गुणनो पंदर भेदे निक्षेपो छे. ते कहे छे.

दव्वे खित्ते काले फल पज्जव गणण करण अब्भासे । गुणअगुणे अगुणगुणे भव सील गुणे य भावगुणे ॥१६९॥

नाम गुण, स्थापना गुण, द्रव्य गुण, क्षेत्र गुण काळ गुण फळ गुण, पर्यव गुण, गणना गुण, करण गुण, अभ्यास गुण, गुण—अगुण, अगुण गुण, भव गुण, शील गुण, भाव गुण एम पंदर भेद थया ते टुंकांणमां कह्युं. हवे सूत्र अनुगम वडे सूत्र उच्चारतां निक्षेप निर्युक्तिना अनुगम वडे तेना अवयवनो निक्षेपो करतां उपोद्घात निर्युक्तिनो अवसर छे-ते उद्देशा विगेरेना द्वारनी बे गाथा वडे जाणवा. हवे सूत्रने स्पर्श करनारा निर्युक्तिनो अवसर छे, ते नाम स्थापना सुगमने छोडीने द्रव्यादिकने कहे छे.

दव्वगुणो दव्वं चिय गुणाण जं तंमि संभवो होइ । सच्चित्ते अच्चित्ते, मीसंमि य होइ दव्वंमि ॥ १७० ॥

द्रव्यगुण ते द्रव्य पोतेज छे. प्रश्न=शा माटे ? उत्तर—गुणोनो गुणपदार्थमां तेजरूपे संभव थाय छे.

शंका=द्रव्य अने गुणमां लक्षण अने विधानना भेदथी भेद छे. तेज कहे छे. द्रव्य लक्षण गुणपर्यायवाळुं द्रव्य छे. विधान पण धर्म, अधर्म, आकाश, जीव, पुद्गल विगेरे छे. द्रव्यनी व्याख्या कही; अने गुणनी व्याख्या कहे छे. द्रव्यने आश्रयी साथे रहेनारा गुणो छे, अने तेनुं विधान ज्ञान, इच्छा, द्वेष, रुप, रस, गंध, अने स्पर्श विगेरे छे, ते पोतानामां रहेला भेदे करीने जुदा छे. आचार्यनुं समाधान—ए दोष नथी; कारणके, द्रव्यो सचित्त, अचित्त अने मिश्र भेदथी जुदां छे, तेमां गुण छे ते, तेजस्वरुपे रह्यो छे, तेमां अचित्त द्रव्य बे प्रकारे छे. अरुपी अने रुपी तेमां अरुपी द्रव्यमां धर्म, अधर्म, अने आकाश. एम त्रण भेदे करीने जुदा छे. लक्षणो अनुक्रमे गति स्थिति अने अवगाह आपवानुं छे अने एनो गुण पण अमूर्त छे अने अगुरुलघु पर्याय-लक्षणवाळुं छे तेमां त्रणेनुं अमूर्तपणुंछे ते पोताना रुपभेद वडे व्यवस्थावाळुं नथी. (अमूर्तपणामां भेद नथी) तेम अगुरुलघु पर्याय पण छे ते तेना पर्याय-

पणाथीज छे जेमके माटीनो पींड (गोळो स्थास कोश कुशूल पर्यायो (माटीनो घडो बनावतां चाक उपर जुदा जुदा आकारो वने छे ते) रुपवाळी माटी छे. एटले माटीथी आकारो जुदा नथी, तेज प्रमाणे रुपी द्रव्यपण स्कंध देश प्रदेश परमाणु भेदोवाळुं छे तेना गुणो रुप विगेरे छे ते अभेदपणे रहेलाछे अर्थात् एमां भेदवडे प्राप्ति थती नथी जेमरुप पदार्थथी जुदुं पडे तेवो संभव नथी. जेम पोतानो आत्मा पोताना ज्ञानगुणथी जुदो पडे ते अशक्य छे तेम बीजाओमां पण समजवुं.

तेज प्रमाणे सचित्त एवुं जीवद्रव्य उपयोग लक्षणवाळुं छे एटले उपयोग राखे. तोज जीवने वस्तुनुं के पोतानुं भान रहे छे ते आपणा आत्माथी जुदा ज्ञान विगेरे गुण नथी. कोइ जुदा माने तो जीवने अचेतनापणानो प्रसंग आवे.

वादीनी शंका ते प्रमाणे मानतां तो तेना संवंधथी जीवने अजीव पणुं थशे. ?

आचार्यनो उत्तर—तमारुं वचन गुरुनी सेवा कर्या विनानुं छे, कारण के जेने पोतानामां शक्ति नथी तेने बीजानी करेली केवी रीते थाय ? दाखला तरीके सेंकडो दीवानो संवंध थाय तो पण आंधळो रुप जोवाने शक्तिवान न थाय. एज प्रमाणे मिश्र द्रव्यमां पण गुण साथे एकपणानी योजना पोतानी वुद्धिए करी लेवी.

आ प्रमाणे द्रव्य अने गुण तेने एकान्तथी एक पणे स्वीकारे छते शिष्य कहे छे. शुं बन्ने ने वीलकुल भेद नथी ?

उत्तर—तेवो एकांत अभेद नथी, कारणके जो सर्वथा अभेद मानीए तो एकज इंद्रिय वडे बीजा गुणोनुं पण उपलब्धि (प्राप्ति) थइ जाय अने बीजी इंद्रिओ नकामी थाय. जेमके केरीनुं रुप जोवामां चक्षु काम लागे' अने तेना साथे एकपणुं मानीए तो गुण-

वाळुं द्रव्य एकपणे होवाथी आंखथीज रस पण खाटो–मीठो परखावो जोइए, कारणके रुप देखाय तेम रस पण जणावो जोइए, एटले रुप अने रस साथे देखाय. तो सर्वथा अभेदपणुं छे, पण तेम तथी. रस पारखवामां जीभनुंज काम छे माटे कंइ अंशे घट अने वस्त्र जेम जुदा छे तेम कंइ अंशे गुण आत्माथी जुदा छे. आ प्रमाणे भेद अने अभेद एम बे बतावबाथी शिष्य गभराइने आचार्यने पूछे छे के बन्ने रीते मानवामां दोष आवे छे. तो केम मानीए ? आचार्य कहे छे—एटला माटेज दरेकमां कंइ अंशे भेद अने कंइ अंशे अभेद मानवुं सारुं छे एटले अभेद पक्षमां द्रव्य पोतेज गुण छे. अने भेद पक्षमां मात्र गुण जुदो छे. तेज प्रमाणे गुण अने गुणी पर्याय अने पर्यायी सामान्यने विशेष अवयव अने अवयवीनो भेद अने अभेदनी व्यवस्था बतावबा वडेज आत्मभावनो सद्भाव थाय छे. कह्युं छे के—

दव्वं पज्जवविजुयं, दव्व विउत्ता य पज्जवा णत्थि । उप्पायट्ठिइभंगा, हंदि दवियलक्खणं एयं ॥ १ ॥

द्रव्य ते पर्यायथी जुदुं छे. अने द्रव्यथी जुदा पर्यायो छे एवुं क्यांय नथी.पण उत्पाद, स्थिति अने नाश एवा पर्यायोवाळुं द्रव्यलक्षणजाणवुं

नयास्तव स्यात्पदलांछिता इमे, रसोपविद्धा इव लोहधातवः । भवन्त्यभिप्रेतफला यतस्ततो, भवन्तमार्याः प्रणता हितैषिणः ॥ २ ॥

हे भगवंत ! तमारा कहेला नयो स्यात् पदे करीने शोभे छे. जेम लोह धातु रसे करीने व्याप्त थयेली (सोनुं बनेली) इच्छित फळने आपनारी छे. तेथी उत्तम पुरुषो जे हितना वांच्छको छे तेओ नमस्कार करीने आपने आशरे रहेला छे. स्याद्वाद मतने

स्वीकारे छे. आवुं द्रव्य गुणनुं स्याद्‌वाद स्वरुपने बतावनार आपणां आचार्योए घणुं लख्युं छे माटे वधारे कहेता नथी. तेज निर्युक्तिकार कहे छे के बधा द्रव्यमां प्रधान एवा जीव द्रव्यमां गुण भेद वडे रहेल छे ते कहे छे.

संकुचियवियसियत्तं, एसो जीवस्स होइ जीवगुणी । पूरेइ हंदि लोगं, बहुप्पएसेत्तणगुणेणं ॥ १७१ ॥

जीव छे ते संयोगि वीर्यवालो छतां, द्रव्य पणे प्रदेश संहार विसर्ग वडे आधारना वश पणाथी दीवानी माफक संकोच अने विकाश पामे छे. जीवनो आज गुण आत्मानी साथे आत्मभूत थइ रहेल छे, आम भेद विना पण छट्ठी विभक्तिनो संबंध थाय छे. जेम के राहुनुं माथुं. शिला पुत्रक (दस्तो. या वाटा) नुं शरीर विगेरे छे. तेज भवमां सात समुद्‌घात (आत्मानुं वधवुं घटवुं ते) ना परवशपणाथी आत्मा संकोच विकोच पामे छे, तेज कहे छे. बरोबर रीते चारे बाजु जोरथी हणवुं. अने आत्म प्रदेशोने आमतेम फेंकवुं. ए समुद्‌घात छे, ए सात समुद्‌घातनां नाम बतावे छे. कषाय,; वेदना; मारण अंतिक, वैक्रिय, तैजस, आहारक, अने केवलि समुद्‌घात छे. तेमां प्रथमनो कषाय. समुद्‌घात. अनंतानुबंधी क्रोध विगेरेथी, जेनुं चित्त (ज्ञान) नाश पाम्युं छे, तेओ पोताना आत्माना प्रदेशने आम तेम फेंके छे. तथा अतिशय वेदना थतां नाडीओ तूटतां वेदना समुद्‌घात थाय अने मरवानो अणीमां जीव आम तेम उत्पन्न थवाना प्रदेशमां लोकना अंत सुधी आत्म प्रदेशोने पोते वारंवार फेंके छे. अने संकोची ले छे. वैक्रिय समुद्‌घात वैक्रिय लब्धिवालो, नवुं वैक्रिय शरीर बनाववा माटे , आत्म प्रदेशोने बहार काढे छे, तेज प्रमाणे तेजस शरीर बनाववा तथा तेजोलेश्यानी लब्धिवालो तपस्वी तेजोलेश्या फेंकवा वखते तेजस समुद्‌घात करे छे तथा आहारक शरीर

वनाववा चौद पूर्व धारी आहारक लब्धिवाला साधु कोइपण वखत संदेह दूर करवा तीर्थंकर पासे पोतानुं शरीर मोकलवा आहारक शरीर वनाववा वहारना प्रदेशोने लेवा आत्माना–प्रदेशोने बहार फेंके छे, अने केवलि समुद्घात समस्त लोकव्यापी छे एटले तेनी अंदर वधा समुद्घात छे, एवुं निर्युक्तिकार पोतेज कहे छे. चौद राज लोक प्रमाण आकाश खंड छे तेमा व्यापे छे कारणके बहु प्रदेशनुं गुण पणुं छे. आ केवलि समुद्घात केवळ ज्ञान थया पछी केवळ ज्ञानी प्रभु जुए छे के मारुं आयुष्य थोडुं छे, अने कर्म वधारे भोगववानां छे तेथी दंड कपाट मंथन आंतरा पूरवा, ते प्रमाणे संकोचमां पण जाणवुं एटले पहेले समये उपर नीचे दंड समान बीजे समये बन्ने छेडे कपाट समान त्रीजे समये मथनी (रवैया) ना आकारे तथा चोथे समये आंतरा पूरे छे; ते प्रमाणे पाछुं चार समयमां मूल शरीर करी नाखे छे. आ द्रव्य गुण छे हवे क्षेत्र गुण विगेरे कहे छे.

देवकुरु सुसमसुसमा, सिद्धी निब्भय दुगादिया चेव । कल भोअणूज्जु वंके जीवमजीवे य भावंमि ॥१७२॥

क्षेत्र ते देव कुरु विगेरे जुगलीआना क्षेत्र छे. त्यां सदाए कल्प वृक्ष रहे छे, काळ गुणमां सुखम सुखम विगेरे नामना आरा जाणवा, जेमां काळे करीने वस्तुमां फेरफार थाय छे. फळ गुणमां सिद्धि गति छे. पर्यंव गुणमां निर्भजना (निश्चित भेद) छे. गणना गुणमां बे त्रण चार विगेरे नुं गणवुं छे. करण गुणमां कळाकौशल्य छे, अभ्यास गुणमां भोजन विगेरे छे. गुण अगुणमां सरळता छे, अगुण गुणमां वक्रता छे, भवगुण अने शीलगुणनो भावगुणनो विषय लेवाथी जीवनुं ग्रहण लेवाथी तेमां समावेश थइ गयो छे, तेथी गाथामां जुदुं वताव्युं नथी. भावगुण ते जीवनो नारक विगेरे भव जाणवो, शीलगुणमां जीवनो क्षमा विगेरे गुण युक्त आत्मा

लेवो, अने भावगुण ते जीव अने अजीवनो जाणवो, आ प्रमाणे थोडामां बतावी तेनी विशेष व्याख्या करे छे.

क्षेत्र गुण.

देवकुरु, उत्तरकुरु, हरी वर्ष, रम्यक, हेमवत, हैरण्यवत आ छ युगलिकनां क्षेत्र छे. ते सीवाय छपन्न अंतर द्वीप छे. तेमां पण युगलिक छे, तेओने खेती विगेरे कृत्य करवा वीना जे जोइए ते कल्प वृक्षमांथी मली शके छे, तेथी ते अकर्म भूमि कहेवाय छे. आ क्षेत्रने आश्रयी गुण जाणवो, वली त्यां जन्मेला मनुष्यो देव कुमार जेवा सुंदर रुपवाला सदा जुवानी भोगवनारा पुरे आयुष्ये मरनारा अनुकूळ सुंदर पांचे इन्द्रियनुं विषय सुख भोगवनारा स्वभावथीज सरळ कोमळ स्वभाववाळा अने भद्रक भावना गुणथी देव लोकमां जनारा होय छे (साथे स्त्री पुरुषनुं जोडुं जन्मे अने ते नरमादा तरीके रहे तेथी ते युगलिक कहेवाय)

काळ गुण.

भरत ऐरवत आ बे क्षेत्रमां प्रथमना त्रण आरामां एकान्त सुखवाला वखतमां युगलिकोनी स्थिति सदा सुंदर रुपवाली अने यौवनवाली रहे छे.

फळ गुण.

फळ तेज गुण, ते फळ गुण कहेवाय; अने ते फळक्रियाने आश्रयी छे, ते क्रिया सम्यक्दर्शन ज्ञानचारित्र विना आ लोक अथवा परलोकने आश्रयी जे करवामां आवे; ते एकांत अनंत सुखने आपनारी नहोवाथी तेनो फळगुण मळ्या छतां अगुण जेवो छे, पण

सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्र साथे मळी तेने अनुसार जे क्रिया थाय; ते एकांत अनंत वाधारहित संपूर्ण सुख आपनार सिद्धि (मोक्ष) फळ आपनार छे, तेज फळगुण मेळवाय छे, तेथी एम कह्युं केः—सम्यक्‌दर्शन ज्ञानचारित्रवाळी क्रिया मोक्षफळ आपनारी छे, अने ते शिवायनी क्रिया संसारीक सुखफळना आभास मात्र (बनावटी) छे. माटे ते निष्फळ छे. एटला माटे मोक्षार्थिए फळगुण तेनेज कहेवो के जेमां सम्यक्‌दर्शन ज्ञानचारित्र विगेरेनी प्राप्ति थाय.

पर्यायगुण

पर्याय तेज गुण, ते पर्यायगुण छे, एटले गुण अने पर्याय, ए बंनेनो नयवादना अंतरपणार्थी अभेद स्वीकार्यो छे, अने ते निर्भजनारूप छे. निश्चितभजना एटले, निश्चितभाग जाणवो. जेमके, स्कंधद्रव्य छे, तेने देशप्रदेश वडे भेद पाडतां परमाणु सुधी भेदो पडे छे. (पुद्गल द्रव्य ज्यारे आखुं होय; त्यारे स्कंध कहेवाय; अने तेनो एक भाग लइए तो देश, अने सौथी बारीक भाग लइए; तो प्रदेश कहेवाय अने ते प्रदेश छुटा पडे तो परमाणुं छे.) परमाणु पण एक गुणो काळो बे गुणा काळा साथे मेळवतां अनंता भेदवाळो थाय छे. आ बधा पर्यायगुण छे.

गणना गुण

बे त्रण चार विगेरे, घणी मोटी राशि होय; ते गणना गण वडे निश्चय कराय छे के, आटलुं एनुं प्रमाण छे.

करण गुण.

कळाकौशल्य ते, पाणी विगेरेमां इन्द्रियोने कुशळता माटे, (कसरत माटे) नहावा, तरवा विगेरेनी क्रिया कराय छे.

अभ्यास गुण.—भोजन विगेरे संबंधी छे. जेमके, ते दिवसे जन्मेलो बाळक पण ते पूर्वभवना अभ्यासथी मातानुं स्तन विगेरे पोताना मोढामां ले छे, अने रोतो बंधथाय छे, अथवा अभ्यासना वशथी अंधारुं होय; तोपण कोळीओ मोढामांज मुके छे, तथा आकुळ चित्तवाळो पण दुःखवाळी जग्यायेज शरीरने पंपाळे छे विगेरे छे—

गुणअगुण—गुणज कोइने अगुणपणे परिणमे छे. जेमके, कोइ माणसनो सरळगुण. कपटीने अवगुण करनारो थाय छे.

" शाठ्यं ह्रीमति गण्यते व्रतरूचौ, दम्भःशुचौ कैतवं। शूरेनिर्घृणता ऋजौ विमतिता दैन्यं प्रियाभाषिणि॥
तेजस्विन्यवलिप्तता मुखरता वक्तर्यशक्तिः स्थिरे। तत्को नाम गुणो भवेत् सविदुषां, योदुर्जनैर्नाङ्कितः?॥१॥

लज्जावाळी बुद्धि होय; ते शठपणामां माने. व्रतनी रुची दंभपणे माने; पवित्रताने कैतव (मश्करीपणे) माने; शूरने निर्दयता, शरळताने घेलापणुं, मीठुं बोलतां दीनता माने; तेजस्वीने, अंहकारी, सारुं बोलनारने, मुखरता (वाचाळपणुं) माने; स्थिरमां बोलवाने अशक्त माने. आथी कोइ सारा कवि कहे छे केः—पंडितोमां एवो क्यो गुण होय के, दुर्जनो तेने कलंकित न बनावे ? आनो अर्थ ए छे केः—हितने माटे कहेलुं वचन पण निर्भाग्यने अगुणपणे परिणमे छे.

अगुण गुण.—कोइने अगुण–वचन पणे गुणकारीपण थाय छे. जेमके, वक्र विषय संबंधी छे. ते जेम, गोधो गळीयो होय; अने तेने किण स्कंध (कांध) थयो न होय; तो गो गणमां सुखेथी बेसे छे.

गुणानामेव दौर्जन्याद्धुरि धुर्यो नियुज्यते । असंजातकिणस्कन्धः, सुखं जीवति गौर्गलिः ॥ १ ॥

जेमकेः—दौर्जन्य (कुटीलताथी) गुणोनुंज धुरिमां धुर्यपणुं योजाय छे. जेमके, असंजात एटले, जेने किणस्कंध नथयो होय; तेवो गलीयो बळद सुखेथी जीवे छे.

भवगुण—भवगुण एटले, नारकादि भववाळो जीव ते ते स्थानमां उत्पन्न थाय; त्यां तेने तेवो गुण मळे; ते जीवने आश्रयी छे. जेमके नारकिमां जीव उत्पन्न थाय; तेने अतिशय वेदना, तथा दुःखेथी पोडा सहन थाय; तेवी ते भोगवे; तथा तेना शरीरने तल तल जेवडा टुकडा करीनांखे; तोपण जोडाइ जाय; तथा अवधिज्ञानवाळा होय छे. आ नारकभवनो गुण कहेवाय ए प्रमाणे तिर्यंचमां उत्पन्न थयेला तेना भवगुण प्रमाणे सत् असत्‌ना विवेकरहित छतां आकाशगमननी लब्धिवाळा होय छे, तथा गाय विगेरेने घास विगेरे खाणुं शुभ अनुभव वडे मळे छे, तथा मनुष्यभवमां मोक्षप्राप्ति बधां कर्मोनो क्षयरुप छे, ते मळे छे, तथा देवोने सर्व शुभ अनुभव छे. आ भवनो गुण छे.

शीलगुण.—बीजाए आक्रोशथी कहेवा छतां पोते स्वभावथी शांत रहीक्रोध न करे; अथवा शब्दादिक विषय सारा-माठा प्राप्त थतां; पोते तत्वनो जाण होवाथी मध्यस्थपणुं राखे ते शीलगुण छे.

भावगुण—भावगुण ते ऐदायिक विगेरे छे, तेनो गुण ते, भावगुण छे. ते जीव अने अजीव आश्रयी छे. ते जीव विषय औदयिक विगेरे छ प्रकारे छे. तेना बे भेद छे, एटले तीर्थंकर, तथा आहारक शरीर विगेरे संबंधी प्रशस्त छे, अने शब्द विगेरेमां विषयनी

वांच्छना, तथा हास्य रति अरति, विगेरे निंदवा योग्य छे, तथा औपशमिक ते, उपशम श्रेणीए चढेला आयुष्यना क्षयथी तेज समये अनुत्तर विमानने प्राप्त करे छे, तथा सारुं कर्म उदयमां न आववारूप छे, ते औपशमिक छे. क्षायिकभाव गुण चार प्रकारे छे. (१) सात मोहनीयकर्मनी प्रकृति क्षय थया पछी फरीथी मिथ्यात्वमां जाय (२) क्षीण मोहनीय कर्मवाला जीवने अवश्ये बाकीनां त्रण घातीकर्म दूर थशे (३) क्षीण घातीकर्मने आवरण रहीत ज्ञानदर्शन प्रगट थशे (४) बधां घातिअघाती कर्म दूर थतां फरीथी जन्म लेवो न पडे; तथा अत्यंत एकान्त बाधा रहीत परमानंदवाला सुखनी प्राप्ति छे, ते छे, क्षय उपशमथी थयेल क्षायोपशमिक दर्शन विगेरेनी प्राप्ति छे अने परिणामिक ते भव्य अभव्य, विगेरे छे, तथा संनिपातिक ते औदयिक विगेरे पांच भावनुं एक काळे साथे मळवुं ते आ प्रमाणे छे. जेमके मनुष्य गतिना उदयथी औदयिक भाव छे त्यां पांच इंद्रियोनी प्राप्ति थवाथी ते समये ज्ञान संबंधी क्षय उपशमथी क्षायोपशमिक छे अने दर्शन मोहनियकर्मनी सात प्रकृतिना क्षयथी क्षायिक छे अने चारित्रमोहनीयना उपशम भावमां औपशमिक छे अने भव्यपणाथी परिणामिकभाव छे एम जीवनो भावगुण बताव्यो (आनुं वधारे वर्णन चोथा कर्मग्रंथमां छे त्यांथी जोवुं.)

हवे अजीव भावगुण कहे छे ते औदयिक अने पारिणामिकनो संभव छे. पण बीजानो नथी औदयिक एटले उदयमां थयेल अने अजीवना आश्रयी छे ते विवक्षाथी अजीव लीधो जेमके केटलीक प्रकृतिओ पुद्गल विपाकीज होय छे. प्रश्न—ते कइ छे ? उत्तर—औदारिक विगेरे पांच शरीर, छ संस्थान त्रण अंगोपांग छ संहनन, पांच वर्ण, बे गंध, पांचरस, आठ स्पर्श, अगुरुलघु नाम, उपघातनाम, पराघातनाम, उद्योत आतपनाम, निर्माण, प्रत्येक, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ आ बधी प्रकृतिओ पुद्गल विपाकिनी छे, कारणके, जीवनुं संबंधपणुं छतां पुद्गल विपाकिपणे तेओ छे. परिणामिकभाव, अजीवगुण बे प्रकारे छे. अनादि परिणामिक ते धर्म—अधर्म

आकाशनो अनुक्रमे गति, स्थिति, अने अवगाह लक्षणरूप छे; सादि, (आदीवाळो) परिणामिक देखावभाव ते, आकाशमां वादळानुं इंद्रधनुष्य विगेरेनो देखाव छे, तथा परमाणुओनुं रूप विगेरेमां बीजुं गुणपणुं वदलाय छे. हवे आ प्रमाणे गुण कहीने मूळनो निक्षेपो कहे छे.

मूले छक्कं दव्वे ओदइउवएस जाइमूलं च । खित्ते काले मूलं भाव मूलं भवे तिविहं ॥ १७३ ॥

मूळ शब्दनो छ प्रकारे नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव एम निक्षेपा छे. नाम स्थापना जाणीता छे.

द्रव्यमूळ.

द्रव्यमूळमां ज्ञ शरीर, भव्यशरीर, अने ते शिवाय (१) औदयिकमूळ, (२) उपदेशमूळ, (३) आदिमूळ. एम त्रण प्रकारे छे. वृक्षना मूळपणे जे द्रव्य परिणमे ते औदायिकमूळ जाणवुं; तथा वैद्य रोगोने तेनो रोग दुर करवा जे मूळनो उपदेश करे; ते उपदेशमूळ—पिपरीमूळ विगेरे जाणवां; आदिमूळ वृक्षोनां मूळनी उत्पत्तिमां जे पहेलुं कारण छे ते जेमके, स्थावरनाम गोत्र प्रकृतिना संबंधथी तथा मूळ निर्वर्तन उत्तर प्रकृतिना प्रत्ययथी जे मूळ उत्पन्न थाय; तेनो भावार्थ कहे छे, ते मूळनो निर्वाह करनार पुद्गलोना उदय आवतां कर्मण शरीर छे, ते औदारिक शरीरपणे परिणमतां पहेलुं कारण छे.

क्षेत्रमुळ—जे क्षेत्रमां मुळ उत्पन्न थाय छे, अथवा जे क्षेत्रमां मुळनुं वर्णन थाय ते जाणवुं.

काळमुळ—क्षेत्रमुळ प्रमाणे एटले जे काळमां उत्पन्न थाय; अथवा वर्णन कराय; ते काळ मुळ छे. भावमुळ त्रण प्रकारे छे.

भावमूळ.

ओदइयं उवदिट्ठा आइ तिगं मूलभाव ओदइअं । आयरिओ उवदिट्ठा विणयकसायादिओ आई ॥१७४॥

उपदेशक मुळ—भावमुळ औदायिक–भावमुळ, अने आदिमुळ प्रथमनुं कहे छे. नाम गोत्रना कर्मना उदयथी वनस्पतिकायनुं मुळपणुं अनुभव करतो "मुळ जीवज" औदयिकभाव मुळ छे, अने उपदेशकमुळमां जैन आगम जाणनारा आचार्य जे उपदेशक छे, ते जाणवा आदिमुळमां प्राणीओ जे कर्म वडे उत्पन्न थाय छे, ते प्राणीओनुं मोक्ष अथवा संसारनुं जे प्रथम भावमुळ छे, तेने उपदेश करे ते जाणवुं. जेमके, आ गाथाना चोथा पदमां कह्युं केः—"विनय कषाय विगेरे आदि छे." मोक्षनुं आदि कारण ज्ञानदर्शन–चारित्र, तप अने औपचारिक एम पांच प्रकारनो विनय छे, तेनाथी मोक्षनी प्राप्ति थाय छे.

विणया णाणं णाणाउ दंसणं दंसणाहि चरणं तु । चरणाहिंतो मोक्खो मुक्खे सुक्खं अणाबाहं ॥ १ ॥

विनयथी ज्ञान, अने ज्ञानथी दर्शन. (श्रद्धा), श्रद्धाथी चारित्र, चारित्रथी मोक्ष अने मोक्षमां बाधारहित सुख छे.

विनयफलं शुश्रूषा गुरुशुश्रूषाफलं श्रुतज्ञानम् । ज्ञानस्य फलं विरतिर्विरतिफलं चाश्रवनिरोधः ॥ २ ॥

संवरफलं तपोबलमथ तपसो निर्ज्जरा फलं दृष्टम् । तस्मात्क्रियानिवृत्तिः क्रियानिवृत्तेरयोगित्वम ॥ ३ ॥

विनयनुं फळ गुरुनी सेवा. तेनाथी श्रुतज्ञान, तेनाथी चारित्र, तेनाथी आश्रव, (पाप) नो अटकाव, तेनाथी संवर, संवरनुं फळ, तप. तेनाथी निर्जरा, तेनाथी क्रियानो अंत तेनाथी योगीपणुं छे.

योगनिरोधाद्भव सन्ततिक्षयः सन्ततिक्षयान्मोक्षः । तस्मात् कल्याणानां सर्वेषां भाजनं विनयः ॥ ४ ॥

अयोगिपणार्थी भवसंततिनो क्षय तेनाथी मोक्ष छे, माटे ते बधां कल्याणोनुं मुळ विनय छे. (माटे विनय संपादन करवो.) जेम विनय मोक्षनुं कारण छे, तेज प्रमाणे विषय (इन्द्रियोनो स्वाद,) तथा क्रोध, मान विगेरे कषायो संसारनुं मुळ छे.

मुळनुं वर्णन कर्युं. हवे स्थानना पंदर प्रकारे निक्षेपा बतावे छे.

णामंठवणादविए खित्तद्धा उड्ढ उवरई वसही । संजम पग्गह जोहे अयल गणण संधणाभावे ॥ १७५ ॥

नामस्थापना द्रव्य, क्षेत्र, काळ, विगेरे छे, ते कहे छे नामस्थापना सुगम छे. द्रव्यमां ज्ञ शरीर विगेरे छोडीने द्रव्यस्थानमां सचित्त अचित्त अने मिश्रद्रव्यनुं जे स्थान, (आश्रय) छे ते लेवुं. क्षेत्रस्थानमां भरत विगेरे छे, अथवा ऊंचे नीचे अथवा तिरछा (त्रांसा) लोकमां जे क्षेत्र छे ते क्षेत्रस्थान छे अथवा जे, क्षेत्रमां स्थाननुं व्याख्यान थाय ते लेवुं. अद्धा (काळ) तेनुं स्थान बे प्रकारे. (१) कायस्थिति, (२) भवस्थिति छे. कायस्थिति, ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायुमां असंख्यात, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणीनो काळ छे, तथा वनस्पतिकायनो अनंतकाळ छे.

बे इन्द्रिय विगेरे विकलेन्द्रियनीकाय स्थितिसंख्याता हजार वर्षनी छे. पंचेन्द्रिय, तिर्यंच, तथा मनुष्यनी कायस्थिति सात आठ भव छे.

पण ते बधानी भवस्थिति नीचे मुजब छेः—

पृथ्वीनी बावीस हजार, पाणीनी सात हजार, वायुनी त्रण हजार, वनस्पतिनी दश हजारवर्षनी उत्कृष्टि स्थिति छे. अग्निकायनी त्रण रात्रीदिवस छे. बे इन्द्रिय शंख विगेरेनी, बार वर्षनी छे, त्रण इन्द्रिय कीडो विगेरेनी स्थिति ओगणपचास दिवसनी छे, चार इन्द्रिय भमरा विगेरेनी छ मासनी छे पांच इन्द्रिय तिर्यंच, तथा मनुष्यनी त्रण पल्योपमनी छे, देव, तथा नारकीनी स्थिति भवसंबंधी

तेत्रीस सागरोपमनी छे. अने एकवार त्यां उत्पन्न थया पछी लागलागट उत्पत्ति नथी; माटे कायस्थिति एकज भवनी गणाय. आ उपर जे स्थिति बतावी छे, ते कायसंबंधी तथा भवसंबंधी बन्ने प्रकारे उत्कृष्ट जाणवी जघन्यथी तो बधाओनी स्थिति अंतर्मुहुर्त्तनी छे, पण नारकी, देवतानी भवस्थिति दश हजार वर्षनी छे. आ बधुं काळने आश्रयी कह्युं; अथवा अद्धास्थान ते समय आवलिका-मुहूर्त्त अहोरात, पक्ष, मास, ऋतु, अयन संवत्सर, युग, पल्योपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी, पुद्गलपरावर्त्तन, अतीत, अनागत, एम बधा काळरूपे जाणवुं.

उर्द्धस्थान ते, कायोत्सर्ग विगेरे छे, अने एना उपलक्षणथी निषण्णा (बेसवुं) विगेरे पण जाणवुं.

उपरतिस्थान ते, विरति छे. तेनुं स्थान एटले, साधुपणुं, अथवा श्रावकपणुं जाणवुं; पण साधुनी सर्व विरति अने श्रावकनी देश विरति छे.

वसतिस्थान एटले, जे स्थानमां गाम अथवा घर विगेरेमां अमुक काल रहेवानुं थाय; ते वसति छे.

संयमस्थान सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्धि तथा सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, एम पांच प्रकारे संयम छे. ते दरेकनां स्थान असख्यात छे.

प्रश्न—असंख्यातनी संख्या केटली छे?

उत्तर—अति इन्द्रियपणानो विषय होवाथी साक्षात् देखाडवाने शक्तिवान् नथी, तेथी सिद्धांतमां आपेली उपमा प्रमाणे कहीए छीए. एक समयमां सूक्ष्म अग्निकायना जीवो असंख्येय लोकाकाश प्रदेश प्रमाण उत्पन्न थाय छे तेनाथी असंख्यात गुण अग्निकाय पणे परिणमेला छे तेनाथी पण ते कायस्थिति असंख्येय गुणी छे. तेनाथी पण अनुभाग बंध अध्यवसाय स्थान असंख्येय गुणाछे

आटलां संयमनां स्थान सामान्यथी कह्यां. हवे विशेषथी कहे छे—

सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्धि—ए त्रणनी दरेकनां असंख्येय प्रदेश लोकाकाश तुल्य संयम स्थान छे अने सूक्ष्म संपरायनी अंतरमुहूर्त्तपणानी स्थिति होवाथी अंतमुहूर्त्तना समय बरोबर असंख्येय संयम स्थान छे. यथाख्यात चारित्रनुं जघन्य उत्कृष्ट सीवाय एकज संयम स्थान छे, अथवा संयम श्रेणिनी अंदर रहेला संयम स्थानोने लेवां, ते आ क्रमे छे—

अनंत चारित्र पर्यायथी बनेलुं एक संयम स्थान छे. असंख्येय संयम स्थाननुं बनेलुं कंडक छे. ते असंख्यात कंडकथी उत्पन्न थयेल छ स्थाननुं जोडकुं छे, तेथी असंख्येय स्थानरूप श्रेणि छे.

प्रग्रह स्थान—प्रकर्षथी जेनुं वचन लेवाय (माननीय थाय) ते प्रग्रह वाक्यवालो नायक (नेता) जाणवो. ते लौकिक अने लोकोत्तर एम बे प्रकारे छे तेनुं स्थान ते प्रग्रहस्थान छे. लौकिकमां माननीय वचनवाला राजा युवराज महत्तर (राजानो हित शिक्षक) अमात्य (प्रधान) राजकुमार छे. लोकोत्तरमां पण आचार्य उपाध्याय प्रवृति (प्रवर्त्तक) स्थविर गणावच्छेदक छे.

योध स्थान—आ पण पांच प्रकारे आलीढ—प्रत्यालीढ—वैशाख मंडल समपाद ए रीते छे—

अचळ स्थान—आ स्थान चार प्रकारे छे, तेना सादि पर्यवसान विगेरे छे ते बतावे छे. परमाणु विगेरे द्रव्यनो एक प्रदेश विगेरेमां जघन्यथी एक समय सादि सपर्यवसान अवस्थान छे. अने उत्कृष्टथी असंख्येय काळ छे. अने सादि अपर्यवसान स्थान सिद्धोनुं भविष्यना काळरूप छे. सिद्धोनुं मोक्षमां जवुं ते आदि अने त्यांथी कोइपण वखते खसवानुं नथी. माटे अनंत छे.

अनादि सपर्यवसान स्थान अतीत अद्धा रूपनुं शैलेशी अवस्थाना अंत समयमां कार्मण अने तैजस शरीर धारनारा जे भव्य जीव

छे तेने आश्रयी जाणवुं (तैजस अने कार्मण शरीर भव्य जीव साथे अनादि काळथी जोडाएलां छे. अने जीव मोक्षमां जतां ते बंने जीवथी जुदां पडे छे ते अनादिसांत कहेवाय छे.)

अनादि अपर्यवसान ते धर्म अधर्म आकाशना संबंधी छे. (तेमनी स्थिति पूर्वनी जेवीछे, तेवीज हमेशां रहे छे.)

गणना स्थान—एक बेथी मांडीने शीर्ष प्रहेलीका सुधी जे गणत्री छे. ते लेवी. (जैनमां परार्ध उपरांत संख्या छे ते अनुयोगद्वार सूत्रमां बतावेलो छे, त्यांथी जोवी.)

संधान स्थान—ते बे प्रकारे छे. द्रव्यथी अने भावथी छे. द्रव्यथी छिन्न अने अछिन्न एम बे भेदे छे. ते स्त्रीनी कांचळी विगेरेना टुकडा करीने सांधवानुं छे. अने अछिन्न संधानमां पक्ष्म उत्पद्यमान तंतु विगेरेनुं जोडाण छे (ताणो वाणो कपडामां जोडाय ते.)

भाव संधान प्रशस्त अने अप्रशस्त एम बे भेदे छे तेमां प्रशस्त अछिन्न भाव संधान उपशम क्षपक श्रेणिए चढता मनुष्यने अपूर्व संयमस्थान एक सरखांज होय छे. पण वचमां तुटक पडती नथी अथवा श्रेणि सिवाय. प्रवर्धमान कंडकनां लेवां. छिन्न प्रशस्त भावसंधान भावथी औदयिक विगेरे बीजा भावमां जइने पाछा शुद्ध परिणामवाला थइने त्यां आवतां थाय छे.

अप्रशस्त अछिन्न भाव संधान उपशम श्रेणिएथी पडतां अविशुद्धमान परिणामवाला मनुष्यने अनंतानुबंधि मिथ्यात्वना उदय सुधी जाणवुं–अथवा उपशम श्रेणि सीवाय कषायना वशथी बंध अध्यवसाय स्थानोने चढतां चढतां अवगाह मान करनाराने होयछे.

अप्रशस्त छिन्नभाव संधान ते औदयिक भावथी औपशमिक विगेरे बीजा भावमां जइने पाछा त्यांज औदयिक भावमां आवे ते छे.

आ द्वारनुं जोडकुं साथेज कह्युं एटले संधानस्थान द्रव्य विषयनुं पहेलुं छे, अने पछीनुं भाव विषयनुं छे अथवा भावस्थान जे कषा-

योग्य स्थान छे, ते अहीं लेवुं कारणके तेओनेज जीतवापणानो अधिकार छे.

प्रश्नः—तेओनुं कयुं स्थान छे के जेने आश्रयीने ते थाय छे

उत्तर—शब्दादि विषयोने आश्रयीने ते थाय छे ते बतावे छे.

पंचसु कामगुणेसु य सद्दप्फरिसरसरूवगंधेसुं । जस्स कासाया वट्टंति मूलट्ठाणं तु संसारे ॥ १७६ ॥

अहीं इच्छा अनंगरूप जे काम छे. तेना गुणोने–आश्रयी चित्तनो विकार छे; ते बतावे छे. ते विकारो शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध एम पांच छे. ते पांचे व्यस्त अथवा समस्त–विषय संबंधी जे जीवनुं विषय सुखनी इच्छाथी अपरमार्थने देखनार संसार प्रेमी जीवने राग द्वेषरूप अंधकारथी आंखनुं तेज हठी जवाथी साग–माठा पदार्थ प्राप्त थतां कषायो थाय छे ते मूलनुं संसार झाड थाय छे तेथी शब्दादि विषयथी उत्पन्न थए कषायो संसार संबंधी मूळ स्थानज छे–एनो भावार्थ आ छे के राग विगेरेथी डामाडोळ थएल चित्तवालो जीव परमार्थने न जाणवाथी आत्माने तेनी साथे कंइ संबंध नथी छतां विषयने आत्मारूपे मानीने आंधळाथी पण वधारे आंधळो बनी कामी जीव रमणीय विषयो जोइने आनंद पामे छे तेथी कह्युं छे—

दृश्यं वस्तु परं न पश्यति जगत्यन्धः पुरोऽवस्थितं, रागान्धस्तु यदस्ति तत्परिहरन् यन्नास्ति तत् पश्यति ॥
कुन्देन्दीवरपूर्णचंद्रकलशश्रीमल्लतापल्लवा, नारोप्याशुचिराशिषु प्रियतमा गात्रेषु यन्मोदते ॥

आंधळो छे ते जगतमां जोवा जेवी वस्तु जोइ शक्तो नथी पण रागथी आंधळो थएलो पोते आत्मा छे ते आत्म भावने छोडीने अनात्म भावने जुए छे जेमके छती वस्तु कुंद (फुल) इन्दीवर (कमळ) पूर्णचंद्र कळस श्रीमत् लतापल्लवो जेवानी गंदकीना ढगला

रूप प्रिय स्त्रीना शरीरने उपमाओ आपीने तेमां कामी आनंद माने छे. (साक्षात् उत्तम वस्तुओ छोडीने दुर्गंधथी भरेला स्त्रीना गंदा रीरमां आनंद माने छे) अथवा कर्कश शब्दो सांभळीने तेमां द्वेष करे छे तेथी मनोहर अथवा अणगमता शब्द विगेरे विषयो कषायोनुं मूळस्थान छे. अने ते कषायो संसारनुं मूळ छे.

प्रश्न—जो शब्दादि विषयो कषाय छे तो तेनाथी संसार केवी रीते छे? उत्तर—कारण के कर्म स्थितिनुं मूळ कषाय छे अने कर्म स्थिति संसारनुं मूळ छे. संसारीने अवश्य कषायो होय छे, ते कहे छे—

जह सव्वपायवाणं भूमीए पइट्ठियाइं मूलाइं । इय कम्मपायवाणं संसारपइट्ठिया मूला ॥ १७७ ॥

जेम सर्व झाडोनां मूळो पृथ्वीमां रहेलां छे तेज प्रमाणे कर्मरूप वृक्षना कषायरूपे मूळो संसारमां रहेलां छे.

शंका—आ अमे केवी रीते मानीए के कर्मनुं मूळ कषाय छे? उत्तर—मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग, ए बंधना हेतु छे. आगममां पण कह्युं छे के—

"जीवे णं भंते! कतिहिं ठाणेहिं णाणावरणिज्जं कम्मं बंधइ? गोयमा, दोहिं ठाणेहिं, तं जहा—रागेण व दोसेण व । रागेदुविहे—माया लोभे य, दोसे दुविहे । कोहे य माणे य, एएहिं चउहिं ठाणेहिं वोरिओ वगूहिएहिं णाणावरणिज्जं कम्मं बंधइ ॥

हे भगवंत, जीव केटलां स्थान वडे ज्ञानआवरणीय कर्म बांधे छे. उत्तर—हे गैतम! राग अने द्वेष ए बे स्थान वडे बांधे छे अने

ए राग; माया ने लोभ एम बे भेदे छे, तथा द्वेष पण क्रोध अने मान, एम बे भेदे छे. ए चार स्थान वडे वीर्य, उपगूढ, (जोडावा) थी ज्ञानावरणीय कर्म बांधे छे. ए प्रमाणे आठे कर्मने आश्री जाणवुं अने ते कषायो मोहनीय कर्मनी अंदर रहेला छे. अने आठे प्रकारना कर्मनुं मूळ कारण छे. काम गुणनुं मोहनीयपणुं बतावे छे—

अट्ठविहकम्मरुक्खा सव्वे ते मोहणिज्जमूलागा । कामगुणमूलगं वा तम्मूलागं च संसारो ॥ १७८ ॥

पूर्वे कह्युं के कर्म पादप विगेरे तेनी व्याख्या करे छे. तेमां कर्मपादप क्या कारणवाळां छे. तेनो उत्तर—आठ प्रकारना कर्मरूप वृक्षो छे. तेमनुं मूळ मोहनीय कर्म छे. एटले एकला कषायो न लेवा. पण काम गुणो मोहनीय मूळवाला छे. जे वेदना (संसार भोगववानी इच्छा) उदयथी काम थाय छे. ते लेवा. अने वेद छे ते मोहनीय कर्ममां समावेश थाय छे. तेथी मोहनीय कर्म जे संसारनुं मूळ कारण छे. ते संसार लेवो.

तेज प्रमाणे संसार कषाय, कामोनुं परंपराए मोहनीय कर्म कारणपणाथी प्रधान भावने अनुभवे छे. (तेज कर्म बंधनमां अग्रेसर छे.) ते मोहनीय कर्मनो क्षय थवाथी बीजा कर्मनो अवश्य क्षय थशे तेज प्रमाणे. कह्युं छे.

" जह मत्थयसूईए हयाए हम्मए तलो । तहा कम्माणि हम्मंति मोहणिज्जे स्वयं गए ॥ १ ॥

जेम ताडना झाडनी जे सूइ मथाळे रहेली छे. ते नाश करतां ताडनुं झाड नाश पामे छे, तेज प्रमाणे मोहनीय कर्म नाश पामतां बीजां कर्मो नाश पामे छे.

आ मोहनीय कर्म दर्शन मोहनीय अने चारित्र मोहनीय एम बे भेदे छे, ते बतावे छे.

दुविहो अ होइ मोहो दंसणमोहो चरित्तमोहो अ । कामा चरित्तमोहो तेणऽहिगारो इहं सुत्ते ॥ १७९ ॥

दर्शन मोहनीय अने चारित्र मोहनीय एम बे भेदे कह्युं. अने बंधना हेतुनुं पण बे प्रकार पणुं छे ते बतावे छे.

अर्हत् (जिनेश्वर) सिद्ध, चैत्य, तप, श्रुतगुरु, साधु, संघना प्रत्यनीक (जिनेश्वरथी संघ सुधी जे पदो छे, जेमां गुण अने गुणी ए बंने आवे छे तेमना शत्रु) पणे जे वर्त्ते ते दर्शनमोहनीय कर्म बांधे छे. अने जेना वडे जीव अनंत संसाररूप समुद्रना मध्यमां पडे छे तथा तीव्र कषाय बहुराग द्वेषरूप मोहथी घेराएलो बनी देश विरति अने सर्व विरतिने हणनारो चारित्रमोहनीयकर्म बांधे छे.

तेमां मिथ्यात्त्व, सम्यग् मिथ्यात्त्व (मिश्र) अने सम्यक्त्व एम त्रण भेदे दर्शन मोहनीय–कर्म छे, तथा सोळ प्रकारना कषाय छे. नव नोकषाय छे. एम पचीस भेदे चारित्रमोहनीय छे. (पहेला कर्मग्रंथमां मोहनीय कर्म जुओ.) तेमां काम ए शब्द विगेरे पांच विषयो चारित्रमोह जाणवा; तेना वडे अहीं सूत्रमां अधिकार छे, कारण के, चालु विषयमां कषायोनुं स्थान छे; अने ते शब्दादि पांच गुणरूप छे. अने चारित्रमोहनीय पूर्वे कहेली उत्तर प्रकृति जे स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद तथा हास्य रतिलोभथी आश्रीत काम आश्रयवाळा कषायो संसारनुं मूळ छे अने कर्ममां प्रधान कारण ए छे ते बतावे छे.

संसारस्स उ मूलं, कम्मं तस्सवि हुंति य कसाया ॥

संसार ते नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव एम चार प्रकारे गतिरूप संसारनुं भ्रमण छे. तेनुं मूळ कारण आठ प्रकारनुं कर्म छे. ते कर्मनुं पण मूळ कारण कषायो छे. ते क्रोध विगेरे संसारनुं निमित्त छे, अने ते प्रतिपादित शब्द विगेरे स्थानोनुं प्रचुरस्थानपणुं बताववा फरीथी स्थान विशेष अडधी गाथा वडे कहे छे.

ते सयणपेसअत्थाइएसु अज्झत्थओ अ ठिआ ॥ १८० ॥

पहेलां अने पछी परिचयवाळां माता, पिता, सासु, ससरा विगेरे जे स्वजन (सगां) छे. तथा नोकर विगेरे प्रेष्य छे अने धन धान्य कुप्य (तांबु-पीत्तळ विगेरे) वास्तु (घर) रत्न ए अर्थ कहेवाय छे (ते स्वजन विगेरेनो द्वंद्व समास करवो.) आ बधाने अंगे कषायो विषयपणे रह्या छे, अने आत्मामां प्रसन्नचंद्र राजर्षिनी माफक विषयीपणे छे; तेम एकेन्द्रिय विगेरेने पण कषायो छे. आ प्रमाणे कषायनुं स्थान बताववा वडे सूत्रपदमां लीधेलुं छे. स्थान समाप्त करीने जीतवा योग्य विषयोवाळा कषायोना निक्षेपा कहे छे.

णामंठवणादविए उप्पत्ती पच्चए य आएसो । रसभावकसाए या तेण य कोहाइया चउरो ॥ १८१ ॥

कषायना निक्षेपा—जेवो छे तेवो अर्थ न बतावे; ते निरपेक्ष अभिधान मात्र ते नाम कषाय छे अने सद्भाव (तदाकार चित्र विगेरे) असद्भाव (तदाकार नही.) जेम ईंट विगेरेना देव बनावे; ते बे प्रकारे स्थापना निक्षेप छे. जेमके, भयंकर भ्रूकुटि (आंखनी भ्रमर) क्रोधथी चढावी कपाळमां त्रण सळ पाडी त्रीशूळ साथे मोढुं तथा आंख लाल करी होठ दांत पीसतो परसेवाना पाणी विगेरेथी संपूर्ण क्रोधनुं चित्र पुस्तक अथवा अक्ष वराटक विगेरेमां रहेल ते स्थापना कषाय छे. (क्रोध जीवने आश्रयी छे, अने क्रोधनां चिन्ह जेने प्रगट थयां होय; तेवा क्रोधीनुं चित्र पुस्तक अथवा बीजामां चित्र पाडे; ते कषायनुं चित्र होवाथी; स्थापना कषाय छे.) द्रव्यकषायोमां ज्ञ शरीर तथा भव्य शरीरथी व्यतिरिक्त कर्मद्रव्य कषायो तथा नोकर्मद्रव्य कषायो छे, तेमां प्रथम जे उदीर्णामां न आवेला; अथवा उदीर्णामां जे पुद्गलो आवेला होय; ते पुद्गलो द्रव्यना प्रधानपणाथी कर्मद्रव्य कषायो जाणवा. बिभितक विगेरे

नो कर्मद्रव्य कषायो छे तथा उत्पत्ति कषायो शरीर उपधि क्षेत्र वास्तु स्थाणुं विगेरे उत्पत्ति कषायो छे, एटले जेने आश्रयीने कषायोनी उत्पत्ति थाय; ते उत्पत्ति कषाय जणवा; तेवुंज शास्त्रमां कह्युं छेः—

' किं एत्तो कट्ठयरं, जं मूढो थाणुअम्मि आवडिओ। थाणुस्स तस्सरूइ, न अप्पणो दुप्पओगस्स ॥ १ ॥

कोइने स्थाणुं (झाडनुं ठुंठुं) विगेरे वागतां मूढ माणस पोतना प्रमादनो दोष न काढतां; तेज स्थाणा उपर क्रोध करे छे, एनाथी वधारे दुःखदायक बीजुं शुं छे ?

प्रत्ययकषाय.—कषायोना जे प्रत्ययो एटले बंधनां कारणो छे ते अहींयां सुंदर अने खराब, एवा भेदवाळा शब्द विगेरे लेवा; कारणके एनाथीज उत्पत्ति तथा प्रत्ययनुं कार्य तथा कारणरूपे-भेद रहेलाछे.

आदेश कषाय.—बनावटी भ्रमर विगेरे चढाववी ते छे.

रसकषाय—रसथी एटले कडवा तीखा एम पांच प्रकारना रसनी अंदर रहेला छे ते लेवा—

भावकषाय—शरीर, उपधि, क्षेत्र, वास्तु, स्वजन, प्रेष्य, अर्चा विगेरे निमित्तथी प्रगट थएला जे शब्द विगेरे काम गुण कारण कार्यभूत कषाय कर्मना उदयरूप आत्माना परिणाम विशेष ते क्रोध मान माया लोभ एवा चार कषाय छे. ते दरेकना अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान आवरण तथा सज्वलन, एवा चार भेद वडे गणतां सोळ भेद वाला भाव कषाय छे. तेओनुं स्वरूप तथा अनुबंधनुं फल गाथाओ वडे कहे छे.

जलरेणुपुढविपव्वयराईसरिसो चउव्विहो कोहो ॥ तिणिसलयाकट्ठट्ठियसेलत्थंभोवमो माणो ॥१॥

पाणीमां रेतीमां जमीन उपर अने पर्वत उपर जे फाट पडवा जेवो देखाव थाय छे तेवो चार प्रकारनो क्रोध छे. (रेतीमां काढेली लीटी. पवनथी तुरत मली जाय. तेवो संज्वलन क्रोध जाणवो. एम अनुक्रमे दरेक वधारे वधारे प्रमाणमां जाणवो) तथा तिनिश लता लाकडुं हाडकुं पत्थरनो थांभलो ए चारनी उपमावाळुं मान छे. (तिनिश लता झट वळे तेम संज्वलन मानवाळो मान मुकी झट नमे वाकीना मानवाला कठणाइथी नमे पण पत्थरनो थांभलो नमे नही तेम अनंतानुबंधी मानवालो नमे नही)

मायावलेहिगोमुत्ति मेंढसिंगघणवंसमूलसमा । लोभो हलिद्दकद्दमखंजणकिमिरायसामाणो ॥ २ ॥

अवलेखी (नेतर विगेरेनी छाल) गोमुत्रीका घेटानुं शीगडुं अने वांसनुं थडीउं, आ चारनी उपमां वाली माया छे. (संज्वलन माया वालो जेम नेतरनी छोल वाळेली होय तोपण सीधी थइ जाय छे. तेम आ माया वाळो मायाने दूर करे छे पण छेवटनी मायावाळो वांसना थडीया माफक कदीपण कपट छोडतो नथी.) तथा लोभ हलदर कादव खंजन अने कृमिना रंग जेवो छे. (संज्वलनना लोभवाळो जेम हलदरनो रंग झट जतो रहे तेम आ लोभीने झट संतोष थाय. पण कृमि रागथी रंगेला कपडा जेवा लोभीने मरतां सुधी संतोष न थाय.

पक्खचउमासवच्छरजावज्जीवाणुगामिणो कमसो। देवनर तिरियणारयगइसाहणहेयवो भणिया ॥३॥

ते कषायो संज्वलन विगेरेनी स्थिति एक पखवाडीउं तथा चार मास, एकवर्ष अने छेवटना अनंतानुबंधीनी आखी जींदगी

सुधीनी छे. अने तेओनी संज्वलनवालानी देव गति तथा बाकीना त्रणनी अनुक्रमे मनुष्य तिर्यंच अने नरक गति छे. अर्थात् ए कषायो वाला जीवो ए गतिने पामे छे. एम कषायो ते गतिना साधनना हेतुओ कह्या. आ कषायना नाम विगेरे आठ प्रकारे निक्षेपा कह्या. तेने क्या नयवालो शुं इच्छे छे. ते कहे छे.

नैगम नयवालो सामान्य विशेष रुपपणाथी तथा तेनुं एकगमपणुं नहोवथी तेना अभिप्राय प्रमाणे बधाए निक्षेपा नाम विगेरे आठे माने छे. अने संग्रहव्यहवार नयवाला कषाय संबंधना अभावथी आदेश अने समुत्पत्ति ए बे निक्षेपाने इच्छता नथी. ऋजु सूत्रवालो वर्त्तमान अर्थने इच्छतो होवाथी आदेश, समुत्पत्ति अने स्थापना निक्षेपाने इच्छतो, नथी शब्द नयवालो नामनो पण कथंचितभावनी अंदर रहेला भावथी नाम अने भाव, एवा बे निक्षेपानेज इच्छे छे आ प्रमाणे कषायो कर्मना कारणपणे कह्या. अने ते कर्म संसारनुं कारण छे. हवे संसार केटला प्रकारनो छे ते बतावे छे.

दव्वे खित्ते काले, भवसंसारे अ भवसंसारे । पंचविहो संसारो, जत्थे ते संसरंति जिआ ॥ १८२ ॥

द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भव, अने भाव, एम पांच प्रकारनो संसार छे, जेमां संसारी जीवो भ्रमण करे छे (नाम स्थापना सुगम होवाथी निर्युक्तिकारे लीधा नथी एम जणाय छे.) द्रव्य संसारमां ज्ञ शरीर भव्य शरीर छोडीने द्रव्य संसाररूप आ संसारज छे. अने क्षेत्र संसार जे क्षेत्रोमां द्रव्यो आम तेम संसरे (खसे) ते छे. काळ संसार ते जेमां संसारनुं वर्णन थाय अने नरक विगेरे चार गतिमां अनुपूर्वीना उदयथी एक भवथी बीजा भवमां जवुं, ते भव संसार छे. अने भाव संसार एटले संसृतिनो स्वभाव ते औदयिक

विगेरे भावनी परिणतिरूप छे, तेमां प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, अने प्रदेश एम चार प्रकारना कर्मना बंधना प्रदेश विपाकनुं भोगववुं छे. आ प्रमाणे द्रव्यथी लइ भाव सुधी पांच प्रकारनो संसार छे अथवा द्रव्यादिक चार प्रकारनो संसार छे ते आ प्रमाणे अश्वथी हाथी. गामथी नगर. अने वसंतथी ग्रीष्म. तथा औदयिकथी औपशमिक एम चार प्रकारे थाय छे, एम बंने प्रकारे संसार बताव्यो छे, आसंसारमां कर्मने वश थएला जीवो आम तेम भमे छे. तेथी कर्मनुं स्वरूप बतावे छे.

णामंठवणाकम्मं, दव्वकम्मं पओगकम्मं च । समुदाणिरियावहियं आहाकम्मं तवोकम्मं ॥ १८३ ॥
किइकम्म भावकम्मं, दसविह कम्मं समासओ होइ ।

नाम कर्म–ते कर्म विषयथी शून्य. एवुं नाम मात्र छे. स्थापना कर्म पुस्तक अथवा पात्र विगेरेमां कर्म वर्गणानुं सद्भाव. असद्भाव एम बे रुपे जे लखेलुं के चितरेलुं होय कर्म छे ते स्थापना कर्म छे.

द्रव्य कर्ममां–ज्ञशरीर. भव्यशरीर सीवाय व्यतिरिक्त बे प्रकारे छे-द्रव्य कर्म अने नो द्रव्य कर्म, तेमां द्रव्यकर्म ते कर्म वर्गणाना अंदर रहेला पुद्गलो जे बंधने योग्य, अने बंधाता अने बांधेला जे उदीर्णमां न आवेला होय ते लेवानो द्रव्यकर्ममां कृषीवळ (खेडुत.) विगेरेनां कर्म जाणवां (जेनाथी बीजा जीवोने दुःख थाय तेवां संसारी कृत्य अहीं लेवां)

प्रश्न—कर्मवर्गणानी अंदर रहेला पुद्गळो द्रव्यकर्म छे एवुं कह्युं ते वर्गणा कइ छे ?

उत्तर—सामान्य रीते वर्गणा चार प्रकारनी छे, द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव, एम चारभेदे छे. तेमां द्रव्यथी एक बे विगेरेथी

संख्येय, असंख्येय, अनंत, प्रदेशवाली छे. तथा क्षेत्रथी जे क्षेत्र प्रदेशमां अवगाढ करी रहेल द्रव्यना एक बेथी संख्येय, असंख्येय, प्रदेशरूप क्षेत्र प्रदेशो जेनाथी रोकाय, ते क्षेत्र वर्गणा छे. अने काळथी एक बेथी मांडीने संख्येय, असंख्येय, समय स्थितिमां रहेल वगणा लेवी अने भावथी रुप, रस, गंध, स्पर्श, तथा तेनी अंदर रहेला भेदोरूरुप सामान्यथी भाव वर्गणा जाणवी, अने विशेषथी हवे कहे छे.-

(१) परमाणुओनी एक वर्गणा छे. एज प्रमाणे एक एक परमाणुना उपचय (वधारा) थी संख्येय प्रदेशवाला स्कंधोनी संख्येय वर्गणाओ छे. तेज प्रमाणे असंख्येय प्रदेशवाला स्कंधोनी असंख्येय वर्गणा जाणवी आ वर्गणाओ औदारिक विगेरे परिणामने योग्य थइ शकती नथी तथा अनंत प्रदेशनी बनेली अनंती वर्गणाओ पण ग्रहण योग्य नथी. तेवी वर्गणाओने उलंघीने औदारिक ग्रहण योग्य थाय छे. ते अनंती अनंत प्रदेशरूप अनंती वर्गणाओज छे एटले पूर्वे कहेली अयोग्य उत्कृष्ट वर्गणानी अंदर 'एक' एक मेळववाथी औदारिकशरीर ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणाओ थाय छे एम एक एक प्रदेश वधारतां वधेली औदायिक योग्य उत्कृष्ट वर्गणा ज्यांसुधी अनंती थाय त्यांसुधी लेवी.

प्रश्न—जघन्य उत्कृष्टानो शुं भेद छे ?

उत्तर—जघन्यथी उत्कृष्ट विशेष अधिक छे, तेमां विशेष आ छे के औदारिक जघन्य वर्गणानो अनंतमो भाग जे छे तेना अनंता परमाणुपणाथी एक एक प्रदेशना उपचय थएथी औदारिक योग्य वर्गणानो जघन्य उत्कृष्ट मध्यवर्त्तीनी वर्गणाओनुं अनं-

तपणुं छे, तेमां औदारिक योग्य उत्कृष्ट वर्गणामां एकरूप (संख्या) उमेरवाथी अयोग्य वर्गणा जघन्य थाय छे. ए प्रमाणे एक एक प्रदेश वधतां उत्कृष्ट अंतवाळी अनंती थाय छे.

प्रश्न—एमां जघन्य उत्कृष्ट वर्गणानो शुं विशेष छे ?

उत्तर—जघन्यथी असख्येय गुणी उत्कृष्टी छे, अने ते बहु प्रदेशपणाथी अने अति सूक्ष्म परिणामपणाथी औदारिकने अनंति वर्गणा पण ते अग्रहण योग्य छे, तेम अल्प प्रदेशपणाथी अने बादर परिणामपणाथी वैक्रिय (शरीर) ने पण अयोग्य छे, ए प्रमाणे जेम जेम प्रदेशनो उपचय थाय; तेम तेम विश्रसा परिणामना वशथी वर्गणाओनुं अतिशय सूक्ष्मपणुं जाणवुं; तेज उत्कृष्ट उपर एकरूप नाखवाथी योग्य अयोग्य विगेरे वैक्रिय शरीर वर्गणाओनुं जघन्य उत्कृष्टनुं विशेष लक्षण जाणवुं; तथा वैक्रिय–आहारक ए बन्नेना वचमां रहेली अयोग्य वर्गणाओनुं जघन्य उत्कृष्ट विशेष असंख्येय गुणपणुं छे वळी पूर्वे कह्या प्रमाणे अयोग्य वर्गणा उपर एकरूपना प्रक्षेपथी जघन्य आहारक शरीर योग्य वर्गणाओ थाय छे. ते प्रदेश वृद्धिथी वधतां उत्कृष्ट अनंत सुधी थाय छे.

प्रश्नः—जघन्य उत्कृष्टनुं केटलुं अंतर छे ?

उत्तरः—जघन्यथी उत्कृष्ट विशेष अधिक छे.

प्रश्नः—विशेष केटलो छे ?

उत्तरः—जघन्य वर्गणानोज अनंत भाग छे, तेनुं पण अनंत परमाणुपणुं होवाथी आहारक शरीर योग्य वर्गणाओनुं प्रदेश उत्तरथी वधती वर्गणाओनुं पण अनंतपणुं छे, ते उत्कृष्ट वर्गणामांज एकरूप उमेरवाथी जघन्य आहारक शरीरने अयोग्य वर्गणाओ थाय

छे त्यारपछी प्रदेश वृद्धिए वधतीं ज्यांसुधी उत्कृष्ट अनंत थाय; त्यांसुधीज आहारकशरीरना सूक्ष्मपणाथी अने बहु प्रदेशपणाथी तेनें अयोग्य वर्गणाओ छे, तेम बादरपणाथी अने अल्प प्रदेशपणाथी तैजस शरीरने पण अयोग्य छे.

प्रश्नः—जघन्यउत्कृष्टने अहीं केटलुं अंतर छे ?

उत्तर—जघन्यथी उत्कृष्ट अनंतगुणा छे.

प्रश्न—क्या गुणाकार वडे ?

उत्तर—अभव्यथी अनंतगुणा अने सिद्धथी अनंतमे भागे छे.

तेना उपर एकरूप नाखवाथी तैजस शरीरने योग्य वर्गणा जघन्य छे, ते प्रदेशवृद्धिए वधती उत्कृष्टसुधी अनंती थाय छे.

प्रश्न—जघन्य उत्कृष्टनुं अंतर केटलुं छे !

उत्तर—जघन्यथी उत्कृष्ट विशेष अधिक छे, अने विशेष ते जघन्य वर्गणानो अनंत भाग छे, तेने पण अनंत प्रदेशपणुं होवाथी जघन्य उत्कृष्टनी वचमां रहेली वर्गणाओनुं अनंतपणुं छे, तैजसनी उत्कृष्ट वर्गणाना उपर एकरूप नाखवाथी वधेली जे वर्गणा ते तैजस शरीरने अग्रहण योग्य थाय छे एम एक एक प्रदेश वधतां उत्कृष्ट अंतवाली अनंती वर्गणाओ छे, ते तैजस शरीरने तेना अति सूक्ष्मपणाथी तथा बहु प्रदेशपणाथी अयोग्य छे, तेम बादरपणाथी अने अल्प प्रदेषपणाथी भाषा द्रव्यने पण अयोग्य छे.

जघन्य उत्कृष्टनुं अनंत गुणपणाथी विशेष छे अने ते गुणाकार अभव्यथी अनंतगुणा अने सिद्धोथी अनंतमे भागे छे ते अयोग्य उत्कृष्ट वर्गणामां एकरूप नाखवाथी जघन्य भाषा द्रव्यवर्गणा थाय छे, तेनी पण प्रदेश वृद्धिए उत्कृष्ट वर्गणा सुधी अनंत

स्थान छे. जघन्य उत्कृष्टनु विशेष आ छे, जघन्य वर्गणाना अनंतमेभागे अधिक उत्कृष्ट वर्गणा छे. अहीआं पण अनंत भागनुं अ-
नंत परमाणुपणुं जाणवुं तेथी आ एक विगेरे प्रदेश वृद्धिना प्रक्रमथी अयोग्य वर्गणाओनुं जघन्य उत्कृष्टपणुं विगेरे जाणवुं. अहीआं
विशेष आटलुं छे के जघन्य उत्कृष्टनो भेद अहीआं अभव्यथी अनंतगुणो अने सिद्धोथी अनंतमे भागे छे, ते वर्गणाओनुं पण पूर्व
हेतु कदंबक (समूह) थी भाषा द्रव्य अने आनापान (श्वासोच्छवास) द्रव्यनुं अयोग्य पणुं जाणवुं. अने अयोग्य उत्कृष्ट वर्गणामां
एक रूप नांखेथी आनापान वर्गणा जघन्य थाय छे. तेनाथी एक एक रूपे वधतां उत्कृष्ट वर्गणाओना अंतवाली अनंती थाय छे.
जघन्यथी उत्कृष्टा जघन्यथी अनंत भाग अधिक जाणवा तेना उपर एक रुप वधतां जघन्य उत्कृष्ट भेद वडे अग्रहण योग्य वर्गणा
छे. पण विशेषमां अभव्योथी अनंत गुण अने सिद्धोथी अनंतमे भागे छे. फरीथी अयोग्य उत्कृष्ट वर्गणा उपर प्रदेशथी मांडीने वृद्धि
करतां जघन्य उत्कृष्ट भेदवाली मनोद्रव्य वर्गणा छे. जघन्य वर्गणानो अनंतमो भाग विशेष छे. फरीथी प्रदेशना वधता क्रमथी अ-
ग्रहण वर्गणा छे. विशेषमां अभव्यनो अनंत गुण विगेरे छे. अने ते वर्गणाओ प्रदेशना बहु पणाथी अने अति सूक्ष्म पणाथी मनो
द्रव्यने अयोग्य वर्गणाओ छे, तथा अल्प प्रदेशपणाथी अने बादरपणाथी कार्म्मण शरीरने पण अयोग्य छे, तेना उपर एक रुप ना-
खवाथी जघन्य कार्म्मण शरीरनी वर्गणा छे, वळी एक एक प्रदेशनी वृद्धि करतां उत्कृष्ट अनंत सुधी छे.

प्रश्न—जघन्य उत्कृष्टनो शुं विशेष छे. ?

उत्तर—जघन्य वर्गणानो अनंतमो भाग अधिक ते उत्कृष्ट वर्गणा छे, अने ते अंनत भाग अनंता अनंत परमाणुरूप होवाथी

अनंत भेदथी भिन्न कर्म द्रव्यनी वर्गणाओ छे, अने अहीं तेमनुं प्रयोजन छे. कारण के द्रव्य कर्मना व्याख्याननी अहीं वात चाले छे, अने हवे पछीनी वर्गणाओ क्रमे आवेली छे, ते शिष्यना उपर उपकारनी बुद्धिथी कहेवाय छे.

वली उत्कृष्ट कर्मवर्गणा उपर एक रुप नांखवाथी जघन्य उत्कृष्ट भेदथी भिन्न ध्रुव वर्गणा छे, ते जघन्यथी उत्कृष्टी सर्व जीवोथी अनंत गुणी छे, तेना उपर एक रुप नांखवाथी क्रमवडे अनंतीज जघन्य उत्कृष्ट भेदवाली अध्रुव वर्गणा छे. अध्रुव पणाथी अध्रुव छे, कारण के तेना विरुद्ध पक्षवाली ध्रुवना सद्भावथी तेनुं अध्रुवपणुं छे. अहीं जघन्य उत्कृष्टनो भेद हमणा उपर कहेलो तेज छे—ते उत्कृष्टना उपर एक एकनी वृद्धि करतां जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी अनंतीज शून्य वर्गणाओ थाय छे, अने जघन्य उत्कृष्टनो विशेष पूर्व माफक छे. तेओनो संसारमां पण अभाव छे, तेथी तेनुं नाम शून्यवर्गणा राख्युं छे. तेमां एम कह्युं छे केः—अध्रुववर्गणाना उपर प्रदेशनी वृद्धिए अनंतीनो पण संभव थतो नथी. एवी प्रथम शून्यवर्गणा छे. तेना उपर एकरुप विगेरेनी वृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी प्रत्येक शरीरनी वर्गणा थायछे. जघन्यथी क्षेत्रपल्योपमना असंख्येय भागना प्रदेश जेटला गुणी उत्कृष्ट छे, तेना उपर एक एकरुपनी वृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी अनंतीज शून्य वर्गणाओ थाय छे.

जघन्य वर्गणाथी उत्कृष्टी असंख्य भाग प्रदेशगुणी छे, तेनो असंख्येय भाग पण असंख्येय लोकाकाशरूप छे. आ प्रमाणे बीजी शून्यवर्गणा छे, तेना उपर एकरूपादि वृद्धिए बादर निगोद शरीरनी वर्गणा जघन्यथी छे, अने क्षेत्र पल्योपमना असंख्येय भाग प्रदेशगुणी उत्कृष्टी छे, तेना उपर एकरूप विगेरेनी वृद्धिथी जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी त्रीजी शून्यवर्गणा छे. जघन्यथी असंख्येय गुणी उत्कृष्टी छे.

प्रश्नः—गुणाकार क्यो छे ? उत्तरः—आंगळना असंख्येय भाग प्रदेशनी राशिना आवलिका काळना असंख्येय भाग समय प्रमाणे वारंवार वर्गमूळना करवाथी असंख्येय भाग प्रदेश प्रमाणे छे, तेना उपर एक एकरूपनी वृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी सूक्ष्म निगोद शरीरनी वर्गणा छे, जघन्यथी उत्कृष्ठि आवलिकाना काळना असंख्येय भाग समयना गुणाकार जेटली छे.

तेना उपर एक एक रूपनी वृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी चोथी शून्यवर्गणा छे. जघन्यथी उत्कृष्टी चोखुणो करेलो लोकनी असंख्येय श्रेणिओ जेटली छे, अने ते प्रतरना असंख्येय भाग बराबर छे, तेना उपर एक एकरूपनी वृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी महास्कंध वर्गणा छे, जघन्यथी उत्कृष्ट क्षेत्र पल्योपमना असंख्येय अथवा संख्येयगुणा छे.

आ प्रमाणे संक्षेपथी वर्गणाओ कही छे, विशेष जाणवा इच्छनारे कर्मप्रकृति नामनो ग्रंथ जोवो जोइए.
हवे प्रयोग कर्म कहे छे—वीर्यांतरायना क्षय उपशमथी प्रगट थएल वीर्यवाला आत्माथी प्रकर्षे करीने योजाय ते प्रयोग छे. ते मन वचन अने कायाना लक्षणवालो पंदर प्रकारे छे तेनी विगत.

मन योगमां—सत्य, असत्य, मिश्र, तथा न सत्य न असत्य एम चार प्रकारे छे, तेमज वचन योग पण चार प्रकारे छे अने काया योग सात प्रकारे छे, ते बतावे छे. (१) औदारिक (२) औदारिक मिश्र (३) वैक्रिय (४) वैक्रिय मिश्र (५) आहारक (६) आहारक मिश्र (७) कार्मण योग एम पंदर भेद थया तेमां मनयोग मनपर्याप्तिथी पर्याप्त थएला मनुष्य विगेरेने छे. वचन योग—बे इन्द्रिय विगेरे जीवोने छे. औदारिक योग तिर्यंच तथा मनुष्यने शरीर पर्याप्तिनी पछीथी छे. त्यार पहेलां मिश्र जाणवो अथवा

केवळी भगवंतने समुद्घातनी अवस्थामां बीजा छट्ठा अने सातमा समयमां छे. वैक्रियकाय योग देव नारक अने बादर वायुकायने छे, अथवा बीजा कोइ वैक्रिय लब्धिवालाने होय छे. तेनो मिश्र योग देवता नारकिने उत्पत्ति समये छे अथवा नवुं वैक्रिय शरीर बनावनार बीजाने पण होय छे, आहारक योग चौद पूर्वी साधु ज्यारे आहारक शरीरमां स्थित होय छे त्यारे छे अने तेनो मिश्र-योग निर्वर्त्तना (बनाववा) ना काळमां होय छे.

कार्मण योग—विग्रह गतिमां अथवा केवलि समुद्घातमां त्रीजा चोथा पांचमा समयमां छे.

आ प्रमाणे पंदर प्रकारना योगवडे आत्मा आठ प्रदेशने छोडीने तपेला वासणमां उछळता पाणीनी माफक उद्वर्तमान सर्व आत्माना प्रदेशोवडे आत्मा प्रदेशनी अवष्टब्ध आकाश भागमां रहेल कार्मणशरीरने योग्य कर्मदळने जे बांधे छे तेने प्रयोगकर्म कहे छे. कह्युं छे के—

" जाव णं एस जीवे एयइ, वेयइ, चलइ, फंदईत्यादि ताव णं अट्ठविहबंधए वा सत्तविहबंधए वा छव्विहबंधए वा एगविहबंधए वा नो णं अबंधए " ।

ज्यां सुधी आ जीव हाले छे. वधारे हाले छे. चाले छे. फरके छे. त्यां सुधी आठ प्रकारना कर्मनो बंधक सात प्रकारना छ प्रकारना अथवा एक प्रकारना पण कर्मनो बंधक छे, पण ते अबंधक होतोज नथी.

समुदान कर्म—(समुदान शब्दनी उत्पत्ति सं. तथा आ उपसर्ग साथे दा. धातु जे देवाना अर्थमां छे, तेनुं ल्युट अंतथी पृषोदर विगेरे

तेमां प्रयोग कर्मवडे एक रूप पणे ग्रहण क-
पाठ वडे आकारनो उकार आदेश थवाथी समादानने बदले समुदान शब्द थयो छे:)
रेली कर्म वर्गणाओनी सम्यक् मूळ उत्तर प्रकृति स्थिति अनुभाव अने प्रदेश बंधवाळा भेदवडे आ उपसर्ग (जेनो अर्थ मर्यादा छे ते.)
वडे देश (थोडो) सर्व उपघाती रुप वडे तेज प्रमाणे स्पृष्ट निधत्त निकाचित एवी त्रण अवस्था वडे जे स्वीकार करवो तेज समुदान
छे, अने ते कर्मनुं नाम समुदान कर्म छे.

तेमां मूळ प्रकृतिनो बंध ज्ञानआवरणीय विगेरे आठ प्रकारे छे, अने उत्तर प्रकृतिनो बंध जुदो जुदो छे, ते बतावे छे.

ज्ञान आवरणीयना पांच भेद छे. मति श्रुत अवधि मनपर्याय तथा केवळ एम पांच भेदे ज्ञान छे. तेनुं आवरण करनार सर्व
घाती फक्त केवळज्ञाननुं छे.

अने बाकीना चारनां आवरण देशघाति अथवा सर्वघाति छे.

दर्शनावरणीय कर्म नव प्रकारे छे. तेमां पांच प्रकारनी निद्रा तथा चार प्रकारनुं दर्शन. तेने आवरण करनार जाणवुं. निद्रा
पंचक छे. ते मेळवेला दर्शननी लब्धि तेना उपयोगने उपघात करनार छे, अने दर्शन चतुष्टय ते दर्शनलब्धिनी प्राप्तिनेज आवरण
करनार छे. अहींयां पण केवळ दर्शनआवरण सर्वघाति छे. बाकीना देशथी छे.

वेदनीयकर्म, साता अने असाता एम बे भेदे छे. मोहनीयकर्म, दर्शनचरित्र भेदथी बे प्रकारे छे. तेमां दर्शनमोहनीय मिथ्या-
त्वादि उदयमां आवतुं त्रण भेदे छे, अने बंधमां तो एक प्रकारे छे.

चारित्रमोहनीय सोळ कषाय, नव नोकषाय एम पच्चीस प्रकारे छे.

अहींयां पण मिथ्यात्व, मोहनीय, तथा संज्वलन कषाय छोडीने बार कषायो सर्वघाति छे, अने बाकीना देशघाति छे.

आयुष्यकर्म चार प्रकारे छे. ते नारकादि भेदवाळां छे. नामकर्म बेताळीस भेदे छे, तेमां गति विगेरे भेद छे. वाळी उत्तर प्रकृतिथी ताणुं (९३) भेद छे, तेनो खुलासो कहे छे. गति नारक; विगेरे चार भेदे छे. जाति एकेन्द्रिय विगेरे पांच छे. शरीरो औदारिक विगेरे पांच छे. औदारिक वैक्रिय, अने आहारक. एम त्रण शरीरनां अंगोपांग त्रण छे.

निर्माणनाम सर्वजीव शरीरनां अवयवनुं निष्पादक (बनावनार) होवाथी एक प्रकारे छे.

बंधननाम औदारिक विगेरे कर्मवर्गणानुं एकपणुं करनार पांच प्रकारे छे, तथ संघातनाम औदारिक विगेरे कर्मवर्गणानी रचना विशेपकरीने स्थापनार ते पांच प्रकारे छे. संस्थाननाम समचतुरस्र (बधी बाजु सरखुं) विगेरे छ प्रकारे छे.

संहनननाम वज्ररुषभनाराच विगेरे छ प्रकारे छे.स्पर्श आठ प्रकारे छे.रस पांच प्रकारे छे. गंध बे प्रकारे छे अने वर्ण पांच प्रकारे छे—

अनुपूर्वी नारक विगेरे चार प्रकारे छे.

विहायोगति प्रशस्त तथा अप्रशस्त एम बे भेदे छे. अगुरुलघु उपघात पराघात आतप उद्योत उच्छवास प्रत्येक साधारण त्रस स्थावर शुभ अशुभ सुभग दुर्भग सुस्वर दुःस्वर सूक्ष्म बादर पर्याप्तक अपर्याप्तक स्थिर अस्थिर आदेय अनादेय यश कीर्ति अयश कीर्ति तीर्थंकरनाम आ बधी प्रकृतिओ दरेक एकज प्रकारनी छे (आनु वधारे वर्णन पहेला कर्म ग्रंथमां नाम कर्मनी प्रकृतिमांजुओ)

गोत्र कर्म—ते उंच अने नीच एम वे भेदे छे.

अंतराय कर्म—दान, लाभ, भोग उपभोग, वीर्य एम पांचने अंतराय करनार पांच भेदे छे. आ प्रमाणे मूळ तथा उत्तर प्रकृति बंधनो भेद बताव्योछे.

हवे प्रकृतिबंधना कारणो बतावे छे.

"पडिणीयमंतराइय उवघाए तप्पओस णिण्हवणे ॥ आवरणदुगं बन्धइ भूओ अच्चासणाए य ॥ १ ॥

ज्ञानआवरणनुं तथा दर्शनआवरणनुं कर्म केम बांधे ते बतावे छे. ज्ञान भणनारनुं शत्रुपणुं करे, अंतराय करे उपघात करे, द्वेष करे भणावनारनो गुण भूले अथवा ज्ञानी अथवा ज्ञाननी आशातना (निंदा) करे ज्ञान दर्शन ए बन्ने प्रकारनुं आवरण बंधाय छे.

भूयाणुकंपवयजोगउज्जुओ खंतिदाणगुरुभत्तो । बंधइ भूओ सायं विवरीए बंधई इयरं ॥ २ ॥

जीवोनी दया व्रतयोगमां उद्यम करे क्षमा राखे दान आपे सद्गुरुनो भक्त होय आवो जीव सातावेदनीय कर्म बांधे, अने तेनाथी उलटो एटले जीव हिंसा करनार विगेरे दुर्गुणवाळो जीव असातावेदनीयकर्म बांधे.

अरहंतसिद्धचेइयतव सुअगुरुसाधुसंघपडिणीओ । बन्धइ दंसणमोहं अणंतसंसारिओ जेणं ॥ ३ ॥

तीर्थंकर सिद्ध चैत्य, तप, श्रुत, गुरु, साधु, संग आजे धर्मना पोषको छे तेमनो प्रत्यनीक (शत्रु) थाय तो ते पापवडे दर्शन मोहनीयकर्म अने अनंत संसार भ्रमणनुं कर्म बांधे.

तिव्वकसाओ बहुमोह परिणतो रागदोससंजुत्तो । बंधइ चरित्तमोहं दुविहंपि चरित्तगुणघाई ॥ ४ ॥

तीव्र कषायवालो (घणो क्रोधी विगेरे) बहु मोहवालो रागद्वेषथी भरेलो ते जीव बंने प्रकारनो चारित्र मोह जे चारित्र गुणनो घातक छे तेने बांधे छे.

मिच्छद्दिट्ठी महारंभपरिग्गहो तिव्वलोभ णिस्सीलो । निरआउयं निबंधइ पावमती रोद्दपरिणामो ॥ ५ ॥

मिथ्यादृष्टि महान आरंभ परिग्रहवाळो, घणो लोभीनिःशील, (दुराचारी.) जीव पापनी बुद्धिवाळो होवाथी तथा मनमां रौद्र (दुष्ट) परिणामवाळो होवाथी नरकनुं आयुष्य वांधे छे—

उम्मग्गदेसओ मग्गणासओ गूढहियय माइल्लो । सढसीलो, अ ससल्लो, तिरिआउं बंधई जीवो ॥ ६ ॥

उन्मार्ग (कुमार्ग) मां दोरनार सुमार्गनो नाशक गूढ हृदयवाळो, कपटी शठता करनारो, शल्यवाळो ते जीव तिर्यंचनुं आयुष्य बांधे छे.

पगतीए तणुकसाओ दाणरओ सीलसंजमविहूणो । मज्झिमगुणेहिं जुत्तो, मणुयाउं बन्धई जीवो ॥ ७ ॥

स्वभावथीज क्रोधादि ओछा होय, दानमां रक्त होय, शील संयममा ओछाशवाळो होय, मध्यम गुणे करीने युक्त होय, ते जीव मनुष्यनुं आयुष्य वांधे छे.

अणुव्वयमहव्वएहि य बालतवोऽकामनिज्जराए य । देवाउयं णिबंधइ, सम्मद्दिट्ठी उ जो जीवो ॥ ८ ॥

अणुव्रत, महाव्रत, पाळे. तथा बाळ तप करे—अकामनिर्जरा करे अने सम्यक् दृष्टि होय. ते जीव देवनुं आयुष्य बांधे छे—

मणवयणकायवंको माइल्लो गारवेहिं पडिबद्धो । असुभं बंधइ नामं तप्पडिपक्खेहिं सुभनामं ॥ ९ ॥

मन वचन कायाथी वक्र होय, अहंकारमां चढेलो होय. आ दुर्गुणोथी अशुभनामकर्म बांधे छे, अने तेनाथी उलटो एटले मन वचन कायाथी सरळ होय, निष्कपट होय; एवा सद्‌गुणवाळो शुभनाम कर्म वांधे छे.

अरिहंतादिसु भत्तो सुतरुई पयणुमाण गुणपेही । बन्धइ उच्चागोयं विवरीए बन्धई इयरं ॥ १० ॥

जिनेश्वर विगेरे पंच परमेष्ठिनो भक्त होय; सूत्र भणवानी रुचीवाळो होय; अहंकारी न होय; गुणोनो रागी होय; ते उंच गोत्र बांधे छे. अने तेनाथी उलटा गुण (दुर्गुणवाळो) नीच गोत्र वांधे छे.

पाणवहादीसु रतो, जिणपूयामोक्खमग्गविग्घयरो । अज्जेइ अंतरायं, ण लहइ जेणिच्छयं लाभं ॥ ११ ॥

प्राणवध (जीवहिंसा) विगेरे पापमां रक्त जिनेश्वरनी पूजा तथा मोक्षमार्गनां जे कृत्य तेमां विघ्न करनारो होय; ते अंतराय कर्म वांधे छे, अने ते कर्मना प्रतापथी इच्छित वस्तु मेळवतो नथी.

स्थितिबन्ध—मूळ अने उत्तर प्रकृतिओनो उत्कृष्ट अने जघन्य (सौथी थोडो) एवा बे भेद छे, तेमां उत्कृष्टथी मूळ प्रकृति ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय वेदनीय अंतराय ए चार कर्मनी ३३ कोडाकोडी सागरोपम स्थिति छे. अने जेटली कोडाकोडी स्थिति होय; तेटला सेंकडा वर्षो सुधी अवाधा होय; त्यारपछी प्रदेशथी अथवा विपाकथी कर्मनो अनुभव (भोगववुं) थाय ए प्रमाणे दरेक कर्मनी स्थितिमां जाणवुं.

मोहनीयकर्मनी ७० कोडाकोडी सागरोपम छे. नाम अने गोत्रनी २० कोडाकोडी सागरोपम छे. आयुष्यकर्मनी फक्त ३३ सागरोपमनी छे, तेमां पूर्वकोडीनो त्रीजो भाग अबाधा काळ छे.

हवे जघन्यथी कहे छे—ज्ञानदर्शननां, आवरण, मोहनीय, अंतराय, ए चार कर्मना जघन्यबन्धनी स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी छे. नामगोत्रनी आठ मुहूर्त्तनी छे वेदनीयकर्मनी १२, अने आयुष्यनी जे सौथी क्षुल्लक (नानो) भव छे–ते निरोगी मनुष्यना श्वासोश्वासना काळना लगभग १७मे भागे छे. (युवान माणसना एक श्वासोश्वासमां निगोदना जीवना १७ भव लगभग थाय छे.) हवे बन्ने उत्कृष्ट जघन्य बन्धने उत्तर प्रकृति आश्रयी कहे छे.

मति श्रुत अवधि मनःपर्याय केवळ आवरण निद्रा पंचक चक्षु दर्शन विगेरे चतुष्क असाता वेदनीय तथा दान अंतराय विगेरे पांच आ बधीनी एटले २० उत्तर प्रकृतिनी ३० कोडाकोडी सगरोपम छे. स्त्रीवेद साता वेदनीय मनुष्य गति तथा अनुपुर्वी ए चार प्रकृतिनी १५ कोडाकोडी सागरोपम छे.

मिथ्यात्व मोहनीयनी ७०नी छे. अने १६ कषायनी ४० कोडाकोडी सागरोपम छे.

(१) नपुंशक वेद (२) अरति (३) शोक (४) भय (५) जुगुप्सा (६) नरक (७) तिर्यंच ए बे गति तथा (८) एकेन्द्रिय (९) पंचेन्द्रिय जाति (१०) औदारिक (११) वैक्रिय शरीर तथा ते (१२-१३) बन्नेनां अंगोपांग तथा (१४) तैजस (१५) कार्मण (१६) हुंडक संस्थान (१७) छेल्लुं संहनन (१८) वर्ण, (१९) गध (२०) रस. (२१) स्पर्श. (२२) नरक. (२३) तिर्यंच अनुपुर्वी (२४)

अगुरुलघु(२५) उपघात [२६] पराघात [२७] उच्छवास [२८] आतप [२९] उद्योत. [३०] अप्रशस्त विहायोगति [३१] त्रस [३२] स्थावर [३३] बादर [३४] पर्याप्तक [३५] प्रत्येक [३६] अस्थिर [३७] अशुभ. [३८] दुर्भग. [३९] दुःस्वर. [४०] अनादेय (४१) अयश कीर्ति,(४२) निर्माण. (४३) नीच गोत्र. ए प्रमाणे ४३ प्रकृतिनी २० कोडाकोडी सागरोपम छे.

(१) पुंवेद. (२) हास्य (३) रति (४) देवगति तथा (५) अनुपूर्वी ए बे तथा. ६, पहेलुं संस्थान ७, संहनन ८, प्रशस्त विहायोगति ९, स्थिर १०, शुभ. ११, सुभग १२, सुस्वर १३, आदेय १४, यश कीर्ति १५, उंच गोत्र ए १५ उत्तर प्रकृतिनी १० कोडाकोडी सागरोपम स्थिति छे. न्यग्रोध संस्थान बीजुं संहनन ए बेनी १२ कोडाकोडी सागरोपम स्थिति छे.

त्रीजुं संस्थान नाराच संहनन ए बन्नेनी १४ तथा कुब्ज संस्थान अर्धनाराच संहनननी १६ तथा १, वामन संस्थान २, कीलिका संहनन तथा ३, बे ४, त्रण ५, चार इन्द्रि जाति तथा ६, सूक्ष्म ७, अपर्याप्तक ८, साधारण ए ८ प्रकृतिनी १८, तथा आहारक शरीर तथा अंगोपांग तथा तीर्थंकर नाम ए त्रणनी एक कोडाकोडी सागरोपम स्थिति छे. अने ते दरेकनी अबाधा भिन्न अंतर्मुहुर्त्त काळनी छे. देव नारकिनुं आयुष्य ३३ सागरोपम छे अने तिर्यंच मनुष्यनुं आयुष्य त्रण पल्योपम छे. अने पूर्व कोडीनो त्रीजो भाग अबाधा छे. आ प्रमाणे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध कह्यो.

हवे जघन्य स्थितिबन्ध कहे छे—मति विगेरे ५ तथा चक्षु दर्शन आवरण विगेरे ४, संज्वलन लोभ दानादिक अंतराय पंचक ए १५ प्रकृतिनो अंतर्मुहुर्त्त स्थिति बन्ध छे. अने अबाधा पण अंतर्मुहुर्त छे.

निदा पंचक तथा असाता वेदनिय ए छनुं एक सागरोपमना सातमा भागना त्रण लेवा १×३/७) ते३/७ सागरोपमथी पल्योपमनो असंख्येय भाग ओछो लेवो.

साता वेदनीयनो काळ १२ मुहुर्त्त छे, अने अंतर्मुहूर्त्तनी अबाधा छे. तथा मिथ्यात्वनी सागरोपममां पल्योपमथी असंख्येय भाग ओछो लेवो.

पहेला १२ कषाय ते सागरोपमना ४/७ लेवा अने पल्योपमथी असंख्येय भाग ओछो लेवो.

संज्वलन क्रोधनी बे मास छे. माननी एक मास, मायानी अडधो मास; पुंवेदनी आठ वर्ष स्थिति छे. आ बधामां अंतर्मुहूर्त्तनी अबाधा छे.

बाकीना कषाय मनुष्य तिर्यंच गति पन्चेन्द्रिय जाति औदारिक तथा तेनां अंगोपांग तथा तैजस कार्मण छ संस्थान तथा संहनन वर्ण, गंध, रस. स्पर्श, तिर्यंच, मनुष्य, अनुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, पराघात, उच्छवास आतप उद्योत, प्रशस्त, अप्रशस्त विहायोगति, यशः कीर्ति. छोडीने त्रस आदि २० प्रकृति निर्माण नीचगोत्र देवगति अनुपूर्वी. मळीने २ तथा नरकगति अनुपूर्वी. २ वैक्रिय शरीर तथा अंगोपांग एम ६८ उत्तर प्रकृतिनी स्थिति २/७ सागरोपम अने पल्योपमनो असंख्येय भाग ओछो छे. तेमां अंतर्मुहूर्त्तनी अबाधा छे. वैक्रिय षट्कनी हजार सागरोपमना २/७ भाग लेवा. तेमां पल्योपमनो असंख्येय भाग ओछो छे. तेमां अंतर्मुहूर्त्तनी अबाधा छे. आहारक शरीर तेनुं अंगोपांग तथा तीर्थंकर नामनी सागरोपम कोटीकोटी स्थिति छे. भिन्न अन्तर्मुहूर्त्त अबाधा छे.

प्रश्न—उत्कृष्ट पण एटलीज स्थिति कही त्यारे जघन्य साथे तो शुं भेद छे?

उत्तर—उत्कृष्टथी संख्येय, गुणहीन जघन्य छे. यश, कीर्ति तथा उंच गोत्र ए बन्नेनी स्थिति आठ मुहुर्त्त छे. अने अन्तर्मुहुर्त्तनी अबाधा छे. देव अने नारकिनुं आयुष्य. दशहजार वर्षनुं छे. अने अंतर्मुहुर्त्तनी अबाधा छे. तिर्यंच मनुष्यना आयुष्यनी स्थिति, क्षुल्लक भव अने अंतर्मुहुर्त्तनी अबाधा छे. वन्धन, संघात, ए बन्नेनी औदारिक विगेरे शरीरनी साथे रहेवाथी तेनी अंदरज उत्कृष्ट जघन्य भेद जाणवो स्थितिवन्ध कह्यो

हवे अनुभव वन्ध कहे छे—तेमां शुभ, अशुभ, प्रयोग कर्मथी उत्पन्न थएल प्रकृति, स्थिति, अने प्रदेशरुप, कर्म प्रकृतिनुं तीव्र मंद अनुभवपणे जे अनुभवाय (भोगवाय) ते अनुभव (रस) छे, ते रस एक बे त्रण चार स्थान भेद वडे जाणवो.

तेमां अशुभ प्रकृतिनुं कोपातकी ना उकाळेला रस जेवो तेमां अडधो रहे. त्रीजो भाग रहे. चोथो भाग रहे ते अनुक्रमे तीव्र अनुभव जाणवो. [कडवा पदार्थना रसने उकाळतां पाणी जेम ओछुं रहे तेम कडवास वधारे थाय छे, तेम अशुभ कर्मनुं दळ जेम वधारे चीकणुं थाय तेम वधारे दुःख भोगववुं पडे छे.]

हवे मंद अनुभव कहे छे—मंद रसनो अनुभव ते जाइ [फुल] रसमां एक बे त्रण चारगणुं पाणी वधारे नाखवाथी रसनी सुगंधी ओछी थइ जाय छे, ते प्रमाणे कर्मनी पण चीकणास ओछी होय तो ओछुं दुःख भोगववुं पडे छे.

शुभ प्रकृतिनो रस दुध तथा शेरडीना रस जेवो मीठो जाणवो. तेमां पण पूर्व माफक योजना करवी, एटले कोषातकी तथा शेरडीना रसमां पाणीनुं एक बिंदु विगेरे नाखवाथी अथवा रस वधारे नाखवाथी तेना भेदोनुं अनंतपणुं जाणवुं. अहीं आयुष्यमां

चार प्रकृतिओ भवविपाकिनी छे. (ते भवमां गया पछी भोगवाय छे. तथा चार अनुपूर्वीओ क्षेत्रविपाकीनी छे.) ते क्षेत्रोमां जतां उदयमां आवे छे.

शरीर, संस्थान, अंगोपांग, संघात, संहनन, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, पराघात, उद्योत, आतप, निर्माण, प्रत्येक, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ तथा अशुभ रुपवाळी छे, ते बधीए पुद्गलविपाकीनी छे, अने बाकीनी ज्ञान आवरण विगेरे जीवविपाकीनी छे, एम अनुभाव बंध कह्यो.

हवे प्रदेशबंध कहे छे—ते एक प्रकार विगेरे बंधकनी अक्षेपाए थाय छे, तेमां कोइ एक प्रकारे कर्म बांधे, ते वखते प्रयोग कर्म वडे एक समयमां ग्रहण करेला पुद्गलो सातावेदनीयना भाववडे विशेषे करीने परिणमे छे, पण छ प्रकारनुं कर्म बांधनारने आयुष्य तथा मोहनीयकर्म छोडीने छ कर्मनो बंध जाणवो; तथा सात प्रकारे बांधनारने आयुष्य छोडीने सात प्रकारे जाणवो; तथा आठ प्रकारनां कर्म बांधनारो ते आठ प्रकारे जाणवो; तेमां पहेला समयमां ग्रहण करेलां पुद्गलो समुदानवडे, बीजा विगेरे समयमां अल्प बहुप्रदेशपणे आ कर्मवडे स्थापे छे.

तेमां आयुष्यनां थोडां पुद्गलो छे, तेथी विशेष अधिकनाम गोत्रना प्रत्येकना छे, ते बंने (बराबर) तुल्य छे, तेथी विशेष अधिक ज्ञानदर्शन–आवरणना तथा अंतरायना देरेकना छे, तेथी विशेष अधिक मोहनीयकर्मना छे.

प्रश्नः—तेथी विशेष अधिक एम निर्द्धारणमां पांचमी विभक्ति छे, ते पा. २–३ ४२ सूत्र प्रमाणे कराय छे, एटले एनो अर्थ

एवो छे के, विभाग ते विभक्त तेमां पांचमी विभक्ति लेतां; जेमां अत्यंत विभाग होय; तेमांज थाय छे. जेमके मथुरा नगरीना रहेवासीथी पाटलीपुत्रना रहेवासी वधारे रुपवाळा छे, पण अहीं कर्म पुद्गळोनुं सदा एकपणुं छे, ते प्रमाणे अवस्थाओनुंज बुद्धि प्रमाणे बहुप्रदेश विगेरेना गुणवडे प्रथक् करवानुं बताव्युं; तेमां छट्ठी अथवा सातमी विभक्ति वापरवी ठीक छे. जेमके गायोना अथवा गायोमां आ काळी गाय वधारे दुधवाळी छे.

उत्तरः—तमे बतावेलो दोष बराबर नथी. जेमां अवधि (मर्यादा) अने अवधिवाळो सामान्यवाचक शब्द योजीए, त्यां छट्ठी सातमी विभक्ति होय छे, अने ज्यां निर्द्धारण पा. २–३–४१ आ सूत्रवडे कराय छे. जेम गायोमां काळी गाय सौथी वधारे दुधवाळी छे. मनुष्यमां पटनाना रहेवाशी वधारे पैसादार छे. तेम कर्मवर्गणाना पुद्गलो वेदनीयकर्ममां बहु वधारे छे, पण जेमां विशेष वाचीशब्द अवधिपणे लइए त्यां पांचमी विभक्तिज वपराय जेमके—खंड, मुंड, शवल, शावलेय, धवल धावलेय आ व्यक्तिओथी काळी गाय वधारे दुधवाळी छे. अहींआं तेवो विभाग पोते कारण नथी अथवा विभाग विना छे. जेथी मथुरा पाटलीपुत्रकादि विभाग वडे विभक्तोनुं सामान्य मनुष्य विगेरे शब्द उच्चारणमां छट्ठी सातमी विभक्ति थाय छे. पण ज्यां मथुरांना रहेवासी विगेरेमां कांइ पण विशेष अवधिपणे लेवाय तेमां कार्यवशथी एक स्थानमां पण पांचमी विभक्तिज लेवाय, तेज प्रमाणे अहींआं कर्मवर्गणाना एकपणामां तेना विशेषना अवधिपणे उपादान करवाथी पांचमीज विभक्त योग्य छे. तेथी विशेष अधिक वेदनीयमां छे. आ प्रमाणे प्रदेशबंध कह्यो. तथा समुदान कर्म पण कह्यु.

हवे इर्यापथिक कहे छे—इर्, धातुनो अर्थ गति अने प्रेरणा छे. अने भावमां य प्रत्यय लागवाथी स्त्रीलिंगे इर्या शब्द थाय छे, तेनोपंथ ते इर्या पंथ छे तेनो आश्रय थाय ते इर्यापथिक जाणवी. प्रश्न—इर्यानो पंथ क्यो छे ! के जेने आश्रयी पथिकी थाय छे?

उत्तर—आ व्युत्पत्ति (उत्पन्न थवाने) निमित्त छे कारण के ते उभा रहेनारने पण थाय छे. पण प्रवृत्ति निमित्त तो स्थितिनो अभाव छे, अने ते उपशांत क्षीणमोह तथा सयोगीकेवळीने होय छे कारण के संयोगीकेवळीओ बेठेला होय तोपण निश्चयथी सूक्ष्म गोत्रना संचारवाला होय छे.

"केवली णं भंते ! अस्सिं समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा ओगाहित्ता णं पडिसाहरेज्जा, पभू णं भंते ! केवलो तेसु चेवागासपदेसेसु पडिसाहरित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे, कहं ?, केवलिस्सणं चलाइं सरीरोवगरणाइं भवंति, चलोवगरणत्ताए केवली णो सञ्चाएति तेसु चेवागा सपदेसेसु हत्थं वा पायं वा पडिसाहरित्तए"

प्रश्न—हे भगवंत ? जे समयमां केवळज्ञानीए जे आकाश प्रदेशोमां हाथ अथवा पग पहेलां मुकीने पाछो ते जग्याए लइ शके?

उत्तर—हे गौतम. ते समर्थ नथी. प्रश्न—शा माटे. ? उत्तर—केवळज्ञानीना पोतानाशरीरना भागो चलायमान होय छे, तेथी करीने जे भागमां प्रथम हाथ पग मूक्या होय त्यांथी पाछा लेतां सहेजसाज वांकुं थइ जाय. एटले थोडो फेर पडी जाय.

आप्रमाणे वधारे सूक्ष्म शरीरना संचाररूप योगवडे जे कर्म बंधाय ते इर्यामां थएल होवाथी इर्यापथिक छे.कारणके तेमां

गतिनोज हेतु छे, अने ते बे समयनो छे एटले पहेला समयमां बांधे अने बीजा समयमां भोगवे अने ते कर्मनी अपेक्षाए त्रीजा समयमां अकर्मता थाय छे.

प्रश्न—कवी रीते ? उत्तर—जे प्रकृतिथी सातावेदनीय छे, ते कषाय विनानुं छे, अने तेथी स्थितिनो अभाव छे, तेथी बंधाववानी साथे खरी पडे छे, अनुभावथी अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थएल देवता अतिशय सुखने भोगवे, ते प्रदेशथी स्थुल लुख्खा धोळा विगेरे बहु प्रदेशवाला छे. कह्युं छे के—

अप्पं बायरमउयं बहुं च लुक्खं च सूक्किलं चेव । मंदं महव्वतंतिय सातावहुलं च तं कम्मं ॥ १ ॥

स्थितिथी अल्प छे, कारण के त्यां स्थितिनो अभाव छे, परिणामथी बादर छे, अने अनुभावथी मृदु (कोमळ) अनुभाव छे, प्रदेशथी बहु छे, अने स्पर्शथी लुख्खुं छे, वर्णथी शुक्र (धोळुं) छे लेपथी मंद छे जेमके करकरी भूकीनी मुटी भरीने पालीस करेली भीत उपर नाखतां जेम अल्प (नही जेवो) लेप थाय, तेम महाव्यये करेलुं ते एक समयमांज बधुं दूर थइ जाय छे, सातावेदनीना घणापणाथी अनुत्तर विमानना देवतानुं सुखनुं घणापणुं छे (सुख भोगववा छतां तेमने अल्पमोहथी नवां अशुभ कर्म बंधातां नथी) इर्यापथिक कह्युं.

हवे आधा कर्म कहे छे—जे निमित्तने आश्रयी पूर्वे कहेला आठे प्रकारना कर्म बन्धाय; ते आधाकर्म छे, अने ते शब्द, स्पर्श, रस, रुप, अने गंध विगेरे छे, जेमके शब्द विगेरे काम गुणना विषयनो रसीयो सुखनी इच्छाथी मोहमां जेनी बुद्धि हणाइ गइ छे,

एवो जीव खरीरीते ते विषयोमां सुख नथी, छतां तेमां सुखनो खोटो आरोप करीने तेने भोगवे छे, तेथी कह्युं छेः—

"दुःखात्मकेषु विषयेषु सुखाभिमानः, सौख्यात्मकेषु नियमादिषु दुःख बुद्धिः। उत्कीर्णवर्णपदपङ्क्ति रिवान्यरूपा, सारूप्यमेति विपरीतगति प्रयोगात् ॥ १ ॥" (वसंत तिलका)

दुःखरुप-विषयमां सुखनुं अभिमान करीने खरा सुखरुप नियम विगेरेमां जे मूर्ख माणस दुःखरुप माने छे, ते माणस कोतरेला अक्षरपदनीश्रेणी माफक अन्यरुपे छतां ते रुपवाळी विपरित गतिना प्रयोगथी तेने खरापणे माने छे. एनो भावार्थ आ छे के, कर्म निमित्तथी थयला मनोहर अथवा कठोर शब्द विगेरेज आधाकर्म छे (एटले रागद्वेष करवाथी चीकणा कर्म बंधाय छे.)

हवे तपकर्म कहे छे—ते आठ प्रकारना कर्मने बांधेला स्पर्श थयेला निधत्त (मळीगयेला) निकाचित (पका जोडायेला) एवा एकरुपे थयला कर्मने पण निर्जरा करनार ए तप छे, ते बाह्य अने अभ्यंतर एम बे भेदे बार प्रकारे छे ते तपकर्म छे.

हवे कृतिकर्म कहे छे—तेज आठ कर्मने दुर करनार अर्हत् सिद्ध आचार्य उपाध्याय संबंधी नमस्कार विगेरे छे.

हवे भावकर्म कहे छे—अबाधाने उल्लंघी पोताना उदयमां आवेलां; अथवा उदीरणा करवा वडे उदयमां लावेला जे पुद्गळो छे, ते प्रदेश तथा विपाकवडे भव, क्षेत्र, पुद्गळ, जीवोमां अनुभाव करावे; ते भावकर्म शब्दना नामे ओळखाय छे. आ प्रमाणे नाम विगेरे दश प्रकारना निक्षेपावडे कर्मनी व्याख्या कही; पण अहींयां समुदान कर्मथी ग्रहण करेला आठ प्रकारना कर्मवडे अधिकार छे; ते नीचली अडधी गाथावडे बतावे छे.

अट्ठविहेण उ कम्मेण,एत्थ होई अहीगारो ॥ १८४ ॥

आठ प्रकारना कर्म वडे अहीं अधिकार छे अने एज प्रमाणे सूत्र अनुगमवडे सूत्र बरोबर उच्चारतां निक्षेप निर्युक्ति अनुगमवडे दरेक पदमां नामादि निक्षेपा करीने व्याख्यान कर्युं. हवे ते उत्तरकाळना सूत्रनुं विवरण करे छे.

जे गुणे से मूलट्ठाणे, जे मूलट्ठाणे से गुणे । इति से गुणट्ठी महया परियावेणं पुणो पुणो रसे पमत्ते पिया मे माया मे भज्जा मे पुत्ता मे धुआ मे ण्हुसा मे सहिसयणसंगंथसंथुआ मे, बिवित्तुवगरण-परिव्वट्टणभोयणच्छायणं मे । इच्चत्थं गढ्ढिए लोए अहो य राओ य परितप्पमाणे कालाकालसमुट्ठाई, संजोगट्ठी अट्टोलोभीआलुंपेसहसाकारे, वेणिविट्ठा चित्ते, एत्थ सत्थे पुणो, पुणो अप्पं च खलु आ-उयं इह मेगेसिंमाणवाणं तंजहा ॥ ६२ ॥

पूर्वना सूत्र साथे तथा ते अगाउना सूत्रो साथे ६२ मा सूत्रनो संबंध बताववो ते आ प्रमाणे छे, गया सूत्रमां कह्युं हतुं केः—“से-हुमुणि” इत्यादि. ते मुनि परिज्ञातकर्मा छे, जेने आ मूळ गुण विगेरे मळेला छे.

परंपर सूत्र संबंध आ प्रमाणे छे. ‘सेजं पुण’ विगेरे एटले जे पोतानी बुद्धिवडे अथवा तीर्थंकरना उपदेशथी, अथवा तीर्थंकर शिवाय बीजा आचार्य पासेथी सांभळीने जे जाणे; अने तेनो विचार करे; ते जे गुणु छे, ते मूळ स्थान छे, एमःबीजां सूत्रो साथे

संबंध छे, तथा पहेला सूत्र साथे आ संबंध छे. “सुयंमेआउसंतेणं” इत्यादि में भगवान पासे आ प्रमाणे सांभळ्युं विगेरे छे.

प्रश्न—में शुं सांभळ्युं ? उत्तर—जे गुणो सेमूल ठाणे इत्यादि जे गुजरातीमां सर्वनाम छे, ते एक वचनमां छे. ते एम सूचवे छे के जेना वडे गुणाय भेदाय अथवा विशेष बतावे ते गुण छे अने अहीं ते शब्द, रुप, रस, गंध, अने स्पर्श, विगेरे छे, अने मूळ एटले ते निमित्त कारण छे, अने प्रत्यय ते पर्यायो छे, ते जेमां रहे ते स्थान छे. मूळमां स्थान ते मूळस्थान छे, अने ते वाक्योनुं विवेचन करनार छे, तेथी ते न्याये जे शब्दादिक काम गुण छे, तेज संसाररुप चार गति नारक तिर्यंच, मनुष्य, देवनुं मूळ छे, ते मूळ कारण कषायो छे, तेओनुं स्थान एटले आश्रय छे, ते आश्रय ज्यारे सुंदर अथवा कठोर शब्द विगेरे प्राप्त थाय त्यारे कषायनो उदय थाय छे अने तेथी संसार छे.

अथवा मूळ ते कारण अने तेज आठ प्रकारनां कर्म छे तेनुं स्थान आश्रय ते काम गुण छे.

अथवा मूळ ते मोहनीय कर्म अथवा तेनो भेद काम (संसारी इच्छा) छे, तेनुं स्थान शब्द विगेरे विषय गुण छे अथवा मूळ ते शब्दादिक विषय गुण छे, तेनुं स्थान इष्टअनिष्ट विषय गुणना भेदवडे व्यवस्थामां रहेलो गुणरुप संसारज छे.

अथवा आत्मा पोते शब्दादि उपयोगथी एक पणे होवाथी ते गुण छे अथवा मूळ ते संसारमां तेना स्थान रुपे शब्द विगेरे छे, अथवा कषायो छे, तथा गुण पण शब्दादिक अथवा कषायथी परिणत थएलो आत्मा संसारनुं मूळ छे, तेनुं स्थान शब्दादिक छे, अने गुण पण तेज छे, तेथी बधी रीते सिद्ध थयुं के जे गुण तेज मूळ स्थान छे.

प्रश्न—सूत्रमां वर्तन क्रियाने नथी लीधुं छतां शा माटे प्रक्षेप करो छो?

उत्तर—ज्यां कोइ विशेष क्रिया लीधी न होय त्यां पण सामान्य क्रिया होय छे, तेथी पहेलांनी क्रियाने लइने वाक्य समाप्त कराय छे, ए प्रमाणे बीजे पण ज्यां साक्षात् क्रिया न लीधी होय त्यां पण पूर्वनी सामान्य लेवी अथवा मूळ ते आद्य (प्रथम) अथवा प्रधान छे, अने स्थान ते कारण छे, तेमां मूळ अने कारण ए बेनो कर्मधारय समास करीए; तो एवो अर्थ थाय के जे शब्दादि-गुण छे, तेज मूळ स्थान संसारनुं प्रधान कारण छे बाकी बधुं पूर्व माफक लेवुं. ते गुण अने मूळ स्थाननुं-नियम्य-(दोरवा योग्य) तथा नियामकभाव बतावतां तेना तेना स्वीकारेला विषय कषाय विगेरेनां बीज अने अंकुरना न्यायवडे परस्पर कार्य-कारणभाव सूत्रवडेज बतावे छे, एटले संसारनुं मूळ अथवा कर्मनुं मूळ अथवा कषायोनुं स्थान आश्रय ते, शब्दादि गुण पण आज छे, अथवा कषाय मूळ शब्ददिकनुं जे स्थान छे, ते कर्म संसार छे, अने ते ते स्वभावनी प्राप्तिथी गुण पण तेज छे, अथवा शब्दादिक कषाय परिणाम मूळ जे संसार अथवा कर्मनुं जे स्थान मोहनीयकर्म छे, ते शब्दादि कषायथी परिणामवाळो आत्मा छे, तेना गुणनी प्राप्तिथी गुण पण तेज छे, अथवा संसारकषाय मूळ जे आत्मा, तेनुं स्थान विषयोनो अभिलाष ते पण शब्दादि विषयपणाथी गुणरुपज छे, अने अहींया विषयना लेवाथी विषयीना पण आक्षेपथी, अने सुचन मात्र करवाथी सूत्रनुंपण एम जाणवुं के, जे जीव गुणमां, अथवा गुणोमां वर्ते छे, ते मूळ स्थानमां अथवा मूळ स्थानोमां वर्ते छे, अने जे मूळस्थान विगेरेमां वर्ते छे, तेज गुणोमां वर्ते छे.

जे जीव पूर्वे वर्णवेला शब्दादिक गुणोमां वर्ते; तेज संसार मूळ कषाय आदि स्थान विगेरेमां वर्ते छे, अने तेज बीजा सूत्रनी अपेक्षावडे व्यत्यय करवाथी पूर्व माफक योजवुं; कारणके सूत्रनुं अनंतगम अने पर्यायपणुं छे.

वळी आ पण जोवुं. जे गुण तेज मूळ स्थान छे, अने जे मूळ तेज गुण. स्थान पण तेज छे अने जे स्थान तेज गुण अने मूळ पण तेज छे.

आ प्रमाणे बीजा विकल्पोमां पण योजवुं अने विषयना निर्देश (बतावबा) मां विषयी पण बतावी दीधो छे. जे गुणमां वर्त्ते छे. तेज मूळस्थानमां वर्त्ते छे. ते प्रमाणे बधे जाणवुं. अहीआं सर्वज्ञनुं कहेलुं होवाथी सूत्रनुं अनंत अर्थपणुं जाणवुं ते आ प्रमाणे छे.

अहीआं कषाय विगेरे मूळ बताव्युं. अने क्रोध विगेरे चार कषायो छे. वली अनंतानुबंधी विगेरे चार भेदे क्रोध छे. अने अने अनंतानुबंधीनां असंख्येय लोकाकाश प्रदेश प्रमाण बंधना अध्यवसायनां स्थान जाणवां तथा तेओना पर्यायो पण अनंता छे. तेथी प्रत्येकने स्थान गुणना निरुपणवडे सूत्रनुं अनंत अर्थपणुं थाय छे. छद्मस्थ (केवळ ज्ञानविनाना) जीवोने बधा आयुष्यमां पण ते मेळवी न शकाय तेथी अनंत पणाने लीधे समजाववाने पण अशक्य छे. पण एम अहीं आ दिशावडे थोडामां दिगदर्शनरूपे बताव्युं छे. अने कुशाग्र (तिक्षण) बुद्धिवालाए गुण स्थानोनुं परस्पर कार्य कारण भाव विगेरेनी संयोजना करवी.

तेथी आ प्रमाणे जे गुण तेज मूळस्थान, अने जे मूळस्थान तेज गुण एम कह्युं, तेथी शुं समजवुं ते कहे छे "इतिसे गुणठी" विगेरे अहीआं इति शब्द हेतुना अर्थमां छे. एटले जे शब्दादि गुणथी परीत. (व्याप्त) आत्मा छे ते कषायना मूळ स्थानमां वर्त्ते छे. अने बधाए प्राणीओ गुणना प्रयोजनवाला छे. तथा गुणना रागी छे. तेथी गुणोनी प्राप्तिमां अथवा प्राप्त थइने नाश थतां

इच्छा अने शोक वडे ते घणा परिताप वडे शरीर तथा मनना संबंधी दुःखवडे हारी जइने वारंवार ते ते स्थानमां उद्यम करे छे. अने त्यां प्रमत्त बने छे. अने प्रमाद छे ते रागद्वेषनुं स्वरुप छे. अने राग विना प्रायः द्वेष थतो नथी तथा राग पण उत्पत्तिथी मांडीने अनादि भवना अभ्यासथी माता पिता विगेरे संबंधी थाय छे. ते बतावे छे. कोइने "मायामे" एटले मासंबंधी राग संसारना स्वभावथी माताए उपकार करवाथी तेना उपर राग थाय छे. अने तेवो राग थतां मारी मा भूख तरसथी न पीडाओ तेटला माटे तेनो दिकरो खेती, वेपार, नोकरी विगेरे बीजा जीवोने दुःख आपनारी क्रिया आरंभे छे, अथवा तेनो उपघात करवा वाळी ते क्रियामां वर्त्ततां अथवा माता विगेरे अकार्यमां प्रवर्त्ततां द्वेष थाय छे. ते आ प्रमाणे छे.

जेमके. 'जमदग्नि' रुषिनी स्त्री रेणुकामां अनंत वीर्य राजानो दुराचार जोइ परशुरामने द्वेष थयो (अने परस्पर महान अनर्थ कर्यो)

एज प्रमाणे कोइने मनमां थायके आ मारो पिता छे. तेथी तेने ते संबंधी रागद्वेष थयो छे. जेमके तेज परशुरामने बाप उपर प्रेम होवाथी तेने हणनार उपर द्वेष लावीने सातवार क्षत्रिओने मारी नाख्या.

अने तेथी क्षत्रीय पुत्र सभूम चक्रवर्तिए. एकवीस वार ब्राह्मणोने मार्या

कोइ प्राणी बेनना माटे कलेश पामे छे. कोइ स्त्री माटे रागद्वेष करे छे, जेमके चाणाक्य नामना ब्राह्मणे बेन तथा बनेवी विगेरेए पोतानी स्त्रीनुं करेलुं अपमान सांभली तेनी प्रेरणाथी "नंदराजा" पासे द्रव्य माटे जतां नंदराजाए तेनुं अपमान कर्युं तेथी चाणाक्ये क्रोधमां आवी नंदनुं कुळ क्षय करी नाख्युं, (चाणाक्यनी स्त्री तेना बनेवीने त्यां गयेली त्यां गरीबीथी तेनुं अपमान थयुं,

स्त्रीए पोताना पति चाणाक्यने वात करी. तेथी धन लेवा नंदराजा पासे गयो त्यां धनने बदले अपमान मळ्युं तेथी चाणाक्ये नंदराजाना कुलनो नाश कर्यो.)

कोइ विचारे छे के मारे पुत्रो जीवता नथी. ते जीवाडवा बीजा आरंभो करे छे, कोइ प्राणी मारी दीकरी दुःखी छे, एवा राग अथवा द्वेषथी घेला जेवो बनी परमार्थने न जाणतो एवां एवां कृत्यो करे छे के जेनावडे आलोक परलोकमां नवां दुःखोने भोगवे छे.

जेमके "जरासंध" नामनो प्रतिवासुदेव. पोताना जमाइ कंसना मरणथी पोताना लश्करना अहंकारथी कंसने मारनार "वासुदेव" (कृष्ण.) ना उपर कोप करीने तेना पाछळ जइने लडाइ करतां सेना साथे नाश पाम्यो.

कोइ तो मारी पुत्रवधु जीवती नथी, तेथी आरंभ विगेरेमां वर्ते छे. कोइ मित्र माटे, कोइ स्वजन. (काका, दिकरा के साळा) माटे क्लेश करे छे. के ए मारा बारंवार परिचयमां आवेला छे. अथवा पूर्वे मारा माता पिता उपकारी हता अने पाछळथी साळा विगेरे उपकारी हता ते अत्यारे दुःखी छे. एम प्राणीओ कोइना कंइपण निमित्ते शोक करे छे. अथवा जुदां जुदां शोभायमान अथवा घणा हाथी घोडा रथ, आसन, पलंग विगेरे जे उपकरणो छे तेनाथी बमणा, तमणा विगेरे वधारे राखीने बदले छे. तथा भोजन (लाडु विगेरे) आच्छादन (पट्ट युगम विगेरे वस्त्र मने मळशे, अथवां मारां नाश थयां एम रागद्वेष करे छे आ प्रमाणे प्राणीओ चेतन वस्तुमां गृध्ध बनीने पूर्वे कहेला माता पिताविगेरेना रागथी आखी जींदगी सुधी प्रमादि रहे छे एटले ए मारां छे. अथवा हुं आ परिवारनो रक्षक छुं, पोषण करनारो छुं एम ममता करीने मोहीत मनवालो थाय छे.

" पुत्रा मे, भ्राता मे, स्वजना मे, गृहकलत्रवर्गो मे । इति कृतमेमेशब्दं, पशुमिव मृत्युर्जनं हरति ॥१॥

मारा पुत्रो मारा भाइओ, मारां सगां मारांघर, तथा स्त्री समुदाय छे. आवुं पशुनी माफक मे मे 'बोलता माणसने मृत्यु हरी जाय छे.

पुत्रकलत्रपरिग्रहममत्वदोषैर्नरो व्रजति नाशम् । क्रमिक इव कोशकारः परिग्रहादुःखमाप्नोति ॥ २ ॥

पुत्र, स्त्रीनुं परणवुं तेथी तथा उपर ममता राखवी ए दोषोथी माणस नाश पामे छे जेमके कोशेटानो बनावनार कृमि (रेशमनो) कीडो कोशेटाना दुःखथी मरण पामे छे तेम संसारी मनुष्य स्त्रीपुत्रनी चिंतामां रीबी रीबीने मरे छे. आज सूत्र अर्थने मळतुं निर्युक्तिकार बे गाथा वडे कहे छे.

संसारं छेत्तुमणो कम्मं, उम्मूलए तदट्ठाए । उम्मूलिज्ज कसाया, तम्हा उ चइज्ज सयणाई ॥१८५॥

नरक विगेरे चार गतिरुप संसार, अथवा माता, पिता, स्त्री विगेरे उपर प्रेम छे. ते संसार छे तेने जडमूळथी छेदवानी इच्छा वालो कर्मने मूळथी उखेडी नाखे तेटला माटे कर्मोनुं मूळ कषायो छे, तेने दूर करे.

माया मेत्ति पिया मे, भगिणी भाया य पुत्तदारा मे । अत्थंमि चेव गिद्धा, जम्मणमरणाणि पावंति॥१८६॥

अने ते दूर करवा माटे पूर्वे बताव्या प्रमाणे माता पिता विगेरेनो स्नेह छोडी दे. जो न छोडेतो माता पिता विगेरेनो संयोगना अभिलाषीओ तेमना सुख माटे रत्नकुपी (रसकुपी जेना वडे सोनुं बने छे ते) ना माटे गृध्ध बनीने तेमां अनेक पाप करतां जन्म जरा अने मरण विगेरेना दुःखोने भोगवे छे ए प्रमाणे कषाय अने इन्द्रियोमां प्रमादि थएलो माता पिता विगेरे माटे धन

मेळववा तथा मेळवेलानुं रक्षण करवा फक्त दुःखनेज भोगवे छे, तेज मूळ सूत्रोमां बताव्युं छे के अहो (दिवस) राओ (रात) मां, अने सूत्रमां "च" शब्द छे तेथी पक्षमासमां सारा धर्मना विचारो छोडीने बधी रीते चिंतामां बळतो रहे छे जेमके—

" कइया वच्चइ सत्थो?किं भण्डं कत्थ कित्तिया भूमी। को कयविक्कयकालो, निव्विसइ किं कहिं केण?॥१॥

क्यारे आ सार्थ (वेपारीओनो समूह) उपडशे? शुं माल छे? केटले दूर जवुं छे तथा लेवा वेचवाने कयो काळ छे अथवा कयुं कयां कोना वडे आ चोकठुं बेसशे? (कार्य सिद्धि थशे) विगेरे चिन्तामां बळतो रहे छे अने ते चिन्ताग्रस्त केवो थाय छे. ते कहे छे.

काळ (योग्य समय) अकाळ (अयोग्य समय) मां उठीने एटले दिवसमां जे करवानुं होय ते काम रातना करे अथवा प्रभातनुं काम सांजना करे विगेरे अथवा काळ अकाळ ए बंनेमां करे अथवा अवसरमां न करे, तेम बीजा वखतमां ए न करे, जेम कोइ धन विगेरेनी हानी थतां गांडो बनी गमे तेम करे पण तेने काळ अकाळनो विवेक नथी एम जाणवुं.

जेमके "चंडप्रद्योत" नामना राजाए मृगावती नामनी राणी, जेनो पति "शतानिक" राजा मरण पामेलो छे. तेना कहेवाथी मोहीत थइने जे काळे किल्लो लेवानो छे ते काळे न लेतां किल्ला विगेरे नवा सुधरावीने लेवानी इच्छ करी (पण लइ शक्यो नहि.)

पण जे योग्य काळे क्रिया करे छे. ते बाधा रहीत बधी क्रिया करे छे. कह्युं छे के—

"मासैरष्टभिरह्ना च, पूर्वेण वयसाऽऽयुषा। तत् कर्त्तव्यं मनुष्येण, येनान्ते सुखमेधते ॥ १ ॥"

आठ मास तथा दिवसे तथा जुवानीमां पहेला आयुष्यमां माणसे कृत्य करी लेवुं एटले बार मासमां चोमासाना चारमासमां

पाणी कादव विगेरेनां दुःख न भोगववां पडे माटे कमावुं के संग्रह करवो, ते आठ मासमां करवो, तथा रातना अंधारामां खराब माल न आवे स्वपरनी हिंसा न थाय माटे दरेक कार्य दिवसना करवुं तथा पहेली अवस्थामां विद्या भणी धनउपार्जन करवुं तथा युवानीमां धर्म साधवो के जेथी पाछली वृद्धावस्थामां दुःख भोगववुं न पडे अने सुख मेळवे.

जेम मृत्युने आवतां अकाळ नडतो नथी तेम धर्मनुं अनुष्ठान करतां पण अकाळ नडतो नथी, त्यारे शा माटे काळ अकाळनो समुत्थायी थाय छे. ए माटे कहे छे. संजोगने माटे अर्थात् जेने प्रयोजन छे, ते तेने माटे करे छे. धन धान्य. सोनुं बे पगवालां दास दासी अने चार पगवालां घोडा विगेरे तथा राज्य स्त्री विगेरेनो संसारमां अमुक अमुक कारणे संयोग थाय छे. तेने माटे अथवा तो शब्दादि विषय तेनो संयोग अथवा माता पिता विगेरेना संयोगवडे तेने माटे संसारी जीवो काळमां अथवा अकाळमां काम करनारा थाय छे.

कोइ अर्थ एटले रत्नकुपि विगेरे अथवा कोइ अत्यंत लोभने लीधे स्वार्थी बनी काळ अकाळ जोया विना ममण शेठ माफक करवा मंडे छे. ते ममण शेठनुं द्रष्टांत कहे छे आ शेठे अतिशय धन छतां युवावस्थामां (सुख भोगववुं छोडीने) जळ स्थळने मार्गे जुदा जुदा देशोमां माल भरीने वहाण गाडां उंटनी मंडली विगेरेना भारथी भरेलां मोकलीने (नफो मेळव्या छतां संतोष न पकड्यो) पछी भर चोमासामां सात रात्री सुधी मूशळ प्रमाण जळ धारा पडते वरसादथी बधा प्राणी एक जग्याए स्थिर थया पण आ शेठ संतोष न पकडतां पोताना शहेरनी नजदीकमां रहेली महा नदीना पुरमां तणाइ आवेला लाकडां लेवानी इच्छावालो धननो उपभोग धर्म नकरतां बधा शुभ परिणामने छोडीने फक्त धन मेळववामांज तैयार थयो तेज कह्युं छे.

"उपखणइ खणइ निहणइ रत्तिं, ण सुअति दियावि य ससंको। लिंपइ, ठएइ, सययं, लंछियपडिलंछिय कुणइ

धन लोभी उंचेथी खोदे छे तथा खाण खोदे छे तथा जीवोनी हिंसा करे छे, रात्रिमां सुतो नथी दिवसे पण चिन्तावालो होय छे. कर्मथी लेपाय छे विचार करतो पडी रहे छे तथा हमेशां लांच्छित तथा मति लांच्छित (लज्जास्पद कृत्य पण करे छे.)

भुंजसु न ताव रिक्को, जेमेउं नविय अज्ज मज्झीहं। नवि य वसीहामि घरे, कायव्वमिणं बहुं अज्जं। २।"

कोइ कहे खा तो पण पोतानो वेपार पूरो न थाय त्यां सुधी तेने खावानुं सुझतुं नथी तेथी कहे के हुं स्नान नही करुं तेम घरमां रहीश नहीं अत्यारे मारे बहु काम छे. (अर्थात् लोभीओ कंइ पण सुख छते धने भोगवतो नथी तेम दान पण आपतो नथी).

वली लोभीना अशुभ वेपारो बतावे छे.

मूळ सूत्रमां आलुंप शब्द छे. तेनो अर्थ आ छे. ते लोभथी हणायला अंतःकरणवालो बधा कर्त्तव्य अकर्त्तव्यनो विवेक छोडीने अर्थ लोभमां एक दृष्टि राखीने आलोक अने परलोकमां दुःख आपनारी कलंकरूप गळां कापवां तथा चोरी विगेरे कृत्य करे छे, एटले तेनी मति सर्वथा लोपाइ गएली छे.

सहसककारे—आगळ पाछळनुं विचार्या विना दोष भूलीने एकदम. (सहसा) कार्य करी नांखे ते काम करनारो (पा. र. १२७ सूत्र प्रमाणे) सहसककार जाणवो जेमके लोभ अंधकारथी छवाइ गएली दृष्टिवालो "हाय पैसो" माननारो शकुंत पक्षी मांसना अभिलाषथी सांधाना छेदनथी नाश पामे छे. (पक्षीने फसाववा धनुष्यमां मांसनो टुकडो बांधे छे. फक तीरना घाने भूलीने मांसना अभिलाषथी सांधाना छेदनथी नाश पामे छे.

अने ते पक्षी खावा जतां तीर छुटे छे. अने पक्षी मरी जाय छे.) तेज प्रमाणे लोभी धनमां लुब्ध मनवालो थइ बीजा दुःखोने जोतो नथी.

"विणि विठ्ठ चिठे"—(विविध) अनेक प्रकारे (निविष्ट) रहेलुं. पैसा मेळववा माटे चित्त जेनुं छे, ते माणस अथवा जे माणसने मातापिता विगेरेमां प्रेम रह्यो छे, अथवा जेने उत्तम गायन विगेरेनो रस लेवामां चित्त लाग्युं छे, अथवा सूत्रपाठमां चित्तने बदले चिठ्ठ लइए तो, कहे छे केः—ते माणस विशेषे करीने काय, वचन, अने मनना चचळपणाथी पैसो पेदा करवामां रातदिवस चित्त राखे छे, तेज प्रमाणे मातापिता विगेरेनो प्रेम धारण करी संसारवाळो छे, अथवा अर्थनो लोभी थइने पापथी लेपातो वगर विचारे संसार–विषयमां एक चित्तवाळो बनीने हवे पछीथी शुं शुं करे ते कहे छे.

आलोकमां मातापिता विगेरेमां, अथवा इंद्रिय–विषयमां लोलुपी बनी पृथ्वीकाय विगेरे जंतुने दुःख आपनारो ते पुरुष शस्त्र वापरवामां वारेवारे तैयार थाय छे, ए प्रमाणे वारंवार पृथ्वीकाय विगेरेनी हिंसा करी नवां कर्म बांधे छे. जीवोने दुःख आपनार शस्त्र बे प्रकारनुं छे, एटले खारा कुवानुं पाणी मीठा कुवामां नांखे; तो स्वकायथी हिंसा छे, अने अग्नि उपर पाणी नांखे तो, परकायथी हिंसा छे, (ते पहेलां अध्ययनमां बताव्युं छे.) आ प्रमाणे उपर कह्या मुजब हिंसा करे छे. वळी मूळ सूत्रमां एत्थ सत्थे ने बदले बीजी जग्याए एत्थ सत्ते पाठ छे, तेनो आ प्रमाणेनो अर्थ छे. के मातापितामां अथवा पोते गायननो रसिक लोभी लोभमां पडीने सक्त (गृद्ध) बनीने वारंवार तेमां एक चित्तवाळो थइने धर्मकर्म लोपीने विना विचारे काळ–अकाळ न जोतां पापमां प्रवर्ते छे.

आ हालना जीवोने जो, अजरामरपद होय; अथवा लांबु आयुष्य होय; तो ते करवुं घटे; पण टुंका आयुष्यमां, तथा मरण माथे भमतुं होवाथी भोगनी इच्छाए व्यर्थ पाप करे छे. कारणके, हालना काळमां मोटामां मोटुं आयुष्य निश्चयथी सो वरसनी

आसपास छे, अने नानुं आयुष्य क्षुल्लक (नाना) भव आश्रयी अंतर्मुहुर्त्त मात्र छे, अने वधारेमां वधारे त्रण पल्योपमनुं छे तेमां पण; संयजीवित (साधुपणुं) अल्पकाळ छे, तथा अंतमूहुर्तथी लइने थोडुं ओछुं एवुं करोड पूर्वनुं आयुष्य छे. जेमां साधुपणुं उदय आवे ते अपेक्षाए ते पण थोडुं छे, एटले गमेतेटलुं मनुष्यनुं आयुष्य होय; तोपण ते एक अंतर्मुहूर्त छोडीने वाकीनुं अपवर्तन (अकाळ मोत) थाय छे. तेथी कह्युं छे केः—

"अद्धा जोगुक्कोसे, वंधित्ता भोगभूमिएसु लहुं । सव्वप्पजीविय, वज्जइत्तु उव्वट्टिया दोण्हं ॥ १ ॥"

उत्कृष्ट योगमां बंधना अध्यवसाय स्थानमां आयुष्यनो जे बंधकाळ छे. ते उत्कृष्टो काळ बांधीने जे जीव देव गुरु विगेरे भोग भूमीमां युगलिक तरीके जन्मे छे. तेनुं जल्दीथी वधु आयुष्य छोडीने तिर्यंच अने मनुष्यनुं अपवर्त्तन थाय छे. अने ते अपर्याप्त अंतर्मुहूर्त्त नुं अंतर जाणवुं, त्यारपछी अपवर्त्तन थाय छे, (जे आयुष्य त्रण पल्योपमनुं छे, ते पण कारण विशेषथी ओछुं थवा संभव छे.)

सामान्यथी आयुष्य सोपक्रम जीवोने सोपक्रम छे, अने निरुपक्रमआयुष्यवालाने निरुपक्रम छे ते वतावे छे. ज्यारे जीवने पोतानुं आयुष्य त्रीजे भागे वाकी रहेछे. अथवा त्रीजानो त्रीजो (९) नवमो भाग बाकी रहे अथवा जघन्यथी एक बे अथवा उत्कृष्टथी सात आठ वर्षे अथवा अंतकाळे काळे अंतर्मुहूर्त्त काळना प्रमाणथी जीव पोते पोताना आत्मप्रदेशोने नाडिकाना अंतरमां रहेला आयुष्य कर्मवर्गणाना पुद्गळोने प्रयत्न विशेषथी रचना करे छे. ते वखते निरुपक्रम आयुष्यवालो थाय छे, अने बीजीवखते आयुष्य बांधे तो उपक्रम आयुष्य थाय छे. उपक्रम ते उपक्रमणना कारणथी थाय छे. ते कारणो नीचे बताव्यां छे.

" दंडकससत्थरज्जू, अग्गी उदगपडणं विसं वाला। सीउण्हं अरइ भयं खुहा पिवासा य वाही य ॥ १ ॥
दंड, चाबखो, शस्त्र, दोरी, अग्नि, पाणी, पडी जवुं, झेर, साप, अती ठंड, अती गरमी, अरति, भय, भूख, तरस, अने रोग (आ घणा प्रमाणमां थाय. एटले दंड विगेरेथी मार पडे तो लांबु आयुष्य पण टुंका वखतमां समाप्त थाय, जेने लोकमां अकाळ मोत कहे छे, जेनाथी मोत थाय ते उपक्रम अने जेनुं मोत थयुं ते सोपक्रम मृत्यु कहेवाय छे. अने तेनुं जीवित पण पूरुं न थवाथी सोपक्रम आयुष्य कहेवाय.

मुत्तपुरीसनिरोहे जिण्णाजिण्णे भोयणे बहुसो। घंसणघोलणपोलण आउस्स उवक्कमा एते ॥ २ ॥

झाडो पीशाब रोकवाथी, भोजन जीर्ण थयां पहेलां वधारे खाय अथवा जीर्ण थया पछीथी पण वधारे खाय अथवा घर्षण. (घसारो) अथवा घोलन. अथवा पीडन–(शरीरने गजा उपरांत बोजो अथवा श्रम पडे ते)थी आयुष्यनो अंत आवे छे. तेथी ते उपक्रमो छे. वळी कह्युं छे के.

स्वतोऽन्यत इतस्ततोऽभिमुखधावमानापदामहो निपुणता नृणां क्षणमपीह यज्जीव्यते ।
मुखे फलमतिक्षुधा सरसमल्पमायोजितं, कियच्चिरमवर्बितं दशनसङ्कटे स्थास्यति? ॥ १ ॥

पोतानाथी के बीजाथी आम तेम सामे दोडती आवती आपदाओवाळा मनुष्यो छे. तेमां तेमनी निपुणता जुओ के. क्षण पण अहींआं जे जीवे छे. मोढामां फळ छे. घणी भूख लागी छे. रसवाळुं अने थोडुं भोजन मळ्युं छे. ते केटलो काळ चवाशे अने ते

दांतना संकटमां पडेलु रहेशे. (माणसो विषय तृष्णाना लोभी बनी तेने माटे आम तेम दोडे छे. पण ते भोग प्राप्त करवा पहेलां क्यारे काळ झडपशे तेनी खबर पण नथी राखता ते आश्चर्यनी वात छे.) उच्छ्वासनी मर्यादावाला प्राण छे. अने ते उच्छ्वास पोते पवन छे अने पवनथी बीजुं कंइ वधारे चंचळ नथी तो पण क्षणभरनु आयुष्य लोकोने मोह करावे छे. ते पण एक आश्चर्य छे.

उच्छ्वासावधयः प्राणाः, स चोच्छ्वासः समीरणः। समीरणाच्चलं नान्यत् क्षणमप्यायुरद्भुतम् ॥ २ ॥

आ प्रमाणे मनुष्यने मोह उतारवा कह्यु. वली जेओ लांबा आयुष्य वाला छे. तेओने पण उपक्रमण (आफत) ना अभावे आयुष्य भोगवे छे. तेओ पण मरणथी पण वधारे पीडा करनार बुढापाथी पीडाएला शरीरवाला सुखनी जींदगी अल्पमां अल्प भोगवे छे, ते हवे सूत्रकार बतावे छे.

तंजहा–सोयपरिण्णाणेहिं, परिहायमाणेहिं, चक्खुपरिण्णाणेहिं, परिहायमाणेहिं घाणपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं रसणापरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं फासपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, अभिक्कंतं च खलु वयं स पेहाए तओ से एगदा मूढभावं जणयंति ॥ ६३ ॥

भाषारुपे परिणमेला पुद्गलोने जे सांभळे; ते श्रोत (कान) छे, अने तेनो आकार कदंबना झाडना फुल जेवो द्रव्यथी छे, अने भावथी तो जे भाषा द्रव्यने ग्रहण करवानी लब्धि, तथा तेनो उपयोगनो जे स्वभाव छे, ते जाणवुं. पूर्वे कहेलां श्रोत्र (कानवडे) चारे बाजुथी घटपट शब्द विगेरे विषयोनुं जे ज्ञान थाय; ते परिज्ञान छे, ते कानना परिज्ञानमां बुढापाना प्रभावथी जे सांभळवानी

शक्ति कमी (व्हेराश) थाय तेथी ते प्राणी बुढ्ढापामां, अथवा तेवाज रोगना उदयना वखतमां मूढभावपणाने पामे छे, जेथी करवा योग्य न करवा योग्य, विवेक जतां अज्ञानपणुं इंद्रियोनी शक्ति कम थतां आवे छे. अने तेथी हित प्राप्त करवुं; अने अहित छोडवुं; तेनो विवेक नाश पामे छे. जेम कान संबंधी कह्युं; तेज प्रमाणे आंखनु पण बुढ्ढापामां के रोगमां विज्ञान नाश पामे छे.

प्रश्नः—आत्मा साथे जेम काननो संबंध छे, तेम आंख साथे पण संबंध छे, त्यारे आंखनी माफक कानथी केम देखातुं नथी?

उत्तरः—तेम थवुं अशक्य छे, कारणके. तेना विनाशमां तेनो उपलब्ध (प्राप्त) अर्थनी स्मृतिनो भाव थाय छे, अने एवुं देखाय पण छे के, इंद्रियना उपघात (नाशमां) पण तेनो उपलब्ध अर्थनुं स्मरण थाय छे. जेमके, धोळुं घर. तेमां बेठेलो पुरुष पांच वारीओथी देखायलो जे कंइ पदार्थ होय; ते वारीमांथी कोइपण वारी ढांकतां पूर्वे जोयलु; ते याद आवे छे, तेवीज रीते में कानवडे, सांभळ्यो अथवा आंखवडे धीमो (धीमाशथी) पदार्थ जोयो; अने में आ कान, जाण्यो अथवा आंखथी स्फुट (खुल्लो) अने स्पष्ट पदार्थ जोयो, ते इंद्रियोनी करणपणानी अवगति (बोध) छे, तेथी आत्मा साथे दरेक इंद्रियोनो संबंध छे.

वादीनी शंका—जो, एम छे तो; बीजी पण इंद्रियो छे, ते केम न लीधी? (बीजी कइ इंद्रियो छे? एवुं पूछो तो नीचे बतावीए छीए) जेवी के जीभ हाथ पग टटी अने पेशाबनी इंद्रियो तथा मन ए केम न लीधी? जेमके वचन बोलवाथी ते पण जीभ इंद्रिय छे. तथा लेवा मुकवामां हाथ इंद्रिय छे. चालवामां पग इंद्रिय छे तथा मळ काढवामां टटीनी इंद्रिय छे. अने संसारी आनंद भोगववामां गुह्य इंद्रिय छे. तथा विचार करवामां मन इंद्रिय छे. आ छ इंद्रियो पण आत्माने उपकार करे छे. तेथी तेमां पण करणपणुं घटे छे. अने करणपणाथी इंद्रियपणुं छे. तेथी बधी मळीने अगीआर इंद्रियो थाय छतां तमो पांच इंद्रियो केम बतावो छो?

जैनाचार्यनो उत्तर—एमां कंइ दोष नथी कारणके अहीं आत्माना विज्ञाननी उत्पत्तिमां जे विशेष उपकारक होय छे. तेज करण (जेना वडे कार्य थाय ते) पणे लेवाथी पांचज इन्द्रियो छे. अने जीभ हाथ पग विगेरे आत्मा साथे साधारण रीते एक पणे होवाथी करण पणे वपराती नथी अने कंइ पण क्रियाना उपकारपणाथी जो करण पणुं मानीए तो ते प्रमाणे "भ्रू" (पांपण) अथवा उदर (पेट) विगेरे पण उंचेनिचे थवानो संभव होवाथी तेनामां पण करण पणुं थाय, वली इन्द्रियोना पोताना विषयमां नियत (चोकसपणुं) होवाथी एकनुं काम बीजी करी शकवाने शक्तिवान नथी. तेज कहे छे केः—रुप जोवाना काममां आंख काम लागे पण आंखने वदले आंखना अभावमां कान विगेरे काम न लागे

पण जे रस विगेरे प्राप्त थतां थंडा विगेरे स्पर्शनो लाभ थाय छे ते स्पर्शनु सर्व व्यापिपणुं होवाथी त्यां शंका न करवी के जीभथी चाखतां खारा खाटा साथे ठंडो उनो पदार्थ लागेछे तेथी जीभ जीभनुं पण काम करे छे तेम वीजी इन्द्रियनुं काम करे छे. तेम न मानवुं पण जीभमां स्पर्श इन्द्रियनुं पण सर्व व्यापिपणुं छे एम जाणवुं.

अहींआं हाथ कापवा छतां तेनुं कार्य जे लेवापणुं छे. ते दांतथी पण लेवाय छे. तेथी हाथमां लेवाना कारणथीज ते इन्द्रियपणुं मानवुं ते नकामुं छे. अने मननुं सर्व इन्द्रियो उपर उपकारपणुं होवाथी. तेने अंतःकरणपणे अमे इच्छिए छीएज, अने बाह्य इन्द्रियोना विज्ञानना उपघात वडे ते छे. अने ते तेमां समाइ जवाथी मनने तेमां जुदुं लीधुं नथी. अने प्रत्येकनुं ग्रहण करवुं ते क्रमनी उत्पत्तिना विज्ञानना उपलक्षण माटे छे. तेज बतावे छे. जे इन्द्रियनी साथे मन योजाय छे तेज पोताना विषयनो गुण ग्रहण करवा माटे वर्त्ते छे. पण बीजो ग्रहण करवाने माटे नही.

प्रश्न—दिर्घ शष्कुली. (तलपापडी) खावा विगेरेमां पांच इन्द्रियोनुं विज्ञान थाय छे. अने ते साथे अनुभव थाय छे, ते केवी रीते छे?

उत्तर—तेम नथी. कारणके. केवळीने पण बे उपयोग साथे नथी. त्यारे बीजानेतो आरातीय (अल्पमात्र) भाग जोनारने पांचेने उपयोग साथे क्यांथी होय आ बाबतमां अमे बीजी जग्याए विस्तारथी कह्यु छे. तेथी अहीं कहेता नथी अने जे साथेना अनुभवनो आभास थाय छे. ते मननुं जल्दी दोडवानी वृत्तिपणानुं छे. कह्यु छे के—

"आत्मा सहैति मनसा मन इन्द्रियेण, स्वार्थेन चेन्द्रियमिति क्रम एष शीघ्रः। योगोऽयमेव मनसः किमगम्यमस्ति?, यस्मिन्मनो व्रजति तत्र गतोऽयमात्मा ॥ १ ॥

आत्मा मननी साथे जाय छे. अने मन छे ते इन्द्रिय साथे जाय छे. अने इन्द्रिय पोताना इच्छित पदार्थमां जाय छे. अने ते क्रम शीघ्र बने छे. आ मननो योग शुं अजाण्यो छे के जेमां मन जाय छे त्यां आत्मा गएलोज छे.

अने अहीआं आ आत्मा, इन्द्रियोनी लब्धिवाळो शरुआतथीज जन्मना उत्पत्ति स्थानमां एक समयमां आहार पर्याप्तिने निपजावे छे. त्यार पछी अंतर्मुहूर्त्तमां शरीर पर्याप्तिने निपजावे छे. त्यार पछी इन्द्रिय पर्याप्तिने तेटलाज काळमां निपजावे छे. अने ते पांच इन्द्रियो स्पर्श रस घ्राण चक्षु अने श्रोत्र एम छे. ते पण द्रव्य अने भाव एम दरेक बे भेदे छे. तेमां द्रव्य इन्द्रिय निर्वृत्ति अने उपकरण एम बे भेदे छे. निर्वृत्ति पण अंतर अने बाह्य एम बे भेदे छे.

जेनाथी निर्वाह थाय ते निवृत्ति छे. अने ते कोनाथी निर्वाह थाय छे.? तेनो उत्तर—कर्मवडे निर्वाह थाय छे.

तेमां उत्सेध (लोकमां वपरातुं माप आंगळीनुं) अंगुलना असंख्येय भाग जेटला शुद्ध आत्म प्रदेशना प्रतिनियत चक्षु विगेरे इंद्रियोना संस्थान वडे जे वृत्ति अंदर रहेली छे ते निवृत्ति जाणवी.

ते आत्मा प्रदेशोमांज इंद्रियना व्यपदेशने भजनार जे प्रतिनियत संस्थानवालो निर्माण नामना पुद्गल विपाकवाली (कर्मप्रकृतिवडे) वर्द्धकि (सुतार माफक) विगेरे विशेष रुपवालो (इंद्रिय विभाग) अने अंगोपांग नामना कर्मवडे बनावेल जे छे ते वहारनी निर्वृत्ति जाणवी.

(आ उपर जे वर्णन कर्युं ते शरीरनी अंदर अने बहार ज्यां जे इंद्रिय रहेली छे तेनुं बंने प्रकारनुं वर्णन बताव्युं छे, बहारनी इंद्रियो दरेकनी देखाय छे पण अंदरनी तो आत्मज्ञानी जाणी शके छे) उपरनी बतावेली निवृत्ति बे प्रकारनी कही तेने जेना वडे उपकार कराय छे ते उपकरण छे अने ते इंद्रियोना कार्यमां समर्थ छे. वली निर्वृत्ति होय अने हणाइ नहोय तो पण मशुर (जेनी दाळ थाय छे) तेना आकार वाली निर्वृत्तिमां तेने जो उपघात थाय तो आंख जोइ शकती नथी (आंखनो बहारनो आकार मशुरनी दाळ जेवो छे, जोते नाश पामे तो अंदर आत्मानी शक्ति छे छतां ते जोइ शकतो नथी माटे बहारना आकारने उपकरण कह्युं छे.

ते पण निर्वृत्ति माफक बे प्रकारे छे तेमां आंखनी अंदरनुं काळुं धोळुं मंडळ छे अने वहारनुं पण पांदडांना आकारे बे पांपण विगेरे छे, (ते सौने जाणीतुं छे.)

आ प्रमाणे बीजी इंद्रियोमां पण जाणी लेवुं.

भावइंद्रिय पण लब्धि अने उपयोग एम बे भेदे छे. तेमां लब्धि छे, ते ज्ञानदर्शन आवरणीय कर्मना क्षय उपशमरुप जेना सं-

निधालथी आत्मा द्रव्य इंद्रिय निर्वृत्ति तरफ जाय छे, अने तेना निमित्तथी आत्मानो मनना जोडाणथी पदार्थनुं ग्रहण करवानो व्यापार थाय; ते उपयोग छे, ते आ छती लब्धिए निर्वृत्ति उपकरण, अने उपयोग छे, अने छती निर्वृत्तिमां उपकरण अने उपयोग छे, अने उपकरण होय; त्यारे उपयोग थाय छे. आ कान विगेरे बधी इंद्रियोना आकार अनुक्रमे नीचे मुजब जाणवा.

कानना आकार कदंबना फुल जेवो छे. आंखनो मशुर जेवो, अने नाकनो कलंबुकाना फुल जेवो छे, जीभनो क्षुरप्र (खरपो, तावेता)ना आकार जेवो, तथा शरीरनो स्पर्श, इंद्रियोनो आकार जुदी जुदी जातनो छे एम जाणवुं.

कानना विषय. बार योजनथी आवेला शब्दने ग्रहण करे छे, अने आंखनो विषय. एकवीस लाख योजनथी कंइक अधिक दूर होय; अने ते प्रकाश करनार होय; ते देखाय छे.

पण प्रकाश करवा योग्य होय; ते एकलाख योजनथी कंइक अधिक होय; तेवा रुपने ग्रहण करे छे, पण बाकीनी इंद्रियोनो विषय नव योजनथी आवेलो होय; तेने ग्रहण करे छे, अने जघन्यथी तो, बधी इंद्रियोनो विषय आंगळना असंख्येय भाग मात्र छे. (नीचेना टीपणमां खुलासो कर्यो छे के, बधी इंद्रियोथी आंखनुं जुदुं छे, कारण के, आंखनो विषय जघन्यथी आंगळना संख्येय भाग मात्रथी जाणवो)

अहीं मूळसूत्रमां श्रोत्रना परिज्ञानथी हणातां, अथवा ओछुं थतां इंद्रियोनी केवी दशा थाय छे ते बताव्युं. तेनो परमार्थ आ छे. अहींयां संज्ञी पचेंद्रिय जीवने उपदेश आपवानो अधिकार होवाथी उपदेश छे ते काननो विषय छे. (काननी शक्ति सारी होय; ताज उपदेश संभळाय.) एटला माटे तेनी पर्याप्तिमां बधी इंद्रियोनी पर्याप्ति पण साथे सूचवी.

(काने सांभळीने जीवरक्षा माटे आंखथी जोइने चाले; विचारीने बोले विगेरे छे, तेथी बीजी इंद्रियोनुं पण स्वरूप बताव्युं छे.)

आ कान विगेरेनो आत्मानी साथे संबंध थतां; जे ज्ञान थाय छे, ते ज्ञान उमर वृद्ध थतां ओछुं थाय छे, ते हवे बतावे छे. मूळसूत्रमां कह्युं छेके:-

"अभिकंतं च" विगेरे एटले उपर बताव्या प्रमाणे वृद्धापामां शक्ति ओछी थइ जाय छे.

अथवा आखा सूत्रनो आ प्रमाणे अर्थ लेवो के:—

कान विगेरे विज्ञानथी कमी थयेल कर्णभूत इन्द्रियो छतांपण अभिकंतं. विगेरेनो अर्थ आ थाय छे के:-जेम जेम उंमर वीते; तेम तेम बुद्धि-शक्ति ओछी थाय; तेमां प्राणीओने काळेकरेली शरीरनी अवस्था जेमां यौवन विगेरे वय (उमर) छे. तेने जरा अथवा मृत्युना सामे जवानुं छे. कारण के अहीआं शरीरनी चार अवस्थाओ छे, (१) कुमार (२) योवन (३) मध्यम (४) वृद्धत्व छे, एम जाणवुं. ते शास्त्रमां कह्युं छे. के—

"प्रथमे वयसि नाधीतं, द्वितीए नार्जितं धनम्। तृतीए न तपस्तप्तं, चतुर्थे किं करिष्यति? ॥ १ ॥

पहेली वयमां विद्या न भण्यो, बीजी वयमां धन न मेळव्युं. त्रीजीमां तप न कर्यो. (एवो आळसु माणस इन्द्रियो थाकतां. चोथी अवस्थामां शुं करवानो छे!)

तेथी पहेली बे अवस्था जतां वृद्धावस्थाना सामे वय जाय छे, अथवा बीजीरीते त्रण अवस्थाओ छे. (१) कुमार (२) योवन (३) वृद्धावस्था छे कह्युं छे के—

"पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने। पुत्राश्च स्थाविरे भावे, न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ॥ १ ॥"

बाळक पणामां पिता रक्षा करे छे. यौवनअवस्थामां धणी बचावे छे. अने वृद्धावस्थामां दिकरा पाळे छे, पण स्त्रीने कोइपण अवस्थामां स्वतंत्रता आपवी योग्य नथी.

अथवा बीजी रीते त्रण अवस्थाओ छे. (१) बाळ (२) मध्य अने (३) वृद्धत्व एम छे. कह्युं छे के—

आषोडशाद्भवेद्बालो, यावत्क्षीरान्नवर्त्तकः। मध्यमः सप्ततिं यावत्परतो वृद्ध उच्यते ॥ १ ॥

दुध अने अन्न खानार (जन्मथी लइने) सोळ वर्ष सुधी बाळक कहेवो, अने सीत्तेर वर्ष सुधी मध्यम अने त्यारपछी वृद्ध कहेवो, आ बधी अवस्थामां पण जे उपचयवाली (बळ वधे त्यां सुधी) अवस्था छोडीने आगळ गएलो अतिक्रांत वयवालो जाणवो. ("च" समुच्चयना अर्थमां छे.)

अहींआं कान, चक्षु, नांक, जीभ, अने स्पर्श इंद्रियोना अस्त (नाश) पामेला समस्त ज्ञाननी वात फक्त न लेवी पण तेनी साथे शरीरनी बीजी शक्तिओ पण नाश थतां मूढपणुं आवे छे. (आ करवुं आ न करवुं. एवो विवेक नष्ट थाय छे.)

तेथी वय उलंघतां (शरीरनी शक्ति ओछी थतां) विचारीने ते प्राणी (संसारमां मोह राखनारो पुरुष) निश्चयथी वधारे मूढपणुं पामे छे. (पण धर्म आराधतो नथी) तेथीज मूळ सूत्रमां कह्युं छे के—"तओस" विगेरे

अटेले धोळा वाळ जोइने अथवा शरीरपर करोचलीपडेली जोइने पोते हुं बुढ्ढो थयो एम जाणी वधारे खेद करे छे; अने तेथी मूढता प्राप्त करेछे

अथवा ते संसारी जीवने कान विगेरेनी शक्ति ओछी थतां तेने मूढता आवे छे; ए प्रमाणे वृद्धावस्थामां ते मूढ भावने पामीने

माय—लोकमां अवगीत (तीरस्कार करवा योग्य.) थाय छे. ते बतावे छे.

जेहिं वा सद्धिं संवसति, ते वि णं एगदा णियगा पुव्विं परिवयंति, सोऽवि ते णियए पच्छा परिवएज्जा, णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमंपि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा, से ण हासाय ण किड्डाए ण रतीए विभूसाए सू० ॥ ६४ ॥"

बीजा लोको तो दूर रहो पण जेनी साथे घरमां रहे छे. ते पोताना पुत्र स्त्री विगेरे छे ते स्त्री पुत्र विगेरे पण एकदा एटले वृद्धावस्थामां तेना पोताना सगा छतां तथा पोते समर्थ अवस्थामां कमाइने तेमने पोष्या हता ते स्त्री पुत्र विगेरे पण तेनो तीरस्कार करे छे. अने बोले छे के. आ मरतो नथी अने खाटलो पण मुकतो नथी. अथवा "परिवदंति" एटले पराभव करे. (छोकराओ तेमनुं अपमान करतां बोले छे के. "बेस बेस डोकरा? तुं शुं समजे छे." विगेरे अथवा परस्पर वातो करे छे के. हवे आ वुढ्ढानुं शुं काम छे. ए सगाओनोज तीरस्कार खमतो नथी पण पोतानो आत्मा पण पोताने निंदवा योग्य थाय छे. ते बतावे छे.

'वलिसन्ततमस्थिशेषितं, शिथिलस्नायुधृतं कडेवरम्। स्वयमेव पुमान् जुगुप्सते, किमु कान्ता कमनीयविग्रहा?'

सर्वत्र करोचलीओ पडी गएल अने हाडकां बाकी रहेल तथा ढीलां पडीगएल स्नायु (नाडीओ) ने धारण करनार.

आहाहा आ मारुं आवुं शरीर रह्युं! आवुं पोतानुं शरीर जोइने पुरुष पोतेज पोतानी निंदा करे छे. तो सुंदर शरीरवाळी स्त्री निंदा करे तों तेमां शुं नवाइ छे!

गोवालीओ बाळक तथा स्त्री विगेरे मंद बुद्धिवालाना ताटे द्रष्टांत द्वाराए कहेलो विषय वधारे बुद्धिमां ठसे छे. तेटला माटे उपर बतावेल विषयने समजवा माटे कथा कहे छे. धना शेठनी कथा, कौसंबी नगरीमां घणुं धन अने घणा पुत्रवालो धनो नामनो सार्थवाह (मोटो वेपारी) हतो. तेणे एक वखत पोते एकलाए घणा उपायो वडे स्वापतेय (पोतानु कमाएलुं धन) मेळव्युं. अने बधां दुःखी जे भाइ सगां मित्र स्त्री पुत्र विगेरे हतां तेमने माटे उपभोगमां लीधुं. त्यार पछी आ शेठ उमरना परिपाकथी बुढो थयो, त्यारे तेणे साचववामां होंशीयार एवा पुत्रोने बधा कार्यनी चिन्तानो भार सोंपी दीधो, ते पुत्रो पण विचारवा लाग्या के आ बुढ्ढाए अमने आवी अवस्थामां मूक्या के जेथी बधा माणसोमां हमो अग्रेसर थया, तेनो उपकार मानता छता उत्तम कुळनी सज्जनता धारण करता रह्या. पण कोइ वखते कार्यना प्रसगे तेओ दूर थया, तेथी पोतानी स्त्रीओने पोतानो अशक्त बाप सोंप्यो ते स्त्रीओ पण घरनी श्रीमंताइथी ते बुढ्ढाने तेल मर्दन तथा स्नान तथा भोजन विगेरेथी यथायोग्य कार्य संतोष पमाडवा करती हती.

त्यार पछी केटलोक काळ गयो. त्यारे घरमा पुत्र परिवार तथा माल मीलकत वधतां ए स्त्रीओ पोताना पतिनी संपदाथी अहंकारमां आवी. अने ते बुढ्ढो परवश थएलो अने तेनुं आखुं अंग कंपतुं हतुं. शरीरनां बधां द्वार अंदरना मळ विगेरे नीकळवाथी गंधाता हतां. तेथी ते बुढ्ढा तरफ घरनो स्त्रीओ धीमे धीमे योग्य उपचार करवामां प्रमाद करवा लागी.

आ डोशो पण पोतानी ओछी सेवा थती जोइ चित्तना अभिमानवडे तथा कुदरती लागणीथी दुःखना सागरमां डुबेलो बनी छोकरानी वहुओनी फरीआद छोकराओ पासे करवा लाग्यो, ते स्त्रीओने पोताना पतिए ठपको आपवाथी वधारे खेदवाली बनी (ससरानी उपर क्रोध लावी.)ने थोडी पण चाकरी करवी छोडी दीधी, अने ते दरेक वहुओ एक विचारवाळी बनीने पोताना पतिने कहेवा

लागी के अमो आवी सारी रीते रात दिवस जागीने डोशानी चाकरी करीए छीए, छतां आ डोशो बुढापाथी विपरीत बुद्धिवालो वनीने गुणोनो चोर थाय छे, अने जो अमारा उपर पण तमोने विश्वास न होय तो जे कोइ विश्वासवाला होय तेने काम सोंपो. तेथी छोकराओए पण तेज प्रमाणे कर्युं, अने बीजी वहुओने काम सोंप्युं, पण बीजी वहुओए बधां कार्योने बराबर योग्य अवसरे कर्यां, पछी पुत्रोए डोशाने पूछ्युं. त्यारे पहेलांथी रीसाएलो डोशो तेज प्रमाणे निंदा करवा लाग्यो. अने कहेवा लाग्यो के मारा कहेवा प्रमाणे आ वहुओ पण काम करती नथी. एटले छोकराओए खातरीवाळा माणसोना वचनथी खरी वात जाणीने विचार्युं के, आ डोशानी बराबर चाकरी करवा छतां वृद्धावस्थाथी व्यर्थ रोदणां रुवे छे, तेथी छोकराओए पण तेनी उपेक्षा करी तेथी बीजाओ आगळ पण अवसर आवतां छोकराओ डोशानी निंदा करवा लाग्या. आ प्रमाणे छोकराओए तथा वहुओए पराभव करेलो तथा सगां वहालांए तथा नोकरोए अपमान करेलो अने तेनुं वचन पण कोइ न मानतुं जोइने घरनां बधां सुखीओमां ते एकलो दुःखी बुढो पाछली अवस्थामां वधारे वधारे दुःख जोवा लाग्यो.

ए प्रमाणे बुढपाथी अशक्त थएल शरीरवाळो बीजो बुढो माणस पण तरखलाने वांकुं वाळवामां असमर्थ जेवो थतां कार्थनेज चाहता लोकोमां पराभव पामे छे. कह्युं छे के—

"गात्रं संकुचितं गतिर्विगलिता दन्ताश्च नाश गता, दृष्टिर्भ्रश्यति रूपमेव ह्रसते वक्त्रं च लालायते।
वाक्यं नैव करोति बान्धवजनः पत्नी न शुश्रूषते, धिक्कष्टं जरयाऽभिभूतपुरुषं पुत्रोऽप्यवज्ञायते ॥ १ ॥

शरीर संकोचाइ गयुं. टांटीआ लथडवा लाग्या. दांत पडी गया. आंखोनुं तेज गयुं. मोढांमांथी लाळ पडवा लागी. सगां वहालां कहेलुं करतां नथी. अने पोतानी स्त्री पण जोइती मागणी स्वीकारती नथी. आ हाहाहा! बुड्ढा थएल पुरुषने अशक्त थतां पुत्र पण अपमान करे छे. ते कष्टदाइ बुढ्ढापाने धिक्कार हो—(विगेरे जाणवुं.)

आ प्रमाणे बुढ्ढापाथी हारेलाने सगां वहालां निंदे छे. अने ते पण गभराएलो वे बाकळो बनीने बीजा लोको आगळ पोताना घरनी निंदा करे छे. मूळ सूत्रमां "सो वा" इत्यादि शब्दो छे. ते पहेलांनी अपेक्षाए बीजो पक्ष सूचवे छे. एटले एम जाणवुं के सगां वहालां अपमान करे छे. अथवा पोते बुढ्ढो थतां दुःखने लीधे सगां वहालांनी निंदा पारका आगळ पोते करे छे. अथवा पोते गभरामणथी सगांनुं अपमान करे छे.

कदाच कोइए पूर्वे धर्म आराध्यो होय तेवानुं धर्मात्मा जीवो बुढ्ढापामां अपमान न करे तो पण तेनुं दुःख दूर करवाने तेओ समर्थ थता नथी तेवुं सूत्रकार कहे छे. "के तारा छोकरा तथा वहुओ तने तारवा माटे शक्तिमान नथी अथवा तने शरण आपवा योग्य नथी तेमज तुं पण तेओने तारवाने समर्थ नथी तेम शरण आपवा योग्य नथी (आपदामांथी वचावे ते त्राण छे) जेम महा श्रोतवडे (पाणीना पूरमां सारा नाविकने आश्रयी जे नावमां बेसाय तो पार उतराय) जेनो आश्रय लइने बेसीए अने भय न आवे ते शरण छे किल्लो अथवा पर्वतने आश्रये वचे; अथवा शूर पुरुष गामने वचावे ते शरण छे.

"जन्मजरामरणभयै, रभिद्रुते व्याधिवेदनाग्रस्ते। जिनवरवचनादन्यत्र, नास्ति शरणं कचिल्लोके ॥ १ ॥"

जन्म जरा अने मरणना भयथी पीडाएला अने रोगनी वेदनाथी घेराएला पुरुषने जिनेश्वरना वचनथी बीजुं कंइ शरण आ

लोकमां क्यांय नथी. उलटुं ते पीडाएली अवस्थामां पोते कोइनी हांसी करवा योग्य रह्यो नथी. किंतु जगत् तेनी हांसी करे छे.! जेनी पारकाथी हांसी थाय ते केवीरीते हर्ष पामे (पोते पोताना समक्ष के पाछळथी हसी खुसीनी वात करवा योग्य नथी किंतु हांसी करवाने योग्य छे. तेम तेनी साथे ओळंगवा, कुदवाने, ताळी पाडवा के तेवो बीजो कोइ जातनो वात करवा विगेरेनो आनंद पण करवा योग्य नथी तथा तेनुं रुप विगेरे स्त्रीओने गमतुं नथी उलटुं स्त्रीओ तेनी निंदा करे छे. अने कहे छे के. "तुं तारा आत्माने जोतो नथी! माथुं जोतो नथी! के जे धोळा वाळ रुप राखथी लेपाएल छे! हुं तारी दिकरी जेवी जुवान छुं अने तुं मारी साथे आनंद (लग्न) करवा इच्छे छे. आ दुनीयामां जाणीतुं छे के ते बुढ्ढो संसार सुखने योग्य नथी तेम शरीरनी शोभा करवाने पण योग्य नथी अने कदाच शोभा करे तो पण वगडी गएली अने करोचली पडेली चामडीवालो बुढ्ढो शोभतो नथी. कह्युं छे के.

न विभूषणमस्य युज्यते न च हास्यं कुत एव विभ्रमः? । अथ तेषु च वर्त्तते जनो, ध्रुवमायाति परां विडम्बनां॥

तेने शोभा करवी योग्य नथी. तेने हर्ष नथी अने स्त्रीने खुश करवानो विभ्रम (चेष्टा) क्यांथी होय अने ते छतां जुवान स्त्रीओमां खेलवा जाय तो निश्चये मोटा अपमानने पामे छे.

जं जं करेइ तं तं न सोहए जोव्वणे अतिक्कंते॥ पुरिसस्स महिलियाइ, व एक्कं धम्मं पमुत्तूणं ॥ २ ॥

जुवानी जतां बुढ्ढो माणस जे कंइ करे ते शोभतुं नथी. एटले एक धर्मने छोडीने स्त्रीने खुशी करवा जे कंइ बुढ्ढो करे ते बधुं निरर्थक छे.

अप्रशस्त मूळ स्थान कह्युं हवे प्रशस्त मूळ स्थान कहे छे.

इच्चेवं समुट्ठिए अहोविहाराए अंतरं च खलु इमं सपेहाए धीरे मुहुत्तमवि, णो पमायए वओ अच्चेति जोव्वणं व. (सूत्र. ६५)

अथवा जे कारणथी ते वहालांओ संसार समुद्रथी तारवा के बीजाना भयथी रक्षण आपवा समर्थ नथी एवुं शास्त्रना उपदेशथी उत्तम पुरुषने समजाय तो तेणे शुं करवुं ते कहे छे (इति शब्दनो उपर कहेलो अर्थ छे) अप्रशस्त मूळ गुणस्थान (संसारी विषय सुख) मां राचेला जीवने बुढापानी अशक्तिथी घेरातां हर्षना माटे के क्रीडाना माटे के भोगविलास माटे अथवा शरीरनी शोभामाटे योग्यता नथी (परंतु ते तेणे पहेलेथी समजवुं जोइए) के संसारमां जे कंइ सुख अथवा दुःख पडे छे. ते दरेक पोताना शुभ अशुभ कर्मनुं फळ बधा प्राणीओने भोगववानुं छे. एवुं जाणीने ते समजेला प्राणीए पूर्वे कहेला पहेला अध्ययन शस्त्र परिज्ञामां बनावेल महाव्रतोमां स्थिर चित्तवाला बनीने साधुए विचारवुं के अहो (मारा पुन्य उदयथी आवुं निर्मळ चारित्र मल्युं छे. एम जाणीने) सुंदर विहार करवा योग्य छे." जेमां शास्त्रमां कहेल संयम अनुष्ठान छे. तेना माटे योग्य विहारमां तत्पर बनी जरा पण प्रमाद न करे. वली तेणे विचारवुं जोइए के आर्य क्षेत्र उत्तम कुळमां जन्म वीतरागनो धर्म तेना उपर श्रद्धा अने आवां सुंदर महाव्रतो विगेरेनो सारो अवसर मने मल्यो छे. तो केवीरीते प्रमाद थाय तेथी विनेय (शिष्ये) तप संयममां जरापण खेद न पामतां उपर कहेल उत्तम वस्तु आर्य क्षेत्र प्राप्तिथी आनंद पामीने गुरु शुं कहे छे ते समजे. गुरु कहे छे के आ तारो योग्य अवसर छे, अनादि संसारमां घणा भव भमतां तने धर्म प्राप्ति थवी घणी दुर्लभ छे. माटे हे धीर! आ सारा अवसरने विचारीने तुं एक मुहूर्त (४८ मीनीटनी अंदरनो

वखत.) पण प्रमाद वश न थजे (मूळसूत्रमां अनुस्वारनो लोप थयो छे. अने ते प्रमाणे बीजुं. पण व्याकरण विरुद्ध आवे तो समजी लेवुं के. मागधीमां तथा संस्कृतमां कंइक भेद छे.) अंतर्मुहूर्त्तनो वखत बताववानुं कारण ए छे के. केवळज्ञान विनाना जीवोने समय विगेरेनुं वारीक ज्ञान नथी तेथी तेटलो वखत बताव्यो. खरी रीते तो एक समय मात्र पण प्रमाद न करवो एवो सुगुरुनो उपदेश जाणवो. कह्युं छे के.

"सम्प्राप्य मनुषत्वं संसारासारतां च विज्ञाय। हे जीव? किं प्रमादान्न चेष्टसे शान्तये सततम्? ॥ १ ॥

मनुष्य पणुं पामीने संसारनी असारता समजीने. प्रमादथी केम बचतो नथी तथा हे जीव शांतिना माटे महेनत केम करतो नथी?

ननु पुनरिदमतिदुर्लभ मगाधसंसारजलधिविभ्रष्टम्। मानुष्यं खद्योतकतडिल्लताविलसितप्रतिभम् ॥

तुं जोतो नथी के आ अतिदुर्लभ संसार समुद्रमां भ्रष्ट थएला मनुष्यने आगीआना कीडाना प्रकाशवा जेवुं अथवा विजळीना झबकारा जेवुं संसारी सुख छे.

वळी शास्त्राकार कहे छे के शामाटे प्रमाद न करवो? सांभळो. तारी वय (उंमर) दिवसे दिवसे व्यतीत थाय छे. जुवानी चाली जाय छे.! (मूळ सूत्रमां वय अने जुवानी एक छतां जुवानीमां मोह थाय माटे ते जुदुं बतावेलुं छे.) जुवानीमां धर्म अर्थ अने काम त्रणे सधाय छे. माटे मोहमां न पडतां तेमां धर्म साधी लेवो गुरु कहे छे के हे शिष्य! ते जुवानी जल्दीथी जाय छे. कह्युं छे के.

"नइवेगसमं चवलं च जीवियं जोव्वणं च कुसुमसमं। सोक्खं च जं अणिच्चं तिण्णिवि तुरमाणभोज्जाइं" ॥

नदीना पूर समान तारुं जीवित चपळ छे. अने जुवानी फुलनी समान. (जल्दी करमाय तेवी.) छे संसारीक सुख अनित्य छे अने ते जीवित जुवानी अने सुख ए त्रणे शीघ्र भोगववानां छे. (जल्दी विती जनारां छे.)

आ प्रमाणे मानीने साधुए विचारवुं के विहार करवो ते वधारे सारुं छे. (जे साधुओ चालवाथी कंटाली एक जग्याए पडी रहेता होय तेमणे उपरनुं रहस्य विचारवा जेवुं छे.)

पण जे संसारना सुख वांच्छको छे, तेओ असंयम जीवित ने खुखकारी माने छे. तेमनी शुं दशा थाय छे. ते सूत्रकार कहे छे.

जीविए इह जे पमत्ता से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता विलुंपित्ता उद्यवित्ता उत्तासइत्ता, अकडं करिस्सामित्ति मण्णमाणे, जेहिंवा सद्धिं संवसइ ते वा णं एगया निगया तं पुव्विं पोसेंति, सो वा ते नियगे पच्छा पोसिज्जा, नालं ते तव ताणाए 'वा' सरणाए 'वा' तुमंपि तेसिं, नालं ताणाए वा सरणाए वा (सू. ६६)

जेओ पोतानी वय वीते छे, तेने जाणता नथी तेओ विषय कषायमां प्रमादी थाय छे. तेओ रात दिवस कलेश पामता काळ अकाळमां उद्यम करी जीवोने दुःख आपनारी क्रिया (आरंभ) करे छे. संसारी गुणमां रहीने विषयना अभिलाषमां प्रमादी बनी स्थावर अने त्रस जीवोना घातक बने छे. (बहु वचनने वदले. एक वचन मूळ सूत्रमां छे. ते जातिनी अपाक्षाए जाणवुं) तथा कान नाक विगेरेने छेदनारा पण छे. तथा माथुं आंख पेट विगेरेने भेदनारा पण छे. अने कपडानी गांठ विगेरेने छोडीने चोरनारा पण छे. गामनी लुंट करनारा पण छे. तथा विष तथा शस्त्र वडे प्राण लेनारा पण छे. अथवा दगो देनारा पण छे. अथवा ढेखाळो

विगेरे मारीने त्रास आपनारा पण छे.

शिष्य पूछे छे. शामाटे आवी परने पीडा आपनारी क्रिया करे छे.?

उत्तर—बीजो तेवुं नथी करी शकतो पण हुं बहादुर छुं एवुं अभिमान लावीने पैसो मेळववा मारवा विगेरेनी पाप क्रियामां ते जीव वर्त्ते छे. वली ए प्रमाणे ते अतिशय क्रूरकर्म करनारो समुद्रने तरवानी क्रिया पण करे छे. छतां तेना पापना उदयथी कंइ पण न मेळवेलो. गांठनुं गुमावी केवो थाय छे. (केवुं अपमान पामे छे.) ते बतावे छे के जेओनी साथे ते वसे छे, ते माता पिता सगां विगेरेनुं पूर्वे जेणे पोषण कर्युं छे. अने आ वखते जो ते न कमाइ लाव्यो होय तो तेओ तेनुं रक्षण करता नथी अथवा संसारी दुःखथी पार उतारता नथी. कदाच कमाइने लावे अने सगाने पोषे तो तेओ तारुं रक्षण करवा समर्थ नथी तेमज तुं तेमना आलोकना रक्षण माटे के परलोक ना भलाना माटे समर्थ नथी. वली एम समजवुं के-महा कष्टथी मेळवेलुं धन पण साचवी राख्या छतां रक्षण आपवा योग्य नथी. ते बतावे छे.

उवाईयसेसेण वा संनिहिसंनिचओ किज्जई, इहमेगेसिं असंजयाण 'भोयणाए' तओ से एगया रोगसमुप्पाया समुप्पज्जंति, जेहिं वा सद्धिं संवसइ ते वा णं एगया नियगा तं पुव्विं परिहरंति, सो वा ते नियगे पच्छा परिहरिज्जा, नालं ते तव ताणाए'वा'सरणाए वा, तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा सरणाए वा (सू.६७)

ते घणुं खाधुं (भोगव्युं.) हवे तेमांनुं थोडुं वाकी छे. अथवा जे नथी भोगवायुं तेनो तुं संचय करे छे. अथवा उपभोग करवाने

माटे पुष्कळ सुख लेवा द्रव्यनो संचय करे छे. ते लोभीओ जीव आ संसारमां असंयत. (संसारसुखना चाहक.) ना माटे अथवा साधुनो वेश मात्र धारेला पण साधुगुणथी रहित एवाने जमाडवा माटे धन एकठुं करे छे. तेने गुरु कहे छे के ते तने अंतराय कर्मनो उदय आवतां तारी संपत्ति माटे सहायक नही थाय अथवा द्रव्य क्षेत्र काळ भावना निमित्तथी ज्यारे तने असातावेदनीयकर्मनो उदय थाय त्यारे रोगो आवतां ताव विगेरेथी तुं पीडाय छे. (त्यारे ते धन के सगां कंइ पण काम लागतां नथी) ते पापी ज्यारे तेना पापना उदयथी कोढ, क्षय रोग, विगेरेथी पीडाएलो ज्यारे तेनुं नाक झरे छे. अथवा हाथ पग गळे छे. (लथडे छे.) अथवा दम चढवाथी अशक्त थतां जे सगां वहालां साथे पोते वसेलो छे ते तेना दुःखथी कंटाली भयंकर रोग उत्पन्न थतां तेने त्यजे छे. (क्षयरोगीना आश्रममां मोकले छे.) अथवा सगांने घणो कंटाळो आपे तो ते सगां तेनी घेलाइथी तेनी उपेक्षा करे. एटले बधा सगां तजीदे. अथवा न तजे तोपण ते रोगोथी बचाववा के शरणुं आपवा समर्थ नथी त्यारे रोगीए शुं करवुं! ते गुरु कहे छे के समताथी सहन करवुं.

जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं (सू. ६८)

आ प्रमाणे बुद्धिमाने दरेक प्राणीनुं दुःख के सुख तेना पुन्य पापथी आवेलुं छे. ते विचारवुं एटले ताव विगेरेनुं दुःख आवतां पोताना करेलां कर्मनुं फळ अवश्य भोगववुं पडशे. माटे हाय पीट न करवी कह्युं छे के.

"सह कलेवर! दुःखमचिन्तयन्, स्ववशता हि पुनस्तव दुर्लभा। बहुतरं च सहिष्यसि जीवहे! परवशो न च तत्र गुणोऽस्ति ते ॥ १ ॥"

हे शरीर! तुं बीजो विचार कर्या विना दुःखने सहन कर कारणके हाल तने स्ववशता मळी छे. ते दुर्लभ छे. पण जो तुं हायपीट करीश तो परभवमां घणां दुःख भोगववां पडशे. त्यां परवशता छे. तने त्यां विशेष लाभ नथी.

एथी ज्यां सुधी कान विगेरेनी शक्ति न हणाय अने तारा सगा तने बुढ्ढो थतां न निंदे अने दया लावीने तारुं पोषण करवानो वखत न आवे तथा क्षयरोगी थतां घरमांथी न काढे त्यां सुधी तुं तारो आत्मार्थ (परलोकनुं हित) साधी ले ते बतावे छे.

अणभिक्कंतं च खलु वयं संपेहाए (सू. ६९)

(मूळ सूत्रमा "च" विशेष पणा पाटे छे. खलु शब्दनो अर्थ पुनः–थाय छे.) आ प्रमाणे पोतानी उमर जती जोइने संसारी जीव घेलो बने छे. एवुं पूर्वे कहेलुं छे. माटे ते पश्चाताप न करवो पडे तेथी जुवानअवस्थामां बुद्धिथी विचारीने आत्महित करे.

प्रश्न—शुं जुवानीमांज आत्महित करवुं.? के बीजी वखतमां पण करवुं!

उत्तर—बीजाए पण आत्महित ज्यारे समज्यो होय त्यारे करी लेवुं. अर्थात् बोध मळे त्यारे धर्म साधी लेवो ते बतावे छे.

खणं जाणाहि पंडिए (सू. ७०)

क्षण–ते धर्म करवानो समय छे. ते आर्यक्षेत्र उत्तम कुळ विगेरे छे. अने निंदायोग्य, पोषण करवा योग्य, तथा तजावाना दोषथी दुष्ट छे. तेवा जरा (बुढ्ढापो) बाळकपणुं अथवा रोग छे. ते न होय त्यारे गुरु कहे छे. हे पंडित हे आत्मज्ञ! तुं बोध पाम अने आत्महित कर अथवा खेद पामता शिष्यने गुरु कहे छे. हे शिष्य! ज्यांसुधी तारी जुवानी वीती नथी अथवा निंदापात्र थयो नथी

अथवा पूर्वे कहेला त्रण दोषथी रहित छे, त्यांसुधी हे पंडित शिष्य द्रव्य क्षेत्र काळ भावना भेदथी भिन्न अवसरने आ प्रमाणे तुं जाण बोध पाम, ते बतावे छे.

द्रव्य क्षण ते तुं जंगमपणुं पाम्यो छे. पांच इंद्रियो छे. उत्तम कुळमां जन्म्यो छे. रुप बळ आरोग्य अने आयुष्य सारुं पाम्यो छे आ प्रमाणे उत्तम मनुष्य भव पामीने संसार समुद्रथी पार उतारवा समर्थ चारित्रनी प्राप्तिने योग्य तने अवसर मल्यो छे अने अनादि संसारमां भमता जीवने आ अवसर मलवो दुर्लभ छे. कारणके चारित्र मनुष्य जन्ममां छे. देव नारकीना भवमां सम्यक्त्व तथा ज्ञानना बोध रुप सामायिक छे. अने तिर्यंचमां कोकनेज देशविरति (श्रावकनां व्रत.) होय छे.

क्षेत्र क्षण ते जे क्षेत्रमां चारित्र मले ते सर्व विरति अधोलोकनागाममां अथवा तिर्यंच क्षेत्रमांज छे तेमां पण अढीद्वीप अने बे समुद्रमां छे. तेमांपण "१५" कर्म भूमिमां छे. तेमां पण भरतक्षेत्रनी अपेक्षाए "२५॥" देशमां चारित्रधर्म प्राप्त थाय छे. आ प्रमाणे क्षेत्ररुप अवसर दुर्लभ जाणवो बीजा क्षेत्रोमां पहेलां बेज सामायिक छे. बीजा घणा द्वीपो अने समुद्रो छे. तेमां सम्यक्त्व अने श्रुत सामायिक छे. तथा कोइकने देशविरतिनो संभव थाय छे.) काळक्षण—

काळरुप अवसर आ अवसर्पिणीमां त्रण आरा जे सुखम, दुखम, दुखम सुखम. तथा दुखम नामना त्रण आरामां धर्म प्राप्ति छे. तथा उत्सर्पिणीमां त्रीजा चोथा आरामां सर्व विरति सामायिकनी प्राप्ति छे. आ नवो धर्म पामता जीवआश्रयी कह्युं पण पूर्वे धर्म पामेला तो तिर्यक् अथवा उर्द्ध तथा अधोलोकमां तथा बधा आरामां जाणवा. भावक्षण—

ते बे प्रकारे छे. कर्म भावक्षणनो कर्म भावक्षण कर्म भावक्षण ते कर्मनुं उपशम थवुं. क्षय उपशम थवुं अथवा सर्वथा क्षय थवुं

ए त्रणमानुं कंइपण प्राप्त थाय ते अवसर जाणवो तेमां उपशम श्रेणीमां चारित्रमोहनीयउपशम थतां अंतर्मुहूर्त्त काळ औपशमीक नामनो चारित्र क्षण थाय छे ते चारित्र मोहनीयनो क्षय थतां अंतर्मुहूर्त्तनोज छद्मस्थ यथाख्यातचारित्र नामनो क्षण थाय छे. अने क्षय उपशमवडे क्षायोपशमिक चारित्रनो अवसर छे ते उत्कृष्टथी थोडु ओछुं एवो पूर्व कोडी वर्षनो चारित्र काळ जाणवो. सम्यक्त्व क्षण ते अजघन्य उत्कृष्ट (मध्यम) स्थितिमां वर्तता आयुष्यवाळा जीवने छे.

अने बीजा कर्मोनुं पल्योपमना असंख्येय भाग ओछुं एवा सागरोपम कोडाकोडी स्थितिवाळा जीवने छे. तेनो अनुक्रम आ प्रमाणे छे.

सम्यक्त्वनुं वर्णन.

ग्रंथी—(मिथ्यात्वनी चीकणा कर्मनी बंधाएली गांठ) वाळा अभव्य जीवोथी अनंत गुणवाळी शुद्धिथी शुद्ध थएल मति, श्रुत, विभंग ए त्रण ज्ञानमांथी कोइपण साकार उपयोग जे जीवने होय ते शुद्ध लेश्या (तेजु, पदम, शुकल) मांनी कोइपण लेश्यावाळो जीव अशुभकर्मप्रकृतिनो चार ठाणीओ रस तेने बे ठाणीओ करीने अने शुभ प्रकृतिना बे ठाणीआ (चासणीमां जेम वधारे रसना तार पडे ते प्रमाणे कर्मना भाव होय. अने आत्मा वेदे ते ठाण कहेवाय छे.) ने चार ठाणीआवाळो करी वांधतो तथा ध्रुव प्रकृतिने परिवर्त्तमान करतो भव प्रायोग्य वांधतो जीव जाणवो. हवे ध्रुव प्रकृति बतावे छे.

ज्ञानआवरणीय पांच; तथा दर्शनावरणीय नव—मिथ्यात्वनी एक—तथा सोळ कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस कार्मण शरीर, वर्ण, गंध, रस स्पर्श अगुरुलघु उपघात—निर्माण अने पांच अंतराय ए बधी मलीने ४७ ध्रुव प्रकृति छे. ध्रुवनो अर्थ एवो छे के, ते हंमेशां बंधाय छे.

मनुष्य अथवा तिर्यंच आ बेमांथी कोइपण जीव ज्यारे प्रथम सम्यक्त्व मेळवे छे, त्यारे आ २१ प्रकृति परिवर्तनवाळी बांधे छे ते नीचे मुजब छे.

देवगति तथा अनुपूर्वी मली बे. तथा पंचेंद्रिय जाति वैक्रिय शरीर, अंगोपांग मली बे, तथा समचतुरस्रसंस्थान, पराघात, उ-

च्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, प्रशस्त त्रसादि दशक, शाता वेदनिय उंचगोत्र मळी २१ छे. पण देव अने नारकिना जीव मनुष्यगति अने अनुपूर्वी मली बे. तथा औदारिक शरीर अंगेपांग मलीने बे. पहेलुं संघयण मलीने ए पांच सहीत शुभ वांधे छे.

तमतमा (सातमी नारकी.) वाळा तिर्यंच गति तथा अनुपूर्वी मली बे तथा नीच गोत्र सहीत वांधे छे.

आ प्रमाणे तेना अध्यवसाय उत्पन्न थतां आयुष्य न वांधतो प्रथम उपर कही गया ते जीव यथा प्रवृत्ति नामना करणवडे ग्रंथीने मेळवीने अपूर्व करणवडे मिथ्यात्वने भेदीने अंतरकरण करीने अनिवृत्तिकरणवडे सम्यकत्व मेळवे छे.

त्यारपछी क्रमवडे कर्म ओछां थतां चढता भावना शुद्ध कंडक (शुद्ध भावना अंशने कंडक कहे छे.) मां देश विरति तथा सर्व-विरति (साधुपणा)नो अवसर आवे छे. आ प्रमाणे कर्म भाव क्षण कहीने नो कर्मभाव क्षण बतावे छे.

नो कर्मभावक्षण ते आळस मोह अवर्णवाद तथा स्थंभ (मान विगेरे)ना अभावे सम्यकत्व विगेरेनी प्राप्तिनो अवसर छे.

कारणके आळस विगेरेथी हणाएलो (प्रमादी जीव) संसारथी छुटवा समर्थ मनुष्य भव पामीने पण धर्म श्रद्धा विगेरे उत्तम गुणो मेळवतो नथी. कह्युं छे के.—

"आलस्स मोहऽवन्ना थंभा कोहा पमाय किविणत्ता भयसोगा अन्नाणा, विक्खेव कुऊहला रमणा ॥ १ ॥

आलस्य मोह अवरण (निंदा) स्थंभ (अहंकार) क्रोध प्रमाद, कृपणता, भय, शोक अज्ञान विक्षेप कुतुहल रमण आ १३ कारणो (१३ काठीआ)छे.

एएहिं कारणेहिं, लद्धूण सुदुल्लहंपि माणुस्सं। न लहइ सुइं हिअकरिं संसारुत्तारणिं जीवो ॥ २ ॥

ते मळतां जीव पोते मनुष्यपणुं अमूल्य छे. ते मेळवीने पण संसारने पार उतारनार हितकारनार गुरुवाणीने पामतो नथी. आ प्रमाणे चार प्रकारनो क्षण बताव्यो तेमां एम समजवुं के द्रव्यक्षणमां जंगमपणाथी श्रेष्ठ मनुष्यजन्म अने क्षेत्र क्षणमां आर्यक्षेत्र छे. काळ क्षणमां धर्म चरणनो काळ छे भाव क्षणमां क्षय उपशम विगेरे छे. आ प्रमाणे सारो अवसर पामीने धर्म आराधवो जोइए वली कहे छे के.

जाव सोयपरिण्णाणा अपरिहीणा, नेत्तपरिण्णाणा, अपरिहीणा घाणपरिण्णणा अपरिहीणा जीह परिण्णाणा फरि० इच्चेएहिं विरुवरुवेहिं, पण्णाणेहिं अपरिहिणेहिं आयट्ठं संमं समणुवासिज्जासि (सू.७१) त्तिबेमि

ज्यांसुधी आ नाश पामनारी कायाना अपशद (नियकहरामपणा)थी काननुं ज्ञान (सांभळवुं ते) बुड्ढापणाना के रोगना कारणे ओछुं न थाय त्यांखुधी धर्म करी लेवो.

आप्रमाणे आंख कान जीभ स्पर्शना विज्ञाननी शक्ति पण पोतानुं काम करवामां निष्फळ न थाय त्यांसुधी पण धर्म साधवो. जो पांच इंद्रियोनी शक्ति ओछी थशे तो धर्म नही थाय आ शक्ति ओछी थशे तो इष्ट अनिष्टपणे जुदा जुदा ज्ञानवडे काम नहि थाय माटे ज्यांसुधी शक्ति होय त्यांसुधी आत्मानो अर्थ ते सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्ररुप साधी लेवुं. आ त्रण सीवाय बाकी वधां अनर्थ समजवां अथवा आत्माने माटे जे प्रयोजन छे. ते आत्मार्थ छे. अने ते चारित्रनुं अनुष्ठान जाणवुं. अथवा "आयत" ते अपर्यवसान (अनंतपणा) थी मोक्षज छे. ते मोक्ष अर्थ छे. तेने साधी ले. अथवा आयत्त (मोक्ष.) तेज जेनुं प्रयोजन छे. एवा पूर्वे कहेला सम्यक्

दर्शन ज्ञान चारित्र छे. तेमां निवास कर एटले शास्त्रोक्त रीतिए अनुष्ठान वडे तुं आराध, अने पछी पण वय न वीती होय ते विचारीने अवसर मेळवीने कान विगेरेनुं ज्ञान ओछुं थतुं जाणीने आत्मार्थने आत्मामां धारण करजे.

अथवा ते आत्मार्थवडे एटले ज्ञान दर्शन चारित्ररुप आत्मार्थवडे आत्माने रंजीत करजे. (तेमां आनंद मानजे.) अथवा आयतार्थ जे मोक्ष छे. तेने फरीथी संसारमां न आववुं पडे ते माटे शास्त्रमां कहेली विधिए अनुष्ठान करीने आत्मावडे (मोक्षने) पामजे.

आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे. में श्री वर्धमानस्वामी पासे अर्थथी जे सांभळ्युं. ते हुं तने सूत्र रचनावडे कहुं छुं. आ प्रमाणे बीजा अध्यायननो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशो.

पहेला उद्देशानो बीजा उद्देशा साथे आ प्रमाणे संबंध छे के विषय—कषाय तथा माता—पिता विगेरेनो प्रेम विगेरेथी जे बंधन ते लोक छे. तेनो विजय करवाथी अर्थात् राग द्वेषने छोडी समभाव धारण करवाथी मोक्षनी प्राप्ति छे. अने तेनो हेतु चारित्र छे. जेम संपूर्ण भावने अनुभवे छे, एवा रुपवाळो आ अध्ययननो अर्थ अधिकार पूर्वे कह्यो छे, तेमां मातापिता विगेरे लोकनो विजय करवाथी रोग अने बुढ्ढापानी अशक्तिथी ज्यांसुधी अशक्त न थाय; ते पहेलां आत्मार्थ ते संयमने आराधवो; ए पहेला उद्देशामां कह्युं; अने आ बीजा उद्देशामां पण ते संयमने पाळतां कदाच ते जीवने मोहनीयकर्मनो उदय थवाथी अरति थाय; अथवा अज्ञानकर्म विगेरे, तथा लोभना उदयथी पूर्वकर्मना दोषथी संयममां स्थिरता न रहे; तो उत्तम साधुए ते अरति विगेरेने दूरकरी जेम, संयममां दृढता थाय तेम करवुं. ते आ बीजा उद्देशामां बताव्युं छे. अथवा आठ प्रकारना कर्म जेम दूर थाय; ते आ अध्ययनना अर्थाधिकारमां कह्युं

छे, ते केवीरीते कर्मक्षय थाय ते बतावे छे.

अरइं आउट्टे से मेहावी, खणंसि मुक्के (सू. ७२)

पूर्वसूत्र साथे एनो संबंध कहेवो जोइए ते बतावे छे. ७१ मा सूत्रमां कह्युं:-आत्मार्थ ते संयम छे. तेने सारी रीते पाळते संयममां कदाचित अरति थाय; तेथी उपदेश आपे छे के, अरति न करवी; ते आ ७२ मां सूत्रमां बताव्युं छे.

तथा परंपर सूत्र संबंध आ प्रमाणे छे. “खणं जाणाहि पंडिए.” एटले चारित्रनो क्षण (अवसर) मेळवीने अरति न करे; तथा प्रथमना सूत्र साथे आ संबंध छे. “सुअं मे” इत्यादि में भगवान पासे आ सांभळ्युं छे के, “अरइं” इत्यादिके साधु अरति न करे.

आ अरति साधुने पांच प्रकारना आचारमां मोहना उदयथी कषाय, तथा प्रेमथी एटले मातापिता स्त्री विगेरेमां स्नेह थतां थाय छे, ते समये संसारनो स्वभाव जाणेला बुद्धिमान साधुए ते मोहने दूर करवो. जो तेम करे तो चारित्र पळे नहिं तो शुं थाय? ते कहे छे. जेम, कंडरीकने दुःख थयुं; तेम, संयममां अरति करनारने नरकगमन छे, तथा विषयवांच्छामां रति दूर करीने साधुनी दश प्रकारनी गुरुनी आज्ञामां रहेवारूप विगेरे समाचारीमां ते कंडरिकना भाइ पुंडरिकनी माफक रति थाय; तो संयममां अरति न थाय तेज कहे छे:-

साधु संयममां रति करे (आनंद माने) जेथी तेने कोइपण प्रकारनी बाधा (अडचण) न आवे; तथा आलोकमां पण संयम शिवाय बीजुं सुख छे, एवुं मनमां पण न लावे. कह्युं छे के:—

“क्षितितलशयनं वा प्रान्तभैक्षाशनं वा, सहजपरिभवो वा नीचदुर्भाषितं वा, महति फलविशेषे नित्य-

सभ्युद्यतानां, न मनसि न शरीरे दुःख मुत्पादयन्ति ॥ १ ॥

पृथ्वीनां तळमां शयन छे तुच्छ भिक्षानुं भोजन, अथवा कुदरती लोकलुं अपमान, अथवा नीच पुरुषोनां महेणां सांभळवां; आटलुं छता उत्तम साधुओ मोटाफळ (मोक्षने) माटे निरंतर उद्यम करनारा छे. तेमने मनमां के, शरीरमां पूर्वे कहेलां कृत्य कंइपण दुःख उपजावी शकतां नथी. (मोक्षार्थी–साधु तेने गणकारता नथी)

तणसंथारनिसण्णोऽवि, मुणिवरो भट्ठ रागमयमोहो। जं पावइ मुत्तिसुहं, तं कत्तो चक्कवट्टीवि? ॥ २ ॥"

घासना संथारे बेठेलो जे मुनि छे, अने तेणे राग-मद, मोह त्यज्यां छे, तेवो मुनिज मुक्ति-सुख पामे छे, तेवुं सुख चक्रवर्त्ती पण क्यांथी पामे!

अहीं चारित्र मोहनीयकर्मना क्षय उपशमथी जे पुरुषने चारित्र मळ्यु छे, तेने पाछो मोहनो उदय थतां घेर जवानी इच्छावाळाने आ सूत्रवडे उपदेश अपाय छे, अने ते संबंधमां जे कारणोथी संयममांथी भ्रष्ट थवाय छे, ते हेतुओने निर्युक्तिकार कहे छे.

बिइउद्देसे अदढो उ, संजमे कोइ हुज्ज अरईए। अन्नाणकम्मलोभा, इएहिं अज्झत्थ दोसेहिं ॥ १९७ ॥

(पहेला उद्देशामां निर्युक्तिनी गाथा घणी कही; अने आ उद्देशामां आ एकज छे, तेथी मंदबुद्धिवाळा शिष्यने आरेका (शंका) थाय के, आ एक पण पहेला उद्देशानी हशे; ते शंका दूर करवा बीजो उद्देशो एवुं गाथामां लखवुं पडयुं छे) बीजा उद्देशामां बताव्युं के, कोइ कंडरीक जेवा साधुने १७ प्रकारना संयममां मोहनीयना उदयथी अरति थाय; अने तेथी संयममां ढीलापणुं थाय; अने ते मोहनो उदय मनमां रहेला जे दोषो छे, तेनाथी थाय छे, ते दोषो अज्ञान, लोभ, विगेरे छे.

एटले आदि शब्दथी इच्छा मदन काम विगेरे पण लेवा ते अज्ञान लोभ काम विगेरेथी साधुने अरति थाय छे. ते वताव्युं. शंका–अरतिवाला बुद्धिवानने आ ७२ मा सूत्रवडे उपदेश अपाय छे के संयममां अरति थाय तो बुद्धिवान साधुए अरति दूर करवी परंतु संसारनो स्वभाव जाणेलो आवुं कहेवाथी ते अरतिवालो थाय नही अने जो अरतिवालो थाय तो संसारनुं स्वरुप जाणनारो विद्वान न कहेवाय आ बेने परस्पर विरोध होवाथी जेम एक जग्याए छाया अने तडको न रहे ते अहीं ते बुद्धिमान न कहेवो अथवा अरतिवालो न कहेवो. कह्युं छे के.

तज्ज्ञानमेव न भवति यस्मिन्नुदिते विभाति रागगणः। तमसः कुतोऽस्ति शक्तिर्दिनकरकिरणाग्रतः स्थातुम?"

जेना उदयथी राग गण (संसारप्रेम) उत्पन्न थाय छे. तेने ज्ञान न कहेवुं कारणके ज्यां सूर्यना किरणो प्रकाशीत थयां होय त्यां अंधाराने रहेवानी शक्ति क्यांथी होय? विगेरे छे.

जे अज्ञानी जीव मोहथी चित्तमां विकल्प करे ते विषयसुखथी निश्चय (नक्की) रागद्वेष विगेरे सर्व जोडलां जे संयमना शत्रु छे, तेमां रति करे अने संयममां अरति करे.

अज्ञानान्धाश्चटुलवनितापाङ्गविक्षेपितास्ते; कामे सक्तिं दधति विभवाभोगतुङ्गार्जने वा; विद्वच्चित्तं भवति हि महन्मोक्षमार्गैकतानं, नाल्पस्कन्धे विटपिनि कषत्यंसभित्तिं गजेन्द्रः ॥ १ ॥"

अज्ञानथी आंधळा थएला, सुंदर स्त्रीओना अपांगथी डामाडोळ थएला कामीओ काममां प्रेम धारण करे छे. अथवा वैभवना

विस्तारने मेळववा चाहे छे. पण जेओ विद्वान छे, तेनुं चित्त मोटा मोक्ष मार्गमां एकतान वाळुं छे. कारणके श्रेष्ठ हाथी नाना पातळा थडवाळा झाडनी साथे पोतानुं शरीर घसतो नथी.

आचार्यनो उत्तरः—अमे तेने जुठुं कहेता नथी. कारणके, चारित्र पामेलाने आ उपदेश छे, अने चारित्रप्राप्ति ज्ञान शिवाय नथी; कारण के चारित्रनुं कारण ज्ञान छे अने कार्यए चारित्र छे. तथा ज्ञान, अने अरति तेने विरोध नथी; परंतु रतिनो विरोधी अरति छे. तेथी संयममां जेने रति छे, तेनी साथे अरति बाधारुप छे, परंतु ज्ञाननी साथे तेनो विरोध नथी; कारणके, ज्ञानीने पण चारित्र मोहनीयना उपशमथी संयममां अरति थाय छे, कारणके, ज्ञान पण अज्ञाननु बाधकज छे, पण संयमनी अरतिनुं बाधक नथी; तेज कह्युं छेः-

ज्ञानं भूरि यथार्थवस्तुविषयं स्वस्य द्विषो बाधकं, रागारातिशमाय हेतुमपरं युङ्क्ते न कर्तृ स्वयम्। दीपो यत्तमसि व्यनक्ति किमु नो रूपं स एवेक्षतां, सर्वः स्वं विषयं प्रसाधयति हि प्रासङ्गिकोऽन्यो विधिः ॥१॥”

घणुं ज्ञान छे, ते यथार्थ वस्तुविषय संबंधी छे, ते पोताना शत्रु अज्ञाननुं बाधक छे. रागनो शत्रु, शम (शांतिने) माटे बीजो हेतु पोते जोडतो नथी. जेम दीवो छे ते पोते अंधारामां रुपने प्रगट करे छे, तेज अहींया रुपने जुओ; कारणके, सर्व प्रासंगीक विधि पोतपोताना विषयने साधे छे. तथा आचार्य कहे छे केः—आ तमारा कानमां आव्युं नथी.

‘बलवानिन्द्रियग्रामः, पण्डितोऽप्यत्र मुह्यतीति’

इंद्रियसमूह बळवान छे, अने तेमां पंडित पण मुंझाय छे, एथी तमारुं कहेवुं कंइ विसातमां नथी.

अथवा जेने अरति प्राप्त न थइ होय; तेनेज एम कहेवाय छे, पण आ उपदेश संयम-विषयमां बुद्धिमान पुरुषने कहेवाय के,
संयममां अरति न करवी; तथा संयममांथी अरति दुर करनारने केवा गुण मळे ते कहे छेः—
"खणं सि मुक्के" विगेरे बारीक काळने क्षण कहे छे. ते क्षण, जुनी साडी (वस्त्रने) फाडतां जेटली वार लागे; तेथी पण बा-
रीक काळ समय छे. आवा सूक्ष्म संयममां पण कर्म जे आठ प्रकारनां छे, अथवा संसारबंधन छे ते बंधन नथी. भरत महाराजा
माफक मोह मूकी दे, तो तेनुं कल्याण थइ जाय. (केवळज्ञान पामीने मोक्षमां जाय;) अने जेओ उपदेश न माने; तेओ कंडरीक
मुनि माफक चार गतिमां भ्रमण करे छे, अने दुःखसागरमां डुबे छे, तेज कहे छेः—

अणाणाय पुट्ठावि एगे नियट्टंति, मंदा मोहेण पाउडा, अपरिग्गहा भविस्सामो, समुट्ठाय लद्धे कामे अभिगाहइ, अणाणाए मुणिणो पडिलेहंति, इत्थ मोहे पुणो पुणो सन्ना नो हव्वाए नो पाराए (सूत्र-७३)

हित मानवुं अहित छोडवुं, ए जिनेश्वरनी आज्ञामां छे. तेथी विरुद्ध चालवुं ते अनाज्ञा छे. जे पुरुषो आज्ञावहार थइने परिषह
अने ऊपसर्गथी कंटाळीने, अथवा मोहनीयकर्मना उदयथी कंडरीक विगेरे मुनिओनी माफक संयमथी भ्रष्ट थाय छे, ते जडपुरुषो जे-
मने करवा न करवानो विवेक नथी; तेओ मोहथी, अथवा अज्ञानथी घेरायला छे. कह्युं छे केः—

"अज्ञानं खलु कष्टं, क्रोधादिभ्योऽपि सर्वपापेभ्यः। अथ हितमहितं वा न वेत्ति येनावृतो लोकः ॥ १ ॥"

खरेखर, क्रोध विगेरे बधां पापोथी पण अज्ञान मोटुं पाप छे, ते घणुं दुःख आपनार छे, ते अज्ञानथी घेरायलो माणस पोताना

हित–अहित पदार्थने जाणतो नथी.

आ प्रमाणे मोहथी घेरायलो जडमाणस चारित्र पामेलो छतां, कर्मना उदयथी, अथवा परिसहना उदयमां चारित्र धारण करेलो चारित्र मूकवा इच्छा करे छे अने बीजा साधुओ पोतानी रुची प्रमाणे वृत्ति रचीने जुदा जुदा उपायोवडे लोक पासेथी पैसा ग्रहण करता छता कहे छे केः-अमे संसारथी खेद पामेला छीए; अने मोक्षनी इच्छावाळा छीए. तोपण, तेओ (अंतरंगत्यागी न होवाथी) जुदा जुदा आरंभमां, तथा विषय–अभिलाषामां वर्ते छे ते बतावे छे.

मन, वचन अने कायाना कर्मवडे जेनाथी घेराय ते परिग्रह छे. ते परिग्रह जेमनामां नथी; ते अपरिग्रहवाळा अमे थइशुं; एवुं बौद्धमत विगेरेना साधुओ माने छे, अथवा जैनदर्शनमां जे साधुओए साधुवेष पहेरेलो छे, तेओ पछी इच्छानुसार (भोळा माणसोने ठगीने) परिग्रह धारीने भोगो भोगवे छे. जे प्रमाणे निस्पृहता धारवी जोइए; तेज प्रमाणे बीजां महाव्रतो पाळवां जोइए; एटले जैनेतर मतवाळाए, अथवा पासत्थ (वेष मात्र धारी जैनसाधु) जेम परिग्रह धारेछे तेवीरीते मोढेथी कहे के, अमे सर्व जीवोना रक्षक (अहिंसक) छीए; छतां तेओ स्वार्थना माटे हिंसा करे छे, तेवीजरीते उपरथी कहे छे केः–अमे साचुं बोलीए छीए; अने खरीरीते तो, तेओ जुठुं बोले छे, जेम चोरी करता होय; छतां कहे के, अमे चोरी करता नथी; तेथी आवुं करनारा शैलुष (ठगनी) माफक बोलवानुं जुदुं, अने करवानुं जुदुं. एवा जगतने ठगनारा भोगनी इच्छाथीज वेष मात्रने धारे छे. कह्युं छे केः—

“स्वेच्छाविरचितशास्त्रैः प्रव्रज्यावेषधारिभिः क्षुद्रैः। नानाविधैरुपायैरनाथवन्मुष्यते लोकः ॥ १ ॥”

पोतानी इच्छा मुजब शास्त्र बनावनारा, अने दीक्षामां वेष धारण करनारा क्षुद्र मनुष्योए जुदा जुदा उपायोथी अनाथने जेम लुंटारो लुंटे; तेम आ भोळा लोकोने आ साधुठगो लुंटे छे, तेथी आ प्रमाणे वेषधारी साधुओ मेळवेला भोगोने भोगवे छे, अने तेवा बीजा भोगो मेळववा, तेवा तेवा उपायोमां वर्ते छे. ते कहे छे केः—

वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध पोतानी बुद्धिए मुनिना वेषने लजावनारा संसार सुखना उपायना आरंभमां वारंवार लागे छे. (मचेछे)
आ विषयसुखना अज्ञानरूप भावमोहमां वारंवार कादवमां खुंचेला हाथी माफक बहार पोते पोताने काढवाने समर्थ नथी. जेम कोइ
महा नदीना पूरमां वचमां जइने डुब्यो होय तो ते जलदीथी तरवा के सामे किनारे आववा समर्थ नथी एज प्रमाणे कोइपण निमि-
त्तथीं प्रथमथी घर स्त्री पुत्र धन धान्य सोनुं रत्न तांबु दास दासी विगेरे वैभव छोडी त्यागवृत्ति स्वीकारीने आरातीयतीर (पाछो
आववा के किनारे जवा ते समर्थ नथी ते) समान घरवासना सुखथी नीकळेलो साधु थयो अने फरी ते वमेला भोगने पाछो ग्रहण
करवा इच्छा करे तो संयम पण जाय तो मोक्षमां जइशके नहि तेम घरवाळां पण संघरे नही एटले वंने बाजुथी जुदी पडेली मुक-
तोली माफक साधुपण जो संसार वांच्छना करे तो न ग्रहस्थ रहे तेम न साधु रहे तेथी ते बंने प्रकारे भ्रष्ट छे. कह्युं छे के.

"इन्द्रियाणि न गुप्तानि, लालितानि न चेच्छया। मानुष्यं दुर्लभं प्राप्य, न भुक्तं नापि शोषितम् ॥१॥"

जेणे इंद्रियोने कबजे लीधो नथी अथवा इच्छानुसार ते इंद्रियोने विषय सुखमां जोडी नथी तेणे मनुष्य पणुं पामीने न भोग भोगव्या न
त्याग वृत्ति स्वीकारी (आ बधानो केहेवानो सार ए छेके साधुए साधु वेष धार्या पछी गमे तेटलां कष्ट आवे; तोपण धीरज राखी संयम पाळवुं.)

जेओ उपर कहेली अप्रशस्त (संसारी विषय सुख) रतिथी दूर थयला छे, अने उत्तम रति (चारित्रमां प्रेमवाळा) छे, ते केवा होय छे ते बतावे छे.

विमुत्ता हु ते जणा, जे जणा पारगामिणो, लोभमलोभेण दुगुंछमाणे लद्धे कामे नाभि गाहइ ७४

द्रव्यथी एटले धन सगाना अनेक रीतना प्रेमथी मुकायला; अने भावथी विषय कषायथी प्रत्येक समये छुटता साधुओ जे भविष्यकाळमां वधारे वधारे निर्लोभी बने छे, ते पुरुषो सर्व प्राणीने समानभावे गणी निर्ममत्ववाळा बनी (संसारथी) पारगामी बने छे. पार ते मोक्ष छे, कारणके, संसार–समुद्रना किनारे जवानी वृत्तिनां कारणो ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए त्रण छे, ते त्रणने पार कहे छे. जेम, लोकमां सारा वरसादने चोखानो वरसाद कहे छे. एटले कारणने कार्यमां समाव्युं; तेथी ते प्रमाणे ज्ञान दर्शन चारित्रनो परे जवानो आचार जेमनो छे, तेओ संसारना मोहथी के, विषयकषायथी मुक्त थाय छे.

प्रश्नः—तेओ केवीरीते संपूर्ण पारगामी थाय ?

उत्तरः—जोके, आ लोकमां लोभछे, ते बधाने तजवो दुर्लभ छे. जेमके क्षपक श्रेणीमां चढेला मुनिने पण ओछो ओछो करतां जरा जरापण लोभ रहे छे, तेवा जरा लोभने पण उत्तम साधु संतोषवडे पूर्वना लोभने निंदतो; अने छोडतो सामे आवता सुंदर विलासोने (लोको प्रार्थना करे; छतां पण) सेवतो नथी जेम महात्मा पोताना शरीरमां पण महत्व रहित थयलो छे, ते पर वस्तुना विषयसुखमां लुब्ध थतो नथी जेमके, ब्रह्मदत्त, चक्रवर्त्तिए पोताना पूर्वभवना भाइ चित्रमुनिने ओळखीने प्रार्थना कर्या छतां पण,

तेणे भोगो न स्वीकार्या.

उपर प्रमाणे सुंदर भोगो जेणे त्याग्या; ते त्यागवाथी बीजुं पण त्यागेलुं जाणवुं ते आ प्रमाणे–क्रोधने क्षमाथी, तथा मानने कोमळताथी, मायाने सरळताथी, ए प्रमाणे बधा दुर्गुणोने निंदी उत्तम साधु छोडे छे.

सूत्रमां लोभ लेवानुं कारण ए छे के, ते बधा कषायमां मुख्य छे ते बतावे छे. ते लोभमां पडेलो साध्य असाध्यना विवेकथी शून्य छे तथा कार्य अकार्यना विचारथी रहित बनी ने एक धनमांज दृष्टि राखनारोज पापना मूळमां उभो रहीने सर्व क्रियाओ करे छे कह्युं छे के.

“धावेइ रोहणं तरइ सायरं, भमइ गिरिणिगुंजेसु । मारेइ बंधवंपिहु पुरिसो तो होइ धणलुद्धो ॥१॥

जे धननो लोभीओ होय ते पहाड चढे छे समुद्र तरे छे पहाडनी झाडीमां भमे छे बंधुओने पण मारे छे.

अडइ बहुं वहइ भरं, सहइ छुहं पावमायरइ धिट्ठो। कुल सील जाइपच्चय, विइं च लोभद्दुओ चयइ॥२॥”

घणुं भटके छे घणोभार वहन करेछे भूखने सहे छे. पाप आचरे छे कुळ शील जाति विश्वास धीरज ए बधाने लोभथी पीडाएलो घृष्ट पुरुष त्यजे छे.

तेथी आ प्रमाणे उत्तम साधुए प्रथमथी लोभ विगेरेथी दीक्षा लीधी होय अने तेवा भोग मळतां लालच थायतो पण मन दृढ करीने लोभ विगेरेनो त्याग करवो केटलाक लोभ विना पण दीक्षाले छे ते बतावे छे.

विणावि लोभं निक्खम्म एस अकम्मे जाणइ पासइ, पडिलेहाए नावकंखइ, एस अणगारित्ति पवुच्चइ, अहो य राओ परितप्पमाणे कालाकालसमुट्ठाइ संजोगट्ठी अट्ठालोभी आलुंपे सहक्कारे विणिविट्ठचित्ते इत्थ सत्थे पुणो पुणो से आयबले से नाइबले से मित्तबले से पिच्चबले से देवबले से रायबले से चोरबले से अतिहिबले से किविणबले से समणबले, इच्चेएहिं विरूवरूवेहिं कज्जेहिं दंडसमायाणं संपेहाए भया कज्जइ, पावमुक्खुत्ति मन्नमाणे, अदुवा आसंसाए (सू० ७५)

भरतचक्रवर्ती विगेरे कोइ लोभना कारण विना पण दीक्षाने मेळवीने अथवा सूत्र पाठांतरमां विणइत्तुलोभं छे तेनो अर्थ संज्वलन लोभने जडमूळथी दूर करीने पोते घाति कर्मनी चोकडीने दूर करीने आवरण रहित निर्मळ केवळज्ञान प्राप्त करी सर्व विशेषथी जाणे छे अने सामान्यथी जुए छे. अर्थात् जेणे पूर्वे बतावेलो अनर्थोनुं मूळ जे लोभ छे. तेने तज्यो छे तेनो लोभ दूर थतां मोहनीयकर्म क्षय थतां अवश्ये घातीकर्मनो क्षय थाय छे अने निर्मळ केवळज्ञान प्रगट थाय छे तेथी बीजां कर्म जे भवउपग्राहिक छे ते पण दूर थाय छे (जेनां घाती कर्म दूर थयां तेना अघाती कर्म सर्वथा स्वयं नष्ट थाय छे.) तेथी लोभ दूर थतां अकर्मा एवुं विशेषण सूत्रमां आप्युं छे. आ प्रमाणे लोभतजवो दुर्लभ अने तजवाथी अवश्य कर्मनो क्षय थाय छे तेथी शुं करवुं ते कहे

छे प्रति उपेक्षणा एटले गुण दोषनो विचार करी गुणोने ग्रहण करवा अने लोभ छोडवो अथवा लोभनां कडवां फळने विचारी तेना अभावमां जे गुण तेने चाहीने ते लोभने जे त्यजे तेनेज अणगार कहेवो.

अने जे अज्ञानवडे मनमां मुंझाएलो छे ते अप्रशस्त मूळ गुण स्थानमां रही विषय कषाय विगेरेमां फसेलो होय ते दुःख पामे छे ए वधुं फरीथी सारो साधु याद करे के संसारी जीव अलोभने लोभ वडे निंदे अने विशयसुखमळतां तेने भोगवे अने लोभने छोडी साधु थइ पाछो लोभमां गृद्ध बनी वहोळा कर्मवालो. कंइ पण जाणे नहीं तथा जुवे नहीं (कामान्ध जन्मथी आंधळा करतां पण वधारे आंधळो छे) अने हृदयमां चक्षु मीचावाथी विवेक रहित बनी भोगोने वांच्छे छे. अने पहेला उद्देशामां जे वताव्युं ते अहि जाणवुं.

आ प्रमाणे उत्तम साधु विचारे छे के लोभी रात दिवस दुख पामतो अकाळमां उठतो भोग वांच्छुक अर्थ लोभी लुंटारो विचार वगरनो चेला जेवो वने छे अने पृथ्वी विगेरे जीवोने उपघात करी शस्त्रो वारंवार चलावे छे.

वली ते पोतानी शरीर शक्ति वधारवा जुदा जुदा उपायो वडे आलोक परलोकना सुखने नाश करनारी क्रिया करे छे ते नीचे मुजब छे. मांसथी मांस वधे तेथी पंचेन्द्रिय जीवोने हणे छे तथा चोरी विगेरे करे छे सूत्रमां बताव्युं छे एज प्रमाणे संसारी जीव सगांने पुष्ट करवा मित्रने पुष्ट करवा मथे छे एटले ते शक्तिवालां हशे तो हुं तेमनी मददथी आपदामांथी वचीश तथा प्रेत्य वळ वधारवा बस्त (घेटुं) विगेरेने ते हणे छे, तथा देववळ वधारवा (प्रसन्न करवा) रांधवा रंधावानी क्रिया (नैवेद्य करे छे,) अथवा राजानुं बळ वधारवा राजानुं इच्छित करे छे, अथवा अतिथीनुं बळ वधारवा चाहे छे, ते अतिथी निःस्पृह होय छे. कह्युं छे के;—

"तिथिपर्वोत्सवाः सर्वे, त्यक्ता येन महात्मना। अतिथिं तं विजानीयाच्छेषमभ्यागतं विदुः ॥ १ ॥"

जे महात्माए तिथिना, तथा पर्वना बधा महोत्सवो तज्या छे, तेने अतिथि कहेवो; अने बाकीनाने अभ्यागत कहेवो; तेनो सार आ छे. तेना माटे पण प्राणीओने दुःख न आपवुं एज प्रमाणे कृपण–श्रमण विगेरेने माटे पण जाणवुं जे संसारीजीव बीजाओने माटे के, पोतानां आलोकनां सुख छे, तेना माटे जुदी जुदी जातनां हिंसककृत्यो करी; एटले पिंडदान विगेरे आपी बीजा जीवोने दुःख आपे छे, तेओने अल्पलाभने वदले महान दुःख मळवुं जाणीने उत्तम पुरुषेते पाप न करवुं जोइए. छतां, अज्ञानथी, अथवा मोहथी हणायलो भयथी तेवां पाप करे छे, अथवा कुगुरुना खोटा उपदेशथी पापकर्ममां पण, धर्म गानी दुष्ट कृत्य करे छे, अथवा कांइपण आशाथी पाप करे छे, ते बतावे छे. अग्नि जे छ जीवनिकायनुं घात करनार शस्त्र छे, छतां ते अग्निमां पीपळानुं, अरणीनुं लाकडुं होमे छे, अथवा समित्ति (एक जातनुं लाकडुं) लाज्य, (धाणी) विगेरे नांखे छे, अने तेमां धर्म समजे छे, तथा बापनुं श्राद्ध करवामां घेटा विगेरेनुं मांस रांधीने ब्राह्मणोने जमाडे छे, अने वधेलुं पोते खाय छे. (आ रीवाज गुजरात विगेरे देशोमां नथी; पण वंगाळ दक्षिण विगेरेमां छे.)

ते आ प्रमाणे जुदा जुदा उपायोवडे अज्ञानथी हणायली बुद्धी वळा पापथी छुटवाना बहाने दंड मेळववारूप ते ते क्रियाओ प्राणी ओने दुःख आपनारी करे छे. अथात् अनेक शत करोडनी संख्याना भवमां भोगववा छतां पण न छुटाय तेवुं अघोर पाप करे छे, अथवा पापथी छुटवानुं मानीने अज्ञानदशाथी नवां पापज वांधे छे.

अथवा न मेळवेलुं फरीथी मेलववानी इच्छाथी प्राणीओने दुःख आपी पोते दंड मेळवे छे ते आ प्रमाणेः—
आ मने वीजा लोकमां, अथवा आलोकमां, पछीथी कांइ ऊंचपद अपावशे; एवी इच्छाथी ते पाप करवामां वर्ते छे.
अथवा पोते धननी आशाथी मूढ बनीने राजानी सेवा करे छे, (अने राजाने खुशी करवा प्रजाने पीडवाना अनेक पाप करे छे.) कह्युं छे केः—

आराध्य भूपतिमवाप्य ततो धनानि, भोक्ष्यामहे किल वयं सततं सुखानि;
इत्याशया धनविमोहितमानसानां, कालः प्रयाति मरणावधिरेव पुंसाम् ॥१॥

राजाने प्रसन्न करीने तेनी पासेथी धन मेळवीशुं अने पछी अमे रोज सुख भोगवीशुं. आवी आशाथी धनथी मोह पामेला मनवाला माणसोने आखी जींदगी सुधीकाळ वीतो जाय छे. (पण तेओ धर्म आराधी शकता नथी.)

एहो गच्छ पतोत्तिष्ठ, वद मौनं समाचर । इत्याद्याशाग्रहग्रस्तैः, क्रीडन्ति धनिनोऽर्थिभिः ॥२॥

आव जा, पड, उठ, बोल, चुप रहे आ प्रमाणे बोलनारा धनवाळा छे. ते धनना इच्छवाला गरीबोने वारंवार रमाडे छे. आ आ प्रमाणे सारा साधुए समजीने शुं करवुं ते शास्त्रकार कहे छे.

तं परिण्णाय मेहावी नेव सयं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभिज्जा नेव अन्नं एएहिं कज्जेहिं दंडं समा-

रंभाविज्जा, एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभंतंपि अन्नं न समणुजाणिज्जा, एस मग्गे आरिएहिं पवेइए, जहेत्थ कुसले नोवलिंपिज्जासि, त्तिबेमि, (सू० ७६) लोगविजयस्स बितिओ उद्देसो ॥२॥

पहेला अध्ययनमां परिज्ञा बतावेली छे. तेमां बे प्रकारनां स्वकाय अने परकायवालां दुःख देनारां शस्त्रने चलाववां नहीं अथवा पहेला उद्देशामां बतावेल विषय तथा मातापिता संबंधी प्रेमनुं अप्रशस्त गुणमूळ स्थान समजीने तथा काळ अकाळे रखडवुं ते समजीने अथवा अमूल्य अवसर तथा सुगुरुनो बोध तथा पांचे इन्द्रियोनुं विचक्षणपणुं तथा वृद्धावस्थामां तेनी हानी विगेरे समजीने तथा आज उद्देशामां शरीर शक्ति वधारवा अथवा सगावहालांनुं बळ वधारवा दंडनुं लेवुं (नवा पाप बांधवानुं) ज्ञपरिज्ञावडे जाणीने मर्यादामां रहेला मुनिए प्रत्याख्या न परिज्ञावडे पाप कृत्य छोडी देवा ते बतावे छे,

पोते जाते शरीर शक्ति वधारवानां के बीजां दुष्ट कृत्यो करवा वडे जीवोने दुःख न आपे तेम हिंसा जुठ विगेरे पाप कृत्य बीजा पासे न करावे, अथवा पापीओने मन वचन अने कायाथी कोइ पण रीते सहायता के अनुमोदना न करे.

आवो सर्व जीवने अभयदान देवानो उपदेश तीर्थंकरे कर्यो छे. तेवुं सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे.

ज्ञान विगेरेथी युक्त भावमार्ग जेनाथी कोइ पण जातनुं दूषण के दंड के पाप लागवानां नथी ते मन वचन अने कायाए करी करवो कराववो अने अनुमोदवो जोइए तेम करनारा आर्य पुरुषो छे. एटले जेटला पाप धर्म छे. तेमने छोडी सर्व प्रकारे उत्तम मार्गमां जे जीवो जोडायला छे तेओ संसार समुद्रथी किनारे पहोंचेला अने घातीकर्मनो अंश पण नाश करनार जीवो संसारनी

अंदर रहेलां बधा भावोने जाणनारा सर्वज्ञ तर्थंकर प्रभुए देव मनुष्यनी सभामां बधाए समजी शके तेवी तथा बधाना मनना संशय छेदनारी वाणीवडे आ मार्ग कह्यो छे. पोते ते प्रमाणे वर्त्तेला छे एवो आ मार्ग जाणीने उत्तम पुरुषे उपर बतावेलां पाप कृत्योने छोडीने बधां तत्व जाणीने पोतानो आत्मा पापोमां न लेपाय तेम सर्व प्रकारे करवुं. आ प्रमाणे हुं कहुं छुं बीजो उद्देशो समाप्त थयो.

हवे त्रीजो उद्देशो कहे छे.

बीजा उद्देशानी साथे त्रीजानो आ प्रमाणे संबन्ध छे. गया उद्देशामां कह्युं के संयममां दृढता करवी अने असंयममां उपेक्षा करवी अने ते बन्ने पण कषाय दूर करवाथी थाय तेमां पण मान उत्पत्तिना आरंभथी उंच गोत्रमां जन्मे छे ते उत्थापेलो (अहंकारी) थाय तेथी ते दूर करवा कहेवाय छे तेथी बीजा अने त्रीजानो आ संबन्ध छे के बुद्धिमान साधु राग द्वेषमां न लेपाय तेज प्रमाणे बुद्धिमान साधु उंच गोत्रना अभिमानमां पण न लेपाय शुं मानीने अहंकार न करवो ते सिद्धांतकार बतावे छे.

से असइं उच्चागोए असइं नीआगोए, नो हीणे नो अइरित्ते नोऽपीहए, इय सखाय को गोयावाइ को माणावाई? कंसि वा एगे गिज्झा, तम्हा नो हरिसे नो कुप्पे, भूएहिं जाण पडिलेह सायं सू. ७७

आ संसारी जीव अनेक वार मान सत्कारने योग्य एवा उंच गोत्रमां आव्यो छे तथा अनेकवार नीच गोत्रमां ज्यां लोको निंदे तेवामां पण पोते जनम्यो छे ते कहे छे. नीच गोत्रना उदयथी अनन्तकाळ तिर्यंचगतिमां संसारी जीव रहेल छे त्यारपछी भटकनो जीव नाम कर्मनी ९२ उत्तर प्रकृतिना कर्मवाळो वर्नी तेवा तेवा अध्यवसाये उत्पन्न थयेलो आहारक शरीर तेनुं संघात बन्धन

अंगोपांग देवगति तथा अनुपूर्वी मली बे तथा नरकगति अने अनुपूर्वी मली बे ए वैक्रिय चतुष्टय (चोकठुं) ए १२ कर्म प्रकृतिने निर्लेप करीने (दूर करीने) वाकीनी ८० प्रकृतिवालो बनी तैजस अने वायुकायमां उत्पन्न थयो त्यारपछी मनुष्यगति तथा अनुपूर्वी मली बे ते दूर करीने उंच गोत्रने पल्योपमना असंख्येय भागवडे उद्वल करे छे. एथी तैजस वायुकायनो पहेलो भांगो थयो. ते आ प्रमाणे नीच गोत्रनो वन्ध, अने उदय पण अने तेज कर्मनी सकर्मता (सत्ता) छे. त्यांथी नीकळीने बीजी कायना एकेन्द्रियमां आवीने उपजे तो, तेज भांगो थाय; अने त्रसकायमां पण अपर्याप्तअवस्थामां पण तेज भांगो थाय; अने ज्यांसुधी उंच गोत्रनो निर्लेप न थाय; तो बीजो चोथो एम बे भांगा थाय ते बतावे छे. नीच गोत्रनो बंध, अने उदय, तथा तेज कर्मपणाथी सत्ताथी उभयरूपे बीजो भागो थाय; तथा ऊंच गोत्रनो वन्ध नीच गोत्रनो उदय, अने सत्कर्मपणुं बन्ने रूपे छे. ए चोथो भांगो छे, पण बाकीना चार भांगा नथीज थतां: कारणकेः—तिर्यंचयोनिमां उंच गोत्रना उदयनो अभाव छे. तेज उंच गोत्रना (अहंकारथी) उद्वलनवडे कलंकवाळा भावमां आवेलो जीव अनंतकाळ सुधी एकेन्द्रियमां रहे छे, अथवा उद्वलन थया विना तिर्यंचमां अनंत उत्सर्पिणी, अने अवसर्पिणी रहे छे.

प्रश्न—आवलिकाना संख्येय भाग समय संख्यावाळा पुद्गल परावर्त्त एम जोइए; पण पुद्गलपरावर्त्त केम जोइए ?

आचार्यनो उत्तरः—जेओ औदारिक, वैक्रिय तैजस भाषाअनापान, (श्वासोश्वास) मन=(आ छ थाय छे, पण सात लखेल छे. आहारक ए टीकामां लखवुं रही गयुं छे.) कर्मसप्तकथी संसारना वचला भागमां पुद्गलो आत्मानी साक्षे एकमेकपणे परिणमेलाछे, ते

पुद्गल परावर्त छे, एवुं केटलाक आचार्य कहे छे.

बीजा आचार्यनो मत एवो छे के, द्रव्य, क्षेत्र, काळ, अने भाव, एम चार भेदे वर्णवे छे, अने आ प्रत्येक पण बादर, अने सूक्ष्म एम बे भेदे अनुभवे छे, तथा द्रव्यथी बादर जे औदारिक, वैक्रिय, तैजस कार्मणना चतुष्टय (चोकडावडे) सर्व पुद्गलो ग्रहण करीने छांडी दीधा त्यारे थाय छे, अने सूक्ष्म छे, ते एक शरीरवडे वधा पुद्गलो स्पर्शवाळा थाय त्यारे जाणवुं.

(२) क्षेत्रथी बादर ज्यारे क्रम, अने उत्क्रमवडे मरतां जीवने वधा लोकाकाशना प्रदेश स्पर्शवाळा थाय त्यारे होय छे, अने सूक्ष्म तो त्यारेज जाणवो के एक विवक्षित आकाशखंडमां मरेलो, ज्यारे तेना प्रदेशोनी वृद्धि थाय त्यारे सर्वे लोकाकाशने व्याप्त थाय त्यारेज जाणवुं.

(३) काळथी बादर ज्यारे उत्सर्पिणी, अने अवसर्पिणीना जेटला समयो छे, तेटला क्रम, अने उत्क्रमवडे मरण पामवावडे स्पर्श करे छे त्यारे जाणवुं; पण सूक्ष्म तो, उत्सर्पिणीना प्रथम समयथी आरंभीने क्रमवडे सर्व समयो मरनारा जीवे वधा स्पर्श कर्या होय त्यारे जाणवुं
(४) भावथी बादर ज्यारे अनुभागना बन्धना अध्यवसायना स्थानो क्रम अने उत्क्रम वडे मरेला जीवथी व्याप्त थाय त्यारे कहे छे.

अनुभागना बन्धना अध्यवसायनुं प्रमाण प्रथम संयम स्थानना अवसरमां कही गया छीए अने सूक्ष्म तो जघन्य अनुभाव बंधना अध्यवसाय स्थानथी आरंभीने ज्यारे वधामां पण क्रमे करीने मरेलो थाय त्यारे जाणवुं तेथी आ प्रमाणे कलंकी भावने पामेलो अथवा बीजो कोइ जीव नीच गोत्रना उदयथी अनत काळ सुधी पण तिर्यंचमां रहे छे. मनुष्यमां पण नीच गोत्रनाज उदयथी तेवा

निंदनीय स्थानमां उत्पन्न थाय छे. तथा कलंकवालो जीवपण बेइन्द्रिय विगेरेमां उत्पन्न थयेलो पहेला समयमां पर्याप्तिना उत्तर काळमां उंच गोत्र बांधीने मनुष्यमां अनेक वार उंच गोत्र मेळवे छे. त्यां त्रीजा भांगामां रहेलो अथवा पांचमा भांगामां उत्पन्न थएलो छे ते आ प्रमाणे छे.

नीचगोत्र बांधे छे. अने उंचगोत्रनो उदय होय छे. अने कर्मपणुं (सत्ता) बन्नेनुं छे ते त्रीजो भांगो अने पांचमा भांगामां उंचगोत्र बांधे छे तथा तेनोज उदय छे. अने सत्कर्मपणुं (सत्ता) बन्नेनु छे छठ्ठो अने सातमो भांगो तो जे बंधथी उपरत (दूर) थयोहोय तेने थाय छे अने तेनो विषय न होवाथी ते बंनेनो अधिकार नथी. ते बंने बंधना उपरमां उंचगोत्रनो उदय थाय छे अने सकर्मपणुं बंनेमां कायम छे ते छठ्ठो भांगो थयो अने सातमो भांगो शैलेशी अवस्थामां द्विचरम (छेल्ला समयना अगाडीना समयमां) नीचगोत्र खपावे छते ऊंचगोत्रनो उदय होय तेनेज छे. अने सत्ता पण ऊंचगोत्रनी छे. आप्रमाणे ऊंच नीच गोत्रमां रहेला जीवे अहंकार न करवो जोइए तेम दीनता पण न करवी जोइए.

ऊंच अने नीच ते बंने गोत्रनो बंध अध्यवसाय स्थानना कंडको समान छे. सूत्रमां बतावे छे के.

णो हीणे, णो अइरित्ते जेटलां उंच गोत्रमां अनुभाव बन्धना अध्यवसायना स्थान कंडक छे तेटलांज नीचगोत्रमां पण छे अने ते सर्वे अनादि संसारमां आ जीवे वारंवार अनुभवेलां छे. तेथी उंचगोत्रना कंडकना अर्थपणे जीव हीणो पण नथी तेम वधारे पण नथी एज प्रमाणे नीचगोत्र कंडकमां पण समजवुं ते संबन्धमां " नागार्जुनीया " आ प्रमाणे कहे छे.

"एगमेगे खलु जीवे अईअद्धाए असइं उच्चागोए असइं नीआ गोए, कंडगट्ठयाए नो हीणे नो अइरित्ते"

एक एक जीव भूतकाळमां अनेकवार उंच नीच गोत्रमां आव्यो अने उंच नीचना अनुभाग कंडकनी अपेक्षाए हीन के अतिरिक्त नथी तेज कहे छे. ऊंच गोत्र कंडकवालो एक भविक अथवा अनेक भविकमांथी नीच गोत्रना कंडको ओछां नथी तेम वधारे पण नथी. एवुं समजीने अहंकार के दिनता न करवी. (अर्थात् समाधि राखवी तेज साधुपणुं छे.) ते बतावे छे. कारण के उंच नीच स्थानमां कर्मना वशथी उत्पन्न थाय छे. तेज प्रमाणे वळ–रूप–लाभ विगेरे मदना स्थानोनुं असमंजसपणुं (अस्थिरता) समजीने साधुए शुं करवुं ते कहे छे. जाति विगेरेनो कोइ पण मद साधु न वांच्छे अथवा तेवी इच्छा पण न करे कारणके उंच नीच स्थानमां आ जीव घणीवार उत्पन्न थयो, एवुं समजीने कोण गोत्रनो–के–माननो अभीलाषी थाय.! अर्थात् मारुं उंच गोत्र वधा लोकोने माननीय छे. तेवुं बीजानुं नथी. एवुं क्यो बुद्धिवान मनुष्य माने. !

में तथा वीजा जीवोए उंच अने नीच ए वधां स्थानोने अनेकवार पूर्वे अनुभवेलां छे तेज प्रमाणे गोत्रना निमित्ते मान–वादी कोण थाय. अर्थात् जे संसारना स्वरूपने सारी रीते जाणे छे, ते अहंकारी न थाय वली अनेकवार ते स्थानो पूर्वे अनुभवे छते हमणां एकाद उंच गोत्र विगेरे अस्थिर स्थानकमां आवतां राग विगेरेना विरहथी गीतार्थ थएल कोण ममत्व करे !

एनो भावार्थ आ छे. के कर्मनुं परिणाम जेणे जाण्युं छे तेवो मुनि आ सेवाने धारण करे. ग्रद्धपणाने क्यारे योजे के जो पूर्वे तेणे तेवुंन मेळव्यं होय तो. पण खरीरीते तेणे घणी वखत उंचगोत्र विगेरे मेळव्युं छे. तो ते ऊंचगोत्रना लाभथी के अलाभथी

अहंकार, दीनता, न करवां तेवुं सूत्रमां कह्युं छे. कारण के अनादि संसारमां भटकता जीवे भाग्यने आधारे घणी वार उंच नीच गोत्रनां स्थान अनुभवेलां छे. तेथी कोइ वखत उंच नीच गोत्र मेळवीने डाह्यो पुरुष जे खराब तथा सारी वस्तुने ओळखे छे ते उंच गोत्र विगेरेथी अहंकार न करे. कह्युं छे केः—

"सर्वं सुखान्यपि बहुशः प्राप्तान्यटता मयाऽत्र संसारे । उच्चैः स्थानानि तथा, तेन न मे विस्मयस्तेषु॥१॥

बधां ए सुखोने में आ संसारमां भमतां मेळव्यां छे. उंच स्थान पण मेळव्यां छे, तेथी हवे मने तेनामां कांइ आश्चर्य जोवामां आवतुं नथी.

जइ सोऽवि णिज्जरमओ पडिसिद्धो अट्टमाण महणेहिं। अवसेस मयट्ठाणा, परिहरि अव्वा पयत्तेणं ॥२॥

जो के, निर्जराने माटे ऊंच गोत्रना मदनो निषेध कर्यो छे, तोपण आठ मानने मथनारा साधुओए प्रयत्नवडे बीजां मदस्थान पण त्यागी देवां. तेजप्रमाणे नीच गोत्रमा के निंदनीक स्थानमां उत्पन्न थइने दीनता न करवी. तेज सूत्रमां कह्युं छे केः—"नो-कुप्पे" भाग्यवशथी लोकमां निंदनीक जाति कुळ रूप बळ लाभ विगेरेमां ओछापणुं पामीने साधुए क्रोध न करवो मनमां विचारवुं के मारे नीच स्थान अथवा बीजाना हलका शब्द सांभळीने मारे दुःख शा माटे मानवुं, में पूर्वे तेवुं घणीवार अनुभव्युं छे तेथी दीनता न करवी कह्युं छे के.

" अवमानात्परिभ्रंशाद्वधबन्धधनक्षयात । प्राप्ता रोगाश्च शोकाश्च जात्यन्तरशतेष्वपि ॥ १ ॥

अपमानथी नीच दशा थवाथी अथवा वध वन्ध के धनना क्षयेथी माणसे खेद न करवो कारण के पूर्वे आ जीवे रोग शोक

जुदी जुदी जातिमां सेंकडोवार भोगव्या छे.

संते य अविम्हइउं असोइउं पंडिएण य असंते । सक्का हु दुमोवमिअहिअएण हिअं धरंतेण ॥ २ ॥

पंडित पुरुषे प्राप्तिमां आश्चर्य न करवुं; अने अप्राप्तिमां नाखुश थवुं नहि. झाडनी उपमावाळा हृदयवडे हितने धारनारा पुरुषने शक्य छे.

(झाड बधां दुःख सहे; पण त्यांथी खसे नहि; तेम हृदय स्थिर करी दुःखसुख सहेवां.)

होऊण चक्कवट्टी, पुहइवई विमलपंडरच्छत्तो । सो चेव नाम भुज्जो अणाहसालालओ होइ ॥ ३ ॥

चक्रवर्त्ति के, पृथ्वीपति निर्मळ सफेद छत्रने धरनारो पहेलां पोते बन्यो; अने तेज पुरुष पोते रहेनारो (तेज जन्ममां) अनाथ

आश्रममां भाग्यवशथी बने छे. अथवा एक जन्ममां जुदी जुदी अवस्थानी नीच-उंचपणानी स्थिति कर्मवशथी अनुभवे छे, तेथी

उंच-नीच गोत्रनी कल्पना मनमांथी काढीने तथा बीजा पण मनना विकल्प दूर करीने शुं करवुं ? ते कहे छेः—

जीवोने संसारमां आवां उंच-नीच पद हमणा थाय छे. पछीथी थवानां छे, अने पूर्वे थयां छे, एवुं विचारीने शिष्यने गुरु

कहे छे केः—तारी तीक्ष्ण बुद्धिथी जाण के, जीवने कर्मवशथी सुख आवे छे, तेम दुःख पण आवे छे, तथा तेनां कारणो पण वि-

चार, (जीवे जेवां पुन्य पाप कर्यां होय; तेवां सुखदुःख मळे छे.)

वळीअविगान पणे प्रणीओ सुखने इच्छे छे. अहींयां जीवजंतु प्राणी विगेरे शब्दोपयोग लक्षणवाळां द्रव्यना मुख्य शब्दोने

छोडीने " सत्तावाचि " शब्द " भूत " शब्दने लेवाथी एम सूचव्युं के, जेम आ उपयोग लक्षणवाळो पदार्थ अवश्य सत्ताने धारण

करे छे, ते सुखने वांच्छे छे, अने दुःखने धिकारे छे, सुख पुन्यना उदयथी छे, तेथी एम जाणवुं के, वधी पण शुभ प्रकृतिओ पुन्यना उदयथी छे जेथी शुभ नाम गोत्र आयुष्य विगेरे कर्म प्रकृतिओने दरेक जीव चाहे छे अने अशुभने निंदे छे आ प्रमाणे छे तो शुं करवुं ते कहे छे.

समिए एयाणुपस्सी, तं जहा—अन्धत्तं बहिरत्तं मूयत्तं काणत्तं कुंटत्तं खुज्जत्तं वडभत्तं सामत्तं सबलत्तं सह पमाएणं अणेगरुवाओ जोणीओ संघायइ विरूवरूवे फासे परिसंवेयइ (सूत्र ७८)

अथवा शुभ अशुभ कर्म वधा जीवोमां जोइने डाह्या पुरुषे ते जीवोने अप्रिय होइ तेवुं कृत्य न करवुं एवो शास्त्रकारनो उपदेश छे, आ संबन्धमां " नागार्ज्जुनीया " कहे छे.

"पुरिसेणं खलु दुक्खुव्वेअ सुहेसए"

जीव दुःखने काढवा तथा सुखने मेळववा इच्छे छे. तेथी जीवनी प्ररूपणा करवी अने ते पृथ्वी पाणी वायु अग्नि वनस्पती सूक्ष्म बादर विकल पंचेन्द्रिय संज्ञी असंज्ञीपर्याप्ता अपर्याप्ता विगेरे पहेला अध्ययनमां बताव्या छे अने ते दुःखने छोडवानी इच्छावाला तथा सुखने मेळववानी इच्छावाला जीवोनुं पोतानी उपमाए मानता साधुए पोताना सुखना माटे जीवोने दुःख आपवान हिंसा विगेरे स्थान छोडवा इच्छता पुरुषे पंच महाव्रतोमां पोतानो आत्मा स्थापन करवो, अने ते महाव्रतो पूरां पाळवा माटे उत्तर गुणो पण पाळवा जोइए तेज वात आ सूत्रमां लाव्या छे, ते कहे छे.

पांच समितिथी वनेलो हवे पछी कहेवाता शुभ अशुभ कर्मनुं स्वरूप जाणे एटले अंधपणुं वहेरापणुं मुंगापणुं काणापणुं अने कुंटपणुं विगेरे कर्मनांज फळ छे. ते जीवोमां साक्षात् जोइने पोते समजे, के हुं दुःख वीजाने आपीश, तो ते मने पण भोगववुं पडशे ते खुलासावार कहे छे.

हवे समितिनुं वर्णन कहे छे.

सम् उपसर्ग इ. धातु अने ति. प्रत्यय लागवाथी समिति शब्द वन्यो छे. अर्थात् सम्यक् वर्तन ते समिति छे. तेना पांच भेद
छे. (१) इर्या समिति ते जोइ विचारी पगलुं भरवानुं छे, जेथी वीजा जीवोनी तथा पोतानी रक्षा थाय, (जोइने चालेतो, पग नीचे
कीडी विगेरे मरे नही, तेम ठोकर पण न लागे) आ अहिंसा नामना पहेला महाव्रतने टेको आपनार छे. तेथी अहिंसा बरोबर पळे
छे. (२) भापा समिति ते असत्य अहितकारक वचन रोकवा माटे छे, अर्थात् साधुए वीजुं महाव्रत पाळवुं जोइ विचारीने बोलवुं.
तथा (३) एपणा समिति ते साधुने कोइनुं पण चोरीने के पूछ्या विना कांइ पण न लेवुं–ते त्रीजुं महाव्रत पाळवा माटे छे, एटले
निर्दोप भोजन विगेरे दिवसना प्रकाशमां मालीकनी रजा लइ वापरवानुं छे. वाकीनी वे समितिओ. (४) आदान–एटले वस्तु लेवी–
मुकवी ते समिति तथा [५) उत्सर्ग–एटले शरीरमांथी के मकान विगेरेमांथी नीकळतो मळ विगेरे योग्य स्थाने नांखवो के जेथी
वीजाने पीडा न थाय, ते वधा महाव्रतमां सर्वोत्तम अहिंसा नामना पहेला महाव्रतनी सिद्धि माटे छे, आ प्रमाणे पंच महाव्रतो मेळवीने
पांच समिति पाळता साधुने वीजा जीवोनुं सुख विगेरे देखाय छे, अथवा जे रीते पोते वीजानुं भलुं चाहनारो थाय छे ते सूत्र
वडेज वतावे छे अंधपणुं विगेरे जे जे विरुप रूपोमां संसारी जीवो संसारमां भ्रमणा करता घणी अवस्थाओ भोगवे छे. ते वतावे छे.

तेमां एकेन्द्रिय बेएन्द्रिय त्रेन्द्रिय ए आंख विनाना द्रव्य अने भाव अंधा छे (आपणी माफक तेमने आंखो जोवानी नथी) तथा चौरेन्द्रियवालाथी जोवानी आंखो छतां धर्मना अभावे मिथ्यादृष्टिओ भाव अंधा छे. (सारा माठानो तेमने विवेक नथी) कहुं छे के.

"एकंहि चक्षुरमलं सहजो विवेकस्तद्वद्भिरेव सह संवसतिर्द्वितीयम्;
एतद्वयं भुवि न यस्य स तत्त्वतोऽन्धस्तस्यापमार्गचलने खलु कोऽपराधः ॥१॥

जेने निर्मळ चक्षु समान स्वभाविक विवेक छे अने तेवा विवेक साथे एमने सोवतरूप वीजुं नेत्र छे, आ बन्ने चक्षु जेमने नथी ते हृदयना आंधळा कुमार्गे जाय तो ते बीचारानो खरेखर शुं अपराध छे :

जे वीतरागनो धर्म पामेला छे तेओ सम्यक् दृष्टि छे. तेमने कोइपण कारणे आंखनुं तेज नाश पाम्युं होय ते द्रव्यअंधा जाणवा पण खरा देखता कोने कहेवा के जे द्रव्यथी पण आंधळा नथी अने भावथी पण आंधळा नथी अर्थात् आंखे जुए छे, अने विवेकथी वर्त्ते छे.

तेथी द्रव्य अने भावथी भिन्न एवुं बन्ने प्रकारनुं जेने अंधपणुं छे, ते एकान्तथी दुःख आपनारुं छे. कहुं छे के.

"जवन्नेव मृतोऽन्धो, यस्मात्सर्वक्रियासु परतन्त्रः । नित्यास्तमितदिवाकर, स्तमोऽन्धकारार्णवनिमग्नः ॥१॥

जीवतांज मुवा जेवो आंखथी आंधळो छे. के ते बीचारो बधी क्रियामां परतंत्र छे. जेने चक्षु नथी तेने हमेशां सूर्य अस्त थएलो छे. अने पोते अंधकारना समुद्रमां डुब्यो छे.

लोकद्वयव्यसनवह्निविदीपिताङ्गमन्धं समीक्ष्य कृपणं परयष्टिनेयम् ॥

को नोद्विजेत भयकृज्जननादिवोग्रात्कृष्णाहिनैकनिचितादिव चान्धगर्त्तात्? ॥२॥"

आलोक परलोकमां दुःखना अग्निमां बळता अंगवालो तथा पारकानी लाकडीए दोराता दुःखी आंधळाने जोइने कोण खेद न पामे? अथवा भयने पमाडनार एवो भयंकर काळो साप अंधारानी खाडावाळी जग्यामां जे एक दृष्टिए करडवानी इच्छावालो बेठेलो छे तेने जोइने तेना आगळ जतां जेवो भय लागे छे, तेवी रीते अंधपणना खाडानुं दुःख कोने भयंकर न लागे.?

जेम उपर आंधळानुं दुःख वताव्युं ते प्रमाणे केटलाक जीवो कर्मना वशथी बहेरापणुं भोगवे छे. अने जेने सारा के माठा विवेकनुं भान नथी ते आ लोक परलोकनुं जे सारुं फळ छे तेनी क्रिया करवाने ते अशक्त छे कह्युं छे के–

"धर्म्मश्रुति श्रवणमङ्गलवर्जितो हि, लोकश्रुतिश्रवणसंव्यवहारबाह्यः ॥
किं जीवतीह बधिरो? भुवि यस्य शब्दाः, स्वप्नोपलब्ध धन निष्फलतां प्रयान्ति? ॥१॥

धर्मनां वचन सांभलवाना कल्याणथी दूर थयेल तथा लोकना वचन सांभळवाना वहेवारथी बहार थएल छे ते बहेरो आ दुनीयामां केम जीवे छे.? के जेने कहेला शब्दो स्वप्नमां मेळवेला धननी माफक निष्फळताए जाय छे.

स्वकलत्रबालपुत्रकमधुरवचःश्रवणबाह्यकरणस्य । बधिरस्य जीवितं किं, जीवन्मृतकाकृतिधरस्य ॥२॥

पोतानी स्त्री तथा नाना पुत्रनां मधुर वचन सांभळवाथी विमुख एवा वहेरानुं जीवित जीवतो छतां पण मरेलानो आकार धर-

नारनुं कंइ गणत्रीमां छे ? (नकामुं छे.)

आ प्रमाणे मुगांने पण एकांत दुःखनो समूह भोगववानुं छे. कह्युं छे केः—

"दुःखकरमकीर्तिकरं, मूकत्वं सर्वलोकपरिभूतम् । प्रत्यादेशं मूढाः कर्म्म कृतं किं न पश्यन्ति? ॥१॥"

दुःखने करनार अपजशवाळुं सर्वलोकमां निंदा पात्र मुंगापणुं छे, ते पोतानाकर्मोनुं करेलुं फळ बीजाने भोगवताने मूढो केम जोता नथी ? (पोते पाप करशे तो, तेनु फळ भोगववुं पडशे.)

तेज प्रमाणे काणापणुं पण दुःखरूपे छे. कह्युं छेः—

"काणो निमग्न विषमोन्नतदृष्टिरेकः शक्तोविरागजनने जननातुराणाम् ॥
यो नैव कस्यचिदुपैति मनःप्रियत्वमालेख्यकर्म्मलिखितोऽपि किमु स्वरूपः?

विपमस्थानमां डुबेलो, जेने एकज दृष्टि (आंख) छे. जे पोते काणो होवाथी वैराग्य उत्पन्न करवामां शक्तिवान छे, अने जन्मदुःखीओमां ते छे पोते कोइनां पण मनने वहालो लागतो नथी. आलेखवा जोग कर्मथी लखायो छतां; जे बीजाने वहालो न लागे; तेनुं स्वरूप गइ गणत्रीनुं छे ?

आ प्रमाणे कुंटपणुं एटले, जेना हाथपग वांका होय; अथवा ठींगणापणुं होय; अथवा जेनी पीठ वडनी (खुंधाना) आकारे होय; तथा रंगे काळो होय; तथा सबळपणुं होय. आवुं स्वाभाविक कदरुपुं शरीर होय अथवा पछवाडे कर्मना वशथी तेवो थाय;

तो, घणुं दुःख भोगवे छे.

वळी प्रमादथी एटले, विषयक्रीडाना कारणे सारां काममां एटले, धर्ममां प्रमाद करवाथी संकट, विकट शीत, ऊष्ण विगेरे, अनेक भेदवाळी योनीमां पोते भ्रमण करे छे, अथवा प्रथम बतावेली चोराशीलाख जीवायोनीमां एकसरखुं भ्रमण करे छे. अने नवां नवां आयुष्यो बांधीने तेमां जाय छे. अने ते योनीओमां जुदी जुदी जातनां दुःखोने अनुभवे छे, तेज प्रमाणे उंचगोत्रनो अहंकार करवामां हणाएला चित्तवाळो अथवा नीच गोत्रना कारणे दीन बनेलो, अथवा आंधळो बहेरो थवा छतां अज्ञानी जीव पोते पोतानुं कर्त्तव्य नथी जाणतो तथा पूर्वे करेलां कर्मनुं आ फळ छे, ते जाणतो नथी. तथा संसारनी बुरी दशाने भूली जाय छे. अने हित–अहितने विसारे छे. तेमज उचित वातने गणतो नथी. ते तत्वने भुलेलो मूढ बनेलो होय तेज उंच गोत्र विगेरेमां अहंकार करे छे. तेज कहे छे—

से अबुज्झमाणे हओ वहए जाईमरणं अणुपरियट्टमाणे, जीवियं पुढो पियं इहमेगेसिं माणवाणं खित्तवत्थुममायमाणाणं आरत्तं विरत्तं मणिकुंडलं सह हिरण्णेण इत्थियाओ परिगिज्झति, तत्थे व रत्ता, न इत्थ तवो वा दमो वा नियमो वा दिस्सइ, संपुण्णं बाले जीविउकामे लालप्पमाणे मुढे विप्परियासमुवेइ ॥ (सू० ७९)

पूर्वे कहेलां उंचगोत्रनो अभिमानी अथवा आंधळां, बहेरां विगेरेनां दुःखने भोगवतो; अथवा कर्मविपाकने न जाणतो हत उपहत छे एटले, जुदीजुदी जातना रोगथी शरीरे पीडातां हणायलो छे, तथा बधा लोकमां पराभव पामवाथी उपहत छे, अथवा उंचगोत्रना अहंकारथी उचित कार्यने छोडवाथी विद्वान पुरुषोना मुखथी, जेनो अपयश पडघो पडवाथी ते हणायलो छे, तथा अभिमान करवाथी अनेक भवमां अशुभकर्म वांधीने, नीचगोत्रना उदयने अनुभवतो उपहत छे, अने ते दुःखथी मूढ बने छे, ते दरेक जग्याए जोडवुं.

तेज प्रमाणे जाति (जन्म-मरण) ए बन्नेने "पाणी काढवाना रेंटना न्याये" नवा नवा जन्म-मरणनां दुःखसंसारना मध्यभागमां रहीने ते जीव भोगवे छे, अथवा क्षणेक्षणे क्षयरूप आवीचीमरणथी दरेक क्षणे जन्म तथा विनाशने अनुभवतो दुःखसागरमां डुबेलो सघळुं नाशवंत छतां, तेने नित्य मानीनेः जेमां हित थवानुं छे तेने पण अहित मानी विमुख थाय छे. (धर्म, जे सुखने आपनार छे, ते धर्मने छोडी दुःख आपनार विषयमां खेंचाय छे.) कह्युं छे केः—

आयुष्यने नित्य मानीने अथवा, असंयमजीवित दरेक प्राणीने वधारे वहालुं छे. एटले आ संसारमां अज्ञान अंधकारथी हणाएला चित्तवाला मनुष्यने तथा बीजा प्राणीओने विषय रसमां जीववुं वहालुं छे, ते बतावे छे.

आयुष्य वधारवा माटे रसायण विगेरे क्रियाओ बीजा जीवोने जे दुःख करनारी छे तेने करे छे. तथा चोखा विगेरेनुं क्षेत्र खेडावे छे. धोळांघर (हवेलीओ) विगेरे बधावे छे. तथा आ मारां छे. एम मानीने तेना उपर वधारे प्रेम करे छे. तथा थोडां रंगेलां अथवा जुदी जुदी जातनां रंगेलां अथवा वगर रंगेलां वस्त्रो तथा रत्नोना कुंडळो तथा सोनुं तथा स्त्री विगेरे मेळवीने तेमां एटले उपर

कहेली रमणीय वस्तुओमां गृद्ध थएला छे. ते मूढपुरुषो दुःख आवतां गभराय छे. अथवा तेमनी शरीर शक्ति बरोबर होय त्यारे तेओ धर्म विगेरेने उत्तम बोलता नथी पण तप ते अणसण विगेरे तथा " इन्द्रियोनुं दमन तथा अहिंसानो नियम फळवाळो नथी एम तेओ उलटुं बोले छे. ते बतावे छे, तप नियम धारण करेला धर्मि जीवने तेओ कहे छे. के" आ तप विगेरेनुं फळ भविष्यमां नथी. फक्त आलोकमां कायाने दुःख अने भोग विगेरेथी दूर रहेवुं ए तमने ठगवा माटे गुरुओए खोटुं बतावेलुं छे.

वली बीजा जन्ममां सुख मळशे. ए पण खोटो गुरुए भ्रम आपेलो छे. कारणके हाथमां आवेला भोगो तथा सुखो भोगववां छोडीने भविष्यमां सुखनी आशा करवी ए वधारे पापरूप छे तेथी वर्त्तमाननुं सुख चहानार संसारी जीवो (गुरुना वचनोने ऊंचा मूकी) भोग भोगववमां एक पुरुषार्थ मानी अवसरे अवसरे संपूर्ण भोगोने भोगवतो अज्ञानी जीव लांबा आयुष्यने इच्छतो भोगोने माटे अतिशय कुवचन बोलती वचन दंडनुं पाप बांधे छे. एटले जे माणस एम बोले के तप तथा इन्द्रिय दमन अथवा अहिंसादिक नियम फळवालुं नथी एवुं बोलनारो मूढ तत्वने न जाणनारो हत उपहत थएलो नवां नवां जन्म मरण करी जीवित क्षेत्र स्त्री विगेरेमां लोलुप बनी तत्वमां विमुख अने अतत्वमां तत्व मानीने हित अहितनी बाबतमां पण उलटो चाले छे. ते बतावे छे.

दाराः परिभवकारा बन्धुजनो बन्धनं विषं विषयाः । कोऽयं जनस्य मोहो ? ये रिपवस्तेषु सुहृदाशा ॥१॥

स्त्रीओ अपमानने करनारी, बंधुजन बंधन समान तथा इंद्रियोना विषयो विष समान छे. छतां माणसने आ केवो मोह छे के जे खरेखरा शत्रु छे. तेमां मित्रपणानी आशा राखे छे. पण जेओ शुभ कर्म उपार्जन करीने मोक्षनी इच्छावाला बनेला छे ते केवा छे ते बतावे छे.

इणमेव नावकंखति, जे जणा धुवचारिणो । जाइमरणं परिन्नाय, चरे संकमणे दढे (१) नत्थि कालस्स णागमो, सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया दुक्खपडिकूला अप्पियवहा पियजीविणो जीविउकामा, सव्वेसिं जीवियं पियं, तं परिगिज्झ दुपयं चउप्पयं अभिजुंजिया णं संसिंचिया णं तिविहेण जाऽपि से तत्थ मत्ता भवइ अप्पा वा बहुया वा, से तत्थ गड्ढिए चिट्ठइ, भोअणाए, तओ से एगया विविहं परिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवइ, तंपि से एगया दायाया वा विभयंति, अदत्तहारो वा से अवहरति, रायाणो वा से विलुंपंति, नस्सइ वा से विणस्सइ वा से, आगारदाहेण वा से डज्झइ इय, से परस्सऽट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले ठकुव्वमाणे तेण दुक्खेण स मूढे विप्परियासमुवेइ, मुणिणा हु एयं पवेइयं, अणोहंतरा एए नो य ओहं तरित्तए, अतीरंगमा एए नो य तीरं गमित्तए, अपारंगमा एए नो य पारं गमित्तए, अयाणिज्जं च आयाय तंमि ठाणे न चिट्ठइ, वितहं पप्पऽखेयन्ने तंमि ठाणंमि चिट्ठइ (सू० ८०)

जेओ ध्रुवचारी एटले मोक्षनुं कारण ज्ञान विगेरे छे तेने मेळववाना स्वभाववाला छे तेवा धर्मात्मापुरुषो उपर कहेला असार जीवितक्षेत्र धन स्त्री विगेरेने चहाता नथी.

अथवा धुतचारी एटले धुत ते चारित्र.तेमां रमणता करनारा छे. अर्थात् चारित्र लइ तेने पूर्ण पाळी मोक्ष मेळवे ते संसारने चहाता नथी

वली भोगना अभावे ज्ञान मेळवीने जन्ममरणना दुःखने जाणीने तेवा पुरुषे संक्रमण (चारित्र) मां रमणता करवी एवुं शिष्यने गुरु कहे छे के विश्रोतसिका रहित अथवा परिसह उपसर्ग आवतां तारे कंटाळवुं नही अथवा हे शिष्य तुं शंका रहीत मन-वालो थइ संयममां रहे एटले शिष्ये तप दमन नियम विगेरे आलोकमां जे कष्ट छे. ते परभवनुं अनंतु सुख आपशे एवुं निःशंकपणे मानीने धर्ममां आस्था राखे; अने ते तप नियम विगेरे करे; अने तेथीज पोते तपना प्रभावथी राजा–महाराजाओने पण पूजवायोग्य थाय छे.

जेणे विषय कषायने जीत्या छे, तेवा तपस्वी शांत पुरुषने अहीं जे सुखरूप फळ मळ्युं छे, तथा तेणे वधा जोडकांने दूर करी समभाव मेळव्यो छे, तेवा पुरुषने परलोक कदाच न होय; तोपण तेनुं कंइ बगळतुं नथी.(उपशमभावमां अहींज अनंतु सुख छे, तेने परलोकना सुखनी इच्छाज नथी. कह्युं छे के:—

"संदिग्धेऽपि परे लोके, त्याज्यमेवाशुभं बुधः ! यदि नास्ति ततः किं स्यादस्ति चेन्नास्तिको हतः॥१॥"

परलोक छे के नहि ? एवी एवी शुंकावाला लोकमां पंडित पुरुषोए पापने छोडवुंज जोइए; जो परलोक नथी; तो, तेनुं शुं व-गडवानुं छे ? अने परलोक छे तोपण, तेनुं शुं बगडवानुं छे ? एथी परलोक न माननारो नास्तिक हणायो. अर्थात् पापने करनारो

आलोकमांज नास्तिक केदमां पडी दुःख भोगवे छे, तोपण तेनी आशा पुराती नथी; अने आस्तिक भोगने रोग मानी तेनी आशा मूके छे, तो ते देवनी माफक पूजाय छे. तेथी गुरुमहाराज शिष्यने कहे छे के तमारे पोताना वशमां रहेलुं संयम सुख मेळववामां दृढ रहेवुं. पण आवुं न विचारवुं के थोडा वर्ष पछी अथवा वृद्धावस्थामां धर्म करीश. कारण के मृत्युनुं आववुं अनिश्चित छे के हमणा मृत्यु नहि आवे. कारण के सोपक्रम आयुष्यवाळा जीवने कोइ अवस्था एवी नथी के–जेमां कर्मरूपी अग्निमां पडनारा लाखना गोळा माफक जीव पीगळी न जाय. कह्युं छे के—

शिशुमशिशुं कठोरमकठोरमपण्डितमपि च पण्डितं, धीरमधीरं मानिनममानिनमपगुणमपि च बहुगुणम् । यतिमयतिं प्रकाशमवलीनमचेतन मथ सचेतनं, निशि दिवसेऽपि सान्ध्य समयेऽपि विनश्यति कोऽपि कथमपि ॥१॥"

बाळक, जुवान, कठोर कोमळ, मूर्ख, पंडित धीर, अधीर, अहंकारी दीन गुण रहित, घणा गुणवाळो, साधु, असाधु, प्रकाशवाळो अप्रकाशवाळो, अचेतन, सचेतन, अर्थात् जेटला जीवो संसारमां छे. ते बधा काळ (मृत्यु) थी दिवसमां, रात्रीमां अथवा संध्याना समयमां पण कोइ रीते नाश पामे छे. तेथी मृत्युना सर्वेने कडवापणाने समजीने उत्तम पुरुषे अहिंसा विगेरे महाव्रतोमां सावचेत थवुं जोइए. शा माटे ते कहे छे.

" सव्वे पाणा पियाउया "

एटले सूत्रमां वताव्या प्रमाणे बधा जीवोने पोतानुं आयुष्य प्रिय छे.

शंका—सिद्धने आयुष्य प्रिय नथी, तेथी तमारा कहेवामां दोष आवशे.

उत्तर—एटला माटेज अमे मुख्य शब्द जीवने न वापरतां प्राण शब्द वापर्यो छे. अने तेथी प्राण धारण करनार संसारी जीवज लेवा. तेथी तमारो वांधो नकामो छे.

" सव्वे पाणा पियायया "

आ पाठ छे. एटले आयुष्यने बदले आयत शब्द छे अने तेनो अर्थ आत्मा छे.

कारण के ते अनादि अनंत छे. अने बधाने पोतानो आत्मा वहालो छे. अने सुखनी वांच्छा दुःखनो नाश करवानी अभिलाषा छे. कह्युं छे के—

सुहसाया दुक्खपडिकूला.

आनंदरूप-सुख छे, तेनो स्वाद करवो ते सुख भोगववानी इच्छावाळा जाणवा. अने असाता ते दुःख. तेना द्वेषी जाणवा; तथा पोतानो घात करे; तो, पोते अप्रिय माने छे, तथा जीवितने प्रिय माने छे, एटले दीर्घ आयुष्य वांच्छे छे, अने ते पण असंयम जीवित वांच्छे छे, एटले दुःखमां पीडाइने पण, अंतदशामां पण जीववाने इच्छे छे कह्युं छे के:—

", रमइ विहवी विसेसे ठितिमित्तं थेव वित्थरो महई । मग्गइ सरीर महणो, रोगी जीए च्चिय कयत्थो ॥१॥"

वैभववाळो विशेष वैभवमां रमे छे. थोडावाळो पण रहेवाने इच्छे छे. निर्धन पण पोतनां शरीरने संभाळे छे. रोगी पण जीव-

वामां कृतार्थ माने छे.

तेथी आ प्रमाणे सर्व प्राणी सुखना जीवितना अभिलाषी छेः अने संसारी–निर्वाह आरंभ विना नथी; अने आरंभ छे, ते प्राणीने उपघात करनार छे, अने प्राणीओने पोतानुं जीवित वधारे वहालुं छे, तेथी वारंवार गुरुमहाराज उपदेश आपे छे के—दरेकने सर्वथा इन्द्रियोना विषय वहाला छे, अनेतेथी विषयोने ध्यानमां राखीने शुं करे छे? ते कहे छे. बे पगवाळा दास दासी चार पगवाळा गाय घोडा विगेरे उपभोगमां लइने; धननो संचय करीने मन, वचन, अने कायाथी करवुं करावुं; अने अनुमोदनावडे पोतानां मनुष्य–जन्ममां जे कंइ जींदगी परमार्थमां गुजारवी जोइए; तेने बदले तेने आरंभमां एटले पापकर्ममां रोकीने व्यर्थ करे छे. ते वखते अर्थमां गृद्धथयलो पोते क्लेशने गणतो नथी. धनने रक्षण करवानो परिश्रम विचारतो नथी; तथा तेनी चंचळताने ध्यानमां लेतो नथी, तेना नकामापणाने विसरे छे. (धनना अपायो भूलीने लाभज नजरे जुए छे, अने पापमां रक्त रहे छे.) कह्युं छे के–

कृमिकुलचितं लालाक्लिन्नं विगन्धि जुगुप्सितं, निरुपमरसप्रीत्या खादन्नरास्थि निरामिषम् ॥
सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं सशाङ्कितमीक्षते, न हि गणयति क्षुद्रो लोकः परिग्रहफल्गुताम् ॥१॥

कृमिना समूहथी व्याप्त अने लाळथी भरेलुं दुर्गंधवाळुं निंदनीक एवुं मांस विनानुं हाडकुं मोढामां ममरावतो अधिक स्वाद तेमां मानतो कुतरो–पासे उभेला इन्द्रने पण शंकाथी जुए छे. (के रखेने मारुं हाडकुं इन्द्र लइ न जाय.) आ उपरथी निश्चय एम जणाय छे के क्षुद्र जंतु छे. ते पोतानी संघरेली वस्तुनी असारता जाणतो नथी. ते पैसाने शा माटे चाहे छे, ते कहे छे. भोजनने माटे—

उपभोगने माटे–धनने इच्छी तेवी तेवी क्रियामां वर्त्ते छे. एटले अवलगन. (बीजानो आशरो लेवा) विगेरेनी क्रिया करे छे. तेमां लाभांतराय कर्मना क्षय उपशममां जुदीजुदी जातनुं मळेलुं अने वापरतां वचेलुं साचववा महान उपकरण भेगां करे छे.

अने कोइ पापीने तेवा लाभनो उदय न होय, तो धननी इच्छाए ते रंक मनुष्य समुद्र ओळंघे छे, पहाड चढे छे. खाण खोदे छे, गुफामां पेसे छे, पारानो रस बनावी तेना वडे सुवर्ण सिद्धि (कीमीयो) करवा चाहे छे. राजानो आश्रय ले छे, खेती करावे छे, आ बधी क्रियामां पोताने अने परने दुःख आपवा वडे पोताना सुखना माटे मेळवेलुं धन पोते कष्ट करेलुं होय छतां कोइ वखत तेना पापना उदयथी तेना पीतराइओ तेमां भाग पडावे छे. अथवा दगाथी ले छे. चोरो चोरे छे. राजाओ दंडे छे. अथवा पोते राजना भयथी जंगलमां नासी जाय छे. अथवा तेनुं जुनुं घर पडी जाय छे. अथवा अग्निथी बळतां धन नाश पामे छे. लुंटाइ जाय छे; आवां घणां कारणोथी अर्थ नाश पामवानो छे. एथी उपदेश करे छे के, हे शिष्य ! अर्थनो मेळवनारो बीजानां गळां रेसनारो पाप करीने आज्ञानी जीव ते धनथी सुख भोगववाने बदले दुःख भोगवतां मुढ बनीने घेलो थाय छे. अने तेथी विवेक नाश थवाथी कार्य–अकार्यने मानतो नथी. तेज तेनी विरूपता छे. कह्युं छे के—

"रागद्वेषभिभूतत्वा, त्कार्याकार्य पराङ्मुखः । एष मूढ इति ज्ञेयो, विपरीतविधायकः ॥१॥

रागद्वेषथी घेरावाथी कार्य अकार्यना विचारमां शून्य एवो विपरीत कार्य करनारो मूढ माणस जाणवो.

आ प्रमाणे मूढपणाना अंधकारमां छवायाथी जेने आलोकना मार्गनुं ज्ञान नथी एवा सुखना अर्थिओ छतां दुःखने पामे छे.

तेथी सर्वज्ञ वचन रूप दीवाने वधा पदार्थनुं स्वरूप खरेखरुं बतावनार जाणीने गुरु कहे छे. हे मुनिओ तेनो आश्रय तमे ल्यो.

में आ मारी बुद्धिथी नथी कह्युं. एवुं सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे, त्यारे कोणे कह्युं ? ते कहे छे.

त्रणे काळमां जगत विद्यमान छे. एवुं जे माने ते मुनि जाणवा अने ते त्रणे काळनुं ज्ञान जेने होय ते सर्वज्ञ तीर्थंकर छे. तेमणे कह्युं छे. तेओए अनेकवार पोताना पुन्य बळथी उंच गोत्र विगेरे मेळव्युं छे. अथवा प्रकर्षथी अथवा प्रथमथी ज्ञान प्राप्त थतांज वधा जीवो पोतानी भाषामां समजे तेवां वचनवडे तेमने उपदेश कर्यो छे. ते कहे छे.

अनोघ—ओघ बे प्रकारे छे. द्रव्यओघ ते नदीनुं पूर विगेरे छे. अने भावओघ ते आठ प्रकारनुं कर्म अथवा संसार छे. ते आठ कर्मथी संसारी जीव अनंत काळ भमे छे. ते ओघने ज्ञान दर्शन अने चारित्ररूपी वहाणमां बेठेला मुनिओ तरे छे. अने जेओ नथी तरता ते अनोघंतरा छे, अर्थात् जेओ मुनि धर्म पाळे छे तेओ तरे छे, अने जेओ ते धर्मने छोडी विषयना लालचु बने छे, ते जैनेतर अथवा जैनमां पतित साधु छे. तेओ ज्ञान विगेरे उत्तम वहाणथी भ्रष्ट थवाथी तरवानो उद्यम करे तो पण संसार तरवा समर्थ थता नथी. तेज सूत्रमां कह्यूं छे—

नोय ओहं तरित्तए,

जे संसार तरता नथी ते अतीरंगमा छे, एटले तीर ते संसारनो पार तेनी पासे जवुं. ते तीरंगमा छे अने जेओ विषय रसमां पडे तेओ किनारे न जवाथी अतीरंगम छे. ते कोण ? ते कहे छे. जैनेतर अथवा प्रथम कहेला धर्म भ्रष्ट जैन साधु—ते बतावे छे.

तेओ वेष धारे छे छतां सम्यक् आचार न पाळवाथी सर्वज्ञना कहेला सन्मार्गथी दूर होवाथी किनारे जता नथी तेज प्रमाणे अपारंगम पण जे. अहीं पार एटले, सामेनो तट जाणवो. तेज प्रमाणे अपारगत पण जाणवा; एटले वितरागना उपदेशथी वीरुद्ध चालवाथी पारगमनमां सफळता मळती नथी. आ बधुं कहीने कहे छे केः—तें संसारना सुखइच्छको संसारमांज अनंतकाळ रहे छे. जोके, तेओ वेष धारवाथी के, स्वेच्छाचारथी थोडुंक कष्ट पण सहेता होय; तोपण सर्वज्ञना उपदेशथी विकळ, अने पोतानी इच्छानुसार बनावेला शास्त्रनी रीतिए चालनारा होवाथी संसारपार जवाने समर्थ नथी.

प्रश्नः—तीर, अने पारमां शुं भेद छे?

उत्तरः—अहींआं तीर एटले मोहनीयकर्मनो क्षय लेवो. तथा बाकीनां बीजां त्रण घातीकर्म दूर थवाथी पार जाणवो; अथवा तीर एटले, चार घातीकर्मनो नाश अने पारमां बाकीनां अघातीकर्मनो पण नाश जाणवो.

प्रश्नः—जैनेतर अथवा, पतितसाधु केम मोक्षमां न जाय?

उत्तरः—जेनाथी सर्व पदार्थो ग्रहण कराय; ते आदानीय ते श्रुतज्ञान जाणवुं. ते श्रुतज्ञानमां कह्या प्रमाणे संयमस्थानमां जे न वर्त्ते ते मोक्षमां न जाय अथवा लोकोने प्रियएवां भोगनां अंग दास दासी चोपगां धन धान्य सोनुं रुपुं विगेरे ग्रहण करीने अथवा मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योगवडे ग्रहण करवा योग्य कर्म ग्रहण करीने ज्ञानादिमय मोक्षमार्गमां अथवा सम्क् उपदेशमां अथवा प्रशस्तगुण स्थानमां जे जीव पोताना आत्माने स्थिर नथी करतो ते संसारमां भमे छे.

वली ते धर्मभ्रष्ट पोते वीतरागना उपदेश स्थानमां स्थिर थतो नथी. पण तेने बदले अनुचित स्थानमां वर्त्ते छे. ते बतावे छे. वितथ ते असत् वचन दुर्गतिनो हेतु छे तेने पामीने अकुशळ अथवा खेदने जाणनारो असंयम स्थानमां वर्त्ते छे. अथवा वितथ एटले ग्रहण करवा योग्य भोग नथी. जुदु जे संयम स्थान "छे तेने पामीने खेदने जाणनारो निपुण साधु तेज स्थनमां एटले कर्मने हणवामां तत्पर रहे छे अर्थात् पोताने सर्वज्ञ प्रभुनी आज्ञामां स्थापे छे. आ उपदेश जे शिष्य ज्यां सुधी तत्वनो बोध पाम्यो नथी तेने सुमार्गमां वर्त्तवा अपाय छे. पण जे तत्वनो जाण तथा हेय (त्यागवा योग्य) उपादेय (ग्रहण करवा योग्य) नुं विशेष जाणे छे, ते बुद्धिवान पुरुष यथाअवसरे यथायोग्य करवुं, ते पोतानी मेळेज करे छे; ते बतावे छे.

उद्देसो पासगस्स नत्थि, बाले पुण निहे कामसमणुन्ने असमियदुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ (सू० ८१) त्तिबेमि ॥ लोकविजये तृतीयोद्देशकः ॥

उद्देश उपदेश एटले सत् असत् कर्त्तव्य तेना आ देशने जे जाणे ते पश्य जाणवो तेज पश्यक छे. तेने आ उपदेशनी जरुर नथी. ते पोतेज समजे छे.

अथवा पश्यक ते सर्वज्ञ अथवा तेना उपदेश प्रमाणे चालनारो जाणवो.

जे कहेवाय ते उद्देशो. ते नारकादि चार गति अथवा उंच नीच गोत्रनुं कहेवुं. ते उपर कहेला सर्वज्ञने अथवा उत्तम साधुने नथी. कारण के थोडाज वखतमां तेनो मोक्ष थवानो छे.

प्रश्नः—क्यो माणस वीतरागना उपदेश प्रमाणे चालतो नथी ? ते कहे छे—

"बाळ" राग विगेरेथी मोहीत थएलो ते कषायो तथा कर्मोवडे अथवा परिसह उपसर्गवडे हणाय छे. ते "निह" अथवा जे-नांथी स्नेह थाय ते स्नेहि ते जेने छे. ने स्नेह वालो रागी जाणवो. ते इच्छा संसार सुखनो अभिलाषी मनोहर भोगोनो रागी बनी कामनी इच्छावालो ते कामी वारंवार विषयनी इच्छा शांत न पडवाथी तेना दुःखथी दुःखीओ बनेलो शरीर अने मनमां दुःखोथी पीडातो रहे छे. कांटा तथा शस्त्रनो घा अथवा गुमडुं कोढ विगेरेथी शरीर दुःख भोगवे तथा वहालांनो वियोग अप्रियनो संयोग अनिष्टनो लाभ अने इच्छितनो अलाभ तथा दारिद्र दुर्भाग्यथी मननी पीडाओ भोगवे छे. अने तेनाथी वारंवार आर्त्तध्यान करतो वारंवार तेमां भमे छे. एटले दुःखना आवर्त्तमां डुबेलो संसारमां भमे छे. (आ बधानो सार ए छे के–जे अहंकार करे–दीनता करे ते संसारमां भमे अने जे मुनि सुख दुःखमां अहंकार दीनता न करतां चारित्रने समता भावे आराधे ते मोक्षमां जाय)

लोक विजयनो त्रीजो उद्देशो समाप्त थयो.



तओ से एगया रोगसमुप्पाया समुप्पज्जति जेहिं वा सद्धिं संवसइ, ते व णं एगया नियया पुव्विं परिवयंति, सो वा ते नियगे पच्छा परिवइज्जा, नालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा सरणाए वा जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं,

भोगा मे व अणुसोयन्ति इहमेगेसिं माणवाणं (सू० ८२)

त्रीजो उद्देशो कह्या पछी चोथो उद्देशो कहे छे—

भोगोमां प्रेम न करवो. ए आ उद्देशामां छे. जेथी भोगीओने शुं दुःखो थाय छे, ते वतावे छे. पूर्वे पण तेज कह्युं छे के भो-
गीओने कोइ वखते रोग उत्पन्न थाय छे. पूर्वे वताव्युं के संसारमां विषयी जीव परिभ्रमण करे छे. ते जीव आ दुःखोने पण भो-
गवे छे, आ प्रमाणे त्रीजा उद्देशानो संबंध छे. तथा एना पहेलांना सूत्रनो आ संबंध छे के वालक जेवो जीव प्रेममां पडीने काम
भोग करे छे. ते काम दुःखरुपज छे. तेमां आसक्त थएला जीवने वीर्यनो क्षय भगंदर विगेरे रोगो थाय छे. तेथी कहे छे के का-
मना अभिलापथी अशुभ कर्म वंधाय अने तेथीज मरण थाय छे, पछी नरकमां उत्पन्न थाय छे. अने नरकमांथी नीकळीने माना पे-
टमां वीर्यना बींदुमां उत्पन्न थइ कलल अर्बुद पेशी व्युह गर्भ प्रसव विगेरेनां दुःख भोगववां पडे छे. त्यार पछी मोटो थतां रोगो थाय
छे. आ बधुं अशुभ कर्मनुं फळ उदय आवतां थाय छे, ते रोगो वतावे छे, माथानुं दुखवुं पेटमां शूळ उठवी विगेरे रोगो थाय छे.
आ रोग उत्पन्न थतां जेनी साथे ते वसे छे. ते सगां तेने निंदे छे. अथवा चाकरी न थतां सगांने ते निंदे छे, वली गुरु कहे छे,
के हे शिष्य ! जे सगां उपर मोह राखे छे, ते सगां तेना प्राण रक्षणना माटे थतां नथी, तेम तुं पण तेना प्राण शरणना माटे
थवानो नथी. एवुं जाणीने तथा जे कंइ दुःख सुख आवे छे, ते पोताना कार्योनुंज प्राणीओ फळ भोगवे छे, तेथी रोगोनी उत्पत्तिमां
दिनता न लाववी; तथा सुंदर भोगोने याद करवा नहि, तेथी "सूत्रमां कयुं छे के" शब्द रूप रस गंध अने स्पर्श ए पांच विषयनो

अभिलाष अमे कोइ पण अवस्थामां भोगवीए एवी इच्छा न करवी, तथा पूर्वे अमारी चढती अवस्थामां तेनो आनद न लीधो, एवुं पण याद न करवुं, "एटले इच्छा" संसारमां जेमणे विषय रसना कडवां फळ जाण्यां नथी तेवा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती विगेरेने थाय छे. पण वधाने तेवा भोगनी इच्छा थती नथी. जो तेम न मानीए तो सनत्कुमार चक्रवर्ती जेवाने पण दोष लागे ते बतावे छे—

ब्रह्मदत्त मरणांतिक रोगनी वेदनाथी पीडाएलो संतापना अतिशयथी प्रिय स्त्रीने स्पर्श करवा माफक विश्वास भूमीमां मूर्छाने पामेलो तेने बहु मानतो तथा कोकडुं वली गएलो तथा विषमतानो विषयी वनेलो ग्लानीथी पीडाएलो दुःख तलवारथी घवाएलो, काळे बाथमां लीधेलो, अने पीडाथी पीडाएलो, नियतिए दुर्दशामां मूकेलो दैवे भाग्यहीन बनावेलो छेवटना उच्छ्वासमां पहोंचेलो महा प्रवासना मुखमां पडेलो दीर्घ निद्राना द्वारमां पडेलो जीवित इश (जम) ना जीह्वाग्रे आवेलो, बोलीमां गद गद वनेलो, शरीरमां विह्वळ बनेलो, प्रलापमां प्रचुर थएलो जृंभिका (रोवा) वडे जीताएलो अर्थात् करेलां पापोथी दुर्गतिमां जवानी तैयारी करी रहेलो. छतां महा मोहना उदयथी सुंदर भोगोनी इच्छावाळो पासे बेठेली भार्या जे पोते पतिना दुःखनी भयंकर वेदनाथी पीडाइने आंखमांथी आंसु पाडती राती आंखोवाली सामे बेठेली छे. तेने कहे छे के—हे कुरुमति हे कुरुमति एम वारंवार पोकरवा छतां (ते स्त्रीना देखताज) पोते सातमी नारकीए गयो.

त्यां पण अतिशय वेदना भोगवतो छतां वेदनाने न गणकारतो ते कुरुमतिने बोलावे छे. आ प्रमाणे भोगोनो प्रेम कोइक जीवोने बीजी गतिमां पण तजवो दुर्लभ छे. पण जे उदार सत्ववाला महान् पुरुषो छे. तेमने ते नथी जेमके जेणे आत्माथी शरीर

जुदुं जाण्युं छे. एवा सनत्कुमार जेवा तत्वप्रेमीओने तेवो भयंकर रोग आववा छतां पण (हायपीट करवाने बदले) में पूर्वे पाप कर्यां छे. ते हुं भोगवुं छुं. एवो निश्चय करीने कर्म समूहने तजवा तैयार थएलाने (शरीर दुःख छतां पण) मनमां क्लेश थतो नथी. कह्युं छे के—

" उप्तो यः स्वत एव मोहसलिलो जन्मालवालोऽशुभो, । रागद्वेषकषायसन्ततिमहान्निर्विघ्नबीजस्त्वया॥
रोगैरंकुरितो विपत्कुसुमितः कर्म्मद्रुमः साम्प्रतं,। सोढा नो यदि सम्यगेष फलितो दुःखैरधोगामिभिः ॥१॥

उत्तम पुरुष पोताना आत्माने समजावे छे. के हे आत्मा जे मोहरूपी पाणीवालो अने अशुभ जन्मरूपी "आलवाल" (झाडने पाणी पावानो क्यारो) वालो तथा रागद्वेष तथा कषायनो समूह तेना वडे निर्विघ्नपणे मोटुं बीज तें रोप्युं छे तथा ते हवे रोगे करीने अंकुरावालुं थयुं छे. विपदाओ तेनां फुलो छे. एवुं कर्मरूपी मोटुं झाड तें तैयार कर्युं छे जो हवे तेने सारी रीते सहन नहींकरे तो नीच गतिमां लइ जनार दुःखोए करीने ते फळवाळो थशे (जो तुं तेने लीधे हायपीट करीश तो फरीथी दुःखो भोगववां पडशे.)

पुनरपि सहनीयो दुःखपाकस्त्वयाऽयं । न खलु भवति नाशः कर्म्मणा संचितानाम् ॥
इति सह गणयित्वा यद्यदायाति सम्यग् । सदसदिति विवेकोऽन्यत्र भूयः कुतस्त्यः? ॥२॥

जो तुं हायपीट करीश तो तारे फरीथी पण दुःखनो पाक भोगववो पडशे. कारणके हायपीटथी बंधायेलां कर्मोनो नाश भोगव्या विना थशे नही. आ प्रमाणे समजीने जे जे दुःख सुख आवे ते सहन कर. तेज विवेक छे. ते सिवाय बीजो विवेक क्यांथी होय (विवेकनुं लक्षण ए छे के दुःख सुखमां हायपीट न करवी पण संतोषथी रहेवुं.)

भोगोनुं मुख्य कारण धन छे, तेथी तेनुं स्वरूपज सूत्रकार कहे छे.

तिविहेण जाऽवि से तत्थ मत्ता भवइ अप्पा वा बहुगा वा, से तत्थ गड्ढिए चिट्ठइ, भोयणाए, तओ से एगया विपरिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवइ, तंपि से एगया दायाया विभयंति, अदत्तहारो वा से हरति, रायाणो वा से विलुंपंति, नस्सइ वा से विणस्सइ वा से, अगारडाहेण वा से डज्झइ इय, से परस्स अट्ठाए कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासमुवेइ (सू० ८३)

त्रण प्रकारे एटले मन, वचन, अने कायाथी तेनी पासे जे कंइ मील्कत थोडी अथवा घणी छे. तेमां भोगी गृद्ध थइने रहे छे. पण ते माने छे के—आ मील्कत मारे भविष्यमां भोग भोगवा काम लागशे. तेथी तेनुं रक्षण करवा महान उपकरणो राखे छे. पण जो तेनुं एकठुं करेलुं धन कोइपण रीते नाश मामे छे एटले पीतराइयो भाग पडावे, चोरो चोरी करे, राजाओ लुंटे, नाश पामे, बळीजाय विगेरेथी पोताने भोगमां न आववाथी इच्छा पुरी न थतां ते घेलो बने छे. अने धनने माटे क्रुर कर्म करतो अज्ञानी जीव तेना दुःख वडे मूढ बने छे. आ वधुं पूर्वे कहेलुं छे, तेथी समजी लेवुं. अहीं नथी कहेता आ प्रमाणे दुःखना विपाकवाला भोगोने जाणीने डाह्या मुनिए शुं करवुं ते कहे छे.

आसं च छन्दं च विगिंच धीरे ? तुमं चेव तं सल्लमाहट्टु, जेण सिया तेण नोसिया, इणमेव नाव बुज्झंति जे जणा मोहपाउडा, थीभि लोए पव्वहिए, ते भो! वयंति एयाइं आययणाइं, से दुःक्खाए मोहाए माराए नरगाए नरगतिरिक्खाए, सययं मूढे धम्मं नाभि जाणइ, उआहु वीरे, अप्पमाओ महामोहे, अलं कुसलस्स पमाएणं संतिमरणं संपेहाए भेउरधम्मं संपेहाए, नालं पास अलं ते एएहिं (सू० ८४)

गुरु उत्तम शिष्यने कहे छे के—

तुं भोगोनी आशाओने तथा भोगोना अभिलाषोने छोड, धी. (बुद्धि) तेना वडे राजे. (शोभे) ते धीर पुरुष जाणवो. तेवा उत्तम शिष्यने गुरुनो उपदेश लागे छे. तेथी कहे छे के हे शिष्य ! भोगमां दुःखज छे. अने तेमां सुखनी प्राप्ति नथी. (मृगतृष्णामां जळ नथी. पण जळनो खोटो आभास छे तेम भोगोमां सुख नथी.) आ प्रमाणे शिष्यने गुरु समजावे छे. अथवा पोते आत्माने समजावे छे. के हे आत्मा तुं भोगनी आशा विगेरे शल्यने छोडीने परमशुभ संयम तेनुं सेवन कर. पण भोगोने विसरी जा कारणके जे जे पैसा विगेरेना उपायथी भोग उपभोगनी आशा छे तेना वडे मळतो नथी. एटले जेना वडे भोगो मळे तेज धन विगेरेथी कर्मनी परिणति विचित्र होवाथी धार्यां करतां उलटुं थाय छे.

अथवा गुरु महाराज कहे छे के जेना वडे कर्म बंधन थाय ते कृत्य तारे न करवुं. एटले पापना काममां न वर्तवुं अथवा जेना वडे राजना उपभोग विगेरेनो कर्म बंध छे, ते न करवुं. (एटले संयमथी राज सुख न वांच्छवुं) अथवा जे साधुपणाथी मोक्ष थाय तेज साधु जो भोगमां पडे तो मोक्षने बदले संसार भ्रमण थाय (माटे साधुए दरेक जग्याए विवेकथी वर्तवुं.)

आ प्रमाणे अनुभवथी निश्चय करेलुं छतां मोहथी हारेला जीवो सत्य वातने समजता नथी. आज हेतुनुं विचित्रपणुं छे के जे पुरुषो तीर्थंकर प्रभुना उद्देशथी रहीत छे. तेओनुं मोह तथा अज्ञान वडे अथवा मिथ्यात्वना उदयथी तत्व संबंधी ज्ञान बंधाएलुं छे. तेओ मोहनीय कर्मना उदयथी मूढ बने छे. अने तेओने स्त्रीओ भोगनुं मुख्य कारण छे, ते बतावे छे.

एटले युवान स्त्रीओना कटाक्ष अंगना चाळा सुंदर देखाव हाथना लटका विगेरेथी आ लोक (ससारी जीव समूह) आशा अने अभिलाषथी हारेला जीवो क्रूर कर्म करीने नरक विपाक फळरूप शल्यने मेळवीने ते दुर्गतिना दुःखरूप फळने विसरीने मोहथी सुमति (अंतरात्मा) ने विसरेलो प्रकर्षे करीने पीडाएलो पराजीत बने छे. एटले पोतेज परवश थाय छे. एटलुं नहीं पण बीजाओने पण वारंवार खोटो उपदेश आपीने दुर्गतिमां लइ जाय छे. ते मूढो आ प्रमाणे बोले छे. आ स्त्री विगेरे उपभोगने वास्ते आनंदमां स्थान बनावेलां छे. एना विना शरीरनी स्थिति नज थाय अने ते उपदेश तेओना दुःखना माटे थाय छे. एटले तेमना कहेवा प्रमाणे चालनारने पण शरीर तथा मनना दुःखो भोगववां पडे छे. अथवा मोहनीय कर्म बंधाय छे, अथवा ते अज्ञानी बने छे. अने वारंवार तेमने मरणनां दुःख थाय छे. नरकमां जवुं पडे छे, त्यांथी नीकळीने तिर्यंच थवुं पडे छे. आबधानो मूळ कारण स्त्रीमां मोह पामवानुं

छे. एटले सर्व भोगोमां मुख्य भोगनुं स्थान आ स्त्री छे. अने तेथीज वधां दुःख छे एम बधी जग्याए संबंध लेवो.

आ प्रमाणे स्त्रीना हावभावथी तेना अंग जोवामां रसीओ वनेलो उपर कहेली योनीओमां भमतो छतां आत्माना हितने जाणतो नथी. तथा निरंतर दुःखथी हारीने मूढ वनेलो क्षमा विगेरे दश प्रकारना लक्षणवाला साधु धर्मने जाणतो नथी. अने ते धर्म दुर्गतिना भ्रमणने रोकनार छे. तेवुं जाणतो नथी. आ तीर्थंकरे कहेलुं छे कोणे कह्युं ? ते कहे छे.

जेणे संसारनो भय विसार्यो ते वीर प्रभुए कह्युं छे. हे शिष्यो, तमारे महा मोहमां एटले स्त्रीओना हावभावमां रक्त थवुं नहीं पण सावचेत रहेवु. तेज महा मोहनुं कारण छे. एटले ते स्त्रीमां जराए पण रागी न थवुं प्रमाद न करवो. आ निपुण बुद्धिवाला शिष्यने माटे आटलुं वचन वस छे, वली मद्य, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, ए पांच प्रकारना प्रमादथी तमारे सावचेत रहेवुं कारणके ते प्रमाद उपर कहेलां दुःखो आपवाने माटेज छे.

प्रश्न—शुं आधार लइने प्रमादने छोडवो ?

उत्तर—शांति एटले शमन ते वधा कर्मनो नाश जाणवो ते मोक्ष तेज शांति छे.

प्राणीओ वारंवार चार गतिना संसारमां मरण जेना वडे पामे छे, ते संसार छे. ते शांति अने मरण ए बन्नेने विचारीने प्रमाद छोडवो. गुरु कहे छे के हे शिष्य, एक वाजु प्रमादीने वारंवार जन्म मरणनुं दुख छे. अने बीजी वाजु अप्रमादीने जन्म मरणना त्यागरूप अनंतु सुख छे ए बन्नेने कुशळ बुद्धिवाला शिष्ये विचारीने विषय कषायरूप प्रमादने न करवो.

अथवा शांतिवडे मरण एटले मरणसुधी जे फळ थाय छे ते विचारीने प्रमाद न करवो. एटले जीवतां सुधी उत्तम पुरुषे कोइपण साथे क्लेश न करवो. अने ते क्लेश प्रमादथी थाय छे माटे प्रमाद न करवो.

वळी विषय कषाय अने स्त्रीना विलासरूप जे प्रमाद छे ते शरीरना अंदर रहेलो छे. अने ते शरीर पोतानी मेळे नाश पामनारुं छे. तो तेवा नाशवंत शरीरने विचारीने साधुए प्रमाद न करवो. (जे शरीरना माटे प्रयास थाय ते शरीर नाशवंत छे. धन अहींज रहेवानुं छे.) एटले भोगो भोगववा छतां पण तृप्ति थती नथी. तेम भोगो अभिलाषने संतोष पमाडी शकता नथी. माटे हे शिष्य! तारी बुद्धिवडे जो के दुःखना कारणवाला प्रमादरूप विषयोनुं भोगववुं छे ते तृप्तिने अथवा शांतिने आपता नथी. कह्युं छे के—

"यल्लोके व्रीहियवं, हिरण्यं पशवः स्त्रीयः । नालमेकस्य तत्सर्वमिति मत्वा शमं कुरु ॥ १ ॥

आ लोकना विषे व्रीहि, जव, सोनुं, पशुओ, स्त्रीओ, विगेरे बधुं पण एक माणसनी तृप्तिना माटे समर्थ नथी एवुं समजीने तेनो मोह छोड, आत्माने शान्त कर.

उपभोगोपायपरो वांछति यः शमयितुं विषयतृष्णाम् । धावत्याक्रमितुमसौ, पुरोऽपराह्णे निजच्छायाम् ॥२॥

उपभोगना उपायमां तत्पर थएलो जे विषय तृष्णाने शान्त करवा इच्छे छे तो फरीथी आंतरे पोतानी छायामां आक्रमण करवाने ते तृष्णा तैयार रहे छे (एक इच्छा पूरी करीके बीजी तैयारज छे. तृष्णानो अंत कोइ वखत नथी) तेथी भोगना लालचुओने तेनी प्राप्तिमां के अप्राप्तिमां दुःखज छे ते बतावे छे.

एयं पस्स मुणी ! महब्भयं, नाइवाइज्ज कंचणं, एस वीरे पसंसिए जे न निव्विज्जइ, आयाणाए, न मे देइ न कुप्पिज्जा थोवं लद्धुं न खिंसए, पडिसेहिओ परिणमिज्जा एयं मोणं समणुवासिज्जासि (सू० ८५) ॥त्तिबेमि॥

गुरु सारा शिष्यने कहे छे के हे मुनि ! भोगनी आशारूप महा तापथी घेरायेला पुरुषने कामदशानी अवस्थाना मोटा भयने तुं प्रत्यक्ष जो, कामीने डगले डगले बीजानो भय छे. तेथी मोटो भय तेज दुःख छे. अने भोग लंपटोने मरणनुं कारण छे. तेथी ते मोटो भय कह्यो, तेथी हे शिष्य! आ लोक अने परलोकमां भय आपनार भोगोने जाण, तेथी शिष्ये शुं करवुं ते गुरु कहे छे.

माटे तुं ते भोगोथी तारा आत्माने दुर्गतिमां न नाखीश, तुं कोइ जीवोने दुःख न आपीश. तेज प्रमाणे बीजा कोइने जुठुं बोली न फसावीश तेम चोरी पण न करीश विगेरे पांचे पापोने त्यजजे.

जे भोगथी दूर रहे छे अने जीव हिंसाथी दूर रहे छे. ते महात्माने शुं गुण थाय छे ते बतावे छे. ते भोगोनी आशा अभिलाषा त्यागनार अप्रमादि साधु पंच महाव्रतना भारथी पोतानो स्कंध नमावेलो अनेक कर्म विदारण करवाथी वीर पुरुष इंद्र विगेरेथी स्तुति कराय छे.

प्रश्न—क्या पुरुषनी स्तुति थाय छे ?

उत्तर—जे महात्मा आत्माने ग्रहण करवा योग्य तत्वने ग्रहण करे छे एटले वधां घातीकर्म क्षय थवाथी बधी वस्तुनो प्रकाश करनार केवळज्ञान तेने प्रकट थवाथी अव्याबाध सुख मळे छे. ते ज्ञान मळवानुं मुख्य कारण संयमनुं अनुष्ठान छे. तेमां दोष ल-

गाडतो नथी. अथवा रेतीना कोळीआ खावा मुश्केल छे तेवुं संयम पाळवुं कठण छे छतां पाळे छे. एटले कोइ वखत गोचरी न मळे तोपण साधु संयमने मूके नहिं तेम मनमां दिनता पण न लावे.

अथवा आ गृहस्थ पोतानी पासे वस्तु छे छतां मने आपतो नथी. एवुं मानीने तेना उपर क्रोध न लावे. परंतु मुनिए एम मानवुं के आ मने अंतराय कर्मनो दोष छे. अने न मळवाथी तपनो लाभ थशे तेथी मने कांइपण नुकसान नथी. अथवा थोडुं आपे अथवा तुच्छ खोराक आपे तोपण दान आपनारने निंदे नही.

कोइ गृहस्थ ना पाडे तो त्यांथी रीसाया विना खसी जवुं. एकक्षण मात्र पण हठ लइ उभा न रहेवुं. अथवा दान आपनारी बाइने कटु वचन न कहेवां जेमके तारा गृहस्थावासने धिक्कार छे ?

"दिट्ठाऽसि कसेरुमई ! अणुभूयासि कसेरुमइ !। पीय चिय ते पाणिययं वरि तुह नाम न दंसणं ॥१॥"

हे उदार बुद्धिवाली स्त्री ! तने जोइ ! हे उदार बुद्धिवाली ! तारो अनुभव कर्यो ! तारुं पाणी पीधुंज ! तारुं नाम सारुं ! आटलुं बधुं छतां पण तारुं दर्शन सारुं नथी. (आवुं साधुए बोलवुं नहि.)

कदाच ते आपेतो लइने रस्तो पकडवो. पण त्यां उभा रहीने नीचा उचा वचन वडे तेनी स्तुति निंदा न करवी. अर्थात् भाटनी माफक तेनां खोटां गीतडां न गावां. आ बधानो सार कहे छे.

आ प्रव्रज्याना निर्वेदरूप (शांतिथी) दातार उपर न आपे तो पण कोप न करवो, थोडुं आपे तो निंदा न करवी. आपे तो ल-

इने चालता थवुं. आ मुनिनुं मौन छे. एटले मोक्षार्थि साधुनुं आ आचरण छे. तुं पण अनेक भव कोटिने भ्रमण करतां अमूल्य एवा संयमने पामीने सारी रीते पाळजे, आम गुरु शिष्यने समजावे छे. अथवा पोताना आत्माने उपदेश आपे छे. के तुं राग द्वेष न करजे.

चोथो उद्देशो समाप्त थयो.



हवे पांचमो उद्देशो कहे छे. तेनो आ संबंध छे आ लोकमां भोगोने तजीने संयम देह पाळवाने माटे लोकनी निश्राए विहार करवो जोइए. ते आ उद्देशामां बतावे छे.

आ लोकमां संसारथी खेद पामेला भोगना अभिलाष तजेला मोक्षाभिलाषिए पोतानामां गुरुए स्थापन करेला पंच महाव्रत भार वडे निर्विघ्न अनुष्ठान करनारा मुनिए दीर्घ संयमनी यात्रा माटे देहनुं परिपालन करवा लोकनी निश्राए विहार करवो जोइए, कारण के आश्रय विना देहनां साधन क्यांथी थाय ? अने देह विना धर्म क्याथी थाय ? कह्युं छे के—

"धर्म्मं चरतः साधोर्लोके निश्रापदानि पञ्चापि । राजा गृहपतिरपरः षट्काया गणःशरीरे च ॥१॥"

धर्ममां चालनारा साधुने लोकमां पांच निश्रानां पद छे, राजा गृहस्थ छकाय साधु समूह तथा शरीर ए पांच जाणवां वस्त्र, पात्र, अन्न, आसन, शयन, विगेरे साधनो छे. तेमां पण प्रायः निरंतर आहारनो मुख्य उपयोग छे. अने ते आहार गृहस्थ पासेथीज लेवानो छे. अने गृहस्थो जुदा जुदा उपायो वडे, पोताना पुत्र स्त्री विगेरे माटे आरंभमां प्रवर्तेला छे, तेमने त्यां साधुए संयम देहनी

रक्षामाटे निर्वाह करवा जोइती वस्तु शोधवी जोइए. ते बतावे छे–

जमिणं विरुवरूवेहिं, सत्थेहिं लोगस्स 'कम्मसमारंभा' कज्जंति, तंजहा–अप्पणो से पुत्ताणं, धूयाणं सुण्हाणं नाईणं, धाईणं राईणं दासाणं दासीणं कम्मकराणं कम्मकरीणं आएसाए पुढोपहेणाए सामासाए पायरासाए संनिहि संनिचओ कज्जई, इहमेगेसिं माणवाणं भोयणाए (सू० ८६)

तत्वने जाणनारा पुरुषो सुख मेळववा तथा दुःख छोडवा माटे जुदांजुदां शस्त्रो जे प्राणीओने दुःख आपनारां छे, ते द्रव्य अने भावथी बे प्रकारनां बताव्यां छे, तेनावडे पोतानुं शरीर पुत्र दीकरी छोकरानी वहु ज्ञाती विगेरेना निर्वाह माटे कर्मना समारंभो करे छे, ते बतावे छे.

सुख मेळववुं, दुःख छोडवुं, तेना माटे कायाथी अधिकरणवडे, अथवा द्वेषथी, परिताप उपजाववावडे, अथवा जीवथी शरीर दूर करवावाली पांच पापनी क्रियाओ छे, अथवा खेतीवाडी व्यापार विगेरे कर्मना समारंभो छे, ते लोको करे छे.

आ समारंभ शब्द लेवाथी "संरंभ." तथा आरंभ पण जाणी लेवा एटले शरीर अने स्त्री माटे लोको संरंभ समारंभ अने आरंभो करे छे.

संरंभनुं वर्णन—इष्ट प्राप्ति अनिष्ट छोडवुं. तेने माटे प्राणातिपात विगेरे, संकल्पनो आवेश जाणवो.

समारंभनुं वर्णन–संकल्प कर्या पछी तेनां साधन भेगां करवां, तथा काया अने वचनना वेपारथी बीजाने परिताप विगेरेना लक्षणवालो छे.

आरंभनुं वर्णन—त्रण दंड (मन वचन काया) ना व्यापारथी मेळवेली तथा उपयोगमां लीधेली जीव हिंसा विगेरेनी क्रिया चालु करवी, ते आरंभ छे, अथवा आठ प्रकारना कर्मना समारंभ, एटले जोइती वस्तुने मेळववाना उपायो करवा ते.

सूत्रमां लोक शब्द छे, ते लोक क्यो छे, के जेना वडे आरंभो कराय छे ? ते बतावे छे.

आत्मा शरीरथी जोडाएलो छे, ते शरीर निभाववा लोको आरंभ करे छे, तेज प्रमाणे पुत्र दीकरी विगेरे माटे पण आरंभ कराय छे, एटले रसोइ विगेरे बनाववी पडे छे. तेवी रीते बीजा आरंभो पण करवा पडे छे एवुं पूर्वे कह्युं छे.

प्रश्न—शरीर लोकशब्दना अर्थमां केवीरीते घटे. ?

उत्तर—तमारुं कहेवुं बराबर नथी, कारण के परमार्थ दृष्टिथी जोनाराओने ज्ञान दर्शन चारित्ररूप अत्मतत्वने छोडीने बाकीनुं शरीर विगेरे पण पारकुंज छे, कह्युं छे के—बहारना पुद्गळनुं बनेलुं अचेतनरूप कर्मनुं विपाकरूप पांचे शरीरो छे. तेथी शरीर आत्म पण लोक शब्दवडे बताव्यो, तेथी कोइ शरीर माटे पापक्रियाओ करे छे, बीजो कोइ दीकरा दीकरी माटे, तो कोइ दीकरानी वहुने माटे तो कोइ न्यात माटे, तेज प्रमाणे संबंधथी जोडाएलां सगां, धाव माता माटे, राजा माटे दास दासी माटे नोकर नोकरडी माटे आरंभ करे छे, कोइ परोणा माटे करे छे, कोइ जुदा जुदा पुत्र विगेरेने प्रहेणक माटे करे छे, कोइ रात्रिमां खावा रांधे छे. कोइ प्रभातमां खावा रांधे छे, ते आ बधामां कर्म समारंभ छे, वळी विशेष कहे छे—

जल्दी नाश पामे तेवी वस्तुओने राखी मूके छे, दहीं भात मेळवी राखे छे, तथा घणो काळ रही शके तेवी वस्तुओनो संचय पण करे छे, ते बाल हरडे, साकर द्राक्ष, बिगेरेने संघरे छे, आ बधु परिग्रह विगेरे आजीविकाना कारणे छे, अथवा धनधान्य सोनुं विगेरेनो संग्रह करे छे. आ बधुं शा माटे करे छे ते कहे छेः—

आ लोकमां परमार्थ बुद्धिवाळा मुनिओने जमाडवा माटे करे छे, एटले कोइ स्वार्थ माटे, तथा कोइ परमार्थ माटे रात्रिमां, प्रभातमां के दिवसमां भोजन माटे के, निर्वाह माटे संसारी–पापक्रियाओ करे छे, अने विरूप शस्त्रोवडे बीजां जीवोने पीडा करे छे. आ प्रमाणे लोकनी स्थिति होय; तो, साधुए शुं करवुं ते कहे छेः—

समुट्ठिए अणगारे आरिए आरियपन्ने आरियदंसी अयंसंधित्ति अदक्खु, से नाईए नाइयावए न समणुजाणइ, सव्वामगंधं परिन्नाय निरामगंधो परिव्वए (सू० ८७)

जे साधु सम्यक् रीते निरंतर संयम अनुष्ठानवडे वर्ते छे, ते जुदां जुदां शस्त्रोवडे थती पापक्रियाथी मुक्त थयलो छे, ते मुनिने घर नथी; तेम ममत्त्व पण नथी; तेथी ते अनगार छे, तेम तेने गृहस्थनी माफक दीकरा–दीकरी वहु विगेरेने पण पोषवां नथी. ते अनगार पोते बधां पापकर्मोथी दूर थयेल छे, तेथी ते आर्य छे, तेथी ते चारित्रने पाळवा योग्य छे. वळी जेनी बुद्धि उत्तम छे, ते आर्य प्रज्ञावाळो जाणवो; एटले सूत्र भण्याथी; जेनी बुद्धि परमार्थमां खीलेली छे, तथा न्यायमां मन रहेलुं होवाथी ते न्यायने जुए तेथी ते आर्यदर्शी छे, एटले ते जुदा “ प्रहेणक ‘ श्यामा ’ अशन ” (पूर्वे परोणा विगेरे माटे राते रांधवुं; विगेरे तेनाथी मुक्त)

छे, तथा पोते " अयंसधि " छे, एटले पोतानां दरेक कार्य योग्यवखते करनारो छे. ज्यारे जे करवुं होय; ते प्रमाणे करे छे. कपडां जोवां; ध्यान राखवुं; सिद्धांत भणवो; गोचरी जवुं; प्रतिक्रमण करवुं. विगेरे दरेक क्रिया एकवीजाने 'बाधा' विना समये समये करे छे, तेज परमार्थने जोनारो जाणवो. तथा ते मुनि " अदक्खु " छे, एटले जे आर्य छे, आर्यबुद्धिवाळो छे. आर्यदर्शी छे, काळने जाणनारो छे, तेज परमार्थने जाणनारो जाणवो. वीजी प्रतिमां सूत्रपाठमां भेद छे, ते,

अयं संधिमदक्खु छे—

तेनो अर्थ कहे छेः—पूर्वे बतावेलां उत्तम विशेषणवाळो साधु कर्त्तव्यकाळने जाणे छे, एटले जे परस्पर हित–अहित मेळववुं, छोडवुं; विगेरे क्रियाने बाधा न करतां; प्रथम अवसरने जाणे छे, अने ते प्रमाणे करे छे. ते परमार्थने जाणनारो छे.

भावसंधि—ज्ञान दर्शन अने चारित्र तेनी वृद्धि शरीर विना न थाय, अने शरीरनो निर्वाह आहारना कारण विना न थाय, अने तेमां पण सावद्यनो त्याग करवानो छे. तेथी ते भिक्षुक जे उत्तम साधु छे, ते पोते दोषित आहारने ग्रहण न करे तेम बीजा पासे लेवडावे नहीं, अथवा कोइ लेतो होय तेने अनुमोदे नहीं, अथवा इंगाल दोष, अथवा धुम दोष, न लगाडे, एटले सारा आहारनी स्तुति न करे, तेम खराब आहारनी निंदा पण न करे, तेज प्रमाणे बीजा पासे तेवा दोषो न लागवा दे, तथा तेवा निंदा स्तुति करनारानी प्रशंसा पण न करे, तथा आम गंधने छोडे एटले अशुद्ध आहार वडे दोष न लगाडवो जोइए.

शंका–पूति शब्दनो अर्थ अशुद्ध छे, तो आम शब्द शा माटे वापर्यो ?

उत्तर—अशुद्ध ते सामान्य शब्द छे, अने पूति शब्द लेवाथी अहीं आधाकर्म विगेरेनी अशुद्ध कोटि पण वतावी, अने तेनो मोटो दोष होवाथी तेनुं प्रधानपणुं वतावत्रा फरी कह्युं छे, तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे. गंध शब्द लेवाथी (१) आधाकर्म (२) औद्देशिकत्रिक (३) पूति कर्म (४) मिश्र (५) वादर प्राभृतिका (६) अध्यय पूर्वक एम छ प्रकारना उद्गम दोष अविशुध्ध कोटिनी अंदर रहेला छे, अने बाकीना विशुध्धकोटिमां छे ते आम शब्दवडे बताव्या छे, तथा सूत्रमां सर्व शब्द छे, ते बधा प्रकारोने सूचवे छे, तेथी एम जाणवुं के, कोइपण प्रकारे अपरिशुध्ध, अथवा पूति होय; तो, ते दोषित भोजन विगेरे ज्ञ—परिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान, परिज्ञावडे निरामगंधवाळो बने; एटले निर्दोष भोजन विगेरे लेनारो वर्ते; बने; तेथी पोते ज्ञान दर्शन—चारित्र नामना मोक्षमार्गमां सारीरीते वर्ते; अने संयम अनुष्ठानने पाळे.

आम शब्द ग्रहण करवाथी खरीद करेलुं साधुने न कल्पे; छतां, अल्पसत्त्ववाळा साधुने ओछुं समजाय; तेथी विशुध्धकोटिमां रहेल व्रतदोष छे, एम जाणीने ते ले, तेवी तेनी वृत्ति, न थाओ; ते माटे फरीथी तेनुं नाम लइने निषेध करे छे. साधु माटे वेचातुं आणेलुं; पण साधुए न लेवुं ते बतावे छेः—

अदिस्समाणे कयविक्कयेसु, से ण: किणे न किणावए, किणंतं न समणुजाणइ, से भिक्खू कालन्ने बालन्ने मायन्ने खेयन्ने खणयन्ने विणयन्ने ससमयपरसमयन्ने भावन्ने परिग्गहं अममायमाणे कालाणुट्ठाई अपडिण्णे (सू० ८८)

लेवुं, वेचवुं, ते क्रय–विक्रय छे. ते पोते तेनाथी अदृश्य रहे; अर्थात् पोते साधु माटे खरीद करेली वस्तुने भोगवे नहि; एटले मोक्षवांच्छक साधु कर्म ऊपकरणोने पण खरीद न करे; बीजा पासे न करावे; तेम खरीद करनारने प्रशंसे पण नहि; अथवा निरामगंधवाळो बनी साधुपणुं पाळे. अहीयां पण आम शब्द ग्रहण करवाथी हननकोटिनी त्रिक छे, तथा गंध ग्रहणवडे पचनत्रिक लेवी; तथा क्रयणकोटित्रिक ते पोतानां स्वरूप बतावनारा शब्दवडे लीधी छे, एथी नवकोटि परिशुद्ध आहारने अंगार धूमदोषरहित साधु 'भोजन' करे अथवा वस्तुने भोगवे.

ए गुणथी उत्तम साधु केवो होय ते कहे छे, ते भिक्षुक (साधु) समयनो जाण होय छे. तथा बळने जाणनारो छे, एटले पोतानी शरीरशक्ति विचारीने ते प्रमाणे धर्मक्रिया करे छे, पण बळने छुपावी राखतो नथी. करवाना काममां प्रमाद करतो नथी, तथा पोताने केटली वस्तु जोइशे, तेने जाणनारो छे. ते "मात्रज्ञ" कहेवाय छे. तथा 'खेद' ते अभ्यास तेनावडे जाणनारो छे. अथवा खेद एटले 'श्रम' के, संसारना भ्रमणमां आटलुं दुःख छे, तेने जाणे छे. कह्युं छे के—

"जरामरणदौर्गत्यव्याधयस्तावदासताम् । मन्ये जन्मैव धीरस्य, भूयो भूयस्त्रपाकरम्" ॥१॥

जरा (बुढ्ढापो) मरण, दुर्गति, रोग, आ मोटी पीडा 'तो' 'दूर' रहो, पण धीर पुरुषने विचारतां मालुम पडशे के, जन्म वारे वारे लेवो, ते जन्म वखतनी अवस्था पण निंदनीक छे, एवुं हुं मानुं छुं.

अथवा क्षेत्रज्ञ शब्द लइए तो संसक्त (रागनुं कारण) विरुद्ध द्रव्य, परिहार्य, (तजवा योग्य) कुळ विगेरे क्षेत्रनुं स्वरूप जाणनारो

एटले आ जग्याए जवाथी राग थशे, आ जग्याए जवाथी द्वेष थशे, अमुक जग्याएथी अमुक वस्तु मळशे; आवां भ्रष्ट क्षेत्रमां गोचरी लेवा योग्य नथी. विगेरे स्थिति जाणनार तथा "खण यन्न" एटले क्षण (अवसर) एटले अमुक वखते गोचरी जवुं ते जाणनारो मुनि होय छे, तथा ज्ञान दर्शन चारित्रने योग्य रीते पाळवां, ते 'विनय' छे, तेने जाणनारो छे. तथा जैन तथा अन्य मतोना तत्वने जाणनारो छे. एटले पोताना सिद्धांतनो जाण होवाथी गोचरी विगेरेमां गएलो सुखेथी गोचरीना दोषोने जाणे छे. ते दोषो नीचे मुजब छे.

सोळ उद्गम दोषो कहे छे—

१ आधाकर्मी (साधुना माटे रांधेलुं) २ औद्देशिक (अमुक मुनि माटे अमुक भोजन बनावेलुं) ३ पूतिकर्म (निर्दोष अन्नने आधाकर्म साथे मेळववुं) ४ मिश्र (साधु तथा पोताना माटे भेगु बनावेलुं) ५ स्थापना [साधुना माटे राखी मुकेलुं] ६ प्राभृतिका [साधुना माटे वहेलुं मोडुं कार्य करवुं] ७ प्रकाशकरणं [अंधारमांथी अजवाळे बहार लावे. अथवा दीवी विगेरे करे ते. ८ क्रीत [वेचातुं लावेलुं.] ९ उद्यतक [उधारे लावीने आपवुं ते.] १० परिवर्त्तित [बदली करीने लावे ते.] ११ अभ्याहृत (सामे लावीने आपवुं.) १२ उद् भिन्न (लाख विगेरे शील तोडीने आपवुं.) १३ मालापहृत (उपरथी नीचे लावीने आपवुं.) १४ अछेद्य (जोर जुलम करी बीजा पासेथी लइने आपवुं) १५ अनिसृष्ट [घणाओनी भेगी रसोइमांथी वगर रजाए एक माणस आपे ते.] १६ अध्यव पूर्वक [साधुने आवता जाणीने तेमना माटे पूर्व रंधाता अनाजमां थोडुं उमेरे ते.] आ उपरना सोळ दोषो वोहोरावनार तरफथी साधुने लागे छे.

सोळ उत्पाद दोषो कहे छे—

१ धात्रीपिंड. [गृहस्थना छोकराने रमाडीने साधु ले ते.] २ दूतीपिंड–परदेशना समाचार आपीने गोजरी ले ते. ३ निमित्त-पिंड [ज्यीतिषथी समजावी गोचरी ले.] ४ आजीवपिंड [पोतानो पहेलांनी अवस्था बतावी गोचरी ले ते.) ५ वनीपकपिंड (जैनेतर पासे तेनो गुरु बनी गोचरी ले ते.) ६ चिकित्सापिंड (दवा करीने गोचरी ले ते.) ७ क्रोधपिंड (धमकावीने गोचरी ले ते.) ८ मानपिंड (पोतानी उंच जाति विगेरे बतावीने गोचरी ले ते.) ९ मायापिंड (वेष बदलीने गोचरी ले ते.) १० लोभपिंड (स्वादिष्ट भोजन माटे वारंवार ते जग्याए गोचरी लेवा जाय ते.) ११ पूर्व स्तवपिंड (पहेलांना सगपणनो परिचय कराववो) १२ पश्चात् संस्तवपिंड (तेना संबंधीना गुण गाइने गोचरी ले ते.) १३ विद्यापिंड छोकरा भणावीने गोचरी ले ते. १४ मंत्रपिंड कामण टुमणना मंत्र बतावीने गोचरी लेवी ते. १५ चुर्णयोगपिंड–वास क्षेप विगेरे मंत्री आपीने गोचरी ले ते. १६ मूळ कर्मपिंड–गर्भ रहेवा संबंधी उपाय विगेरे बतावीने गोचरीले ते. आ उपरना सोळ दोषो गोचरी लेनार साधुने पोताने लीधे थाय छे.

दश एषणा दोषो आपनार लेनारना भेगा थवाथी बने ते कहे छे.

१ शंकित–अशुद्ध आहारनी शंका छतां लेवुं ते २ म्रक्षित–अशुद्ध वस्तुथी खरडाएला हाथे लेवुं ते. ३ निक्षिप्त–सचित्त वस्तुमां पडेली अचित्त वस्तु मुकेली लेवी ते. ४ पिहित–अचित्त वस्तु उपर सचित्त वस्तु ढांकेली होय ने अचित्त वस्तु ले तो तेनो पण दोष लागे ५ संहृत–बीजा वासणमां नाखीने आपे ते. ६ दायक–आपनारने भान न होय ते ले ते. ७ मिश्र–सचित्तमां अचित्त वस्तु मेळवीने आपे ते. ८ अपरिणत–अचित्त थया विनानी वस्तु आपे ते. ९ लिप्त. लीट–बळखा विगेरे गंदा हाथथी आपे ते. १० ऊज्झित–

छांटा पाडती आपे ते. उपरना दश दोषो लेनार तथा आपनार, बन्नेना भेगा थाय छे.

पर समयज्ञ होवाथी ऊनाळाना बपोरे खरा तडकाना तापमां तपेला सूरजथी परसेवाना 'बिंदु टपकता साधुना मेला शरीरने जोइ कोइ अन्य गृहस्थे पूछ्युं के, भाइ तमारामां बधा माणसोए उचित्त मानेलुं स्नान शामाटे नथी करता ? त्यारे साधुए जवाब आप्यो के, हे बंधु! सर्व साधुओने जळनुं स्नान छे. ते काम 'स्त्रीनो अभिलाष' तेनुं एक अंग छे. तेथी निषेध कर्यो छे ते सांभळोः–

"स्नानं मदद्र्पकरं, कामाङ्गं प्रथमं स्मृतम्। तस्मात्कामं परित्यज्य, नैव स्नान्ति दमे रताः ॥१॥"

स्नान मदनो दर्प करावनार छे, तथा कामनुं पहेलुं अंग छे. माटे कामने छोडनारा ब्रह्मचारी, अने दमनमां रक्त थयेला छे तेओ स्नान करता नथी. आ प्रमाणे स्व अने परसिद्धांतने जाणनारो परने उत्तर आपवामां कुशळ होय छे, तथा भावज्ञ एटले, चित्तना अभिप्रायने जाणनारो छे के आ 'दान' आपनार के, व्याख्यान सांभळनारनो आवो अभिप्राय छे. वळी परिग्रह ते, संयममां जोइतां ऊपकरणथी वधारे छे, ते न ले, अने लेवानी पण मनमां इच्छा न राखे; तेवा साधु काळज्ञ, बळज्ञ, मात्रज्ञ, क्षेत्रज्ञ, खेदज्ञ, क्षणज्ञ, विनयज्ञ, समयज्ञ, भावज्ञ; होय ते परिग्रहने ग्रहण न करतो योग्यसमये योग्यक्रियानो करनारो बने छे.

शंका—पूर्वे 'काळज्ञ' शब्दमां ते वात आवी छे, अने अहीं फरीथी केम कहो छो ?

उत्तरः—त्यां ज्ञपरिज्ञावडे जाणवानुं छे, अने अहींयां कर्तव्य करवानुं छे.

वळी कोइपण जातनुं नियाणुं न करे; ते अप्रतिज्ञ छे. जेमके, क्रोधना कारणे स्कंदक आचार्ये पोताना शिष्योने घाणीमां पीलेला

जोइने प्रतिज्ञा करी के, जो मारुं 'तप-तेज' होय; तो, बीजा भवमां लश्कर, वाहन, राजधानीसहित पुरोहित, जेणे मने दुःख दीधुं छे, ते बधानो नाश करीश. ते प्रमाणे पाछळथी देवता थइने नाश कर्यो, तेज प्रमाणे मानना उदयथी बाहुबळीए प्रतिज्ञा करी के, प्रथम दिक्षा लीधेला नाना भाइओने हुं केवीरीते नमस्कार करुं. कारण के तेओ केवळज्ञानी थया छे, अने हुं छदमस्थ ज्ञानवाळो छुं. तेज प्रमाणे कपटना उदयथी मल्लिस्वामीना जीवे पूर्व भवमां वधारे उंचुं पद लेवा बीजा मित्र साधुओने ठगवा माटे कर्युं हतुं, एटले पेला मित्रोने खवडावीने पोते उपवास करेल हता ते, तथा लोभना उदयथी परमार्थ न जाणनारा वर्तमाननो लाभ जोनार यतिनो बेश राखनारा मास क्षपण (महीना महीनाना उपवास) करनारा छतां प्रतिज्ञा (नियाणुं) करे छे, (अर्थात् क्रोध, मान, मायाना लोभथी चारित्र भ्रष्ट न करवुं. ते बताव्युं छे)

अथवा वसुदेव माफक संयमनुं अनुष्ठान करतो नियाणुं न करे के हुं आवता भवमां आवा भोग भोगवनारो थाउं अथवा गोचरी विगेरेमां गएलो एवी प्रतिज्ञा न करे के मने आवीज गोचरी मळवी जोइए, अथवा जैन मतमां स्याद्वाद् प्रधान होवाथी जिन वचनमां एकांत पक्ष ग्रहण न करे, ते अप्रतिज्ञ जाणवो, जेम के मैथुन विषय छोडीने कोइपण जग्याए कोइपण नियमवाली प्रतिज्ञा न करवी जेथी कह्युं छे केः—

"न य किंचि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वावि जिणवरिंदेहिं । मोत्तुं मेहुणभावं न तं विणा रागदोसेहिं ॥१॥"

जिनेश्वरे कंइपण कल्पनीयनी आज्ञा आपी नथी. अने कारण वडे कोइपण जातनो निषेध पण कर्यो नथी; पण तीर्थंकरोनी आ

निश्चय व्हेवार 'बे' नयने आश्रयी सम्यक् आज्ञा मानवी के ज्ञानादि आलंबन 'ना' कार्यमां सत्यवडे सारां स्वभाववाळा साधुए थवुं; पण कपटथी कंइपण खोटो आश्रय न लेवो.

तात्त्वीकज्ञान विगेरेना आलंबननी सिद्धिथीज मोक्षमार्गनी सिद्धिवाळा बाह्य अनुष्ठाननी सिद्धि छे, कारणके, बाह्यअनुष्ठानमां अनेकांतवाद, अने अत्यंतिपणुं न होवाथी समजवुं. आज प्रमाणे करवाथी द्रव्यत्त्वनी सिद्धि थाय छे, अथवा सत्य नाम संयमनुं छे, तेनावडे कार्य उत्पन्न थतां तेम नेम वर्तवुं; अने तेनुं उत्सर्पण (वधवुं.) पण शक्तिने छुपाव्या विना निर्वाह करवो. अर्थात् शक्ति प्रमाणे संयम पाळवामां उद्यम करवो आना संबंधमां वृहत्भाष्यकार कहे छेः—

"कज्जं नाणादीयं सच्चं पुण होइ संजमो णियमा । जह जह सोहेइ चरणं, तह तह कायव्वयं होइ ॥१॥"

ज्ञानादि कार्य ते सत्य ते; संयम छे, माटे जेम जेम चरण (चारित्र) निर्मळ रहे; तेम वर्त्तन करवुं.

(उपर बतावेल टीकानां टीपणमां लीधुं छे,) पण टीकानी गाथानो अर्थ नीचे मुजब छे. जिनेश्वरे मैथुन (स्त्रीसंग) छोडीने बाकीनुं जे कंइ कर्त्तव्य छे, तेमां कोइपण वातनी एकांत आज्ञा करवानी आपी नथी; तेम न करवानो निषेध पण कर्यो नथी. एटले साधु शुद्ध बुद्धिए ज्ञानदर्शन–चारित्रनी वृद्धि माटे उपदेश आपे; अने पोते वर्ते. फक्त रागद्वेष विना स्त्रीसंग थाय नहीं; माटे तेनोज निषेध कर्यो छे.

":दोसा जेण निरुज्झंति जेण जिज्झंति पुव्वकम्माइं । सो सो मुख्खोवाओ. रोगावत्थासु समणं व ॥२॥"

जेनावडे दोषो दूर थाय अथवा न थाय; अने जेनावडे पूर्वनां कर्म क्षय थाय; ते ते मोक्षनो उपाय, एटले अनुष्ठान साधुए करवां. जेमके रोगमां ऊचित्त औषध आपवावडे, तथा पथ्य–भोजनवडे रोगनी शांति करे छे, तेज प्रमाणे साधुए उत्सर्ग–अपवादने आचरवां; पण रागद्वेष न करवा अने कर्मो खपाववां.

वळी कोइ वखत, तेज औषध उपयोगी होय छे, तेम कोइ वखत, अनुपयोगी पण छे, तेथी जरुर पडता अपाय तेज प्रमाणे साधुनां अनुष्ठानमां पण समजवानुं छे. नीचे टीपणमां लख्युं छे केः—

" उत्पद्यते हि साऽवस्था, देशकालामयान् प्रति । यस्यामकार्यं कार्यं स्यात् कर्मकार्यं च वर्जये ॥१॥ "

ते अवस्था देशकाळना रोगप्रत्ये छे. के जेमां, अकार्य ते कार्य थाय; अने कार्य ते अकार्य थाय; माटे देश, अने काळ विचारी रोगने वैद्ये औषध आपवुं.

"जे जत्तिया उ हेउ भवस्स ते चेव तत्तिया मुक्खे । गणणाइया लोया दुण्हवि पुण्णा भवे तुल्ला ॥२॥"

जेटला हेतुओ भ्रमणना छे, तेटलाज हेतुओ मोक्षना पण छे, अने ते गणत्रीए गणाय तेवा नथी; पण बन्ने बराबर छे. आ बधानो परमार्थ ए छे के साधुए रागद्वेष कर्या विना पोतानी शक्तिने अनुसार एकांत न पकडतां ज्ञानदर्शन–चारित्र्यनी आराधना करवी.

उपर प्रमाणे "अयंसंधि" त्यांथी लइने "काले अणुट्ठाइ" सुधी अगीआर पिंडेषणा बतावी छे. आ प्रमाणे होय तो प्रश्न थाय छे, अप्रतिज्ञावाळो आ सूत्रवडे एम सिद्ध थयु के कोइए क्यांय पण प्रतिज्ञा न करवी, त्यारे शास्त्रमां आवे छे के जुदा जुदा अभि-

ग्रहो करवा तेथी शुं समजवुं ?

आचार्यनो उत्तर—सूत्रमां आपेल छे के—

दुहओ छेत्ता नियाइ, वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं, उग्गहणं च कडासणं एएसु चेव जाणिज्जा (सू० ८९)

राग अने द्वेष वडे जे प्रतिज्ञा थाय छे, तेने छेदीने निश्चयथी जे करे ते नियाति एटले ज्ञान, दर्शन, चारित्र, नामनोज मोक्ष मार्ग छे, तेमां अथवा संयम अनुष्ठानमां अथवा भिक्षादिमां प्रतिज्ञा करे, एटले राग द्वेष विनानी प्रतिज्ञा गुणवाली छे. अने राग द्वेशवाली प्रतिज्ञा दुःखदाइ छे, हवे ते साधु उपरना गुणवालो राग द्वेषने छेदीने शुं करे ते कहे छे. पोते जोइतां वस्त्र, पात्र, कंबल, पादपुंछन विगेरे निर्दोष जाणीने ले, तेनी विधि बतावे छे.

पूर्वे कह्या मुजब जे गृहस्थो पोताना पुत्र विगेरे माटे आरंभमां वर्तेला छे. तथा पोताने जोइती वस्तुनो संग्रह करनारा छे, तेमने त्यां जइ लेवा योग्य वस्तुनी तपास करे एटले शुद्ध ने ले. अने दोषितने छोडी दे ते केवी रीते जाणे ते कहे छे.
वस्त्र शब्द लेवाथी वस्त्रनी एषणा (शुद्धि) बतावी अने पात्र शब्द लेवाथी पातरांनी शुद्धि बतावी. कंबल शब्दथी आविक पातरानो नियोग गुच्छा विगेरे बताव्या, तथा सवार सांज के रातना कारण विशेषे खुल्लामां नीकळवुं पडे. तो ओढवानी कामळ पण सूचवी तेज प्रमाणे पाद पुंछन ते रजोहरण (ओघो) जाणवो, आ सूत्रोथी ओघ उपधि अने उपग्रहीक उपधि बतावी तेज प्रमाणे वस्त्र एषणा तथा पात्रेपणा पण सूचवी.

अवग्रह कहे छे—

जेनी आज्ञा लइने क्षेत्रमां फराय; ते अवग्रह छे. ते पांच प्रकारे छे. (१) इंद्रनो अवग्रह (२) राजानो अवग्रह (३) गामना मालीक पटेल विगेरेनो अवग्रह (४) घरवालानो अवग्रह (५) प्रथम उतरेला साधुनो अवग्रह आ प्रमाणे अवग्रहनी वधी प्रतिमाओ सूचवी; तेथी तेनुं पण समर्थन कर्युं, अने अवग्रहना कल्पनुं वर्णन आ सूत्रमां कहे छे—

कटासण कहे छे—

कट शब्दथी संथारो जाणवो. अने आसन शब्दथी आसंदक विगेरे बेसवानां आसन जाणवां, जेनामां वेसाय ते आसन छे. अने तेज शय्या छे. तेथी आसन शब्दथी शय्या पण जाणवी, तेनुं स्वरूप कह्युं. उपर वतावेल साधुने उपयोगी सर्व वस्तु वस्त्र विगेरे तथा आहार विगेरे आरंभ करनारा ग्रहस्थ पासेथी मळता जाणवा अने तेमां आमगंध(दोषित) छोडीने निर्दोष जेम मले तेम वर्ते

प्रश्न—आवीरीते गृहस्थोने त्यां जतां जे मले, ते ले के तेनी कंइ हद छे ? ते वतावे छे.

लद्धे आहारे अणगारो मायं जाणिज्जा, से जहेयं भगवया पवेईयं लाभुत्ति न मज्जिज्जा अलाभुत्ति न सोइज्जा, बहुंपि लद्धुं न निहे, परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्किज्जा (सू० ९०)

साधुने आहार मलतां विचारे के हुं लइश, तो पछी मारे खातर नवो आरंभ गृहस्थने करवो पडशे के नही तेवुं विचारीने ले, के जेथी नवो आरंभ न करवो पडे; तेवीजरीते वस्त्र—औषध विगेरेमां पण जाणी लेवुं; तथा नवो आरंभ न करवो पडे; पण

पोताने वधारे पण न आवे; ते ध्यानमां राखीने ले, आ हुं मारी बुद्धिथी नथी कहेतो; परंतु जिनेश्वरे आ उद्देशाथी मांडीने हवेपछीनुं बधुंए बतावेलुं छे ते कहे छेः—

ते जिनेश्वर चोत्रीस अतिशययुक्त केवळ ज्ञानीए अर्धमागधी भाषामां कह्युं छे, अने बधी भाषावाळाजाणे, तेवा शब्दोमां देवता–मनुष्यनी सभामां कह्युं. आवुं सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छेः—

तथा वस्तु मळतां मने वस्त्र–आहारनो लाभ थयो. हुं लब्धिमान छुं, एवो अहंकार न करेः तेम याचवा छतां मळे तो, दीन पण बने; एटले वस्तु न मळतां खेद न करे के, मने धिक्कार छे ! हुं मंदभागी छुं ! के, सर्बने सर्व वस्तु आपनार दातार होवा छतां, मने नथी मळतुं. तेथी साधुए लाभअलाभमां मध्यस्थपणुं राखवुं. कह्युं छे केः—

"लभ्यते लभ्यते साधु, साधुरेव न लभ्यते । अलब्धे तपसो वृद्धिर्लब्धे तु प्राणधारणम् ॥१॥"

मळे तो सारुं, अने न मळे तोपण सारुं. कारण के, न मळे तो, न भोगववाथी तपश्यानो लाभ थशे; अने मळवाथी माणनुं धारण थशे.

आप्रमाणे पिंडपात्र, वस्त्रोनी एपणा बतावी छे'

हवे वधारे न संघरे ते कहे छे.

घणुं मळे तो मोह न करे; अने वधारे लइने राखी न मुके; एटले थोडो पण संग्रह न करे. जेम आहार वधारे न ले, तेम संयम ऊपकरण करतां वधारे वस्त्रपात्र विगेरे न ले, ते सूत्रमां कह्युं छे केः—

परिग्रह कहे छे—

धर्मऊपकरणथी जेटलुं वधारे ऊपकरण लेवुं, ते परिग्रह छे. माटे वधारे मळतुं न ले, अथवा संयम ऊपकरणमां पण मूर्छा करवाथी परिग्रह छे. कह्युं छे केः—

(तत्वार्थ 'भ. ८. सू.') मूर्छा परिग्रह छे, तेथी वधारे मळतुं छोडीने जोइतां लीधेलां ऊपकरणमां पण मूर्छा न करे.

शंका–जे कंइ धर्मऊपकरण विगेरेनो परिग्रह छे, ते पण चित्तनी मलीनता (राग) शिवाय थतो नथी कह्युं छे केः–पोताने उपकार करनारमां राग थाय; तो उपघात करनार उपर द्वेष पण थाय; तेथी परिग्रह राखतां रागद्वेष नजीक आवे छे, अने तेनाथी कर्म बंध थाय छे, माटे तमो कहो छो के, धर्मऊपकरण परिग्रह नहीं; ते केवीरीते मानीए ? कह्युं छे केः—

"ममाहमिति चैष यावदभिमानदाहज्वरः । कृतान्त मुखमेव तावदिति न प्रशान्त्युन्नयः ॥
यशः 'खुख' पिपासितैरयमसावनर्थोत्तरैः, । परैरपसदः कुतोऽपि, कथमप्यपाकृष्यते ॥१॥"

आ मारुं एवो ज्यां सुधी अभिमानरूप, दाहज्वर रहेलो छे, त्यांसुधी जमना मुखमां जवानुं छे तेम त्यां सुधी शांति पण नथी तेम उन्नति पण नथी.

माटे जस अने सुखना वांच्छकोए परिणामे आ अनर्थ छे एम जाणे छे, तेथी ते उत्तम पुरुषोए आ ममताना दुर्गुणने कोइपण रीते गमे त्यांथी खेंची काढवो जोइए.

आचार्यनो उत्तर—तेवो दोष नथी, कारण के धर्मउपकरणमां साधुओने आ मारुं छे, एवो परिग्रहनो आग्रह नथी. एज शास्त्रमां कह्युं छे के,

"अवि अप्पणोऽवि देहंमि, नायरंति ममाइउं"

जे मुनिओने पोताना शरीरमां पण ममत्व नथी, ते बीजामां ममत्व केवी रीते करे ? (न करे.)

जें अहींआं कर्मबंधना माटे लेवाय तेज परिग्रह छे, पण जेनाथी कर्मनी निर्जरा थाय (कर्म ओछां थाय) ते परिग्रहज नथी, (साधुनो लेप करवाथी पूर्वना तेल विगेरेना लेपमां वधारो थतो नथी, पण तेलने खाइ वस्त्र साफ बनावे छे. तेवी रीते जोइतुं उपकरण संयमनी रक्षा करे छे.) कह्युं छे के—

अन्नहा णं पासए परिहरिज्जा, एस मग्गे आयरिएहिं पवेइए, जहित्थ कुसले नोवलिंपिज्जासि त्तिबेमि ॥

आ प्रकारे देखतो बनीने (विचार पूर्वक) परिग्रह छोडे जेम गृहस्थो तत्व जाण्या विना आ लोकना सुखना माटे परिग्रह संघरवा जुए छे, पण साधुओ तेम करता नथी, तेनो आशय आ छे. आचार्यने आश्रयी आ वधारानुं उपकरण छे पण मारुं नथी, जेमां रागद्वेषनुं मूळ छे; ते परिग्रहनां आग्रहनो योग अहीं निषेधवो परंतु धर्म उपकरणनो निषेध न करवो, तेना विना संसार समुद्रथी पार जवाय नहीं. कह्युं छे के—

साध्यं यथा कथञ्चित् स्वल्पं कार्यं महच्च न तथेति । प्लवनमृते न हि शक्यं, पारं गन्तुं समुद्रस्य ॥१॥

कोइ नानुं कार्य गमे तेम साधी लेवाय, पण मोटुं कार्य तेम सिद्ध न थाय. कदाच नानुं खाबोच्चुं कुदीने जवाय पण नाव विना समुद्रनी पार जवुं शक्य नथी. जेओ धर्मोपकरणने पण परिग्रह माने छे, तेवा दिगंबर बंधुओ माटे आ संबंधमां मतभेद छे, तेथी अविवक्षित अर्थने तीर्थंकरना अभिप्रायने अनुसारे साधवानी इच्छार्थी कहे छे, के " एसमग्गे " मूळ सूत्रमां बताव्या प्रमाणे आ धर्मोपकरण परिग्रहने माटे नथी, एवु पूर्वे कहुं, ते मार्ग तीर्थंकरोए कह्यो छे, कारण के सर्व पापरूप "हेय" धर्मथी जेओ दूर छे. ते आर्यो, तीर्थंकरो, छे, पण जेओ धर्मोपकरणने इच्छता नथी. तेवाओए पण कुंडिका, तट्टिका लंबणिका अश्ववाळधि, विगेरे इच्छानुसार उपकरण राखवानो मार्ग पोतानी मेळे शोधी काढ्यो छे, तेम अमारा उपकरणो नथी.

(वर्त्तमानमां श्वेतांवर साधुओ पासे रजोहरण मुहपत्ति विगेरे धर्मोपकरणो छे, त्यारे दिगंबर साधुओ पासे मोरनी पीछीनुं उपकरण विगेरे छे, अने टीकाकारना समयमां ते वखते दिगंबर साधुओ जेम करता हशे. तेने उद्देशीने लख्युं छे, खरीरीते ते चर्चा करवा करतां परमार्थद्रष्टिए जोनारा बन्ने पक्षना साधुओ रागद्वेष रहित बनी जे भविष्यमां अने वर्तमानमां वधारे लाभदायी थाय तेवां धर्मोपकरण वापरी संयमनो निर्वाह करे अने सम्यक्ज्ञान दर्शन चारित्रनी आराधना करे.)

अथवा उपरनी चर्चा बौद्ध मतना मौगदूलि तथा स्वाति पुत्र ए बन्नेथी बौद्ध मतनुं जे मंतव्य छे. तेने आश्रयी कहे छे.

तेज प्रमाणे धर्मोपकरणनुं कोइ खंडन करतो होय. तो तेमने पण ते प्रमाणे समजाववा.

कारण के जिनेश्वरे परोपकारना माटे रागद्वेष रहित थइने जे कहुं छे. तेना बहु मानना माटे आटलुं लखवुं पड्युं. अने

तेटला माटेज आ जिनेश्वरना कहेला मार्गमांज उत्तम साधुए उद्यमवाला थवुं, तेज सूत्रमां कहे छे के आ कर्मभूमी छे. जेमां मोक्षना झाडना बीज समान सोधी (सम्यक्त्व) तथा सर्व संवर रूप चारित्र पामीने कर्ममां जेम लेप न थाय, नवां कर्म न बंधाय तेम आ उत्तम मार्गमां वर्त्तवुं, ते विदित वेद्य (पंडित) जाणवो, जो ते मार्ग उलंघीने बतावेलां धर्म अनुष्ठान न करे तो कर्मनो बंध थाय. तेथी आ सत्पुरुषोनो मार्ग छे तेथी पोते चारित्र लेतां प्रथम सर्व जीवने समाधि आपवारूप प्रतिज्ञा करी छे, ते छेवटनो उच्छ्वास लेता सुधी पाळवी जोइए. कह्यु छे केः—

"लज्जां गुणौघजननीं जननीमिवार्यामत्यन्तशुद्धहृदयामनु वर्त्तमानाः । तेजस्विनः सुखमसूनपि सन्त्यजन्ति; सत्यस्थितिव्यसनिनो न पुनः प्रतिज्ञाम् ॥१॥"

गुणना समूहनी माता तथा अत्यंत शुद्ध हृदय बनावनारी जे लज्जा छे, तेने श्रेष्ठ माता माफक मानीने तेनी पाछळ चालनारा तेजस्वी पुरुषो (साधुओ) सुखे करीने पोताना प्राण पण त्यजे छे, परंतु सत्य स्थितिने चाहनारा तेओ पोतानी प्रतिज्ञानो भंग करता नथी. आप्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे केः—में उपर प्रमाणे जे कह्युं ते महावीरप्रभुनां चरणसेवन करतां सांभळ्युं छे, ते तने कह्युं छे, माटे परिग्रहथी आत्माने दुर कर; एवुं जे कह्यु छे, ते संसारी—वासनाना उच्छेद विना न थाय; अने ते संसारी—वासना पांच प्रकारना इन्द्रियोना विषयरसने अनुसरनारा अभिलाषो छे, अने ते तजवा मुश्केल छे. तेथी कहे छे केः—

कामा दुरतिक्कमा, जीवियं दुप्पडिवूहगं,। कामकामी खलु अयं पुरिसे, से सोयइ जूरइ तिप्पइ परितप्पइ

काम कहे छे:—

कामना बे भेद छे. (१) इच्छाकाम, (२ मदनकाम, तेमां, मोहनीयकर्मनाभेद हास्य (हांसी) रतिथी उत्पन्न थयेल इच्छाकाम छे, अने मोहनीयकर्मना वेदना उदयथी मदनकाम छे. ते बन्ने प्रकारना कामोनुं मूळ मोहनीयकर्म छे, तेना सद्भावमां कामनो उच्छेद करवो मुश्केल छे, एटले तेनो विनाश करवो दुर्लभ छे, तेथी मुनिने एम समजाव्युं के, तारे प्रमाद न करवो, आ काममां प्रमाद न करवो; पण जीवितमां प्रमाद न करवो. कारणके, क्षण क्षण जे ओछी थाय छे, ते वृद्धि पामवानी नथी; अथवा संयम—जीवितनो संसारीवासनामां पडतां दुःखेकरीने निर्वाह थाय छे. अर्थात् संयम पाळवो मुश्केल थाय छे. कह्युं छे के:—

"अगासे गंगसोउव्व, पडिसोउव्व दुत्तरो । बाहाहिं चेव गंभीरो, तरिअव्वो महोअही ॥१॥

आकाशमां गंगा नदीनो प्रवाह छे, तेने सामे जइने तरवुं मुश्केल छे; अथवा महासागर हाथवडे तरवो मुश्केल छे.

बालुगाकवलो चेव, निरासाए हु संजमो । जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्करं ॥२॥"

वेळु (रेती) ना कोळीआ मुश्केल छे. तेज प्रमाणे इन्द्रियोनो कोइपण जातनो स्वाद जेमां नथी; तेवुं संयम पाळवुं घणुं मुश्केल छे, अथवा लोढाना बनावेला जव चाववा मुश्केल छे. तेवुं संयम पाळवुं मुश्केल छे.

आ अभिप्राय प्रमाणे अभिलाष तजवा मुश्केल छे, ते बताव्या छतां वधारे खुलासा माटे कहे छे. कामकामी एटले, इंद्रिय—विषयुरसनो लालचु जीव जे छे, ते शरीर, अने मन संबंधी घणा दुःखोने भोगवशे ते बतावे छे.

एटले इच्छीत वस्तु न मळतां, अथवा तेनो वियोग थतां तेनो शोक करीने जेम ताव चढेलो घेलो माणस बके छे, तेम पोते पोक मूकीने रडे छे.

"गते प्रेमाबन्धे प्रणयबहुमाने च गलिते । निवृत्ते सद्भावे जन इव जने गच्छति पुरः ॥
तमुत्प्रेक्ष्योत्प्रेक्ष्य प्रियसखि ? गतांस्तांश्च दिवसान्, न जाने को हेतुर्दलति शतधा यन्न हृदयम्? ॥१॥"

प्रेमनुं बंधन नाश पामतां, अथवा प्रणय (व्हालां) नुं बहु मान ओछुं थतां अथवा सद्भाव ओछो थतां जतो रहेतां प्रेम, माणसमां माणसनी माफक आगळ जाय छे, तेने जोइ जोइने कोइ स्त्री पोतानी सखीने कहे छे केः—हे सखी ! ते गयेला दिवसोने ज्यारे याद करुं छुं, त्यारे हुं नथी जाणती के; कयो हेतु मने सो प्रकारे दुःख आपे छे ? पण, ते मारुं हृदय भेदतो नथी. (आ विलाप प्रेमी स्त्रीपुरुषोना वियोगमां अथवा, बन्नेने कंइपण कारणे भेद पडतां, वीरही बनेलां पोतानां हेतस्वी आगळ पूर्वनां सुखो याद करीने कहे छे):—

तेज प्रमाणे पोते हृदयथी झुरे छे.

"प्रथम तरमथेदं चिन्तनीयं तवासी—द्बहुजनदयितेन प्रेम कृत्वा जनेन ॥
हृतहृदय ! निराश! क्लीब ! संतप्यसे किं ? । न हि जडगततोये सेतुबन्धाः क्रियन्ते ॥१॥"

हे हृदय (पहेलुं आ तारे चिंतववुं जोइए के, तारो प्रेमीजन प्रेम करीने छुटो पडी गयो छे ! हे हृदय ! हे आशारहित ! हे न-

पुंषक ! तुं हवे शामाटे खेद करे छे! पाणी गया पछी पाळो वांधवी नकामी छे. (पोते पोतानां हृदयने ठपको आपे छे के, तारां वहालां संबंधीने जवा केम दीधो? अने हवे, गया पछी रोये शुं थाय? पाणी ज्यारे जोइतुं हतुं; त्यारे पाळ बांधीने कां रोकी न लीधुं?) तथा जेनां घरमां मोत थाय; ते पोते मर्यादाथी भ्रष्ट थाय छे. एटले शरीर, अने मनमां दुःखोथी पीडाय छे. तथा तेज प्रमाणे घणुं वहालुं सगुं गुजरीगयुं होय; तो केटलांक लोको पश्चाताप करे छे के—हे वहाला पुत्र ! हे वहाली स्त्री ! तुं मने मुकीने केम जती रही ? इत्यादि. अथवा कोइ जग्याए कोप करीने गयेलो होय. अर्थात् नाशी गयेलो होय; अने बंनेनो वियोग थाय तो पछीथी, कहे केः—में तारुं कहेवुं गुस्सामां न मान्युं; तेथी तुं रीसाइने चाल्योगयो. इत्यादि व्यर्थ दुःखो भोगवे छे.

आ बधां दुःखो शोक विगेरे जे कह्यां छे, ते बधांए जे मनुष्यो विषय–विषना आश्रयमां अंतःकरणने राखे छे, तेमनी दुःखनी अवस्था सूचवे छे. (केटलीक स्त्रीओ रडी रडीने आंधळी थाय छे, कोइ छाती कुटीने पोतानां नानां वाळकोने अथवा, पोताना गर्भाशयने अथवा, गर्भमां रहेलां बाळकने दुःख आपे छे, केटलीक अज्ञान स्त्रीओ माथां कुटीने पीडाय छे.) अथवा शोक करे छे. एटले यौवन, धन, मद विगेरेना मोहथी घेरायला मनवाळो विरुद्ध कृत्य करीने ज्यारे बुढ्ढापो थाय; त्यारे, मोतनो समय आवतां मोह दूर थतां पस्ताय छे. के, में दुर्भागीए पूर्वमां वधा श्रेष्ठ पुरुषोए आचरेलो सुगतिमां जवाना एक हेतुरूप अने दुर्गतिद्वार अटकाववाने बारणांनी पाछली भुगळसमान धर्म न कर्यो. कह्युं छे केः—

“भवित्रीं भूतनां परिणतिमनालोच्य नियतां । पुरा यद्यत् किञ्चिद्विहितमशुभं यौवनमदात् ॥

पुनः प्रत्यासन्ने महति परलोकैकगमने, । तदेवैकं पुंसां व्यथयति जराजीर्णवपुषाम् ॥१॥"

निश्चय करीने जीवोने भविष्यमां थनारी अवस्थाने विचार्या विना मे जुवानीमां जे जे अशुद्ध कृत्यो कर्या छे, ते परलोकमां जवाना वखते बुढापाथी जीर्ण थयेला शरीरवाळा पुरुषने खेद पमाडे छे. (के, में धर्म न कर्यो. हवे मारी शी दशा थशे! तथा हवे पस्ताये शुं लाभ ?) तथा तेज प्रमाणे कडवां फळ अहीं भोगवतां, पापीओ पण झुरे छे, विगेरे उपर बताव्या माफक लंपटोने दुःख पडे छे, ते बुद्धिमान वांचके विचारी लेवुं कह्युं छे केः—

"सगुणमपगुणं वा कुर्वता कार्यजातं, । परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन ॥
अतिरभसकृतानां कर्म्मणामाविपत्ते–र्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥१॥"

गुणवाळुं के अवगुणवाळुं कार्य करतां पहेलां बुद्धिमाने प्रयासथी विचारवुं के एनुं परिणाम शुं आवशे. कारण के उतावळमां करेला कार्यनुं फळ भोगवतां ते समये हृदयने बाळनारो शल्य समान पश्चाताप विपत्तिना माटे थाय छे—

आवुं कोण न शोचे ते बतावे छे. कह्युं छे के—

आययचक्खू लोगविपस्सी लोगस्स अहो भागं जाणइ उड्ढं भागं जाणइ, तिरियं भागं जाणइ गड्ढिए लोए अणुपरियट्टमाणे संधिं विइत्ता इह मच्चिएहिं, एस वीरे पसंसिए

जे बद्धे पडिमोयइ जहा अंतो तहा बाहिं जहा बाहिं तहा अंतो, अंतो अंतो पूइ देहंतराणि पासइ, पुढोवि सवंताइं पंडिए पडिलेहाए ॥ (सू० ९३)

जेने आ लोक अने परलोकना परिणामनां दुःख जोवामां (विचारवामां) विशाळ दृष्टि (ज्ञान) छे. ते विशाळ चक्षुवाळो बने छे. ते उपर कहेला भोगोने घणा अनर्थोनुं मूळ समजीने तेने छोडीने "शम सुख" (वीतराग दशा) ने अनुभवे छे. तथा संसारी लोको जे विषय रसमां पडतां अतिशय दुःखी थएला छे. (एटले कुमार्गे जतां गुप्त इन्द्रि सडतां विसफोटकनो रोग थतां के क्षयथी मरतां जोइने) पोते तेवा कुमार्गने इच्छतो नथी. तेथी प्रशम सुखने अनेक प्रकारे जुए छे. तेथी ते लोकविदर्शी छे. अथवा लोक एटले उर्द्ध अधः तथा तिर्यक् (स्वर्ग पातळ अने मृत्यु) ए त्रण लोकमां चार गतिमां थतां दुःखो सुखोना कारणोने तथा त्यां भोगवाता आयुष्य विगेरेने जुए छे. ते बतावे छे.

लोकना अधो भागमां शुं छे ते जाणे छे. एटले धर्म अधर्म अस्तिकायथी व्याप्त आकाश खंडनो नीचलो भाग जाणे छे. तेनो सार आ छे के जीवो जे कर्मो वडे त्यां उत्पन्न थाय छे. तथा त्यां सुख दुःखनो विपाक केवो छे. तेने जाणे छे. (नारकीना जीवोने थतुं दुःख पोते जाणे छे तथा भुवनपति व्यंतरना देवोनुं सुख पण जाणे छे.)

तेज प्रमाणे उर्द्ध तथा तिर्यक् लोकने पण जाणे छे. (उर्द्ध लोकमां वैमानीक देव तथा मोक्षनुं सुख छे. ते जाणे छे. तथा तिर्यक् लोकमां ज्योतिषना देवतानुं सुख तथा धर्मी मनुष्यनुं सुख तथा पापी तथा तिर्यंच प्राणीनुं दुःख जाणे छे.) अथवा लोक

विदर्शी ते काम मेळववा पैसो पेदा करवा एक ध्यान राखनारा पुन्य पापने भूली गएला अन्य लोकोने पोते जुए छे. ते वतावे छे. जे काम विगेरेमां अथवा तेने प्राप्त करवाना उपायमां लागेला छे. तेने वारंवार आचरवाथी बन्धाता तथा अशुभ कर्म वडे संसार चक्रमां भमता जोइने पोते विशाळ चक्षुवाळा कामना अभिलाषथी दूर थवा केम समर्थ न थाय ? (अर्थात् डाह्यो माणस दुःख विचारी पापथी दूर भागे.)

गुरु शिष्यने कहे छे—हे शिष्य ! संसारना भोगोमां राचता अने तेथी दुःखी थता जीवोने तुं जो, वळी आ मनुष्य लोकमां जे ज्ञानादिक भाव संधि छे. ते मनुष्य लोकमांज संपूर्ण प्राप्त थाय छे, (केवळ ज्ञान यथाख्यात चारित्र जे मोक्षना हेतुओ छे, ते मणष्यनेज छे. माटे मर्त्य लोकने लीधो छे,) अने जे डाह्यो छे ते पोते उपर वतावेल तत्वने समजीने विषय कषाय विगेरेने छोडे छे, तेज वीर पुरुष छे. ते सूत्रकार वतावे छे एटले जे आयत चक्षुवालो छे. तथा लोकना विभागना स्वभावने यथावस्थित पणे जाणे छे. ते भाव संधिनो जाण छे, अने विषय तृष्णाने छोडनारो छे. ते वीर पुरुष कर्मने विदारण करवाथी वखणायो छे. अर्थात् तत्व जाणनारा पुरुषोए तेनी प्रशंसा करी छे.

ते आ प्रमाणे तत्वज्ञानी वनीने वीजुं शुं करे छे ते कहे छे—

"जे वद्धे" एटले द्रव्य भाव बंधन वडे बंधाएला छे. तेमने पोते मुक्त वनी बीजाने मुकावनार छे, तेज द्रव्य भावबंधनो विमोक्षक (मुक्ति अपावनार) छे. ते वाचानी युक्ति वडे बतावे छे. जेवीरीते पोते अभ्यंतरथी मुकाएलो छे, तेवीरीते वहारथी पण मुक्त छे, एटले अंदर आठ प्रकारनी कर्मनी बेडी छे, ते छोडावे छे. तथा पुत्र, स्त्री, विगेरेने पण छोडावे छे. एटले जेम आठ प्र-

कारनी कर्मनी बेडी छे. तेम बहारनुं सगांनुं बंधन छे, ते बंने मोक्ष गमनमां विघ्ननुं कारण छे, ते बन्नेथी मुकावे छे—

अथवा आ केवी रीते मुकावे छे. ते कहे छे. पोते पोताना विशाळ ज्ञानवडे तत्वनो प्रकाश करी बोध आपवा वडे मुकावे छे.

बोध आपतां पोते कहे छे के आ काया विष्टा, पिशाब, मांस लोही, परु, विगेरे गंदी वस्तुथी भरेली असार छे. एटले विष्टानुं भरेलुं माटलुं अंदर पण गंदुं छे. अने बहारथी पण तेवुंज छे. ते प्रमाणे आ काया, अंदरथी गंदी छे अने बहारथी लगाडेला सारा पदार्थने पण गंदा बनावे छे. कह्यु छे के—

"यदि नामास्य कायस्य, यदन्तस्तद्बहिर्भवेत् । दण्डमादाय लोकोऽयं, शुनः काकांश्च वारयेत् ॥"

आ कायानी जेवी अंदरनी गंदकी छे, तेवी साक्षात् बहार जणाती होत तो लोको हाथमां दंड लइने कुतराने अने कागडाने वारता होत (बहारथी मांसना लोचा जोइने कागडा चुंथत, अने विष्टाने जोइने कुतरा बाझत, तेथी लाकडी लइने हांकवा पडत.)

आप्रमाणे जेम बहार असारता छे. (परसेवानी गंध बहार देखाय छे. ते अनुमाने) अंदर पण काया गंदी छे. ते जाणे छे. वळी जेम जेम शरीरमां उंडाणमां तपासे तेम तेम विशेष गंदी एटले मांस रुधिर मेद मज्या विगेरे जणाय छे. तथा कोढ रक्तपीत विगेरे रोगो आवतां उपर कही बधीए मलीनता साथे प्रत्यक्ष देखाय छे,

अथवा शरीरनां नवे द्वारोथी झरती गंदकी छे, काननो मेल आंखना पीया बळखो लाळ पिशाब झाडो विगेरे छे. ते सिवाय बीजी व्याधिथी गुमडां पाकतां लोही, परु, तथा रसीवाळा पदार्थो विगेरेथी गंदकी छे—

आ प्रमाणे बधुं जोइने पंडित पुरुष विचारे छे के द्वारो वहे छे, गुमडां रोमे रोमे पीडा करे छे. ते तत्व समजनारो तेनुं स्व-

रूप जाणे तेज कहे छे—

"मंसट्ठिरुहिरण्हारुवणद्धऽकलमलयमेव मज्जासु । पुण्णंमि चम्मकोसे दुग्गंधे असुइबीभच्छे ॥ १ ॥"

मांस, हाडकां, लोही, स्नायु, विगेरेथी बन्धाएला तथा मलीन मेद मज्या विगेरेथी भरेला अने असुचिथी बीभत्स एवा दुर्गंधीवाला चामडाना कोथळारूपे कायामां

संचारिमजंनगलंतवच्चमुत्तंतसेअपुण्णंमि । देहे हुज्जा किं रागकारणं असुइहेउम्मि ? ॥२॥

तथा विष्टा पिशाब झरनारां यंत्रवाळा परसेवाथी भरेला शरीरमां ज्यां ज्यां अशुचिनो हेतु छे. तेमां रागनुं कारण केवीरीते थाय ? आ प्रमाणे देहनी अंदरनो गंदको जाणीने तथा बहार पण झरतुं छे, ते जोइने डाह्या माणसे शुं करवुं ते कहे छे.

से मइमं परिन्नाय मा य हु लालं पच्चासी, मा तेसु तिरिच्छमप्पाणमावायए, कासंकासे खलु अयं पुरिसे, बहुमाई कडेण मूढे, पुणो तं करेइ लोहं वेरं बड्ढेइ अप्पणो जमिणं परिकहिज्जइ इमस्स चेव पडिवूहणयाए, अमरा य महासड्ढी अट्टमेयं तु पिहाए अपरिण्णाए कंदइ ॥ (सू० ९४)

पूर्वे कहेलो बुद्धिमान साधु जेनी सिद्धांत भणवाथी संस्कारवाली बुद्धि थएली छे, ते देहना स्वरूपने तथा कामना स्वरूपने बे प्रकारनी प्रतिज्ञावडे शुं करे ते कहे छे—

हे साधु—तुं 'लाळ भरतां' अने बळखा वारंवार पडता मोढानो अभिलाषि न थइश. एटले जेम बाळक पोतानी पडती लाळने

विवेकना अभावे चाटे छे. तेम तुं तजेला भोगोने पाछा स्वीकारतो नही अर्थात् भोगो तजीने पाछा न भोगवतो.

वली ते संसारमां भ्रमण करावनार अज्ञानअविरति मिथ्यादर्शन विगेरेने तिरश्चीन (तिरछि गति) अथवा प्रतिकुळ उपाय वडे, उलंघी जा, अने निर्वाणना शरणरूप ज्ञान दर्शन विगेरेमां तुं अनुकुळता कर, एटले तुं अज्ञान विगेरेमां आत्माने डुवावीश नही, अने ज्ञानादि कार्यमा प्रतिकुळता न करीश तेथी सावचेत रहेवुं.

जे प्रमादी छे, ते अहीं पण शांति नथी पामतो; एटले, जे ज्ञानथी विमुख थइने भोगनो अभिलाषि थइने तिरछी गतिमां पडे छे, ते पुरुष कर्तव्यतामां मूढ बनेलो छे ते माने छे के, आ में एम कर्युं; अने हवे एम करीश; एवी भोगना अभिलाषनी तृष्णामां व्याकुळ बनेलो चित्तनी शांतिने निश्चे भोगवतो नथी. (सूत्रमां भूत भविष्य लीधो; पण वर्तमानकाळ अति सूक्ष्म होवाथी न लेतां, अतीत अनागत भूत भविष्य लीधा छे.)

आ प्रमाणे में कर्युं अने करीश; एम विचारनारा कामातुरने शांति नथीज थती. कह्युं छे के:—

"इदं तावत् करोम्यद्य, श्वः कर्त्ताऽस्मीति चापरम् ॥ चिन्तयनन्निह कार्याणि, प्रेत्यार्थं नावबुध्यते ॥१॥"

आ हमणां करुं छुं. अने बीजुं सवारमां करीश; एम कार्यने विचारतां तेने, अहीं परलोकने माटे कंइ धर्म कृत्य सूझतुं नथी.

अहीं दहींना घडावाळा भीखारीनुं दृष्टांत कहे छे. कोइ रंकने कोइ जग्याए भेसने चारतां दुध मळेलुं; तेनुं दहीं करीने विचारवा लाग्यो के, आनुं घी बनावी, अने तेथी पैसा पेदा करी, वेपार करीने वैरी परणीश; अने पुत्र उत्पन्न थइने मोटो थतां, खावा बोलाववा आवशे; त्यारे लात मारीश. विगेरे तुरंगमांज पग अफाळतां माथुं धुणावतां दहींनो घडो पड्यो; अने घडो फुटी गयो; तेथी

वधा तुरंग दूर थया. न खाधुं; न कोइने पुन्य माटे आप्युं. ए प्रमाणे बीजा पण जीवो करवा करावવાना संसारी–कर्तव्यमां–मूढ वनीने पोतानो आरंभ निष्फळ करे छे.

अथवा जेमां कषाय ते "कास" संसार छे तेने कसे; एटले सन्मुख जाय; ते ज्ञान विगेरेमां प्रमाद करनारो छे ते कहे छे. अने एटले संसार भ्रमण कषायथी छे, एटले तेमां माया लीधी; एटले जे बहुमायी छे, ते क्रोधी मानी अने लोभी पण जाणवो; अशुभ कृत्य करवाथी मूढ वनेलो सुख वांच्छतो छतां दुःखज भोगवे छे. कह्युं छेः— ॥१॥"

"सोउं सोवणकाले मज्जणकाले य मज्जिउं लोलो । जेमेउं च वराओ जेमण काले न चाएइ

जे स्वार्थी छे, ते रातना सुवानुं, अने दिवसमां नावानी वखते, नावानुं तथा जमवानी वखते, जमवानुं ते सुखेथी करी शकतो नथी. आना संबंधमां मम्मण शेठनुं दृष्टांत पूर्वे कहेलुं छे, तेना जेवो कासकष एटले बहु कपटी. तेणे करेला कपटथी बनेलो मूढ, जे जे करे तेनावडे वेरनो प्रसंग थाय; ते कहे छेः—ते कपटी बीजाने ठगवा लोभनुं कृत्य करे छे, जेथी वेर वधे छे, अथवा लोभ करीने नवां कर्म वांधीने, सेंकडो नवा भव करे छे, अने नवां वेर वधे छे. ते कहे छेः—

" दुःखार्तः सेवते कामान्, सेविताస्ते च दुःखदाः । यदि ते न प्रियं दुःखं, प्रसङ्गस्तेषु न क्षमः ॥१॥ "

दुःखथी पीडायलो काम भोगने सेवे छे, अने परिणामे ते दुःख आपे छे, तेथी गुरु शिष्यने कहे छेः—हे मुनि! तने जो, दुःख प्रिय न लागतुं होय; तो, ते भोगोनो स्वाद छोड.

प्रश्नः—जीव, एवां शुं कृत्य करे छे के, पोताने वेर वधे छे?

उत्तरः—आ नाशवंत शरीरनी पुष्टि माटे जीवहिंसा विगेरे पापक्रियाओ करे छे, ते क्रियामां हणायला सेंकडो प्राणीओ नाश पामे छे, तेथी मरेला जीवो साथे वेर बन्धाय छे. जे उपर कही गया के, भवभ्रमणमां कपट करवाथी वेर वधे छे, अथवा गुरु कहे छेः—आ वारंवार हुं जे उपदेश आपुं छुं, तेनुं कारण ए छे के, संसारमां वेर वधे छे, तेथी संयमनीज पुष्टि करवी ते सारुं छे.

हवे बीजुं कहे छे. जे देवता नहीं छतां, देवता माफक द्रव्य–जुवानी स्वामीपणुं, सुंदर रुप, विगेरेथी युक्त होयः ते मनुष्य अमर (देवता) माफक आचरे ते अमराय (देवताइ) पुरुष कहेवाय; ते महाश्रद्धी एटले, जेने भोगमां, अने तेने मेळववाना उपायमां घणी लालसा (श्रद्धा) होय; ते महाश्रद्धी (पापारंभी) छे, तेनुं दृष्टांत कहे छेः—राजगृह–नगरमां मगधसेना नामनी गणिका (वेश्या) रहेती हती. तेज नगरमां धनशेठ नामनो सार्थवाह हतो. ते कोइ वखते घणुं धन आपीने, ने वेश्यानां घरमां पेठो. तेना रुपयौवन–गुणोनो समूह, द्रव्य विगेरेनी लालचथी वेश्याए तेने स्वीकार्यो; पण ते शेठनुं आवक, खर्चना हीसावनी जंजाळमां मन रोकायाथी ते वखते, वेश्याने नजरे पण जोइ शक्यो नहीं. (मतलब के, वेपारनी धुनमां, वेश्या साथे वात पण करी नहीं.) आ वेश्या पोताना रुपयौवन–सुंदरताना अहंकारथी दुःखी थइ. तेने अति दुःखी जोइने जरासंघ राजाए कहेवडाव्युं के तारुं दुःखनुं कारण शुं छे? अथवा तुं कोनी साथे रहे छे! वेश्याए कह्युं के हुं अमर साथे रहुं छुं राजाए पूछ्युं के केवी रीते ? तेने कह्युं के मने राखनार शेठ आ प्रमणो पैसादार छे, अने भोगना अभिलाषीओ धनमां असक्त बनेला देवता माफक क्रियामां वर्ते छे, खावा पीवामां तथा बीजी क्रियामां देवता माफक विलास भोगवे छे, पण कामनो अभिलाषि शरीर अने मननी पीडामां पीडाएलो बहारथी सुखी अने अंदरथी दुःखी भोगोनी इच्छावालो छतां भविष्यना वेपारनी चिंतामां पडेलो मने जोतो पण नथी, तेथी मारां बधांए

०

।३९५॥ मुक्तो एक सुख विना रद छे. तेथी गुरु शिष्यने कहे छे, संसारी कामी जीवोनां दुःख जोइने तेमने सुखी न मानतां भोगोनी इच्छा न करवी. सूत्रम्

॥९५॥

वली संसारी भोग वांच्छकनुं स्वरूप कहे छे. पोते कामना स्वरूपने अथवा तेना कडवा विपाकने न जाणीने तेमां चित्त राखेलो बीजानी सुंदर स्त्रीओ जोइने ते न मळवाथी अथवा पोतानी वहाली स्त्री मरी जवाथी तेनी आकांक्षामां रात दिवस शोक करे छे; कह्युं छे केः—

"चिन्ता गते भवति साध्वसमन्तिकस्थे—मुक्ते तु तृप्तिरधिका रतिरोऽप्यतुष्टिः ॥
द्वेषोऽन्यभाजि वश वर्तिनि दग्धमानः—प्राप्तिः सुखस्य दयिते न कथञ्चिदस्ति ॥१॥"

नाश पामे तो चिन्ता थाय, पासे होय तो तेना धाकथी गभरामण थाय, त्याग करे तो तेनी इच्छा थाय, भोगवतां अतृप्ती थाय, अथवा पति के पत्नी बीजा साथे संबंध करे, तो द्वेष थाय, वश करेतो पति कजीआ जेवो थाय, तेथी कदीपण सुखनी प्राप्ति पतिने स्त्रीने कदापि पण नथी, आ प्रमाणे धन विगेरेमां पण समजवुं के कोइपण प्रकारे काम विपाकमां सुख नथी. पण परिणामे दुःखज छे, एवुं बतावीने समाप्त करवा कहे छे.

से तं जाणह जमहं बेमि, तेइच्छं पंडिए पवयमाणे से हंता, छित्ता भित्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता, अकडं करिस्सामिति मन्नमाणे, जस्सवि य णं करेइ, अलं बालस्स संगेणं, जे वा से कारइ बाले, न एवं अणगारस्स जायइ (सू० ९५) त्तिबेमि ॥

जेथी कामना अभिलाषो दुःखनाज हेतुओ छे. तेवुं तमे जाणो तेथी हुं कहुं छुं, मारो उपदेश चित्तमां राखवा माटे कानेथी सांभळो अने खोटी वासनाने छोडी दो.

शंका—अहीआं कामवासनानो निग्रह वताव्यो, ते बीजा उपदेशथी पण कार्य सिद्धि थात तेथी आचार्य कहे छे. "ते इच्छं" काम चिकित्सामां पण पंडित अभिमानी पोते तेवा वचन बोलतो अथवा व्याधिनी चिकित्सानो उपदेश करतो अन्य दर्शनीसाधु जीवना उपमर्दनमां वर्ते छे. एटले जे भविष्यना कडवा विपाकने भूले छे, ते बीजाने संसार भोगववाना (कोकशास्त्र) ग्रंथनो उपदेश करे छे, जेना वडे अज्ञानी जीवो विषय सुख लेवा शरीर शक्ति वधारवा अनेक पाप करे छे, तेनुं मूळ कारण तेवा उपदेशने कहेवाथी बीजा जीवोने लाकडी विगेरेथी मारनारो तथा शूळ विगेरेथी कान विगेरेनो भेदनारो तथा गांठ छोडवी, विगेरेथी धन चोरनारो, तथा लूंट के खातर पाडीने धन लेनारो तथा जीव लेनारो बने छे.

कारण के कामचिकित्सा के शरीरनी पुष्टि, के रोगनुं निवारण तत्व दृष्टिथी विमुख पुरुषोने जीवहिंसा सिवाय थतुं नथी. वळी केटलाक पंडित मानी पुरुषो एम गर्व करे छे के तेणे कामचिकित्सा विगेरे न करी पण हुं तो करीशज! एम मानीने पोते हणवा विगेरेनी क्रिया करे छे, तेथी कर्मबन्ध थाय छे, जे कुवासना अथवा जीव हिंसाना औषधोनां शास्त्र बनावे छे ते परिणामे दुर्गतिने आपनार शास्त्र होवाथी ते अकार्य छे.

वळी कहे छे के, जे पोते चिकित्सा करे छे. ते करनार अने करावनार बन्ने पाप क्रियाओना भागी छे. तेथी तेवी दुर्गतिमां जनारा अज्ञानी जीवनी संगत पण न करवी, कारण के तेथी कर्मबंध थाय छे, अने जीवहिंसाथी औषध करावे, तेनी पण सोबत न करवी.

उत्तम साधुओने उपर कहेल प्राणीओनी हिंसावाळुं काम वासनानुं अथवा वैदकशास्त्रनुं भणवा भणाववानुं होय नहिं. एटले जेम बाळजीवो करे तेम साधुओने करवुं कल्पे नहिं, तेओनुं वचन पण साधुओए सांभळवुं नहिं.

आवुं सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे, पांचमो उद्देशो समाप्त थयो.

हवे छठ्ठो उद्देशो कहे छे.

पांचमा साथे छठ्ठा उद्देशानो आ संबंध छे के, संयम देहना निर्वाह माटे लोकोमां जवुं, पण तेमनी साथे प्रेम न बांधवो एवुं कह्युं ते हवे सिद्ध करे छे.

आ सूत्रनो पूर्वना सूत्र साथेनो संबंध कहे छेः—एटले, "९५ मा" सूत्रनी छेवटे कह्युं केः—उत्तम साधुने चिकित्सा विगेरे न होय. अहींआं "९६" सूत्रमां पण तेज कहे छे.

से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाय तम्हा पावकम्मं नेव कुज्जा न कारवेज्जा। (सू० ९६)

जेने चिकित्सा न होय; ते अनगार कहेवाय; अने जे जीवोने दुःख आपनार चिकित्सानो उपदेश आपवो; अथवा तेवुं कृत्य करवुं ते पाप छे, एम जाणीतो (गीतार्थ) साधु ज्ञ—परिज्ञावडे तथा, प्रत्याख्यान परिज्ञावडे जाणीने तथा पाप छोडीने आदानीय (ग्रहण करवा योग्य) परमार्थथी भाव आदानीय ज्ञानदर्शन—चारित्र छे, तेने ग्रहण करीने पापकर्म कोइपण वखते न करे तेम न करावे; अने करनारने अनुमोदना पण न आपे.

अथवा, ते साधु ज्ञान विगेरे, मोक्षनुं साचुं कारण छे, एम जाणीने, संयम–अनुष्ठानमां सावध थइने सर्वसावद्य (पापनां) कृत्य मारे न करवां; एवी प्रतिज्ञारूपपर्वत उपर चडीने शुं करे छे ? ते कहे छे:—

आ सावद्यना आरंभनी निवृत्तिरूप–संयम लीधो छे, तेथी, मुनिए पापकर्मनी क्रिया न करवी. मनथी पण इच्छवी नहीं; पोते बीजा पासे पण करावची नहीं; एटले, नोकर विगेरेने पापकर्ममां प्रेरवां नहीं; तथा, "१८" प्रकारनुं पापजीव–हिंसा, जुठुं, चोरी, कुचाल, परिग्रह ममता, क्रोध, मान, माया, लोभ, रागद्वेष, कजीओ अभ्याख्यान, पैशून्य रति अरति, परनिंदा, मायामृषावाद, (कपटनुं जुठ,) मिथ्यादर्शन–शल्यने पोते न करे; तेम न बीजा पासे न करावे; तथा, पाप करनारी प्रशंसा न करे; एम, मन, वचन, कायाथी त्याग करे.

प्रश्नः—एक पाप करे; तेने बीजां पाप लागे के नहीं ?

उत्तरः—ते शास्त्रकार बतावे छे.

सिया तत्थ एगयरं विप्परामुसइ छसु अन्नयरंमि कप्पइ सुहट्ठी लालप्पमाणे, सएण दुक्खेण मूढे त्रिप्परियासमुवेइ, सएण, विप्पमाएण पुढो वयं पकुव्वइ, जंसिमे पाणा पव्वहिया पडिहाए नों निकरणयाए, एस परिन्ना पवुच्चइ कम्मोवसंती। (सू० ९७)

कोइ पापआरंभमां पृथ्वीकाय विगेरेनो समारंभ करे छे, ते एक प्रकारनुं आश्रवद्वार प्रारंभे छे, ते छ कायना आरंभमां वर्ते छे, ते जाणवुं. जोके, पोते एकने हणवानो विचार करे छे, छतां संबधने लीधे सर्व हणाय छे.

प्रश्न—ज्यारे कोइपण एक कायने हणवा आरंभ करे त्यारे बीजीकायना समारंभनुं पाप अथवा सर्व पापोमां वर्ते छे तेवुं केम मनाय?

उत्तर—कुंभारनी शाळामां पाणीने अडकवाना दृष्टांतवडे जाणवुं. एटले पाणीने अडकतां पाणी साथे रहेली माटीने स्पर्श थाय तेथी बीजी पृथ्वीकायनो आरंभ थयो अने पाणीमां रहेली वनस्पतिनो आरंभ थयो, ते हालतां वायुनो समारंभ थाय, त्यां रहेली अग्नि प्रदीप्त थाय. ए प्रमाणे अग्नि बळतां त्रस जीवोनो आरंभ थाय. (माटे साधुए दरेक जग्याए विचारीने पग मूकवो) अथवा प्राणातिपात आश्रवद्वारमां वर्तवाथी, अथवा एक जीवना अतिपात (हिंसा) अथवा एक कायाना आरंभथी बीजा जीवोनो पण घातक समजवो, तथा प्रतिज्ञा लोपवाथी ते बीजुं पाप बांधे छे. कारण के जीव हिंसानी आज्ञा जिनेश्वरे आपी नथी, तथा प्राणीओना प्राण लेवानी आज्ञा प्राणीओ आपता नथी, माटे चोरीनो दोष छे. तथा सावद्यना ग्रहण करवाथी परिग्रहवाळो पण छे, अने परिग्रहमां मैथुन तथा रात्रिभोजन पण आवे, कारण के ग्रहकार्य विना स्त्री भोगवाय नहीं. एथी एकना आरंभमां बधी कायानो आरंभ छे, अथवा चार आश्रवद्वारने रोक्या विना चार महाव्रतमां तथा छठ्ठा रात्रिभोजन विरमणव्रत केवी रीते थाय? एथी बधानो आरंभ लागे अथवा एक पाप आरंभ करे, ते अकर्तव्यमां प्रवर्तवाथी छए कायना आरंभनो दोषित छे, अथवा जे एक पण पाप करे, ते आठे प्रकारना कर्मने ग्रहण करी वारंवार तेमां प्रवर्ते छे. प्रश्न—शा माटे ते पाप करे छे?

उत्तर—सुखनो अर्थि ते वारंवार अयुक्त बोले छे, अने कायाथी दोडवा-कुदवानी क्रिया करे छे, अने पैसो पेदा करवा उपायोने मनथी चिंतवे छे, ते कहे छे. खेती विगेरे करीने पृथ्वीनो आरंभ करे छे, स्नान माटे पाणीनो, तापवा माटे अग्निनो गरमी दूर करवा हवानो (पंखावडे) तथा खावाने माटे वनस्पति अथवा पशु हत्या विगेरेनो आरंभ करे छे, आ पाप करनार

गृहस्थ अथवा वेषधारी साधु रसनो रसीओ बनीने सचित्त लवण वनस्पति फळ विगेरेने ग्रहण करे छे, तथा बीजी वस्तु पण वापरे छे, ने समजी लेवुं.

आ प्रमाणे जे वधारे बोलनारो होय, ते पापकर्मथी बीजा नवा जन्मना दुःखरूपी झाडनुं कर्मबीज पण वावे छे, अने तेथी दुःखना झाडनुं कार्य प्रकट थशे, ते तेणे अहीं कर्युं. माटे आत्मीय (पोतानुं) कर्युं अने ते पाप कर्मना विपाकनो उदय थतां मूढ माणस परमार्थने न जाणवाथी, धर्म करवाने बदले सुखने मेळववा प्राणीने दुःख आपवानां कृत्यो करे छे, अर्थात् सुखने बदले भविष्यमां पण दुःखज पामशे. कह्यु छे केः—

"दुःखद्विट् सुखलिप्सु–र्मोहान्धत्वाददृष्टगुणदोषः । यां यां करोति चेष्टां तया तया दुःखमादत्ते ॥१॥"

दुःखनो द्वेषी, सुखनो चाहक, मोहथी आंधळो थवाथी गुण दोषने न जाणनारो जे जे चेष्टाओ करे छे, तेनाथी पोते दुःखज पामे छे. अथवा ते मूढ हित मेळववा, अहित छोडवाना विवेकथी शून्य उलटो चाले छे, एटले हितने अहित माने छे. तथा अहितने हित माने छेः तथा कार्यने अकार्य, पथ्यने अपथ्य विगेरेमां पण समजवुं; एटले एम बताव्युं के, मोह ते अज्ञान छे, अथवा मोहनीयनो भेद छे, ते बन्ने प्रकारना मोहथी मूढ बनेलो अल्प सुखना माटे तेवो तेवो आरंभ करे छे के, जेनावडे शरीरना अने मनना दुःखना व्यसनोने पामीने अनंत काळना संसार भ्रमणनी पात्रताने पामे छे. वळी मूढनी बीजी अनर्थनी परंपरा बतावे छे, एटले पोताना आत्मावडे मद्य विगेरेना प्रमादथी एटले इन्द्रियोनो रस लेवो, कषायो करवा, विकथा करवी, अथवा घणी निद्रा करवाथी जुदुं जुदुं व्रत (पापना चाळा) करे छे. अथवा वय एटले पोताना कर्मवडे जेमां जीवो भ्रमण करे छे ते वय संसार जाणवो, एटले

एक एक कायमां घणो काळ रहेवाथी तेनो अनंतोकाळ दुःखमां वीते छे.

अथवा कारणमां कार्यनो उपचार करीए; तो पोताना जुदीजुदीरीते करेला प्रमादथी बंधायलां कर्मवडे वय एटले, कोइपण अवस्था भोगवे; ते एकेंद्रिय विगेरेमां कलल, अर्बुद विगेरेथी लइने, एक दिवसना जन्मेला बाळक पण विगेरेनी अवस्थामां व्याधिथी पीडायला, अथवा दारिद्र तथा दुर्भाग्य विगेरेनां दुःखथी प्राप्त थयेल ते प्रकर्ष करीने बांधे छे. (एटले पूर्वे कर्म बांधे; अने पछीथी भोगवे; ते आश्रयी वयः शब्द लीधो छे.

ते संसारमां अथवा, उपर कहेली अवस्थामां प्राणीओ पीडाय छे ते बतावे छे. 'जं सि मे.' एटले, आ पोताना करेला प्रमादना कारणे अशुभकर्मनां फळ भोगवतां चारगतिवाळा आ संसारमां अथवा, एकेन्द्रियादि अवस्थामां प्राणीओ दुःखोथी पीडाय छे, (एवुं गुरु शिष्यने कहे छे के तुं जो.)

तेओ सुखने माटे आरंभमा राचीने मोहथी धर्मने बदले अधर्म करीने गृहस्थो तथा साधु वेषधारी तथा पाखंडीओ पीडाय छे, (जे ब्रह्मचर्यने बदले कुशील सेवे; तेने इन्द्रिय सडतां संसारमांज नरकवास भोगववो पडे. वैदनी गुलामी करवी पडे; अने वधारे रोग न वधे; ते माटे, बधी इन्द्रियो वशमां राखवी पडे; ए कुमार्गे चाल्यानुं फळ छे.)

जो एवीरीते प्राणीओ पोतानां पापोथी अहीं पीडातां देखाय; तो शुं करवुं ? ते कहे छेः—आ संसार-भ्रमणमां पोतानां कृत्योनुं फळ भोगववामां समर्थ जीवोनुं स्वरूप जाणीने अथवा, गृहस्थवडे मार खातां अथवा, परस्पर लढतां अथवा रोगादीनी पीडाओ भोगवतां, तेमनां कर्मनां फळ भोगवतां जाणीने पंडित साधुए निश्चयथी तेनो त्याग करवो; एटले सर्वथा अथवा, निश्चयथी प्राणी-

ओने जुदा जुदा दुःखोनी अवस्था जेमां थाय; ते "निकरण" अथवा "निकार" छे, अने तेज अशुभकर्म शरीर मननुं दुःख उत्पादक छे, ते कर्मने साधु न करे; एटले जेथी प्राणीओने पीडा थाय; तेवुं कृत्य साधु न करे; (साधुए कोइ पण जातनो पापारंभ न करवो;) तेथी शुं थाय ते कहे छे.

आजे सावद्य वेपारनी निवृत्तिरूप—परिज्ञा छे, तेज तत्त्वथी प्रकर्षथी 'परिज्ञान' कहेवाय छे, पण शैलुष (ठगनी) माफक मोक्ष फळ रहित ज्ञान नथी.

आ प्रमाणे ज्ञ परिज्ञा, तथा प्रत्याख्यान परिज्ञावडे प्राणीनो निकार (हिंसा) छोडवावडे साधुने मोक्ष मळे छे, एटले कर्मो शान्त पामे छे, संपूर्ण जोडलां राग द्वेष विगेरेनां छे, ते बधां संसार झाडनां बीजरूप कर्म छे, तेनो क्षय थाय छे. ते जीवहिंसानी क्रिया दूर करनारने थाय छे.

अने आ कर्मक्षयमां विघ्नरूप जीव हिंसानुं मूळ आत्मामां विषयवासनानुं ममत्व छे, ते दूर करवा कहे छे.

जे ममाइयमइं जहाइ से चयइ ममाइयं, से हु दिट्ठपहे मुणी जस्स नत्थि ममाइयं, तं परिन्नाय मेहावी विइत्ता लोगं वंता लोगसन्नं से मइमं परिक्कमिज्जासि त्तिबेमि ॥ नारइं सहई वीरे, वीरे न सहई रतिं । जम्मा अविमेण वीरे. तम्हा वीरे न रज्जइ ॥१॥ (सू० ९८)

संसारी जड वस्तुमां मारापणानी मति तेने जे साधु परिग्रहना कडवां फळने जाणे छे, ते छोडे छे. ते परिग्रह द्रव्यथी अने

भावथी एम बे प्रकारे छे, ते बन्ने प्रकारनी परिग्रहनी बुद्धि छोडवाथी अंतरनो भावपरिग्रह पण निषेध कर्यो, अने परिग्रहनी बुद्धि विषयनो प्रतिषेध करवाथी बहारनो द्रव्यपरिग्रह पण तजवानो कह्यो अथवा काकुन्याये लइए तो एम अर्थ थाय के, जे परिग्रहना विचारनुं मलिन ज्ञान छोडे, तेज परमार्थथी बहार अने अंदरनो परिग्रह छोडे छे, तेनो अर्थ आ छे.

संबंध मात्रथी चित्तना परिग्रहनी काळाशनो अभाव छे. जेम नगरमां साधु रहे, अथवा पृथ्वी उपर बेसे छतां जेम जिनकल्पी मुनिने निष्परिगृहताज छे, तेम स्थविर कल्पीने पण जाणवुं, तेथी शुं समजवुं ते कहे छे.

जे मुनि जाणे छे के मोक्षमां मुख्य विघ्ननो हेतु तथा संसार भ्रमणनुं कारण छे, ते परिग्रह ममत्वथी छुटवाना विचारवाळो छे, तेज देखतो छे, तेणेज मोक्षनो मार्ग ज्ञानादिक जोयुं छे, ते दृष्टपथ छे.

अथवा दृष्ट भय लइए तो साते प्रकारनो भय जे शरीर विगेरेना ममत्वथी साक्षात देखाय छे, अथवा विचारतां परंपराए जणाय छे, ते साते प्रकारना भयने जाणनारो निश्चयथी थाय छे, तेनो वधारे खुलासो करे छे.

जेम ममत्व न करे, परिग्रह न राखे, ते दृष्ट भय छे, एम समजीने पूर्वे बतावेला परिग्रहने तेज्ञ–परिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे गीतार्थमुनि परिग्रहना आग्रहवाळा एकेन्द्रियादि संसारी–जीवलोकने दुःखी जाणीने पोते प्राणीगणनी दश प्रकारनी ममत्वसंज्ञा (परिग्रहने) त्यागे छे, तेज मुनि सत्यासत्यना विवेकने जाणनारो छे तेने गुरु कहे छे. तुं संयम अनुष्ठानमां योग्य रीते उद्यम कर! अथवा, आठ प्रकारनां कर्मने अथवा कर्मनुं मूळ रागद्वेषादि छ रिपुवर्ग छे, तेने अथवा, विषयकषायने जीतवा पराक्रम कर एवुं कहुं छुं.

ते मुनि संयम अनुष्ठानमां पराक्रम करनारो परिग्रहना आग्रहने छेडनारो मुनि केवो थाय छे ते कहे छेः—

(सारां काममां विघ्न वधारे आवे तेम) कदाच ते संसारनो घर, स्त्री, धन सोनुं विगेरे परिग्रह छोडनार अकिंचन मुनिने संयम अनुष्ठान करतां मोहनीयकर्मना उदयथी संयममां अरति थाय; तोपण, ते संयम संबंधी अरतिने पोते सहन करे; (तेमां मन न राखे;) पण वधारे वैराग्यथी वीर बनीने आठ प्रकारना कर्मशत्रुने प्रेरणा करीने ते शक्तिमान बनेलो वीर असंयममां अथवा, विषय–परिग्रहमां रति न करे; अने संयममां जे अरति थाय; अने विषयमां रति थाय तेथी, विमन बनीने शब्दादिमां रमणता न करे; एटले, रति अरति, ए बन्नेने छोडवाथी खेदी मनवाळो न थाय; तेम, राग पण न करे ते बतावे छे.

जेणे रति, अने अरतिमां मन न लगाडयुं ते वीर छे, अरे जे वीर छे, ते पांच इन्द्रियना विषयमां आसक्ति न करे त्यारे शुं करवुं ते कहे छेः–

सद्दे फासे अहियासमाणे निव्विद नंदिं इह जीवियस्स । मुणो मोणं समायाय, धुणे कम्मसरीरगं ॥२॥ पंतं लूहंसेवंति वीरा संमत्तदंसिणो । एस ओहंतरे मुणी तिन्ने मुत्ते विरए वियाहिए, त्तिबेमि ॥ (सू० ९९)

जेथी रति–अरतिने त्यागीने मनोहर शब्द विगेरेमां साधु राग न करे; तेम खराबमां द्वेष पण न करे. ते स्पर्श विगेरेमां पण सारीरीते सहन करे; एटले, मनोज्ञ शब्द सांभळीने आनंद न माने; तेम, खराब सांभळीने खेद न करे; ते प्रमाणे शब्द, तथा स्पर्श लीधाथी बीजी इन्द्रियना विषयमां पण जाणवुं कह्युं छे केः—

सद्देसु अ भद्दयपावएसु, सोयविसयमुवगएसु । तुट्ठेण य रुट्ठेण व समणेण सया न होअव्वं ॥१॥

सुंदर के, खराब शब्द कानमां आवतां साधुए खुश अथवा नाखुश हमेशां, (कोइपण वखते) न थवुं. एज प्रमाणे रूपगंध विगेरेमां पण जाणवुं, तेथी, शब्द विगेरेमां पण मध्यस्थता राखनारा शुं करे? ते कहे छेः—

आ गुरुनी उपासना करनार शिष्य जे विनय छे, तेने अथवा, मोक्षाभिलाषी बीजाने पण आ उपदेश छे. के, तुं सारी रीते जाण के, ऐश्वर्य, वैभव विगेरेथी मननी जे प्रसन्नता छे, तेने दूर कर. आ मनुष्य लोकमां जे संयम विनानुं जीवित छे; तेने त्यजी दे, अथवा वैभव विगेरेथी कुदरती जे आनंद थाय छे, के मने आ आवी उत्तम समृद्धि मली छे, मळे छे. अने मळशे. एवो जे विकल्प थाय छे, ते आनंदना विकल्पने पण तुं निंद, विचार के आ पापना कारण रूप अस्थिर समृद्धिवडे शुं लाभ छे! कह्युं छे केः—

विभव इति किं मदस्ते? च्युतविभवः किं विषादमुपयासि?। करनिहितकन्दुकसमाः पातोत्पाता मनुष्याणाम्।

अमारो वैभव छे, एवो तने मद शुं काम थाय छे! अने वैभव जतां खेद केम करे छे? तुं जाणतो नथी के माणसोने मळेली रिद्धि हाथमां रमवाना दडा माफक पडे छे, ने उछळे! आ प्रमाणे रूप विगेरेमां पण जाणवुं. ते संबधी सनतकुमारनुं दृष्टांत जाणवुं.

अथवा पांच अतिचारने पण तुं जे पूर्वे कर्या होय, तेने निंद अने थताने रोक अने आवताने अटकाव, केवी रीते? ते कहे छे, त्रण काळने जाणनार ते मुनि छे, अने मुनिनुं मौन ते संयम छे, अथवा मुनिनो भाव ते मौन अने वचननुं संयम छे, अने ते प्रमाणे काया अने मननुं पण जाणवुं ते मन वचन अने कायाना संयमने आदरीने कर्म शरीर, अथवा औदारिक विगेरे शरीरने आत्माथी जुदुं कर, अर्थात् तेनो ममत्व मूक, ते ममत्व केवी रीते मूकाय? ते कहे छे. प्रान्त एटले रस रहित तथा घी विगेरेथी रहित लुख्खुं भोजन कर, अथवा द्रव्यथी अने भावथी प्रान्त एटले विगत धुम ते गोचरी करतां द्वेष न करवो. तथा रूक्षभाव एटले सारी

गोचरीमां राग न करवो, ते अंगार दोष रहित, वीर साधुओ गोचरी करे छे, ते साधुओ, सम्यक्त्वदर्शी छे. ते रागद्वेष रहित छे. अथवा सम्यक्त्वदर्शी छे, एटले परमार्थ दृष्टिवाला छे. तेओ जाणे छे. के आ शरीर कृतघ्न छे; निरुपकारी छे. एना माटे प्राणीओ आलोक परलोकमां क्लेश करी दुःख भोगवनारा छे. (अने अनेक आदेशमां एक आ देश छे) तेथी रस रहीत लुखुं खानारो तथा समदर्शी कर्मादि शरीर छोडीने भावथी भवओघने तरे छे. ते उत्तम क्रिया करतां भव ओघने तरे छे. अने जे बाह्य अभ्यन्तर परिग्रहथी रहित छे. ते मुक्त छे. एटले जे निर्मळ भावथी शब्दादि विषयनो राग त्यजे ते विरत छे, अने मुक्तपणे तथा विरतपणे जे विख्यात छे, तेज मुनिभव ओघने तरे छे, अथवा ते तर्यो छे, एम जाणवुं जे मुनि आ प्रमाणे मुक्त अने विरतपणाथी विख्यात न थयो, ते केवो दुःखी थशे ते बतावे छे.

दुव्वसुमुणी अणाणाए, तुच्छए गिलाइ वत्तए, एस वीरे पसंसिए, अच्चेइ लोयसंजोगं एस नाए पवुच्चइ(सू १००

वसु द्रव्य छे. अने भव्य अर्थमां उत्पन्न थयुं छे. ते मोक्षरूपी भव्य द्रव्य छे. एटले मुक्ति गमन योग्य जे द्रव्य ते वसु छे. अने खराब मार्गे वपराय ते दुर्वसु छे. एटले दुरुपयोग करनार जे मुनि छे. ते मोक्षगमनने अयोग्य छे. (अर्थात् जे संयमरूप धनने खोटे मार्गे ले छे, तेथी तेनो मोक्ष न थाय.) आम शाथी थाय ? ते कहे छे. तीर्थंकरना उपदेशथी शून्य बनी स्वच्छंदाचारी बने छे.

प्रश्न—शाथी ते स्वछंदी बने छे. ? उत्तर—प्रथम कहेला उद्देशामां बताव्युं छे. ते समजवुं अर्थात् जाणवुं. ते आ प्रमाणे छे. मिथ्यात्वथी मोहीत लोक छे. तेमां तत्व समजवुं दुर्लभ छे अने व्रतोमां आत्माने रोकवो ते कठण छे. अने रति अरतिने दाबवी तथा पांच इन्द्रियना विषयमां इष्ट अनिष्टमा समभाव भाववो तथा प्रान्त (निरस) तथा लुखो आहार करवो माटे तीर्थंकरनी आज्ञा नहि मानी

धार उपर चालवा माफक पाळवी कठण छे. तथा अनुकूळ प्रतिकूळ जुदा जुदा उपसर्गो सहेवा कठण छे. अने ते न सहेवानुं कारण अनादि अतीत काळ सुखनी भावना जीवने छे. ते स्वभावथी दुःखमां बीकण अने सुखनो प्रिय बनीने वीतरागनी आज्ञाने पाळतो नथी. तेमां दुःख माने छे. कारणके आज्ञा सहन करवानी छे. सुख के दुःखमां समभाव राखवानो छे, ते भूली परवश बनी तुच्छ एटले, पापना उदयथी द्रव्यथी, निर्धन अथवा, घट अथवा जळ विगेरेथी रहित बने छे. (पीवाने पाणी पण मळतुं नथी.) तथा भावथी रिक्त एटले ज्ञान दर्शन चारित्र तेने मळतुं नथी; एटले ते मूर्ख साधुने कोइए प्रश्न करतां जवाब आपवामां अशक्त होवाथी बोलवाने शरम आवे छे, अथवा, ज्ञानवाळो छतां, चारित्रभ्रष्ट होवाथी; खरुं बोलतां पोतानी पूजा नहीं थाय; माटे शुद्ध मार्ग कहेवाना अवसरे बोलतां शरमाय छे. पोते परिग्रह राखे त्यारे कोइ पूछे के, साधुने धन राखवुं कल्पे ? त्यारे पोते कहे केः—धन राखवामां दोष नथी; एवुं खोटुं पण बोले. जे कषायरूपी–महाविषनो टाळनार भगवाननी आज्ञा पाळनार ते 'सुवसु' मुनि छे, ते ज्ञानथीभरेलो प्रभुना कहेला मार्गने बतावनारो कर्मने विदारवाथी वीर बनेलो उत्तम पुरुषोए प्रशंसेलो छे. (जे आज्ञा पाळे ते प्रशंसा तथा सद्गतिने पामे; अने जे आज्ञा न पाळे; ते अपमान अने दुर्गति पामे.)

वळी "अच्चेइ" भगवाननी आज्ञाने अनुसरनारो वीरपुरुष असंयत लोकथी जे ममत्व थाय तेने त्यजे छे, ते लोक बे प्रकारना छे. एटले–बाह्य, धन, सोनुं, मातापिता विगेरेमां ममत्व थाय छे, ते तथा हृदयमां रागद्वेष विगेरे अथवा तेनाथी बंधातां आठ प्रकारनां कर्म, ते अभ्यंतर लोक (ममत्व) छे तेनो संयोग उल्लंघे छे, अर्थात ममत्व त्यागे छे.

जो, एम छे तो, शुं करवुं ! ते कहे छेः—जे आ लोकना ममत्वनुं उल्लंघन छे, ते सारो मार्ग एटले, मोक्षाभिलाषिओनो आचार

छे ते कहे छेः—अथवा 'परं' ते आत्मा छे, तेने मोक्षमां लइ जाय छे, ते 'नाय' (मागधी सूत्र प्रमाणे) छे तेनो अर्थ आ छे. के जे, लोकनो संयोग त्यजे; तेज श्रेष्ठ आत्माना मोक्षनो न्याय छे. सदुपदेशथी मोक्ष मेळवनारो कहेवाय छे.

एम हो; पण, ते उपदेश केवो छे ते कहे छेः—

जं दुक्खं पवेइयं इह माणवाणं, तस्स दुक्खस्स कुसला परिन्नमु दाहरंति, इह कम्मं परिन्नाय, सव्वसो जेअणन्नदंसी, से अणन्नारामे, जे अणण्णारामे, से अणन्नदंसी, जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ, जहा तुच्छस्स कत्थइ जहा पुणस्स कत्थइ (सू० १०१)

जे दुःख अथवा दुःखनुं कारण अथवा, लोकना ममत्वथी वन्धातुं कर्म तीर्थंकरोए वताव्युं छे के, आ संसारमां जीवोने आवां आवां दुःखो छे, ते दुःखने अथवा तेनां कर्मने धर्मकथानी लब्धि प्राप्त करेला जैन तथा जैनेतर मतना जाण गीतार्थ योग्य विहार करनारा; बोले तेवुं पाळनारा, निद्रा जीतेला; इन्द्रियो वश राखनारा, देशकाळ विगेरेनुं स्वरूप जाणनारा; उत्तम गुणोवाळा साधुओ विगेरे आवी परिज्ञा वतावे छे के, दुःखोनुं मूळ कारण तथा, तेनुं रोकावानुं कारण आ प्रमाणे छे. ते जाणीने ज्ञ-परिज्ञावडे प्रत्याख्यान परिज्ञावडे पापने त्यागे छे. वळी, उपर दुःख थवानो विचार विगेरे मनुष्य तथा बीजा जीवोनुं कह्युं ते दुःख जाणवानी तथा दुःखनुं मूळ पाप त्यागवानी बे प्रकारनी परिज्ञा—गीतार्थ साधुओए बतावी. ते परिज्ञा करीने तथा, पापनां मूळ आश्रवद्वार जाणीने छोडवा ते कहे छेः—

ज्ञाननुं शत्रुपणुं (भणनारने विघ्न करवुं) विगेरे करवाथी ज्ञानावरणीयकर्म बन्धाय छे. तेम आठे कर्म संबंधी जाणीने प्रत्याख्यानपरिज्ञावडे पाप छोडीने तेना आश्रवद्वारमां मन–वचन–करवा–करावचा तथा अनुमोदवावडे पोते न वर्ते, अथवा, सर्बथा जाणीने कहे छे. सर्बथा 'परिज्ञान' ते केवळीने गणधरने अथवा चौदपूर्वि साधुने छे.

अथवा सर्वथा 'कहे छे' एटले आक्षेपणि विगेरे चार प्रकारनी धर्मकथा छे ते टिप्पणमां नीचे मुजब छे.

स्थाप्यते हेतु दृष्टान्तैः स्वमतं यत्र पण्डितैः । स्याद्वाद ध्वनिसंयुक्तं सा कथाऽऽक्षेपणी मता ॥१॥

हेतु अने दृष्टांत वडे पंडितो जेमां स्याद्वादवादने अनुसरी जे वचन बोले, ते वचनयुक्त जे कथा ते आक्षेपणी छे.

मिथ्यादृशां मतं यत्र, पूर्वापरविरोधकृत् ॥ तन्निराक्रियते सद्भिः सा च विक्षेपणीमता ॥२॥

मिथ्यादृष्टिओना मतने तेमनो पूर्व अपर विरोध बतावी उत्तम पुरुषो तेनो निषेध करे, ते कथा विक्षेपणी छे.

यस्याः श्रवण मा ेण, भवेन्मोक्षाभिलाषिता ॥ भव्यानां सा च विद्वद्भिः प्रोक्ता संवेदनीकथा ॥३॥

जेना सांभळवा मात्रथी भव्य पुरुषोने मोक्षनी अभिलाषा थाय, तेवी विद्वानोनी कहेली कथाने संवेदनीकथा कहे छे.

यत्र संसारभोगाङ्ग, स्थितिलक्षणवर्णनम् । वैराग्य कारणं भव्यैः सोक्ता निर्वेदनीकथा ॥४॥

जे संसार भोगना अंगोनी स्थितिना लक्षणनुं वर्णन छे अने वैराग्यनुं कारण छे तेवी कथाने भव्य पुरुषो कहे छे ते निर्वेदनीकथा जाणवी ते कथा केवी छे. ते कहे छे बीजुं एटले जैन सिवायनुं जे तत्त्व तेने माने ते अन्यदर्शी–तथा न अन्यदर्शी ते यथायोग्य

गीतार्थ साधु छे ते मोक्ष सीवाय बीजा मार्गमां रमतो नथी.

पदार्थ जाणनारो सम्यक्‌दृष्टि जिनवचन माननारो

हेतु अने हेतुवाळा–भाववडे सूत्रने जोडवा कहे छे के जे भगवानना उपदेशथी अन्य स्थानमां रमणता न करनारो ते अनन्य-दर्शी छे अने जे अनन्यदर्शी छे ते बीजे रमे नही कहुं छे के—

"शिवमस्तु कुशास्त्राणां वैशेषिकषष्टि तंत्र बोद्धानाम्। येषां दुर्विहितत्वाद्भगवत्यनुरज्यते चेतः ॥१॥"

कुशास्त्रो जे, "वैशेषिकपष्टितंत्र" तथा बौद्धनां रचेलां छे, तेमनुं पण भलुं थाओ; कारणके, तेमनामां विसंवाद जोइने जिनेश्वरना वचनमां अमारुं मन रंजित थाय छे.

आ प्रमाणे सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहेल छे, ते कहेनार रागद्वेष दूर करनारो थाय छे ते बतावे छे.

जहा पुण्णस्स. विगेरे.

तीर्थंकर, गणधर, आचार्य विगेरे जे प्रकारे इन्द्र चक्रवर्त्ती मांडलीक राजा विगेरे पुन्यवान–जीवने उपदेश करे छे. तेज प्रमाणे कठीयारा विगेरे तुच्छ जीवोने पण उपदेश करे छे. (बन्नेमां तेमनो समभाव छे,) अथवा पूर्ण ते जाति, कुळ, रूप, विगेरेथी पुण्यवान छे, अने नीच जाति कुरुपवाळो ते तुच्छ छे, अथवा, विज्ञानवाळो पूर्ण तथा, अन्य सामान्य बुद्धिवाळो तुच्छ छे, ते दरेकने उत्तम पुरुषो समानभावे उपदेश करे छे. कह्युं छे केः—

"ज्ञानैश्वर्यधनोपेतो, जात्यन्वय बलान्वितः। तेजस्वी मतिमान् ख्यातः पूर्णस्तुच्छो विपर्ययात् ॥१॥"

ज्ञान, ऐश्वर्य अने धनवाळो, तथा जातिवंश, तथा बळवाळो तेजस्वी, बुद्धिमान प्रख्यात ए गुणवाळो पूर्ण कहेवाय; अने तेथी रहित ते तुच्छ कहेवाय. आनो परमार्थ आ छे के, साधुओ, भिक्षुक विगेरेने तेना कल्याण माटे स्वार्थ राख्या विना उपदेश करे छे. तेज प्रमाणे चक्रवर्त्ती विगेरेने पण उपदेश करे छे.

अथवा चक्रवर्त्ती विगेरेने संसारथी पार उतारवाना हेतुने जेवा आदरथी कहे छे, तेज प्रमाणे भीक्षुकने पण कहे छे. आ वाक्यथी साधुमां 'निरीहता' (निस्पृहता) वतावी.

पण एवो नियम नथी के, बधाने एक सरखीरीते कहेवुं; पण जेम जेने बोध लागे तेम तेने कहेवुं; एटले, बुद्धिमानने समजाववुं होय तो सूक्ष्म वात कहेवी; अने सामान्य बुद्धिवाळाने सादी वात कहेवी; तथा राजाने कहेतां तेना अभिप्रायने अनुसरीने कहेवुं; एटले, उपदेशके विचारवुं के, आ राजा अन्यदर्शनना आग्रहवाळो छे के, मध्यस्थ बुद्धिवाळो छे के संशयवाळो छे ? के, संशयरहित छे ? तथा आग्रहवाळो छतां, कुतीर्थिओए कदाग्रहवाळो बनाव्यो छे के, पोते कदाग्रही छे ? जो एवो होय; तो, तेने आ प्रमाणे कहेतो क्रोध थाय. जेमकेः—

"दशसूना समश्चक्रो, दशचक्रिसमो ध्वजः । दशध्वजासमो वेश्या, दशवेश्या समो नृपः ॥१॥"

दशसूना समान चक्री छे, अने दशचक्री समान ध्वजा छे. अने दशध्वजा समान वेश्या छे. अने दश वेश्या जेवो एक राजा छे. माटे (आवुं न बोलवुं.) तेनी भक्ति रुद्र, विगेरे देवता उपर होय; तो, तेनुं चरित्र कहेतां तेने तेना पापना उदयथी सत्य

कहेतां पण, मोह उत्पन्न थतां द्वेषी थाय; अने द्वेषी थइने शुं करे ते पण कहे छे:—

अवि य हणे अणाइयमाणे, इत्थंपि जाण सेयंति नत्थि, केयं पुरिसे कं च नए ? एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडियमोयए, उड्ढं अहं तिरियं दिसासु से सव्वओ सव्व परिन्नाचारी, न लिप्पई छण पएण वीरे से मेहावी अणुग्घायण खे यन्ने जे य बन्ध पमुक्ख मन्नेसी कुसले पण नो बद्धो नो मुक्के ॥ (सू० १०२)

क्रोधायमान थयलो राजा वाचाथी अपमान करे; अने तेनुं गायुं न गावाथी वखते मारवा पण तैयार थाय; एटले, लाकडी-चाबकाथी साधुने मारे कह्युं छे के:—

'तत्थे व य निट्ठवणं बंधण निच्छुभण कडगमद्दो वा । निव्विसयं व नरिंदो करेज्ज संघंपि सो कुद्धो ।१।'

क्रोधायमान थयलो निष्ठापन करे; बंधन करे; देशनिकाल करे; सेनापासे मार मरावे; अथवा, पोतानां राज्यमां आवतां बंध करे अथवा संघने पण दुःख आपे; ते प्रमाणे, तच्चनिक (विगेरे नो) उपासक-नंदबळनी कथाथी एटले, बुद्धनी उत्पत्तिना कथानकथी; भागवत मतनो भल्लिग्राहनां दृष्टांतथी रौद्रमतनो पेढालनो पुत्र सत्यकी उमाना दृष्टांतने सांभळवाथी द्वेषी थाय छे. (बीजा मतना गुणो न जोतां इर्षारूपे कथाओ जोडी काढेल छे, तेवी कथा कहेतां बीजा मतवाळाने क्रोध थाय छे. माटे, वने त्यांसुधी

गुणेप्राप्तिनीज कथा करवी;) अथवा भीखारी काणोकुट (हाथपगनी खोडवाळो) तेने उद्देशीने धर्मफळना उपदेशरूप–कथा कहेतां तेने क्रोध थाय. आ प्रमाणे, विधि न जाणनारो कथा कहे; तो, तेने बाधा (पीडा) थाय छे, तथा तेमां परलोकनो पण कंइ लाभ नथी विगेरे जाणवुं, जोके, मुमुक्षुने धर्मकथापरना हित माटे कहेतां पुन्य छे, पण जो, कहेनार सभाने न ओळखे; अने द्वेषनुं वचन बोले; तो, तेने शास्त्रकारे पुन्य बताव्युं नथी.

अथवा राजानुं अपमान थतां धर्मकथा कहेनार साधुने हणे; एटले, राजा पशुवधनो यज्ञ करे; तथा, श्राद्ध, होम, विगेरे करे; तेमां, धर्म मानतो होय; ते समये धर्मकथा कहेनार साधु राजाना सांभळतां कहे केः–तेमां धर्म नथी; तो, राजा क्रोधी थइने दुःख आपे.

अथवा, जे जे अविधिए कहे; तेमां पण साधुने श्रेय नथी. ते बतावे छे.

साक्षर पंडितनी सभामां पक्षहेतु दृष्टांत विगेरे छोडीने प्राकृत भाषामां कहेवुं ते अनुचित छे, तथा मूर्खोनी सभामां तत्त्व समजाववा जवुं; ते पण अनुचित छे. एज प्रमाणे कंइपण अनुचित कार्य करतो साधु जैनधर्मनी हीलनाज करे छे, अने तेने पापनोज बन्ध छे, तेनुं कल्याण थवानुं नथी; माटे, तेवा विधि न जाणनारा पुरुषे मौन धारण करवुं वधारे सारुं छे. (के बीजाने क्रोध उत्पन्न करी अशुभकर्म पोते न बांधे.) कह्युं छे केः—

'सावज्जणवज्जाणं वयणाणं जो न याणइ विसेसं । वुत्तुंपि तस्स न खमं, किमंग पुण देसणं काउं ॥१॥'

जेने सावद्य अने निर्वद्य वचननुं जाणपणुं नथी; तेने बोलवानो पण अधिकार नथी. तो, तेने उपदेश आपवानो अधिकार

क्यांथी होय ? आ प्रमाणे छे. तो, धर्मकथा केवीरीते करवी ते कहे छेः—जे, पोतानी इन्द्रियोने वशमां राखनारो छे, अने विषय
विपनो वेरी छे, संसारथी उद्वेग मनवाळो छे, अने वैराग्यथी जेनुं हृदय खेंचायलुं छे, तेवो माणस धर्मने पूछे; तो, ते समये आचार्य
विगेरे धर्मकथा कहेनारे विचारवुं के, आ पुरुष केवो छे ? मिथ्यादृष्टि छे के भद्रक छे? अथवा, केवा आशयथी पूछे छे? एनो इष्ट-
देव क्यो छे? एणे क्यो मत मान्यो छे? विगेरे विचारीने योग्य उत्तर समय उचित कहेवो ते बतावे छे.

एनो सार आ छे के धर्मकथानी विधि जाणनारे पोते आत्ममां परिपूर्ण होय ते सांभळनारनो विचार करे के द्रव्यथी ते केवो
छे. तथा आ क्षेत्र केवुं छे ? जेमां तच्चनिक भागवत अथवा बीजा मतवाला अथवा पतित साधुए अथवा उत्कृष्ट साधुओए आ क्षेत्रने
केवा रूपमां बनाव्युं छे. अने काळ ते सुकाळ छे के दुकाळ छे. अथवा वस्तु मळे तेम छे के नहीं. अने भावथी जोवुं के पूछनार
माणस मध्यस्थ भाववाळो छे. के रागी द्वेषी छे, विगेरे विचारीने जेम ते बोध पामे, तेवी धर्मकथा करवी. उपरना गुणवाळो माणस
धर्मकथा करवाने योग्य छे. बीजाने अधिकार नथी. कह्युं छे के—

'जो हेउवायपक्खंमि, हेउओ आगमम्मि आगमिओ । सो ससमयपण्णवओ सिद्धंत विराहको अण्णो ।१।'

जे हेतुवाद पक्षमां हेतुने बतावनार छे. आगममां आगम बतावनार छे. ते स्वसमयनो प्रज्ञापक (उन्नति करनार) अने बीजो
सिद्धांतनो विराधक छे. (जो पूछनार हेतु मागे तो हेतु बतावे अने युक्तिथी सिद्ध करे अने आगम प्रमाण मागे तो आगम बतावे
ते बन्नेनो जाणनारो बीजाने धर्मकथा कहे ते योग्य छे.)

जे उपर प्रमाणे धर्मकथानी विधिने जाणनारो छे. ते प्रशस्त छे, अने जे पुन्यवान अने पुन्यहिनने धर्म कथामां समदृष्टिना विधिए जाणे छे. तथा सांभळनारनो विवेक करी शके तेवा गुणवाळो कर्मने विदारण करनार वीर साधु, उत्तम पुरुषोथी वखाणाएलो छे. वळी तेनुं वर्णन करे छे.

'जे बद्धे' विगेरे.

ते आठ प्रकारना कर्मवडे अथवा स्नेह रूप सांकळ विगेरेथी बंधाएला प्राणीओने धर्मकथा संभळाववा, विगेरेथी मुकावनारो थाय तेज तीर्थंकर गणधर अथवा आचार्य विगेरे उपर कहेली धर्मकथानी विधि जाणनारो छे.

ते क्ये स्थाने रहेला जीवोने मुकावे छे? ते कहे छे. उंचे रहेला ज्योतिषी विगेरेने तथा नीचे भवनपति विगेरेने तथा तिर्यंच तथा मनुष्यने बोध आपे छे; (देवताना जीवो सम्यक्त्व पामे अने तिर्यंच पचेंद्रिय चारित्रनो थोडो भाग अने मनुष्य पूर्ण चारित्र पण पामे.)

वळी ते वीर पुरुष बीजाने मुकावनारो हमेशां बन्ने परिज्ञाए पोते चाले छे, एटले सर्वोत्तम ज्ञाने युक्त छे, अने सर्व संवर चारित्र पाळनार छे, ते पोते जे गुणोने मेळवे छे ते कहे छेः—

पोते हिंसाथी थतां पापे लेपातो नथी; (एटले कोइनी हिंसा करतो नथी.) (क्षणनो अर्थ हिंसा कर्यो छे,) ते मेधावी (बुद्धिमान) पण छे, एटले, जेनावडे जीवो चार गतिमां भमे ते अण (कर्म) छे, तेनो घात करे; ते खेदने जाणनारो निपुण मुनि छे. एटले ते कर्म क्षय करवानो उद्यम करनारा मोक्षाभिलाषीओने कर्म क्षय करवानी विधि बतावनार पण छे, ते मेधावी, कुशळ, वीर मुनि छे,

तथा, जे प्रकृति, स्थिति, रस, प्रदेश. एम चार प्रकारनां बन्धनोथी मोक्ष करावे; अथवा तेनो उपाय बतावे; ते 'अन्वेषि' पण छे, (ते पूर्वनां वाक्य साथे जोडवुं;) एटले, जे जीव हत्याने दूर करे; खेदने जाणे; ते मूळ उत्तर प्रकृतिना भेदोवडे भिन्न, तथा योगनिमित्ते आवती कर्मप्रकृति, तथा कषाय-स्थितिवाळी कर्मनी बन्धाती अवस्थाने जाणे छे. बांधवुं; स्पर्श करवो; निधत्त करवुं; निकाचित करवुं. आ कर्म परिणामने आश्रयी बन्धाय छे, अने सारा भावथी तेनो नाश थाय छे, ए बन्नेने ते जाणे छे.

प्रश्न—आ फरीथी केम कह्युं ? उत्तरः—पुनरुक्त दोष लागतो नथी; कारणके, एनावडे कर्म छोडवानुं बताव्युं छे.

प्रश्न—उपर बतावेला गुणोवाळो साधु छद्मस्थ कहेवो के, केवळी कहेवो ? उत्तरः—उपरनां विशेषण केवळी साधुने न घटे; माटे, छद्मस्थ लेवो; तो केवळीनी शी वात. प्रश्नः—कुशल साधुना केवा गुणो होवा जोइए ?

उत्तरः—कुशळ एटले, जेणे घातिकर्मनो संपूर्ण क्षय कर्यो छे, ते तीर्थंकर अथवा, सामान्य केवळी छे.

अने छद्मस्थ-घातिकर्मथी बन्धायलो मोक्षार्थि तथा, तेना उपायने शोधनारो छे, अने केवळी पोते घातिकर्मनो क्षय थवाथी पोते कर्मथी बन्धायलो नथी; पण, अघाति चार कर्म जे भव उपग्रहीक छे, ते तेने होवाथी पोते मुक्त पण नथी; अथवा, तेवा गुणीने छद्मस्थज कहीए छीए. के, 'कुशळ' ने, जेणे ज्ञानदर्शन-चारित्र मेळवेलुं छे, तथा मिथ्यात्त्व, अने बार कषायोनो उपशम करेलो होवाथी; तेने उदयमां न होवाथी ते 'बन्ध' न कहेवाय. आ प्रमाणे, गुणवान साधु कुशळ होय; पछी, ते केवळी होय के, छद्मस्थ होय; पण ते साधुना आचारने पाळतो होवो जोइए. जेम साधु माटे कह्युं; तेम, बीजा मोक्षाभिलाषीए पण वर्त्तवुं ते बतावे छे.

से जं च आरभे जं नारभे, अणारद्धं च न आरभे, छणं छण परिण्णाय लोगसन्नं च सव्वसो (सू० १०३)

जे संयम अनुष्ठानने संपूर्ण कर्मक्षय माटे आदरे; ते मिथ्यात्व अविरति विगेरे संसारनां कारणने न आरंभे; एटले, साधुपणुं आराधे; अने संसारीपणुं छोडे; एटले, अढारे प्रकारनां पापो विगेरे जे एकांतथी दूर करवानां छे, तेवां पापो छोडीने संयम अनुष्ठानने करीने मोक्ष पामे; अने केवळी, अथवा, उत्तम साधुओए जेने अनाचीर्ण कह्युं; ते पोते न करे; अने मोक्ष अनुष्ठान करे. वळी, जिनेश्वरे त्यागवा योग्य कह्यु; तेमां मुख्यत्वे हिंसा छे. ते हिंसानां कारणने जाणीने साधु तेने छोडे. ज्ञ-परिज्ञाए जाणे; अने प्रत्याख्यान परिज्ञाए त्यागे; अथवा, क्षणनो अर्थ हिंसाने बदले समय लइए; तो समयने जाणीने ते काळे ते काम करे.

वळी लोक जे गृहस्थो छे, तेमने सुखनी अभिलाषा छे, अथवा, ते कारणे तेने परिग्रहनी संज्ञा छे, तेवी संसारी-वासनाने साधु छोडे, ते मन, वचन, कायाथी पोते न करे, न करावे; न अनुमोदे; तेथी कह्युं केः—उपरना गुणवाळो धर्मकथा-विधि जाणनारो, बन्धायला ने मुकावनारो कर्मने छेदवामां कुशळ, अने बन्ध-मोक्षनी खोळ करनारो सुमार्गे चालनारो, कुमार्गने समजी अढार पापने रोकनारो, संसारी-लोकनी स्थिति चाणारो जे मुनि छे, तेने शुं थाय ते बतावे छे.

उद्देसो पासगस्स नत्थि, बाले पुणे निहे कामसमणुन्ने असमिय दुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ, (सू० १०४) त्तिबेमि लोकविजयाध्ययनम् ॥२॥

जे परमार्थथी जोनारो छे, तेने त्रीजा उद्देशाथी लइने आ उद्देशाना छेडा सुधी जे दोष बताव्या; जेनाथी नारकादि गति भोगववी पडे; ते उद्देशो छे, ते गीतार्थ साधुने न होय; तथा बाळ (मूर्ख) संसार प्रेमी होय; ते स्नेह करीने कामनी इच्छाथी दुःखना आवर्त्तमांज वारंवार वर्त्ते छे. एवुं हुं कहुं छुं. (टीकाना श्लोक २५०० छे.) छट्ठो उद्देशो समाप्त थयो. सूत्र अनुगम तथा सूत्रालापक निष्पन्ननिक्षेपो सूत्रने स्पर्श करनारी निर्युक्ति सहित पूरो थयो नयोनुं वर्णन बीजे स्थळे कहुं छे. अहीं संक्षेपामां ज्ञान क्रियानुं प्रधानपणुं जाणवुं. तेमां पण पोते ज्ञानवाळो ज्ञानने एकांत खेंचे अने क्रिया उठावे अथवा क्रियावाळो क्रियाने पकडी राखे तो ते मिथ्यात्वी छे. शिष्यने एम कह्युं के तमारे बन्नेने अपेक्षापूर्वक समजीने बंनेने आराधवां ॐ शांति

लोकविजयनामनुं बीजुं अध्ययन समाप्त थयुं.

इतिश्री आचाराङ्गसूत्रे द्वितीयो भाग समाप्तः ॥श्रीरस्तु॥

समाप्त.

॥ इति श्रीआचाराङ्गसूत्रे द्वितीयो भागः समाप्तः ॥

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

(श्रीसुधर्मास्वामीए रचेलुं अने श्री श्रुतकेवलीभद्रबाहुरचित निर्युक्तिसहित)

।आचाराङ्गसूत्रम्॥ भाग त्रीजो

(मूळ अने शीलाङ्काचार्ये रचेली टीकाना भाषांतरसहित)



जामनगरनिवासी स्व० पण्डित हंसराजभाइ शामजीना स्मरणार्थे

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

१९८९ पडतर किमत रु. २-८-० प्रति २००

श्रीजैनभास्करोदय प्रिन्टिंग प्रेसमां छाप्युं जामनगर.

॥श्रीजिनाय नमः॥

॥ श्रीआचाराङ्गसूत्रम् ॥

(मूळ अने शिलांकाचार्ये रचेली टीकानुं भाषांतर)

भाग त्रीजो

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

(शितोष्णीय नामनुं त्रीजुं अध्ययन.)

बीजुं अध्ययन कह्युं हवे त्रीजुं कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे:—पूर्वे शस्त्रपरिज्ञा नामना पहेला अध्ययनमां आ अध्ययननो अर्थाधिकार कह्यो छे. के शीत, अने गरमीनो अनुकुळ के प्रतिकुळ (सुख–दुःख) परिषह आवे; तो, समभावे सहन करवो. ते हवे कहे छे:—

अध्ययननो संबध शस्त्रपरिज्ञामां कहेल महाव्रतने धारण करेला; अने, लोकविजय नामना अध्ययनमां बतावेल संयम पाळनारा

तथा कषाय विगेरेने जीतनारा मोक्षाभिलाषीसाधुने कोइ वखते अनुकुळ के प्रतिकुळ परिषह आवे छे,ते वखते मन निर्मळ राखीने तेने समभावे सहन करवा. ए प्रमाणे, संबंधथी आ त्रीजुं अध्ययन बताव्युं छे. एना उपक्रम विगेरे चार अनुयोगद्वार थाय छे. तेमां उपक्रममां अर्थाधिकार बे प्रकारे छे, तेमां अध्ययननो अर्थाधिकार पूर्वे कह्यो छे. अने उद्देशनो अर्थाधिकार हवे निर्युक्तिकार बतावे छे.

पढमे सुत्ता अस्संजयत्ति.[1]? बिइए दुह अणुहवंति[2]। तइए न हु दुक्खेणं, अकरण याए व समणुत्ति[3] १९८
उद्देसंमि चउत्थे, अहिगारो उ वमणं कसायाणं। पाव विरईओ विउणो, उ संजमो एत्थ मुक्खुति ॥१९९॥

(१) पहेला उद्देशामां कह्युं छे केः—जे भावनिद्रामां सुता छे, ते सारा विवेकथी रहित छे.

प्रश्नः—ते क्या छे? उत्तरः—जे गृहस्थो छे ते.

ते भावथी सुतेलाओना दोष कहे छे. तथा जे भावथी जागता छे, तेना गुणोने बतावे छे. सूत्र 'जरामच्चुं विगेरे.

(२) बीजा उद्देशामां जे गृहस्थो भावनिद्रामां सुतेला छे, तेमने थतां दुःखो बतावे छे. ते सूत्र 'कामेसु गिद्धा'

त्रीजामां कह्युं छे केः—फक्त दुःख सहन करवाथीज साधु न कहेवाय पण जो, संयमअनुष्ठान करे; तो ते साधु छे नहींतो, ते साधु नहीं. ते सूत्र कहे छे. 'सहिए दुक्ख'

चोथा उद्देशामां कषायोनुं वमन करवुं. एटले न करवा; अने बाकीनां पापो छोडवां. ते पंडित साधुनुं संयम छे, अने प्रथम क्रोधथी लइने लोभ सुधी कषायो दूर थवाथी क्षपकश्रेणिना क्रमथी केवळज्ञान प्राप्त थाय छे, अने अघातिकर्म दूर थवाथी आठे

कर्मोनो नाश थतां मोक्ष थाय छे, ते बे गाथामां बताव्युं छे. नामनिष्पन्ननिक्षेपामां 'शीतोष्णीय' अध्ययन छे माटे शीत उष्ण वन्नेना निक्षेपा कहे छेः—

नामं ठवणा सायं, दव्वे भावे य होइ नायव्वं । एमेव य उण्हस्सवि, चउव्विहो होइ निक्खेवो नि. गा. ।२००।

नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव एम चार प्रकारे निक्षेपा छे. तेमां नाम स्थापना सुगमने छोडी द्रव्य निक्षेपो शीत अने उष्णनो कहे छे.

दव्वे सीयल दव्वे, दव्वुणहं चेव, उण्हदव्वं तु । भावे उ पुग्गलगुणा जीवस्स गुणो अणेगविहो ।२०१।

ज्ञ शरीर भव्य शरीर छोडी व्यतिरिक्तमां गुण गुणीना अभेदपणाथी द्रव्य शीत ठंडा गुणथी युक्त द्रव्य, अथवा शीतनुं कारण जे द्रव्य ते द्रव्यना प्रधानपणाथी ते शीत द्रव्य छे, ते बरफ हिम करा विगेरे छे, एज प्रमाणे उष्णमां गरम पदार्थ लेवा.

भावथी बे प्रकारे छे एटले पुद्गलाश्रयी, तथा जीवाश्रयी छे, ते गाथाना बे पदमां बतावेल छे, तेमां पुद्गलाश्रयी ठंडो गुण गुणना प्रधानपणाने बतावबारूपे छे, तेम भाव उष्णमां पण जाणवुं. जीवने आश्रयी शीत अने उष्ण रुपवाळो अनेक प्रकारे गुण छे. जेमके औदयिक विगेरेज भावो छे. तेमां औदयिक ते कर्मना उदयथी प्रगट थयेल नारकी विगेरे जीवोने भवना आश्रयी पोतानी मेळे कषाय थाय छे ते उष्ण भाव जाणवो. अने औपशमिक ते सात प्रकृतिना उपशमथी उपशम सम्यक्त्व तथा विरति (चारित्र) रूप ठंडो भाव छे, तथा क्षायिक भाव पण ठंडो छे. कारणके ते क्षायिक सम्यक्त्व तथा चारित्र रुपवालो छे.

अथवा बधा कर्मनो दाह ते (क्षायिकभाव) सिवाय उत्पन्न थतो नथी. माटे ते उष्ण छे. तेज प्रमाणे विवक्षाथी बीजा पण बे

प्रकारे थाय छे (आम बे भाव आव्या, बाकीनामां पण तेज प्रमाणे जाणवा.)

जीवना आ भवगुणनुं शीतपणुं अने उष्णपणाना रूपनुं वर्णन निर्युक्तिकार खुलासाथी पोतेज कहे छे.

सीयं परिसहपमायुवसमविरई सुहं चउण्हं तु । परीसहतवुज्जमकसाय, सोगाहिवेया रई दुक्खं दारं ।२०२।

भावशीत, ते अहीं जीवना परिणामरूपे ग्रहण करे छे. ते आ परिणाम छे, के संयममार्गमांथी न पडतां साधुए सकाम निर्जरामाटे परिषहो समभावे सहन करवा, तथा कार्यमां शिथीलता एटले 'विहारमां प्रमाद' न करवो तथा मोहनीय कर्मने शांत करवुं ते सम्यक्त्व. देशविरति तथा सर्व विरति लक्षणवाळो छे अथवा उपशम श्रेणी आश्रयी छे. ते अथवा क्षपक श्रेणी आश्रयी कपाय विगेरेना क्षयरूप छे,

विरति—प्राणातिपात विगेरेथी दूर रहेवुं ते विरति छे. एटले ते सत्तर प्रकारनो संयम छे, तथा सुख एटले पूर्वना पुन्यना उदयथी भोगववुं ते छे. आ परिषह विगेरे तथा शीत गरमी बन्नेने गाथाना बे पदमां कहे छेः—

परिषह पूर्वे कहेला स्वरूपवाळा छे; अने तपमां उद्यम करवो; ते तप बार प्रकारनुं छे, ते शक्ति प्रमाणे आचरवुं; तथा क्रोध विगेरे कषायो छे, तथा इष्ट न मळे; अथवा नाश थाय, तेथी शोक थाय; ते आधि छे, तथा स्त्री, पुरुष, नपुंसक, एम त्रण वेद छे. अरति एटले, मोहना विपाकथी चित्तमां मलिनता थाय ते छे, तथा रोग विगेरे दुःखो छे. आ परिषह विगेरे पीडाकारक होवाथी आत्मा तपे तेथी उष्ण छे. आ प्रमाणे टुंकामां गाथानो अर्थ छे, अने एनुं विशेप वर्णन निर्युक्तिकार पोते कहे छेः—परिषह,

शीत अने उष्णताना कह्या; तेमां मंदबुद्धिवाळाने विचार विना शंका थाय के, उलटुं समजाय; तेथी खुलासो करे छे.

इत्थी सक्कारपरासहो य दो भावसीयला एए । सेसा वीसं उण्हा परीसहा हुंति नायव्वा ॥२०३॥

स्त्री–परिसह, अने सत्कार–परिसह, ए बन्ने शीत छे, कारणके, भाव मनने ते गमे छे, बाकीना वीश परिसह प्रतिकुळ होवाथी ते मनने गमता नथी; माटे उष्ण छे. अथवा परिसहोनुं शीत–उष्णपणुं बीजी रीते कहे छेः—

जे तिव्वप्परिणामा, परिसहा तेभवे उण्हा उ । जे मंदप्परिणामा परिसहा ते भवे सीया ॥नि. गा. २०४दारं॥

दुःखेकरीने सहन थाय; तेवा तीव्र स्वभाववाळा गरम परिसह जाणवा, अने जे मंदपरिणामवाळा (सहेलाइथी सहन थाय;) ते शीतपरिसह छे, तेनो खुलासो करे छे के, जे शरीरमां दुःख उत्पन्न करनारा थाय; अने सहेलाइथी सहन न थाय, तथा मनमां खेद करावे; ते तीव्र परिणामवाळा होवाथी उष्ण छे, अने जे परिषह फक्त शरीरने दुःख उत्पन्न करे छे, पण बळवान पुरुषने मननुं दुःख तेमां थतु न होय; ते भावथी मंदपरिणामवाळा होवाथी ते शीत–परिषह छे.

अथवा जे घणा जोरमां परिषह आवे ते उष्ण छे. अने जे शरीर उपर थोडी असर करे; ते शीत–परिषह जाणवा.

हवे, परिषह पछी साथेज शीतपणे जे प्रमादपद लीधुं छे, अने तपश्चर्यामां उद्यम करवो; ते ऊष्णपणे लीधुं छे. ते बन्नेने नीचली गाथामां कहे छेः—

धम्मंमि जो पमायइ अत्थेवा सीअलुत्ति तं बिंति । उज्जुतं पुण अन्नं तत्तो उण्हंति णं बिंति ॥नि.२०५॥

धर्म ते श्रमण धर्ममां जे साधु प्रमाद करे, पोतानी क्रिया न करे. अथवा जेनाथी अर्थ सधाय ते धन धान्य, सोनुं विगेरे मेळववा उपाय करे, तेवाने शीत (ठंडो) परिषह कहे छे, पण जे साधु प्रमाद न करे अने संयममां उद्यम करे ते उष्ण परिषह कहेवाय छे. (सूत्रमां 'णं' शोभा माटे छे) हवे उपशम पदनी व्याख्या करे छे.

सीईभुओ परिनिव्वुओ य संतो तहेव पणहाणो (ल्हाओ) । होउवसंत कसाओतेणु वसंतो भवे जीवो २०६

उपशम गुण क्रोध विगेरेना उदयना अभावमां होय छे, अने ते कषाय अग्नि ठंडो थवाथी आत्मा ठंडो थाय छे, तथा क्रोध विगेरे अग्निनी ज्वाळा बुझे त्यारे ते परिनिर्वृत थाय छे, अने रागद्वेष रुप अग्निना उपशमथी उपशांत छे तथा क्रोधादि परिताप दूर थवाथी आत्मा आनंदित थाय छे अने तेज सुखी छे कारण के जेने कषायो शांत छे तेज सुखी छे. अने तेथीज उपशांत कषायवाळो आत्मा शीत थाय छे. आ बधां पदो एक अर्थवाळां छे. एटले (१) शीतीभूत (२) परिनिर्वृत (३) शांत (४) प्रल्हाद. आ उपशांत कषाय कहेवाय छे (आ पदोनो अर्थ क्रोधादिने शांत करवानो छे)

हवे विरतिपद कहे छे.

अभय करो जीवाणं सीयघरो संजमो भवइ सीओ । अस्संजमो य उण्हो, एसो अन्नोऽवि पज्जाओ ॥२०७॥

जीवोने अभय करवानो आचार ते शीत (सुख) छे. तेनुं घर छे, ते, प्र. क्युं? उत्तर. सतर प्रकारनो संयम पाळवो ते शीत छे. कारणके; तेमां बधां दुःखनो हेतु जे रागद्वेष विगेरेनां जोडलां छे, ते विरतिमां दूर थाय छे. एथी, उलटो असंयम ते ऊष्ण छे.

आ शीत अने ऊष्ण लक्षणरूप–संयम, असंयमनो वीजो पर्याय, सुख दुःखरूप छे. ते विवक्षाना कारणथी थाय छे. तेथी हवे, सुखपदनुं विवरण करे छे.

निव्वाणसुहं सायं सीईभूयं पयं अणावाहं । इहमवि जं किंचि सुहं तं सीयं दुक्खमवि उण्हं नि. ॥२०८॥

मोक्षसुखनुं स्वरूप

अहींयां सुखने शीत कह्युं छे, अने ते रागद्वेष विगेरेनां वधां जोडकां दूर थवाथी घणुंज अने एकांत बाधारहित लक्षणवाळुं निरुपाधिक परमार्थ चिंतामां विचारतां मुक्तिनुं सुख तेज साचुं सुख छे, पण वीजुं नथी. अने ते सुख आठे कर्मनो ताप दूर थवाथी शीत छे. ते निर्वाण सुख बतावे छे, अने निर्वाण ते वधा कर्मनो क्षय जाणवो, अथवा विशिष्ट आकाश प्रदेशवाळुं स्थान (सिद्धिस्थान) तेमां (जीव निश्चल पणे) रहेवाथी निर्वाण सुख छे. अने आ वधां पदो एक अर्थवाळां छे. एटले साता शीतीभुत, अनावाधपद ए त्रणेनो अर्थ निर्वाण सुख छे. अने आ संसारमां पण सातावेदनीयना विपाकथी उदयमां आवेलुं सुख ते मनने आनंद आपवाथी शीत छे. अने तेथी उलटुं पापथी उदयमां आवेलुं दुःख ते उष्ण छे.

हवे कषाय विगेरे पदो कहे छे.

डज्झइ तिव्वकसाओ सोगभिभूओ उइन्नवेओ य । उण्हयरो होय तवो कसायमाईवि 'जं' डहइ ॥२०९॥

आ कषाय अग्निवाळो जीव तीव्र एटले घणा प्रमाणमां विपाक उदयमां आवतां कषायो जेने उदयमां आव्या होय ते बळे छे.

फक्त बळे छे, एटलुंज नहीं पण शोक एटले व्हालांना वियोगथी उत्पन्न थयेल शोकथी मूढ बनीने शुभ व्यापार (धर्म) ने जे भुले ते पण बळे छे. तथा जेने संसारी सुख भोगववानी इच्छा थइ होय, तेवोपण बळे छे कारण के पुरुष वेदवाळो स्त्रीने इच्छे छे. अने स्त्री पण पुरुषने इच्छे छे, अने नपुंसक तो बंनेने इच्छे छे तेनी प्राप्ति न थाय तो आकांक्षा पुरी न थवाथी ते अरति दाहे बळे छे, अने (च) शब्दथी (शब्द विगेरे पांच इन्द्रियना विषयोनी) इच्छा अने कामनी प्राप्ति न थाय तोपण जीव अरतिना दाहे बळे छे, तेथी आ प्रमाणे कषायो शोक अने वेदनो उदय ए त्रणे जीवने बाळनारा होवाथी ते उष्ण छे. अथवा बधुं मोहनीयकर्म, अथवा आठे प्रकारनुं कर्म उष्ण छे आथी पण वधारे दाहकपणावाळुं तप छे ते अडधी गाथामां बताव्युं छे, कारण के उष्ण कषायने पण तप तपावे छे. माटे ते तप उष्णतर छे. मूळ गाथामां कषाय जोडे आदि शब्द छे. तेथी एम जाणवुं के तप कषायने बाळे; तेम शोक अने वेद उदयने पण बाळे छे. आ प्रमाणे अनेक रीते शीत उष्ण बतावी जे अभिप्रायवडे आचार्ये द्रव्यभावथी भेदवाळा परिषह प्रमाद उद्यम विगेरे रूपवाळा शीत उष्ण बतावेल छे, ते आचार्यना अभिप्रायने हवे प्रगट करे छे.

सीउण्हफाससुहदुहपरीसहकसायवेयसोयसहो । हुज्ज समणो सया उज्जुओ, य तवसंजमोवसमे ॥२१०॥

शीत अने उष्ण ए बन्नेनो जे स्पर्श छे, तेने सहन करे; एटले, शीतस्पर्श अने उष्णस्पर्श शरीरे (अधिकपणामां) लागवाथी जीववेदनाने अनुभवतो होय; छतां आर्तध्यान न करे; एटले, शरीर अने मनने अनुकुळ थतां सुख अने विपरित थतां दुःख अनुभवे; तथा परिषह कषायवेद तथा शोक जे ठंडी तथा गरमीथी उत्पन्न थाय ते बधांने सहे छे. आ प्रमाणे ठंड अने उष्ण विगेरे

सहीने साधु हंमेशां तप अने संयमना ऊपशममां उद्यमवाळो थाय (अर्थात् गृहस्थ उनाळामां के शियाळामां जीवोने दुःखरुपी-पाणी छांटवानुं के, अग्नि बाळवानुं पाप करे छे. तथा हायपीट करे छे, अथवा, बगीचा विगेरेमां जइ वनस्पतिने दुःख आपी पोते सुख मानी अहंकार करे छे तेवुं साधुए न करवुं; पण सुखदुःखने समभावे सहन करीने समाधिमां रहेवुं.) हवे समाप्त करतां ए टंड तापने घणा प्रमाणमां सहेवां ते बतावे छे.

सीयाणि य उण्हाणि य, भिक्खूणं हुंति विसहियव्वाइं। कामा न सेवियव्वा, सीओसणिज्जस्स निज्जुत्ती २११

परिषह-प्रमाद उपशम-विरति सुखरुप जे पदो पूर्वे ठंडपणे बताव्यां; तथा परिषहतप उद्यम-कषाय शोकवेद अरतिरुप पूर्वे उष्णरूपे बताव्यां छे. ते बधांने मोक्षाभिलाषी साधुए सहेवां; पण, ते सुखनो हर्ष, अने दुःखनो शोक न करवो; ते परिषहोने सम्यक् दृष्टि जीव जो कामनी अभिलाषा दूर करे; तो तेनाथी सहन थाय छे, माटे, निर्युक्तिकार कहे छे केः—गमेतेवा परिषह ठंड के, उष्णताइना आवे; तोपण, ते कामो (खोटी इच्छाओ) मां चित्त न राखवुं तथा कुमार्गे न जवुं.

आ प्रमाणे, त्रीजा अध्ययनना नामनिष्पन्न निक्षेपो कह्यो. हवे, सूत्र अनुगममां अस्खलित विगेरे गुणवाळुं निर्दोष वचन कहेवुं ते आ छे—

सुत्ता अमुणी सया मुणीणो जागरंति (सूत्र० १०५)

पूर्व सूत्र साथे एनो संबंध बतावे छे, दुःखोना आर्त्त (चक्रावा) मां जे भमे ते दुःखी छे, एटले आ लोकमां जेओ भाव निद्रामां अज्ञानी जीवो सुताछे. ते दुःखोना चक्रावामां भमवाथी दुःखी छे. कह्युं छे केः—

नातः परमहं मन्ये, जगतो दुःखकारणम् । यथाऽज्ञान महारोगो, दुरन्तः सर्वदेहिनाम् ॥१॥

आ जगतमां जे अज्ञानरूपी महारोग सर्वे जीवोने दुःखे करीने दूर थाय तेवो असाध्य छे, तेनाथी बीजुं दुःखनुं कारण हुं मानतो नथी, विगेरे छे. अहिंआं सुतेला बे प्रकारना छे, द्रव्यथी अने भावथी तेमां निद्रा प्रमादवाळा द्रव्यथी सुता छे. अने मिथ्यात्व अने अज्ञानरुप महानिद्राथी मूढ बनेला जेओ मिथ्यादृष्टि (मोक्ष मार्गथी विमुख) अमुनि छे. तेओ निरंतर भावथी सुतेला जाणवा, कारणके तेओ (सर्व जीवोने अभय दान आपवा रूप) सम्यकज्ञान तथा चारित्रनी क्रियाथी रहित छे. पण निद्रामां पडेलानुं आ प्रमाणे समजवुं के वखते मिथ्यादृष्टि होइ अने सम्यक् दृष्टि पण होय, आ अमुनि माटे बताव्युं हवे मुनिओनुं वर्णन करे छे. तेओ हंमेशां सुबोधथी युक्त अने मोक्षमार्गथी चलायमान थता नथी पण निरंतर हितने मेळववा अहितने छोडवा. संयम पाळवा प्रयास करे तेथी तेओ जागता छे अने शरीरनी स्वभाविक अशक्तिथी द्रव्य निद्रा तेओने होय (सुवे) तो पण रातना नवथी त्रण वाग्या सुधी शास्त्रमां बतावेली विधए सुवाथी तथा अल्प निद्राथी तेओ जागताज छे, आज भाव स्वाप (सुवुं) तथा जागरण करवुं ते संबंधी निर्युक्तिकार गाथा कहे छेः—

सुत्ता अमुणिओ सया मुणिओ सुत्ता वि जागरा हुंति । धम्मं पडुच्च एवं निद्दासुत्तेण भइयव्वं ॥नि. २१२॥

द्रव्यथी अने भावथी बन्ने प्रकारे सुता छे, तेमां निद्राथी सुतेलानुं वर्णन पछी कहेशे. अने भावथी सुतेलानुं पहेलां कहे छे. अने जेओ अमुनि (गृहस्थो) मिथ्यात्वथी तथा अज्ञानथी घेराइने हिंसा विगेरे पांच आस्रव सदा वर्ते छे, तेओ भावथी सुतेला छे. अने

मुनिओने मिथ्यात्व अज्ञानरुप निद्रा दूर थवाथी सम्यक्त्व विगेरेनो बोध पामीने भावथी तेओ जागता छे.

जो के, आचार्यनी आज्ञा लइने, मुनिओ नवथी त्रणसुधी रात्रीना बीजा त्रीजा पहोरे दीर्घसंयम माटे शरीर आधाररूप होवाथी सुवे; तोपण तेओ सदाए जागताज छे. आ प्रमाणे धर्मने आश्रयीने सुता अने जागता बताव्या. हवे, द्रव्यनिद्रामां सुतेलामां भजना जाणवी; एटले, तेमनामां धर्म होय अथवा न पण होय.

एटले जो भावथी जागे; अने निद्राथी आंखो घेरावाथी सुवे तोपण तेने धर्म छे, अने भावथी जागतो होय; पण निद्रा अने प्रमादमां तेनुं ध्यान होयतो, तेने न पण होय; पण जे द्रव्यभाव बन्नेमां सुता छे, तेने न होय; एम भजनानो अर्थ छे.

प्रश्नः—द्रव्यथी सुतेलाने धर्म केम न होय ?

उत्तरः—द्रव्यथी सुतेलाने निद्रा होय छे, ते निद्रा दुःखेथी दूर थाय छे, कारणके, स्त्यानर्द्धि (थीणद्धि) त्रिकना उदयमां सम्यक्त्वनी प्राप्ति मोक्षमां जनारा भवसिद्धि जीवोने पण थती नथी; अने तेनो बंध मिथ्यादृष्टि, अने सास्वादननी साथे अनंतानुबंधी कषायना बंधवाळाने होय छे.

अने तेनो क्षय अने अनिवृत्ति वादर गुणस्थान काळना संख्येय भागोमांना केटलाक भाग जाय त्यांसुधी होय छे. तेज प्रमाणे निद्रा, अने प्रचलाना उदयमां पण पूर्व माफक छे.

बंधनो उपरम (दूर थवुं.) तो, अपूर्व करणकाळना असंख्येय भागना अंतमां थाय छे. पण तेनो क्षय तो, ज्यारे बधा कषायो दूर थाय; तेना द्वीचरम समयमां (छेल्लानो पहेलामां) थाय छे.

अने उदय तो उपशमक, अने उपशांत मोहवाळा मुनिओने पण होय छे. एथी, निद्रा प्रमादने दुरंत कह्यो छे.

(दर्शनावरणीय कर्मनी नव प्रकृतिमां पांच निद्रा छे, तेमां निद्रा, प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, अने थीणद्धि अनुक्रमे प्रमाणमां वधारे निद्रा छे, तेनुं वर्णन कर्मग्रंथमां छे, त्यांथी जोवुं. अहीं एटलुं कहेवानुं छे के, परमार्थ (मोक्षनुं) लक्ष राखवुं; अने बने त्यांसुधी अल्प निद्रा करवी.)

अने द्रव्यथी निद्रामां सुतेलो दुःख पामे छे. (जेमके, ऊंघणसी माणस घरमां आग लागतां बळीजाय छे, घरमांथी धन चोराइ जाय छे.) तेज प्रमाणे भावथी सुतेला पण दुःख पामे छे ते बतावे छे.

जह सुत्त मत्त मुच्छिय असहीणो पावए बहुं दुक्खं । तिव्वं अपडियारंपि वट्टमाणो तहा लोगो ॥नि. २१३॥

निद्राथी सुतेलो तथा दारु विगेरेना निशाथी गांडो थएलो तथा घणो मार मर्मस्थनमां पडवाथी बेशुद्ध बनेलो तथा वायु विगेरे दोषथी चक्री आवतां परवश थएलो जीव बहु दुःख पामे छे छतां पोते ते वखते वदलो के उपाय लइ शकतो नथी तेज प्रमाणे भाव निद्रा एटले मिथ्यात्वअविरति, प्रमाद, कषाय विगेरेमां सुतेलो जीव समूह नरक विगेरेना भवनां दुःखो भोगवे छे, हवे बीजी रीते उलटा दृष्टांतथी उपदेश देवा कहे छेः—

एसेव य उवएसो पदित्त पयलाय पंथमाईसुं । अणुहवइ जह सचेओ सुहाइं समणाऽवि तहच्चेव ॥नि.२१४॥

उपर कहेलो उपदेश जे विवेक अने अविवेक संबंधी थाय छे. ते बतावे छे जेमके सचेतन (बुद्धिमान) विवेकी आग लागतां

तेमांथी नीकळीने सुखी थाय छे अने विघ्नवाळा अने विघ्नरहित एवा मार्गनुं ज्ञान जेने छे ते सुखेथी पार पहोंचे छे. आदि शब्दथी जाणवुं के चोर विगेरेना भवमां विवेकी माणस सुखथी ते विघ्नने दूर करी सुखी थाय छे. तेज प्रमाणे साधु पण भावथी सदा विवेकी होवाथी जागतो रहिने बधां कल्याणने मेळवे छे सुता अने जागता सबंधी गाथाओ कहे छे:—

जागरह णरा णिच्चं जागरमाणस्स वड्ढए बुद्धी । जो सुअइ नसो धण्णो जो जग्गइ सो सया धन्नो ॥१॥

जागता माणसोनी बुद्धि वधे छे माटे हे माणसो ! तमे जागो (अल्पनिद्रा करो.) जे सुवे छे, ते धन्यवादने योग्य नथी, पण जागतो माणस धन्यवादने योग्य छे.

सुअइ सुअं तस्स सुअं संकियखलियं भवे पमत्तस्स । जागरमाणस्स सुअं थिरपरिचिअमप्पमत्तस्स ॥२॥

जे घणुं सुवे छे तेने प्रमादथी तेनुं भणेलुं शंकावाळुं तथा भुलोवाळुं थाय छे, पण अप्रमादी जागता साधुनुं भणेलुं स्थिर परिचयवाळुं (भुल वगरनुं) रहे छे.

नालस्सेण समं सुक्खं, न विज्जा सह निद्दया । नवेरग्गं पमाएणं, नारंभेण दयालुया ॥३॥

आळसनी साथे सुख नथी. (आळसुने सुख न होय;) तथा निद्रानी साथे विद्या न होय; प्रमादनी साथे वैराग्य न होय; तथा आरंभ करनारने दया न होय.

जागरिआ धम्मीणं, आहम्मीणं तु सुत्तया सेआ । वच्छाहिव भगिणीए अकहिंसु जिणो जयंतीए ॥४॥

धर्मीजीवोने जागवुं सारुं, अधर्मीने सुवुं सारुं एवुं भगवान् महावीरे वत्स देशना राजानी बेन जयंती श्राविकाने कह्युं छेः—

सुयइ य अयगरभूओ सुअंपि से नासई अमयभूअं । होहिइ गोणब्भूओ नट्ठंमि सुए अमयभूए ॥५॥

जे अजगरनी माफक सुवे छे, तेनुं अमृत जेवुं भणेलुं नाश थाय छे, तथा तेने अमृत जेवुं भणेलुं नाश थतां मुडदाल—बळदीया माफक तेनुं अपमान थाय छे.

आ प्रमाणे दर्शनावरणीय कर्मना उदयथी कोइक वखत कोइ साधु सुतो होय; पण मोक्षाभिलाषी, अने यतनावाळो होवाथी; तथा तेणे दर्शन मोहनीयरुप—निद्रा दूर करवाथी ते जागतोज छे. पण जेओ, अज्ञानना उदयथी सुतेला छे, ते अज्ञानीज खरा सुतेला छे, अने अज्ञान ते महादुःख छे, अने ते दुःख जंतुओने अहितकारी छे, ते सूत्रकार बतावे छे.

लोयंसि जाण अहियाय दुक्खं, समयं लोगस्स जाणित्ता, इत्थ सत्थोवरए, जस्सिमे सद्दा य रूवा य रसा य गंधा य फासा य खभिसमन्नागया भवंति (सूत्र १०६)

छ जीवनीकाय संबंधी तुं दुःखने जाण; एटले अज्ञान अथवा, मोह (मूढपणुं) ते जीवने नरकादि भवमां दुःख आपनारुं अहितने माटे छे, अथवा तेनुं अज्ञान, तेने अहींयाज बंधने माटे, वधने माटे, तथा शरीर, अने मन संबन्धी पीडाने माटे थाय छे. (अर्थात् गुरु शिष्यने कहे छे केः—आ संसारमां अज्ञानी जीवो पोते अज्ञानदशामां पापो करीने नरक विगेरेमां जाय छे, अने त्यां तथा, अहीं अनेक प्रकारनां दुःख सहे छे,) ते तुं ध्यानमां राख; अने अज्ञानने छोड. हवे एम जाणवानुं फळ बतावे छे.

द्रव्य अने भाव ए बे प्रकारनी निद्राथी सुतेला जीवो अज्ञानी छे. तेमने थता दुःखथी दूर रहेवुं ए ज्ञाननुं फळ छे.

वळी समय एटले आचाराङ्गसूत्रमां बतावेल अनुष्टान (संयम) ने जाणीने अथवा लोक एटले जीवसमूहने जाणीने तेने जे शस्त्रोथी दुःख थाय ते शस्त्र ज्ञानी साधुए न जणाववा (ज्ञान भणवानुं फळ ए छे के कोइ पण जीवने दुःख न देवुं) आ प्रमाणे पहेलांना सूत्र साथे बीजा सूत्रनो संबन्ध छे. कारण के संसारी जीवो भोगना अभिलाषीपणाथी जीवहिंसा विगेरे कषाय हेतुवाळुं कर्म बांधीने नरक विगेरे पीडाना स्थानमां उत्पन्न थाय छे. त्यांथी कोइ वखते नीकळीने बधा दुःखोनुं नाश करनार धर्मनुं कारण जेमां छे तेवुं आर्यक्षेत्र विगेरेमां मनुष्य जन्म पामे छे. वळी त्यां पण (धर्म पाळवाने बदले) महा मोहना कारणे मोहित मति-वाळो बनी (इन्द्रियोना स्वादने माटे) एवां एवां कार्य करे छे के जेने लीधे ते नीचेनीचे (नारकीमां) जाय छे, पण संसारमांथी पार पहोंचतो नथी (आवुं लोकोनुं वर्तन जाणीने तेवुं तमारे न करवुं.) अथवा समभाव एटले समता (समयनो अर्थ समता लीधो) छे तेने जाणीने बधा जीवो उपर एटले पोताना आत्मा बरोबर परने जाणीने अथवा शत्रु मित्रने समभावे जाणीने तेमना उपर राग द्वेष तुं न कर, अथवा बधा जीवो एकेन्द्रियथी पंचेन्द्रिय सुधी पोताना उत्पन्न थवाना स्थानमां रमवानी इच्छावाळा छे, मरणथी डरे छे, सुखना चाहक छे. दुःखना द्वेषी छे आवुं तेओनुं समानपणुं जाणीने साधुए शुं करवुं ते कहे छे, छ जीवनीकायना द्रव्य भावना भेदवाळा शस्त्रथी दूर रहेवा धर्म जागरणथी जागतो रहे, अथवा जेजे संयमनां शस्त्रो छे ते ते आस्रवद्वार प्राणातिपात विगेरे छे. अथवा शब्द विगेरे पांच प्रकारना काम गुणो (विषयप्रेम) छे. तेनाथी जे दूर रहे ते मुनि छे. तेज सूत्रकार कहे छे के जे मुनिने पोताना आत्माना अनुभवेला बीजा बधा प्राणी संबन्धी इन्द्रियोनी प्रवृत्तिना विषयरूप शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श ते सुंदर अने

विरुप एम बे भेद छे, ते समीप आवतां अनुकूळ वहाला, अने प्रतिकूळ ते अणगमता लागे छे, तेवुं जे मुनि जाणे ते लोकने जाणे छे. तेनो अर्थ आ छे केः—मुनिए तेवा विषयो प्राप्त थाय; तोपण अनुकूळमां राग 'न' करवो; अने प्रतिकूळमां द्वेष न करवो; तेज खरीरीते तेओनुं अभिसमन्वा गमन (जाणवापणुं) छे, पण बीजुं नथी. (आ संसारमां मुनिने विहार विगेरेमां पुण्योदयथी मधुर अवाज, सुंदर देखाव, रमणीय सुगंधी खटरस–भोजन, तथा कोमळ स्पर्श विगेरे प्राप्त थाय छे, तथा पापना उदयथी तेथी उलटुं थाय छे. तेवा समयमां संसारी–जीवो हर्षखेद करे छे, तेम मुनिए न करवो.)

अथवा आलोकमांज शब्द विगेरे विषयो प्राणीओने दुःखने माटे थाय छे, तो परलोकनुं तो, शुं कहेवुं ? कह्युं छे केः—

उक्तंच-रक्तः शब्दे हरिणः स्पर्शे नागो रसे च वारिचरः। कृपणपतङ्गो रूपे भुजगो गन्धे ननु विनष्टः ॥१॥

हरिण शब्दमां रक्त थयलो, हाथी स्पर्शमां, माछलुं रसमां, अने रुपमां गरीब पतंगीयुं, तथा सुगंधीमां साप, (अथवा भमरो) खरेखर, नाश पाम्या छे,

पञ्चसु रक्ताः पञ्च विनष्टा यत्रागृहीतपरमार्थाः। एकः पञ्चसु रक्तः प्रयाति भस्मान्तताम बुधः ॥२॥

आ प्रमाणे, पांच इन्द्रियोमांथी एकमां रक्त थयेला परमार्थ न जाणनारा ते, पांचे अहींयां नाश पाम्या छे, तेम मूर्ख माणस एकलो पांचेमां रक्त थतां तेनो नाश थाय छे. अथवा, पुष्पशाळथी शब्दमां भद्रा नाश पामी अर्जुन चोररुप जोवा जतां नाश पाम्यो; गंधमां गंध प्रियकुमार नाश पाम्योः रसमां सौदास, अने स्पर्शमां सत्यकि विद्याधर, अथवा सुकुमारीकानो पति ललितांग नाश पाम्यो;

अने तेओने परभवमां नरक विगेरे दुःख भोगववानो भय बाकी रहे छे. आ प्रमाणे गायन विगेरे बन्ने लोकमां दुःख आपनारा जाणीने जे मुनि तजे, ते केवा गुणो मेळवे ते कहे छेः—

से आयवं नाणवं वेयवं धंमवं बंभवं पन्नाणेहिं परियाणइ लोयं, मुणिति वुच्चे, धम्मविऊ उज्जू आवट्टसोए संगमभिजाणइ (सू० १०७)

जे मुनि महामोहनिद्रामां सुतेला लोकोने अहितने माटे थतुं दुःख जाणे; ते लोक समयदर्शी छे, ते शस्त्रथी दूर रहीने मधुर गायन विगेरे पांच कामगुणो एकलाज दुःखना हेतुओ तरीके ज्ञ–परिज्ञावडे जाणे छे, तथा प्रत्याख्यान परिज्ञावडे त्यागे छे, ते मोक्षाभिलाषी मुनि छे, अने ते आत्माने जाणनारो छे. एटले, ज्ञानादिक गुणवाळो आत्मा तेणे मेळव्यो; ते आत्मावान छे, कारणके, शब्दादि विषय त्यागवाथी एणे आत्मानुं रक्षण कर्युं छे, जो, तेम रक्षण न कर्युं होत; तो, पोतानां पापथी नारकी, तथा एकेन्द्रिय विगेरेमां उत्पन्न थतां आत्मानुं कार्य मोक्षमां जवानुं न करवाथी तेनो आत्मा केवी रीते गणाय? (आत्मानुं कार्य ज्ञानमां रमणता करी; चारित्र पाळी; मोक्षमांज जवानुं छे, ते जे प्राप्त करे; तेणे आत्मा मेळव्यो जाणवो; अने तेज आत्मावाळो छे.)

अने तेज ज्ञानवान् पण छे. एम जाणवुं; अथवा, बीजी प्रतिमां आयवी नाणवी छे, तेनो अर्थ आ छे केः—

पोताना आत्माने श्वभ्र (नरक) विगेरेमां पडतां अटकावे; ते आत्मवित् (आत्मज्ञानी) छे तथा प्रभुए जेवुं पदार्थनुं स्वरुप बताव्युं; तेवुं जाणे, ते ज्ञानवित् (तत्त्वज्ञानी) ते, तथा जीवादि स्वरूपने जेनावडे जाणे; ते वेद एटले, आचाराङ्ग विगेरे सूत्र जा-

णनारो होय; ते वेदवित् कहेवाय छे. तथा, दुर्गतिमां पडता जीवने धारी राखनार, तथा स्वर्गमोक्ष अपावनार धर्मने जाणे ते धर्मवित् छे. ए प्रमाणे, बधां कर्मरुप–मळ, कलंकथी रहित, एवुं योगीनुं सुख ब्रह्मचर्य छे, तेने जाणे ते, ब्रह्मवित् छे, अथवा, अढार प्रकारनुं ब्रह्म छे. आ प्रमाणे, ज्ञान, वेद धर्म, अने ब्रह्मचर्य प्रकर्षथी (उत्कृष्टपणे) जेनावडे ज्ञेय पदार्थो जणाय; ते प्रज्ञानो छे एटले, मति विगेरे पहेला भागमां बतावेल ज्ञानवडे जीवलोक जेवे रुपे रह्यो छे तेने जाणे; अथवा जीवलोकने रहेवानुं जे स्थान, जे क्षेत्रलोक छे, तेने पोते जाणे अर्थात् जे शब्दादि विषयोनो राग तजे; तेज, ज्ञानि यथावस्थित लोकनुं स्वरुप जाणे छे, अने तेवो ज्ञानी प्रथम बतावेला गुणवाळो (एटले जे आत्मवान् ज्ञानवान वेदवान् धर्मवान् ब्रह्मवान्) थोडा अथवा, समस्त प्रज्ञानवडे लोकोने जाणे तेने मुनि कहेवो; कारणके, जगतनी त्रणे काळनी अवस्थाने माने अथवा. जाणे तेने मुनिशास्त्रमां कह्यो छे.

धर्म ते चेतन. अने अचेतन द्रव्यना स्वभावरुप, अथवा श्रुतचारित्ररुप–धर्मने जाणे; ते धर्मवित् जाणवो.

रुजु (सरळ) ज्ञानदर्शन–चरित्र नामना मोक्षमार्गनां जे अनुष्टान छे, तेनाथी अकुटिल छे, अथवा यथार्थरीते पदार्थनुं स्वरुप जाणवाथी सरल छे अथवा बधी उपाधिथी शुद्ध ते अवक्र (सरल) छे आ प्रमाणे धर्म जाणनार रुजु मुनि होय तेने शुं लाभ मळे ते कहे छे.

आवट्ट एटले भाव आवर्त्त ते जन्म जरा मरण रोग शोकना दुःख आपवाना स्वभाववाळो संसार छे. कह्युं छे के,

रागद्वेष वशाविद्धं, मिथ्या दर्शन दुस्तरम् ॥ जन्मावर्त्ते जगत्क्षिप्तं, प्रमादाद्भ्राम्यते भृशम् ॥१॥

रागद्वेषना वशथी विंधायेल मिथ्यादर्शनना कारणे दुस्तर अने जन्मना आवर्त्तमां फेंकायलुं जगत् छे. तेमां प्रमादथी जीवो

घणुं भ्रमण करे छे. भाव श्रोतपण शब्दादि काम गुणनो विषय अभिलाष छे, अने ते बन्ने 'आवर्त्त' अने श्रोत मळीने आवर्त्त श्रोतः शब्द बने छे ते बन्नेमां रागद्वेषवडे संग (संबंध) थाय छे, तेने जाणे छे के आ आवर्त्त अने श्रोतनुं कारण छे. आ जाणनारो खरी रीते कोने कहेवो? ते कहे छे, जे अनर्थने जाणीने त्यागे, ते जाणनारो छे. अर्थात् संसार श्रोत ते रागद्वेष रुप संग छे. तेने जाणीने जे त्यागे तेज आवर्त्त श्रोतना संगनो खरो जाणनारो छे. उपर बताव्या प्रमाणे सुता अने जागताना दोषो तथा गुणोने जाणनारो क्या गुणो मेळवे, ते कहे छे.

साउसिगच्चाई से निग्गंठे अरइरइसहे, फरूसयंनो वेएइ, जागर वेरोवरए, वीरे एवं दुक्खा पमुक्खसि, जरामच्चुवसो वणिए नरे सययं मूढे धंमं नाभिजाणइ (सूत्र १०८)

ते आत्मार्थी मुनि बाह्य अभ्यंतर ग्रथ रहित (निर्ग्रंथ) बनीने शीत अने उष्णतानो त्यागी एटले सुख दुःखने न गणनारो अथवा ठंड तापना परिषहने सारी रीते समभावे सहन करनारो संयममां रति (प्रेम) अने असंयममां अरति बतावनारो बनी पीडा करनारी परिषहो अने उपसर्गोनी कठोर वेदनाने सहे छे, पण पीडाकारी मानतो नथी, (जेम गजसुकुमाळना ससराए मीनी माटीनी पाळ बांधी माथामां बळता अंगारा भर्या, ते समये घणी पीडा थइ, छतां तेणे ससरानो उपकार मान्यो, अने केवळ ज्ञान पामी मोक्षमां गयो. तेम बीजा साधुए करवुं) अथवा संयम के तपथी शरीरमां पीडा थतां परुषता (कठोरपणुं) आवे अथवा कर्म लेप दूर थवाथी संसारथी खेदी मनवाळो मोक्षाभिलाषी निराबाध सुखनो चाहक बनीने संयम तपमां पीडा थाय तो पण समभावे

सहे पण खेद न पामे. 'जागर' एटले असंयम निद्रा दूर थवाथी पोते संयममां जागतो छे अने अभिमानथी थता अमर्ष (अदेखाइ) एटले बीजानुं बगाडवानो अध्यवसाय (विचार) ते वैर छे. ते वैरथी पोते दूर छे एटले जागर अने वैर उपरत गुणवाळो वीर बने छे, ते कर्म शत्रुने दूर करवानी शक्तिवाळो छे तेवा वीरने उद्देशीने गुरु कहे छे हे वीर! तुं उपरना गुण धारण करीने पोताने अथवा बीजाने संसारना दुःखथी अथवा दुःखना कारणरुप कर्मथी बचीश अने बचावीश.

अने उपरना उत्तम गुणोथी रहित ममादी जीव संसारना चक्रमां अने दुःखना मवाहमां संग करीने उंघतो रहीने ते शुं मेळवे छे ते कहे छे.

जरा अने मृत्यु ए बेने वश थइने ते माणी निरंतर महा मोहथी मूढ बनेलो स्वर्ग अने मोक्ष आपनार धर्मने जाणतो नथी अने संसारमां जीवने एवुं कोइ पण स्थानज नथी के ज्यां जरा मृत्यु न होय.

मश्नः—देवताओने जरा (बूढापो) नथी.

उत्तर—देवताओने पण त्यांथी च्यववाना छ महिना पहेलां उत्तम लेश्या बळ सुख मभुत्व अने सुंदर वर्णनी हानि थाय छेज तेथी तेमने पण जरानो सद्भाव छे, कह्युं छे के.

देवा णं भंते! सव्वे समवण्णा? नो इणट्ठे समट्ठे, सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ गोयमा! देवा दुविहा—पुव्वोववणग्गा य पच्छोववणग्गा य तत्थ णं जे ते पुव्वोववणग्गा तेणं अविसुद्धवण्णयरा, जे णं पच्छोववणग्गा ते णं विसुद्धवण्णयरा

गौतमनो प्रश्न—हे भगवन्? बधा देवता समान रूपवाळा छे? उ०—तेम नथी. प्र०—तेनुं शुं कारण?

उ०—हे गौतम! देवो बे प्रकारना छे. पहेलां उत्पन्न थयेला अने पछी उत्पन्न थता तेमां जे पहेलां उत्पन्न थयेल छे ते कंइक झांखा रुपवाळा अने जे पाछळथी उत्पन्न थया ते विशुद्ध सुंदर रूपवाला होय छे. तेज प्रमाणे लेश्या विगेरेमां पण जाणवुं. अने च्यवनना वखते तो बधाने बधु झांखुज होय छे जेमके—

मलयम्लानिः कल्पवृक्ष प्रकम्पः श्री ह्रीनाशो वाससां चोपरागः।
दैन्यं तन्द्रा कामरागङ्गभङ्गो, दृष्टिभ्रान्तिर्वेपथुश्चारतिश्च ॥१॥

माला करमाइ जाय छे कल्पवृक्ष कंपतुं देखाय छे, श्री अने ह्रीनो नाश थाय छे कपडां उपरथी प्रेम उठी जाय छे. दीनता आवे छे, आळस थाय छे, काम रागनो अने अंगनो भंग थाय छे, दृष्टिमां भ्रांति थाय छे. अने कंपारो थाय छे, अने बधुं रमणिक ते अरमणिक लागे छे. (जेम, अहींयां मनुष्यने मरती वखते घरनी ऋद्धि के, वैभव उपरथी अणगमो थाय छे, तेम देवताने पण देवलोक छोडतां घणो खेद थाय छे, अने कल्पांत करे छे.)

जो, आवी रीते छे तो, नक्की थयुं के, बधा जीवो जरा मृत्युने वश छे तो, तेवुं जाणीने पंडित मुनि शुं करे? ते कहे छेः—

पासिय आउरपाणे अप्पत्तो परिव्वए, मंता य मइमं, पास आरंभजं दुक्खमिणंतिणच्चा, माई पमाई पुण एइ गब्भं, उवेहमाणो सद्दरूवेसु उज्जू माराभिसंकी मरणा पमुच्चई, अपमत्तो

कामेहिं, उवरओ पावकम्मेहिं, वीरे आयगुत्ते खेयन्ने जे पज्जवजाय सत्थस्स खेयन्ने, असत्थस्स खेयन्ने जे असत्थस्स खेयन्ने से पज्जवज्जायसत्थस्स खेयन्ने, अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ कम्मुणा उवाही जायइ, कम्मं च पडि लेहाए (सूत्र १०९)

ते भावथी जागतो मुनि भावनिद्रामां सुतेला जीवोने मन संबंधी दुःखोथी पीडाता जुवे छे. ते दुःखी जीवो विचारे छे के, हवे अमारे शुं करवुं ? एम मूढ बनेला तथा, दुःखसागरमां डुबेलां प्राणीओने देखीने पोते तेवां दुःखमां न पडवा माटे मुनि अप्रमत थइने विचरे; अने संयम अनुष्ठानने बरोबर करे; तेवा शिष्यने गुरु फरीथी कहे छेः—हे बुद्धिमान्! हे भणेला शिष्य! तुं भावनिद्राथी सुतेला दुःखीओने जो, अने जागताना गुणो तथा सुताना दोषोने जाणीने सुवानी मति न कर (प्रमादी न था.) वली पाप क्रियानो आरंभ करनारानां दुःखो तथा दुःखना कारण कर्म, तेने तुं प्रत्यक्ष जो! जेओ जीवहिंसा (खुन) चोरी विगेरे करे छे. तेओने थती शिक्षा साक्षात् जो! अने ते जाणीने आरंभ रहित बनीने आत्महितमां जाग्रत था!

(जेओ साधु छे तेमने मोक्ष साधवानो होवाथी गृहस्थ माफक खेती विगेरे आरंभ करवानो नथी छतां जेओ त्यागी नाम धरावी खेती विगेरे करे छे ते पण ग्रहस्थ माफक दुःखी थाय छे.)

पण जे विषय कषायथी मलीन चित्तवाळो भावशायी (प्रमादी) छे, ते शुं मेळवे ते कहे छे. मायी बने, छे, अने माया लेवाथी बधा कषायोवाळो बने तेज कहे छे, क्रोधी मानी मायी लोभी बनीने दारु विगेरेना नशामां प्रमादी थइ नारकीनां दुःख अनुभवी

पाछो तिर्यंचमां गर्भना दुःखने अनुभवे छे. पण जे मुनि कषायरहित अप्रमादी छे तेने शुं लाभ थाय छे. ते बतावे छे. शब्द रुप विगेरेमां जे रागद्वेष थाय छे तेनी उपेक्षा करतो रुजु (सरल) यति थाय छे. एटले खरी रीते जे यति (साधु) छे ते रुजु छे. पण गृहस्थ तो स्त्री विगेरे पदार्थ ग्रहण करवाथी वक्र छे (स्त्री विगेरेने मेळववा राजी राखवा गृहस्थने कपट करवुं पडे छे.) वळी ते सरल साधु गायन विगेरेनी उपेक्षा करतो मरण (मार) नी शंका करे छे. एटले बीजाने मारतां (दुःख देतां) डरे छे. तेथी पोते पण मरणथी बचे छे. वळी ते काम (पाप चेष्टाओ) थी अप्रमादी रहे छे. अने जे साधु काम चेष्टाना पापोथी दूर रहे, तेज खरी रीते मन वचन कायाना पापथी उपरत (बचेलो) छे. कोण बचे छे? ते कहे छे. जे वीर छे तेज गुप्त आत्मा छे. अने ते खेदज्ञ छे (एटले बीजा जीवोना खेदने जाणे छे तेथी कोइने दुःख देतो नथी। ते खेदज्ञ साधु गायन विगेरेना आनंदना विषयोना पर्यव (भागो) अनुकुळ थतां पोते तेना निमित्तना शस्त्रने प्राणीओने दुःखकारक जाणीने तेमां लीन न थतां ते निपुण साधु निरवद्य अनुष्ठान जे अशस्त्र छे ते करे छे. अने ते संयसना खेदने जाणनारो पर्यव जात शस्त्रना खेदने जाणनारो छे, तेनो सार आ छे के जे साधु पासे शब्दादि पर्यायो सुंदर के विरुप आवे तो लेवानी के त्यागवानी क्रिया बीजा जीवोने दुःखरुप छे तेम जाणे छे अने मध्यस्थपणुं राखवुं; ते अपीडाकारक होवाथी जे अशस्त्ररुप–संयम छे. ते पोताने अने परने उपकार करनारो छे, एवुं जाणे छे.

आ प्रमाणे, जाणीने शस्त्रने छोडे, अने अशस्त्र (संयम) तेने ग्रहण करे; एटले ज्ञाननुं फळ ए छे के; विषयोना आनंदने छोडनारो; समभाव राखनारो जीवोने बचावी संयम पाळे छे, (अने जीवो उपर रागद्वेष करे; तो, संयम पाळी शकतो नथी.)

अथवा, गायन विगेरे पर्यायोथी, अथवा गायन विगेरेथी उत्पन्न थयेल रागद्वेषना पर्यायोथी जे ज्ञानावरणीय विगेरे कर्म

बंधाय छे, तेने दाहकपणाथी तप ते शस्त्र छे, ते तपना खेदने जाणे; ते खेदज्ञ छे. कारणके तेना ज्ञान तथा योग्य अनुष्ठानवडे जे अशस्त्र—संयम छे, तेने पण जाणनारो छे, अने संयम तप खेदने जाणनारो आश्रवनिरोध विगेरेथी भवभ्रमणां कर्म जे पूर्वे एकठां कर्यां छे, तेनो क्षय थाय छे, अने कर्मक्षयथी जे लाभ थाय छे, ते कहे छे:—

अकर्मनुं वर्णन.

अकर्म एटले, जेने आठ प्रकारनां कर्ममांथी एक पण कर्म न होय; ते छे, अने ते नारक, तिर्यंच, नर, देव एवी चार गतिमां भ्रमण करवानो व्यवहार नथी; तथा, पर्याप्त-अपर्याप्त अवस्था नथी; तथा बाळपण, तथा कुमारपणुं विगेरे संसारी व्यपदेशो (जुदी जुदी व्यवस्थान नाम) नथी; अने जे सकर्मी छे, तेने कर्मवडे नारकादि व्यपदेश होय छे.

तथा ते कर्मनी उपाधिवडे एटले, ज्ञानावरणीय विगेरेथी जुदां जुदां विशेषणो कर्म संबंधी थाय छे ते कहे छे:—जेमके, मति, श्रुत अवधि, मनःपर्याय ज्ञानवाळो होय; तेने तेनी बुद्धिना प्रमाणमां मंदबुद्धिवाळो, अथवा तीक्ष्ण बुद्धिवाळो कहेवाय छे. (१) तथा चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी निद्राळु विगेरे छे. (२) तथा सुखीदुःखी कहेवाय छे. (३) मिथ्यादृष्टि, सम्यग मिथ्यादृष्टि, स्त्रीपुरुष नपुंसक—कषायी विगेरे छे. (४)

तथा सोपक्रम निरुपक्रम आयुवाळो, अल्प आवखावाळो; विगेरे छे. (५) नारक तिर्यंचयोनीवाळो, तथा एकेन्द्रिय, बे इन्द्रिय, पर्याप्तो-अपर्याप्तो, सुभग-दुर्भग विगेरे छे. (६) उंचगोत्रवाळो, नीचगोत्रवाळो छे, (७) कृपण, त्यागी, निरुप भोगी, निर्वीर्य छे. (८) आ प्रमाणे आठे कर्मने लीधे संसारी जीवो ओळखाय छे. जो आवी रीते छे तो शुं करवुं ते कहे छे. ज्ञानावरणीय विगेरे कर्म छे

तेनी उपेक्षा करीने अथवा तेना बंधने प्रकृति स्थिति अनुभाव प्रदेशरूपे विचारीने तेनी सत्ता विपाकने पामेला प्राणीओ जेवी रीते भावनिद्रामां सुए छे (अने दुःख भोगवे छे) ते विचारीने कर्म तोडवामां भाव जागरण करवा साधुए उद्यम करवो, ते कर्म तोडवानुं आवा क्रमथी थाय छे.

प्रथम आठ कर्मवाळो माणस छे ते दीक्षा लइने मोहने तोडे पछी अप्रमादी थइ क्षपकश्रेणी करे ते आठमे गुणस्थाने क्रोधादि ओछा करी अग्यारमे गुणस्थाने लोभनो सर्वथा नाश करे अने बारमा गुणस्थानना अंते ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय तथा अंतराय कर्म दूर करी तेरमे गुणस्थाने चार अघाती कर्मवाळो रहे. आ गुणस्थाने जघन्यथी अंतर्मुहुर्त. अने उत्कृष्टथी पूर्व कोडीमां थोडो ओछो काळ रहे, त्यारपछी १४मे गुणस्थाने पांच ह्रस्व अक्षर बोलवा जेटलो काळ शैलेशी अवस्थाने अनुभवीने अकर्म थाय छे.

हवे, उत्तरप्रकृतिओनुं छतापणुं–अछतापणुं बतावे छे. ज्ञानावरणीय, तथा अंतराय ते दरेकनी पांच पांच भेदनी प्रकृति चौदे जीवस्थानमां होय छे. तथा, चौद गुणस्थानमां मिथ्यादृष्टिथी मांडीने बारमा गुणस्थान सुधी पांचे प्रकृतिओ होय छे. तेमां बीजो विकल्प थतो नथी; तथा, दर्शनावरणीयनां त्रण सत्‌कर्मनां स्थान छे. (सत्कर्म एटले सत्ता छे.)

पांच निद्रा, अने चार दर्शन, ए नव प्रकृति सर्व जीवस्थानमां रहे छे. (१) अने गुणस्थानमां अनिवृत्ति बादरकाळना संख्येय भाग सुधी होय छे. (२) केटलाक संख्येय भागना अंतमां थीणद्धिनिद्रात्रिक क्षय थवाथी छ कर्मवाळुं बीजुं स्थान छे.

त्यारपछी, क्षीणकषायना अंत समयना पहेला समयमां निद्रा अने प्रचला, ए बेना क्षय थवाथी चार कर्मनुं स्थान छे. अने ते पण क्षय थवाथी क्षीणकषाय काळना अंतमां त्रीजुं स्थान छे.

वेदनीय–कर्मनां बे सत्तास्थान छे. ते आ प्रमाणेः—

(१) साता अने असाता बन्ने होय. (२ तथा बन्नेमांथी एक साता, अथवा असाता ज्यारे पोते शैलीशी अवस्थामां सौथी छेल्ला समयना पहेला समयमां मोक्ष जवाना काळमां होय; त्यारे कोइपण एक साता के, असाता भोगवे ते बीजुं स्थान छे. मोहनीयकर्मनां पंदर सत्तास्थान छे ते आ प्रमाणेः—

(१) सोळ कषाय, नव नो कषाय अने त्रण दर्शन होय; त्यारे सम्यक्दृष्टि जीवने अट्ठावीश प्रकृति होय छे.

(२) सम्यक्त्व वमतां मिश्रदृष्टिए सत्तावीश होय छे.

(३) स्वभावथी अनादि मिथ्यादृष्टि होय; अथवा बे दर्शन वमतां छवीश होय (४) सम्यक्दृष्टिने अट्ठावीश प्रकृतिमांथी अनंतानुबंधी चार कषाय वमतां अथवा, क्षय थतां चोवीश होय. (५) तेनेज मिथ्यात्व क्षय थतां २३ (६) मिश्रदृष्टि क्षय थतां २२ (७) क्षायिक सम्यक्दृष्टिने २१ (८) अप्रत्याख्यान अने प्रत्याख्यान–कषाय जतां १३ (९) कोइपण एक वेद क्षय थतां १२ (१०) बीजो वेद क्षय थतां ११ (११) हास्यादि छ दूर थतां ५ (१२) पुरुषवेदना अभावमां ४ (१३) संज्वलन क्रोध क्षय थतां ३ [१४] मान क्षय थतां २ (१५) मायाक्षय थतां ए एक लोभ रहे.

अने ए लोभ दूर थतां मोहनीय सत्ता पण गइ.

सामान्यथी आयुष्य कर्मनी सत्तानां बे स्थान छे ते आ प्रमाणेः—(१) परभवना आयुना बंधना उत्तर काळमां बे आयुष्य होय; अने तेना बंधना अभावमां जे आयुमां होय; तेज बीजुं स्थान छे.

नामनां बार स्थान कहे छे.

नामकर्मनी प्रकृतिनां बार सत्तास्थान छे, ते आ प्रमाणेः—

(१) ९३ (२) ९२ (३) ९१ (४) ८८ (५) ८६ (७) ७९ (८) ७८ (९) ७६ [१०] ७५ [११] ९ [१२] ८ तेनी विगतः—

गति चार, पांच जाति, पांच शरीर, पांच संघात, पांच बंधन, छ संस्थान अंगोपांग त्रण, संहनन छ, वर्ण पांच, गंध बे, रस पांच, आठ स्पर्श, अनुपूर्वी चार.

अगुरु लघु, उपघात, पराधात, उच्छ्वास आतप, उद्योत. ए छ तथा प्रशस्त अने अप्रशस्त, ए बे विहायोगति, तथा प्रत्येक शरीर, त्रस, शुभ, सुभग, सुस्वर सूक्ष्म, पर्याप्त स्थिर आदेय अने यश आ दश शुभ छे अने तेनाथी उलटी बीजी दश अशुभ छे. कुल २० तथा निर्माण अने तीर्थंकर एम बधी मळीने नाम कर्मनी ९३ प्रकृति छे.

तेमांथी तीर्थंकर नामना अभावमां ९२ छे अने आहारक शरीर संघात बंधन अंगोपांग ए चारना अभावमां ९३मांथी ४ बाद करतां ८९ छे तेमांथी पण तीर्थंकर नामकर्म बाद करतां ८८ तथा देवगति तथा अनुपूर्वी वमेली बाद करतां ८६ अथवा नरकगति योग्य बांधतां तेनी गति तथा अनुपूर्वी तथा वैक्रिय चतुष्ठ बांधनारने ८० साथे आ छ मेळवनां ८६ छे तथा देवगति प्रायोग्य बांधनारने पण ८६ छे अने नरक गति तथा अनुपूर्वी मळी बे तथा वैक्रिय चतुष्क चार ए छ वमतां ८० रहे छे. वळी मनुष्यगति अनुपूर्वी बन्ने वमतां ७८ छे. आ अक्षपक जीवोनां कर्मनां सत्ता स्थान छे अने हवे क्षपकवाळानां कहे छे.

९३ प्रकृतिमांथी नरक तिर्यक गति तथा अनुपूर्वी बन्नेनी मळी तथा १, २, ३, ४, इन्द्रिय जाति मळी चार तथा आतप

उद्योत स्थावर सूक्ष्म साधारण मळी कुल १३ प्रकृति क्षय थतां ८० प्रकृति रहे छे तथा तीर्थंकर नाम न होय तो ९२मांथी १३जतां ७९ छे.

तथा आहारकचतुष्टय दूर थतां ९३ मांथी ८९ रहे अने तेमांथी नारकी विगेरे संबंधी १३ दूर थतां ७६ रहे अने तीर्थंकर नाम न होय तो ८९ मांथी १ दूर थतां ८८ रहे अने तेमांथी १३ जतां ७५ रहे छे.

तेमां ८० अथवा ७६ मांथी तीर्थंकर केवळी शैलेशी अवस्थामां पहोंचेलाने छेल्लाना पहेला [द्विचरम], समयमां तीर्थंकर नाम कर्म उमेरवाथी वेदाती नव कर्म प्रकृति सिवायनी प्रकृति दूर थतां बाकी अंत समये नव प्रकृति सत्तामां रहे छे ते कहे छे.

[१] मनुष्य गति [२] पंचेन्द्रिय जाति [३] त्रस [४] बादर [५] पर्याप्तक [६] सुभग [७] आदेय [८] यशकीर्ति [९] तीर्थंकर ए नव सिवायनी बाकीनी ७१ अथवा ६७ द्विचरम समयमां नष्ट थाय छे अने तीर्थंकर सिवायना केवळीने आठ होय छे एटले तेने तीर्थंकर नाम छोडीने बाकीनी आठ प्रकृति सत्तामां होय छे आ तेनुं छेल्लुं स्थान छे [त्यार पछी मोक्षमां जतां एक पण प्रकृति नथी] गोत्रनां बे सत्तास्थान छे. उंच नीच गोत्रना सद्भावमां एक सत्तास्थान छे तथा अग्निकाय अने वायुकायने उंच गोत्र वमतां मलिनभाववाळी अवस्थामां फक्त नीच गोत्रनी सत्ता रहे छे. अथवा अयोगी गुणस्थाने द्विचरम समये नीच गोत्रनी सत्ता दूर थतां उंच गोत्र एकलुं रहे छे एटले बे गोत्रनी अवस्थामां प्रथम सत्ता स्थान छे अने बंनेमांथी एक होय ते बीजुं सत्ता स्थान छे [अंतरायनी पांचे प्रकृतिओ साथे दूर थती होवाथी तेनुं जुदुं वर्णन बताव्युं नथी.)

आ प्रमाणे कर्मोनी सत्ता जाणीने साधुए ते सत्ताने दूर करवा प्रयत्न करवो. वळी बीजुं कहे छे,

कम्ममूलं च जं छणं, पडिलेहिय सव्वं सामायाय 'दोहिं' अंतेहिं अदिस्समाणे तं परिन्नाय 'मेहावी' विइत्ता लोगं वंता लोगसन्नं से मेहावी परिक्कमि ज्जासि ॥सूत्र ११०॥ त्तिबेमि शीतोष्णीयोद्देशः ?

कर्मनुं मूळ कारण मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योग छे एने समजीने क्षण एटले हिंसा ते प्राणीओने दुःख देवारुप कृत्य कर्मनुं मुख्य मुळ समजीने छोडवुं.

पाठांतरमां 'कम्ममाहूअ' पाठ छे तेनो अर्थ आ छे के उपादान क्षण आ कर्मना छे ते क्षण कर्म छे ते कर्म मेळवीने तेज क्षणे निवृत्ति करे तेनो भावार्थ आ छे; अज्ञान प्रमाद विगेरेथी जे क्षणे कर्मना हेतुरुप अनुष्ठान कर्युं तेज क्षणे चित्त स्थिर करीने तेना उपादान हेतुने निवृत्ति करे (जेनाथी कर्म बंधाय तेने छोडे अथवा तेनी गुरु पासे शीघ्र आलोचना ले) वळी उपदेश करे छे पूर्वे कहेलां कर्मने समजीने तथा कर्मना विरुद्ध (कर्म हणनार) गुरुनो उपदेश सांभळीने जे रागद्वेष अंतरुपे छे तेनाथी दूर रही अथवा तेनो संबन्ध छोडीने अथवा कर्म उपादाननां कारण रागादिकने ज्ञ परिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे तजे अने रागादिथी मोहित लोक अथवा विषय कषाय लोक जाणीने तथा विषयनी वांछा अथवा धन उपर ममत्त्वभाव छोडीने मर्यादामां रहेलो ते मुनि संयम-अनुष्ठानमां प्रयत्न करे; अथवा विषयतृष्णा, अथवा छरिपुवर्गने. अथवा आठ कर्मने आवतां अटकावे. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे के हुं कहुं छुं. शीतोष्णीय नामना अध्ययनना पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.



बीजो उद्देशो

पहेलो उद्देशो कह्या पछी बीजो कहे छे. तेनो संवन्ध आ प्रमाणे छेः—पहेला उद्देशामां भाव सुतेला बताव्या; अने अहीं तेओना सुवाथी "दुःख पडवानुं" फळ बतावे छे. एम ते बन्नेनो संवन्ध छे, सूत्र अनुगम होवाथी सूत्र कहे छेः—

जाइं च वुद्धिं च इहऽज्ज ! पासे, भूएहिं जाणे पडिलेह सायं, तम्हाऽतिविज्जे परमंतिणच्चा, संमत्तदंसी न करेइ पावं ॥१॥

जाति एटले, जन्मथी लइने वाळकुमार—यौवन बूढापा सुधी वृद्धि छे, ते मनुष्यलोकमां, अथवा संसारमां हमणांज (काळना विलंब विना) तुं जो. तेनो सार आ छे के गुरु शिष्यने कहे छे केः—हे भद्र ! हमणां जनमता जीवोने बूढापासुधीमां शरीर मन संवन्धी केवां केवां दुःखो भोगवाय छे ते तुं विवेक चक्षुथी जो, कह्युं छे केः—

जायमाणस्स जं दुक्खं, मरमाणस्स जंतुणो । तेण दुक्खेण संतत्तो, न सरइ जाइ मप्पणो ॥१॥

जनमता माणसनुं जे दुःख छे, ते माणसने मरती वखते पडतां दुःखथी ते तपेलो होवाथी पूर्वथी जाती पण विसरी गयो छे.

विरसरसियं रसंतो तो सो जोणीमुहाउ निप्फडइ । माऊए अप्पणाऽविअ वेअणमउलं जणेमाणो ॥२॥

माता चावेला आहारने गर्भमां बेठेलो वाळक परवश थइने खाय छे, अने पोते जनमती वखते पोताने तथा, माताने घणी पीडा आपीने योनिद्वारा बहार नीकळे छे.

हीणभिण्णसरो दीणो विवरीओ विचित्तओ । दुब्बलो दुक्खीओ वसइ, संपत्तो चरिमं दसं ॥३॥

अने ते वृद्धावस्थामां हीन-भिन्न (खोखरो) अवाज होय छे. रांकडुं मुख तथा विपरीत विकल्प करनारो दुर्बळ दुःखी अवस्थामां ते पडेलो होय छे, अथवा हे आर्य ! एवुं महावीर प्रभु गौतमने कहे छे, के जाति वृद्धि अने तेनुं मूळ कारण कर्म तथा कार्य दुःख छे तेने जो, अने देखीने बोध पाम, अने तेवुं जन्म विगेरेनुं दुःख तने न आवे, एवुं संयम अनुष्ठान कर.

वळी चौद प्रकारना भूत ग्राम (जीवोनां चौद स्थान) छे. तेनी साथे तारा आत्मानुं सुख सरखाव एटले जेम तुं सुखने वांछे छे तेम बधा पण वांछे छे अने तने दुःख गमतुं नथी तेम बीजानुं पण समज, तेथीं तुं कोइने दुःख न दे तो तेथी तने जन्मादि दुःख नहि मळे. कह्युं छे के:—

यथेष्टविषयाः सातमनिष्टा इतरस्तत्र । अन्यत्रापि विदित्वैवं, न कुर्यादप्रियं जने ॥१॥

जेवी रीते तने इन्द्रियोना रस व्हाला छे अने अनिष्ट अप्रिय छे एवी रीते जाणीने बीजाने अप्रिय कृत्य न करतो. शिष्य पूछे छे तो शुं करवुं? उ०—जाति वृद्धि सुख दुःख देखीने तत्व बतावनारी श्रेष्ट विद्याने जाण, अने जे तत्व जाणेला होय, ते मोक्ष अथवा परम ज्ञान विगेरे अथवा मोक्ष मार्गने जाणीने सम्यक्त्वदर्शी बनीने पाप न करे, अर्थात् सारो साधु पाप व्यापार न करे. हवे पापनुं मूळ संसारी स्नेहना पासो छे, ते छोडवा उपदेश आपे छे,

उम्मुं च पासं इह मच्चिएहिं, आरंभजीवी उभयाणुपस्सी; कामेसु गिद्धा निचयं करंति, सं-

सिच्चमाणा पुणरिंति गब्भं ॥सूत्र. २॥ काव्य

आ चार प्रकारना कषाय तथा विषयना विमोक्षमां समर्थ आधार रुप मनुस्य लोकमां संसारी मनुष्यो साथे द्रव्यथी तथा भावथी बंने प्रकारे जे पाश (मोहजाळ) छे, तेने सर्वथा छोड; कारण के ते जन समूह काम भोगनी लालसावाळो छे तथा ते मेळववा माटे जीव हिंसा विगेरे पापो आरंभे छे. तेथीज सूत्रमां कह्युं छे के ते आरंभथी जीववानावाळो छे, अने महारंभ परिग्रहथी रचना करीने जीवननो उपाय योजे छे, तथा उभय एटले शरीरना तथा मन संबंधो अथवा आ लोक तथा परलोक संबन्धी (भोगाकांक्षी) छे, वळी ते काम भोगमां रक्त थइने अशुभ कर्मनो उपचय करे छे. अने ते कर्म संचय करीने एक गर्भथी नीकळी बीजा गर्भमां प्रवेश करे छे. अने संसार चक्रवाळ (चक्रावा) मां अरटनी घटमाळ जेम भराय अने ठलवाय ते न्याये जुनां कर्म भोगवे, अने फरी नवां बांधीने भ्रमण करे छे. वळी ते अनिभृत (विना विचारनो) आत्मा केवो (दुष्ट) थाय छे ते कहे छे.

अविसे हासमासज्ज, हंता नंदीत्ति मन्नई अलं बालस्स संगेण, वेरं वड्ढेइ अप्पणो (सू० ३) काव्य.

लज्जा भय विगेरेना निमित्तथी चित्तना विप्लववाळुं जे हास्य (हांसी) छे, तेने मेळवीने इच्छा प्रेमी बनी (क्रीडानी खातर) जीवोने हणी [शिकारमां] आनंद माने छे, अने बीजाओने फसाववा ते महा मोहथी घेरायलो अशुभ विचारवाळो बोले छे के "आ मृग विगेरे पशुओ शीकारने माटे बनाव्यां छे, तथा शिकार सुखी पुरुषोनी क्रीडा माटे छे." जेवी रोते जीव हिंसा सिद्ध करे छे. तेम जुठ चोरीमां पण सिद्ध करे के. आ जुठुं बोली ठगवुं के चोरी करवी ए तो बुद्धि बळनुं तथा बहादुरीनुं काम छे विगेरे समजी

लेवुं जो आवी रीते संसारी मनुष्यो पाप करनारा छे. तो साधुए शुं करवुं, ते आचार्य कहे छे.

के जे मनुष्यो शिकारी विगेरे होय, अथवा विषयय कषायमां रक्त होय, तो तेवा बालजीव साथे हास्यादि तथा सग न करवो; जो पापीनो संग करे तो मांहोमांहे लडाइ थतां वैर वधे छे, अने परस्पर वैर लेवानो प्रसंग आवे छे. जेमके गुणसेन राजाए जुदी जुदी रीते करेला हास्यना कारणे अग्निशर्मा ब्राह्मण साथे वैर वधीने नव भव सुधी चाल्युं. [समरादित्य चरित्रमां तेनी कथा छे के अग्निशर्मा ब्राह्मणनुं कुरुप जोइ राजकुमार गुणसेने तेनी हांसी करी. तेथी ब्राह्मणे कंटाळी तापस बनी तप करी विख्यात थयो. अनुक्रमे गुणसेन राजा बनी ते तापस पासे आव्यो पूर्वनी वात सांभळी राजाए क्षमा चाही पारणामां जमवानुं आमन्त्रण कर्युं. त्रणे वार आमन्त्रण वखते राजा भूली गयो. अने तापस पाछो गयो. तेथी तापसने आ दरेक वखते हांसी लागी, अने वैर लेवानुं नियाणुं कर्युं. गुणसेन ते समरादित्य थयो. अने नव भव सुधी तेनी साथे तापसनुं वैर रह्युं, माटे हांसी न करवो, तेम हांसी करनारनो संग पर न करवो] एज प्रमाणे विषय संग विगेरेमां पण दुःख अने वैर वधवानुं जाणी तेवाओनो संग न करवो. जो एम छे, तो साधुए शुं करवुं ? ते कहे छे.

तम्हातिविज्जो परमंतिणच्चा, आयंकदंसो न करेइ पावं, अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे,

पलिच्छिंदियाणं निक्कम्मदंसी (सू० ४) काव्य.

बाळ (पापी) नी संगतिथी वैर वधे छे, तेथी अति विद्वान् (गीतार्थ) मुनि परम एटले मोक्षपद अथवा सर्व संवररुप चारित्र

अथवा सम्यग ज्ञान अथवा सम्यग दर्शन [ए त्रणे उत्तम होवाथी] तेने जाणीने शुं करे ते गुरु कहे छे.
आतंक दर्शी—आतंक ते नरक विगेरेनां दुःख छे. तेने (हृदय चक्षुवडे) देखवाना स्वभाववाळा ते आतंकदर्शी छे. ते पूर्वे
कहेला पापोना अनुबन्धरूप अशुभ कर्मने करतो नथी. तेम पाप करावे पण नहि, तथा अनुमोदतो पण नथी; वळी गुरु उपदेश आपे छे, के.
अग्र—चार अघाति कर्म जे भवोपग्राही छे. ते अग्र छे, अने मूल—ते चार घातीकर्म छे. ते मूळ छे. (अथवा बीजीरीते
लइए तो) मोहनीय कर्म मूळ छे. बाकीनां सात कर्म अग्र छे. अथवा मिथ्यात्व मूळ छे. बाकी बधी प्रकृति अग्र छे. ए प्रमाणे बधां
अग्र तथा मूळ कर्मने दूर कर; आ सूत्रथी एम सूचव्युं के कर्म ते पुद्गलनो समूह छे. तेनो सर्वथा क्षय थतो नथी, पण योग्य अनु-
ष्ठान करवाथी आत्माथी सर्वथा दूर थइ शके छे.
मोहनीयनुं अथवा मिथ्यात्वनुं बधां कर्ममां मूळपणुं केवी रीते घटे छे? आम जो कोइने शंका होय तो आचार्य कहे छे के
तेना कारणे बाकीनी बधी प्रकृतिओनो बंध पडे छे. कह्युं छे के—

न मोहमतिवृत्य बंध, उदितस्त्वया कर्मणां; न चैकविध बंधनं, प्रकृतिबंधविभवो महान् ॥
अनादिभव हेतुरेष, न च बध्यते नासकृत; त्वयाऽतिकुटिला गतिः कुशल! कर्मणां दर्शिता ॥१॥

हे कुशळ प्रभो! तमे कर्मोनो बन्ध मोह विना बताव्यो नथी, अने ते मोहनुं अनेक प्रकारनुं वन्धन छे अने प्रकृतिनो महान
विभव छे; अने आ मोह अनादि भवनो हेतु छे. अने ते अनेकवार बन्धाय एम नथी. पण वारंवार बन्धाय छे. एथी कर्मोनी कु-

रिल गति आपे बतावी छे! तेज प्रमाणे आगम कहे छे—

कहण्णं भंते! जीवा अट्ठ कम्मपगडीओ बंधंति,? गोयमा! णाणावरणिज्जस्स उदएणं दरिसणावरणिज्जं कम्मं नियच्छइ, दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दंसणमोहणीयं कम्मंनि यच्छइ, दंसणमोहणिज्जस्स उदएणं मिच्छत्तं नियच्छइ मिच्छत्तेणं उदिण्णेणं एवं खलु जीवे अट्ठकम्मपगडीओ बंधइ ॥

हे भगवान! जीवो केवी रीते आठ कर्म बांधे छे? हे गौतम! ज्ञानावरणीयना उदयथी दर्शनावरणीय कर्म बांधे छे, दर्शनावरणीय कर्मना उदयथी दर्शनमोहनीय कर्म बांधे छे, अने मिथ्यात्वना उदयथी आठे कर्मप्रकृतिओ बांधे छे, तेवी रीते क्षय पण, मोहनीयकर्मना क्षय साथेज क्षय थाय छे. कह्युं छे केः—

नायगंमि हते संते, जहा सेणा विणस्सई । एवं कम्मा विणस्संति, मोहणिज्जं खयं गए ॥१॥

नायक हणावाथी जेम; सेना नाश पामे छे, तेवी रीते मोहनीयकर्मनो क्षय थवाथी बीजां सात कर्मो नाश थाय छे.

अथवा मूळ ते असंयम अथवा कर्म छे, अने अग्र ते संयम तपसा अथवा मोक्ष छे, ते मूळना अग्रमां अक्षोभ्य (अचळ) धीर तुं था; अथवा बुद्धि ए शोभायमान एवा शिष्यने गुरु कहे छेः—हे धीर ; विवेकथी असंयमने दुःखनुं कारण तथा, संयमने सुखना कारणपणे मान, तथा तप अने संयमवडे राग विगेरेनां बन्धन अथवा तेनां कार्य जे कर्म छे, तेने छेदीने कर्मरहित तुं बन; एटले तुं पोताना आत्माने कर्मरहित बनाव. एवा स्वभाववाळो निष्कर्मदर्शी कहेवाय छे. अथवा, मोहनीयकर्म क्षय थतां ज्ञानदर्शननां आव-

रण दूर थतां, ते सर्वदर्शी, तथा सर्वज्ञानी थाय छे,अने कर्मर हित थयलो, अथवा सर्वज्ञ बनेलो बीजुं शुं मेळवे छे ते कहे छे:–

एस मरणा पमुच्चइ, से हु दिट्ठभए मुणी, लोगंसि परमदंसी विवित्तजीवी उवसंते समिए सहिए सया जए कालकंखी परिवए, बहुं च खलु पावं कम्मं पगडं (सू० १११)

ए सर्वज्ञ साधु मूळ अने अग्रनो रेचक [कर्मने तोडनारो] बनीने निष्कर्मदर्शी कहेवाय छे, ते मरणथी मुकाय छे, कारणके घातीकर्मो दुर थवाथी अघातीकर्ममां रहेलुं आयु नवा भवनुं बंधातु नथी, अथवा वारंवार मरवुं, अथवा क्षणे क्षणे मरवुं ए मरणथी ते मुकाय छे अथवा वधोज आ संसार मरण युक्त छे तेथी पोते मुकाय छे वळी ते, मुनि संसारमां रहेलो भय, अथवा संसार संबंधी सात प्रकारनो भय तेने देखे छे, के (संसारीने आवा भयो आवे छे.) ते दृष्टभय कहेवाय छे, वळी ते छ द्रव्यना आधाररुप-लोक अथवा, चौद जीवस्थानवाळो लोक छे तेमां परम जे मोक्ष छे. अथवा तेनुं कारण संयम छे तेने देखवाना स्वभाववाळो होय ते परमदर्शी छे तथा स्त्रीप शु नपुंसक साधुना ब्रह्मचर्यने घात करनार छे, तेनाथी रहित एवा मकानमां रहे छे, ते द्रव्यथी विविक्त कहेवाय. तथा रागद्वेषथी रहित निर्मळ चित्त राखवाथी भावथी विविक्त कहेवाय, ते गुणवाळो होवाथी विविक्तजीवी कहेवाय छे. आवो मुनि इंद्रिय तथा मनने शांत राखवाथी उपशांत छे, अने ते पांच समितिथी युक्त होवाथी अथवा सरळ ते मोक्षमार्गे जवाथी समित छे, अने ज्ञान विगेरेथी युक्त छे, तेम अप्रमादि पण छे. वळी ते मुनि तेवीरीते आखी जींदगी सुधी उत्तम गुणवाळो रहे; ते काल आकांक्षी कहेवाय; अने ए प्रमाणे पंडित मरणनी आकांक्षावाळो संयम–अनुष्ठानमां रहे.

आवुं शामाटे करे ते कहे छे.

मूळ उत्तरप्रकृतिना भेदवाळुं तथा प्रकृति, स्थिति, अनुभाव, प्रदेश, एम चार प्रकारे बन्धवाळुं, तथा बन्ध उदय-सत्तानी व्यव-
स्थावाळुं, तथा बांधवुं स्पर्श करवो.जोडावुं, एकपणे मळवुं; विगेरे अवस्थावाळुं कर्म छे; अने ते थोडाक काळमां क्षय थाय; तेवुं
नथी, तेथी काळ आकांक्षी कह्युं छे.

तेमां बन्धस्थाननी अपेक्षाए मूळ उत्तरप्रकृतिनुं बहुपणुं बतावीए छीए. जेमकेः—
वधी मूळ प्रकृतिओ अंतर्मुहूर्त्त सुधी साथे बांधे; ते आठ प्रकारनो कर्मबन्ध छे, अने आयुष्य न बांधे; तो, सात प्रकारनो छे,
अने ते आयुने काळ जघन्यथी अंतर्मुहुर्त्त छे, अने उत्कृष्टथी तेना शिवायनां ३३ सागरोपममां पूर्वकोडीनो त्रीजो भाग वधारे छे,
अने सूक्ष्मसंपरायनो मोहनीयकर्मनो बन्ध दूर थतां, तथा आयुना बन्धनो अभाव थवाथी छ प्रकारनो कर्मबन्ध छे, अने ते जघन्यथी
एक समयनो अने उत्कृष्टथी अंतर्मुहूर्त्त छे, तथा उपशांत क्षीणमोह तथा, संयोगी केवळीने सात प्रकारना कर्मना बन्धनो उपरम थतां
एक प्रकारनुं सातावेदनीयकर्म बन्धाय छे. ते जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी पूर्वकोडीमां थोडुं ओछुं छे.

हवे, उत्तरप्रकृतिनां बन्धस्थान कहे छेः—

ज्ञान आवरण, अने अंतरायना पांचे भेदनुं ध्रुवबंधीपणुं होवाथी एकज बंधस्थान छे, तथा दर्शनावरणीयनां त्रण बधस्थान कहे छेः—
(१) पांच निद्रा अने चार दर्शन साथे रहेवाथी ते नवेनुं ध्रुव बन्धीपणुं होवथी नवविधनुं एक स्थान छे, (२) तेमांथी थीणद्धि
निद्रात्रिक अनंतानुबंधीनी चोकडी साथे दुर थवाथी ते त्रणना बंधनो अभाव थतां छ प्रकृतिनो बन्ध छे (३) अपूर्व करणना संख्येय

भागे निद्रा अने प्रचलानो बन्ध दूर थतां चार प्रकारना दर्शनावरणनो बन्ध रहेवाथी ते त्रीजुं स्थान छे.

वेदनीय कर्मनुं एकज बन्ध स्थान छे. चाहे साता बांधे चाहे असाता बांधे, पण एक बीजानी विरोधी होवाथी बंने साथे न बांधे.

मोहनीयकर्मनां दश बन्धस्थान छे.

(१) एक मिथ्यात्व १, सोळ कषायो १६, कोइ पण एक वेद १, हास्य रतिनुं जोडकुं अथवा अरति शोकनुं एक जोडकुं ते-मांथी एक जोडकुं लेतां ते बे २ तथा भय १, जुगुप्सा २, मळी फुल २२ प्रकृतिनो बंध होय छे.

(२) मिथ्यात्वनो बन्ध दूर थतां सास्वादनगुणस्थनमां २१ नो बन्ध छे.

(३) तेमांथी मिश्रदृष्टि अथवा अरतिसम्यगदृष्टिने अनंतानुबन्धी चोकडी दूर थवाथी १७ प्रकारनो बन्ध छे.

(४) तेमांथी देशविरति गुणस्थाने अप्रत्याख्याननी चोकडीना बन्धनो अभाव थवाथी १३ नो बन्ध छे,

(५) तेमांथी प्रमत्त अप्रमत्त अपूर्वकरणमां वर्तता साधुने प्रत्याख्याननी चोकडी दूर थवाथी ९ नो बन्ध छे.

(६) तेमांथी हास्य विगेरेनुं जोडकुं तथा भय जुगुप्सा दूर थवाथी फक्त ५नो बन्ध अपूर्व करणना चरम [छेल्ला] समये छे.

(७) तेमांथी अनिवृत्तिकरणना संख्येय भाग वीते थके पुरुष वेदना बन्धनो अभाव थतां चारनो बन्ध छे.

(८) तेमांथी तेज गुणस्थाने संख्येय भाग गये थके अनुक्रमे क्रोधनो क्षय थतां ३ नो बध छे.

(९) माननो क्षय थतां २नो बन्ध छे [१०] मायानो क्षय थतां १नो बन्ध छे त्यार पछी अनिवृत्तिकरणना छेल्ला समयमां मोहनीयना बन्धनो अभाव थवाथी अबन्धक छे.

सामान्यथी आयुकर्मनो बन्ध एक प्रकारनो छे

चार प्रकारना आयुमांथी कोइ पण एकनो बन्ध होय पण बे अथवा त्रण साथे बन्धावानो अभाव होवाथी एक बन्ध जाणवो– नाम कर्मनां आठ बन्धस्थान छे.

(१) २३ प्रकृति तिर्यंच गतिने योग्य बांधतां थाय छे. ते नीचे प्रमाणे तिर्यंच गति, १ एकेंद्रिय जाति १ औदारिक तेजस कार्मण शरीरो ३ हुंड संस्थान १ वर्ण गंध रस स्पर्श ४ तिर्यग गतिने योग्य अनुपूर्वी १ अगुरु लघु १ उपघात १ स्थावर १ बादर सूक्ष्ममांथी १ कोइ पण एक, अपर्याप्तक १ प्रत्येक साधारणमांथी एक १ अस्थिर १ अशुभ १ दुर्भग अनादेय १ अयश कीर्ति १ निर्माण १ एम कुल २३ छे तेनो बन्ध एकेंद्रिय अपर्याप्ताने योग्य मिथ्यादृष्टिने बांधतां होय छे.

(२) ते त्रेवीशमां पराघात अने उच्छ्वास मळी एम २५ पर्याप्ता एकेंद्रियने बन्ध जाणवो.[अपर्याप्ताने बदले पर्याप्ताने २५ प्रकृति लेवी.

(३) एमां आतप अथवा उद्योत एक प्रकृतिनो बन्ध मेळवतां २६ थाय पण साधारणनी जग्याए प्रत्येक अने सूक्ष्मनी जग्याए बादर लेवी.

(४) देवगतिने योग्य बांधतां २८ प्रकृतिनो बन्ध नीचे मुजब छे. देवगति १ पंचेंद्रिय जाति १ वैक्रिय तेजस कार्मण त्रण शरीर ३ समचतुरस्र संस्थान १ अंगोपांग १ वर्ण विगेरे चतुष्टय, ४ अनुपूर्वी १ अगुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ उच्छ्वास १ प्रशस्त विहायोगति १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ प्रत्येक १ स्थिर अस्थिरमांथी एक, १ शुभ सुभग १ सुस्वर १ आदेय १ यशःकीर्त्ति १ अथवा अयशःकीर्त्ति निर्माण १ [टीकामां शुभ अशुभमांथी कोइ पण एक होय छे, एम लख्युं छे. टीपणमां एकली शुभ लीधी

छे] एम कुल २८ नो बन्ध थाय छे.

(५) तेमां तीर्थंकर नामकर्म उमेरवाथी २९

(६) हवे त्रीशनो बन्ध बतावे छे. देवगति, १ पंचेंद्रियजाति १ वैक्रिय आहारक शरीर २ अंगोपांग २ तेजसकार्मण २ पहेलुं संस्थान १ वर्णादि चतुष्क ४ अनुपूर्वी १ अगुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ उच्छवास १ प्रशस्तविहायो गति १ त्रस बादर पर्याप्त प्रत्येक स्थिर शुभ सुभग सुस्वर आदेय यशःकीर्त्ति ए दशक १० तथा निर्माण १ नाम मळी कुल ३०

[७] एमां तीर्थंकर नाम मेळववाथी ३१ थाय छे.

आ प्रमाणे एकेंद्रिय बेइंद्रिय त्रेयेंद्रिय नरकगति विगेरे आश्रयी अनेक भेदे बन्धना घणा प्रकारो छे. ते कर्म ग्रंथथी जाणवा.

(८) अपूर्वकरण आदि त्रण गुण स्थाने देवगति प्रायोग्य बन्धना उपरमथी यशःकीर्तिज फक्त बांधे छे. तेथी एक विधबन्ध छे. त्यारपछी नामकर्मना बन्धनो अभाव छे.

गोत्रकर्ममां सामान्यरीते उंच अथवा नीचनो एकनो बन्ध छे. उंच अने नीच बन्ने विरोधी होवाथी साथे बन्धावानो अभाव छे. कर्मोनुं आ प्रमाणे बन्धद्वारमां लेशथी घणा प्रकारपणुं बताव्युं.

सूत्रकार तेथी कहे छे केः—आ कर्म जीवे बांध्यां छे. ते खुलेखुल्लुं छे, कारणके, ते प्रमाणे भोगवतां दरेकने अनुभवाय छे. [सूत्रमां खलु शब्द वाक्यालंकारमां छे अथवा निश्चयअर्थमां छे के, कर्म बहु प्रकारेज छे.] जो आ प्रमाणे छे, तो ते कर्मबन्धनने दूर करवा शुं करवुं ? ते कहे छेः—

सच्चंमि धिइं कुव्वहा, एत्थोवरए मेहावी, सव्वं पावं कम्मं जोसइ (सू० ११२)

उत्तम जीवोने हित करनार ते सत्य छे, अने तेनेज संयम कहे छे. ते संयममां धैर्यता राख, अथवा यथावस्थित वस्तुनुं स्वरूप जिनेश्वरे बताववाथी तेमनुं कहेलुं मौनींद्र आगम (जैन सिद्धांत) सत्य (तत्व) छे. ते भगवंतना वचनमां उपरत [अतिशय रक्त] बनीने मेधावी [तत्वदर्शी] साधु बधां पाप कर्म जे संसार समुद्रमां भ्रमण करावे छे तेने [संयम अनुष्ठान तथा तप वडे] क्षय करे छे. आ प्रमाणे अप्रमादी साधुना उत्तम गुणो बताव्या ते अप्रमादनो शत्रु प्रमाद छे, ते कषाय विगेरे प्रमादथी प्रमत्त बनेलो केवो दुर्गुणी थाय छे. ते कहे छे.

अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे, से केयणं अरिहए पूरिण्णए, से अण्णवहाए अण्णपरियावाए अण्णपरिग्गहाए जणवयवहाए जणवयपरियावाए जणवयपरिग्गहाए (सू० ११३)

खेति वेपार मजुरी विगेरे अनेक प्रकारना कार्यमां तेनुं चित्त लागवाथी ते संसारी जीव अनेक चित्तवाळोज छे. एटले संसार सुखनो अभिलाषी अनेक चित्त (चंचळ चित्त) वाळो होय छे. "आ पुरुष" एम कहेवाथी संसारी जीव बताव्यो. अहीं पूर्वे कहेल दधि घटिका अने कपिल दरिद्रीनो दृष्टांत कहेवो. (उत्तराध्ययन सूत्रमां कपिलनो दृष्टांत बतावेल छे.) हवे जे अनेक चित्तवाळो छे ते शुं करे छे, ते बतावे छे. द्रव्य केतन एटले चालणी पूरनारो अथवा समुद्र छे. अने भावकेतन ते लोभनी इच्छा छे. एटले पूर्वे कोइए पण भर्युं नथी, तेने पोते भरवा इच्छे छे, तेनो सार आ छे के पैसाना लोभमां शक्य अथवा

अशक्य कार्यमां विचार्या विना अशक्य अनुष्ठानमां वर्ते छे, अने लोभनी इच्छा पूरण करवामां व्या- कुल मतिवाळो बनीने शुं करे छे, ते कहे छे; ते लोभीओ बीजा प्राणीओना वधमां तत्पर थाय छे, अने बीजा जीवोने शरीर तथा मन संबंधी परिताप करावे छे तेज प्रमाणे बे पगवाळां मनुष्य चार पगवाळां मनुष्य पशु विगेरेनो संग्रह करे छे, तथा जानपद एटले जन पदमां थएला काळ प्रष्ट विगेरे अथवा राजा विगेरेनो वध करवा तैयार थाय छे, अथवा लोकोनी निंदा माटे कृत्य करे छे, एटले आ चोर छे एम बीजानी चुगली करे छे, अथवा पारकानां छिद्र उघाडे छे, अथवा मगध विगेरे देशो जीतवा यत्न करे छे (मूळ सूत्रमां क्रियापद नथी लीधुं ते लेवुं)

आ प्रमाणे लोभीआ मनुष्यो वध विगेरे क्रिया करे छे के बीजुं पण पण करे छे ते बतावे छे.

आसेवित्ता एतं (वं) अट्ठं इच्चेवेगे समुट्ठिया, तम्हा तं बिइयं नो सेवे, निस्सारं पासिय नाणी, उववायं चवणं णच्चा, अणण्णं चर माहणे, से नछणे न छणावए छणंतं नाणु जाणइ, निव्विंद नंदि, अरए पयासु. अणा मदंसितिनिसण्णे पावेहिं कम्मेहिं (सू० ११४)

उपर बताव्या प्रमाणे बीजा जीवोनो वध करवो, संग्रह करवो, तथा बीजा जीवोने दुःख देवुं विगेरे पाप करीने पोताना लोभनी इच्छा पूर्ण करीने केटलाक मनुष्यो भरतचक्रवर्ती विगेरे (ते जीवोना थता दुःखने नजरे देखीने वैराग्य पामीने) मन वचन कायाना दुष्ट व्यापारने धिक्कारी शुभ व्यापारमां एटले संयम अनुष्ठानमां यत्न करे छे अने महान तपश्चर्या करवाथी तेज भवमां

मोक्षमां जाय छे, अने ते प्रमाणे विचारी संयम अनुष्ठानमां वर्तीने काम भोग तथा हिंसा विगेरे आस्रवद्वारने त्यागीने शुं करवु ते कहे छे. जेणे भोग त्याग्या ते माणसे प्रतिज्ञा करीने बीजी वखत भोगना लालचु न थवुं, अथवा जुठ अथवा असंयममां वर्तवु नहि. कारण के पांच इंद्रियोना स्वादने खातर असंयम सेवे छे पण ते विषयो सार विनाना छे कारण के जे सार वस्तु छे ते मेळववाथी तृप्ति थाय छे पण जे वस्तुथी तृष्णा वधे तेथी ते निःसार छे, एवुं देखीने तत्व जाणनारो साधु विषय अभिलाष न करे, आ मनुष्योना विषयरसो असार छे, अने अनित्य छे एटलुंज नहि पण देवताओनुं पण विषय सुख तथा जीवित अनित्य छे ते वतावे छे. उपपात (उत्पन्न) थवुं, च्यवन (नाश पामवुं) ते जाणीने विषय संगना सुखनो त्याग करजे. कारण के विषयसमूह अथवा बधो संसार अथवा सर्व स्थान अशाश्वत छे तेथी शुं करवुं ते कहे छे.

मोक्ष मार्गथी अन्य असंयम छे ते अन्यने छोडीने अनन्य ज्ञानादिक छे, तेनुं सेवन कर, माहण एटले मुनि तेने आ उद्देश आप्यो छे. वळी ते मुनि संयम पाळनारो प्राणीओने दुःख न दे, न हणे, न हणावे, न हिंसा करनारने अनुमोदे, आ प्रमाणे हिंसाथी निवृत्त थइ चोथुं व्रत पाळे, ते कहे छे विषयथी उत्पन्न थएल जे आनंद तेने धिक्कार, तथा स्त्री विगेरेमां राग रहित थइने आवी भावना भाव, "आ विषयो किंपाक फळनी उपमावाळा छे अने कडवा तुरियाना जेवा कडवां फळ आपनारा छे" एम जाणीने ते विषय सुख लेवाना परिग्रहना ममत्वने त्यागी दे, हवे उत्तम धर्म पाळवा माटे कहे छे. अवम एटले मिथ्यादर्शन अविरति विगेरे छे तेनाथी उलटुं अनवम एटले संयम छे, तेने देखवाना स्वभाववाळो ते सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्रवाळो थइने उपर कह्या मुजब तुं स्त्री संगनी बुद्धिने दूर कर. विषयोनी निंदा कर, आ सूत्रनो परमार्थ छे.

जे अनवमदर्शी छे ते निसन्न छे एटले पाप कर्मोथी खेदी बनीने ते करतो नथी, अथवा पाप कर्मोथी दूर रहे छे. वळी बीजा गुणो मेळववा बतावे छे.

कोहाइमाणं हणिया य वीरे, लोभस्स पासे निरयं महंतं तम्हा य वीरे विरए वहाओ, छिंदिज्ज सायं लहुभूयगामी ॥१॥ गंथं परिण्णाय इहऽज्ज! धीरे सायं परिण्णाय, चरिज्ज दंते। उम्मज्ज लध्धुं इह माणवेहिं, नोपाणिणं पाणे समारभिज्जा सि त्तिबेमि ॥ द्वितीय उद्देशकः ३—२ ॥

क्रोध जेमां पहेलो छे ते क्रोधादि कषायो छे. तथा जेनावडे मपाय ते मान, एटले अनंतानुबन्धी विगेरे कषायोना चार भेदो छे ते अथवा क्रोध अने मान जे क्रोधनुं कारण छे ते गर्वने साधु हणे अने ते हणनारो वीर छे, तथा जेम द्वेषरूप क्रोध मानने हणे, तेमज राग दूर करवा कहे छे. लोभ पण अनंतानुबंधी विगेरे चार प्रकारनो छे तेनी स्थिति अने विपाकने जो, कारणके तेनी स्थिति सूक्ष्म संपराय नामना दशमा गुणस्थान सुधी मोटी छे, अने तेनो विपाक अप्रतिष्ठान विगेरे नरकवासनी प्राप्ति सुधी छे.

तेथी सूत्रमां कह्युं छे के "गच्छा मणुआ य सत्तमिं पुढविं" माछलां अने मनुष्यो मरीने सातमी नारकी सुधी जाय छे, ते प्रमाणे ते मोटा लोभमां परवश थइने सातमी नारकीमां दुःख भोगवे छे.

तेथी शुं करवुं ते कहे छे—

जो लोभथी आवुं दुःख छे तो प्राणी वध विगेरेनी प्रवृत्तिथी नरकमां जवुं न पडे माटे वीर पुरुष लोभथी दूर रहे. वळी शोकने

अथवा संसार भ्रमण करावनार भावश्रोतने दूर कर तथा तुं लघु भूत एटले मोक्ष अथवा संयम ते तरफ जनारो लघुभूतगामी था, अथवा लघुभूत थवानी इच्छावाळो लघुभूत कामी बन; फरी उपदेश आपे छे तुं बाह्य तथा अभ्यंतर बे प्रकारे गांठने ज्ञपरिज्ञावडे जाणीने हमणांज धीर बनीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे छोड.

वळी विषय अभिलाष ते संसार प्रवाह छे तेने जाणीने दांत एटले इंद्रियोने दमन करीने संयम पाळ, केवी रीते पाळे ते कहे छे, अहींयां मिथ्यात्वादि शेवालथी आच्छादित संसार कुंडमां जीवरूपी काचबो तुं बनीने श्रुति (ज्ञान भणवुं) श्रद्धा तथा संयममां वीर्य जोडीने काचबो जेम तरी आवे तेम तुं तरीजा, मनुष्य सिवाय मोक्ष नथी, माटे मनुष्यपणामां तरवानुं कह्युं पण प्राणीनी हिंसाना आरंभनां कृत्यो न करतो, पांच इन्द्रियो त्रण बळ श्वासोश्वास अने आयु ते दश प्राणने धारण करवाथी प्राणी कहेवाय. तेने दुःख न दे, न दुःख देनारां कृत्य कर. आ प्रमाणे शितोष्णीयअध्ययनमां बीजो उद्देशो अर्थरूपे पुरो थयो.

सुधर्मास्वामीए जंबुस्वामीने कह्युं विगेरे पूर्व माफक जाणवुं.

हवे त्रीजो उद्देशो कहे छे.

एनो बीजा साथे आ प्रमाणे संबन्ध छे.

गया उद्देशामां दुःख तथा तेने सहन करवानुं बताव्युं अने ते सहन न करे तो साधु नहि एटलुंज नही पण संयम अनुष्ठान करे तथा पापकर्म न करेः तोज साधु थाय छे. ते आ उद्देशामां बतावे छे. आ संबन्धवडे आवेला त्रीजा उद्देशाना सूत्र अनुगममां

सूत्र उच्चारवुं जोइए.

संधिं लोयस्स जाणित्ता, आयओ बहिया पास, तम्हा न हंता न विघायए, जमिणं अन्नमन्न-वितिगिच्छाए पडिलेहाए न करेइ पावं कम्मं, किं तत्थ मुणी कारणं सिया? (सू० ११५)

द्रव्यथी अने भावथी एम बे प्रकारे संधि छे. एटले भीत विगेरेमां फाट पडे ते द्रव्य संधि छे, अने भावथी संधि कर्म विवर छे एटले दर्शनमोहनीयकर्म जे उदयमां आव्युं ते क्षय थयुं अने बीजुं बाकीनुं शांत छे ते सम्यक्त्वनी प्राप्तिरूप भावसंधि छे, अथवा ज्ञानावरणीय विशिष्ट क्षायोपशमिकभावने पामेल ते सम्यग् ज्ञाननी प्राप्तिरूप भावसंधि छे. अथवा चारित्रमोहनीय क्षय उपशमरूप भावसंधि जे छे तेने जाणीने विचारजे के प्रमाद करवो सारो नथी.

जेमके लोकमां चोर विगेरे शत्रुना सैन्यथी घेरायेला लोकमां भीत अथवा बेडी विगेरेमां सांधो अथवा छिद्र देखीने प्रमाद करवो सारो नथी तेज प्रमाणे मोक्षाभिलाषीए कर्म विवर मेळवीने लव क्षण जेवा थोडा काळने पण स्त्री पुत्रनां संसारी सुखनो व्यामोह (प्रेम) करवो सारो नथी; अथवा सांधो तेज संधि छे, ते भावसन्धि ज्ञानदर्शन—चारित्रना परिपालनमां अशुभकर्मना उदयथी फाट पडे; तो पाछुं संधाण करीदेवुं. (कुभावने दूर करवो.)

आ क्षयउपशमिक विगेरे भावलोकना आश्रयी छे, अथवा सूत्रमां विभक्ति बदलीए; तो, सातमी विभक्ति लेतां लोकमां एटले, ज्ञानदर्शन—चारित्रने योग्य लोक छे, तेमां भावसन्धि जाणीने अक्षुण्ण (सम्पूर्ण) पाळवाने प्रयत्न करवो.

अथवा सन्धि एटले अवसर धम अनुष्ठान करवानो आव्यो छे तेने जाणीने लोक एटले, १४ प्रकारनां जीवोने उपजवाना १४ स्थान छे, तेने जाणीने जीवोने दुःख देवानुं कृत्य न करवुं. (संधिना त्रण जुदा अर्थ बताव्या. प्रथममां विवर एटले बाकुं अथवा फाट बताव्युं के, शत्रुथी घेरातां अजसर जोइने प्रमाद न करतां नासीजवुं; तेम मोह दूर थतां, संसारथी तरीजवुं; बीजो अर्थ सांधो बताव्यो. एटले, जेम गृहस्थो घरमां फाट पडे; तो, प्रमाद कर्या विना पुरीदे तेम साधुने पापना उदयथी चारित्रमां दोष लागे; तो, तरत शुद्धि करीले. त्रीजो अर्थ अवसर कर्यो छे. एटले, धर्मना अवसरे धर्म करी बीजा जीवोने दुःख थाय; तेवुं कृत्य न करवुं एम बताव्युं.)

वळी कहे छे केः—हे साधु! तुं जेम, पोताना आत्माने सुख व्हालुं गणे छे, अने दुःख अप्रिय माने छे, तेवी रीते बहारनां जीवो उपर पण मानी ले; अने पोताना आत्मा समान मानीने बधां जीवो सुखना वांच्छक, अने दुःखना द्वेषी जाणीने तेओने न थइश; तेम बीजाओथी जुदा जुदा उपायोवडे तेमनो घात न करावीश.

जो के, बीजा मतना केटलाक साधुओ जीवदयाने मुख्य मानीने स्थूळसत्त्व (मोटा जीव अथवा हालता–चालता जीव) ने मारता नथीः तोपण, तेओ पोताने माटे रंधावीने खाय छे; तथा गृहस्थ माफक, वस्तुनो संचय करवाथी तेमना लीधे, सूक्ष्म (नाना जंतुओ, अथवा एकेन्द्रिय) जीवो विगेरे हणाय छे, तेथी तेओ घातक छे, एटले बीजा पासे हणावे छे, अने हणनारनी अनुमोदना करे छे. (माटे साधुए तेवो पण दोष न लागेः माटे, साधु माटे रांधेलो आहार न वापरवो; तेम, संचय पण न करवो.) हवे एम बतावे छे के. उपर प्रमाणे त्रण करणथी हिंसा न करवी. तेटलाथी साधु न कहेवाय; पण जेमां, पापकर्मनुं न करवानुं कारण छे.

ते वतावे छे. अन्योन्य जे शंका अथवा, एकवीजानो भय अथवा लज्जा, ते लज्जावडे अथवा लज्जाने ध्यानमां लइने परस्पर आशंका अथवा अपेक्षावडे, पापना उपादानरूप–जे कर्मनुं अनुष्ठान छे, ते साधु न करे; एटलुं पाप न करवाथी मुनि कहेवाय एटले जो, परनी लज्जाथी पाप न करे; तो, ते मुनि कहेवाय? उ०–तेटलाथी मुनि न कहेवाय; पण अद्रोहना विचारवाळो मुनिज निश्चयथी साधु छे. जो, ते प्रमाणे, बीजी उपाधिना वशथी ते निर्मळ भाववाळो न होय; तो मुनि न कहेवो. मुनिपणाना भाववाळो मुनि कहेवाय.

एटले, सूत्रमां सरळ शिष्य गुरुने पुछे छे के:—

कोइ साधु बीजा साधुओना डर अथवा लज्जाथी आधाकर्मादि आहार न ले; तो, ते मुनि भावसाधु कहेवाय के नहि ?

आचार्य कहे छे बीजो व्यापार छोडीने सांभळ.

बीजी उपाधि जे पापना व्यापाररूप छे, तेने त्यागवाथी भाव साधुपणुं थाय छे, एथी एम समजवुं के, अंतःकरण निर्मळ करीने साधुनां अनुष्ठान करे; तेज भावमुनिपणुं छे, शिवाय नहि.

उपर कहेल अभिप्राय निश्चयनयनो छे. हवे, व्यवहारनयनो अभिप्राय कहे छे:—जे सम्यक्दृष्टि छे, अने पंचमहाव्रत लीधेलां छे, तेनो भारवहन करवामां प्रमाद करीने पण बीजा समान साधुनी लज्जावडे, अथवा गुरु महाराजना भयथी अथवा गौरव (पोतानां उत्तम कुळ विगेरेना कारणे कोइ साधु आधाकर्म विगेरे दोषित आहार विगेरे छोडी पडिलेहणा विगेरे क्रिया करे; अथवा तीर्थनी शोभा माटे महिनाना उपवास विगेरे लोकप्रसिद्ध क्रिया करे; तो, तेमां तेना मुनिभावपणानुंज कारण जाणवुं. कारणके; तेवी धर्म-क्रिया करतां परंपराए (धीरे धीरे) तेनी शुभ भावनी उत्पत्ति थशे.

आ प्रमाणे शुभ अंतःकरणना व्यापारथी रहित साधुना साधुपणामां सत् असद्भाव बताव्यो; त्यारे शिष्य पूछे छे केः—निश्चयनयनो मुनिभाव केवीरीते छे? तेनो विशेष खुलासो शास्त्रकार कहे छेः—

समयं तत्थुवेहाए अप्पाणं विप्पसाणीए—अणन्न परमं 'नाणी; नो पमाए कयाइवि। आयगुत्ते सया वीरे, जायामायाइ जावए' ॥ १ ॥ 'विरागं' रुवेहिं गच्छिज्जा महया खुड्डएहि य, आगइं गइं परिण्णाय दोहिवि अंतेहिं अदिस्समाणेहिं से न छिज्जइ न भिज्जइ 'न' डज्झइ 'न' हंमइ कंचण सव्वलोए (सू० ११६)

समभाव ते, समता तेने विचारीने एटले, समतामां रहेलो साधु जे जे करे छे, ते ते कोइपण प्रकारे दोषित आहार विगेरे लज्जा विगेरेथी छोडे; अने लोकमां देखाडवा उपवास विगेरे करे; ते बधु मुनिपणाना भावनुं कारण छे. अथवा, समय ते जैनागम छे, ते आगममां बतावेली विधिए विचारीने संयम–अनुष्ठान करे; ते बधुं मुनिभावनुं कारण छे, एटले आगममां कह्या प्रमाणे चालीने अथवा, समताने धारण करीने आत्माने प्रसन्न राखे; अथवा, आगम भणीने विचारीने अथवा, समदृष्टि राखीने जुदा जुदा उपायोवडे इन्द्रियो तथा मनना अप्रमाद विगेरेथी आत्माने प्रसन्न करे; अने आत्माने प्रसन्न राखवो; ते संयममां रहेवाथी थाय छे, अने तेमां हमेशा साधुए अप्रमादीपणुं भाववु तेज कहे छेः—

मूळ सूत्रमां 'अणण्ण' विगेरे श्लोक छे तेनो अर्थ कहे छेः—

जेनाथी बीजुं कंइ मोटुं नथी; ते अनन्य परमसंयम छे, तेने परमार्थ जाणनारो ज्ञानी प्रमादवडे दोष न लगाडे. अर्थात् संयमक्रियामां कोइपण वखत प्रमाद न करे. हवे जेम अप्रमादी थवाय ते बतावे छे.

इन्द्रियो तथा मन ए बन्नेनी आत्माने कुमार्गे न जवा दइ गुप्त राखे ते आत्मगुप्त साधु जाणवो, तथा हंमेशां यात्रा ते संयमयात्रा अने संयम निर्वाहमां मात्रा वापरे ते यात्रा मात्रा कहेवाय, मात्रानो अर्थ अतिआहार न ले, एटले आत्माने जेवीरीते संयममां शक्ति रहे पण इन्द्रिओ उन्मत्त न थाय, अने संयमना आधाररूप देहनुं प्रतिपालन लांबा काळ सुधी थाय, तेवीरीते आहार विगेरे वापरे. कहुं छे के:—

आहारार्थं कर्म्म कुर्यादनिन्द्यं, स्यादाहारः प्राणसन्धारणार्थम् । प्राणाः धार्यास्तत्त्वजिज्ञासनाय, तत्त्वं ज्ञेयं येन भूयो न भूयात् ॥१॥

आहार माटे निर्दोष गोचरी वापरे कारण के आहार छे ते प्राणोने धारण करवा माटे छे, अने ते प्राणोतत्वनी जीज्ञासा पूर्ण करवा माटे धारवाना छे, कारण के एवुं तत्व जाणवुं बारंवार जन्म लेवो न पडे.

हवे ते आत्मा गुप्तता केवीरीते थाय ते गुरु बतावे छे.

विराग एटले मनोहररूप आंखो आगळ आवे, तो पण तेमां प्रेम न करे, अहिं रुप लेवानुं कारण आ छे के ते रुप सुंदर देखतां गमे तेवानुं मन खेंची ले छे, तेथी सूत्रमां रुप लीधुं छे, खरीरीतेतो पांचे विषयोमां विरागी बनवुं, तथा दिव्य भावनुं

रुप होय अथवा क्षुल्लक एटले मनुष्यरुप होय (देवांगना अथवा सुंदर रुपवाळी स्त्री देखीने) तेमां ललचाय नहिं, अथवा देव संबन्धी के मनुष्य संबन्धी मोटुं नानुं रुप एटले तेमां पण मध्यम रूपवाळी के घणा रूपवाळी देवी के स्त्री होय तो तेमां ललचावुं नहिं, अहि "नागार्जुनीया" कहे छे.

विसयंमि पंचगंमीवि, दुविहंमि तियं तियं ॥ भावओ सुट्ठु जाणित्ता, से न लिप्पइ दोसुवि ॥१॥

शब्द विगेरे पांचे प्रकारना विषयोमां तथा बन्ने प्रकारमां एटले जे इष्ट अनिष्ट छे, तेमां हीन मध्यम उत्कृष्टने भावथी एटले परमार्थथी जाणीने रागद्वेषवडे पाप कर्मथी न लेपाय, अर्थात् तेमां रागद्वेष न करे, तेमां शुं आलंबन छे के रागद्वेष न थाय ते कहे छे. आगमन तथा गमन ते तिर्यंच अने मनुष्यने चारे गतिमां आववा जवानुं छे. तथा देवता नारकीने तिर्यंच मनुष्यमांथीज आववुं जवुं छे, नारकी माफक देवने पण बेज गति अगति छे, फक्त मनुष्यने मोक्ष गतिनो सद्भाव होवाथी पांच गति छे, आ प्रमाणे जीवने गति आगति थाय छे ते विचारीने संसार चक्रवाळमां कुवाना अरटना न्याये भ्रमण छे, ते समजीने अने मनुष्यपणामां मोक्ष मळे छे तेवुं जाणीने सुगतिनो अंत लावनार जे रागद्वेष छे तेने दूर करीने आगति गतिने आपनार रागद्वेष जाणीने ते बन्नेने दूर करी कोइ पण जीवने पोते तरवार विगेरेथी छेदे नहिं, तथा भाला विगेरेथी भेदे नहिं, तथा अग्नि विगेरेथी बाळे नहिं तथा नरकगति विगेरे अथवा अनुपूर्वी विगेरे घणी वार विचारीने पोते हणे नहि.

अथवा रागद्वेषनो अभाव थाय तो उपर कहेलां पाप पोतानी मेळे दूर थाय, एटले रागद्वेष छोडनारो मुनि छेदवा विगेरेना

कृत्य पोते न करे, सूत्रमां 'कंचण' विगेरे छे तेनी विभक्ति बदलीने त्रीजीमां अर्थ लइए, तो एम थाय के 'केनचित् कोइपण माणस एवो नथी के आ बधा लोकमां रागद्वेष विनानो होय ते रागद्वेषना अभावे छेदे, भेदे, अर्थात् रागद्वेष छोड्या पछी छेदे भेदे नहिं.

जो के आ प्रमाणे गति आगतिना ज्ञानथी रागद्वेषनो त्याग थाय छे, अने तेना अभावथी छेदनादि संसार दुःखनो अभाव थाय छे, तेवुं मुनि जाणे छे, पण वर्तमान सुखछे देखनारा अमे क्यांथी आव्या क्यां जइशुं? अथवा अमने त्यां शुं मळशे, एवो विचार नथी करता, तेथी रागद्वेष करीने नवां कर्म बांधीने संसार भ्रमणनी योग्यता अनुभवे छे. एवुं सूत्रकार बतावे छे.

अवरेण पुव्विं न सरंति एगे, किम्मस्स तीयं किं वाऽऽगमिस्सं । भासंति एगे इह माणवाओ,
जमस्स तीयं तमागमिस्सं ॥१॥ नाईयमट्ठं न य आगमिस्सं, अट्ठं नियच्छन्ति तहागयाउ ।
विहुय कप्पे एयाणुपस्सी, निज्झोसइत्ता खवगे महेसी ॥२॥

उपरनां बे सूत्र गाथानो अर्थ कहे छे. पहेलां हुं कोण हतो ? के हुं हाल आवो छुं ? एवुं केटलाक मोह अने अज्ञानथी घेरायेली बुद्धिवाळा जीवो जाणता नथी, एटले आ जीवने नरकादि भवथी उत्पन्न थयेलुं अथवा बाळ कुमार विगेरे वयवाळुं एकठुं थयेलुं पूर्वलुं दुःख विगेरे केवी रीते आवेलुं छे ? अथवा, भविष्यमां केवी रीते थशे ? एटले, आ विषय सुखना वांछक, अने दुःखना द्वेषी जीवनुं भविष्यकाळमां शुं थशे.? ते तेओ जाणता नथी; पण जो, कदी तेओना हृदयमां भूत-भविष्यनी विचारणा होत; तो, तेओने संसारमां रति (आनंद) थात नहीं, कह्यु छे के:—

केण ममेत्थुप्पत्ती कहं इओ तह पुणोऽवि गंतव्वं? जो एत्तियंपि चिंतइ इत्थं सो को न निव्विण्णो? ॥१॥

अहीं मारी उत्पत्ति केवीरीते थइ छे? अने अहींथी मारे क्यां जवुं छे? जे माणस आटलुं पण, अहीं चिंतवे; तो, तेवो केम दुःख-संसारथी वैराग्यवाळो न थाय? (अर्थात् थायज!) पण, केटलाक महामिथ्याज्ञानिओ कहे छे केः—आ संसारमां अथवा मनुष्य-लोकमां जेवीरीते हाल मनुष्यो के, बीजां प्राणीओ जेवी अवस्थामां छे, तेवीजरीते भूतकाळमां स्त्रीपुरुष नपुंसक सौभाग्य-वाळो, दुर्भाग्यवाळो, कूतरो, शीयाळ, ब्राह्मण, क्षत्री, विटशुद्र विगेरे भेदोमां भोगवता हतां; अने तेवुंज भविष्यमां थवानुं छे. (आ प्रमाणे जैनेतर एकवादीनो मत कह्यो. ते लोको एवुं माने छे के जेम जीवो हालनी दशामां छे, तेवा भूतकाळमां हता; अने हवे पछी रहेशे.) (बीजो अर्थ) जेनाथी बीजो पर (श्रेष्ठ) नथी ते संयम अपर छे, तेनाथी जेनुं चित्त रंगायलुं छे. तेओ पूर्वे भोगवेलां विषयसुख विगेरेने (स्थूलभद्रमुनि माफक) याद करता नथी. केटलाक रागद्वेषथी मुकायला भविष्यना देव संबधी भोगोनी आकांक्षा राखता नथी. वळी आत्मा-रमणतामां रमता मुनिओने अमुक संसारी जीवने भूतकाळनुं सुखदुःख के, भविष्यनुं थवानुं सुखदुःख लक्ष्यमां रहेतुं नथी; अथवा उत्तम ध्यानमां बेठेला साधुने केटलो काळ वीतीगयो; अथवा केटलो बाकी रह्यो ते पण लक्ष्यमां नथी.

अथवा लोकोत्तर पुरुषो जेओ रागद्वेषरहित छे, तेवा केवळी भगवंतो, अथवा चउदपूर्वी मुनिओ संसारी जीवने अनादि अनन्तकाळ सुधी (अभव्य आश्रयी, अथवा बीजां बधा जीव आश्रयी) दरेक काळमां सुख विगेरे केटलां हतां, अने आवशे तेनी गणतरी पण करी शकता नथी.

बीजा आचार्यो नीचे प्रमाणे कहे छेः—(प्रथमनुं सूत्रकाव्य) बीजी रीते कहे छेः—

"अवरेण पुर्वि किह से अतीतं, किह आगमिस्सं न सरंति एगे ॥
भासन्ति एगे इह माणवाओ, जह स अईअं तह आगमिस्सं ॥१॥"

पूर्व जन्म साथे बीजा जन्मनो सबन्ध जाणता नथी, के केवीरीते अथवा क्या प्रकारे पूर्वे सुख दुःख हतुं, अने भविष्यमां केवो रीते सुख दुःख थशे ते जाणता नथी. अथवा बीजा वादीओ आम बोले छे के.

आमां शुं जाणवानुं छे? जेवीरीते हमणां पूर्वना रागद्वेषथी उत्पन्न थएला कर्मवडे जीवने बन्धायलां कर्मनां फळ संसारमां भोगववां पडे छे. तेमज पूर्वे पण हतुं अने भविष्यमां थवानुं छे, (तेमां वधारे शुं जाणवानुं छे?)

अथवा प्रमाद विषय कषाय विगेरेथी कर्मो एकठां थवाथी इष्ट अनिष्ट विषयोने अनुभवता जीवो सर्वज्ञनी वाणीरुप अमृतना स्वादने न जाणनारा जेओ छे, तेमने जेम भूतकाळमां संसारमां सुख दुःख अनुभव्युं, तेवुं भविष्यमां पण अनुभवशे.

पण जेओ संसार समुद्रथी तरवावाळा छे, तेओ कर्मनुं फळ जाणे छे, ते बतावे छे, ते सूत्रना बीजा काव्यमां कहे छे जे जीवोनुं संसारमां फरी आववुं नथी. तेओ सिद्ध छे, अथवा जेवुज जाणवानुं छे तेवुंज तेमने ज्ञान छे. तेवा सर्वज्ञो छे, तेओ अतीत (जुना) पदार्थने भविष्यना रुपपणे नथी मानता, तथा भविष्यना पदार्थने भूतकाळना रुपपणे नथी मानता, कारण के परिणतिनी विचित्रता छे, सूत्रमां "अर्थ" शब्द फरी लेवानुं कारण ए छे के पर्यायरूप बदलाय छे (बाळक जुवान बुढो ए पर्याय छे अने ते

वदलाय छे) पण द्रव्यार्थपणे तो त्रणे अवस्थामां एकपणुंज छे (वाळपणमां अने बुढापणमां जीवनो भेद नथी.)

अथवा अतीत अर्थ ते विषय भोगादिक भोगवेलां अने भविष्य संबंधी देवांगनाना विलासने भोगववानां छे. तेने जेओ राग-द्वेषना अभाववाळा छे तेओ याद करता नथी अथवा वांछता नथी. (तु शब्द विशेष बतावे छे) जेम मोहना उदयथी केटलाक पूर्वना अथवा भविष्यना भोगोने वांछे छे, तेम सर्वज्ञ भोगोने इच्छता नथी; अने तेना मार्ग (शासन) मां चालनारा पण एवाज निःस्पृही होय छे ते बतावे छे, 'विहूय कप्पे.'

एटले अनेक प्रकारे आठ प्रकारना कर्मने धोनार ते विधूत छे, अने कर्म धोवुं ते साधुनो आचार छे, तेवो कल्प पाळनार साधु विधूत कल्पवाळो कहेवाय, अने तेज सर्वज्ञनो अनुदर्शी कहेवाय छे, अने ते अतीत अनागत विषयसुखनो अभीलाषी न होय, वळी तेने बीजा क्या गुणो होय ते कहे छे.

पूर्वे बांधेलां अशुभ चीकणां कर्मनो क्षपक एटले नास करनारो छे,अथवा ते भविष्यमां नाश करनारो थशे [सूत्रमां 'निज्झोस इत्ता' शब्द छे, तेनो अर्थ वर्तमान अने भविष्यनो लीधो छे]

कर्म नाश करवाने जे मुनि उद्यम करे ते धर्मध्यान अथवा शुक्ल ध्यान ध्यानार महा योगीश्वरने संसारना सुख दुःखना विकल्पनो नाश थवाथी हवे शुं थशे ते बतावे छे.

का अरई के आणंदे?, इत्थंपि अग्गहे चरे, सव्वं हासं परिच्चज्ज आलीणगुत्तो परिव्वए,

पुरिसा! तुममेव तुमं मित्तं किं बहिया मित्तमिच्छसि? (सू० ११७)

इच्छित वस्तुनी अप्राप्ति अथवा इष्ट वस्तुनो नाश थतां मनमां जे विकार थाय ते अरति छे, अने इच्छित वस्तुनी प्राप्तिमां आनंद थाय छे, आ अरति के आनंद योगिना चित्तमां होतो नथी, कारणके ते महात्माने धर्मध्यान के शुक्लध्यानमां चित्त रोकावाथी तेने संसारी वस्तुनी अरति के आनंद उत्पन्न थवाना कारणनो अभाव छे. तेथी सूत्रमां कह्युं के अरति अने आनंद ए शुं छे? (अर्थात् कंइज नथी) पण संसारी जीवनी माफक तेमणे ते विकल्पने राख्यो नथी.

जो आ प्रमाणे होय तो तेवा जीवने असंयममां अरति अने संयममां आनंद तेने होवो जोइए एम सिद्ध थयुं, तेनुं आचार्य समाधान करे छे, के तेवुं नथी अने अमारो अभिप्राय तमे समज्या नथी, कारण के जेमां रति अरतिना विकल्पनो अध्यवसाय निषेध कर्यो छे, तो बीजा प्रसंगमां पण रति अरति न होय तेज सूत्रकार कहे छे; ए महात्माने अरति अने आनंद बन्ने दूर थवा रूप छे एटले तेमने तेवो आग्रह नथी तेथी ते 'अग्रह' कहेवाय छे, एनो भावार्थ आ छे के उत्तम साधु शुक्ल ध्यानथी बीजे कंइ रति आनंद कोइ निमित्ते आवे तो पण तेना आग्रह रहित बने, अने ते बन्नेमां मध्यस्थ रहे (संयम अने असंयम व्यवहारथी बाह्य क्रियारूप छे. शुक्ल ध्यानवाळाने ते बाह्य क्रियाओनी श्रेणीमां जरुर नथी; अने ते ध्यानवाळाने थोडा समयमां केवळज्ञान थवानुं छे. ते अपेक्षाए आ वचन छे के, संयममां रति, असंयममां अरति न होय; परंतु शुक्लध्यान शिवायना बीजा आत्मार्थी साधुने तो कंइक होय छे) फरी उपदेश आपे छे, सर्व हास्य, अथवा हास्यनां कारणो तजे; अने मर्यादामां रही इन्द्रियोने कबजे राखी लीन रहे;

तथा मन, वचन, कायानी सावद्य–क्रिया छोडवाथी गुप्त रहे; अथवा काचवा माफक पोतानुं शरीर संभाळी राखे; के, कोइ जीवने पीडा न थाय; ते संवृतगात्र मुनि छे, अने ते आलीन गुप्त कहेवाय छे, तेवो मुनि साधुनां अनुष्ठाननो बरोबर रीते करे.

ते मुमुक्षु साधुने पोतानां आत्मबळथी संयम–अनुष्ठान फळवाळुं थाय छे, पण पारकाना उपरोध (आग्रहथी) नहीं एम बतावे छे. गुरु शिष्यने कहे छे:—हे पुरुष! जो, तें ग्रह (घर) पुत्र, स्त्री, धन–धान्य, सोनुं विगेरेथी रहित तृण अने मणि–मोतीमां, तथा ढेफुं सोनामां समानदृष्टि राखनार मोक्षार्थी जीवने पण कदाच उपसर्ग आवतां व्याकुळ मति थतां मित्र विगेरेनी आकांक्षा थाय; तो ते दूर करवा कहे छे:—(हे शिष्य!) पुरुष एटले, सुखदुःखथी पूर्ण माटे पुरुष अथवा पुरिमां शयन करवाथी पुरुष (जीव) छे, तेमां बधा जीवोमां उपदेश, तथा संयम–अनुष्ठान करवामां मनुष्य योग्य होवाथी तेने आश्रयी कहे छे. एटले सुशिष्यने कहे; अथवा कोइ पुरुष संसारथी खेद पामेलो खराब अवस्थामां होय; अने ते पोताना आत्माने शीखामण आपतो होय; अथवा अन्य भव्यात्माने साधु उपदेश आपे के—

" हे पुरुष! हे जीव! सारां अनुष्ठान करवाथी तुंज तारो मित्र छे, अने पापकर्म करवाथी तुंज तारो शत्रु छे! तोपछी, बीजा मित्रने केम शोधे छे? कारण के, उपकार करे ते मित्र छे अने ते उपकारी परमार्थ–दृष्टिए अत्यंत अने एकांत–गुण युक्त सन्मार्गे चालता आत्माने छोडीने बीजो कोइ शोधवो शक्य नथी; अने संसारनां कार्यमां सहायकारीपणे बीजाने मित्रपणे मानवो ते मोहनुं विजृंभन (चेष्टा) छे. कारण के संसारीनी मित्रताथी परिणामे मोटा दुःखमां पडवारुप संसार समुद्रमां भ्रमण कराववाथी ते खरी रीते अमित्रज छे! तेनो सार आ छे.

“आत्माज आत्मानो अप्रमत्तपणाथी मित्र छे. कारण के अप्रमत्त आत्मा अत्यन्त एकांत परमार्थ सुख उत्पन्न करे छे. अने जो आत्मा प्रमादी थाय तो दुर्गतिमां जाय, माटे बीजा मित्रने शोधवानी जरुर नथी. पण आत्मा शिवाय बीजो बहारनो आ मित्र आ शत्रु एवो विकल्प अदृष्ट उदयना निमितथी औपचारिक छे. कहुं छे के—

दुपत्थिओ अमित्तं, अप्पा सुपत्थिओ अ ते मित्तं ॥ सुहदुक्खकारणाओ, अप्पा मित्तं अमित्तं च ॥१॥

कुमार्गे गयेलो आत्मा शत्रु छे, सुमार्गे चालनारो मित्र आत्माज छे. कारण के तेथीज दुःख सुख पामे छे अने तेथीज ते अमित्र के मित्र छे. वळी कहुं छे के—

अप्येकं मरणं कुर्यात्, संक्रुद्धो बलवानरिः ॥ मरणानि त्वनन्तानि, जन्मानि च करोत्ययम् ।२॥

एक बळवान शत्रु क्रोधायमान थइने घणुं तो एक वार मारी नाखशे, पण कुमार्गे गयेलो आत्मा अनंतां जन्ममरण आपे छे.” एटले एम समजवुं के निर्वाण आपनार संयमव्रतने जेणे उचर्यां अने पाळ्यां ते आत्मानो मित्र छे. हवे आवो पवित्र आत्मा केवीरीते जाणवो अने तेनुं शुं फळ थशे. ते कहे छे.

जं जाणिज्जा उच्चालइयं तं जाणिज्जा दूरालइयं, जं जाणिज्जा दूरालइयं तं जाणिज्जा उच्चालइयं, पुरिसा! अत्ताणमेवं अभिणिगिज्झ एवं दुक्खा पमुच्चसि, पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि,

सच्चस्स आणाए से उवट्ठिए मेहावी मारं तरइ, सहिओ धम्ममायाय सेयं समणु पस्सइ (सू०११८)

जे पुरुष विषय संगनां कर्म जाणीने छोडनार होय तेने तुं तारनारो मानजे; तथा बधां पाप धर्मो (कारणो) ने जे आलय
(घर) दूर छे. ते दूरालय (मोक्ष) अथवा मोक्ष मार्ग (संयम) छे. ते मोक्ष मार्ग जेने होय ते दूरालयिक छे,
हवे हेतु तथा हेतुवाळो पदार्थ जणाववा गत प्रत्यागत सूत्र कहे छे.
(वीजी रीते) कहे छे, जेने दूरालयिक जाणे तेने उच्चालयिक (तारनारो) जाणे, एनो सार आ छे. जे कर्म तथा आस्रव
द्वारनो रोकनार छे तेज मोक्ष मार्गमां रहेलो छे अथवा मुक्त थएलो छे अथवा जे सन्मार्गे वर्त्तन करे ते कर्मनो काढनारो छे. अने
तेज आत्मानो मित्र छे, तेथी कहे छे, हे पुरुष! हे जीव! आत्मानेज ओळखीने धर्मध्यानथी वहार इन्द्रियोना विषयस्वादने लेता
मनने रोकीने आ प्रकारे दुःखना पासामांथी आत्माने मुकावजे! ए प्रमाणे कर्मोने दूर करी आत्मा आत्मानो मित्र बने छे. वळी
गुरु कहे छे, हे पुरुष! सदाचरणवाळा पुरुषनुं हित करनार सत्य तेज संयम छे. ते संयमनेज बीजा व्यापारथीज निरपेक्ष तुं बनीने
जाण, अने ते प्रमाणे वर्त्तवानी परिज्ञावडे प्रयत्न कर, अथवा आज सत्य जाण, के हे शिष्य! गुरु साक्षिए लीधेलां महाव्रतोनी प्रति-
ज्ञानो निर्वाहकथा, अथवा सत्य एटले जैनागम, तेनुं संपूर्ण ज्ञान मेळव, अने मोक्षाभिलाषीए ते प्रमाणे व्रतोनुं पालन करवुं.
प्र०—शा माटे? उ०—सत्य जैनागमनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तीने मेधावी (बुद्धिमान) साधु मार [संसार] ने तरे छे. वळी सहित
ते ज्ञानादिथी युक्त अथवा हित सहित श्रुत चरित्र बन्ने प्रकारना धर्म ग्रहण करीने साधु शुं करे, ते कहे छे.

श्रेय ते पुण्य अथवा आत्महितने बरोबर रीते देखे (ते मोक्ष मेळवे) आ प्रमाणे अप्रमत्त साधु तथा तेना गुणो बताव्या हवे तेथी उलटुं कहे छे.

दुहजो जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए, जंसि एगे पमायंति (सू० ११९)

रागद्वेष, ए बे प्रकारे अथवा आत्मा के बीजा माटे अथवा आ लोक परलोक माटे अथवा रागद्वेष ए बे प्रकारे हणायलो अथवा खराब रीते हणायलो ते द्विहत अथवा दुर्हत (दुःखी) होय ते शुं करे छे. ते कहे छे. आ जीवित केळना गर्भ माफक निःसार छे, तथा वीजळीना चळकाटना झबकारा माफक चंचळ छे. तेवा शरीरना परिवदन (वंदन करावया) मानन (मान मेळववा) तथा पूजन (पूजावा) माटे हिंसा विगेरे पापोमां प्रवर्त्ते छे. परिवंदन ते लोको मारा पछवाडे भमे ते माटे प्रयत्न करे छे, एटले लावक विगेरेना मांसथी मारुं बधुं शरीर पुष्ट तथा सुंदर देखीने लोको खुशीथीज मने वांदशे, तमे श्रीमान् घणा लाखो वर्ष जीवो! विगेरे बोलशे विगेरे परिवंदन छे. तेज प्रमाणे मान मेळववा कर्म बांधे छे के, लोको मारुं बळ पराक्रम देखीने अभ्युत्थान, विनय, आसन दान, तथा अंजलि करी माथुं नमावी मने मान आपशे. ते मान न (मान) छे, तथा पूजन माटे वर्त्तनारा कर्म आस्रववडे आत्माने बांधे छे. एटले, विद्या भणीने हुं धनवान थवाथी बीजो माणस दान, मान, सत्कार प्रणामवडे मारी सेवा विशेष प्रकारे करी पूजा करशे, ते पूजन छे, वळी, उपरना निमित्ते, एटले वंदन विगेरे माटे केटलाक जीवो रागद्वेषथी हणायला प्रमाद करे छे, पण तेओ पोताना हितने माटे हित (धर्म) करता नथी. एथी उलटुं कहे छेः—

सहिओ दुक्खमत्ताए पुट्ठो ना झंझाए, पासिमं दविए
लोकालोकपवं चाओ मुच्चइ (१२०) त्तिबेमि तृतीय उद्देशो ॥३-३॥

ज्ञानादि युक्त अथवा हितवाळो उपसर्गथी आवेलां दुःख मात्रथी अथवा रोग थवाथी पीडातां व्याकुळ मतिवाळो न थाय ते दूर करवा प्रयत्न न करे, अथवा इच्छेलुं मळतां राग विकल्प तथा अनिष्ट मळतां द्वेष विकल्प न करे, अर्थात रागद्वेष बन्नेने तजे (न सहेवाय तो मध्यस्थ बनी दवा करे, अने स्थविर साधुने योग्य उपायनो निषेध न होवाथी संतोषथी करे)

वळी उपर कहेला वधा उद्देशाना रहस्यने समजीने करवुं न करवुं ते विवेकथी समजे! कोण? जे मोक्षमां जवा योग्य छे ते साधु, ए विवेकी साधु क्या गुणो मेळवे?

जे आलोकाय (देखाय) ते लोक छे, अने १४ रजु प्रमाण ते छे. लोकमां आलोक ते लोकालोक छे, तेना प्रपंचथी मुक्त थाय छे. लोकमां प्रपच आ छे. पर्याप्त, सुभग दुर्भग तथा नारकीना जीवपणे ओळखाय एकेन्द्रियमां अपर्याप्त, एकेन्द्रिपणे ओळखाय ए प्रमाणे वधो संसारी प्रपंच जाणवो. तेनाथी मुकाय एटले चौद राजलोकमां जीवोनुं जुदुं जुदुं रूप तेने मळतां ते नामे गणाय छे. तेवो पोते नहीं थाय.

आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे. त्रीजो उद्देशो अर्थथी समाप्त.

चोथो उद्देशो

त्रीजो पुरो थवा पछी चोथो कहे छे तेनो आ प्रमाणे संबन्ध छे. गया उद्देशामां कह्युं के फक्त पाप न करवाथी के दुःख सहन करवाथी साधु न कहेवाय, पण निष्प्रत्युह (अविघ्नपणे) संयम अनुष्ठान करवाथी साधु थाय. ते बताव्युं. अने निष्प्रत्युहता (अविघ्नपणुं) कषायने दूर करवाथी थाय छे.तेथी हवे पूर्वे कहेल उद्देशाना अर्थाधिकारवाळुं सिद्ध करे छे, तेथी आ प्रमाणे संबन्धे आवेल उद्देशाना सूत्र अनुगममां सूत्र कहे छे.

से वंता कोहं च माणं च मायं च लोभं च एयं पासगस्स दंसणं उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स आयाणं सगडब्भि (सू० १२१)

ते साधु ज्ञानादि सहित दुःख मात्रथी घेरायलो छतां अव्याकुल मतिवाळो आत्मद्रव्य भूत लोकालोक प्रपंचथी मुक्त थया जेवो पोतानुं तथा परनुं हित बगाडनार क्रोधने वमन करनारो छे (वम धातुनो अर्थ दूर करवाना अर्थमां छे तेनो भविष्यकाळ लइए तो बीजी विभक्ति लागे, नहितो छट्ठी विभक्ति लागु पडे) अर्थात् शास्त्रमां कहेल अनुष्ठानने जे साधु विधि प्रमाणे करे, ते थोडा काळमां क्रोधने दूर करशे ए प्रमाणे बीजे पण समजी लेवुं. एटले पोताना उपघात करनार उपर क्रोध कर्मना विपाकना उदयथी क्रोध थाय, जाति कुळ रुप बळ विगेरे कारणे जे गर्व थाय ते मान छे, परने ठगवा रूप विचार ते माया छे. तृष्णाना आग्रहनो परिणाम ते लोभ छे. ते बधाने क्षपणा (कर्म खपाववा) तथा उपशम (शांत करवा) तेने आश्रयी आ क्रोध विगेरे चारनो अनुक्रम छे. अनं-

तानुबन्धी अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी तथा संजवलनी अंदर रहेल भेदो बतावबाने माटे जुदा जुदा बताव्या छे, अने चशब्द मुकवाथी ते दरेकनी उपमा पर्वत पृथ्वी रेणु जळ राजीनी क्रोधनी छे, तथा शैल स्तंभ हाडकुं लाकडुं तिनिशलता माननी छे, तथा वांस कुडंगी (थडीउं) मेष श्रृंग गोमुत्रिका अवलेखनीनी उपमा.मायानी छे, तथा कृमीराग कर्दम खंजन हरिद्रानी उपमा लोभने छे, तथ आखी जींदगी सुधी एक वरस सुधी चार मास अने पंदर दिवसनी स्थिति अनुक्रमे दरेकनी छे, (आ बधानुं वर्णन आज सूत्रमां पाने छे त्यांथी जोवुं.)

आ प्रमाणे क्रोध, मान माया लोभ त्यागवाथी खरी रीते साधुपणुं छे पण क्रोध होय त्यां सुधी साधुपणुं नथी; कह्युं छे केः—

सामण्णमणुचरंतस्स कसाया जस्स उक्कडा हुंति । मन्नामि उच्छुपुप्फं व निष्फलं तस्स सामण्णं ॥१॥

साधुपणुं पाळता साधुने जो कषायो वधारे प्रमाणमां होय तो शेरडीना फुल माफक तेनुं साधुपणुं हुं निष्फळ मानुं छुं. ॥

जं अज्जिअं चरित्तं देसूणाएवि पूवकोडीए । तंपि कसाइयमेत्तो हारेइ नरो मुहुत्तेणं ॥२॥

पूर्व कोडीमां थोडा वर्ष ओछां एवु (आटली लांबी मुदतनुं) चारित्र पाळ्युं होय, ते जो उत्कृष्ट क्रोध करे तो ते माणस एक मुहुर्त्तमां साधुपणुं हारी जाय छे. आ वधुं पोतानी बुद्धिथी नथी कह्यु एवुं बतावबा गौतमस्वामी कहे छे के 'एय' विगेरे आ कषाय दूर करवानुं हमणा उपर बताव्युं, ते बधुं सर्वदर्शी पश्यक साक्षात् देखे छे, कारण के तेने निवारण (केवळ) ज्ञानदर्शन छे, अने ते पश्यक तीर्थकृत् वर्धमना स्वामी छे, अने तेमनुं दर्शन (अभिप्राय मंतव्य) आ छे.

अथवा जेनावडे वस्तु तत्त्व यथावस्थित देखाडाय (कहेवाय) ते दर्शन एटले उपदेश छे, अर्थात् महावीर (वर्धमान) स्वामीनुं कहेलुं छे ते हुं कहुं छुं पण स्वबुद्धिथी नथी कहेतो, ते सर्वदर्शी पश्यक केवा छे. के जेनुं आ दर्शन छे ते कहे छे,

'उवरय' विगेरे-जेनुं द्रव्य भावथी (सर्व जीवोने दुःख देवारुप) शस्त्र बंने प्रकारे दूर थयुं छे, अथवा शस्त्रथी पोते दूर रहेला छे, अहीं भावशस्त्रमां असंयम अथवा कषायो जाणवा, तेनाथी पोते दूर छे. तेनो भावार्थ आ छे केः—

तीर्थंकरने पण कषायने वम्या सिवाय निरावण बधा पदार्थने देखनारुं परम (केवळ) ज्ञान प्राप्त थतुं नथी, तेना अभावमां मोक्ष सुखनो अभाव छे, एथी बीजो पण मोक्ष वांछक साधु जे तेनो उपदेश माने छे अने तेना मार्गे चाले छे तेणे पण कषायनुं वमन करवु, शस्त्रने उपरमनुं कार्य बतावी बीजापण तीर्थंकरनां विशेषण बतावे छे. 'पलियतकरस्स' एटले बधां कर्मनो अथवा संसारनो अंत लाववानो जे यत्न करे ते पर्यंतकर छे, तेनुं आ दर्शन छे.

हवे जेम तीर्थंकरे संयमने विघ्न करनार कषाय शस्त्रने दूर करी संसारनो अंत कर्यो तेम बीजो पण साधु जे तेनुं कहेलुं करनारो होय ते पण करे, तेवुं बतावे छे.

'आयाण' विगेरे जेनावडे आठ कर्म आत्म प्रदेश साथे एकमेकपणे थाय ते आ दान छे, अथवा हिंसा विगेरे आश्रवद्वार अथवा अढारे पापस्थान छे. तेनी स्थितिनुं निमित्त कषायो होवाथी ते आ दान छे. ते कषायोनो वमन करनारो स्वकृत भिद् (कर्म भेदनारो) बने छे. अर्थात् पोते (अज्ञानदशामां) पूर्वे जे कर्मो अनेक भवमां एकठां कर्यां होय; तेने भेदी नांखे; ते स्वकृतभिद् जाणवोः अने जे कर्मोना आदान (बीजरुप)-कषायोने रोके; ते अपूर्वकर्म प्रतिषिद्धमां प्रवेश करनारो छे, अने पोते पोतानां पूर्वकर्मनो

भेदनारो छे. तीर्थंकरना उपदेशवडे पण, पारकानां करेलां कर्मना क्षयना उपायनो अभाव होय तेथी स्वकृत लीधुं.

तेथी तीर्थंकरे पण पारकाना करेला कर्मना खपाववानो उपाय नथी जाण्यो एवी कोइने शंका थाय तेनो उत्तर. एम नथी. कारण के तेमना ज्ञानमां बधा पदार्थोनी सत्ता व्यापीने रहेली छे. (परंतु करे ते भोगवे ए नियमथी दरेके कर्म कापवा उद्यम करवो जोइए.)

शंका—हेय उपदेय पदार्थने छोडवुं ग्रहण करवुं तेना उपदेशने जाणवाथी सर्वज्ञ नथी एवुं अमे कहीए छीए. कारण के उपदेश मात्रथी परोपकार करवाथी तर्थंकरपणानी उत्पत्ति घटती नथी उत्तर युक्तिना विकलपणाथी उत्तम पुरुषना मनने तमारुं कहेवुं आनंद आपतुं नथी, कारणके उत्तम ज्ञान विना हित अहितनी प्राप्ति तथा त्याग उपदेशनो असंभव छे. अने एक पदार्थनुं पण संपूर्ण ज्ञान सर्वज्ञपणा विना घटतुं नथी ते सूत्रकार बतावे छे.

जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ, जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ (सू० १२२)

जे कोइ पण ज्ञानी परमाणु विगेरे एक द्रव्यने तेना पछीना के पूर्वना पर्याय सहित जाणे, अथवा पोताना अथवा पारकाना वधा पर्यायोने जाणे छे; कारण के तेवा पुरुषने अतीत अनागतमां वनेला अने वनवाना पर्यायो सहित द्रव्यने जाणवाथी तेने वधी वस्तुनुं ज्ञान अविनाभावीपणे छे. हवे तेने हेतु तथा हेतुवाळा पदार्थ सहित बीजी रीते कहे छे.

जे सर्व पदार्थो संसार उदरमां रहेला छे तेने जाणे छे ते एक घट विगेरे एक वस्तुने जाणे छे, तेज ज्ञानीने अतीत अनागत पर्याय-भेदोवडे ते ते स्वभावनी आपत्तिवडे अनादि अनंतकाळपणे समस्त वस्तु स्वभावमां जाणपणुं थाय छे. कह्युं छेः—

एगदवियस्स जे अत्थपज्जवा वयणपज्जवा वावि । तीयाणागयभूया, तावइयं तं हवइ दव ॥१॥

एक द्रव्यना जेटला अर्थना पर्यायो, अथवा वचनना पर्यायो छे, ते भूत–वर्तमान, भविष्यसहित होय; त्यारे ते द्रव्य थाय छे. (उपरना सूत्रनो परमार्थ ए छे के, कोइपण वस्तुमां द्रव्य पोते वस्तु छे छतां, तेमां जे स्वरूप बदलाय छे ते पर्यायो छे पूर्वे जे बदलाया ते भूतपर्यायो छे. चालुमां छे, ते वर्तमान, अने थवानो ते भविष्यना छे. ए बधांने जे साथे जाणे; तेज एक वस्तुना एक पर्यायने पण जाणे अने ते एक पर्यायने पण बरोबर जाणे; ते सर्वने पण जाणे; अने ते आ गाथामां बताव्युं छे के एक द्रव्यमां त्रणे काळना पर्यायो छे, अने पर्यायोसहित होय; तेज द्रव्य छे.)

उपर कहेल सर्वज्ञ ते तीर्थंकर छे, अने तेज सर्वज्ञप्रभु सर्व सत्त्वोने उपकार करनारो, अने बनीशके तेवो उपदेश आपे छे ते सूत्रकार बतावे छे.

जे एगं नामे से बहुं नामे, जे बहुं नामे से एगं नामे, दुक्खं लोगस्स जाणित्ता वंता लोगस्स संजोगं जंति धीरा महाजाणं, परेण परं जंति, नावकं खंति जीवियं (सू० १२३) सवओ पमत्तस्स भयं, सवओ अप्पमत्तस्स नत्थि भयं,

मद्य विगेरेथी जे प्रमादी बने तेने थाय छे. ते बतावे छे के, प्रमादी द्रव्यथी बधा आत्मप्रदेशोथी कर्म एकठु करे छे. क्षेत्रथी छए दिशामां रहेलुं; काळथी प्रत्येक समये, अने भावथी द्रव्य विगेरेथी सर्व प्रकारे जे भय करनारुं कर्म उपार्जन करे; ते भय,

हिंसा विगेरेथी भयजनक कर्म बांधे छे.

अथवा सर्वत्र एटले, अहीं अने परलोकमां बंने ठेकाणे प्रमाद करनारने भय छे. पण अप्रमादीने क्यांय पण भय नथी, ते बतावे छे के, आ लोक के. परलोकमां अपायोथी आत्महितमां जागृत रहेनार अप्रमादीने संसार अपसद (निमकहराम विश्वाघाती,) थी अथवा अशुभ कर्मथी कोइ प्रकारे भय नथी; अने कषायना अभावथी अप्रमत्तता थाय छे, तेथी बधां मोहनीयकर्मनो अभाव थाय छे, तेथी संपूर्ण कर्मनो क्षय थाय छे. तेथी ए प्रमाणे एकना अभावमां घणाना अभावनो संभव थाय छे, तथा एकनो अभाव पण बहु अभावथी जुदो नथी. तेटला माटे हेतु, अने हेतुवाळा पदार्थना भावने गत प्रत्यागत सूत्रवडे बतावेल छे. जे प्रवर्धमान शुभ अवयवसायना कंडकमां चढेलो साधु जे, एकला अनंतानुबंधी क्रोधने क्षय करे छे, ते, मान विगेरे बहुने खपावे छे. अथवा, पोतानाज भेदवाळा अप्रत्याख्यान विगेरेने खपावे छे. तथा, एकला मोहनीयने खपावतां बीजी प्रकृतिओने पण खपावे छे. अथवा जे, घणी स्थितिवाळाने खपावे छे, ते साधु अनतानुबन्धी एकने अथवा, मोहनीयकर्मने खपावे छे, ते बतावे छे. जेमके–अगणोतेर ६९ मोहनीय कोडा–कोडी क्षय गया पछी, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, अंतराय, ए चारनी २९ तथा नामगोत्रनी १९ कोडा-कोडी खपी गया पछी, अने तेमां पण थोडुं ओछुं थया पछी मोहनीय कर्मनो क्षपण थवाने योग्य थाय छे, पण, ते शिवाय न थाय. तेथी कह्युं छे केः—जे बहु नाम होय; तेज परमार्थथी एकनामवाळो छे. अहीं नामनो अर्थ कर्मप्रकृतिनो क्षय, अथवा, उपशम करनार जाणवो. एक उपशम श्रेणीना आश्रयथी एक तथा, बहु उपशम करवावडे बहु उपशमता जाणवी. तेथी ए प्रमाणे बहु तथा, एक कर्मना अभाव शिवाय मोहनीयक्षय अथवा, उपशमनो अभाव थाय; अने तेना अभावमां एटले, जो, मोहनीयक्षय

अथवा, उपशम न थाय; तो, जंतुओने वहु दुःखनो संभव छे, ते सूत्रमां बतावे छे.

दुःख एटले असातावेदनीय-कर्म अथवा पीडा थाय. ते जीवोने दुःख थतुं ज्ञ-परिज्ञावडे जाणीने, अने प्रत्याख्यान-परिज्ञावडे जेम, तेनो अभाव थाय; तेम, साधु ए करवुं.

प्रश्नः—अभाव केवीरीते थाय? अथवा ते अभावथी शुं लाभ थाय? ते बन्ने बतावे छे. 'वंता' विगेरे जे स्वआत्माथी जुदुं धन, पुत्र, शरीर, विगेरे छे, तेनो ममत्त्व भावनो संबन्ध छे, अने तेनाथी शरीर विगेरेने दुःख थाय छे, ते दुःखना हेतुरुप-उपादान कारण, अथवा कर्मने त्याग करवा प्रयत्न करे छे. एटले, कर्मविदारण करवामां धैर्य राखनारा धीरपुरुषो जेनावडे मोक्षमां जवाय; तेवुं चारित्रयान जे, अनेक करोडो भवमां मळवुं दुर्लभ छे, अने केटलाक जीवो ते मेळवीने पूर्वना अशुभकर्मना उदयथी, प्रमादथी ते हारीजाय छे. एटले, जेम कोइने स्वप्नामां मेळवेल धननो भंडार नकामो थाय छे, तेम प्रमादथी हारनारने मळेलां चारित्रनो लाभ थतो नथी. माटे तेने मोटुं यान, एवुं विशेषण आपेल छे.

अथवा सम्यग् दर्शन विगेरे त्रण रत्नरूप महायान छे, अने जेने मोटुं यान छे, ते मोक्ष छे, तेने धीर पुरुषो प्राप्त करे छे,

प्रश्नः—ए वात ठीक छे. पण एक भववडेज महायानरूप चारित्र मेळववाथी मोक्ष मळे के परंपराए मोक्ष मळे.

उत्तर—अमे बन्ने प्रकारे मानीए छीए एटले कोइ थोडा कर्मवाळाने योग्य क्षेत्रकाळ मळता तेज भवमां मुक्ति थाय छे, अने बीजाने परंपराए मोक्ष थाय छे, ते बतावे छे, 'परेण परं जेणे सम्यक्त्व प्राप्त कर्युं, तेणे नरक तिर्यंच गति अटकावी, अने ज्ञान प्राप्त करीने यथाशक्ति संयम पाळीने आयु कर्म पुरुं थतां सौधर्मादि देवलोकमां जाय छे, त्यांथी पण पुन्य थोडुं वाकी रहे त्यारे

त्यांथी चवीने कर्मभूमि आर्यक्षेत्र सारा कुळमां जन्म आरोग्यता धर्म श्रद्धा, तत्वसांभळवुं अने संयम लइने पुरुंपाळी अनुत्तर विमान सुधीना देवलोकमां उत्पन्न थाय छे, फरीथी चवीने पूर्व माफक उत्तम संयोगो मनुष्य जन्म विगेरे मेळवी संयम लइने वधा कर्मनो क्षय करे छे, तेथी एम कह्युं के पर एटले संयमवडे उपर बतावेली विधिए परं एटले स्वर्गमां जाय छे, अने परंपराए मोक्षमां जाय छे.

अथवा पर एटले सम्यग्दृष्टि गुणस्थान जे चोथुं छे, तेना वडे देशविरति (पांचमुं गुणस्थान) थी लइने अयोगी (चौदमुं गुणस्थान) सुधी चढे छे.

अथवा पर एटले अनंतानुबन्धी क्षय थवाथी कंडक स्थान निर्मळ थतां चढता भावे साधुओ दर्शनमोहनीय अने चारित्रमोहनीय कर्मनो क्षयरुप पर मेळवे छे, अथवा घातीकर्म अथवा अघातीकर्मनो क्षय करे छे.

आ प्रमाणे कर्म खपाववा तैयार थयेला साधुओ पोतानुं आयुष्य केटलुं बाकी रह्युं तेनी आकांक्षा करता नथी, एटले लांबु आयु इच्छता नथी, अथवा असंयम जीवितने वांछना नथी.

अथवा पर वडे पर एटले उत्तर उत्तर तेजोलेश्याने मेळवे छे कह्युं छे के:—

"जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एए णं कस्स तेयलेस्सं वीईवयंति ?, गोयमा !, मासपरियाए समणे निग्गंथे वाणमंतराणं देवाणं तेयलेस्सं वीइवयइ, एवं दुमासपरिआए असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं, तिमासपरिआए असुरकुमाराणं देवाणं चउमास-

परियाए गहगणनक्खत्ततारारूवाणं जोइसियाणं देवाणं, पंचमासपरियाए चंदिमसूरियाणं जोइसिंदाणं जोइसराईणं तेउलेस्सं, छम्मासपरियाए सोहम्मीसाणाणं देवाणं सत्तमासपरिआए सणंकुमारमाहिंदाणं देवाणं, अट्ठमासपरियाए बंभलोगलंतगाणं देवाणं, नवमासपरिआए महा सुक्कसहस्साराणं देवाणं, दसमासपरियाए आणयपाणयआरणच्चुआणं देवाणं, एगारसमासपरियाए गेवेज्जाणं, बारसमासे समणे निग्गंथे अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं तेयलेसं वीयवयइ, तेण परं सुक्के सुक्काभिजाई भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ ।"

वीर प्रभुने गौतस्वामी पूछे छे.

जे हमणां साधुओ साधुपणामां विचरे छे, ते कइ तेजोलेश्याने पामे छे?

उ०—हे गौतम! एक मास साधुपणानी पर्याय थवाथी व्यन्तर देवोनी तेजोलेश्याने पामे छे, बाकीनुं कोष्टक नीचे प्रमाणे.

बे मास दीक्षा पर्यायवाळो असुर इन्द्र छोडीने भवनपति देवोनी. ॥ त्रण मास दीक्षा असुर कुमार देवोनी ॥ चार मास दीक्षा ग्रहगण नक्षत्र तारारुप ज्योतिषीनी ॥ पांच मास दीक्षा चंद्र सूर्य ज्योतिष इंद्रनी ॥ छ मास दीक्षा सौधर्म इशान देवोनी ॥ सात मास दीक्षा सन्नतकुमार माहेन्द्रनी ॥ आठ मास दीक्षा ब्रह्म लोकांतकनी ॥ नव मास दीक्षा महाशुक सहस्रारनी ॥ दश मास दीक्षा आनत

प्राणत तथा आरण अच्युतनी ॥ अगीयार मास दीक्षा ग्रैवेयकनी ॥ बार मास दीक्षा अनुत्तर विमाननी ॥

त्यार पछी शुक्ल लेश्याने पामीने केवळज्ञान पामीने मोक्षमां जशे.

जे अनंतानुबन्धी विगेरे कषायोने खपाववा तैयार थयो ते एक क्षय करवामांज वर्त्ते छे के नहिं? ते बतावे छे.

एगं विगिंचमाणे पुढो विगिंचइ, पुढोवि, सड्ढी आणाए मेहावी लोगं च आणाए अभिसमिच्चा अकुओभयं, अत्थि सत्थं परेण परं, नत्थि असत्थं परेण परं (सू० १२४)

अनंतानुबन्धी एक क्रोधने क्षपकश्रेणीमां चढेलो साधु खपावे; ते समये पृथक् बीजी पण दर्शनादि कर्मप्रकृति खपावे छे, अने तेणे आयु बांध्युं छे, ते पण दर्शनसप्तक एटले, अनंतानुबन्धी कषाय चार तथा दर्शनमोहनीयनी त्रण सुधी खपावे छे. अथवा, बीजी प्रकृति खपावतां अवश्ये अनंतानुबन्धी नामनी प्रकृति खपावे छे. जो, तेम न खपे तो, सूत्रमां कहेल एकना क्षयमां बीजो क्षय थाय तेवुं न कहेवाय. केवा गुणवाळो क्षपकश्रेणीने योग्य थाय ते कहे छेः—

'सड्ढी' विगेरे, श्रद्धा एटले मोक्षमार्ग मेळववाना उद्यमनी इच्छा करे; ते श्रद्धावाळो (श्रद्धी) कहेवाय. एटले, तीर्थंकर प्रणीत आगम अनुसारे यथोक्त अनुष्ठान करनारो मेधावी [अप्रमत्त साधु) जे मर्यादामां रहे छे, तेज श्रेणीने योग्य छे पण बीजो योग्य नथी.

वळी, लोक एटले छ जीवनिकाय, अथवा कषायलोकने जिनेश्वरना आगम प्रमाणे जाणीने ते जीवोना समूहने कोइपण रीते भय न थाय तेम साधुए वर्तन करवुं.

अने कषायना समूहने दूर करवाथी ते दूर करनार साधुने कोइथी भय रहेतो नथी; अथवा चराचर लोकने आगमनी आज्ञा प्रमाणे समजीने चाले; तेने आलोक-परलोक अपाय; ने सारीरीते देखवाथी (सीधे मार्गे चालनाराने) क्यांयथी भय नथी.

उपर बतावेलो भय शस्त्रथी थाय छे, पण ते शस्त्रनी प्रकर्पगति छे के नहि? उत्तर—छे, ते बतावे छे.

तेमां द्रव्यशस्त्र तलवार विगेरे छे. ते परथी पण पर छे, तीक्ष्णथी पण तीक्ष्ण थाय छे. कारण के, लोढा उपर पाणी विगेरे चढावानो संस्कार कराय छे. अथवा, शस्त्रएटले, उपघातकारी. तेथी एक पीडाकारीथी बीजो पीडाकारी उत्पन्न थाय छे. ते न्याये एकथी बीजो अपर छे ते बतावे छे. जेमके—तलवारना घाथी धनुर्वा थाय; तेनाथी माथानो वेदना थाय; तेनाथी ताव चढे; पछी मुखमां शोष पडे; अने छेवटे, मूर्छा विगेरे थाय छे.

पण भावशस्त्र परंपराए जोडेला सूत्रथी सूत्रकार महाराज पोतानी मेळेज प्रत्याख्यान परिज्ञाना द्वारवडे कहेशे के जेवीरीते शस्त्रनी प्रकर्पगति छे, अथवा परंपराए विद्यमान छे, पण अशस्त्रने तेम नथी, ते बतावे छे, के अशस्त्र ते संयम छे, ते संयम परथी बीजुं पर नथी, एटले ते प्रकर्ष गतिने पामेल नथी, ते आ प्रमाणे.

पृथ्वी विगेरेनी समानता करवी, तेमां मंद तीव्रनो भेद नथी, एटले पृथ्वी विगेरेमां समभावपणुं धारवाथी सामायिकनी सिद्धी छे.

अथवा शैलेशी अवस्थामां रहेला संयमथी बीजो संयम नथी, अर्थात् तेनाथी बीजुं गुणस्थान उपर कोइ नथी.

जे क्रोधना उपादानथी बन्ध करे छे. ते स्थिति तथा विपाकथी तथा अनंतानुबन्धीना लक्षणथी जे कर्म बन्धाय तेना क्षयने आश्रयी प्रत्याख्यान परिज्ञावडे जे जाणे छे ते साधु अपर मान विगेरेने पण तोडवानुं देखनारो छे, ते पछीना सूत्रमां बतावे छे.

जे कोहदंसी से माणदंसी, जे माणदंसी से मायादंसी, जे मायादंसी से लोभदंसी, जे लोभदंसी से पिज्जदंसी, जे पिज्जदंसी से दोसदंसी, जे दोसदंसी से मोहदंसी, जे मोहमंसी से गब्भदंसी, जे गब्भदंसी, से जम्मदंसी, जे जम्मदंसी से मारदंसी, जे मारदंसी से नरयदंसी, जे नरयदंसी से तिरियदंसी, जे तीरियदंसी सु दुक्खदंसी । से मेहावी अभिणिवट्टिज्जा कोहं च माणं च मायं च लोभं च पिज्ज च दोसं च मोहं च गब्भं च जम्मं च मारं च नरयं च तिरियं च दुक्खं च । एयं पासगस्स दंसणं उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स, आयाणं निसिद्धा सगडब्भि, किमत्थि ओवाही पासगस्स? न विज्जइ?, नत्थि (सू० १२५) त्तिबेमि ॥शितोष्णीयाध्ययनम् ३॥

जे क्रोधने स्वरुपथी जाणे अने ज्ञानने अनर्थ करनारुं जाणी त्यागवारुप मानीने (ज्ञान वडे) क्राधने त्याग करे, ते साधु निश्चे मानने पण अनर्थ करनारुं देखे छे, अने तेने त्यागे छे. अथवा जे क्रोधने जाणे छे, अने समय आवतां क्रोधी बने छे, तेवो माणस मान पण देखे छे, अर्थात् ते अहंकारी पण थाय छे, ए प्रमाणे हवे पछी पण समजी लेवुं. ज्यां सुधी ते दुःख देखनारो थाय त्यां सुधी जाणवुं, सूत्र सुगम होवाथी टीका करी नथी. तो.पण मंद बुद्धि हितार्थे थोडामां लखीए छीए.

जे अहंकारी बने ते समय आवतां कपटी पण बने. लोभी पण बने, अने जे लोभी होय, ते अनुक्रमे प्रेमी पण बने, अने पोतानुं इच्छित न थतां द्वेषी पण बने, अने ते मोह करनारो पण थाय, अने ते मोह करीने गर्भमां उत्पन्न थाय पछी जन्मनुं दुःख वेठे, ते मार (हिंसा अथवा आरंभना कृत्य) पण करे, अने पछी ते नरक गामी पण थाय, त्यांथी चवीने तिर्यंच थाय, एम परंपराए अनेक दुःखोने ते संसारी जीव भोगवे छे, पण जे मेघावी (बुद्धिमान) साधु छे ते क्रोध विगेरेथी दूर रहे छे ते वतावे छे, एटले क्रोध मान माया लोभ प्रेम द्वेष मोह गर्भ जन्म मार नरक तिर्यंच विगेरेनां दुःखो क्रोधरुप वीजने त्याग करवाथी भोगवतो नथी, आ वधुं जे तत्वज्ञान वताव्युं ते वधा उद्देशानुं शरुआतथी ते अहिं सुधी तीर्थंकरनुं कहेलुं छे, अने ते तीर्थंकर जीवोने पीडा करनार शस्त्रने छोडीने आठ कर्मनो अंत करनार थया छे एटले तेओ कर्मनुं उपादान कारण क्रोध विगेरे प्रथम त्यागीने पोताना कर्मो जे पूर्वे बांधेलां तेने भेदनारा थया, तेओने केवळज्ञान थवाथी संसारी कोइपण जातनी उपाधी नथी एटले द्रव्यथी सोनुं चांदी विगेरे नथी, तेम भावथी आठ प्रकारनां कर्म नथी, आ प्रमाणे शिष्यना प्रश्नमां तीर्थंकरने कोइपण जातनी द्रव्यथी के भावथी कोइ पण जातनी उपाधि छे के नहिं? तेनो उत्तर कह्यो नथी.

आ वचन सुधर्मास्वामि जंबूस्वामीने कहे छे, के मैं भगवानना चरणनी सेवा करतां जे सांभळ्युं तेने अनुसारे तने कहुं छुं, पण मारी मति कल्पनाथी हुं कहेतो नथी. सूत्र अनुगम कह्यो, चोथो उद्देशो पुरो थयो अने तेनी समाप्तिथी अतीत अनागत नय विचारने सूत्रमां थोडामां वताववाथी शितोष्णीय नामनुं त्रीजुं अध्ययन समाप्त थयुं.

——०——

सम्यक्त्व नामनुं चोथुं अध्ययन.

त्रीजुं अध्ययन पुरुं थवाथी हवे चोथुं कहे छे. तेनो आ प्रमाणे—संबन्ध छे. पहेला शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनमां अन्वय व्यतिरेक-
वडे छ जीवनीकायनुं स्वरुप बतावतां जीव अने अजीव, एम बे पदार्थ सिद्ध कर्या; तथा जीवोना वधमां बंध थाय छे, अने ते त्या-
गवाथी विरति थाय; तेवुं बतावतां आस्रव संवर बे पदार्थ बताव्या; तथा लोकविजय नामना बीजा अध्ययनमां लोको जेम बंधाय छे,
अने जेम मुकाय छे. ते बतावतां बंध अने निर्जरा बतावी; तथा त्रीजा अध्ययनमां शीतोष्णरुप–परिसहो सहेवा; ते बतावतां तेना
फळरुप–मोक्ष बताव्यो; तेथी त्रण अध्ययनमां जीव–अजीव, आस्रव, संवर, बंध निर्जरा अने मोक्ष, एम सात पदार्थरुप–तत्त्व बताव्युं;
अने तत्त्व पदार्थनुं श्रद्धान (विश्वास) राखवुं; ते सम्यक्त्व कहेवाय छे, ते हवे बतावे छे.

आ संबन्धवडे आवेला आ चोथा अध्ययनना चार अनुयोगद्वार बतावतां उपक्रममां अर्थ अधिकार बे प्रकारे छे. अध्ययननो
अर्थाधिकार सम्यक्त्व नामनो छे ते शस्त्रपरिज्ञामां प्रथम कहेल छे, अने उद्देशानो अर्थाधिकार अहीं बताववा निर्युक्तिकार कहे छेः—

पढमे सम्मावाओ, बीए धम्मप्पवाइयपरिक्खा । तइए अणवज्जतवो, न हु बालतवेण मुक्खुत्ति ।१२५।
उद्देसंमि चउत्थे, समासवयणेण णियमणं भणियं । तम्हा य नाणदंसणतवचरणे होइ जइयव्वं ॥२१६॥

(१) पहेला उद्देशामां सम्यक्वाद ए नामनो अर्थाधिकार छे. एटले, अविपरीतवाद ते सम्यग्वाद छे. अर्थात् यथाअवस्थित
वस्तुने बतावथी. (२) बीजा उद्देशामां धर्मप्रवादिकोनी परीक्षानो विषय छे. एटले, जेओ धर्मनुं स्वरुप बतावे छे, ते धर्मप्रवादिक

कहेवाय. तेओनुं अयुक्त तथा, युक्त कथनने विचारवुं. (३) त्रीजामां, अनवद्य तपनुं वर्णन छे. एटले, जे बाळतप करे; तेवा अज्ञान करेलां तपथी मोक्ष न थाय ते अहीं बताव्युं छे. (२१५) चोथा उद्देशामां संक्षेप वचनमां संयतनुं स्वरुप बताव्युं छे, तेथी पहेलामां सम्यग्दर्शन, बीजामां सम्यक्ज्ञान त्रीजामां बाळ तपनो निषेध करवाथी सम्यक् तप बताव्यो छे, अने चोथामां सम्यक् चारित्र बतव्युं. छे, गाथामां 'तस्मात' अने 'च' शब्द छे ते बन्ने हेतुमां छे, जेथी ए चारे पण मोक्षनां अंग पूर्वे कह्यां छे, तेथी एम जाणवुं के ज्ञान दर्शन तप चरणमां मोक्षाभिलाषी साधुए यत्न करवो, अने तेनुं प्रतिपालन करवा जीवतां सुधी प्रयत्न करवो, आ प्रमाणे बे गाथानो अर्थ थयो.

हवे नामनिष्पन्ननिक्षेपामां बतावेल सम्यक्त्व नामनो निक्षेपो कहे छे.

नामंठवणासम्मं दव्वसम्मं च भावसम्मं च । एसा खलु सम्मस्सा, निक्खेवो चउविहो होइ ॥२१७॥

नाम स्थापनानो अक्षरार्थ सुगम छे, अने तेनो भावार्थ नाम स्थापना छोडीने द्रव्य अने भाव संबंधी निर्युक्तिकार कहे छे.

अह दव्वसम्म, इच्छाणु लोमियं तेसु तेसु दव्वेसुं । कयसंखयसंजुत्तो, पउत्त जढ भिण्ण छिण्णं वा ।२१८।

ज्ञ शरीर भव्य शरीरथी व्यतिरिक्त द्रव्य सम्यक्त्व बतावे छे, इच्छा एटले चित्तनी प्रवृत्ति (अभिप्राय) छे, तेने अनुकुळ करवुं, ते 'ऐच्छानुलोमिक' छे तेवी तेवी इच्छा अने भावने अनुकुळ द्रव्यमां कृत विगेरे उपाधिना भेद वडे सात प्रकारे थाय छे, ते आ प्रमाणे छे.

(१) कृत एटले अपूर्व रथ विगेरे बनाव्यो होय, ते रथमां योग्य रीते भागो गोठव्याथी सारा बनावनारने लीधे बेसनारने चित्तमां शांति थाय छे, अथवा जेना माटे ते बनाव्यो ते शोभायमान अने योग्य समयमां जलदी बनावी आपवाथी करावनारने

समाधान (समाधी) नो हेतु होवाथी ते द्रव्यसम्यक् छे. आ प्रमाणे संस्कृत (संस्कार करेल) विगेरेमां पण समजवुं, एटले (२) तेज रथ विगेरे भांगी जतां अथवा जुनो थतां तेने सुधारवो अथवा भांगेला भागने बदलवो ते समाधि आपनारो होवाथी द्रव्य सम्यक् छे.

(३) जे बे द्रव्यनो संयोग नवो गुण बनाववा करे पण नाश करवा न करे ते खानार अथवा भोगवनारना मननी समाधिने माटे दुधमां साकर मेळववी विगेरे छे, ते संयुक्त द्रव्य सम्यग् छे.

(४) तथा जे प्रयोगमां लीधेलु द्रव्य आत्माने लाभना हेतुथी समाधि माटे थाय छे, ते प्रत्येक द्रव्य सम्यक् छे. अथवा बीजी प्रतिमां उपयुक्त शब्द छे एटले उपयोगमां लीधेलुं द्रव्य मनने समाधि दायक थाय ते उपयुक्त द्रव्य सम्यक् छे.

(५) तथा जड (त्यजेलुं) भार विगेरे दूर करवाथी चित्तमां शांति थाय, ते त्यक्त द्रव्य सम्यक् छे, (६) दहीनुं वासण विगेरे फुटी जतां कागडा विगेरेने आनंददायी थवाथी ते भिन्न द्रव्य सम्यक् छे, (७) अधीक मांस विगेरे छेदवाथी [अथवा गुमडामां नस्तर मुकवाथी] जे शांति थाय ते छिन्न सम्यक् छे, आ साथे पण चित्तने समाधि आपनार होवाथी द्रव्य सम्यक् छे, पण जो ते बरोबर न थाय तो चित्तमां क्लेश थतां सम्यक् थाय छे, हवे भाव सम्यक् बतावे छे.

तिविहं तु भावसम्मं दंसण नाणे तहा चरित्ते य । दंसणचरणे तिविहं नाणे दुविहं तु नायव्वं ॥२१९॥

त्रण प्रकारे भावसम्यक् छे, दर्शन ज्ञान चारित्र ए त्रण भेद छे, ते दरेक पण भेदवाळुं छे, ते कहे छे, तेमां दर्शन अने चरण दरेक त्रण प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे.

अनादि मिथ्यादृष्टिने त्रण पुंज कर्या विनानो होय तेने यथाप्रवृत्तकारण बाकीनां कर्म क्षीण थवावाळो होय तेने सागरोपम कोडा-कोडीमां थोडी ओछी स्थिति होय; तेने अपूर्वकरणमां ग्रंथी भेदाता मिथ्यात्वने उदय न होय तेवुं अंतःकरण करीने अनिवृत्ति करणवडे प्रथम सम्यक्त्व मेळवे छे, ते औपशमिक दर्शन छे, कह्युं छे के.

"उसरदेसं दड्ढेल्लयं च विज्झाइ वणदवो पप्प। इय मिच्छत्ताणुदए उवसमसम्मं लहइ जीवो ॥१॥"

खारवाळो [उषर] देश [जग्या] मेळवीने जेम वननो अग्नि (दावानल) बुझाइ जाय छे, तेम मिथ्यात्व उदय न आवे. त्यारे औपशमिकसम्यक्त्वने जीव पाते छे. अथवा कोइ उपशमश्रेणीमां औपशमिक सम्यक्त्व पामे छे. [१] तेज प्रमाणे सम्यक्त्व पुद्गलने आश्रयी ने जे अध्यवसाय उत्पन्न थाय ते क्षायोपशमिक छे. [२] तथा दर्शनमोहनीय क्षय थवाथी क्षायिक छे. (३)

चारित्रना त्रण भेद

(१) दर्शन प्रमाणे चारित्र पण उपशम श्रेणिमां औपशमिक [२] कषायना क्षय उपशमथी क्षायोपशमिक [३] तथा चारित्र मोहनीय कर्मना क्षयथी क्षायिक चारित्र छे.

ज्ञानना बे भागो छे.-क्षायोपशमिक, अने क्षायिक तेमां चार प्रकारना ज्ञान आवरणीय कर्मनो क्षय उपशम थवाथी मति ज्ञान विगेरे चार प्रकारनुं क्षायोपशमिक ज्ञान छे, अने बधुं घातीकर्म क्षय थवाथी क्षायिक केवळ ज्ञान छे.

आ प्रमाणे त्रणे प्रकारमां भाव सम्यक्त्वपणुं बतावे छते वादी शंका करे छे.

" जो, एम दर्शन-ज्ञान-चारित्र त्रणेमां सम्यग्वादनो संभव थाय छे, तो, दर्शननोज सम्यक्त्ववाद केम रुढ थयो छे? के जे सम्यग्दर्शननुं अहीं वर्णन करवानुं छे.

उतरः—ते दर्शनना भावना भावी (विद्यमानपणाथीज) ज्ञानचारित्रनो भाव छे. जेमके—मिथ्यादृष्टिने ज्ञानचारित्र होतां नथी. [तेने ज्ञान होय; छतां अज्ञान कहेवाय.] अहीं सम्यक्त्वनी प्रधानता बतावंवा आंधळा तथा देखता एवा बे राजकुमारोनुं दृष्टांत बाल-[मंदबुद्धिवाळा] तथा स्त्री विगेरेना बोध माटे कहे छेः—

उदयसेन नामनो राजा हतो. तेने वीरसेन तथा सूरसेन नामे बे कुमारो छे. तेमां वीरसेन आंधळो छे. तेणे पोताने योग्य गांधर्वादिक [गावा विगेरेनी] कळाओ शीखी; अने बीजा कुमारे धनुर्वेदनो अभ्यास करीने लोकमां प्रशंसनीय पदवी पाम्यो. आ सांभळीने वीरसेन कुमारे विज्ञप्ति करी के, हुं पण धनुर्वेदनो अभ्यास करुं. पछी राजाए तेना आग्रहथी आज्ञा आपी; अने योग्य उपाध्यायना उपदेशथी, अने अतिशय बुद्धिना कारणथी शब्दवेधी थयो. पछी ते जुवान थयो; त्यारे सारा अभ्यासथी मेळवेला धनुर्वेदनां ज्ञानथी अने उत्तमवर्त्तनथी अगणित चक्षुदर्शन सद्-असत्भावथी, तथा शब्दवेधीपणाथी ज्यारे शत्रु राजा लडवा आव्यो; त्यारे राजा पासे युद्धमां जवा मांगणी करी. राजाए आज्ञा आपवाथी विरसेने शत्रुनुं सैन्य जीतवा प्रयत्न कर्यो; पण शत्रुए अंधपणुं जाणीलीधाथी चुप बेसवाथी वीरसेननुं कंइ न चाल्युं; त्यारे शत्रुना सैन्ये तेने पकडी लीधो पछी सूरसेने ते वृत्तांत जाणीने राजने पूछीने सूक्ष्म तीरोना सेंकडोनो वरसाद वरसवी शत्रुना सैन्यने जीती भाइने मुकाव्यो.

आ प्रमाणे अभ्यास सारी रीते करी उद्यम करवा छतां पण चक्षुनी खामीथी इच्छित कार्य करवा समर्थ न थयो, तेज प्रमाणे

सम्यग्दर्शन विना ज्ञानचारित्र कार्यसिद्ध न करी शके. तेज निर्युक्तिकार गाथानो उपसंहार करतां बतावे छे.

कुणमाणोऽवि य किरियं, परिच्चयंतोऽवि सयणधणभोए, । दिंतोऽवि दुहस्स उरं, न जिणइ अंधो पराणीयं ॥२२०॥

क्रियाने करतो, तथा पोतानां स्वजन, धन भोगोने त्यजवा छतां तथा दुःखने उर आपवा (सामे जवा) छतां पण अंधो अंधपणाने लीधे शत्रुना सैन्यने जीती न शक्यो. ते दृष्टांतथी हवे बोध आपे छेः—

कुणमाणोऽवि निवित्तिं, परिच्चयंतोऽवि सयणधणभोए । दिंतोऽवि दुहस्स उरं, मिच्छद्दिट्ठि न सिज्झइउ ॥२२१॥

एटले मिथ्यादृष्टि पोताना दर्शनमां कहेली क्रिया करे.

जेमके पांच यमो, तथा पांच नियमो विगेरे पाळे तथा पोताना धन सगां तथा भोगोने त्यागे. तथा पंच अग्निनो ताप तपवा विगेरेथी दुःख सहन करे छतां मिथ्यादृष्टि दर्शननी खामीथी सिद्धि पद नथीज पामतो, (गाथामां उ शब्द एकवारना अर्थमां छे.) पूर्वे जेम अंध कुमार शत्रुने न जीती शक्यो तेम आ कार्य सिद्धिमां असमर्थ छे, जा एम छे तो शुं करवुं? ते कहे छेः—

तम्हा कम्माणीयं जेउमणो दंसणंमि पयइज्जा, दंसणवओ हि सफलाणि हुंति तवनाणचरणाइं ॥२२२॥

जेथी सिद्धि मार्गनुं मूळ सम्यग् दर्शन छे, तेना विना कर्मक्षय न थाय, तेथी कर्म शत्रुने जीतवानी इच्छावाळो मनुष्य सम्यग् दर्शन मेळववा प्रथम यत्न करे, अने तेनी प्राप्तिमां शुं थाय ते बतावे छे. के निश्चे दर्शन पामेलानां तप ज्ञान तथा चारित्रनां बधां अनुष्ठानो सफळ थाय छे. तेथी तेमां यत्न करवो.

हवे बीजी रीते पण सम्यग्दर्शनना तथा ते दर्शन मेळवेला मनुष्योने प्राप्त थएला गुणस्थानोना गुणो बतावे छे.

सम्मत्तुपत्ती सावए य, विरए अणंत कम्मं से ॥ दंसण मोहक्खवए, उवसामंते य उवसंते ॥२२३॥
खवए य खीणमोहे, जीणे अ सेढी भवे असंखीज्जा । तव्विवरीओ कालो, संखिज्जगुणाइ सेढाए ॥२२४॥

सम्यक्त्वनी उत्पत्ति थतां असंख्येय गुणवाळी श्रेणि थाय छे. ते पाछली अडधी गाथावडे बतावेल छे, ते क्रियाने आश्रयी छे.

प्रश्नः—केवी रीते असंख्येय गुणवाळी श्रेणि थाय?

उत्तरः—(१) अहीं मिथ्यादृष्टि जो जे थोडुं ओछुं एवी कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिवाळा ग्रंथिसत्ववाळा छे. तेओ कर्म निर्जराने आश्रयी समान छे, (२) अने धर्म पूछवानी उत्पन्न थएली संज्ञावाळा पूर्वे कहेलाओथी असंख्येय गुण निर्जरावाळां छे. (३) त्यारपछी पूछवानी इच्छावाळा बनी साधु समीपे जवानी इच्छावाळो असंख्येय गुणे उत्तम जाणवो (४) त्यार पछी गुरुने पूछतां (५) धर्म स्वीकारवानी इच्छा थतां (६) त्यारपछी धर्मक्रिया करतां जे निर्जरा थाय तेना करतां पण प्रथम धर्मक्रिया करनाराने वधारे निर्जरा थाय ते असंख्येय गुणी जाणवी, एटलेसुधी सम्यक्त्वनी उत्पत्तिनुं वर्णन कर्युं.

त्यार पछी श्रावकव्रत (देशविरति) स्वीकरतो तथा स्वीकारेलो विगेरे उत्तरोत्तर गुण पामेलाने असंख्येयगुणी निर्जरा जाणवी, ए प्रमाणे सर्वविरतिमां पण जाणवुं.

तेनाथी पण पूर्वे सर्व विरति लीधेलानी असंख्येय गुणी निर्जरा जाणवी, मूळमां "अणंतकम्मं से" छे, तेनो अर्थ अनंतानुबंधी

आश्रयी जाणवो, एटले भीम कहेवाथी भीमसेन भामाथी सत्यभामा थाय, ते प्रमाणे छे. मोहनीयकर्मना अंत भागो छे, तेने खपाववानी इच्छावाळो असंख्येय गुण निर्जरा करनारो जाणवो, त्यारपछी क्षपक [क्षय करनारो] जाणवो, त्यारपछी क्षीण अनंतानुबधी कषायवाळो जाणवो, तेज दर्शनमोहनीयनी त्रण प्रकृतिमां क्रियाना सन्मुखमां उभा रहेल अपवर्गनुं त्रिक जाणवुं, त्यार पछी सात प्रकृति क्षीण थवाथी उपशमश्रेणिमां चढेलो असंख्येय गुण निर्जरावाळो जाणवो, त्यार पछी उपशांत मोहवाळो जाणवो त्यार पछी चारित्रमोहनीयने क्षय करनारो जाणवो, त्यार पछी क्षीणमोहवाळो जाणवो, अहियां अभिमुख विगेरे त्रण यथासंभव योजना करवी, त्यार पछी भवस्थ केवळी (जिन) जाणवा त्यारपछी शैलेशी अवस्थावाळो असंख्येय गुण निर्जरावाळो जाणवो तेथी ए प्रमाणे कर्म निर्जरा माटे असंख्येय लोकआकाश प्रदेश प्रमाण बनावेल संयम स्थानना प्रचयथी उत्पन्न थयेल श्रेणि छे; ते उत्तरोत्तर असंख्येय गुणवाळी जाणवी, कारण के उत्तरोत्तर प्रवर्धमान अध्यवसायना कंडकनो स्वीकार छे, [जेम संयम पर्याय वधे तेम चारित्रमां आत्मानी निर्मळता वधे.]

काळथी तो तेथी विपरीत अयोगी केवळीथी मांडीने प्रतिलोम पणे संख्येय गुणवाळी श्रेणिवडे काळ जाणवो, तेनो अर्थ आ छे, जेटला काळवडे अयोगी केवळी जेटलां कर्म खपावे तेटलां कर्म संयोगी केवळी संख्येय गुणाकाळवडे खपावे छे ए प्रमाणे प्रतिलोमपणे जेटला काळमां धर्म पूछवानी इच्छावाळो छे, त्यांसुधी जाणवुं, [नीचला गुणस्थानमां काळ वधारे थाय अने कर्म ओछां खपे.]

आ प्रमाणे बतावतां सिद्ध कर्युं के सम्यग्दर्शन पामेलाने तप ज्ञान अने चरण सफळ थाय छे, पण जो कोइ उपाधि (संसारी वासना) वडे करे तो ते सफळ थतां नथी, ते उपाधि कइ छे, ते हवे बतावे छे,

आहार उवहिपूआ, इड्ढिसु य गारवेसु कइतविगं। एमेव बारसविहे, तवंमि न हु कइ तवे समणो ॥२२५

आहार उपधि पूजा अने आमर्ष औषधि विगेरे रिद्धि छे, अने आहार उपधि अने पूजा रिद्धि छे, अर्थात् तेवी रिद्धि पूजा मेळववा ज्ञान भणे, अने चारित्र पाळे, तथा (तेवुं मळवाथी) त्रण गारवमां बंधाएलो जे क्रिया करे ते कृत्रिम (बनावटी) कहेवाय छे, जेवीरीते ज्ञान चरणनुं अनुष्ठान आहार विगेरे माटे करे, ते कृत्रिम होवाथी मोक्ष न आपे, ते प्रमाणे बार प्रकरना बाह्य अभ्यंतरतपमां पण जाणवुं, अने तेवो संसारी वासना राखनारने श्रमण भाव न होय, अने असाधुनुं अनुष्ठान गुणवाळुं न थाय, तेथी वासना रहित साधुनुं जे सम्यग्दर्शन पूर्वक तप ज्ञान चरण सफळ छे एम सिद्ध थयुं. माटे सम्यग्दर्शनमां यतना करवी, अने तत्वार्थनुं श्रद्धान करवुं ते सम्यग्दर्शन छे, अने आ तत्व सघळां कलंकने दूर करीने जेमणे बधा पदार्थोमां सत्ता व्यापी केवळज्ञानने मेळवेलुं छे, तेवा तीर्थंकरे कह्युं छे तेने हवे अनुक्रमे आवेला सूत्रानुगममां सूत्र बतावे छे.

से बेमि जे अईया जे य पडुपन्ना आगमिस्सा अरहंता भगवंतो ते सव्वे एवमाइक्खन्ति एवं भासंति एवं पण्णविंति एवं परूविंति--सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता न हंतव्वा न अज्जावेयव्वा न परिघित्तव्वा न परीयावेयव्वा न उद्दवेयव्वा, एस धम्मे सुद्धे निइए समिच्च लोयं खेयण्णेहिं पवेइए, तंजहा—उट्ठिएसु वा अणुट्ठिएसु वा उवट्ठिएसु वा

अणुवट्टिएसु वा उवरयदंडेसु वा अणुवरयदंडेसु वा सोवहिएसु वा अणोवहिएसु वा संजो-
गरएसु वा असंजोगरएसु वा, तच्चं चेयं तहा चेयं अस्सिं चेयं पवुच्चइ (सू० १२६)

गौतम (सुधर्मा) स्वामी कहे छे के:—जे हुं कहुं छुं ते हुं पोते तीर्थंकरनां कहेलां वचनना तत्त्वने जाणीने कहुं छुं, तेथी मारुं वचन मानवा योग्य छे, अथवा बौद्धमतमां मानेलु क्षणिकपणुं दूर करवावडे कहुं के, जे में पूर्वे कह्यु; ते हमणां पण हुंज कहुं छुं, पण बीजो कहेतो नथी; अथवा 'से' शब्दनो अर्थ 'ते' थाय छे, एटले जे श्रद्धानमां सम्यक्त्व थाय छे, ते तत्त्वने हुं कहुं छुं

जेओ पूर्व काळमां थया जे वर्तमानमां छे, अने भविष्यमां थशे; ते बधा तीर्थंकरो एम कहे छे. वळी पूर्वकाळ अनादी होवाथी अनंता थया; अने भविष्यकाळ अनंतो होवाथी अने सर्वदा तीर्थंकर होवाथी अनंता थशे; अने वर्तमानकाळ आश्रयी जे वखते आ प्ररुपणा थती होय; तेमां नक्की संख्या न होवाथी उत्कृष्ट अथवा जघन्य पदे कहेवाय, तेमां उत्सर्गथी अढी द्वीपनी अदर एकसोने सीतेर थाय, ते आ प्रमाणे—

५–महाविदेहमा एकेक विदेहमां ३२ श्रेणी होवाथी दरेकमां एकेक गणतां १६० थाय, अने ५ भरत ५ ऐरावतना मेळवतां कुल १७० थाय अने जघन्यथी २० थाय ते आ प्रमाणे–५ महा विदेहमां महाविदेहनी अंदर रहेली महा नदीना बंने किनारे मळी पूर्व पश्चिम साथे लेतां चार चार होय ते पांचेना मळी वीश थाय. अने भरत ऐरावतमां तो एकांत सुखम विगेरे आरामां अभाव छे, बीजा आचार्य कहे कहे छे, के मेरुना पूर्व अने पश्चिम महाविदेहमां एकेक तीर्थंकर होवाथी महाविदेहमां वेज छे, अने

तेथी पांच विदेहमां दश थया, तेओ एम कहे छे. के,

सत्तरसयमुक्कोसं, इअरे दस समयखेतजिणमाणं । चोत्तीस पढमदीवे, अणंतरऽद्धेय ते दुगुणा ॥१॥

पूजा सत्कारने योग्य जेओ छे, ते अर्हंत कहेवाय छे, तेओ ऐश्वर्ययुक्त भगवंतो छे. तेओनी संख्या तेमना संबंधमां ज्यारे कोइ प्रश्न पूछे तेनो अर्थ उपर बतावे छे, सूत्रमां वर्त्तमानकाळनी वात छे, तेथी आ पण जाणवु, के आ प्रमाणे कह्यु अने भविष्यमां कहेशे, ए प्रमाणे सामान्यथी तीर्थंकरो देव मनुष्यनी परखदामां अर्ध 'मागधी' मां बधा जीवो पोतानी भाषामां समजे तेम तेओ बोले छे, ए प्रमाणे प्रकर्षथी संशय दूर करवा माटे पासे रहेनारा साधु विगेरेने जीव अजीव आस्रव बन्ध संवर निर्जरा मोक्ष ए सात पदार्थोने बतावे छे, (एटले जिनेश्वर देव सात पदार्थोनुं वर्णन करे छे) ए प्रमाणे सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र जे मोक्ष मार्ग छे. तथा मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योग ए पांच बन्धना हेतुओ छे. स्व अने परभाववडे छती अछती वस्तु तत्वने सामान्य विशेषरुप विगेरेना प्रकारथी बतावे छे, अथवा आ बधां पदो एक अर्थवाळां छे, ते तीर्थंकरो शुं बतावे छे ते कहे छे.

बधां प्राणीओ एटले पृथ्वी पाणी अग्नि वायु वनस्पति ए एकेन्द्रिय छे, तथा बे त्रण चार पांच इन्द्रियोवाळा जीवो छे, तेमने इन्द्रिय ५ बळ ३ उच्छवास निश्वास. १ आयु १ ए दश प्राण छे, प्राणो (संसारी) जीवोने पूर्वे हता हमणां छे, अने भविष्यमां रहेशे, तेथी प्राणी कहेवाय छे; तथा बीजी रीते चौद भेद जीवोना छे ते भूत ग्राम कहेवाय छे, अने वर्त्तमानमां बधा जीवो छे, जीवशे, अने पूर्वे जीवता हता, माटे जीव छे ते नारकी तिर्यंच मनुष्य अने देव ए चार गतिवाळा छे, तथा बधा ए जीवो पोतान

करेलां कर्मथी साता असाताना उदयथी सुख दुःख भोगवे छे. तेथी सत्व छे, अथवा प्राण भूत जीव अने सत्व ए बधा एक अर्थवाळा शब्दो छे, कारण के तत्व भेद पर्यायोवडे पदार्थने स्वीकारवानो छे, तेथी करीने उपरना बधा शब्दो प्राणीना पर्यायवाळा छे, ते जीवोने दंड चाबखा विगेरेथी हणवा नहिं; तथा बीजा पासे बळजबरी करीने हणाववा नहिं; तथा नोकर, दास, दासी विगेरे उपर ममत्वभावथी तेमनो संग्रह न करवो; तथा शरीर अने मननी पीडा उपजावीने परितापवा (संतापवा) नहिं; तथा जीवथी प्राण दूर करवावडे तेने अपद्रावण न करवुं. आवो जिनेश्वरनो कहेलो दुर्गतिने अटकाववाने भुंगळ समान तथा सुगतिनी पगथी समान धर्म छे, अने ते धर्म पुरुषार्थना प्रधानपणाथी विशेषणो बतावे छे. पापना अनुबन्ध रहित शुद्ध छे, पण बौद्ध तथा ब्राह्मणोथी एकेन्द्रियथी पचेन्द्रिय सुधीना जीवोनी हिंसानी अनुमतिने दुःखरुप–कलंक छे. (एटले, ब्राह्मणो यज्ञ करावे छे, अने बौद्धना साधुओ साधु माटे रांधेलुं खाय छे, तेथी वधनी अनुमतिनो दोष लागे छे,) तेवो दोष जैनधर्ममां नथी. वळी, पांच महाविदेहने आश्रयी ते निरंतर (नित्य) छे, तथा शाश्वत तथा (मोक्ष गति आपवाथी शाश्वत छे अथवा नित्य होवाथी शाश्वत छे, पण एम न थाय; के भव्यत्व माफक प्रथम थइने पछी न थाय; अने घटना अभाव माफक प्रथम न थइने नित्य थाय; पण आ धर्म तो त्रणे काळमां शाश्वत छे. वळी, आ जीवसमूहने दुःखसागरमां डुबेल जाणीने तेमांथी पारजवा, जंतुनां दुःख जाणनारा एवा केवळी भगवंतोए बताव्यो छे. आ गौतमस्वामीए पोतानी बुद्धिए न कहेलुं बताववानुं कारण शिष्योनी मति स्थिर करवा माटे कह्युं केः–आ शुद्ध धर्म जीनेश्वरनो कहेलो छे. आज सूत्रमां कहेला अर्थने निर्युक्तिकार सूत्र–स्पर्शीक बे गाथावडे कहे छेः—

जे जिणवरा अईया, जे संपइ जे अणागए काले । सव्वेवि ते अहिंसं, वदिंसु वदिहिंति विवदिंति ॥२२६॥

छप्पिय जीवनिकाए, णोवि हणेणोऽवि अ हणाविज्जा । नोऽवि अ अणुमन्निज्जा, सम्मत्तस्सेस निजुत्ती ॥२२७॥

आ बन्ने गाथानो अर्थ सरळ छे तेथी टीका नथी तेथी थोडामां लखिए छिए. जे जिनेश्वरो पूर्वे थया वर्तमानमां छे, अने भविष्यमां थशे; ते वधाए भूतकाळमां अहिंसा बतावी छे, बतावशे, अने बतावे छे. एटले, छ ए जीवनीकायने हणे नहि, हणावे नहि अने हणनारने अनुमोदे नहि. ए सम्यकत्वनी निर्युक्ति छे तीर्थंकरनो उपदेश एमना स्वभावथी परोपकारीपणे अपेक्षा विना सूर्य उदय माफक प्रवर्त्तेलो छे, जेम सूर्य बधाने प्रकाश आपे, तेज प्रमाणे जिनेश्वर बोध आपे, एटले १२६ सूत्रमां बताव्या प्रमाणे धर्म चरण पाळवा माटे उठेला एटले ज्ञान दर्शन चारित्रमां प्रयत्न करनारा अने तेनाथी विपरीत ते धर्ममां उद्यम न करनाराने माटे सर्वज्ञ त्रण जगतना नाथे तेवा तेवा निमित्तोने उद्देशीने धर्म कह्यो छे, ए प्रमाणे बधे समजवुं.

अथवा उठेला अने न उठेला एटले द्रव्यथी बेठेला अथवा न बेठेला जीवो छे, तेमने विर प्रभुए धर्म कह्यो तेमां ११ गणधरोए उभे उभे धर्म सांभळ्यो, एटले प्रभुना सन्मुख रहीने धर्म सांभळवा अथवा चारित्र ग्रहण करवा तैयार थयेलाने संभळाव्यो, ते उपस्थित छे, अने तेथी विपरीत त्यां हाजर न होय ते अन उपस्थित (गेर हाजर) हता, (अहिं निमित्ते सूत्रमां सातमी विभक्ति लीधी छे जेमके चामडामां दीपडा मराय छे.)

शंका—भावथी आवेला चिलाति पुत्र विगेरेमां धर्म कथा उपयोगी छे, पण गेरहाजर होय तेने धर्म कथा शुं गण करे ?

उत्तरः—जे गेरहाजर होय तेवाने इंद्र नाग विगेरे माफक कर्मनी परिणति विचित्र होवाथी अथवा क्षय उपशमना मेळववाथी

गुणकारी थाय छे, तेथी तमारी 'शंका' नकामी छे.

प्राणीने अथवा आत्माने दुःख दे (दंडे) माटे दंड छे, ते मन वचन कायाए त्रण प्रकारनो छे, ए त्रण दंडथी दूरथयेला ते उपरत दंड कहेवाय, ते बधा जीव उपर उपकारनी बुद्धिए उपदेश देवाय, एटले जेमणे दंड तज्यो छे, तेवा मुनिओ संयममां स्थिरता करे, अने नवा गुणो प्राप्त करे, अने बीजां दंड न तजेला (ग्रहस्थीओ) ते दंडने तजे, माटे तीर्थंकर उपदेश आपे छे,

तथा संग्रहकराय ते उपधि छे, ते द्रव्यथी सोनुं विगेरे छे, अने भावथी कपट छे, ते राखनार उपधिवाळा छे, ते सोपधिक छे, बाकीना तेथी उलटा अनुपधिक छे, तेओने माटे पण उपदेश छे, संयोग (संबंध) ते पुत्र स्त्री मित्र विगेरे उपर प्रेमनो छे, तेमां रक्त थयेला ते संयोगरत कहेवाय, अने तेथी उलटा एकत्व भावना भावनारा मुनि असंयोगरत कहेवाय; ते बन्नेने पण भगवाने उपदेश आपेल छे, तेथी ते सत्य छे. (च शब्द नियम अर्थ बतावे छे, माटे) भगवाननुं वचन सत्य छे, तेम यथायोग्यपणे वस्तुनो सद्भाव कह्याथी ते वाच्य पण छे. ते बतावे छे के, प्रभुए आ प्रमाणे कह्युं केः—"सर्वे जीवो हणवा न जोइए" विगेरे. आ प्रमाणे सम्यग्दर्शननुं श्रद्धान राखवुं; अने ते श्रद्धान–जिनेश्वरनां प्रवचनमां छे. जे सम्यक्मोक्षमार्गने आपनार छे. वळी, ते बधा दंभना प्रबन्धथी दुर होवाथी प्रकर्षथी बोलाय छे, (माटे ते प्रवचन.) पण, बीजा मतमां तेवो अहिंसा धर्म बताव्यो नथी. जेमके— अन्य मतवाळा प्रथम कहे के, सर्व जीवोने न हणवा. ("न हिंस्यात्सव भूतानि") कहीने यज्ञमां पशुवधनी आज्ञा आपे छे. एटले, प्रथमनां वचनने तेमनां पाछळनां वचनथी बाधा लागे छे. (माटे, ते प्रवचन नथी.) आ प्रमाणे सम्यक्त्वनुं स्वरुप कहीने तेनी प्राप्तिमां शुं करवुं ते बतावे छे.

तं आइत्तु न निहे निक्खिवे जाणित्तु धम्मं जहा तहा, दिट्टेहिं निव्वेयं गच्छिज्जा, नो लोगस्सेसणं चरे (सू०१२७)

प्रभुए कहेलां तत्त्वार्थ उपर श्रद्धा राखवारूप सम्यग्दर्शन मेळवीने कहेलुं कार्य न करवाथी दोष लागे; माटे, तेने गोपवे नहि. ते प्रमाणे संसर्ग विगेरे निमित्तथी मिथ्यात्व दूर करीने पण, जीवना सामर्थ्य गुणोने छोडे नहि. (यथाशक्ति संयम पाळे; पण, प्रमाद न करे) अथवा शिवमतना के, बौद्धमतनां व्रतो ग्रहण करीने व्रतेश्वरयाग विगेरे छोडीने विधिए गुरु पासे पूर्वे व्रतो स्थापन करीने दीक्षा मूकी देवी नहि. तेज प्रमाणे गुरु विगेरे पासे सम्यक्त्व लइने पाछुं तजे नहि.

प्रश्नः—शुं करीने ?

उः—जेवो धर्म छे, तेवो श्रुतचारित्ररूप–धर्म समजीने अथवा वस्तुओनो स्वभाव समजीने तेना उपर विश्वास राखे; तथा ते धर्म जाणीने बीजुं शुं करे? ते कहे छेः—देखेला सुंदर अने खराब एवां रुपोवडे निर्वेद पामे; (वैराग्य मेळवे.) ते आ प्रमाणेः– सांभळेला शब्दो, चाखेला रसो, सुंघेला गंधो, फरशेला शुभ अने अशुभ स्पर्शोवडे, रागद्वेष थाय; ते न करतां मध्यस्थ रहे; अने विचारे के, एमां रागद्वेष शुं करवो? वळी प्राणी समूहनी अन्वेषणा जे इष्ट वस्तुओने लेवानी अने अनिष्ट वस्तुने त्यागवानी: जे बुद्धि छे, तेवा रागद्वेष साधु न करे, जेने आवी सामान्य लोक जेवी एषणा नथी तेने बीजी पण कुबुद्धि नथी, ते बतावे छे.

जस्स नत्थि इमा जाई अण्णा तस्स कओ सिया? दिट्ठं सुयं मयं विण्णायं ज

एयं परिकहिज्जइ, समेमाणा पलेमाणा पुणो पुणो जाइं पकप्पंति ॥ सू० १२८ ॥

जे मोक्षाभिलाषी साधुने लोकैषणा [संसारी वासना] नथी तेने बीजी आरंभनी प्रवृत्ति पण होती नथी, अर्थात् जेणे भोग वासना त्यागी, तेने बीजी आरंभ प्रवृत्ति क्यांथी होय? एटले साधुने सावद्य अनुष्टाननी प्रवृत्ति न होय, कारण के सावद्य प्रवृत्ति ग्रहस्थीनेज होय छे,

अथवा हमणांज बतावेली प्रत्यक्ष सम्यक्त्व ज्ञाती जे जीवोने न हणवा संबंधी बतावी ते दया जेने न होय तेवाने कुमार्ग तजवा तथा सावद्य अनुष्ठान छोडवारुप बीजी विवेकनी बुद्धि क्यांथी होय ! (अर्थात् दया साथेज बीजी सुबुद्धि होय छे.)

हवे शिष्यनी गति स्थिर करवा कहे, के जे तेने में कह्युं ते सर्वज्ञ देवे केवळज्ञान वडे साक्षात् देखेलुं छे, ते सेवा करवावडे में सांभळ्युं, ते लघुकर्मवाळा भव्य जीवोने मानवा योग्य छे, तथा ज्ञानावरणीय कर्मना क्षय उपशमथी विशेष प्रकारे जाण्यु, माटे विज्ञात छे, तेथी तमारे पण सम्यक्त्व विगेरे में तमने जे कह्यु तेमां तमारे यत्न करवो, जेओ उपर बतावेल मार्ग न आदरे तेओने शुं थाय छे ते कहे छे, ते ससारी मनुष्यो मनुष्य विगेरे जन्ममां अत्यंत गृद्ध बनीने वारंवार 'मनोज्ञ इंद्रियोना' विषयमां वारंवार आनंद मानीने फरी फरीने एकेन्द्रि बे इन्द्रिय विगेरे जातिमां जन्म ले छे, पण संसारने तरी शकता नथी, जो आ प्रमाणे तत्वने जाणनारा वर्तमान स्वाद लेनारा छे, जन्ममां आनंद माननारा इन्द्रिय विषयमां लीन थयेला वारंवार नवा जन्म विगेरे साधनारा संसारी जीवो होय तो साधुए शुं करवुं ते कहे छे,

अहो अ राओ य जयमाणे धीरे सया आगयपण्णाणे पमत्ते बहिया पास अप्पमत्ते सया

परिक्कमिज्जासि त्तिबेमि (सू० १२९) सम्यक्त्वाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥ ४–१ ।

दिवसे अने रात्रे मोक्ष मार्गमांज यत्न करतो, परिसह उपसर्गमां न डरनारो जे धीर पुरुष छे, तथा सर्व काळ जेणे सत् असत्नो विवेक स्वीकार्यो छे, तेने गुरु कहे छे, के तुं जो, प्रमत्त जीवो जे ग्रहस्थो छे, अथवा अन्य मतवाळा जेओ धर्मथी बहार रहेला छे, तेमनी दुर्दशा देखीने तेवुं दुःख तने न भोगववुं पडे माटे तुं सर्वदा निद्रा विकथा विगेरेथी रहित बनी आंख फरकवा मात्र पण प्रमादी न थइश, अने कर्म शत्रुने जीतवामां अथवा मोक्ष मार्गे जवाथी पराक्रमी बनजे, आ प्रमाणे सम्यक्त्वनुं स्वरुप बतावनार चोथा अध्यायनो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशा.

पहेला उद्देशा साथे बीजानो आ प्रमाणे संबंध छे, के पहेला उद्देशामां सम्यक्त्ववाद बताव्यो, अने ते तेनो शत्रु मिथ्यावाद छे, तेने दूर करवाथी आत्मा लाभ मेळवे छे, ते दूर करवो ज्ञान विना न थाय, अने विचारणा विना परिज्ञा न थाय, मिथ्यावादथी थयेल अन्य तीर्थिकोना मतनी विचारणा करवा आ कहेवाय छे, आ संबंधी आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे, जे (आसवा) विगेरे छे, अने अहिं जे सम्यक्त्व लीधुं ते सात पदार्थोनुं श्रद्धान करवानुं छे, तेमां मोक्षाभिलाषीए शस्त्रपरिज्ञा नामना पहेला अध्ययनमां जीवाजीव पदार्थना ज्ञानवडे संसार तथा मोक्षनां कारणोनो निर्णय करवो एटले तेमां संसारनुं कारण आस्रव अने निर्जरा, संसार मोक्षना अनुक्रमे कारणो छे, तेनुं सम्यक्त्व बरोबर विचारवा माटे कहे छे.

जे आसवा ते परिस्सवा जे परिस्सवा ते आसवा; जे अणासवा ते अपरिस्सवा, जे अपरिस्सवा ते अणासवा; एए पए संबुज्झमाणे लोयं च आणाए अभिसमिच्चा पुढो पवेइयं (सू० १३०)

सूत्रमां जे शब्द छे, ते सामान्यथी लीधेल छे, अने जे आरंभोवडे आठ प्रकारनां कर्मनो आश्रय करे छे, ते आस्रवो छे, अने जे अनुष्ठानो करवाथी बधी रीते कर्म थाय ते परिस्रव छे, हवे पूर्वे जे आस्रवो कर्मबंधनां स्थान बताव्यां, ते पोतेज कर्मनी निर्जरानां कारण थाय छे, तेनो भावार्थ आ छे, के सामान्य बुद्धिवाळाने मोह करावे तेवां फुलनी माळा तथा सुंदर स्त्री सुखकरण वास्ते मानवाथी ते वस्तुओ तेमने कर्मबंधनो हेतु थवाथी आस्रव छे पण तेज वस्तुओ तत्वने जाणनारा विषयसुखथी दूर रहेला महात्माओने फुलनी माळा विगेरे नकामी जेवी लागवाथी तथा संसार भ्रमण करावनारी जाणीने ते वस्तुओथी तेने वैराग्य थाय छे, तेथी कह्यु के, जे आस्रव छे ते ज्ञानीने परिस्रव एटले निर्जरानुं स्थान छे, तथा बधी वस्तुओनुं अनेकांतपणुं बताववा तेथी उलटुं सूत्र कहे छे, जे परिस्रवो छे ते आस्रवो थाय छे, एटले अरिहंत साधु तप संयम दशविध चक्रवाळ समाचारी अनुष्ठान विगेरे भव्यात्माने निर्जरानां स्थान छे, तेज उत्तम पदार्थो जेने अशुभ कर्मनो उदय होय तेवा अशुभ अध्यवसायवाळा तथा दुर्गतिमां लइ जवाने आगेवान बनेला जंतुने ते उत्तम पदार्थोनी आशातना करवाथी तथा सातारिद्धिरसनो गर्व करवामां तत्पर मनुष्यने ते आस्रवो थाय छे, एटले जेनाथी धर्म प्राप्ति थाय एवा तीर्थंकरो पण तेवाने पापनुं उपादानकारण थाय छे, तेनो परमार्थ आ छे, जेटलां कर्मनी निर्जरा माटे संयम स्थान छे, तेटलांज बंधने माटे असंयमस्थान छे, कह्युं छे केः—

यथा प्रकारा यावन्तः, संसारावेशहेतवः । तावन्तस्तद्विपर्यासान्निर्वाणसुखहेतवः ॥ १ ॥

जेटला प्रकारना जेटला संसारना भ्रमणना हेतुओ छे, तेटलाज तेने विपरीत रीते लेवाथी निर्वाण सुखने आपनारा हेतुओ छे.

ए प्रमाणे रागद्वेषथी जेनुं अंतःकरण मलिन छे, अने विषय सुखमां जे तत्पर छे, तेना विचारो दुष्ट होवाथी तेने बधुं संसारने माटे छे, जेम लीमडाना रसमां जो दुध साकर विगेरे मेळवीए तो पण लीमडानी कडवाशथी मीठी वस्तु पण कडवी थाय छे, पण सम्यगदृष्टि जीव, जेणे संसार समुद्रमांथी नीकळवा माटे विषय अभिलाषो दूर करेलाने सर्वे मोहक वस्तुओ अशुचिरुप अने दुःखनुं कारण छे.

एवुं भावनारने संवेग थतां ते मोहक वस्तुओ संसारनुं कारण छतां पण मोक्षने माटे थाय छे.

वळी तेज विषयने उलटा (प्रतिषेध) सूत्र वडे कहे छे.

'जे अणासवा' इत्यादि—प्रसज्य प्रतिषेधना क्रिया प्रतीषेध पर्यवसानपणे 'परिस्रव' आ पदवडेसंबंधनो अभाव होवाथी आ पर्युदास छे. ते समजावे छे. एटले आस्रव (संसार कृत्य) थी उलटुं अनास्रव ते व्रत छे. तो पण ते व्रतो अशुभ कर्मना उदयथी अशुभ अध्यवसाय थतां कर्मने अपरिस्रव (निर्जरा माटे नहीं) थाय, जेमके कोंकण आर्य विगेरेनुं चारित्र कर्मनी निर्जरा माटे न थयुं,

तेमज अपरिस्रव जे पापनुं उपादान कारण छतां कोइ पण प्रवचन (जैन शासन) ने उपकार विगेरे करवाथी ते अशुभ कृत्यो कणवीर लताने भमडनारा क्षुल्लकनी माफक अनास्रव एटले कर्मबंधननां कारण थतां नथी.

(उपरना सूत्रोनो भावार्थ आ छे के जे आस्रव ते बंधनुं कारण छतां कारण विशेषथी ते, कर्मबंधरुपे नथी थतुं, तेम निर्जरानुं

क्रुत्य करवा छतां तेवा संजोगोना अभावेमन परिणाम वदलातां बंधरुपे थाय छे, तेवीरीते कोइने व्रत लीधाथी अनास्त्रव थतां निर्जरा थवी जोइए, छतां कारण वदलातां ते व्रत बंधनरुपे थाय, अने अपरिस्रव ते बंधनु कारण छतां संजोगो वदलातां बधरुपे न थाय, माटे एकांत पकडवुं. पण बुद्धि पूर्वक संजोगो तथा मनना परिणाम विचारी अनुमान करवुं, के वोलवुं.) अथवा बीजी रीते बतावे छे.

जे आस्रव करे–ते आस्रवो (पच विगेरेमां 'अ' लागे छे, तेज प्रमाणे जे परिस्रव करे ते परिस्रवो (निर्जरक) छे. एनी चोभंगी थाय छे, तेमां मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योगोवडे जेओ कर्मना अस्रवो (बंधको) छे, तेओज बीजाओना परिस्रवो (निर्जरा करनारा) छे आ प्रथम भांगामां पडेला वधा संसारी जीवो चार गतिमां भ्रमण करनारा छे. ते दरेकने प्रत्येक क्षणे आस्रव तथा निर्जरा छे पण जेओ आस्रव करे तेओ परिस्रव न करे, आ बीजो भांगो शून्य छे कारणके, बंधनी जोडे निर्जरा (थोडेघणे अंशे) हंमेशां चालुज छे.

ए प्रमाणे जे अनास्रववाळा छे, तेओ परिस्रववाळा छे, एटले, तेओ अयोगी केवळी १४ गुणस्थानमां रहेला त्रीजा भागमां छे, अने चोथा भागमां सिद्ध भगवंतो छे, तेओमां अनास्रवपणुं छे, तेम अपरिस्रवपणुं पण छे, एमां पहेलो अने छेल्लो भांगो सूत्रमां लीधेल छे. अने पहेलो छेल्लो लेवाथी मध्यना बे भांगा साथे रहेवाथी आवीगयला जाणवा. जो, एम छे, तो शुं करवुं ते कहे छे:–

उपर कहेला पदो (जेनाथी अर्थ समजाय; ते पद छे ते) आस्रवो विगेरे छे, (अने बीजानो अर्थ समजावा माटे शब्दना-प्रयोगथी जे पदो अने अर्थ कहेवा जोग छे,) ते मने योग्यरीते समजवावडे समजेलो साधु विचारे के, दुनियाना जीवो आस्रवद्वार-

वडे आवेलां कर्मवडे वंधाय छे, तथा तप अने चारित्र विगेरेथी कर्मोथी मुकाय छे. आवुं तीर्थंकरना कहेला आगमने अनुसारे जे आज्ञामां रहे; अने वर्ते ते मुकाय. एवुं जाणीने कर्मथी छुटवा जुदुं बतावेल आस्रव, तथा परिस्रव समजीने क्यो माणस धर्मचारित्रमां उद्यम न करे? केवीरीते कहेल छे, ते बतावे छे.

आस्रवो छे, ते ज्ञानना प्रत्यनीकपणाथी एटले, ज्ञान भणावनारना गुण भुलवा. भणतां अंतराय करवी; ज्ञान उपर द्वेष करवो; ज्ञानती अतिशय आताशना करवी; ज्ञानने सम्यक्मकारे न बतावथी ज्ञानावरणीयकर्म वंधाय छे, तेज प्रमाणे दर्शनना शत्रुपणाथी ज्ञानमां बतावेलां विघ्नो माफक दर्शनमां विघ्न करवाथी एटले, दर्शनने सम्यक्प्रकारे न बताववुं; त्यां सुधीना दोषो लगाडवाथी दर्शनावरणीयकर्म वंधाय छे. तेज प्रमाणे प्राणीओनुं, तथा भूतोनुं तथा जीवोनुं तथा सत्वनुं भलुं चाही दुःख न आपवाथी शोकनुं कारण न आपवाथी तथा न झुरव्याथी तथा पीडा न आपवाथी तथा न संतापवाथी (अर्थात् निर्मल चारित्र वडे सर्वे जीवोने अभयदान आपवाथी) साता वेदनीय कर्म वंधाय छे, एथी उलटुं एटले जीवोने असंयम वडे दुःख आपवाथी असातावेदनीयकर्म बन्धाय छे, तेज प्रमाणे अनतानुंवन्धीना उत्कृष्टपणाथी तीव्रदर्शन मोहनीयपणे तथा प्रबळ चारित्रमोहनीयना सद्भावथी मोहनीयकर्म बन्धाय छे, महान आरंभथी तथा घणा परिग्रहथी पंचेन्द्रियना वन्धथी मांसना खावाथी नरकनुं आयु वधाय छे, तथा मायावीपणे जुठना कारणे तथा खोटा तोल माप करवाथी जीव तिर्यंचनुं आयु बांधे छे. स्वभावे विनयवान तथा सानुक्रोप लज्जाळुपणाथी, तथा अदेखाइ न करवाथी मनुष्यनुं आयु बांधे छे, तथा सराग–संयमथी देशविरति (श्रावकनाव्रत) तथा बाळतपस्यथी अने अकाम निर्जराथी देवनुं आयु बन्धाय छे, अने कार्यमां सरळ, तथा कोमळ वचन योग्यरीते बोलवाथी शुभ नाम बन्धाय छे. अने तेथी उलटा

दुर्गुणोथी अशुभ नाम बन्धाय छे. जाति, कुळ बळरुप तप, विद्या लाभ ऐश्वर्यनां मद न करवाथी ऊंचगोत्र बन्धाय छे, अने जाति विगेरेनो मद करवाथी, तथा पारकानी निंदा करवाथी नीचगोत्र बन्धाय छे, दान, लाभ भोग–उपभोग, अने वीर्य ए पांचना अंतराय करवाथी अंतरायकर्म बन्धाय छे. आज उपर कहेला आस्रवो छे. हवे परिस्रवोनुं स्वरूप बतावे छे:—

अनशन विगेरे बाह्य अने अभ्यंतर–तप ते कर्मनी निर्जरा करनार परिस्रव छे, आ प्रमाणे आस्रव करनार अने निर्जरा करनार भेदोसहित जीवो बताव्या छे, ते बधा जीव विगेरे सात पदार्थो मोक्ष सुधी छे ते जाणवा. आ पदार्थोने तीर्थंकर तथा गणधर भगवन्तोए लोकोत्तर ज्ञानवडे जाणीने जुदा जुदा बतावेल छे, अने तेज प्रमाणे तेमनी आज्ञामां वर्तनार बीजो कोइपण साधु चौद पूर्व विगेरेनुं ज्ञान धरावनार जीवोनां हितने माटे बीजाओने पण उपदेश आपे छे, ते बतावे छे:—

आघाइ नाणी इह माणवाणं संसारपडिवण्णाणं संबुज्झमाणाणं विन्नाणपत्ताणं, अट्टावि संता अदुवा पमत्ता अहा सच्चमिणं तिबेमि, नाणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि इच्छा पणीया। वंकानिकेया कालगहिया निचयनिविट्ठा पुढो पुढो जाइं पकप्पयंति (सू० १३१)

बधा पदार्थोने बतावनार ज्ञान छे. ते ज्ञान ने होय; ते ज्ञानी कहेवाय, ते ज्ञानी प्रवचनमां मनुष्योने उपदेश करे छे. मनुष्य लेवानुं कारण ए छे के, पचेन्द्रिय सांभळे समजे; तो पण, तेओ संपूर्ण चारित्र तथा संवर लइ शके नहि; अने देवता विगेरे सांभळे, पण आदरी शके नहि वळी, केवळीने उपदेशनी जरुर नथी; माटे संसारमां रहेलां घातीकर्मवाळां जीवोने आ उपदेश अपाय छे.

वळी, जेओ धर्मने भविष्यमां समजशे, अने स्वीकारशे, जेम मुनिसुव्रतस्वामी तीर्थंकरनो अने घोडानो दृष्टांत छे, तेवाओने धर्म संभळावाय, अने ते समजेला होय एटले जेओने आगळ कहेतां छद्मस्त साधुने खबर न पडे माटे केवा जीवोने कहेवुं ते कहे छे. विज्ञान प्राप्त एटले हितनी प्राप्ति अने अहित छोडवानो विचार करवानुं जेने ज्ञान होय, तथा बधी पर्याप्तिओथी पर्याप्त एटले संज्ञी होवा जोइए. आ संबंधमां नागार्जुनीया कहे छे.

"आघाइ धम्मं खलु से जीवाणं, तं जहा–संसारपडिवन्नाणं माणुसभवत्थाणं आरंभ विणईणं दुक्खुव्वेअसुहे सगा॰ धम्मसवण गवेसयाणं सुस्सूसमाणाणं पडिपुच्छमाणाणं विण्णाण पत्ताणं"

संसारमां रहेला मनुष्य जन्ममां आवेला पण आरंभथी विरमेला दुःखनी उपेक्षा करनारा सुखने वांछनारा होय छतां पण तेओ धर्म सांभळवानी इच्छा करता होय, गुरुनी उपासना करता होय, धर्मना विषयने पुछता होय अने समजवानी शक्तिवाला होय (आ सूत्र सरळ होवाथी टीका नथी परंतु आरंभ विनयनो अर्थ आरंभथी दूर होय) तेओने ज्ञानी साधु धर्म बतावे छे, ते कहे छे. 'अट्टावि' विगेरे एटले विज्ञानने प्राप्त थएलाने धर्मने कहेतां कांइ पण निमित्तथी आर्तध्यानवाळा चिलाति पुत्रनी माफक होय तो पण धर्म पामे, अथवा विषयना अभिलाषथी शालिभद्र माफक प्रमत्त होय छतां पण तेवा कर्मना क्षय उपशमथी जेवो धर्म स्वीकारे छे, ते कहे छे अथवा आर्त दुःखीओ अने प्रमत्त सुखीओ तेओ पण धर्म पामे छे तो बीजाओनुं शुं कहेवुं? (अर्थात् धर्म पामे छे) अथवा रागद्वेषना उदयथी आर्त तथा विषयोथी प्रमत्त छे. तेओ जैनेतर अथवा गृहस्थ संसारकांतारमां पेठेला केवी रीते तत्वने

जाणेला करुणायोग्य रागद्वेष विषयना अभिलाषने जडमूळथी उखेडवाने केम समर्थ न थाय, आ वातने बीजी रीते न माने, तेथी बतावे छे 'अहासच्च' विगेरे. आजे में कह्युं अने कहेवाय छे, ते सत्य छे, एवुं हुं कहुं छुं के जेवी रीते सम्यक्त्व अथवा चारित्रना परिणाम जे दुर्लभ छे, ते पामीने प्रमाद न करवो, शिष्य कहे छे ठीक पण शुं आधार लइने प्रमाद न करवो! ते कहे छे, 'नाणागमो' विगेरे, एटले कोइ पण वखत संसारमां रहेलो जीव मृत्युना मोढामां न आवे एवुं नथी, कह्युं छे केः—

वदत यदीह कश्चिदनुसंततसुखपरिभोगलालितः। प्रयत्नशतपरोऽपि, विगतव्यथमायुरवाप्तवान्नरः

कोइ डाह्यो माणस पूछे के बोलो, के अहींआ रोज सुखनां परिभोगथी लाड लडावेलो अने सेंकडो प्रयत्न करीने राखेलो पण वगर व्यथाना आयुवाळो माणस कोइ पण छे के? (नथी)

न खलु नरः सुरौघसिद्धासुरकिन्नरनायकोऽपि यः। सोऽपि कृतान्तदन्तकुलिशाक्रमेण कृशितो न नश्यति॥

देवताओना समूह अने सिद्ध विद्यावाळो तथा असुरकिन्नरनो नायक पण अथवा मनुष्य पण एवो कोइ नथी, के जे पुरुष जमना दांतरुपी वज्रना आक्रमणथी कृश करेलो ते न नाश पामे? वळी मृत्युना मोढामां गयेलो जे कोइ छे, तेने बचाववानो कोइ पण उपाय नथी कह्युं छे, के नाशी जाय, नमी पडे, चाल्यो जाय विस्तार करे अथवा रसायम क्रिया करे अने मोटां व्रत करे जे वधारे बीकण छे, ते गुफामां पण पेसे, तप करे, मापसर खाय, मंत्र साधन करे तो पण जमना दांतरुप यंत्रनी कातरमां ते कपाइने चीराय छे! अने जेओ विषय कसायना अभिलाषथी प्रमत बनेला धर्मने नथी जाणता तेओनी शुं दशा थाय छे, ते कहे छे, इंद्रियो तथा मनना

विषयने अनुकूळ प्रवृत्ति (इच्छा) प्रमाणे अहीं विषयना सन्मुख जेमां कर्मनो बन्ध छे, ते तरफ अथवा संसारना सन्मुख प्रकर्षपणे जेओ गएला छे तेओ इच्छा प्रणीत छे. जेओ तेवा छे. तेओ वंकनी अथवा असंयमनी जे मर्यादा छे, तेनो आश्रय लीधेला ते वंकानिकेत छे, अथवा जेमनुं वांकुं निकेत छे, तेवा छे, (व्याकरणना नियमथी सूत्रमांकनो काथयेल छे.) अने जेओए असंयमनी मर्यादा (हद) लीधी छे. तेओ काल (मोत)थी, वेराता कर्मनां उपादान कारण जे सावद्य कर्मनां अनुष्ठान छे, तेमां रक्त वनीने वारंवार एकेन्द्रिय जाति विगेरेमां नवां नवां जन्म मरण भोगवे छे, अथवा काल ग्रहितनो वीजो अर्थ एम लेवो के केटलाक जीवो एम चिंतवे के धर्म करीशुं, चारित्र लइशुं, एवी आशाथी वेसी रहे, (अथवा आ हिताग्निना व्याकरणना प्रयोगथी अथवा आर्ष वचन प्रमाणे परनिपात करतां) गृहितकाल शब्द लेतां, केटलाक एवुं इच्छे के पाछली वयमां के मरणना अंत समयमां अथवा पुत्र परणाव्या पछी धर्म करीशुं, हमणा नहि, एवी उमेद राखनारा सावद्य आरंभमां रक्त वनी इच्छा प्रमाणे वक्र असंयममां रहीने भविष्यने भरोसे रहीने धर्म करवानुं राखी वर्तमानमा पाप रक्त वनी पृथक पृथक (जुदी जुदी) एकेन्द्रिय जाति विगेरेमां जन्म-मरण करे छे.

वीजी प्रतिमां 'एत्थ मोहे पुणो पुणो' पाठ छे. तेनो अर्थ आ छे, के उपर कहेली रीते इच्छा एटले, इंद्रियोने अनुकूळ कर्मरुप-मोहमां डुवेला वारंवार एवां पाप करे छे के, तेनी संसारथी अप्रच्युति (नमुक्ति) थाय, संसारभ्रमण कर्यांज करे; तेथी शुं थाय ते वतावे छेः—

इहमेगेसिं तत्थ तत्थ संथवो भवइ, अहोववाइए फासे पडिसंवेयंति, चिट्ठं कम्मेहिं कूरेहिं चिट्ठं परिचिट्ठइ, अचिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं नो चिट्ठं परिचिट्ठइ, एगे वयंति अदुवावि नाणा नाणो वयंति अदुवावि एगे (सू० १३२)

इह (आ) चौद राजलोकप्रमाणवाळा संसारमां केटलाक मिथ्यात्व, अविरति प्रमाद, अने कषायरुपदुर्गुणवाळां संसारी जीवोने (तेमनां पापनां फळ) ते ते नरक तिर्यंच गति विगेरे पीडाना स्थानमां वारंवार जवाथी संस्तव (परिचय) थाय छे, एटले, पूर्वनां सूत्रमां कह्या प्रमाणे तेओ इच्छाने अनुसार तत्त्वो बनावी इन्द्रियोने वश थइ तेने अनुकूळ आचारीने नरक विगेरे स्थानमां गयेला छतां पण जैनेतर अथवा जैनमतना पासत्था (स्वेच्छाचारी) साधुओ औदेशिक विगेरे दोषित आहारने निर्दोष बतावनारा नरक विगेरेना दुःखना अनुभवो (स्पर्शने) भोगवे छे, (ते इन्द्रियोथी सौथी वधारे परवश बनेला) नास्तिकनुं मानवुं बतावे छे केः—

पिब खाद च चारुलोचने !, यदतीतं वरगात्रि तन्न ते। नहि भीरु ! गतं निवर्त्तते, समुदायमात्रमिदं कलेवरम् ॥

ते मतनो नायक ब्रहस्पति पोतानी विधवा बेनने कुमार्गे दोरवा कहे छे केः—" हे सुंदर लोचनवाळी ! इच्छत पी, खा. हे सुंदर शरीरवाळी ! जे गयुं ते तारुं नथी ! हे बीकण ! गयेलुं पाछुं आवतुं नथी ! आ परमाणुओना समुह मात्रज शरीरनुं खोखुं छे. (अर्थात् जे शरीरवडे धर्म साधवानो छे, तेना वडे भोगोमांज रक्त थवानुं बताव्युं; अने तेनी भोळी बेनने विवेक न होवाथी तेना फांसामां फसी, अने तेमनां अधम आचरणोथी अनेक जीवोने कुमार्गे दोरवानुं स्थान मळ्युं.)

हवे वैशेषिक मतनुं थोडुं वर्तन दूषणरुप छे. ते बतावे छे, के वैशेषिक मतवाळा पण सावद्य योगना आरंभीओ छे, तेओ बोले छे के, अभिषेचन (स्नान) उपवास ब्रह्मचर्य गुरुकुलवास, वानप्रस्थ (वनवास) यज्ञ करवो, दान देवुं, मोक्षण (प्रोक्षण) दिग् नक्षत्र मंत्र काळ नियम विगेरे छे (आ बाबतोमां स्नान यज्ञ विगेरे एकेन्द्रि विगेरेने पीडाकारक छे तेज प्रमाणे बीजा मतवाळाओनुं जे सावद्य अनुष्ठान छे ते एवी रीते बताववुं—

प्रश्नः—कदाच एम पण होय, परंतु बधाए तेवा इच्छामणीत विगेरेथी दुर्गतिमां जइ दुःखनो स्पर्श भोगवनारा छे के कोइकज तेने योग्य कर्म करनारो दुःख भोगवे छे? ते बतावे छे.

उत्तरः—बधा नहीं, पण जे अत्यंत क्रुर वधबंधन विगेरेनी क्रिया वडेज (चीकणा कर्म बांधो) वैतरणी तरण असिपत्र वनपत्र पडवानी तथा शालमली वृक्षनुं आलिंगन विगेरेथी थएल नरकनी भयंकर वेदनानी विरुप दशाने भोगवतो सातमी विगेरे नरकमां वसे छे, पण जे अत्यंत हिंसावाळा कर्मो न करे ते घणी पीडावाळां नरकोमां उत्पन्न थतो नथी, ठीक, एम हशे, पण आवुं कोण कहे छे, 'एगे वयंती' त्यादि चौद पूर्वी विगेरे मुनिओ कहे छे, अथवा जेने सकळ (बधा) पदार्थोनुं बतावनारुं ज्ञान छे, ते ज्ञानी बोले छे, तथा जेवुं दिव्यज्ञानी केवळी बोले छे तेमज श्रुत केवळी बोले छे, तथा जे श्रुत (ज्ञान वाळा) केवळी बोले छे, तेज निरावरण केवळज्ञानी बोले छे, (ते मत्यागत सूत्रवडे जाणवुं के) 'नाणी' विगेरे–ज्ञानी केवळी जे बोले छे तेवुं श्रुत केवळी यथार्थ बोलता होवाथी ते एकज छे, कारण के केवळी प्रभुने दरेक पदार्थ साक्षात् देखाय छे, अने श्रुत केवळी तेमना उपदेश प्रमाणे वर्ते छे. तेथी बोलवामां पण एक वाक्यता (सरखापणुं) छे; ते कहे छे, तथा वादीओनो विवाद तथा तेमनुं समाधान करे छे.

आवंती केयावंती लोयंसि समणा य माहणा य पुढो विवायं वयंति, से दिट्ठं च णे सुयं च णे मयं च णे विण्णायं च णे उड्ढं अहं तिरियं दिसासु सव्वओ सुपडिलेहियं च णे–सव्वे पाणा सव्वे जीवा सव्वे भूया सव्वे सत्ता हन्तव्वा अज्जावेयव्वा परियावेयव्वा परिघेत्तव्वा

उद्देवयव्वा, इत्थवि जाणह नत्थित्थ दोसो अणारियवयणमेयं, तत्थ जे आरिआ ते एवं वयासी–से दुद्दिट्ठं च भे दुस्सुयं च भे दुम्मयं च भे दुव्विण्णायं च भे उड्ढं अहं तिरियं दिसासु सव्वओ दुप्पडिलेहियं च भे, जं णं तुब्भे एवं आइक्खह एवं भासह एवं पण्णवेह–सव्वे पाणा ४ हंतव्वा ५, इत्थवि जाणह नत्थित्थ दोसो, अणारियवयणमेयं, वयं पुण एवमाइक्खामो एवं भासामो एवं परूवेमो एवं पण्णवेमो–सव्वे पाणा ४ न हंतव्वा १ न अज्जावेयव्वा २ न परिघित्तव्वा ३ न परियावेयव्वा ४ न उद्दवेयव्वा ५, इत्थवि जाणह नत्थित्थ दोसो, आयरियवयणमेयं पुव्वं निकाय समयं पत्तेयं पत्तेयं पुच्छिस्सामि, हंभो पवाइया! किं भे सायं दुक्खं असायं? समिया पडिवण्णे यावि एवं बूया–सव्वेसिं पाणा ४ सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं असायं अपरिनिव्वाणं महब्भयं दुक्खं तिबेमि (सू० १३३)

॥ चतुर्थाध्ययने द्वितीय उद्देशकः ४–२ ॥

'आवन्ती' जेटला 'केआवन्ती' केटलाक मनुष्य लोकमां जैनतर साधु, तथा ब्राह्मणो जुदुं जुदुं विवादरुपे बोले छे, अर्थात्

केटलाक अन्यदर्शनीओ परलोकने बतावनानी इच्छावाळा पोताना मंतव्यना प्रेमथी बीजानुं मंतव्य जुठुं ठरावबा विवाद करे छे, जेमके भागवत मतना लोको कहे छे के पचीस (२५) तत्वना ज्ञानथी मोक्ष थाय छे. आत्मा सर्वव्यापि छे, गुण रहित छे, चैतन्य लक्षणवाळो छे, अने विशेष रहित सामान्य तत्व छे, तथा वैशेषिक मतवाला कहे छे, द्रव्य विगेरे छ पदार्थना परिज्ञानथी मोक्ष छे, समवायिज्ञान गुणवडे इच्छा प्रयत्न द्वेष विगेरे गुणोथी गुणवान् आत्मा छे, परस्पर निरपेक्ष सामान्य विशेषरुप तत्व छे, शाक्य मतवाला कहे छे, परलोकमां जनार आत्माज नथी, निश्चयथी सामान्य क्षणिक वस्तु छे, मीमांसक कहे छे, के मोक्ष तथा सर्वज्ञनो अभाव छे, तथा केटलाक मतमां पृथ्वी विगेरे एकेन्द्रिय जीवो नथी, बीजा केटलाक वनस्पतिमां पण अचेतनपणुं माने छे, तथा केटलाक बेयेन्द्रि विगेरे कृमी विगेरेमां जंतुपणुं मानता नथी, अथवा जीवपणुं मानवा छतां तेना वधमां बंध मानता नथी, अथवा अल्प मात्र बंध माने छे, तथा हिंसामां पण भिन्न वाक्यपणुं छे, ते कहे छेः—

प्राणी प्राणिज्ञानं घातकचित्तं च तद्गताचेष्टा । प्राणैश्च विप्रयोगः पञ्चभिरापद्यते हिंसा ॥

जीव जीवनुं ज्ञान, घात करनारनुं चित्त, अने तेमां रहेलीचेष्टा पाणा साथे वियोग, आ प्रमाणे पापने जाणवाथी हिंसा थाय छे. तथा औद्देशिकना परिभोगनी आज्ञा आपवा विगेरेनी जे विरुद्ध वात छे, ते पोतानी मेळे विचारवुं, प्र—ते ब्राह्मण तथा श्रमणो धर्म विरुद्ध जे बोले छे, ते सूत्र वडेज बतावे छे,

अन्य दर्शनीनुं कहेवु आ छे केः—('से दिठं चेण इत्यादि' थी लइने 'नत्थित्थ दोसोत्ति,') दिव्यज्ञानवडे अमे अथवा,

अमारा धर्मना नायको, (तीर्थंकरो) शास्त्र रचनाराए साक्षात् जोयुं छे. अथवा, अमारा मोटा गुरु पासेथी अमे तथा अमारा वडगुरु पासेथी गुरुए सांभळ्युं छे. अथवा ते धर्मनायकनी पासे सेवामां रहेनारा शिष्योए एम मान्युं छे. अथवा तेमने आ युक्तिए युक्त होवाथी मान्य छे. अथवा अमोने अथवा, अमारा धर्मनायकने आ जाणीतुं छे, ते तत्व भेदना पर्यायोवडे अमोए अथवा, अमारा धर्मनायके पारकाना उपदेशथी नहि; पण, स्वयं जाणेलुं छे के, उपर नीचे तथा, चार दिशा, चार खुणा मळी दशे दिशामां तथा, बधां प्रमाणो ते, प्रत्यक्ष अनुमान ऊपमान आगम अर्थापत्ति विगेरेथी तथा, मनना निश्चयथी अमे तथा अमारा गुरुए विचारी लीधुं छे के:—सर्वे प्राणो, सर्वे जीवो, सर्वे भूतो, सर्वे सत्वो हणवा, हणाववा; संग्रह करवो; सतापवा; दुःखी करवा तेमां कंइ दोष नथी; तेम धर्मकार्यमां पण समजवुं के, याग यज्ञ करवामां अथवा, देवताने बळिदान आपवामां प्राणी हणाय; तो, पापनो बंध नथी. आ प्रमाणे, केटलाक जैनेतर सन्यासीओ तथा पोताने माटे रसोइ बनावेली जमनारा ब्राह्मणो धर्म विरुद्ध तथा, परलोकविरुद्ध बोले छे. आ प्रमाणे, तेमनुं बोलवुं जीवहिंसानुं होवाथी पापना अनुबंधवाळुं वचन अनार्यप्रणीत (रचेलुं) छे, पण जेओ तेवा हिंसक इन्द्रिय प्रिय नथी. तेवाओ शुं कहे छे? ते बतावे छे.

(तत्र वाक्यनी शरुआत करवा अथवा निर्धारण माटे छे.) जेओ देश भाषा तथा चारित्र वडे आर्य (उत्तम गुणवाळा) छे, तेओ एम कहे छे, के अन्य मतवाळाए जे कह्युं ते तेमणे खराब रीते देखेलुं छे, अर्थात् तमोए अथवा तमारा गुरु तथा धर्मना नायकोए जीव हिंसानी पुष्टि करो तेथी नीचला दोषो तमने लागु पडे छे. (णं वाक्यालंकारमां छे) वळी तमे याग अथवा देवताना बळिदानमां हिंसाने निर्दोष मानो छो, परंतु आर्य पुरुषो तेमां पण दोष माने छे. एवुं बतावीने हवे आर्य पुरुषो पोतानो मत स्था-

पन करे छे अने कहे छे, अमे आवुं कहीए छीए, अने प्ररुपणा करीए छीए केः—बधा प्राण, जीव, भूत, सत्व ए चारे शरीरधारी जीवो छे, तेमने हणवा नहिं, हुकम चलाववो नहि, संग्रह करवो नहि, संतापवा नहि, पीडा आपवी नहि, उपद्रव करवा नहि. अ-हींआज दोष नथी. (अर्थात् कोइपण जीवने कोइ पण रीते पीडा न आपनारुं संयमज निर्दोष छे,) आ आर्य पुरुषोनुं वचन छे. आवुं कहेवाथी हिंसा प्रिय जैनेतर कहे छे, के अमने तमारुं वचन अनार्य लागे छे.

जैनाचार्यः—तमारुं कहेवुं तमारा एक दिलवाळा मित्रोज स्वीकारी शकशे. कारण के ते युक्ति रहित छे. तेने माटेज फरी कहे छे, के पोतानी वाक् (वाणी) रुप यंत्र वडे बंधायला वादीओ पोतानी कुवाणीथी पाछा नहि फरे. (आग्रह पकडी राखशे) तेवा वादी (जैनेतर) ने तेमना मानेला आगमनी व्यवस्था करीने तेनुं विरुप (अनुचित) पणुं बताववा वडे जैनाचार्य प्रश्न पूछे छे. अथवा प्रथम प्रश्न करनारा दरेक वादीओने व्यवस्थापीने जैनाचार्य तरफथी प्रश्न पूछाय छे के—बोलो! वाद करनारा जैनेतर बंधुओ तमने साता (सुख) मनने आनंद उपजावनारा छे, के दुःख? जो एम कहे के सुख वहालुं छे, तो तमारा आगम (सिद्धांत) ने प्रत्यक्ष तथा लोकना मानवा प्रमाणे बाधा थशे. (तमारो सिद्धांत खोटो थशे.) कदी तेओ लुच्चाइथी जुठुं कहे के अमने दुःख प्रिय छे, तो तेवा वादीओने पोतानी वाक् जालमां बंधायलाने आ प्रमाणे कहेवुं, के तमने जेम दुःख प्रिय छे तेम सर्वे प्राणी मात्रने दुःख प्रिय नथी, पण अप्रिय छे, अशांतिकर छे, महा भयरुप छे. छतां हठ ग्रहीने ते न माने तो कहेवुं, के तमारुं बोलवुं सत्य क्यारे थाय, के ते प्रमाणरुप बने, पण तेवुं प्रमाण मळवुं दुर्लभ छे के सुखने बदले दुःख कोइ पण प्रिय माने? माटे तमारे अथवा दरेक मोक्षाभिलाषी के सुखना अभिलाषीए कोइपण जीवोने हणवा नहिं, पीडवा नहिं तथा केदमां नाखवा नहिं विगेरे जाणवुं. ते

हणवामां दोप छे, छतां हणवामां दोप नथी. एवुं मानवुं ते अनार्य वचन छे. (इति शब्द समाप्ति माटे छे) आवुं सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे. उपर बताव्या प्रमाणे ते वादीओने तेमना वचनयंत्रवडेज बांधीने तेमनी अनार्यता बतावी. आ संबंधमां रोहगुप्त मंत्री जेणे जैनागमनुं तत्व सारी रीते जाण्युं छे तेणे मध्यस्थपणुं धारण करीने तमाम मतवाळानी परिक्षा करवा वडे जेम निराकरण कर्युं ते निर्युक्तिकार गाथाओ वडे कहे छे.

खुड्डग पायसमासं, धम्म कहंपि य अजंपमाणेणं। छन्नेण अन्नलिंगी, परिच्छिया रोहगुत्तेणं ॥ २२७ ॥

आ गाथा वडे संक्षेपथी क्षुल्लकनुं दृष्टांत कह्यु छे, गाथाना पदना संक्षेपवडे राजसभामां बधा वादीनी धर्मकथा प्रगट सांभळीने रोहगुप्त मंत्रीए वादीओनी परीक्षा करी. आ गाथानो वधारे खुलासो नीचेनी कथाथी जाणवो. ते कहे छे के चंपानगरीमां सिंहसेन राजनो मंत्री रोहगुप्त महामंत्री हतो ते जिनेश्वरना मंतव्यमां निर्मळ हृदयवाळो बनीने सत् असत्वादना विचारनी चर्चा पूछतो हतो, ते समये जे जेने इच्छित ते तेणे सारुं कह्यु, ते समये चुप बेठेला मंत्रीने राजाए कह्यु, धर्म विचारो जणाववामां तमे कांइ केम बोलता नथी?

मंत्री बोल्योः—आ वादीओना स्वपक्षना आग्रहवाळां वचनोवडे शुं लाभ थाय? माटे आपणे विचार करीए, पोतानी मेळे धर्मपरीक्षा करीए. आ प्रमाणे बधा वादीओने शांतिनुं वचन कहीने राजानी आज्ञा लइने नीचलुं एक पद बनावी नगरमां लटकाव्युं.

सकुंडलं वा वयणं न व' त्ति, आ गाथाना बीजां त्रण पद मेळवी आखी गाथाभंडारमां राजा पासे मुकावी. पछी जाहेर दांडी पीटावी कह्युं के आ पद सिवाय त्रण पद नवां बनावीने राजा पासे जे गुरु लावशे, तेने राजा मों माग्या दान आपशे, तथा तेनो

भक्त वनशे. आ गाथाना पदने सर्वे वादीओ पोताने वेर लइ गया. सातमे दिवसे राजाना सभामंडपमां सर्वे वादीओ आव्या तेमां परिव्राड (परिव्राजक) बोल्यो.

भिक्खं पविट्ठेण मएऽज्ज दिट्ठं, पमयामुहं कमलविसालनेत्तं। वक्खित्तचित्तेण न सुट्ठु नायं, सकुंडलं वा वयणं न वत्ति ॥ २२८ ॥

भिक्षामां प्रवेश करेलाए में आजे प्रमदा (युवान स्त्री) नुं मोढुं जोयुं जेमां कमळ सरखां नेत्र हतां पण मारुं व्याक्षिप्त चित्त होवाथी मने बरोबर खबर न पडी, के तेना मोढामां (कानमां) कुंडल हतां के नहि (आ गाथानो अर्थ सुगम छे परंतु कुंडल हतुं के नहि तेनी शंका रहेवानुं कारण फक्त तेणे चित्तनो व्याक्षेप बताव्यो.) आ वादीमां वीतराग (त्याग) दशा न जोवाथी, तथा पूर्वे आपेली गाथा प्रमाणे अर्थ न मळवाथी, तिरस्कार करीने राजाए रस्तो पकडाव्यो, पछी तापस बोल्योः—

फलोदएणं मि गिहं पविट्ठो, तत्थासणत्था पमया मि दिट्ठा। वक्खित्तचित्तेण न सुट्ठु नायं, सकुडलं वा वयणं न वत्ति ॥ २२९ ॥

फलना उदय वडे हु घरमां पेठो, त्यां आसन उपर स्त्री बेठेली हती, पण व्याक्षिप्त चित्तथी में बराबर निर्णय न कर्यो, के ते स्त्रीना कानमां कुंडळ छे के नहि.? (आमां पण वैराग्य न होवाथी तेने रजा आपी.) पछी बौद्ध अनुयायी बोल्योः—

मालाविहारंमि मएऽज्ज दिट्ठा, उवासिया कंचणभुसियंगी। वक्खित्तचित्तेण न सुट्ठु नायं,

सकुंडलं वा वयणं न वत्ति ॥ २३० ॥

मालना विहारमां मे आजे एक उपासिका (ते मतने माननारी स्त्री) जोइ, ते सुवर्णना भूषणे भूषित हती. पण व्याक्षिप्त चित्त वडे में न जोयुं, के कानमां कुंडळ छे के नहि. ?

आ प्रमाणे बीजा तीर्थीओ (वादीओ) ए पोतानुं कही बताव्युं पण कोइ जैन साधु न आव्यो, त्यारे राजाए कह्युं के तेने बोलावी लावो. तेथी मंत्रीए एक नानो साधु हतो पण तेने वैराग्य दशाए परिणमेलो जाणी गोचरीमां आवेलो हतो, तेने प्रत्युष (उगता प्रभात) नी माफक राजा आगळ आण्यो तेथी राजाए ते चोथा पदने आपी उत्तर मागतां क्षुल्लक साधुए कह्युं,

खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स, अज्झप्पजोगे गयमाणसस्स। किं मज्झ एएण विचिंतएणं !

सकुंडलं वा वयणं न वत्ति ॥ २३१ ॥

क्षमा धारण करनारा, काम दमन करनारा, इन्द्रिओने जीतनारा अने अध्यात्ममां रक्त एवा मारा जेवा मुनिने शा माटे चिंतववुं, के ते प्रमदाना कानमां कुंडळ छे के नहि ? आमां अजाणपणानुं कारण क्षांति विगेरे गुणो धारणनुं कारण बताव्युं, पण चित्तना विक्षेपनुं कारण न बताव्युं, तेथी राजाने तेनी निस्पृहता उपरथी धर्म भावनानो उल्लास वध्यो, पछी राजाए धर्मतत्व पुछतां क्षुल्लक साधुए माटीनो एक गोळो भींत तरफ उछाळी सूचना करीने चालवा मांड्युं, त्यारे राजाए पूछ्यु के आप पूछवा छतां धर्म केम कहेता नथी ? त्यारे तेणे कह्युं, हे भोळा राजा ! आ भीना सुका गोळाओना फेंकवाथी में धर्म कह्यो छे, ते बे गाथाथी बतावे छे.

जल्लो सुक्कोय दो छूढा, गोलया मट्टियामया। दोवि आवडिया कुड्डे, जो उल्लो तत्थ (सोऽत्थ) लग्गइ ॥
एवं लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा। विरत्ता उ न लग्गंति, जहा से सुक्कगोलए ॥ २३३ ॥

जे भीनो तथा सूको गोळो छे ते बन्ने माटीना छे, भींत उपर फेंकतां जे भीनो छे, ते त्यां भींत उपर लागशे ए प्रमाणे दुष्ट बुद्धिवाळा जेओ कामनी लालसावाळा छे, तेओज संसारवासनामां गृद्ध थशे. पण जेओ विरक्त छे, तेओ सुका गोळा माफक संसारवासनामां गृद्ध नहिं थाय. तेनो भावार्थ कहे छे जेओ अंग प्रत्यंग जोवाथी विमुख छे, तेओ स्त्रीनुं मोढुं जोता नथी, अने जेओ अंग प्रत्यंग जोवामां उत्सुक छे, तेओ काम वासनाथी गृद्ध थयेला भीना गोळा माफक स्त्रीनुं मोढु जुए छे, अने तेज जीवो लालसावाळा होवाथी संसारपंक अथवा कर्मकादव तेमने लागे छे, पण जेओ क्षमा विगेरे गुणोथी युक्त संसारसुखथी विमुख छे. काष्ठ (निस्पृह) मुनिओ छे तेओ सुका गोळा माफक होवाथी क्यांय पण लागता नथी. सम्यक्त्व अध्ययनमां बीजा उद्देशानी निर्युक्ति तथा बीजो उद्देशो समाप्त थयो.

—:- हवे त्रीजो उद्देशो कहे छे -:—

बीजा साथे तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां सम्यक्त्वमां साधुने स्थिर करवा बीजा मतवाळानी भूलो बतावी पण ते सम्यक्त्व साथे रहेलुं ज्ञान छे, तथा ते ज्ञाननी सफळता विरति (वैराग्य) छे, पण आ त्रणे होय छतां पूर्वे करेलां चीकणां कर्मनो बंध निरवद्य तप कर्या विना क्षय न थाय. माटे हवे ते तपनुं वर्णन करे छे. आ संबंधी आवेला त्रीजा उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे.

उवेहि णं बहिया य लोगं, से सव्वलोगंभि जे केइ विण्णू, अणुवीइपास निक्खित्तदंडा, जे केइ सत्ता पलियं चयंति, नरासुयच्चा धम्मविउति अंजू, आरंभजं दुक्खमिणंति णच्चा, एवमाहु संमत्तदंसिणो, ते सव्वे पावाइया दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरंति इय कम्मं परिण्णाय सव्वसो (सू० १२४)

पूर्वे बतावेलो संसारप्रिय लोक समूह छे; तेने धर्मथी विमुख जाणीने तेनी उपेक्षा कर, अथवा तेनुं अनुष्ठान सारुं न मान, च शब्दथी जाणवुं के तेनो उपदेश न सांभळ. पासे न जा, तेमनी सेवा न कर तथा विशेष परिचय न कर, (आ बधुं नवा शिष्यने गुरु समजावे छे तुं न जइश–विगेरे–के जो त्यां जाय तो साधु धर्मनी विरुद्ध तेओ स्नान; इच्छित भोजन, मठ बांधी रहेवुं विगेरे आचरे छे, तेमां दिल लागवाथी ते स्वीकारतां साधु गृहस्थ पण न रह्यो, न पुरो साधु थयो, परंतु गीतार्थ साधु जरुर पडतां परिचय करे तो वखते तेवाने पण प्रसंगोपात ठेकाणे लावे) जे संसारप्रिय वेषधारीनो परिचय न करतां तेनी उपेक्षा करे ते क्या उत्तम गुणो मेळवे, ते कहे छे के:–ते निस्पृही साधु वधा मनुष्यलोकमां जेओ विद्वान (आत्मार्थी) छे, तेमनाथी पण सर्वोत्तम विद्वान थशे.

प्रश्नः—लोकमां केटलाक विद्वानो छे, के तेमां आ श्रेष्ठ थशे ! 'अणुवीइ' विगेरे जे केटलाक निक्षिप्त दंडवाळा छे, अर्थात् जेमणे काया मन वचन वडे प्राणीने दुःख आपनारो दंड त्याग कर्यो छे, ते विद्वानो थाय छेज, एवुं विचारीने हे शिष्य ! तुं तेमने जो

प्रश्नः—जीवोने दुःख आपनारा तेओ क्या छे ! ते कहे छे, के जेमणे धर्मनुं तत्त्व जाण्युं छे तेवा सत्ववाळा साधुओ दुष्ट कर्मने त्यजे छे, अने ते प्रमाणे जेओ दन्डथी दूर रहे छे, तेओ आठे कर्मने हणे छे, तेज विद्वन् छे. तेवुं आंखो चोंची विचारीने

पछी जो, एटले विवेकवाळी बुद्धिथी तेने तुं धारण कर. प्रश्नः—क्या पुरुषो वधां कर्मोने क्षय करे छे! उत्तरः—ते कहे छे,
'नरे' इत्यादि माणसोज संपूर्ण कर्मक्षय करवाने समर्थ छे, पण बीजी गतिवाळा नहि. तेमां पण वधां मनुष्यो मोक्षमां जनारा नथी; पण जेओए अर्चाते, शरीरना संस्कारो (शोभानो) त्याग करवाथी जेमनुं शरीर मरण जेवुं छे अर्थात् जेमणे शरीरनो मोह मुकी तेने पुष्ट करवुं; के शोभाववुं ए सघळुं त्याग कर्युंछे. (मेघकुमारे जेम वीतराग प्रभुना उपदेशथी आंखो सिवाय शरीरना बीजा भागोनी ममता उतारीने दवा विगेरेनो पण त्याग कर्यो हतो; अथवा आखा शरीरनी चामडी जीवतां उतारी; तो पण कोइना उपर कोप न कर्यो; तेवा खंधकमुनि माफक थाय छे.) तेवा साधु सर्व कर्मनो क्षय करे छे. अथवा अर्चा एटले तेज अने ते पण क्रोध छे, अने तेना कहेवाथी बीजा कषायो पण जाणी लेवा. तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे के:—जे पुरुषमांथी कषायरुप—अर्चा सर्वथा नष्ट पामी छे, तेवा अकषायी पुरुषोना आठ कर्म नाश थाय छे. वळी, श्रुतचारित्ररुप—धर्मने जाणनारा ते धर्मविदो छे, ते कुटिलतार-हित (सरळ) छे. प्रश्नः—तेम हशे; पण बीजा साधुए शुं आलंबन लइने तेवुं करवुं?
उत्तरः—'आरंभज' विगेरे. सावद्यक्रिया—अनुष्ठानना आरंभथी थयेलुं आरंभज ते, कृत्य दुःखरुप छे, एवुं वधां प्राणीओने प्रत्यक्ष छे. अर्थात् खेती, नोकरी वेपार विगेरे आरंभमां प्रवर्तेलो मनुष्य, शरीर, तथा मननां दुःखने भोगवे छे, ते वाणीथी पण कहेवाय नहि. (एटलुं बधुं छे,) ते साक्षात् संपूर्ण देखनारा (केवळज्ञानी) ए कहेलुं छे. आ बधु दुःख स्वयं—अनुभवसिद्ध जाणीने तेओ शरीरशोभारहित (मृतार्चा)तथा धर्मविद तथा सरळ बने छे, एवुं केवळज्ञानीओ कहे छे ते बतावे छे. आ प्रमाणे केवळज्ञानीओए कहेलुं छे. प्रश्नः—केवा पुरुषोए ते कहेलुं छे? उत्तरः—समत्व—दर्शीओ, (सम्यक्त्व—दर्शीओ) अथवा समस्त देख-

नाराओए कहेलुं छे. एटले आ उद्देशानी शरुआतथी सघळुं तेमणे कह्युं छे, प्रश्नः—शाथी तेओए ते कहेलुं छे?

उत्तरः—तेओ वधा सर्व विद छे, अने प्रावादिका एटले प्रकर्ष–मर्यादावडे बोलवाना आचारवाळा यथावस्थित पदार्थने बताववा तथा शरीर, मन संबंधी दुःखो बतावनारा अथवा तेनुं मूळ कर्मनुं स्वरुप बतावबामां कुशळ छे, के जे बतावबाथी ते दूर करवा उपाय जाणनारा बनीने ते वधा उत्तम पुरुषोए ज्ञ परिज्ञा वडे जाणीने ते पाप छोडवा प्रत्याख्यान परिज्ञा वडे त्याग करेल छे.

आ प्रमाणे कर्मबंध उदय सत्ताना बताववाथी (बीजा पण) ते प्रमाणे जाणीने सर्वे प्रकारे कुशळ बनीने तेओ प्रत्याख्यान परिज्ञावडे त्याग करे छे. अथवा मूळ उत्तर प्रकृतिना वधा भेदोने जाणीने एटले मूळ प्रकृति आठ, उत्तर प्रकृति १५८ छे तेने जाणीने कर्मबंधनो त्याग करे छे अथवा प्रकृति स्थिति अनुभाव प्रदेश ए चार प्रकारोथी जाणीने त्यागे छे, अथवा बंध सत्ताना कारणो वडे कर्म स्वरुप जाणीने त्यागे छे. हवे ते उदयना प्रकारो बतावे छे. मूळ प्रकृतिना त्रण उदयस्थान छे, (१) आठ प्रकारनो, (२) सात प्रकारनो (३)चार प्रकारनो–एटले आठे प्रकृति साथे वेदे तो आठ प्रकारनो, अने ते काळथी अनादि अनंत अभव्योने आश्रयी छे. भव्य ने आश्रयी अनादि सांत तथा सादि सांत छे. अने मोहनीयनो उपशम अथवा क्षय होय, त्याग सात प्रकारनो उदय छे, अने घातिकर्म चारे क्षय थतां बाकीना चार कर्मनो उदय छे, हवे उत्तर प्रकृतिना उदय स्थान कहे छे. ज्ञानावरणय अने अंतरायनुं पांचे प्रकारनुं एक उदयस्थान छे. दर्शनावरणीयना बे छे दर्शन चतुष्कना उदयथी चार अने कोइ पण निद्रा साथे पांच वेदनीय कर्मनुं सामान्यथी एक उदयस्थान साता के असातानुं छे. कारण के साता असाता विरोधी होवाथी बन्ने साथे उदयमां एक वखते न होइ, मोहनीयकर्मनां नव उदयस्थान छे, ते कहे छे दश, नव, आठ, सात, छ, पांच, चार, बे, एक. ए नवनी विगत–ते

दशमां मिथ्यात्व अनंतानुबंधीथी संज्वलन सुधी ४ क्रोधनी चोकडी–ए प्रमाणे माननी चोकडी पण होय ते प्रमाणे कपटनी चोकडी होय, तथा लोभनी चोकडी होय एटले कोइ पण चोकडीनी चार होय, ते मळी पांच थइ. छट्ठो कोइ पण एक वेद होय, हास्य रति अथवा अरति शोकनुं जोडलुं होय भय तथा जुगुप्सा मळी कुल १० थइ. उपरनी दशामांथी कोइ जीवने भय के जुगुप्सामांथी एक न होय तो नव, अने बन्ने न होय तो आठ, अनंतानुबंधीनी एक दूर थतां ७ रही, मिथ्यात्वना अभावमां छ रही, अप्रत्याख्याननी उदयना अभावमां ५, प्रत्याख्यान आवरणना उदयना अभावे ४ हास्यरतिनुं जोडलुं कोइ पण न होय तो २ अने वेदना अभावमां फक्त संज्वलन एकनो उदय रह्यो. आयुष्यनुं पण एकज उदयस्थान छे. कारणके चारमांनुं कोइ पण एक होय, नाम कर्मना उदयनां १२ स्थान छे. २०, २१, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ९, ८ तेमां संसारमां रहेला सयोगी तेर गुणस्थान सुधीना जीवोने नामकर्मना दश उदयस्थान छे. अने अयोगि गुणस्थानवाळाने छेवटना बेज छे. अहीं बार ध्रुव उदयकर्म प्रकृति प्रथम बतावे छे. तेजस 'कार्मण' शरीर बे, वर्णगंध रस स्पर्श ४ चोकडुं अगुरुलघु, एक स्थिर, एक अस्थिर, एक शुभ, एक अशुभ, एक निर्माण. कुल बार तेमां वीस तीर्थंकर केवळी ज्यारे समुद्घात करे त्यारे कार्मण शरीरयोगीने होय छे. ते कहे छे, मनुष्यगति एक पचेन्द्रियजातिओ त्रस एक बादर एक पर्याप्त एक सुभग एक आदेय एक यशकीर्ति एक त्रणे उपर कहेली ध्रुवउदयनी बार मळी कुल २० थइ. अने एकवीसथी एकत्रीस सुधीनां उदयस्थानो जीव गुणस्थानना भेदथी अनेक भेदवाळां होय छे. ते ग्रंथ वधी जवाना भयथी बधा अहीं कहेता नथी, पण जाणवा माटे एकेक कहे छे. प्रथम एकवीसनो एक कहे छे, गति एक, जाति आनुपूर्वी एक त्रस एक बादर एक पर्याप्त अथवा अपर्याप्त एक कोइ एक सुभग एक अथवा दुर्भग आदेय अथवा एक अनादेय यशकीर्ति अथवा

एक अयश आ नव तथा उपर कहेली ध्रुव बार मळी एकत्रीस थइ हवे चोवीसनो एक भेद कहे छेः—

तिर्यग गति एक एकेन्द्रिय जाति एक औदारिक शरीर एक हुंडसंस्थान एक, उपघात एक प्रत्येक अथवा एक साधारण स्थावर एक सुक्ष्म अथवा एक बादर दुर्भग एक अनादेय एक अपर्याप्त एक यशकीर्ति एक अथवा अयश आ बार तथा उपर बतावेली ध्रुवनी बार मळी चोवीस थइ. ते चोवीचमांथी अपर्याप्त दूर करी पर्याप्तक तथा पराघात १ मेळवतां २५ थइ. अने छवीश तो केवळीने उपर जे वीस कही छे तेमां उदारिक शरीर एक आंगोपांग एक संस्थान एक प्रथम संहनन एक उपघात एक प्रत्येक एक मळी मिश्रकाययोगमां छवीश होय छे. ते छवीशमां तीर्थंकरनाय मेळवतां तीर्थंकरने मिश्रकाय योगमां सत्यावीस होय छे. तेमां प्रशस्त विहायोगति मेळवतां अट्ठावीस अने ते अठ्ठावीसमांथी तीर्थंकर नाम दूर करी उच्छ्वास एक सुस्वर एक पराघात एक मेळवतां (२७+३) त्रीस थइ तेमांथी सुस्वर ओछी करतां २९ तथा ते ३० मां तीर्थंकर नाम मेळवतां ३१ थइ. पण नवनो उदय तो मनुष्य गति एक पचेन्द्रिय जाति एक त्रस एक बादर एक पर्याप्त एक सुभग एक आदेय एक यशकीर्ति एक तीर्थंकर एक ए नव तीर्थंकरने अयोगी गुणस्थानमां होय छे. पण तीर्थंकर नाम सिवाय सामान्य केवळी अयगीने तो आठ होय छे गोत्रनुं तो सामान्यथी एकज उदय स्थान छे. उंच अथवा नीच कोइ पण एक होय छे. कारण के बन्ने एक बीजाथी विरुद्ध छे. उपर बताव्या प्रमाणे कर्मप्रकृतिना उदयवडे अनेक भेदो जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे ते तोडवा प्रयत्न करे छे. जो एम छे तो (नवा साधुए) शुं करवुं ते कहे छे.

इह आणाकंखो पंडिए अणिहे, एगमप्पाणं संपेहाए धुणे सरीरं, कसेहि अप्पाणं जरेहि अप्पाणं—जहा

जुन्नाइं कट्ठाइं हव्ववाहो पमत्थइ । एवं अत्तसमाहिए अणिहे, विगिंच कोहं अविकंपमाणे (सू० १३५)

आ प्रवचनमां आज्ञा पाळवानी आकांक्षा राखनारो आज्ञाकांक्षी साधु जे सर्वज्ञना उपदेश प्रमाणे वर्तनारो छे, ते पंडित (तत्वज्ञानी) छे. अने ते अस्निह थाय छे. आठ प्रकारना कर्म वडे लेपाय ते स्निह छे. ते जेने नथी ते अस्निह छे, अथवा जे स्नेह करे ते स्नेहवाळो रागी छे. तेवो जे रागी न थाय ते अस्निह छे. तेथी एम जाणवुं के ते रागद्वेष रहित छे. अथवा निश्चयथी जे भावरि-पुरुष इन्द्रियोना विषय तथा कषायथी बंधातां कर्म छे. तेना वडे हणाय ते निहत अने तेम न हणायतो अनिहत छे.

उपर बतावेल आज्ञाकांक्षी पंडित तथा भावरिपुथी अनिहत गुणवाळो आ प्रवचन (जैन मार्ग) मां छे. बीजे नथी अने जे साधु अनिहत छे ते परमर्थथी कर्मनो सारी रीते ज्ञाता छे. अने ते शुं करे ते कहे छे. 'एगमप्पाणं' इत्यादि. ते अनिहत अथवा अस्निह साधु पोताना एकला आत्माने धन धान्य सोनुं पुत्र स्त्री तथा पोताना शरीर विगेरे (पुद्गल उपाधि) थी जुदुं जाणीने शरीर विगेरे वधानो मोह छोडे (संभावनामां लिङ् प्रत्यय छे.) तेथी एम सुचव्युं छे के आत्माने बधी उपाधीथी जुदो देखे तोज ते शरीरथी जुदो पाडी शके अने तेम मोह उतारवा माटे संसार स्वभावनी भावना छे तथा एकत्व भावनाने आवी रीते भाववी.

संसार एवायमनर्थसारः, कः कस्य कोऽत्र स्वजनः परो वा ? सर्वे भ्रमन्तः स्वजनाः परे
च, भवन्ति भूत्वा न भवन्ति भूयः ॥ १ ॥

आ संसार अनर्थनो सारज छे, अने अहीं कोण केनो स्वजन अथवा परजन छे ? बधाए संसारमां भमता स्वजन अने परजन

छे ते पर थइ पाछा स्व थाय. अने केटलाक फरी देखाव देता नथी. (अर्थात् समुद्रमां तणातां अपार समुद्रमां ज्यां भेगा थवानो तथा स्थिर रहेवानो तथा मळवानो निश्चय नथी, तथा थोडो काळ पण एकता रहेवानो निश्चय नथी, त्यां कोण पोतानुं के पारकुं छे?)

विचिन्त्यमेतद्भवताऽहमेको, न मेऽस्ति कश्चित् पुरतो न पश्चात् ।
स्वकर्म्मभिर्भ्रान्तिरियं ममैव, अहं पुरस्तादहमेव पश्चात् ॥ २ ॥

उपर प्रमाणे विचारी हुं एकलो छुं, अने मारे पहेलां के पछवाडे कोइ नथी, परंतु मोहनीयकर्मथी आ एक मारा तारानी भ्रांति छे. खरीरीते तो पहेलां पण हुं अने पछी पण हुं पोते पोतानो स्वजन छुं एवी भावना तमारे भाववी.

सदैकोऽहं न मे कश्चित्, नाहमन्यस्य कस्यचित्। न तं पश्यामि यस्याहं नासौ भावीति यो मम ॥ ३ ॥

हुं सदा एकलो छुं. मारो कोइ पण नथी, तेम हुं बीजा काइनो पण नथी, हुं जेनो थाउं, तेवो मने कोइ देखातुं नथी! (कर्मसबंध छुटतां सौ रस्ते पडे छे.) तेम मारो भविष्यमां थाय तेवो पण कोइ नथी.

एकः प्रकुरुते कर्म्म, भुनक्त्येकश्च तत्फलम् । जायते म्रियते चैक, एको याति भवान्तरम् ॥ ४ ॥

पोते एकलोज कर्म बांधे छे, तेनां फळ पण एकलो भोगवे छे, अने जन्मे छे. अने मरे छे पण एकलोज तथा भवांतरमां पण एकलोज जाय छे विगेरे चिंतवे वळी ते भव्यात्मा साधु शुं करे ? ते कहे छे:—"कसे हि अप्पाणं जरेहि अप्पण" विगेरे. पर (जुदो) आत्मा जे 'शरीर' छे. तेने तपरुप कष्ट वडे अथवा चारित्र विगेरेथी कृश (दुर्वल) बनाव, अथवा कृष एटले कर्म तोडवामां हुं समर्थ

छुं? एम विचारी यथाशक्ति तेमां यत्न कर, तथा जर एटल शरीरने जीर्ण बनावी दे, एटले तपवडे शरीर एवुं कर के बुढ्ढापाथी
जीर्ण जेवुं लागे, अर्थात् विगइनो त्याग करीने आत्मा (शरीर) ने दुर्बळ बनावी देजे. प्रश्नः—शा माटे?

१० उत्तरः—जेम सार रहित (सुकां) लाकडांने हव्यवाह (अग्नि) शीघ्र बाळी मुके छे, ए दृष्टांतवडे उपदेश आपे छे के तुं कर्म-
ने बाळी मुक. 'एवं अत्त समाहिए'—उपर प्रमाणे आत्मा समाहित एटले ज्ञानदर्शन चारित्रवडे आत्मसमाहित (समाधिवाळो)
७॥ छे ते आत्मसमाहित छे, अर्थात् शुभ व्यापारवाळो छे. (अथवा व्याकरणना नियमथी विशेषणने प्रथम लेवाथी आत्मा समाहितने
बदले) समाहित आत्मारूप थाय छे, तेवो तुं बन. एटले जे अस्निह (स्नेहरहित वैरागी) होय अने ते तप करे ते तपरूप अग्नि
वडे कर्मरूप काष्टने बाळी मुके छे, उपर कहेला सूत्रार्थने दृष्टांत तथा बोधने गाथावडे निर्युक्तिकार कहे छे.

जह खलु झुसिरं कट्ठ, सुचिरं सुक्कं लहुं डहइ अग्गी, तह खलु खवंति कम्मं, सम्मच्चरणे ठिया साहू ॥नि.२३४

जेम सुका पोला लाकडाने अग्नि जलदी बाळे तेम उत्तम चारित्र पाळनारो साधु कर्मलाकडांने शीघ्र बाळे छे आ प्रमाणे प्रथम स्ने-
हरहित बनीने द्वेषनी निवृत्ति करवा कहे छे 'विगिंच कोहं' विगेरे कारणे अथवा आ कारणे अति क्रूर अध्यवसायवाळा क्रोधने
छोड, अने क्रोधथी शरीर कंपे छे माटे कहे छे के तुं निष्कंप बनी जा शुं भावीने? ते कहे छेः—

**इमं निरुद्धाउयं संपेहाए, दुक्खं च जाण अदु आगमेस्सं, पुढो फासाइं च फासे, लोयं च पासवि-
फंदमाणं, जे निव्वुडा पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते वियाहिय, तम्हा अतिविज्जो नो पडिसंज-**

चिन्हरुप विष्टा अने पिशाबने मेळवी विलेपन कर, तो शांति थशे. अने ते प्रमाणे पुत्रे न छुटके कर्युं त्यारे तेने शांति थइ, अने पिता मरीने सातमी नरकमां गयो. आ दृष्टांतथी पापी पोते दुःख भोगवे छे तेम तेनी हायपीट जोइ बीजां सगां पण दुःख भोगवे छे ते बताव्युं) गुरु कहे छेः—हे शिष्य! जेओ क्रोध विगेरे नथी करता; ते केवां होय छे? ते सांभळ. 'जे निव्वुडा' विगेरे, पण जेओ तीर्थंकरना बोधथी निर्मळ हृदयवाळा छे, तेओ विषय अने कषाय अग्निना बुझावाथी निवृत्त (शांत) थयेलां पापकर्ममां निदान (वासना) रहित बनेला छे. तेओ परमसुखना स्थानने पामेला छे. अर्थात् औपशमिक सुखने भजनारा होवाथी प्रसिद्ध छे.

प्रश्नः—तेथी शुं समजवुं? उत्तरः—तम्हा विगेरे. ते रागद्वेषथी घेरायेलो दुःखी थाय छे, तेथी अति विद्वान् के जेणे, शास्त्रोनो परमार्थ जाण्यो छे, तेवाए क्रोधाग्निवडे आत्माने बाळवो नहि. अर्थात् क्रोधादि आवतां तेने शांत (दूर) कर, ए प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे.



:-: चोथो उद्देशो :-:

त्रीजो उद्देशो कह्यो, तेनो आ कहेवाता चोथा उद्देशा साथे आ प्रमाणे संबंध छे; गया उद्देशामां निरवद्य तप बताव्यो, अने ते संपूर्ण रीते सारा संयममां रहेला मुनिने होय छे, तेथी संयम बताववा चोथो उद्देशो कहे छे, तेना आवा संबंधथी आवेला चोथा उद्देशानुं आ प्रथमसूत्र छे.

आवीलए पवीलए निप्पीलए जहित्ता पुव्वसंजोगं हिच्चा उवसमं, तम्हा अविमणे वीरे, सारए

न्जिज्जासि त्तिबेमि ॥ (सू० १३६) चतुर्थे तृतीयः ॥४-३॥

आ मनुष्यपणुं परिगलित आयुवाळुं विचारीने क्रोध विगेरेने छोडी देजे वळी दुक्खं विगेरे-तथा क्रोध विगेरे कषायोथी बळता मनुष्यने मन संबंधी जे दुःख उत्पन्न थाय छे, तेने जाण, तथा ते क्रोधथी जे नवां कर्म बंधाय तेनुं भविष्यमां पण उत्पन्न थवानुं दुःख विचारीने ते क्रोधादिने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे जाण, अर्थात् त्याग कर, आगामी (भविष्य) ना दुःखनुं स्वरुप कहे छे. पुढो विगेरे-जुदी जुदी सात नरकी विगेरेमां मळता शीत उष्ण (ठंड ताप) नी वेदना तथा कुंभीपाक विगेरेनां पीडास्थानोमां थतां दुःखोने भोगववां पडशे एथी एम सूचव्युं के क्रोधथी बळेलाने तेज क्षणे दुःख छे, एम नही, पण भविष्यमां पण जुदां जुदां स्थानोमां दुःख भोगववां पडशे. तेने घणो दुःखीओ जोइने बीजा लोक पण दुखीआ थाय. ते बतावे छे लोयंच विगेरे, केवळ क्रोधाग्निथी आत्माज दुःख अनुभवतो नथी, पण शरीर अने मनथी उत्पन्न थयेला दुःखोवाळा लोको परवश बनीने तेना दुःखने दूर करवा आम तेम भटके छे, तेने जो, विवेकचक्षुथी विचारी जो, (आ सूत्रवडे जेओ मोहांध छे. तेवाओ सगाने दुःखी देखीने अथवा करुणाथी भींजायला हृदयवाळा छे तेओ दुःखीने शांति पमाडवा अनेक उपयो करवा आम तेम भटकतां अनेक दुःखो भोगवे छे. जेमके "एक कषायने रोज ५०० पाडा मारवानी बुरी आदत हती ते तेणे न छोडी. पुत्र पोते धर्मी होवाथी तेमां सामील न थयो. अंतकाळे बापने तेना पापथी दाहज्वरनो भयंकर व्याधि थयो अनेक उत्तम शीतळ औषधि बावना चंदन विगेरेनो लेप करवा छतां शांति न थइ, त्यारे पुत्रे गभाराइ पोताना परम धर्मी मित्रने पूछ्युं. तेणे विचारीने कह्युं के तेना नरकना अशुभ कर्मना

छुं ? एम विचारी यथाशक्ति तेमां यत्न कर, तथा जर एटल शरीरने जीर्ण बनावी दे, एटले तपवडे शरीर एवुं कर के बुढापाथी जीर्ण जेवुं लागे, अर्थात् विगइनो त्याग करीने आत्मा (शरीर) ने दुर्बळ बनावी देजे. प्रश्नः–शा माटे ?

उत्तरः—जेम सार रहित (सुकां) लाकडांने हव्यवाह (अग्नि) शीघ्र बाळी मुके छे, ए दृष्टांतवडे उपदेश आपे छे के तुं कर्मने बाळी मुक. 'एवं अत्त समाहिए'–उपर प्रमाणे आत्मा समाहित एटले ज्ञानदर्शन चारित्रवडे आत्मसमाहित (समाधिवाळो) छे ते आत्मसमाहित छे, अर्थात् शुभ व्यापारवाळो छे. (अथवा व्याकरणना नियमथी विशेषणने प्रथम लेवाथी आत्मा समाहितने बदले) समाहित आत्मारूप थाय छे, तेवो तुं बन. एटले जे अस्निह (स्नेहरहित वैरागी) होय अने ते तप करे ते तपरूप अग्नि वडे कर्मरूप काष्टने बाळी मुके छे, उपर कहेला सूत्रार्थने दृष्टांत तथा बोधने गाथावडे निर्युक्तिकार कहे छे.

जह खलु झुसिरं कट्ठ, सुचिरं सुक्कं लहुं डहइ अग्गी, तह गलु खवंति कम्मं, सम्मच्चरणे ठिया साहू ॥नि.२३४

जेम सुका पोला लाकडाने अग्नि जलदी बाळे तेम उत्तम चारित्र पाळनारो साधु कर्मलाकडांने शीघ्र बाळे छे आ प्रमाणे प्रथम स्नेहरहित बनीने द्वेषनी निवृत्ति करवा कहे छे 'विगिंच कोहं' विगेरे कारणे अथवा आ कारणे अति क्रूर अध्यवसायवाळा क्रोधने छोड, अने क्रोधथी शरीर कंपे छे माटे कहे छे के तुं निष्कंप बनी जा शुं भावीने? ते कहे छेः—

इमं निरुद्धाउयं संपेहाए, दुक्खं च जाण अदु आगमेस्सं, पुढो फासाइं च फासे, लोयं च पासविफंदमाणं, जे निव्वुडा पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते वियाहिय, तम्हा अतिविज्जो नो पडिसंज-

छोडीने तप करे, वळी 'हिच्चा विगेरे, (हि धातुनो अर्थ गतिवाचक छे तेथी) पामीने (मेळवीने) शुं? ते कहे छे. इन्द्रिय तथा मनने जीतवारूप उपशम अथवा संयम मेळवीने तप करे तेनो सार आ छे, के असंयम छोडी संयम धारण करीने तप तथा चारित्रनां अनुष्ठानवडे कर्मने वधारे वधारे यथाशक्ति पीडे जेथी कर्मने पीडवा माटे उपशम मेळववो, अने ते मेळव्या पछी (अविमनस्कता) निश्चल शांति मेळववी ते कहे छे. 'तम्हा' इत्यादि, जेम कर्मक्षय माटे असंयमनो त्याग, तेथी अवश्ये संयम मळे, तेमां चित्तनी अशांति न होय, तेथी अवीमना एटले भोगकषायमां अथवा अरतिमां जेनुं मन गयुं ते विमन, तेवो जे न होय ते अविमना, अर्थात् रागद्वेषनी उपाधिथी जेनुं मन चंचळ नथी तेवा शांत स्थिर मनवाळो साधु होय. प्रश्नः–ते क्यो छे?

उत्तरः–वीर! जे कर्म विदारण करवामां समर्थ छे, अने 'सारए' इत्यादि. सुआरत एटले सारीरीते जीवन पर्यंतनी मर्यादा ए संयम अनुष्टानमां रक्त रहे ते स्वारत कहेवाय, पांच समितिए समित तथा हितयुक्त ते सहित अथवा ज्ञानादियुक्त बनीने सदा (हमेश) एकवार गुरुए अर्पण करेलो संयम भारवाळो ते शिष्य संयमभारनी यतना करे. प्रः–वारंवार शा माटे संयम अनुष्ठाननो उपदेश करो छो? उः–ते दुरानुचर छे, दुःखे करीने अनुचराय (पळाय) तेवो छे. प्रः–शुं? उ.–मार्ग ते संयम अनुष्ठान विधि—

प्रश्नः—केवाओने? उः—अप्रमत्त साधुओने, प्रः—केवाओने? अनिवर्त ते मोक्ष छे. तेमां जेमने जवानी इच्छा छे तेवाओने आ संयम पाळवो कठण छे ते केवीरीते पाळ्यो कहेवाय? ते बतावे छे–विगिंचव–विगेरे मांस शोणित जे अहंकार तथा काम वासना वधारनारां छे. तेने विकृष्ट तप अनुष्ठान वडे विवेचकर (दूरकर) आत्माथी जुदां जाणी तेने शोषावीदे, आ वीर पुरुषोना मार्गनुं अनुचरण छे, एम जाणवुं. जे आवी रीते तपकरी शरीरने सुकवे, तेने शुं गुण थाय छे, ते कहे छे, 'एष' विगेरे मांसशोणी-

तने सुकवे, ते पुरि (नगर) मां शयन करवाथी पुरुष छे, अने द्रव ते संयम छे ते संयम जेने होय ते द्रविक पुरुष छे, अथवा द्रव्यभूत छे कारण के तेज मोक्षमां जाय छे, कर्मशत्रु जीतवामां समर्थ होवाथी ते वीर पण छे, मांसशोणीत शोषवानुं बताव्याथी बीजा पदार्थो भेद चरबी विगेरे शोषवानुं पण बताव्युं जाणवुं. कारण के मांस सुकातां ते पण साथे सुकाइ जाय छे; वळी आयाणीज्जे विगेर एटले वीर पुरुषोना मार्गे चालनारो जे मांस लोही सुकवे, ते मोक्षाभिलाषीओने आदानीय ग्राह्य. मानवाजोग वचन वालो विख्यात थाय छे. प्रः—एवो कोण छे ? उः—जे ब्रह्मचर्य ते संयममां रही कामवासना जीतवामां प्रयत्न करे, अथवा समुच्छ्रय ते शरीर अथवा कर्मोपचयने तपचारित्रवडे धुणावे. (कृशकरे-दूरकरे) ते आदानीय तथा व्याख्यात (स्तुत्य पूज्य) थाय छे, आ प्रमाणे अप्रमत्त साधुनुं स्वरूप बताव्युं. हवे तेवुं संयम न पाळनारा जे प्रमत (प्रमादी साधुओ) छे तेनुं वर्णन करे छेः—

नित्तेहिं पलिच्छिन्नेहिं आयाणसोयगढिए बाले, अव्वोच्छिन्नबंधणे अणभिक्कंतसंजोए तमंसि अवियाणओ आणाए लंभो नत्थि त्तिबेमि (सू० १३८)

जे पदार्थ तरफ लइ जाय-अर्थात् पदार्थनो निर्णय करवा जे दोरे, ते नेत्र विगेरे पांच इन्द्रियो छे, तेना वडे पोताना विषयने ग्रहण करवा वडे जे पाप थाय, ते अटकावीने साधु थतां जगत्मां सारा पुरुषोथी पूजनीक थइ ब्रह्मचर्यमां रहेवा छतां पण फरीथी तेने मोहनो उदय थवाथी सावद्य कृत्यमां संसारभ्रमणना बीजरुप कर्मना इन्द्रियोना विषयोरुप स्रोत (प्रवाहो) अथवा मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योग छे तेमां गृद्ध थाय ते आदान स्रोत गृद्ध बने. प्रः—कोण ? उः—बाळ (अज्ञ) छे, ते राग द्वेषरुप

महा मोहथी मलिन अंतःकरणवाळो गृद्ध बने. प्रः—पछी ते केवो थाय? उः—अवोच्छिन्न विगेरे—एक सरखां सेंकडो जन्ममरण आपनार एवुं आठ प्रकारना कर्मरुप बंधन तेने मळे छे; वळी 'अणभि.' जेणे संसारना संयोगरुप धन धान्य सोनुं, पुत्र स्त्री, विगेरेनो मोह अथवा असंयमनो संयोग छोड्यो नथी; ते 'अनभिक्रांत संयोगी' छे, तेवा कुसाधुने इन्द्रियोने अनुकूळ विषयलालसाना अंधारामां अथवा मोहरुप अंधकारमां प्रवर्तेलानुं पोतानुं खरुं हित अथवा मोक्षउपायो तेणे न जाणवाथी तीर्थंकरनी आज्ञा (उपदेशनो) लाभ तेने थवानो नथी एवुं हुं कहु छुं अथवा तेने आज्ञा एटले सम्यक्त्वनो लाभ थवानो नथी. (भविष्यमां) पण धर्म मळवो दुर्लभ छे. कारण के, सूत्रमां नास्तिक शब्द छे ते अव्यय त्रणे काळ आश्रयी छे.

जस्स नत्थि पुरा पच्छा मज्झे तस्स कुओ सिया? से हु पन्नाणमंते बुद्धे आरंभोवरए, संममेयंति पासह, जेण बंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं पलिछिंदिय बाहिरगं च सोयं, निक्कंमदंसी इह मच्चिएहिं, कम्माणं सफलं दट्ठूण तओ निज्जाइ वेयवी (सू० १३९)

जे कोइपण बाळमूर्ख साधु कर्मादान स्रोतमां गृद्ध थयेल छे तथा एकसरखां जन्ममरण बांध्या छे. तथा संसारमोह छोड्यो नथी; अज्ञानअंधकारमां भूल्यो छे, तेने पूर्वजन्ममां धर्मप्राप्ति नहोती; भविष्यमां पण थवानी नथी; तेने मध्यजन्ममां क्यांथी थवानी छे? अर्थात् जेणे सम्यक्त्व पूर्वे प्राप्त करेल हशे; तेनेज वर्तमानमां मळे छे. कारण के जेणे सम्यक्त्व पूर्वे मेळवी तेनो स्वाद लीधो तेने पाछो मिथ्यात्वनो उदय थतां अपार्ध पुद्गल परावर्तनना काळे पण थशे; पण सम्यक्त्व वमेलाने फरी सम्यक्त्वनो असं-

भवज थाय तेवुं नथी. (अर्थात् अभविनेज त्रणे काळमां नथी; अथवा अनिरुद्ध इन्द्रियविषयवाळो होय; तोपण आदान स्रोत गृद्ध जाणवो एम कहेलुं जाणवुं. (पण सम्यक्त्व मेळव्या पछी पाछुं न मळे तेवुं नहि.) पण जे साधु तेवो प्रमादी न थइ संसारसुखनुं स्मरण न करे; अने भविष्यमां मळनारी देवांगनाना भोगने न इच्छे, तेने वर्तमानकाळमां पण भविष्यसुखनो अभिलाष क्यांथी होय? ते बतावे छे. जे साधुए भोगनां भविष्यनां कडवां फळ जाणेला छे, तेने पूर्वे भोगवेला भोग याद आवता नथी; भविष्यना भोगनी अभिलाषा पण नथी; तेवा उत्तम साधुने व्याधिने छंछेडवा समान भोगने रोग जाणीने तेने केवीरीते खोटी इच्छा पण थाय? अर्थात् मोहनीयकर्म शांत थवाथी तेने भोगेच्छा होती नथी. जे साधुने त्रिकाळ-विषयनी भोगेच्छा दूर थइ ते केवो होय? ते कहे छेः-सेहु-विगेरे आवो निरीह साधु प्रकृष्टज्ञान जे जीवाजीव संबंधी तत्व बतावनारुं छे तेने मेळवे; तेथी प्रकृष्टज्ञानवाळो छे, तेज बुद्ध एटले, तत्व जाणनारो छे, तेथीज ते सावद्यअनुष्ठानना आरंभथी दुर रहे छे, तेथी आरंभ उपरत छे, ते गुण उत्तम छे ते बतावे छे, सम्म विगेरे एटले साधुओने ते शोभावनारुं भूषण छे अथवा सम्यक्त्वनुं कार्य करनार होवाथी ते सम्यक्त्व छे. माटे गुरु कहे छेः—हे शिष्य! तुं तेने जो. तुं पण तेवुं मेळव. शामाटे ते शोभन (भूषणरूप) छे? ते कहे छेः-जेण विगेरे जे कारण-थी सावद्य-आरंभमां प्रवर्त्तेलो छे. ते सांकळ विगेरेथी बंधनुं तथा चाबखा विगेरेथी मार खाय छे तथा प्राणसंशयप्ररूप-घोर दुःख खमे छे. तथा शरीर मन संबंधी परिताप दारुण दुःख बीजाने दइने पोतेपामे छे, माटे ते आरंभो छोडवा ते सारुं छे, शुं करीने आरंभ छोडे, ते कहे छे. 'पलिच्छिन्दि' विगेरे स्रोत (पापनुं उपादान) रूप बहारथी धन धान्य विगेरे अथवा हिंसादि आस्रवद्वार [अढार पापस्थान] छे, तथा च शब्दथी अभ्यंतर रागद्वेषरूप अथवा विषय तृष्णा स्रोतने त्यागीने निर्मळ था; वळी 'णिकम्म' कर्म

जेनां दूर थयां ते निष्कर्मदर्शी छे, 'इह'–आ संसारमां मर्त्य [माणस] लोकमां जे निष्कर्मदर्शी छे! तेज बाह्य अभ्यंतर परिग्रह छेदनाराओ छे, शुं आधार लइने परिग्रहने छेदे अथवा निष्कर्मदर्शी बने ते कहे छे, 'कम्माणं' विगेरे मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योगोवडे जे कर्म बन्धाय छे. ते ज्ञानावरणीय विगेरेनुं सफळपणुं देखीने एटले ज्ञानावरणीयनुं फळ ज्ञान ढंकावुं छे, दर्शन-आवरणीयनुं देखवामां विघ्नरुप छे, वेदनीयनुं फळ रोग विगेरे दुःखो सुखो भोगववाना छे.

प्रश्नः—बधां कर्मना विपाकना उदयने इच्छता नथी ? प्रदेश उदयने पण सद्भाव होय छे. अने तप करवाथी क्षय पण थाय छे त्यारे कर्मनुं सफळपणुं केवी रीते घटे. आचार्यनो उत्तरः—ते दोष नथी, अमने बधा प्रकारनुं इच्छवापणुं अहीं नथी, पण द्रव्य पूर्णपणुं मानीए छीए अने ते छेज, एटले दरेकने आठज कर्मनो उदय छे, एम नहि पण बधा जीव आश्रयी सामान्यथी जोतां आठे कर्मनो सद्भाव छे; तेथी ते कर्मनुं अथवा कर्मनुं मूळ आश्रव छे. तेनाथी निश्चयथी नीकळी जाय, अर्थात्–आश्रव आवे तेवुं कृत्य न करे. प्र'—कोण न करे ? उः–वेदविद् जेना वडे सघळुं चर–अचरवेदाय, ते वेद जैनागम छे, तेने जाणे ते वेदविद् जाणवो अर्थात् सर्वज्ञना उपदेशमां वर्तनारो होय ते आ नवां कर्म न बांधे. आ अमारा एकलानो अभिप्राय नथी; पण सर्वे तीर्थंकरोना आ आशय छे ते बतावे छे.

जे खलु भो ! वीरा ते समिया सहिया सयाजया संघऽदंसिणो आओवरया अहातहं लोयं उवेहमणा पईणं पडिणं दाहिणं उईणं इय सच्चंसि परि (चिए) चिट्ठिंसु, साहिस्सा-

मो, नाणं वीराणं समियाण सहियाणं सयाजयाणं संघड दंसीणं आओ व रयाणं अहा तहं लोयं समु वेहमाणाणं किमत्थि उवाहो ?, पासगस्स न विज्जइ नत्थि त्तिबेमि (सू० १४०)

। चतुर्थे चतुर्थः ४–४। इति सम्यक्त्वाध्ययनम् ॥ ४ ॥

सम्यग्वाद अने निरवद्य तप तथा चारित्र कह्युं. हवे, तेनुं फळ कहे छेः–'जेखलु' विगेरे (खलु शब्द वाक्यनी शोभा माटे छे.) जे पूर्वे अनंता तीर्थकरो थया तथा थवाना छे, अने वर्तमानमां केटलाक छे, तेओ कर्मशत्रुने विदारवामां समर्थ होवाथी वीरो छे, समितिथी युक्त तथा ज्ञानादिथी सहित छे. सारा संयमथी यत्नावाळा छे. 'संघड दंसिणोत्ति शुभ अशुभने निरंतर संपूर्णदर्शी (देखनार) छे. पापकर्मरुप–आत्मार्थी उपरत छे. तेओ जेवीरीते लोक चौदराज प्रमाण छे, तेने अथवा, कर्मलोक जे बधी दिशा पूर्व विगेरेमां रहेल छे, तेनी जीव अजीवनी व्यवस्थाने देखनारा छे. तेओ सत्य संयमतपमां स्थिर रहेला छे. अर्थात् तेमने त्रिकाळ विषय संबंधी संपूर्ण देखाय छे. पूर्वे अनंता थया; ते संयममां रह्या. पंदर कर्मभूमिमां संख्याता तीर्थंकर–सयममां रहेला छे, तथा भविष्यमां अनंता थवाना छे. तेओ संयममां स्थित रहेशे; तेओनो त्रणे काळनोज अभिप्राय (बोध) छे, ते हुं तमने कहीश; एवुं सुधर्मास्वामी शिष्योने कहे छेः–तमे सांभळो. पूर्वे कहेलां उत्तम विशेषणोवाळानुं ज्ञान (अभिप्राय) आ छे के, जे कर्मजनित उपाधि छे, ते नारक विगेरे चार योनिमां जन्म लेवो; सुखीदुःखी, सुभग, दुर्भग, पर्याप्त–अपर्याप्त विगेरे नवां नवां मळे छे के नहि ? ते संबंधी परमतवाळाने शंका छे के ? फरी मळी शके ? तेथी, ते तीर्थकरो साक्षात् जोइने कहे छे केः–तेवा साक्षात् देखनाराने ते ते

वस्तु उपर मोह न रहेवाथी ममता छुटीजवाथी तेवा पश्यक (केवळ ज्ञानी) ने कर्मजनित उपाधि भविष्यमां मळवानी नथी; ते प्रमाणे हुं पण कहुं छुं पण आ हु मारी बुद्धिथी कहेतो नथी, सूत्रानुगम कह्यो. चोथो उद्देशो समाप्त थयो; नय विचार तेमांज थोडो बतावी दीधो छे. चोथुं सम्यक्त्व नामनुं अध्ययन समाप्त थयुं. (टीकाना स्लोक ६२० थया.)

'लोकसार' नामनु पांचमु अध्ययन.

चोथुं अध्ययन कह्या पछी हवे पांचमुं अध्ययन कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया अध्ययनमां सम्यक्त्वनुं स्वरुप बताव्युं; अने तेनी अंदर ज्ञान रहेलुं छे, ए सम्यक्त्व तथा ज्ञाननुं फळ चारित्र छे, अने चारित्रज मोक्षनुं अंग प्रधानपणे छे, तेथी ते लोकमां साररुप छे. ते चारित्रनुं प्रतिपादन करवा माटे आ अध्ययन छे. आवा संबंधथी आवेला आ लोकसार अध्ययनना उपक्रम विगेरे चार अनुयोगद्वार थाय छे ते प्रथम उपक्रम द्वारमां अर्थाधिकार बे प्रकारे छे. अध्ययननो विषय पहेला अध्ययनमां कह्यो छे, अने उद्देशानो निर्युक्तिकार गाथाओ वडे कहे छे.

हिंसगविसयारंभग, एग चरुत्ति न मुणी पढमगंमि विरओ मुणित्ति बिइए, अविरयवाइ परिग्गहिओ ॥२३६॥
तइए एसो अपरिग्गहो, य निविन्नकामभोगोय ।अवत्तस्सेगचरस्स, पच्चवाया चउत्थंमि ॥ २३७ ॥
हरओवमो य तव संयमगुत्ती निस्संगया य पंचमए। उम्मग्गवज्जणा छट्ठगंमि, तह रागदोसेय ॥२३८॥

हिंसक ते हिंसा करनारो, तथा विषयो माटे आरंभ करतो ते विषयारंभक, ते बन्ने साथे लेतां हिंसक तथा विषयारंभक छे एटले जे साधु प्राणीओनी हिंसा करे, अने विषयसुख लेवा सावद्य आरंभ (संसारी जेवो) करे, ते मुनी न कहेवाय, (व्याकरणना नियम प्रमाणे समास तथा विग्रह टीकामां बताव्या छे. के जेथी शब्दनो अर्थ तथा उत्पत्ति समजाय) तथा विषयसुखना माटे एक-लोज विचारे, ते एक चर छे. ते पण मुनी न कहेवाय आ त्रण अधिकार हिंसक, विषयारंभक अने एकचर छे ते पहेला उद्देशामां छे. बीजा उद्देशामां हिंसादि पापस्थानथी जे दूर रहे, ते विरत मुनि थाय, ते अर्थाधिकार छे, वदन शील ते वादी, पण जे अविरत वादी होय, ते परिग्रह राखनारो बने छे, ते आ बीजा उद्देशामां बतावशे. त्रीजा उद्देशामां पूर्वे कहेलो अविरत ज्यारे परिग्रहवालो मुनी बने छे, अर्थात् कामभोगनी वासनाथी दूर रहेलो ते मुनी छे, ते आमां बतावेल छे. चोथा उद्देशामां अव्यक्त (अगीतार्थ) ने सूत्रअर्थ भण्या विना तथा सूत्रार्थ परिणम्या विना एकलो फरवाथी दुःखो भोगववां पडे छे ते बताव्युं छे. पांचमामां ह्रदनी उपमाए मुनी ए थवुं, एटले जल भरेलो ह्रद (होज) पाणी न झरी जाय, तो प्रशंसवायोग्य छे तेम ज्ञनादर्शन चारित्रथी सदा साधु भरेलो होय, अने विसरी न जाय, तथा ते तप संयम गुप्ति तथा निःसंगता राखे, तो ते शोभे छे, एम बताव्युं छे. छट्ठा उद्देशामां उन्मार्ग (कुमार्ग) नुं वर्ज्जन छे एटल कुदृष्टि तथा रागद्वेष छोडवानुं बताव्युं छे, आ प्रमाणे त्रण गाथानो अर्थ थयो, नामनिष्पन्ननिक्षेपामां बे प्रकारे नाम छे. ते आदान पद वडे नाम छे, तथा गौणपणाथी छे ते बन्नेने निर्युक्तिकार कहे छे.

आयाणपएणावंति गोण्णनामेण लोगसारुत्ति। लोगस्स य सारस्स य चउक्कओ होइ निक्खेवो ॥ २३९ ॥

(प्रथम जे ग्रहण कराय, ते आदान छे. तेनी साथे पद शब्द जोडतां आदान पद थयुं अने ते करणभूत वडे 'आवन्ती' ते नाम छे. अध्ययननी अंदर शरुआतमां (आवन्ती बोलाय छे) ते आदान पद नाम थयुं तथा गुण वडे जे नाम बने, ते गौण अने तेथी जे नाम पडे ते गौण नाम छे ते हेतुथी लोकसार नाम छे. चौद रज्जु प्रमाण लोक छे तेनो सार (परमार्थ) लोकसार छे. बे पदवाळुं आ नाम छे तेथी लोकना तथा सारना दरेकना चार प्रकारे निक्षेपा थाय छे; नाम–स्थापना द्रव्यभाव छे तेमां नाम लोक ते कोइनुं नाम लोक होय. चौद राजलोकनी स्थापनानुं चित्र ते स्थापाना लोक छे. तेनी स्थापना नीचली त्रण गाथाओथी जाणवी.

तिरिअं चउरो दोसुं, छद्दोसु अट्ठ दसय एक्केक्के। बारस दोसुं सोलस, दोसुं वीसा य चउसुं तु ॥१॥
पुण रवि सोलस, दोसु बारस दोसुं तु हुंति नायव्वा। तिसु दस तिसु अट्ठच्छ, य दोसु दसुं तुचत्तारि ॥२॥
ओयरिय लोअमज्झा, चउरो चउरो यसव्वहिं णेया। तिअतिअ दुग दुग, एक्केक्कगं च जा सतमोए उ ॥३॥

(गाथानो परमार्थ गुरुगमथी जाणवो कारण के टीका नथी) द्रव्य लोकनुं स्वरुप जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काळ ए छ द्रव्यनो समुह जेमां छे ते द्रव्य लोक छे. अने भावलोक औदयिक औपशमिक विगेरे छ भाव वाळो छे ते जाणवो. अथवा सर्व द्रव्य पर्याय युक्तस्वरुपवाळो जाणवो. सारना पण निक्षेपामां नाम स्थापना सुगमने छोडी द्रव्य सार कहे छे.

सव्वस्स थूल गुरुए, मज्झे देसप्पहाण सरिराई। धण एरंडे वइरे, खइरं च जिणादुराळाई ॥ २४० ॥

एमां पूर्वार्ध अने पश्चिमार्धमां यथासंख्य अनुक्रमे सार गणवां बधामां धन सार भूत छे, जेमके आ कोटीसार (करोडपति)

छे अथवा पांच कपर्दिका (वाळकोनी रनवानी कोडीओ) वाळो छे. स्थूळमां एरंडो सार छे (अहीं सार शब्द प्रकर्षवाची छे.) स्थूळ मध्ये एरंडो अथवा भींडो प्रकर्ष थयेलो छे, गुरुपणामां वज्र भारे छे. मध्यमां खेरनुं झाड छे, देशमां आंबो अथवा वेणुं छे. प्रधानमां ज्यां जे प्रधान भाव अनुभवे ते सचित्त अथवा अचित्त के मिश्रज होय ते, तथा सचित्तमां बे पगवाळो अपद छे, तेमां वे पगमां तीर्थंकर छे. चो पगमां सिंह छे. अपद (झाडो) मां कल्पवृक्ष छे. अचित्तमां वैडूर्य मणिरत्न छे मिश्रमां तीर्थंकरज ज्यारे विभूपित होय छे, शरीरोमां मुक्ति जवाने योग्य तथा विशिष्ट रुपनी प्राप्ति (तीर्थंकर चक्रवर्तीने आश्रयी) होवाथी औदारिक प्रधान छे, गाथामां आदि शब्द शरीर साथे लेवाथी स्वामित्व करण अधिकरणमा सारता योजवी, जेमके स्वामीपणामां गोरसनुं सारभूत घी छे, करणपणामां मणीरत्ननी सारतावाळा मुकुट वडे राजा शोभे छे, अधिकरणमां दहींमां घी, पाणीमां कमळ उगेलुं शोभे छे विगेरे छे. हवे भावसार बतावे छे.

भावे फलसाहणया फलओ सिद्धी सहूत्तम वरिट्ठा। साहणय नाणः दंसणसंजमतवसा तहिं पगयं ॥२४१॥

भाव विषयमां सार विचारतां फळनुं साधन तेज सार छे. जे, मतलब माटे क्रिया करीए ते प्राप्त थाय. (जेमके-विद्यार्थी वरस सुधी भणे अने पास थाय; त्यारे भावसार छे.) जोके, आ फळ प्राप्ति प्रधान छतां ते मळे. पछी तेनो अंत पण आवीजाय अने अनिश्चित पण छे. तेथी ते, अनेकांत अनात्यंतिक छे, ते कारणथी परमार्थथी जोतां निःसार छे. पण तेथी उलटुं एटले, सिद्धि-पदज मेळववुं सार छे. ते केवुं छे ? उः—ते उत्तम सुखवडे श्रेष्ठ छे. कारणके, ते एकांत सुखवाळी, अत्यंत सुख आपनारी सिद्ध-

गति छे. तथा तेमां कोइ जातनी बाधा नथी, माटे ते सर्वोत्कृष्ट छे, अने तेनां साधनो प्रकृत (चालु) उपकारक ज्ञान दर्शन संयम, अने तप छे ते भावसार सिद्धिफल मेळववा तेनां साधन ज्ञानादिक छे तेमां आपणुं कार्य छे. एटले ज्ञानदर्शन चारित्ररुप–भाव सारवडे अहीं अधिकार छे. तेथी ते ज्ञान विगेरे जे सिद्धि (मोक्ष) ना उपायो छे, तेनी भावसारता बतावे छे.

लोगंमि कुसमएसु य काम परिग्गहकुमग्गलग्गेसुं। सारो हु नाणदंसणतवचरणगुणा हियट्टाए। २४२॥

गृहस्थ लोकमां खराव (संसारी) सिद्धान्त छे, ते कामवासनाना आग्रहथी कुमार्ग छे, तेमां रक्त बनेला होवाथी काम परिग्रहनो आग्रही बनी गृहस्थ भावने तेओ प्रशंसे छे अने बोले छे केः—

गृहाश्रमसमो धर्म्मो, न भूतो न भविष्यति। पालयन्ति नराः शूराः क्लीबा पाषण्डमाश्रिताः ॥ १ ॥

गृहस्थम जेवो धर्म थयो नथी, थवानो नथी, तेनुं पालन शूर पुरुषो करे छे, पण कलीव (सत्व विनाना) पुरुषो तेने छोडी बावा (साधु) बनी जाय छे, कारण के गृहस्थाश्रमने (गृहाश्रमने) आधारे बधा त्यागीओ रहे छे, तेवुं सांभळीने (ओछी बुद्धिवाळा) महामोहथी मूढ बनीने इच्छा मदन काममां प्रवर्ते छे, तेज प्रमाणे खरा साधु सिवायना वेशधारीओ पण जेमणे इन्द्रियोनी कुचेष्टा रोकी नथी तेओ पण ते बे प्रकारनी कामवासनाने वखाणे छे, एथी लोकमां साररूप ज्ञानदर्शन तप चारित्रना गुणो, उत्तम सुखवाळी श्रेष्ट सिद्धि मेळववा माटे आदर करवा योग्य सार छे, कारण के ते हितसिद्धि आपनार छे, जो ज्ञानदर्शन तप चारित्रना गुणो हित माटे सार छे, तो शुं करवुं ते कहे छेः—

चइऊणं संकपयं, सारपयमिणं दढेण घित्तव्वं। अत्थि जिओ परमपयं, जयणा जा रागदोसेहिं ॥२४३॥

प्रथम शंका छोडी दे, अमारा करेला तप विगेरेनुं फल मोक्ष आपशे के नहि, एवो विकल्प ते शंका छे, ते शंकानुं पद ते निमित्तकारण छे, जेमके जिनेश्वरे कहेला इन्द्रियोथी न जणाय, एवा झीणा विषयो होवाथी ते फक्त आगम प्रमाणे मानवा जोइए, तेमां न समजतां संदेह थाय तो पण ते छोडीने आ ज्ञानादिक सार जे पूर्वे बतावेल छे, तेने दृढ पणे (स्थिरचित्ते) कुमार्गे चालनाराओथी ठगाया विना निश्चलपणे मानवां, तथा पाळवां, ते शंका दूर करवा गथाना पाछला बे पदमां कह्युं छे के जीव छे, आम प्रथम जीवने बधा पदार्थमां प्रथम लेवाथी अने जीवप्रधान होवाथी बीजा अजीव विगेरे पदार्थो पण जाणी लेवा, (के बधा पदार्थो विद्यमान छे) तथा जीव वाळो (शरीरधारी के विना शरीरनो) जीव जीवे छे, तथा जीवशे तथा ते संसारी जीव शुभ अशुभ कर्मना फलने भोगवनारो, अने ते 'हुं पोते' एम प्रत्यक्ष साध्य छे, अथवा तेने थती इच्छा द्वेष प्रयत्न विगेरे कार्योना अनुमानथी पण साध्य छे, तेज प्रमाणे अजीवो पण धर्म अधर्म आकाश पुद्गलने गति, स्थिति, अवगाह आपवाना; तथा बे अणु विगेरे स्कंधना हेतुरूप छे. तेथी, पांच द्रव्यसिद्ध थयां, ए प्रमाणे आस्रव–संवर बंध निर्जरा पण विद्यमान छे. कारणके, पुरुषार्थ प्रधानपणे छे. आ पदार्थमां आदिजीव अने अंते मोक्ष ग्रहण करवाथी वचला पदार्थो आवी जाय छे. एटले जीव तो सूत्रमां साक्षात् छे, अने मोक्ष हवे पछी बतावे छे के, परम तेज पद ते, परमपद छे. एम जाणवुं के, मोक्ष शुद्धपद कहेवातुं होवाथी विद्यमान छे. कारणके, ते बंधथी विरुद्धपक्षमां छे, अथवा बंधनी साथे अविनाभाविपणे छे. (एटले बंध त्यारेज कहेवाय के कोइपण

अंशे बे पदार्थ जुदा पडे. जो, जुदा न पडे तो, एकज कहेवाय ते बंध न कहेवाय. माटे, जुदा पडे; ते मोक्षजीवने कर्मरूपी–अजीव
पदार्थ पुद्गल स्कन्धरुपे कंइ अंशे मळेलो ते सर्वथा जुदो पडे; ते संपूर्ण मोक्ष छे, अने थोडे अंशे जुदो पडे; ते देशमोक्ष छे.) हवे,
मोक्ष जो होय; पण, ते प्राप्त करवानो उपाय न होय; तो, माणसो शुं करे ? तेथी ते बतावे छे. 'यतना' एटले, रागद्वेष छोडवामां
यत्न करवो; ते प्रथम लक्षणरूप–संयम पण विद्यमान छे. तेथी, आ प्रमाणे जीव अने परमपद विद्यमान छे, ते (मोक्षमां) शंका दूर
करीने ज्ञानादिक–सारपदने मेळववा दृढ प्रयत्न करवो, तेनाथी पण अपर अपर (चढतो) सार तथा श्रेष्ठगति छे. एवुं बतावी उपक्षेप कहे छेः—

लोगस्स उ को सारो ?, तस्स य सारस्स को हवइ सारो ?। तस्स य सारो सारं, जइ जाणसि

पुच्छिओ साह ॥ २४४ ॥

चउद राजप्रमाणनो जे लोक छे, तेनो शुं सार छे ? ते सारनो शुं सार ? ते सारनो शुं सार जो ए तमे जाणता हो; तो, हुं
पुछुं छुं माटे कहो.

लोगस्स सार धम्मो, धम्मंपि य नाणसारियं बिंति। नाणं संजमसारं, संजमसारं च निव्वाणं ॥ २४५ ॥

बधा लोकनो सार धर्म छे, धर्मनो सार ज्ञान छे, ज्ञाननो सार संयम छे, संयमनो सार निर्वाण छे. आ प्रमाणे नामनिक्षेपो
कह्यो. हवे, सूत्रानुगममां सूत्र कहेवुं जोइए. ते कहे छेः—

आवंती केयावंती लोयंसी विप्परामुसंति अट्ठाए अणट्ठाए, एएसु चेव विप्परामुसंति, गुरु

से कामा, तओ से मारंते, जओ से मारंते तओ से दूरे, नेव से अंतो नेव दूरे (सू० १४१)

'आवन्ती'—विगेरे, जेटला जीवो, मनुष्य, अथवा बीजा असंयत छे, तेमांना केटलाक चौद राजप्रमाण लोकमां गृहस्थ लोकमां गृहस्थ, अथवा अन्य तीर्थिक लोक छे, तेओ, छ जीवनीकायाना आरंभमां प्रवर्तीने अनेक प्रकारे विषयना रसीया बनी पीडा करे छे. एटले दंडाथी के, चाबखाथी मारवा विगेरेथी दुःख दे छे. शा माटे दुःख दे छे? ते कहे छेः—

धर्म, अर्थ, काम माटे, प्रयोजन आवतां जीवोनो घात करे छे ते बतावे छे. धर्मनिमित्त ते, शौच (पवित्रता) माटे पृथ्वीकाय (काची माटी) ने दुःख दे छे. धन मेळववा खेती विगेरे करे छे. काम (शरीरशोभा) माटे आभूषण विगेरे बनावे छे. ए प्रमाणे बीजी कायोनी हिंसा करवा संबंधी पण जाणवुं. हवे, अनर्थथी (वीनाप्रयोजने) ते फक्त शोखना माटेज शिकार विगेरे प्राणीनो नाश करनारी क्रीयाओ करे छे, तेथी, ए प्रमाणे प्रयोजने अथवा अप्रयोजने प्राणीओने हणी; ते छ जीवनीकायाना स्थानमां विविध प्रकारे सुक्ष्मबादर पर्याप्तक–अपर्यायप्तक विगेरे भेदवाळां एकेन्द्रिय विगेरे प्राणीओने दुःख दे छे. पछी तेमांज पोते अनेकवार उत्पन्न थाय छे. अथवा, ते छ जीवनीकायाने बाधा करी तेनाथी बंधायलां कर्मवडे तेज कायोमां उत्पन्न थइने तेवा प्रकारोवडे कर्मोने भोगवे छे, ते संबंधमां नागार्जुनीआ आ प्रमाणे कहे छेः—

" जावंति केइ लोए छक्काय वहंसमारंभति अट्ठाए अणट्ठाए वा "

विगेरे सूत्रमां आनो अर्थ आवी गयो छे. शंका–एम हशे; पण, शा माटे आवां कर्मो जीव करे छे के, जे अन्य कायमां जइने

भोगववां पडे छे ? उत्तर 'गुरुसे०' विगेरे तत्वने नहीं जाणनारा ते जीवने सुंदर शब्द विगेरे इच्छवा योग्य काम (विषयो) दुःखे-
करीने छोडवा योग्य छे ? कारणके, अल्प सत्त्ववाळा जेमणे पुण्यनो समूह पूरो नथी कर्यो; तेओने ते उल्लंघवुं दुष्कर छे, तेथी ते
कायामां आरंभ करे छे, अने तेथी पाप बंधाय छे, तेथी शुं थाय ते कहे छे, ते संसारी जीवे छ जीवनिकायने दुःख देवाथी तथा
अधिक विषयलालसा करवाथी पोते मारे ते आयुष्यनो क्षय (मरणवश) ने प्राप्त थाय छे, अने मरेला जीवने जन्म अवश्य थवानो
छे, जन्ममां पाछुं मरण थवानुं, ए प्रमाणे जन्म मरणरूप संसारसमुद्रमां उपर आववुं, नीचे जवुं, तेथी जीव छुटतो नथी, पछी
बीजुं ते शुं करे छे, ते कहे छे, 'जओ' विगेरे जेथी ते मृत्युना मध्यमां पडेलो परम पदना उपायो ज्ञान विगेरे रत्नत्रयथी, अथवा
तेनुं कार्य मोक्ष तेथी दूर रहे, अथवा सुखनो अर्थी ते कामने त्यजतो नथी, अने विषय रस न छोडवाथी पाछो मरणना मुखमां
जाय छे, तेथी जन्म जरा मरण रोग शोकथी घेरायेलो सुखथी दूर रहे छे, ते अधिक विषय रसीयाने मृत्युना मुखमां पडतां शुं
थाय छे ते कहे छे 'नेवसे.' विगेरे पछी ते विषय सुखना किनारे आवतोज नथी तेनो अभिलाष हृदयमां रहेवाथी काम वासनाने
न त्यागवाथी संसारथी दूर नथी थतो, अथवा जेने अधिक विषय आस्वाद छे ते कर्मनी अंदर छे के बहार छे ! उत्तरः—'णेवसे.'
ते जीवकर्मना मध्यमां भिन्नग्रंथी होवाथी नथीज; कारणके, भविष्यमां तेनां कर्म अवश्य क्षय थशे तेम दूर पण नथी; कारणके
कोटी कोटी (कोडा कोडी) सागरोपममां थोडुंओछुं एटली तेनी स्थिति छे, पूर्वे कहेलां कारणोथी चारित्रनी प्राप्तिमांज ते कर्मनी
अंदर नथी तेम दूर नथी. एम बोलवुं शक्य छे. चारित्र आत्मामां एकवार फरश्युं होय; तो तेनो मोक्ष थाय छे, अथवा जेणे आ
प्राणोनुं लेवारूप कर्म न कर्युं, ते संसारना अन्तर्भूत छे, के बहार वर्ते छे ! तेवी शङ्कानुं समाधान करे छे, ते जीव रक्षक साधुनां

घातिकर्मो क्षय थवाथी केवळी ते संसारना मध्यमां न गणाय, तेम दूर पण नथी, कारणके चार अघातिकर्म बाकी छे, आ (केवळीने आश्रयी छे) जेणे ग्रंथी भेद करीने दुष्प्राप्य एवुं सम्यक्त्व प्राप्त कर्युं अने संसारना आरातीय तीरे (मोक्षमां जवानी तैयारीवाळो) केवा अध्यवसायवाळो होय छे, ते कहे छे:—

से पासइ फुसियमवि कुसग्गे पणुन्नं निवइयं वाएरियं, एवं बालस्स जीवियं मंदस्स अवियणाओ, कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे विप्परिआसमुवेइ, मोहेण गब्भं मरणाइ एइ, एत्थ मोहे पुणो पुणो [सू० १४२]

जेनुं मिथ्यात्व पडल (पडदो) दूर थयेल छे, अने सम्यक्त्वना प्रभावथी संसारनी असारता जाणेली छे, (दृश्य धातुनो अर्थ प्राप्तिना अर्थमां छे) ते जाणे छे के, कुशना अग्रभागे रहेला पाणीना बिंदु माफक संसारी (बाल) जीवनुं आयुष्य छे, अने ते पाणीना बिंदु उपर उपरथी आवता पाणीना बीजा बिंदुथी प्रेरणा थतां वायुना झपाटाथी पडतां वार न लागे, तेम आ बालजीवनुं जीवित छे, तेनुं क्षणमात्र जीवित जाणीने, तत्व जाणनारो डाह्यो साधु तेमां मोह न करे, माटे बाळ शब्द लीधो छे, एटले बाळ ते अज्ञानी छे, ते अज्ञानपणाथी जीवितने बहु माने छे, तेथी बाळ छे, मंद छे, सद्‌असत्‌ना विवेकथी शून्य छे, तेथी बुद्धिहीन होवाथीज परमार्थने जाणतो नथी, अने परमार्थने न जाणवाथीज जीवितने बहु माने छे, अने परमार्थ न जाणवाथी ते शुं करे छे, ते कहे छे, 'कुराणि' विगेरे ते निर्दयतानां कृत्यो करे छे, हिंसा जूठ विगेरे जे बीजा लोकोने आश्चर्य पमाडे तेवां महान पाप अथवा अढारे

पापस्थानने ते बाल जीव करे छे, (आत्मनेपद क्रियापद लेवाथी पोताने माटे ते करे छे,) तेनुं फळ बतावे छे, क्रूर कर्मना विपा-
कथी मेळवेला दुःखवडे शुं करवु? एम विचारमां मूढ बनेलो क्या कृत्यथी मारुं आ दुःख दूर थशे, एम मोहथी मोहित थयेलो विप-
र्यास (उलटो रस्तो) पामे छे, एटले ते मूढ जे प्राणीनी घात विगेरे पापकृत्यो जे दुःख मळवानां कारणो छे, तेज हिंसाना कृत्य
दूर करवा माटे फरी करे छे! वळी 'मोहेण' मोह अज्ञान छे, अथवा मोहनीयकर्म छे, ते मिथ्यात्व कषाय विषयनो अभिलाषरूप
छे, तेना वडे मूढ थयेलो नवां अशुभ कर्म बांधे छे, तेनाथी गर्भमां जाय छे, पछी जन्म बालावस्था कुमार यवन बुढापो विगेरे
तेने मळे छे वळी ते विषय कषाय विगेरेथी कर्म नवां बांधीने आयुना क्षयथी मरण पामे छे, आदि शब्दथी पाछो गर्भ जन्म विगेरे
मेळवे, एम जाणवुं. पछी ते नरक विगेरेनां दुःख पामे छे, ते कहे छे. 'एत्थ' उपर कहेला मोह कार्य ते गर्भ मरण विगेरेमां वारं-
वार अनादि अनंत चार गतिरूप संसार कांतारमां ते जीव भ्रमण करे छे, पण तेनाथी मुक्त थतो नथी, त्यारे केवीरीते भ्रमण
न करे? उत्तरः—मिथ्यात्व कषाय अने विषयना अभिलाषथी दूर रहेतो ते केवी रीते दूर थाय? उत्तरः–विशिष्ट ज्ञाननी उत्पत्ति-
थी? प्र–ते केवी रीते मळे? उः—मोहना अभावथी? जो आ प्रमाणे एक बीजाने आश्रये रहेलां छे, जेमके मोह अज्ञान अथवा
मोहनीयकर्म तेनो अभावथी विशिष्ट ज्ञान, ते पण मोहनीयकर्म दूर थवाथी ए प्रमाणे इतर इतर आश्रय दोष खुलोज थाय छे,?
एटले एम थयुं के ज्यां सुधी विशिष्ट ज्ञान प्राप्ति न थाय त्यां सुधी कर्म शांत करवानी प्रवृत्ति पण न थाय. उः–तमारो कहेलो दोष
लागतो नथी. कारण के अर्थ (पदार्थ) नो संशय आवतां पण प्रवृत्ति थती देखाय छे, ते सूत्र कहे छेः—

संसयं परिआणओ संसारे परिन्नाए भवइ, संसयं अपरियाणओ संसारे अपरिन्नाए भवइ (सू० १४३)

वन्ने बाजुना अंश जेमां देखाय त्यां संशय थाय छे, ते अर्थ संशय अने अनर्थ संशय एम बे भेद छे. अहीं अर्थ ते मोक्ष, तथा मोक्षनो उपाय छे, तेमां मोक्षमां संशय नथी, कारण के तेने परम पद एम स्वीकार्युं छे, पण तेना उपायमां संशय होय तो पण प्रवृत्ति थाय छे, अर्थ संशय ते प्रवृत्तिनुं अंग छे, अने अनर्थ ते संसार अने संसारना कारणो छे, तेना संदेहमां पण निवृत्ति थाय छेज, कारण के अनर्थ संशय ते निवृत्तिनुं अंग छे, एथी अर्थमां अथवा अनर्थमां रहेला संशयने जाणतो होय तेने हेय उपादेयनी प्रवृत्ति थाय छे, तेज परमार्थथी संसारनुं परिज्ञान छे, ते बतावे छे, ते परिज्ञानवडे संशयने जाणनाराथी चार गतिवाळो संसार अथवा तेनुं मूळ कारण मिथ्यात्व अविरति विगेरे अनर्थपणे ज्ञ परिज्ञावडे जाणेलुं थाय छे, ते बतावे छे, अने प्रत्याख्यान परिज्ञा-वडे त्याग थाय छे, पण जे संशयने नथी जाणतो, ते संसारने पण नथी जाणतो, ते बतावे छे, 'संशयं' संदेहने बन्ने प्रकारे न जाण-नारानी हेय उपादेयनी प्रवृत्ति नहीं थाय, अने प्रवृत्ति विना संसार अनित्य छे, अशुचिथी भरेलो छे, घणां दुःख आपनारो छे, निःसार छे. एम ते जाणतो नथी, आ निश्चय केवी रीते थाय—के ते संशय जाणनारे संसार जाण्यो छे? तथा शुं निश्चय करवो? उः—संसारना परिज्ञाननुं कार्य विरतिनी प्राप्ति थाय छे, तेथी सर्व विरतिमां प्रष्ठ (श्रेष्ठ) विरतिने बताववा कहे छे.

जे छेए से सागरियं न सेवइ, कट्टु एवमवियाणओ बिइया मंदस्स बालया, लद्धा हुरत्था पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणय त्ति बेमि (सू० १४४)

जे छे ए—जे निपुण छे, जेणे पुण्य पाप जाण्यां छे, ते मैथुन (संसार संबंध) मन वचन कायाथी करतो नथी, तेनेज संसार

जाणनारो कहेवो, (ते जे स्त्रीसंग मन वचन कायथी न करे) पण मोहनीयकर्मना उदयथी जे पासत्था (शिथिल साधु) छे, ते सेवे छे, अने सेवीने पछी साता तथा गौरव नाश थवाना भयथी शुं करे ते कहे छे, कट्टु एकांतमां कुचाल सेवीने गुरु विगेरे ए पूछतां जुठुं बोले आवी रीते जुठुं बोली पाप छुपावनारने शुं थशे ते कहे छे, 'विइआ' अबुद्धिमानने प्रथम तो कुकर्म कर्युं ते अज्ञानता छे, अने पाछुं जुठुं बोलतां मृषावादनो दोष लागे छे, तथा ते फरी न करवापणे फरी अनुत्थान (चालु) छे, आ संबंधे नागार्जुनीआ आ प्रमाणे कहे छे:—

"जे खलु विसए सेवई सेवित्ता वाणालोएइ, परेणवा पुट्ठो निण्हवइ, अहवा तं परंसएण वा दोसेण पाविट्ठयरेण वादोसेण उवलिं पिज्जंत्ति"

जे कुकर्म करे करीने आलोचना करतो नथी, अथवा बीजाए पूछतां जुठुं बोले छे, अथवा पापी पोताना दोषो वडे वधारे वधारे लेपाय छे. जो एम छे, तो शुं करवुं, ते कहे छे, 'लद्धाहु' कामो प्राप्त थये छते पण 'हुरत्थे' चित्र क्षुल्लक (मुनि) माफक तेनां कडवां फळ जाणीने चित्तथी ते वहार करे (अथवा हुशब्द अपि अर्थमां लइ रेफनो आगम थयो ते बीजाना अर्थमां प्रथम विभक्ति लेतां) आवो अर्थ थाय छे के, मेळवेला होय, ते विपाकद्वारवडे विचारीने तथा ते शब्दादिनां कडवां फळ जाणीने बीजाने तेवां पाप करवानी आज्ञा पण पोते न आपे, तेम पोते पण छोडे, एवुं सुधर्मास्वामी कहे छे, जे में पूर्वे कह्युं, ते में एक सरखो श्रेष्ठ ज्ञान प्रवाह मेळव्यो छे, अने शब्दादिनां कडवां फळने जाणवाथी देखवाथी जिनेश्वरना वचन

उपर मने आनंद थयो छे, (प्रथम भगवाननुं वचन सांभळ्युं, तेथी कडवां फळ जाण्यां पछी अनुभव्युं तेथी विश्वास थयो) तेथी हुं कहुं छुं के:-

पासह एगे रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे, इत्थ फासे पुणो पुणो, आवंती केयावंती लोयंसि आरंभजीवी, एएसु चेव आरंभजीवी, इत्थवि बाले परिपच्चमाणे रमई पावेहिं कम्मेहिं असरणे सरणंति मन्नमाणे, इहमेगेसिं एगचरिया भवइ, से बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोभे बहुरए बहुनडे बहुसढे बहुसंकप्पे आसवसक्ती पलिउच्छन्ने उट्ठियवायं पवयमाणे, मा मे केइ अदक्खू अन्नायपमायदोसेणं, सययं मूढे धम्मं नाभिजाणइ, अट्टा पया माणव ! कंमकोविया जे अणुवरया अविज्जाए पलिमुक्खमाहु आवट्टमेव अणुपरियट्टंति त्तिबेमि (१४५)

॥ लोकसारे प्रथमोद्देशकः ५-१ ॥

हे एकांत धर्म रक्त मनुष्यो ? तमे देखो ? (रुपमां बहु वचन लेवाथी आदि शब्दनो अर्थ थाय छे, एटले रुपआदि) के रुप विगेरे इन्द्रियोना रस जे खास कडवां फळ आपनार असार छे, तेमां गृद्ध थयेला अथवा संसारमां पडेला जीवो स्वाद लइने पछी दुःख भोगववा नरक विगेरे पीडा स्थानमां गयेला छे, ते प्राणीओने जुओ ? (कोइने नरक उपर विश्वस न होय तो कसाइखानामां पशु पक्षीओने गळे छुरी फरती देखो, के ते पशु पक्षीओ आवी दशामां पडवानुं शुं कारण छे, तथा पशुने मारनारा मरावनारा

मांसनो स्वाद करनारनी शुं दशा थशे, ते पण विचारो ?) ते विषय रसना स्वादुओ इन्द्रिओने वश थइ शुं फळ मेळवे ते कहे छे, 'एत्थफासे' आ संसारमां इन्द्रियथी परवश थयेलो मूढ बनीने कर्मनी परिणतिरुप स्पर्शोने वारंवार तेवा तेवा स्थानोमां ते भोगवे, पाठांतरमां 'एत्थमोहे' छे, आ संसारमां मोह ते अज्ञान अथवा चारित्र मोहमां वारंवार मूढ बने छे, कोण ? उत्तरः—आवंती—जे कोइ गृहस्थ आ लोकमां पेट भरवा पाप आरंभ करनारा छे तेओ (बीजाने दुःख देइने) पोते पाछां तेवां दुःख मेळवे छे, वळी ते गृहस्थोने आश्रय करीने रहेल आरंभ करनारो करावनारो अनुमोदनारो जनेतर के पासत्थो वेष विडंबक साधु छे, ते पण गृहस्थो माफक दुःख भोगवे छे, ते बतावे छे, एएसु सावद्य आरंभमां पडेला गृहस्थोमां शरीर निर्वाह माटे रहेतो जैनेतर के पासत्थो साधुपण आरंभजीवी होय, ते पूर्वे बतावेलो दुःखनो भोगीयो थाय, वळी गृहस्थ के जैनेतर तो दूर रहो, पण जे संसारसमुद्रथी तरवारुप सम्यक्त्व रत्न मेळवीने मोक्षनुं एक कारण विरति परिणाम पामीने पण जो पापकर्मना उदयथी चारित्रने पूरुं न पाळे तो ते पण सावद्य अनुष्ठान करनारो बने छे, ते कहे छे 'एत्थवि' आ अर्हत् प्रणीत संयम मेळवीने रागद्वेषथी व्याकुल बनेलो अंदरथी तपतो अथवा उत्कंठा करतो विषयनी आकांक्षाथी रमे छे, ? कोनी साथे ? उत्तरः—पाप कृत्योवडे विषयरस लेवा सावद्य अनुष्ठानमां चित्त लगाडे छे, शुं करतो ? 'असरण' कामाग्नि अथवा पापकर्मथी बळतो जो के सावद्य अनुष्ठानना अशरण छे, छतां तेनुं शरण लेतो भोगनी इच्छावाळो अज्ञान अंधकारथी छवायेलो दृष्टिवाळो (कामांध बनेला) वारंवार अनेक दुःखोने भोगवे छे, गृहस्थ के जैनेतर दूर रहो पण प्रवज्या (दीक्षा) लेइने पण केटलाक वेष विडंबको दुराचारोने आचरे छे, ते बतावे छे, 'इहमे' आ मनुष्य एकला फरे छे, (चराय ते चरण अथवा चर्या एकलानी चर्या ते एक चर्या) ते एकलविहारीपणुं प्रशस्त अप्रशस्त एम बे भेदो

छे, तथा ते द्रव्यथी भावथी एम बे भेदे छे, तेमां द्रव्यथी ते गृहस्थ पाखंडी विगेरेनुं विषय कषाय विगेरे माटे एकलानुं फरवुं थाय, अने भावथी अप्रशस्त न होय कारण के राग द्वेषना अभावथी ते एक चर्या होय छे, अने रागद्वेषना अभावमां अप्रशस्त एक चर्या ते द्रव्यथी प्रतिमा धारण करेला गच्छमांथी नीकळेला जिनकल्पीने संघ विगेरेना कार्य माटे एकला जवुं पडे ते छे, अने भावथी तो प्रशस्त एक चर्या राग द्वेषना विरहथी थाय छे, तेमां द्रव्यथी तथा भावथी एकचर्या ते केवळ ज्ञान उत्पन्न न थयेला तीर्थंकरोए संयम लीधा पछीनो छद्मस्थ काल छे, बाकीना वधा चार भांगामां आवे छे, तेमां प्रथम अप्रशस्त 'द्रव्य एक चर्यानुं' दृष्टांत कहे छेः—पूर्वे देशमां धान्य पूरक नामना संनिवेशमां जुवान वयमां देवकुमार जेवा रुपवान तापसे गामना नीकळवाना रस्ता उपर छठनो तप शरु कर्यो, बीजा तापसे पासेना गाममां पर्वतनी गुफामां अठम तप करीने अतापना लेवा लाग्यो पछी गाममांथी नीकळतां ते तापसने ठंड ताप सहेतो देखीने लोकोए तेना गुणोथी रंजीत थइने आहार विगेरेथी तेनुं सन्मान कर्युं, लोकोए पूजतां तथा सत्कार करतां ते तपासे लोकोने कह्युं के माराथी पण बीजो पहाडनी गुफावाळो तापस वधारे कष्ट सहन करे छे, तेथी लोकोए तेने वारंवार स्तुति करतो जोइ तेमणे ते बीजा तापसनी पण पूजा करी, अने पारकाना गुणो गावा दुष्कर छे, एम जाणीने तेनो पण सत्कार कर्यो. आ प्रमाणे बन्ने भाइए एकला रहीने पूजावा माटे तप कर्यो, तेथी ते अप्रशस्त छे. आ प्रमाणे बीजा पण एक चर्याना दृष्टांतो यथा संभव विचारी लेवा. आ प्रमाणे सूत्रार्थ कहेतां सूत्र स्पर्शिक निर्युक्तिवडे निर्युक्तिकार कहे छे.

चारो चरीया चरणं, एगट्ठं वंजणं तहिं छक्क। दव्वं तु दारु संकम जल थल चाराइयं बहुहा ॥२४६॥

चार (ते चर धातुनो अर्थ गति तथा खावाना अर्थमां छे, तेनुं भावमां चार रुप बने छे,) तथा चर्या शब्द (३-१-१०० ना सूत्र प्रमाणे) बने छे, तेम चरण पण बने छे, एक ते अभिन्न, अर्थ (समान अर्थ) वाळा ते एकार्थ कहेवाय छे. जेना वडे अर्थ प्रगट कराय ते व्यंजन शब्द छे, अर्थात् चार, चर्या अने चरण ए त्रणे शब्द एक अर्थवाळा छे, तेथी तेना जुदा निक्षेपा छ प्रकारे छे, नाम स्थापना सुगमने छोडीने ज्ञ शरीर भव्य शरीरथी जुदो 'द्रव्य चार' ते अडधी गाथामां बताव्यो छे, 'दव्वं तु' तु शब्दनो अर्थ पुनः छे, द्रव्य आवी रीते थाय छे, दारु (लाकडुं) चाले छे, ते जलमां तथा स्थलमां चाले छे, तेथी ते प्रथम कहे छे, ते लाकडुं जलमां स्थलमां अनेक प्रकारे चाले छे, एटले लाकडानो पूल विगेरे पाणीमां बनावे छे, अने स्थलमां खाडा विगेरे ओळंगवा माटे लाकडां गोठवे छे, तेमज जलमां लाकडानी नाववडे चलाय छे, जमीन उपर रथ विगेरेथी चलाय छे तेमज आदि शब्दथी ते लाकडुं महेल बनाववा विगेरेमां दादर बनाववामां काम लागे छे, . तथा जे जे द्रव्य एक देशथी बीजा देशमां जवा माटे वपराय ते द्रव्य चार छे. हवे क्षेत्र चार विगेरे कहे छे,

खित्तं तु जंमि खित्ते, कालो काले जहिं भवे चारो । भावंमि नाण दंसण, चरणं तु पसत्थ मपसत्थ ॥२४७॥

जे क्षेत्रमां चार (चालवानुं) करीये अथवा जेटलुं क्षेत्र चालीए, ते क्षेत्र चार कहेवाय छे, ते प्रमाणे जे कालमां चालीए, अथवा जेटलो काळ चालीए ते काळ चार छे.

भावमां चारके चरण बे प्रकारनुं छे, प्रशस्त चरण अने अप्रशस्त छे. तेमां प्रशस्त चरण ते 'ज्ञान दर्शन अने चारित्र' छे, अने

एनाथी उलटुं अप्रशस्त चरण ते ग्रहस्थ अने अन्यदर्शीनीओनुं संसारी वर्तन छे. तेथी आ प्रमाणे द्रव्य विगेरे चार प्रकारनुं चरण बतावीने वर्तमानमां उपयोगीपणे साधुनो प्रशस्त भाव चार प्रश्न द्वाराए निर्युक्तिकार बतावे छे.

लोगे चउव्विहंमी, समणस्स चउव्विहो कहं चारो? होई विई अहिगारो, विसेसओ खित्तकालेसुं ॥२४८॥

चार प्रकारना द्रव्य क्षेत्र काळ अने भावरुप लोकमां श्रम सहेनार ते श्रमण (यति) नो केवीरीतनो द्रव्यादि चार प्रकारनो चार छे?

उत्तर—अहीं धृति (धैर्यता) नो अधिकार छे, एटले चार प्रकारे धैर्यता राखवी.

—:- चार प्रकारनी धैर्यता -:—

द्रव्यथी धैर्यता—एटले अरस (रस रहित) तथा विरस ते तुच्छ तथा लुखुं विगेरे भोजन मळे, तो पण तेमां धैर्यता राखवी.

क्षेत्र धैर्यता—एटले कुतीर्थिके लोकोने पोताना रागी बनाव्या होय, अथवा कुदरतीज लोको अभद्रक होय (तो साधुनुं बहु मान न करे तेथी) साधुए उद्वेग न करवो,

काळ धैर्यता—ते दुकाळ विगेरे मुश्केलीना वखतमां जेवुं भोजन विगेरे मळे, तेमां संतोष राखवो.

भाव धैर्यता—ते कोइ आक्रोश करे हांसी करे अपमान करे, तोपण क्रोधायमान न थवुं, पण विशेष करीने तो क्षेत्रकाळमां हलकापणुं होय त्यां वधारे धैर्यता राखवानी छे, कारण के प्राये तेना निमित्तेज द्रव्य अने भावमां अधैर्यता थाय छे.

हवे फरीथी द्रव्यादिकना भांगाथी साधुनो चार कहे छे.

पावोवरए अपरिग्गहे अ गुरुकुलनिसेवए जुत्ते । उम्मग्गवज्जए रागदोसविरए य से विहरे ॥२४९॥

'पापोपरतः'—एटले पापना हेतु जे सावद्य अनुष्ठान हिंसा, जूठ अदत्त आदान (चोरी) अने ब्रह्मचर्य भंग ए पापोथी पोते दूर रहे, तथा परिग्रह न राखे ते अपरिग्रह एटले द्रव्यचारमां पांचे महाव्रत पळवानुं बताव्युं, तथा क्षेत्र चार हवे बतावे छे के–गुरुकुल ते गुरु पासे रहेवुं, तथा तेनी सेवामां रहेवुं. एटले आखी जींदगी सुधी गुरुना उपदेश विगेरेथी (तेमनुं मन प्रसन्न करीने) चारित्र निर्मळ पाळवुं, आथी काल चार बताव्यो. के आखी जींदगी सुधी बधो काळ गुरुनी आज्ञामां वर्तवुं.

हवे भावचार कहे छे, साधु मार्गथी उलटो ते उन्मार्ग छे, एटले कोइ पण जातनुं कुकर्म होय तेनुं वर्जन करे, ते उन्मार्ग वर्जक छे. तथा रागद्वेषथी विरक्त वनीने ते साधु विहार करे तथा संयम अनुष्ठान योग्यरीते करे. निर्युक्तिकारे चार वताव्यो.

हवे पाछुं सूत्र आश्रयी चार (चर्या) बतावे छे. तेमां पूर्वे विषय कषाय निमित्त जे एक चर्या (एकलविहार) करे. ते केवो थाय ते कहे छे. 'से बहुकोहे'–विगेरे एटले विषयगृद्ध बनेलो इन्द्रियोने अनुकूल वर्तनारो एकलो पडेलो पतित साधु अथवा गृहस्थ होय, तेनुं बीजा माणसो अपमान करे तो ते वहु क्रोधवाळो बने, तथा कोइ तप विगेरेना कारणे वदन करे तो बहुमानवाळो (अहंकारी) बने. तथा कुरुकुचादि (कुचेष्टा) तथा कल्क (खोटी) तपश्या करीने बहु कपटी बने अने आ बधुं कृत्य आहार विगेरेना लोभथी करे माटे ते बहु लोभी बने, अने तेज कारणथी बहु रजवाळो एटले बहु पापरूप कर्म रजवाळो अथवा आरंभ विगेरेमां बहु रक्त बने तेथी बहुरत कहेवाय छे, तथा नटनी माफक भोगो (संसारी सुख) लेवा बहु वेषो धारण करे ते बहु नट कहेवाय.

तेज प्रमाणे घणा प्रकारे शठपणुं करे तेथी वहु शठ कहेवाय, तथा संसारी कृत्यना घणा विचारो करे तेथी बहु संकल्पी (संकलपवाळो) कहेवाय एज प्रमाणे चोर विगेरेनी पण एक चर्या (अप्रशस्तमां) जाणवी, आवी रीतनो होय तेनी केवी अवस्था थाय, ते कहे छे:-

'आसव' विगेरे-आस्रवो ते हिंसा विगेरे छे, तेमां सक्त (संग) राखे ते आस्रव सक्त कहेवाय, अर्थात् हिंसा विगेरे पाप करनारो होय. 'पलितं'-ते कर्म-तेनावडे अविच्छिन्न छे. एटले कर्मथी अवष्टब्ध (लेपायलो) छे. आवीरीते अनेक दुर्गुणवाळो होय, छतां पण पोते (लोकोने ठगवा) शुं कहे ते कहे छे:—

उट्ठिय—धर्म चरण (चारित्र) माटे हुं उद्यम करनारो छुं, एटले पतित साधु पण एज प्रमाणे बोले के हुं चारित्र पाळुं छुं, अने ते प्रमाणे न पाळवाथी कर्म वडे लेपाय छे, अने ते साधु वेषधारी मोढेथी पोताने साधु बोलतो आस्रवोमां वर्ततो छतां आजीविकाना भयथी केवी रीते वर्ते छे. ते कहे छे. 'मामे'-मने बीजा कोइ पाप करतां न देखो एथी ते पाप छानां करे छे, अथवा ते अज्ञानथी अथवा प्रमादना दोषथी पाप करे छे, वळी 'सयायं'-सतत (निरंतर) मोहनीय कर्मना उदयथी अथवा अज्ञानथी मूढ बनेलो श्रुत अने चारित्र धर्मने जाणतो नथी, एटले तेने धर्म अधर्मनो विवेक नथी, जो आम छे, तो शुं करवुं ते कहे छे:—

अट्टा—विषय कषायोथी आर्त (पीडायला) बनीने तेओ आठ प्रकारनां कर्म बांधवामां कोविद (कुशळ) छे. पण धर्म अनुष्ठानमां कुशळ नथी, [एवुं गुरु सांभळनार भव्य जीवोने आश्चर्यी कहे छे] हे जंतुओ ! हे मनुष्यो ! तमे जुओ ! (मनुष्य धर्म करवाने योग्य होवाथी मनुज शब्द लीधेल छे) हवे क्या मनुष्यो निरंतर धर्मने न समजतां कर्म बन्धमां कुशळ छे ? ते कहे छे:—

'जे अणुवरया'-जे कोइ (चोकस अमुक एम नहीं) पण पाप अनुष्ठानथी विरक्त [निवृत्त] न होय, तेओ ज्ञान दर्शन चारित्र

जे मोक्षनो मार्ग छे, तेज विद्या छे. तेथी उलटी अविद्या छे, तेनाथी पण तेओ परि [बधी रीते] घेरायलां छतां मोक्ष कहे (अर्थात् अज्ञान दशामां रही कुकर्म करी तेनाथी मोक्ष माने) तेओ धर्मने जाणता नथी, हवे धर्मने जाणनारो शुं मेळवे ते कहे छे.

'आवट्ट–भाव' आवर्त्त ते संसार छे. ते संसारमां कुवाना अरटना न्याये जन्म मरणनुं भ्रमण कर्या करे छे, अने नरक विगेरे चार गतिमां ते वारंवार जन्म ले छे. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे, आ प्रमाणे लोकसारअध्ययनमां प्रथम उद्देशो समाप्त थयो.

लोकसार अध्ययननो बीजो उद्देशो

हवे बीजो उद्देशो कहे छे,ते नो आ प्रमाणे संबंध छे. पहेला उद्देशामां कह्युं के एक पर्यायवाळो (त्यागी) बनीने पण सावद्य अनुष्ठान करवाथी तथा विरति (चारित्र) न पाळवाथी तेये मुनि न कहेवो. आ बीजा उद्देशामां तेनाथी उलटो ते चारित्र पाळीने पाप अनुष्ठान त्यागनारोज मुनि कहेवाय छे, ते कहे छे. आ संबंधथी आवेला उद्देशानुं पहेलुं सूत्र कहे छे.

आवन्ती केयावन्ती लोए अणारंभ जीविणो तेसु, एत्थोवरए तं झोसमाणे, अयं संधीति अदक्खू, जे इमस्स विग्गहस्स अयं खणेत्ति अन्नेसी एस मग्गे आरिएहिं पवेइए, उट्ठिए नो पमायए, जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं, पुढो छंदा इहमाणवा पुढो दुक्खं पवेइयं से अवि-

हिंसमाणे अणवयमाणे, पुट्ठो फासे विपणुन्नए (सू० १४६)

आ मनुष्य लोकमां जेओ केटलाक मनुष्यो आरंभ रहित जीवनारा छे, अहीं आरंभ एटले सावद्य अनुष्ठान अथवा प्रमादीपणुं छे कह्युं छे के

आदाणे निक्खेवे, भासुस्सग्गे अ ठाणगमणाई । सव्वो पमत्तजोगो, समणस्सवि होइ आरंभो ॥१॥

कोइ पण वस्तु लेवी के मुकवी, बोलवुं. मल परठवो, स्थानमां रहेवुं. अथवा जवुं आववुं, आ बधुं कार्य साधु जो प्रमादथी करे, तो तेने आरंभ (नो दोष) लागे छे, पण तेथी उलटुं ते प्रमाद न करे, तो अनारंभी कहेवाय छे, तेवुं निरारंभ जीवन गुजारे छे, तेवा साधुओ समस्त आरंभथी निवृत्त थएला छे, अने जे गृहस्थीओ पुत्रकलत्र के पोताना शरीर विगेरेना रक्षण माटे आरंभ करे छे, तेमना उपर जीवन गुजारे छे, तेनो भावार्थ आ छे, के सावद्य अनुष्ठान करनार गृहस्थो छे, तेमना आश्रये पोताना देहनो निर्वाह करवावाळा अनारंभ जीवनवाळा ते साधुओ होय छे, जेम कादवना आधारे रहेल छतां कमळ निर्लेप होय छे, तेम तेओ निर्लेप छे, जो एम छे, तो शुं समजवुं. ते कहे छे, आ सावद्य आरंभवाळा कर्तव्यमां संकुचित गात्रवाळो बने. अथवा अहीं जिनेश्वर कहेला धर्ममां रही पापारंभथी निवृत्त थाय. प्रश्न–ते शुं करे? उ०–ते सावद्य अनुष्ठानथी आवेल (थता) कर्मने क्षय करतो मुनि भावने भजे प्रश्न—शुं आलंबन लइने उपरत थाय? उ०–'अयंसंधी' विगेरे (अविवक्षित कर्म बताव्या विनानो धातु होय ते पण अकर्मक धातु थाय छे. जेमके, जो? मृग दोडे छे! एम अहीं पण "अद्राक्षीत्" क्रिया छतां पण असंधि एम प्रथमा विभक्ति करी छे.) आ प्रत्यक्ष नजरे देखातो आर्यक्षेत्र सुकुलमां जन्म इन्द्रियोनी पूरी शक्ति धर्मनी श्रद्धा तथा वैराग्य लक्षणवाळो अवसर मळ्यो छे, अथवा मिथ्यात्वनो

क्षय थयो छे. अथवा मिथ्यात्वनो हाल तेने उदय नथी, एटले सम्यक्त्वनी प्राप्तिना हेतुभूत कर्मविवर लक्षणवाळो संधि [अवसर] अथवा शुभ अध्यवसायना जोडाणरूप संधि तने मळ्यो छे, तेने तारा आत्मामां स्थापन करेलो तुं नजरे जो, एथी हवे तुं एक क्षण पण प्रमाद न करजे. विषय विगेरेना कारणे प्रमादी न थइश, क्यो प्रमादी न थाय? उत्तरः—'जे इमस्स' जे एटले जेणे तत्व प्राप्त कर्युं, एवा तत्वज्ञानीने 'जेना वडे आठ प्रकारनुं कर्म' विशेष करीने ग्रहण थाय ते इन्द्रियोवाळुं विग्रह (शरीर) औदारिक छे, तेनो आ वर्त्तमाननो समय [क्षण] सुखमां के दुःखमां वीत्यो. अने भविष्यमां वीतशे. ते दरेक क्षण शोधवानो स्वभाव छे, ते अन्वेषी कहेवाय छे; अने ते सदा अप्रमत्त रहे छे, आचार्य कहे छे के आ हुं नथी कहेतो पण 'एसमग्गे' आ कहेलो मोक्ष मार्ग आर्य पुरुषोए कहेलो छे.एटले बधा त्यागवारूप धर्म (कुतीर्थ विगेरे) थी दूर रही मोक्ष किनारे पहोंचेला एवा तीर्थंकर गणधरोए प्रकर्षथी पूर्वे कहेलो छे, वळी तीर्थंकरोए पूर्वे कहेलो अने हवे कहेवातो मार्ग कह्यो छे, एटलुंज नही पण ते प्रमाणे वर्तवानुं छे.ते कहे छे. 'उट्ठिए'-संधि (अवसर) मळेलो जाणीने धर्मचरण माटे तैयार थएलो तुं [साधु] एक क्षणमां पण प्रमाद न करीश. वळी बीजुं शुं समजवानुं छे? ते कहे छे—जाणित्तु—दरेक प्राणीनुं दुःख अथवा तेनुं मूळ कारण कर्म जाणीने तथा मनने प्रसन्न करनारुं सुख जाणीने तुं प्रमादी न थइश. वळी दरेक जीवने दुःख अथवा कर्म जुदुं छे, एटलुंज नहि पण कर्मनुं मूळ कारण अध्यवसाय पण दरेक प्राणीनो जुदोज छे.ते बतावे छे, 'पुढो' जेओनो अभिप्राय प्रथक् छे तेओ प्रथक् छंदवाळा कहेवाय छे. एटले जुदी जुदी जातना बन्धना अध्यवसायना स्थानवाळा छे. तेओ 'इह' ते आ संसारमां अथवा संज्ञावाळा संज्ञी लोकमां मनुष्यो छे. अने तेज प्रमाणे बीजा जीवो पण जाणवा, अने दरेक संज्ञी प्राणीनो जुदो जुदो संकल्प होवाथी तेना कार्यरूप कर्म पण जुदुंज छे, अने तेना कारणरूप दुःख पण जुदा रूपवाळुं छे, अने कारण भेद

थाय तो अवश्ये कार्य भेद थाय छे, तेथी पूर्वे कहेलुं फरीयाद करवावीने कहे छे, 'पुढो' दुःखना उपादानना भेदथी प्राणीओनुं दुःख पण जुदुं जुदुं बताव्युं कारण के बधा प्राणीओने पोताना करेलां कर्म भोगववामां इश्वर (समर्थ)पणुं छे, पण बीजानुं करेलुं पोते न भोगवे आवुं मानीने शुं करे? ते कहे छे, से–ते अनारंभ जीवी साधु प्रत्येक प्राणीना सुख दुःखना अध्यवसायने जाणनोरो जुदा जुदा उपायो वडे प्राणीओनी हिंसा न करतो तथा जुठुं न बोलतो, (संयम पाळे) तेम तुं पण जो (सूत्रमां प्राकृतना अथवा आर्ष वचनथी 'पश्य'नो लोप थयो छे. ए प्रमाणे पर स्त्रमां पण ज्यांपद न लीधुं होय त्यां लेवुं) आवीरीते जीवहिंसा न करनारो बीजुं शुं करे ते कहे छे, पुट्ठो–ते पांच महाव्रतमां स्थिर रहीने जे प्रमाणे संयम पाळवानी प्रतिज्ञा लीधी छे. ते प्रमाणे पाळवामां उद्यम करे, अने परिसह उपसर्गो आवतां तेनाथी थता शीत उष्ण विगेरे स्पर्श अथवा दुःखना स्पर्श आवे तेने सहन करी आकुल न थाय पण संसार असार छे विगेरे जुदी जुदी भावनाओवडे (धर्ममां) प्रेरे, अने प्रेरणा ते सम्यक्प्रकारे सहेवुं. पण ते दुःख पडवाथी आत्माने दुःखी न मानवो. (व्याकुल न थवुं) पण जे समभावे रही परीषहोने सहे, तेने शुं गुणो थाय, ते कहे छेः—

एस समिया परियाए वियाहिए, जे असत्ता पावेहिं कम्मेहिं उदाहु ते आयंका फुसंति, इति उदाहु धीरे ते फासे पुट्ठो अहियासए, से पुव्विं पेयं पच्छा पेयं भेउरधम्मं विद्धंसणधम्ममधुवं अणिइयं असासयं चयावचइयं विपरिणामधम्मं, पासह एयं रूवसंधि (सू० १४७)

पूर्वे कहेलो जे परीषहोनो प्रणोदक [सहेनारो] सम्यक् अथवा शमिता शमना भाववाळो पर्याय ते चारित्रने ग्रहण करीने सम्यक्

पर्यायवाळो बने अथवा शमिता (शांतस्वभावी) दीक्षावाळो बने तेज स्तुत्य थाय छे पण बीजो नहिं, आ प्रमाणे परिषह अने उपसर्गमां अक्षोभ्यपणुं बतावीने हवे व्याधिनी सहन शीलता बतावे छे. 'जे असत्ता' एटले जेमणे कामवासनाने दूर करी तृष्ण अने मणि तथा माटीनुं ढेफुं तथा सोनामां समान भाव धारण कर्यो छे, तेवा समताने पामेला मुनिओ पापकृत्योमां असक्त एटले पापना उपादानना अनुष्ठानथी दूर रहेला छे, तेमने कदाचित् आतंक ते शीघ्र जीवने पण दूर करे तेवा जीवलेण शूळ विगेरे व्याधिओ पीडा करे, त्यारे तेओ शुं करे ? ते कहे छे. अने आ कहेनार कोण छे ते पण कहे छे, धी (बुद्धि) वडे राजे. ते धीर पुरुष तीर्थंकर अथवा गणधर छे, तेओ कहे छे के तेवा जीवलेण व्याधिओवडे पीडायलो छतां ते दुःखना अनुभववाळा स्पर्शोने सम्यक्प्रकारे सहन करे, सहन करतां शुं विचारे? ते कहे छे, 'से पूव्व'—ते साधु जीव लेण दुःखथी पीडातो छतां आ प्रमाणे विचारे, के पूर्वे पण में आवु अशातावेदनीयकर्मथी उदयमां आवेलुं दुःख सहन कर्युं छे, अने पछवाडे पण मारे सहन करवानुं छे, कारण के संसार ऊदरना विवरमां रहेनारो (संसारीजीव) एवो कोइपण नथी के, जेने अशातावेदनीयकर्मना उदयमां आवेला विपाकथी रोगोनां दुःखो न ते भोगवे! वळी तेज प्रमाणे केवळीप्रभुने पण मोहनीय विगेरे चार घातिकर्म क्षय थतां केवळज्ञान उत्पन्न थया छतां वेदनीयकर्मना सद्भावथी ते असाता—वेदनीयकर्मनो उदय थवानो संभव छे. तेथीज तीर्थंकरोने पण प्रथम कर्म बंधाय; पछी स्पष्ट थाय; पछी निधत्त थाय; पछी निकाचन थाय; त्यारपछी उदयमां आवतां अवश्ये वेदवुंपडे; पण भोगव्या विना मोक्ष न थाय; तेथी अन्य साधु विगेरेए पण असातावेदनीयकर्म उदय आवतां सनतकुमारचक्रवर्त्ती माफक मारे पण सहन करवुं; एवुं विचारीने खेद न करवो. कह्युं छे के:—

स्वकृतपरिणतानां दुर्नयानां विपाकः। पुनरपि सहनीयोऽन्यत्र ते निर्गुणस्य। स्वयमनुभवतोऽसौ दुःख मोक्षाय सद्यो। भवशतगतिहेतुर्जायतेऽनिच्छतस्ते ॥ १ ॥

पोतानां करेलां दुष्ट कृत्योनो उदयमां आवेलो आ विपाक (फळ) आवेल छे. ते तारे मध्यस्थ रहीने सहन करवो जोइए. ते प्रमाणे विपाक सहन करतां शीघ्र दुःखथी मोक्ष (छुटकारो) थशे. पण जो तुं भोगववामां समता नहीं राखे तो ते विपाक नवा सो भवनो हेतु थशे (चार गतिमां सेंकडो वार जन्म मरण करवां पडशे) वळी आ औदारिक शरीर घणो काळ सुधी पण रसायण विगेरे अमूल्य औषधोथी पोष्या छतां पण माटीना काचा घडाथी पण निःसारतर (तद्दन नकामुं) बधी रीते हमेशां नाशपामनारुं छे ते बतावे छे, 'भिदुर बम्भ' अथवा पूर्वे अने पछी पण आ औदारिक शरीर हवे पछी कहेवाता धर्मवाळुं छे, पोतानी मेळे भेदाय ते भिदुर छे ते धर्मवाळुं जे होय, ते भिदुर धर्मवाळुं छे, एटले आ औदारिक शरीरने सारी रीते पोष्युं होय, तो पण वेदनानो उदय थतां माथुं पेट आंख छाती विगेरे अवयवोमां पोतानी मेळेज भेदन थाय छे, तथा हाथ पग विगेरे अवयवो पोतानी मेळेज विध्वंस (शून्य) थता होवाथी विध्वंसन धर्मवाळुं छे, तथा जेम रात्रीना अंते नक्की सूर्योदय थाय, ते ध्रुव कहेवाय, पण शरीर तेवुं न होवाथी अध्रुव कहेवाय छे, तथा अप्रच्युत (नाश न थाय) अनुत्पन्न (उत्पन्न न थाय) एवा एक स्थिर स्वभाववाळुं कूटनी अंदर नित्य रहेलुं छे, ते नित्य कहेवाय, पण तेवुं नित्य शरीर न होवाथी अनित्य छे, तथा तेवा तेवा रूपवडे पाणीनी धारा माफक शाश्वत होय तेवु शरीर न होवाथी अशाश्वत छे, तथा इष्ट अनु-

कूळ आहारना भोजनथी धृति उपष्टंभ विगेरेमां औदारिकशरीर वर्गणाना परमाणुना उपचयथी चय तथा घटवाथी अपचय छे; एवा धर्मवाळुं होवाथी अयापचयिक छे, एथीज विविध परिणामवाळुं छे, तेथी ते विपरिणाम धर्मवाळुं छे, जो आवी रीते शरीर नाशवंत छे, तो ते शरीर उपर शुं अनुबन्ध (ममत्व) होय? अने कइ रीते मूर्छा होय? तेथी आ शरीरवडे कुशल (धर्म) अनुष्ठान विना बीजी कोइ पण रीते सफळता नथी; ते कहे छेः—

पासह आ रुपसंधि (योग्य अवसर) ने जुओ! के नाशवंत धर्मथी घेरायलुं आ औदारिक शरीर छे, तेमां पांचे इन्द्रियोनी संपूर्ण शक्तिना लाभनो अवसर छे, अने ते देखीने जुदा जुदा रोगोथी उत्पन्न थयेला स्पर्शोना दुःखनो उत्तम साधु सहन करे, आ प्रमाणे (हृदयचक्षुथी) देखनारने शुं थाये, ते कहे छेः—

समुप्पेह माणस इक्कायणरयस्स इह विप्प मुक्कस्स नत्थि मग्गो विरयस्स त्तिबेमि (सू० १४८)

सारी रीते देखाताने आ भेदुर धर्मवाळुं शरीर छे, एवुं विचारतां तेने मार्ग नथी. अर्थात् चार गतिमां भ्रमण नथी. ते कहे छे. एटले आ आत्मने बधा पापारंभोथी मर्यादामां लेवाय-(कबजे रखाय) अथवा कुशल (धर्म) अनुष्ठानमां उद्यमवाळो कराय, तो ते आयतन कहेवाय अने ते ज्ञानदर्शन चारित्र ए त्रणमां एक रुपे होय तो ते एकायतन छे, अने तेमां रमणता करे तो आत्मा अकायतनरत छे, तेवा निस्पृही ज्ञानी मुनि 'इह' आ शरीर अथवा आ जन्ममां विविध उत्तम भावनाओवडे शरीरना अनुबन्धथी मुकाय, ते विप्रमुक्त छे, तेने नरकतिर्यंच मनुष्य गतिमां भ्रमण नथी, तेमज वर्तमानकाळ वतावाथी भविष्यमां पण भ्रमण नथी

एम कहुं, अथवा तेज जन्ममां वधा (आठे) कर्मनो क्षय थवाथी तेने नरकादि मार्ग नथी. प्रश्नः—कोने ! उः—जे हिंसा विगेरे आश्रव द्वारोथी निवृत्त छे. तेने संसार भ्रमण नथी. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे के हुं मारी स्वकल्पनाथी नथी कहेतो पण जे वीर वर्धमानस्वामीए दिव्य ज्ञानवडे जाणीने वचनथी कहुं ते हुं तमने कहुं छुं. आ प्रमाणे विरत ते मुनि छे, एम कहुं, हवे अविरत-वादी ते परिग्रहवाळो छे, एम पूर्वे कहेलुं, ते सिद्ध करे छेः—

आवंति केयावंती लोगंसि परिग्गहावंती, से अप्पं वाबहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा एएसु चेव परिग्गहावंती, एतदेव एगेसिं महब्भयं भवइ, लोग वित्तं च णं उवेहाए, एएसंगे अवियाणओ (सू० १४९)

जे कोइ मनुष्यो आ लोकमां परिग्रहयुक्त छे तेमनी पासे आवी रीतनो परिग्रह छे, 'से अप्पं वा' जे परिग्रहाय (लेवाय) ते परिग्रह छे ते अल्प (थोडो) होय, जेम छोकराने रमावानी कोडीओ, विगेरे अथवा धनधान्य, सोनुं, गाम, देश, विगेरे घणो परि-ग्रह होय; अथवा तृण, लाकडुं विगेरे मूल्यथी अणुं (ओछी किंमतनुं) होय; अथवा प्रमाण (कदमां) नानुं वज्र (हीरो) विगेरे होय; अथवा मूल्यथी तथा प्रमाणथी स्थूळ (मोटुं) हाथी घोडा विगेरे होयः अने आ वस्तुओ सचित्त अथवा अचित्त होय. आ बतावेला परिग्रहवडे परिग्रहवाळा बनीने ए परिग्रह राखनारा गृहस्थीओ साथेज वेषधारी साधुओ रहेनारा होय. (जेमके गृहस्थनुं घर अने वेषधारी मठ के स्वमालिकीनो उपाश्रय तथा गृहस्थने धन तेम वेषधारीनुं द्रव्य, तथा गृहस्थने नोकर—चाकरने बेटा—बेटीनो

परिवार. तेम वेषधारीने नोकर–चाकर अने चेला–चेलीनो व्यवसाय आ ममत्वभावे परिग्रह छे.)

अथवा आ छ जीवनिकायमांज अथवा विषयभूत [वस्तुरूप] थोडुं विगेरे जे द्रव्य कह्युं; तेमांमूर्छा करतां परिग्रहधारी बने छे.
तेज प्रमाणे अविरत [संसारी] रह्या छतां हुं विरत छुं, एवुं बोलतो अल्प–परिग्रह राखवाथी पण परिग्रहधारी बने छे. एज प्रमाणे
बीजां व्रतोमां पण जाणवुं. कारणके तेणे आस्रवोनुं निवारण न करवाथी एक देश (थोडो) अपराध करवाथी पण संपूर्ण अपराध-
पणानो संभव थाय छे.

शंका–जो, आ प्रमाणे अल्प–परिग्रह पण राखवाथी परिग्रहपणुं थाय छे. तो. हाथमां भोजन करनारा दिगम्बर–[वस्त्ररहित]
तथा सरजस्क बोटिक विगेरे जे छे, तेओ अपरिग्रहवाळा मुनि थशे. कारणके, तेमने तेवा थोडा परिग्रहनो पण अभाव छे.

आचार्यनुं समाधान—तेम नथी; कारणके, 'परिग्रहोनो अभाव छे.' ए हेतु अप्रसिद्ध [जूठो] छे. सांभळो सरजस्कने अस्थि
विगेरेनो परिग्रह छे, अने बोटिकोने पीच्छी विगेरेनो परिग्रह छे. आ (बाह्य परिग्रह छे,) तथा अंदरनो परिग्रह पण छे. कारणके,
शरीरधारी छे, तथा आहार विगेरे परिग्रह तेमने विद्यमान छे.

धर्मने टेको आपवारूप ते होवाथी निर्दोष छे एम कहेशो; तो, अमने पण ते समानज छे. तो पछी, दिगम्बर (नग्नपणाना)
आग्रहनो कदाग्रह शा माटे जोइए? हवे, जे अल्प (थोडो) विगेरे पण परिग्रह राखे छे, अने अपरिग्रहपणानो अभिमान राखे छे,
तेमनो आहार शरीर विगेरे मोटा अनर्थने माटे थाय छे, ते बतावे छे 'एत देव' ए अल्पबहुपणा विगेरेना परिग्रहवडे केटलाकने
परिग्रहपणुं नरकादि गमनना हेतुपणाथी अथवा बधाने तेनो अविश्वास थतो होवाथी महाभयरूप थाय छे, कारणके आ प्रकृति

(स्वभाव) परिग्रहनी छे, अथवा ते परिग्रहधारी पोते वधारी चमके छे. [के मारो परिग्रह कोइ न लइ ले !] अथवा दिगम्बरने आ शरीर नभाववा आहारादिक लेवा बीजुं अल्प पात्र त्वक्त्राण (कपडुं) विगेरे रूप धर्मोपकरणना अभावथी गृहस्थना घरमां आहार वापरतां सम्यग् उपायना अभावथी अविधिए अशुद्ध आहार विगेरे खातां कर्मबन्धथी उत्पन्न थएल महाभयनो हेतु होवाथी महाभय छे, तथा आ धर्म शरीरने बधी रीते आच्छादन (ढांकवाना) अभावथी बीभत्स होवाथी बीजाओने महा भयरूप छे.

आ प्रमाणे परिग्रह महाभय छे, तेथी कहे छे के 'लोग'—असंयत लोकनुं अल्प विगेरे विशेषवाळुं द्रव्य तेने महाभयरूप छे, (सूत्रमां च शब्द पुनः ना अर्थमां छे, पुं वाक्यनी शोभा माटे छे) अथवा लोक वित्तने बदले लोकवृत्त लइए तो आहार भय मैथुन परिग्रह संज्ञावाळुं लोकवृत्त छे. ते लोकनुं वलण मोटा भयने माटे छे. एवुं उत्तम साधुए ज्ञ परिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे ते लोकोनी संसारी चेष्टाओने त्यागी देवी, ते त्यागनारने शुं थाय, ते कहे छे, 'एएसंगे'—ए थोडुं घणुं द्रव्य संग्रह करवानुं अथवा शरीर आहार विगेरेनी मूर्छाने न करवाथी ते परिग्रह राखवाथी थतुं दुःख ते साधुने न थाय वळीः—

से सुपडिबुद्धं सूवणीयंति नच्चा पुरिसा परमचक्खू विपरिक्कम्मा, एएसु चेव बंभचेरं त्तिबेमि, से सुयं च मे अज्झत्थयं च मे—बधपमुक्खो अज्झत्थेव, इत्थ विरए अणगारे दीराहयं तितिक्खए, पमत्ते बहिया पास, अपमत्तो परिव्वए, एयं मोणं सम्मं अणुवासिज्जासि त्तिबेमि (सू० १५०) लोकसारअध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥५-२॥

से०—ते परिग्रह छोडनारने सारीरीते प्रतिबद्ध तथा सारी रीते उपनीत ज्ञान विगेरे छे, (परिग्रह छोडनारने सारीरीते त्रण
रत्नोनी प्राप्ति छे) एवुं जाणीने गुरु कहे छे, हे मानव ! तुं परम ज्ञान चक्षुवाळो बनीने अथवा मोक्षनी एकदृष्टिवाळो बनीने जुदी
जुदी जातना तप अनुष्ठाननी विधिवडे संयम अनुष्ठानमां पराक्रम कर' शा माटे आ पराक्रम करवानो उपदेश करे छे? 'एएसुचेव'
जेओ आ परिग्रहथी विरक्त बनीने परम चक्षुवाळा थया छे, तेओमांज परमार्थथी ब्रह्मचर्य छे, पण बीजामां नथी, कारणके ब्रह्म-
चर्यनी नववाड बीजामां नथी, अथवा ब्रह्मचर्य नामनो आ श्रुतस्कंध छे, अने तेनु वाच्य पण ब्रह्मचर्य छे, ते आ ब्रह्मचर्य परिग्रह न
राखनाराओमांज छे. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे, के में कह्युं, अने हवे कहीश, ते बधुं सर्वज्ञना उपदेशथी कहुं छुं, ते बतावे
छे, 'सेसुअंचमे'—जे जे कह्युं, अने जे हवेकहीश, ते में तीर्थंकर पासे सांभळ्युं छे, अने ते प्रमाणे मारा आत्मामां स्थिर थयुं, माटे
अध्यात्म छे, एटले मारा चित्तमां पण नेज प्रमाणे छे, शुं छे? ते बतावे छे, बन्धथी मोक्ष ते बन्ध प्रमोक्ष छे, ते अध्यात्ममांज छे,
अने अध्यात्म ते ब्रह्मचर्य छे, ब्रह्मचर्यवाळानो मोक्ष छे. वळी इत्थ आ परिग्रह राखवाथी विरत तेछे, प्र०—कोण छे? उ०—जेने गृह
नथी ते अणगार छे, ते साधु दीर्घरात्र (आखी जींदगी) सुधी परिग्रहना अभाववाळो बनीने भूख तरस विगेरेनां आवेलां कष्टोने
सहन करे, वळी गुरुउपदेश करे छे, 'पमत्ते'–विषयो विगेरे प्रमादोथी धर्मथी विमुख थएला गृहस्थो तथा वेषधारीओने तुं जो,
देखीने शुं करवुं ? ते कहे छे:—अप्रमत बनीने संयम–अनुष्ठानमां यत्न करे. वळी, 'एयम्' आ पूर्वे कहेलुं संयम–अनुष्ठान मुनिनुं
सर्व स्वमौन छे. ते सर्वज्ञनुं कहेलुं छे, ते सारीरीते पाळवुं आ प्रमाणे हुं कहुं छुं.

त्रीजो उद्देशो.

हवे त्रीजो उद्देशो कहे छे. तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे:—बीजा उद्देशामां कह्युं के:—अविरतवादी ते परिग्रहवाळो छे, अने आ त्रीजा उद्देशामां तेथी उलटुं कहे छे. आ प्रमाणे संबन्धथी आवेला आ उद्देशानुं पहेलुं सूत्र कहे छे.

आवंती केयावंती, लोयंसि अपरिग्गहावंती एएसु चेव अपरिग्गहावंती, सुच्चा वई मेहावी पंडियाण निसामिया समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए जहित्थ मए संधी झोसिए एवमन्नत्थ संधी दुज्जोसए भवइ, तम्हा बेमि नो निहणिज्ज वीरियं (सू० १५१)

आलोकमां जे कोइ परिग्रहवाळा विरत साधुओ छे, ते बधाए आ अल्प विगेरे द्रव्य छोडे; छते अपरिग्रहधारी मुनि बने छे, अथवा छ जीवनीकायमां ममत्त्वभाव तजवाथी अपरिग्रहधारी थाय छे.

प्र:—ठीक. पण, अपरिग्रहभाव केवी रीते बने ? ते कहे छे. 'सोच्चा वईति' (बीजी विभक्तिना अर्थमां प्रथम विभक्ति छे, तेथी) वाणी ते आ तीर्थंकरे कहेला आगमरूप—आज्ञाने सांभळीने मेधावी (मर्यादामां रहेलो) श्रुतज्ञान भणेलो हेयऊपादयने समजी तत्त्व ग्रहण करावानी प्रवृत्ति जाणनारो बने; तथा, पंडित ते गणधर आचार्य विगेरेनां विधि नियमरूप—वचनोने सांभळी सचित्त—अचित्त वस्तुनो जाण बनी तेना परिग्रहनो त्याग करी अपरिग्रही बने प्र:—ठीक तेम हशे; पण, निरावरण ज्ञान उत्पन्न थएला तीर्थंकरोनो क्ये समये वाणीनो योग (उपदेश) थाय छे, के अमे सांभळीए ?

उत्तरः—धर्मकथाना अवसरमां, प्र:-तेओए केवो धर्म कह्यो? एवी शंका दूर करवा कहे छे. 'समिय' समता एटले, शत्रु-मित्रमां समभाव राखवो; तेनावडे आर्योए धर्म कहेलो छे. कह्युं छे केः—

जो चंदणेण बाहुं, आलिंपइ वासिणाव तच्छेति । संथुणइ जोअणिंदति, महेसिणो तत्थ समभावा ॥१॥

जे कोइ भक्तिथी मुनिने भुजा उपर चंदननो लेप करे, अथवा वांसलाथी चामडी छोले, अथवा कोइ स्तुति करे, कोइ निंदे, तो पण ते मुनि बधा जीवो उपर समभाव राखे छे. (तेज महर्षि छे) अथवा आर्य एटले देशथी भाषाथी के उत्तम आचरणथी तेओ आर्य (सुधरेला) छे, ते बधा उपर भगवाने समभाव राखी उपदेश आपेलो छे. तेज कह्युं, छे केः—

जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ—विगेरे

जेम पुण्यवानने धर्म संभळावे, तेम तुच्छने पण धर्म संभळावे अथवा शमि (शम शांतिधारक) नो भाव ते शमिता ते शांत हृदय राखीने बधा हेय धर्म (कुरीवाजो) ने त्यागवाथी आर्य बनेला तेमणे प्रकर्षथी अथवा प्रथमथी आ धर्म कह्यो छे अर्थात् पांचे इन्द्रियो तथा मनने कबजे करवा वडे (केवळज्ञान प्र प्त करी) तीर्थकरोए धर्म कह्यो. ठीक एम हशे, तेवीरीते बीजाओए पण पोताना अभिप्राय प्रमाणे धर्मो कह्या छेज, आवी शंका थाय, ते दूर करवा आचार्य कहे छे, के तेम नहीं. आ धर्म भगवानेज कह्यो छे, ते कहे छे, 'जहेत्थ' विगेरे देवता अने मनुष्यनी सभामां भगवाने आ प्रमाणे कह्यु, जेम में अहीं ज्ञान विगेरे मोक्ष संधि (अवसर) सेवन कर्यो छे, अथवा आ ज्ञानदर्शन चारित्ररूप मोक्षमा ्मां अथवा समभावरुपमां तथा इन्द्रिय नोइन्द्रियना उपशममां में

मोक्षाभिलाषी वनी पोतानी मेळज संधाय (ते संधि) अथवा जे कर्मसंतति सन्धाय अने एक भवथी बीजा भवमां साथे जाय ते आठ प्रकारना कर्मसंततिरूप छे. तेने क्षय करी में (तीर्थंकरोए) धर्म कह्यो. तेज मोक्ष माग छे, पण बीजो नहीं. ते कहे छे जेम में अहीं कर्मसमूह (संधि) तोड्यो. तेम अन्यत्र बीजा अन्य तीर्थी के कहेला मोक्षमार्गमां कर्मसंततिरूप संधि दुःक्षय ते दुःखे करीने क्षय थाय तेम छे, कारण के ते असमीचीनपणे होवाथी तेमां खरा उपायनो अभाव छे.

जो जिनेश्वरे अहीं कर्म संधि तोड्यो छे, तो शुं समजवुं ते कहे छे, जेम आज मार्गमां रहीने उत्कृष्ट तपश्चर्यावडे में कर्म खपाव्युं, तेज प्रमाणे अन्य मुमुक्षु पण संयम अनुष्ठानमां तथा तपमां पोतानी शक्तिने योजे, पण प्रमाद न करे, सुधर्मास्वामीए पोताना शिष्यने कह्युं, के आ प्रमाणे परम कारुण्यथी भींजायेला हृदयवाळा अने परहितनो एक उपदेश देनारा श्रीवीरवर्धमानस्वामीए अमने कह्युं छे. प्रश्न क्यो माणस एवी क्रिया करनारो थाय? ते कहे छे.

जे पुव्वुट्ठाई नो पच्छा निवाई, जे पुव्वुट्ठाई पच्छा निवाई, जे नो पुव्वुट्ठायीनो पच्छा निवाई

सेऽवि तारिसिए सिया, जे परिन्नाय लोगमन्ने सयंति ॥ सू० १५२ ॥

जे कोइए संसारनो (अस्थिर) स्वभाव जाणवावडे धर्म चरणमां एक तत्पर मनवाळो वनीने प्रथमथी दीक्षाना अवसरे संयम अनुष्ठान करवाने तैयार थएलो होय ते 'पूर्वोत्थायी' छे, अने पछीथी श्रद्धा तथा संवेगथी विशेषथी वधता परिणामवाळो होय, तो ते चारित्रथी भ्रष्ट थतो नथी, (पडवाना स्वभाववाळो ते निपाती छे. एटले चारित्र लेइने निपात करे ते निपाती छे, आवो निपाती

न होय ते नोनिपाती कहेवाय) एटले सिंहपणे घरथी नीकळी दीक्षा ले, अने लीधा पछी सिंह माफक पाळे, ते गणधर भगवंत जेवा पहेला भांगामां साधु जाणवा.

बीजो भांगो सूत्रवडे बतावे छे, पहेलां-चारित्र ले ते पूर्वोत्थायी पछी कर्म परिणतिना विचित्रपणाथी तेवी भवितव्यताना कारणे नंदिषेण माफक पडी जाय (चारित्र मूकी दे) अने कोइ तो गोष्ठामाहिल माफक सम्यग्दर्शनथी पण दूर थाय.

त्रीजा भांगामां अभाव होवाथी लीधो नथी, ते आ छे, 'जेनोपुव्वुट्ठायी पच्छानिवाती' एटले पूर्वे दीक्षा ले, तो पछी निपात के अनिपात कहेवाय. धर्मवाळो होय, तो धर्मनी चिंता कहेवाय, पण दीक्षा लीधानोज निषेध होय तो दीक्षामां रह्यो, के गयो, तेनी चिंताज ते संबंधी दूर रही, चोथो भांगो बतावे छे.

जेणे पूर्वे दीक्षा लीधी नथी; ते पाछळथी पडतो नथी, ते अविरत एटले, गृहस्थ जाणवो; तेने सम्यग् विरतिना अभावथी पोते दीक्षा लेतो नथी; अने दीक्षा लीधा पछीज पडवानो संभव थाय; पण, दीक्षा लीधा विना तेनो संभव न होवाथी पडतो नथी; अथवा ते भांगामां शाक्यमत विगेरेना साधुओ जाणवा. कारण के तेमनामां चारित्र लेवुं अने मुकीदेवुं ए जैन रीतिए बन्नेनो अभाव छे.

शंकाः—गृहस्थो चोथा भांगामां छे ते बोलवुं योग्य छे, कारणके तेमनामां सावद्य-अनुष्ठान छे, अने दिक्षा न लेवाथी महाव्रतने लेवानी प्रतिज्ञारूप-मंदीर (मेरु) पर्वतना आरोप (चडवा)ना अभावथी पडवानो अभाव छे. पण शाक्यमत विगेरेने दीक्षा लेवाथी पडवानो संभव छे, तो केवी रीते पडवानो अभाव न होय ?

उत्तरः—'सोपि'-ते शाक्यादि साधु साधुसमुदायने पण पंचमहाव्रतभारना आरोपणना अभावथी तथा तेमनां अनुष्ठान

सावद्य व्यापारवाळां होवाथी पूर्वोत्थायी नथी, तेम दीक्षाना अभावथी पश्चात् निपाता पण नथी तेथी ते गृहस्थ समानज छे, कारण के ते वन्नेमां आस्रवद्वारोनुं रोकण नथी, अथवा उदायी राजाने मारनारा विनय रत्न साधु जेवो कपटी चोथे भांगे छे. तेज प्रमाणे वीजा पण जेओ सावद्य अनुष्टान करनारा छे. ते पण नेवाज छे, ते वतावे छे. जेओ स्वयूथ्या (जैन मतना) पासत्था (पतित साधु विगेरे वन्ने प्रकारनी परिज्ञावडे लोकस्वरूपने जाणी (व्रत समजीने लेइने) पाछा रांधवा रंधाववा माटे तेज लोक (गृहस्थो)ने आश्रये रहे छे, अथवा गृहस्थने शोधे छे (तेना उपर ममत्व करी आधाकर्मी आहार ले छे.) तेओ पण गृहस्थ सरखाज जाणवा, आ पोतानी वुद्धिथी नहीं पण शास्त्रकारनुं वचन छे, ते वतावे छेः—

एयं नियाय मुणिणा पवेइयं, इह आणाकंखी पंडिए अणिहे, पुव्वावररा यंजयमाणे, सया सीलं सुपेहाए सुणिया भवे अकामे अझंझे, इमेण चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ? ॥ सू० १५३ ॥

एतद्—जे उत्थान निपात विगेरे पूर्वे वताव्युं. ते केवळ ज्ञानना अवलोकनवडे जाणीने तीर्थकरे कह्युं छे, अने आ वीजुं कह्युं छे, 'इह' आ मौनींद्र प्रवचनमां रहेलो तथा तीर्थकरना उपदेशने सांभळवानी इच्छावाळो ते, आज्ञाकांक्षी आगमना अनुसारे प्रवृत्ति करनारो छे. प्रः—कोण एवो छे? उः—सद्—असद्ना विवेकने जाणनारो तथा स्नेहरहित रागद्वेषथी प्रमुक्त रातदिवस गुरुनी आज्ञामां रहेनारो यत्नवाळो थाय; ते वतावे छे. रात्रिना पहेला पहोरे तथा छेला पहोरे सदाचारथी वर्ते; अने वचला वे पहोरमां यथोक्तविधिए निद्रा ले, अने वैरात्रादिक (सूत्रार्थ-चिंतन) करे. आ प्रमाणे रात्रिनी यत्ना वतावथी दिवसनुं पण समजी लेवुं कारणके,

आदिअंत लेवाथी मध्यनुं अवश्य आवी जाय छे. 'किं च' वळी 'सदा' सर्वकाळ १८००० भेदवाळुं शीलव्रत अथवा संयम पाळे; अथवा शीळ चार प्रकारनुं छे. महाव्रतने सारीरीते पाळवां, त्रण गुप्तिओ पाळवी.

पांच इन्द्रियोनुं दमन करवुं; कषायनो निग्रह करवो. आ प्रमाणे चार प्रकारनुं शीळ विचारीने मोक्षना अंगपणे पालन करजे; पण एक नीमेष (आंखने फरकवानो काळ) मात्र पण प्रमादिवश न थइश. प्रः—क्यो माणस शीळनो संप्रेक्षक थाय? ते कहे छेः—

जे शीळनां रक्षणनुं फळ (मोक्षगमन) छे, तथा कुशील सेववानुं फळ नरकगमन विगेरे आगमथी जाणे छे, ते गीतार्थसाधु 'अकाम'—इच्छा मदन काम (संसारी वासना)रहित बने, तथा तेने झंझा (माया अथवा लोभ इच्छा) न होय, तेथी अझंझ कहेवाय, अने काम तथा झंझानो प्रतिषेध करवाथी मोहनीयना उदयनो प्रतिषेध कर्यो, अने तेना प्रतिषेधथी शीलवाळो बने, एनो भावार्थ आ छे, के धर्म सांभळीने अकाम (सुशील) थाय, अने अझंझ थवाथी अमायी थाय, आ बन्ने गुणथी उत्तर गुण लीधा, अने ते उपलक्षणथी मूळगुण (महाव्रत) पण लीधां, तेथी अहिंसक सत्यवादी पण थाय, विगेरे समजी लेवुं.

शंका—जीवथी शरीर जुदुं छे, आवी भावना भावनार तथा पोतानुं बळ वीर्य गोपव्या विना धर्म करनार १८००० शीलींग धारण करनारने तथा उपदेशमां कहेवा मुजब वर्त्तवा छतां पण मारो सर्वथा कर्ममल दूर नथी थयो, तेथी तमे तेनुं असाधारण कारण कहो ! के जेना वडे हुं शीघ्र संपूर्ण कर्ममल कलंकथी रहित थाउं, हुं आपना उपदेशथी सिंह साथे पण युद्ध करीश, कारण के कर्म क्षय करवा माटे हु तैयार थयो छुं, तेथी कंइ पण मने अशक्य नथी

तेनो उत्तर सूत्रकार आपे छे, इन्द्रिय तथा मनरूप औदारिक शरीरवडे तुं युद्ध कर, कारणके ते विषयसुखनो पिपासु बनी

स्वेच्छाए चाली तारुं अहित करे छे, तेथी एनेज सुमार्गे चालीने वश कर, बीजा बाह्य शत्रु साथे युद्ध करवानी शी जरुर छे? अंदर रहेला तारा छ रिपुनो जय करवाथी वधुं कार्य सिद्ध थशे, तेथी बीजुं कंइ पण वधारे दुष्कर नथी पण आज संयम विगेरे सामग्री अगाध संसारसमुद्रमां भटकता जीवने करोडो करोडो (हजारो) भवे पण मळवी दुर्लभ छे! ते सूत्रकार बतावे छेः—

जुद्धारिहं खलु दुल्लहं, जहित्थ कुसलेहिं परिन्नाविवेगे भासिए, चुए हु बाले गब्भाइसु रज्जइ, अस्सिं चेयं पवुच्चइ, रूवंसि वा छणंसि वा, से हु एगे संविद्धपहे मुणी, अन्नहा लोगमुवेहमाणे, इय कम्म परिण्णाय सव्वसो से न हिंसइ, संजमई नो पगब्भइ, उवेहमाणो पत्तेयं सायं, वण्णाएसी नारभे कंचणं सव्वलोए एगप्पमुहे विदिसप्पइन्ने निव्विण्णचारी अरए पयासु ॥१५४॥

आ औदारिक शरीर भाव युद्ध करवाने योग्य छे, (खलु शब्द निश्चयना अर्थमां छे, अने ते भिन्न क्रमवाळो छे) ते खरेखर दुर्लभज छे, अर्थात् ते दुःखथीज प्राप्त थाय छे, कहुं छे केः—

ननु पुनरिदमतिदुर्लभमगाधसंसारजलधिविभ्रष्टम, मानुष्यं खद्योतकतडिल्लताविलसितप्रतिमम् ॥ १ ॥

आ अति दुर्लभ मनुष्यपणुं अगाध संसारसमुद्रमां पडेलाने खरजुवा (अगीयो कीडो) जेवुं के वीजळीना झबकारा जेवुं थोडो काळ रहेनारुं मळेलुं छे! विगेरे समजवुं जोइए.

अथवा वीजी प्रतिमां 'जुद्धारियं च दुल्लहं' पाठ छे, तेमां संग्राम (लडाइनुं) युद्ध अनार्य [जंगलीपणानुं] छे, अने परिषह विगेरेथी लडवुं ते आर्य युद्ध छे, तेथी ते दुर्लभ छे. माटे हे शिष्य! तेनी साथे युद्ध कर, तेथी तारां बधां कर्मना क्षयरुप-मोक्ष थोडा वखतमांज थशे; अने तेथी भावयुद्ध करवा योग्य औदारिक-शरीर मेळवीने कोइक मनुष्य तो, तेज भवे मरुदेवी माफक बधां कर्मनो क्षय करे छे, कोइ तो, भरत राजा माफक (पूर्व भवो आश्रयी) सात आठ भवमां मोक्ष मेळवे छे, अने कोइ ती अर्धपुद्गल परावर्तन थया पछी मोडा मेळवे छे, पण अपर (अभवी) मोक्षे नहीं जाय शा माटे? ते कहे छे, जेम जे प्रकारे आ संसारमां कुशल तीर्थकरोए परिज्ञा विवेक (परिज्ञान विशिष्टता) कोइनो कंइ पण अध्यवसाय संसारनो विचित्र हेतु बताव्यो छे, अने तेज बुद्धिमाने स्वीकारवो जोइए, हवे पूर्वे कहेलुं परिज्ञाननुं जुदाजुदापणुं बताववा कहे छे,

(भव्य अने अभव्यपणुं स्वभावथीज छे. भव्य काळांतरे पण मोक्षमां जशे, पण अभव्य नहीं जाय) कोइ दुर्लभबोधि दुर्लभ पण मनुष्यपणुं पामीने तथा मोक्षगमनना एक हेतुरूप धर्म पामीने पण कर्मना उदयथी फरीथी पण धर्मथी भ्रष्टथइ बाल (मूर्ख) जीव गर्भ विगेरेमां जाय छे, एटले गर्भ जेवां प्रथम छे, एवी कुमार यौवन विगेरे अवस्थाओमां गृद्ध थइ जाय छे, अने (एने प्रियमानीने) ए अवस्थाओ साथे मारो वियोग न थाओ एवा विचारवाळो बने छे, अथवा धर्मथी भ्रष्ट थइने एवां काम करे छे, के जेनावडे ते वाळजीव तेवी तेवी गर्भ विगेरेनी पीडाओना स्थानमां उत्पन्न थाय छे, "रिज्जइ" (कोइ प्रतिमां पाठ छे) एटले जाय छे (एवो अर्थ लेवो) प्र०—ठीक, एम हशे पण आवुं क्यां कह्युं छे? उ०—जे पूर्वे कह्युं छे, के आ जिनेश्वरना वचनमां प्रकर्षथी कह्युं छे. अने हवे पछी पण तेज कहे छे, 'रूपे'-चक्षु इन्द्रियना विषयमां रागी थएलो, अथवा रस इन्द्रियमां स्पर्श इन्द्रियमां रागी थएलो

क्षणमां प्रवर्ते छे, क्षणनो अर्थ हिंसा छे, तेथी जेम ते हिंसामां वर्ते छे, तेम जूठ विगेरेमां पण प्रवर्त्ते छे, पण रुप विषयोमां प्रधान होवाथी तथा ते रुपवाळुं होवाथी (तुर्त तेमां मन दोडतुं होवाथी) लीधुं छे, अने आस्रव (पाप) द्वारोमां हिंसा मुख्य अने प्रथम होवाथी ते लीधेल छे, अर्थात् अज्ञानी माणस रुप विगेरे माटे धर्मथी भ्रष्ट थइने गर्भ विगेरेनां दुःख भोगवे छे. एम आ जिनेश्वरना मार्गमां कहेल छे, पण जे डाह्या माणसे आ विषय रसने पाछुं गर्भादि गमननो हेतु जाणीने पोते धर्मथी भ्रष्ट न थइने हिंसा विगेरे आस्रव द्वारथी दूर रहे छे, ते केवो थाय, ते कहे छे. ते एकलोज जीतेन्द्रिय मुनि त्रण जगतने माननारो बनीने सम्यग् रीते तेणे मोक्ष मार्ग पग तळे खुंदी नांख्यो छे, एटले ज्ञान दर्शन चारित्रवडे मोक्ष मार्ग संमुख कर्यो छे. तथा बीजी प्रतिमां 'संविद्ध भये' पाठ छे, एटले ते जीतेन्द्रिय मुनिए भय जाण्यो छे, एटले जे हिंसा विगेरे आस्रवद्वारथी दूर रहे ते मुनिज खुंदेला मोक्ष मार्गवाळो छे. वळी बीजी रीते मुनि होय ते कहे छे, जे विषय कषायथी पराभव पामेलो छे, हिंसा विगेरे कृत्यमां रक्त छे, तेवो गृहस्थ अथवा पाखंडी जन समूह छे तेने रांधवा रंधाववामां अथवा औद्देशिक तथा सचित्त आहार विगेरेमां रक्त छे. तेवानी (दुर्दशा विचारी) तेनी संगति न करतो, अने तेवा पापमां पोताना आत्माने न जोडतो, अशुभ व्यापार छोडीने, मोक्ष मार्ग जाणनारो मुनि बने छे, लोकने उलटा मार्गे चालेला जोइने पोते शुं करे? ते कहे छे.

पूर्वे कहेला अशुभ हेतुओथी जे कर्म बांध्युं छे तेना उपादान कारणो संपूर्ण ज्ञ परिज्ञावडे समजीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे सर्वथा छोडे, केवीरीते छोडे ते कहे छे. 'स' ते कर्म छोडनारो काय वाचा अने मन वडे जीवोनी हिंसा न करे, न मरावे, मारताने भलो न जाणे, वळी पापोना उपादानमां प्रवर्त्तता पोताना आत्माने रोके, अथवा सत्तर प्रकारना संयममां आत्माने जोडे, अथवा आ चार

संपूर्ण पाळवा संयम माफक पोते आचरण करे, वळी 'नो पगब्भइ' एटले असंयम कर्ममां (पापना उदयथी) प्रवर्त्ततो छतां प्रगल्भता (धृष्टपणुं) न करे, पापना उदयथी छानुं कुकर्म करे तो पण लज्जायमान थाय, (पश्चात्ताप करे) पण धृष्टता न करे (के एमां शुं पाप छे?) वळी, आ बतावबाथी एम सूचव्युं के मोक्ष मार्गे जणेलो मुनि क्रोध न करे, न जाति विगेरेनो अहंकार करे, न कपट करे, न लोभ करे शुं आलंबीने आ करे? ते कहे छे. 'उत्प्रेक्षमाणः' बधां प्राणीना मनने पोतानुं अनुकूळ ते साता (सुख) छे, पण बीजाना सुख वडे पोते सुखी नथी, तेम पारकाना दुःखे दुःखी नहीं, तेवुं जाणीने पोते हिंसा न करे, दरेक प्राणीना सुखने विचारतो मुनि शुं करे? ते कहे छे, जेनावडे प्रशंसा थाय ते वर्ण (कीर्ति) छे. तेनो अभिलाषी बनीने बधा लोकमां कोइपण जातनो पापारंभ न करे. अथवा तपसंयम विगेरेनो आरंभ पण यशकीर्ति माटे करे नहीं, पण प्रवचन (जैनशासन)नी प्रभावना माटे करे, तेवा प्रभावको नीचे मुजब छेः—

प्रावचनी धर्म्मकथी वादी नैमित्तिकस्तपस्वी च। विद्यासिद्धः ख्यातः कविरपि चोद्भावका स्त्वष्टौ ॥१॥

सिद्धांत् भणेलो, धर्म कथा कहेनार, वादी (न्यायनो अभ्यासी) ज्योत्सी (जोशी) तपश्चर्या करनार, विद्या (चमत्कारवाळो) सिद्ध मंत्रवाळो. कवि ए आठ धर्मना प्रभावको छे. अथवा वर्ण ते रुप, तेनो अभिलाषी न बने एटले सुगंधी तेल विगेरे नलगाडे, केवो बनीने आ सदाचार पाळे? 'एको'—बधां मल कलंक दूर थवाथी एक ते मोक्ष छे, अथवा रागद्वेषना रहितपणाथी एक ते संयम छे. तेमां जेनुं मुख गएलुं छे, तथा मोक्ष अथवा तेना उपायमां एक दृष्टि (लक्ष्य) राखीने कंइपण पापारंभ न करे, वळी मोक्ष तथा

संयम तरफ छे. ते दिशा, अने ते सिवायनी बीजी विदिशा छे, तेमांथी प्रकर्षे तरेलो ते विदीक् प्रतीर्ण छे, अने एवो होय ते आरंभ रहित बने, कुमार्गनो परित्याग करवाथी ते पापारंभनो अन्वेषी न होय, वळी चरण ते चार छे, अने ते अनुष्ठान छे. निर्विण्णनुं अनुष्ठान करे ते निर्विण्णचारी छे, क्यांथी होय? ते कहे छे. 'प्रजास्वरतः' वारंवार जन्मे ते प्रजा (प्राणीओ) तेमां अरत होय, एटले तेना आरंभथी निवृत्त होय, अथवा ममत्व विनानो होय, अने शरीर विगेरेमां पण जे ममत्व रहित होय ते निर्विण्णचारीज होय छे, अथवा प्रजा (स्त्रीओ) तेमां अरक्त होय ते आरंभमां पण निर्वेद (मोहरहित) होय, कारणके कारणना अभावमां कार्यनो पण अभावज होय छे, अने जे प्रजामां अरक्त अने आरंभरहित छे, ते केवो होय? ते कहे छेः—

से वसुमं सव्वसमन्नागयपन्नाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावकम्मं तं नो अन्नेसी, जं संमंति पासहा तं मोणंति पासहा जं मोणंति पासहा तं संमंति पासहा, न इमं सक्कं सिढिलेहिं अद्दिज्जमाणेहिं गुणासाएहिं वंकसमायारेहिं पमत्तेहिं गारमावसंतेहिं, मुणी मोणं समायाए धुणे सरीरगं, पंतं लूहं सेवंति वीरा सम्मत्तदंसिणो, एस ओहंतरे मुणी, तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए त्तिबेमि ॥ सू० १५५ ॥ लोकसारेतृतीयोद्देशकः ॥ ५–३ ॥

वसु ते द्रव्य छे, अने अहीं तेनो अर्थ संयम छे, ते जेने होय ते निवृत्तारंभवाळो छे. अने ते मुनि वसुवाळो छे, तथा जे

आत्माने सर्व सम्यक्प्रकारे आवेलुं [मळेलुं] प्रज्ञान ते बधा पदार्थोंनो प्रकाश करनारुं छे. तेवा आत्मावडे (पदार्थोंनुं पुरुं ज्ञान प्राप्त करेलाए) जे पापकृत्यो करवा योग्य नथी ते पोते कदीपण करवाने इच्छतो नथी, अर्थात् पोते परमार्थने जाणेलो होवाथी पोते सावद्य अनुष्ठान करतो नथी, जे सम्यग् प्रज्ञान छे, आ जगत प्रत्यागत सूत्रवडेज बतावे छे. सम्यग् एटले सम्यग्ज्ञान अथवा सम्यक्त्व छे. तेनी साथे चारित्र छे, आ बन्नेनुं सहभावपणुं होवाथी एकनुं ग्रहण करवाथी बीजुं पण ग्रहण करेलुं जाणवुं, ए न्याय छे, जे आ सम्यग्ज्ञान अथवा सम्यक्त्व छे. ते [हे शिष्यो] तमे जुओ के मुनिनो भाव ते मौन छे, एटले संयम अनुष्ठान ते मौन छे. तेने जुओ, तथा जे मौन छे, ते सम्यग्ज्ञान अथवा निश्चय सम्यक्त्व छे. ते तमे जुओ, कारणके ज्ञाननुं फळ विरति छे. तथा ज्ञान छे ते सम्यक्त्वने प्रकट करवापणे छे. तेथी ते सम्यक्त्वज्ञान चरण त्रणेनी एकता जाणवी, अने आ जेवा तेवाथी पाळवुं शक्य नथी, माटे कहे छे के आ सम्यक्त्व विगेरे त्रण सारीरीते करवां तेने शक्य नथी ते कोने ? शिथिल पुरुषो जेओ अल्प परिणामपणे मंद वीर्यवाळा छे, तथा जेमनांमां संयम तपनी धीरज तथा दृढपणुं नथी तेमने संयम पाळवो अशक्य छे, वळी [आर्द्रैः] पुत्र कलत्र विगेरेना प्रेमथी जेमनुं हृदय भींजायलुं छे, तेमने पण संयम दुष्कर छे, तथा जेमने गुणो ते शब्द विगेरेनो आस्वाद छे, तेमने संयम अशक्य छे, वळी वक्र समाचारवाळा (कपटी) ओने अशक्य छे, तथा विषय कषाय बिगेरेथी प्रमादी छे तथाजेओने घर उपर ममत्व छे. ते अगर सेवनारा (मठधारी बनेला) ने पाप वर्जनरूप संयम (मौन) अनुष्ठान करवुं अशक्य छे, [सूत्रमां अ नो लेप थवाथी गार छे. पण अगार लेवुं.] प्रः—त्यारे केवी रीते शक्य थाय? मुनि ते त्रण जगत्‌ने माननारो, तेनुं मौन ते मुनिपणुं (बधां पापकर्म त्यागवारूप) छे. ते ग्रहण करीने औदारिक शरीर अथवा कर्म शरीर दूर करे, ते धूनन (दूर करवुं) केवी रीते थाय ? ते कहे छे. प्रान्तवासी अथवा

वाल चणादि अथवा अल्प आहार ले, ते पण विगइ रहित लुखो ले, आवो आहार कोण ले ? वीर पुरुषो कर्म विदारण करवाने समर्थ होय तेवा, वळी ते केवा छे ? सम्यक्त्वदर्शिओ अथवा समत्वदर्शिओ छे, अने जे तुच्छ लुखो आहार खानारो छे, तेने शुं गुण थाय ते कहे छे के, उपर वतावेल उत्तम गुणवाळो भावौघ (संसार) ने तरे छे, कोण तरे ? मुनि होय ते, (अने तेवा गुण धारण करावथी) हमणाज वर्तमानकाळमां तीर्ण (तर्या जेवो)ज छे, अने ते वाह्य अभ्यंतर संगना अभावथी मुक्त जेवोज छे.

प्रः—आवो कोण छे ? उः—जे सावद्य अनुष्ठानथी विरत होय ते. आ प्रमाणे वताव्यो सुधर्मास्वामी कहे छे के में एम भगवान महावीर पासे सांभळ्युं ते तमने कह्युं.

॥ लोकसारअध्ययनमां त्रीजो उद्देशो समाप्त थयो ॥



चोथो उद्देशो.

हवे चोथो उद्देशो कहे छे, तेनो संवन्ध आ प्रमाणे छे, पहेला उद्देशामां हिंसा करनार विषयारंभ करनार एकलविहारी होय तो पण तेने मुनित्वनो अभाव वताव्यो, पण वीजा अने त्रीजामां तो हिंसा अने विषयारंभ तथा परिग्रह छोडवावडे साधुपणुं छे, तथा हिंसा करनार परिग्रहधारीना दोषो वताव्या. अने तेनाथी विरत (मुक्त) होय तेज मुनि छे, एम वताव्युं. अने आ चोथा उद्देशामां एकला फरनाराने मुनिपणानो अभाव छे, तेथी तेनो दोषो वताववावडे कारणो कहे छे. आ प्रमाणे संवन्धथी आवेला चोथा उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छेः—

गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जायं दुप्परक्कंतं भवइ, अवियत्तस्स भिक्खुणो ॥ सू० १५६ ॥

बुद्धि विगेरे गुणोनो ग्रास करे (नाश करे) ते ग्राम छे. एक गामथी बीजे गाम जवुं ते ग्रामानुग्राम छे, दूयमान ते विचरतो (धातुना अनेकअर्थ छे) अर्थात् गाम गाम जे साधु तेने केवो दोष लागे ते कहे छे, दुष्ट गमन ते दुर्यात छे एटले एकलो विचरे तो निंनीदय छे, तेने अनुकूल प्रतिकूल उपसर्गना कारणे कांतो अरणीक मुनि माफक ते गृहस्थ बनी जाय, तथा गतिमां भेद करवाथी दुष्ट व्यंतरीनी जंघा छेदवा माफक (प्रतिकूल उपसर्गमां चारित्रथी अश्रद्धावाळो) थाय, एटले एकलविहारीने गमन करतां उपरनो दोप लागे छे, तथादुष्ट पराक्रांत एटले एकलो साधु जे मकानमां रहे, तेने चारित्रभ्रष्ट थवानुं कारण थाय छे. जेमके स्थूलभद्रनी इर्षा करनार कोश्या वेश्याने घेर चोमासुं करवा जनार सिंह गुफावासी मुनिने पतित थवा वखत आव्यो, अथवा चतुष्प्रोषित भर्तृकाना घेर रहेला मुनिने पोते महासत्ववान होवाथी अक्षोभ होवा छतां पण दुष्पराक्रांत थयुं, पण ए प्रमाणे बधाने दुर्यात दुष्पराक्रांत थतुं नथी, ते बतावा विशेष खुलासो करे छे, के अव्यक्त (भिक्षा लेनार ते) भिक्षुने ते दोप लागे छे, ते अव्यक्त श्रुत अने वयथी थाय छे. ते बतावे छे, श्रुति अव्यक्त ते आचार प्रकल्प (ब्रहत् कल्प) अर्थथी न भण्यो होय, आ स्थविरकल्पीने आश्रयी छे, पण गच्छथी निकळेला जिनकल्पीने नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तु सुधीनुं ज्ञान जोइए. अने वयथी अव्यक्त ते गच्छमां रहेलाने १६ वर्ष अने जिनकल्पीने ३० वर्षनी उंमर जोइए, अहीं चोभंगी थाय छे.

[१] जे श्रुत तथा वयथी अव्यक्त (अपूर्ण) छे तेने एकलविहार न कल्पे, कारण के तेने संयम तथा आत्मा (पोता)नी

विराधनानो संभव छे.

[२] श्रुतथी अव्यक्त पण वयथी व्यक्त छे, तेने पण अगीतार्थपणाथी संयम तथा आत्म विराधनानो संभव होवाथी एकल विहारनो निषेध छे.

[३] तथा श्रुतथी व्यक्त पण वयथी अव्यक्त होय तेने पण बाळकपणाथी सर्व प्रकारे पर भवना कारणे अने विशेषथी चोर तथा कुलिंगि (अन्य दर्शनी बावा विगेरे) नो भय छे, तेथी तेने पण एकलविहार न कल्पे.

[४] पण जे बन्ने प्रकारे व्यक्त छे, तेने कारण पडे अथवा प्रतिमा स्वीकारी होय, अथवा (उचित सोबतीना अभावे) एकल-विहार करवो पडे तो करे, आवाने पण कारणना अभावमां एकलविहारनी आज्ञा आपी नथी. कारण के ते एकलविहारमां इर्या समिति तथा गुप्ति विगेरेमां घणा दोषो थाय छे, ते बतावे छे.

[१] एकलो भमतां जे इर्यापथ (मार्ग) जोतो चाले, तेने पछवाडे कूतरा विगेरेनुं देखवुं बनी शके नहीं, अने कूतरा विगेरेने देखवा जाय तो इर्या पथनुं भान न रहे, ए प्रमाणे बधी समितिओनुं जाणी लेवुं, वळी अजीर्णना कारणे अथवा वायुना रोकवाथी अथवा रोगो उत्पन्न थतां संयम तथा आत्मानी विराधना थाय. तेथी जैन शासननी पण हीलना थाय, तथा तेना उपर दया लावीने गृहस्थो तेनी चाकरी करे, तो अज्ञानपणाथी छकायनुं उपमर्दन करतां संयमने बाधा उपजावशे, अने तेवो दयाळु गृहस्थ न मळे तो दवा न करवाथी ते साधुनी आत्मविराधना थाय, तथा अतिसार (झाडा) विगेरेमां पेशाब झाडा, विगेरेथी कपडां तथा शरीर खरडाइ जवाथी दुगंच्छा आवतां लोको जैन धर्मनी हीलना [निंदा] करे, वळी गामडा विगेरेमां रहेतां ब्राह्मण विगेरे केश लुंचन विगेरेथी

अधिक्षेप [तिरस्कार] करतां परस्पर विवाद थतां मारामारीनो पण वखत आवे, आ वधुं गच्छमां रहेला समुदायमां विचरताने न संभवे, कारण के क्रोध विगेरे थतां गुरु उपदेश आपी बन्नेने शांत राखे. कह्युं छे छे—

अक्कोसहणणमारणधम्मब्भंसाण बालसुलभाणं । लाभं मण्णइ धीरो, जहुत्तराणं अभावंमि ॥ १ ॥

आक्रोश वध मार धर्म भ्रंश विगेरे बालकोने सुलभ छे, आटलुं छतां उत्तरना दोषोना अभावे धीर माणस तेमां लाभ माने छे, अर्थात् समुदायमां रहेनारो कोइथी लडे तो गुरु उपदेश आपे के आ मार विगेरेनुं दुःख पण सारुं छे. कारण के पाछळथी दुर्गतिनो संभव नथी पण जे संघाडाथी जुदो पडी एकलो विचरतो होय तेने फक्त दोषोनोज संभव छे

साहंमिएहिं संमुज्जएहिं एगागिओ अ जो विहरे । आयंक पउरयाए छक्काय वहंमि आवडइ ॥ १ ॥

पोताना समुदायना साधु योग्य विहार करता होय, तेमने छोडीने जे एकलो विचरे, तेने रोगोनो वधारो थतां छकायना वधमां ते पडे छे, (दोषो लगाडे छे)

एगागिअस्स दोस्सा इत्थी साणे तहेव पडिणीए । भिक्खऽवसोहि महव्वय तम्हा सविइज्जए गमणं ॥२॥

एकला फरनाराने स्त्री कूतरो तथा प्रत्यनीकथी दुःख थवा संभव छे, तथा गोचरीनी अशुद्धि तथा महाव्रतमां पण दोषो लागे माटे बीजा साधु सहित विचरवुं. पण गच्छमां रहेनाराने तो घणा गुणो थाय छे, तेनी निश्राए बीजो बाल वृद्ध वगेरेने उद्यत विहारनो स्वीकार थाय, कारणके पोते तरवामां समर्थ होय, ते बीजो अशक्त डुबतो कोइ लाकडाने वळगेलो होय, तेने पण पोते तारे

छे, आ प्रमाणे गच्छमां पण योग्य विहार करनारो बीजा सीदाता (बेसी रहेला) ने विहार करावे छे, आ प्रमाणे एकला विचरताना दोषोने जाणीने तथा गच्छमां विचरताना गुणो जाणीने कारणना अभावमां पंडित अने उम्मरलायक साधुए पण एकलविहार न करवो, तो अगीतार्थ अने नानी उमरवाळाए तो क्यांथी एकल विहार करवो ?

शङ्का—जेनो संभव होय तेनो प्रतिषेध थाय, पण एकाकी विहारनो संभव नथी कारण के क्यो मूर्ख साधु सोवतीओने छोडीने बधा दुःखोनुं स्थान एवो एकल विहार पसंद करे!

उत्तरः—कर्मपरिणतिने कंइपण अशक्य नथी; ते बतावे छे.

स्वतंत्रता जे रोगरूप छे, तेने औषधतुल्य माननाराने बधां दुःखोना प्रवाहमां तणाताने बचवा माटे सेतु [पूल] समान संपूर्ण कल्याणनुं एकस्थानरूप–शुभ आचारना आधाररूप–गच्छमां रहेनारा साधुने प्रमादथी भूल थतां तेने ठपको अपाय; त्यारे, ते साधु सदुपदेशने न गणतां सारा धर्मने विचार्या विना कषाय–विपाकनी कडवाशने दीलमां न लेतां परमार्थने विचार्या विना कुल पुत्रता (खानदानी) पछवाडे मूकी वचन मात्रथी पण कोइने ठपको आपतां सुखना वांछको बनवा माटे न गणाय एटली आपदावाळा थवा माटे गच्छमांथी नीकळी जाय छे, अने पछी तेओ आ लोक तथा परलोकना अपायो (दुःखोने) मेळवे छे. कह्युं छेः—

जह सायरंमि मीणा, संखोहं सायरस्स असहंता। णिंति तओ सुकामी निग्गयमित्ता विणस्संति ॥१॥

जेम सागरमां रहेलां माछलां समुद्रनो क्षोभ न सहन करीने सुख मेळववा बहार जतां नाश पामे छे, तेज प्रमाणे सुखाभिलाषी

साधु एकलो पडतां नाश पामे छे, ते नीचली गाथामां बतावे छे.

एवं गच्छसमुद्दे सारणवीईहिं चोईया संता । णिंति तओ सुहकामी, मीणा व जहा विणस्संति ॥१॥

गच्छ समुद्रमां रहेता साधुने प्रमादथी भूलतां प्रेरण करतां पोते कंटाळी नीकळी जाय; तो, ते सुखना वांछक माछला माफक नाश पामे छे.

गच्छंमि केइ पुरिसा सउणी जह पंजरंतरणीरुद्धा । सारणवारणचोइय पासत्थगया परिहरंति ॥३॥

शकुनी पक्षीने जो. पांजरामां पूरेल होय; तो, जीवहिंसा विगेरे न करी शके. तेज प्रमाणे सारण (दोषने याद कराववा) वारण (पापथी अटकाववा) अने धर्ममां प्रमाद करवाने प्रेरणा करवाथी पासत्था (ढीलापणाने) पाम्या होय; छतां पण गच्छमां रहेला साधुओ पाछा सुधरी जाय छे.

जहादियापोयमपक्ख जायं, सवासया पविउमणं मणागं तमचाइया तरुणमपत्तजायं
ढंकादि अव्वत्तगमं हरेज्जा ॥ ४ ॥

जेम पक्षीनुं वच्चुं पांखो विनानुं पोताना माळामांथी नीकळवानी इच्छा करे; त्यारे, पांखोना जोर विनानुं ते वच्चुं आम तेम कुदका मारतां तेने मोर विगेरे उपाडी जाय छे. उपर प्रमाणे सिद्धांत पूरा भण्या विना, अने लायक उम्मर विना गुरुए ठपको आपतां जे समूदाइथी रीसाइ नीकळी जाय; ते तीर्थीक ध्वांश विगेरेथी भ्रष्ट थाय छे ते शास्त्रकार बतावे छे:—

वयसावि एगे बुइया कुप्पंति माणवा, उन्नयमाणेय नरे महया मोहेण मुज्झइ; संबाहा बहवे-भुज्जो २ दुरइक्कम्मा अजाणओ अपासओ, एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स दंसणं तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए तप्पुरक्कारे तस्सन्नी तन्निवेसणे जयं विहारी चित्त निवाई पंथनिज्झाई पलि बाहिरे, पासिय पाणे गच्छिज्जा ॥ सू० १५७ ॥

कोइ वखत तप संयमनां अनुष्ठान विगेरेमां खेद आवतां; अथवा, प्रमादथी भूलतां गुरु विगेरेए धर्मना कारणे वचनथी पण ठपको आपतां परमार्थने नहीं जाणनारा केटलाक साधुओ क्रोधायमान थाय छे, अने बोले छे के, "आ गुरुए मने आटलावधा साधुओ वच्चे ठपको आप्यो. में शुं गुन्होह कर्यो हतो? अथवा, आ बीजा पण तेवी भूल करनारा छे. मने पण एटलोज अधिकार छे. तेथी मारा जीवितने पण धिक्कार हो! विगेरे विचारतां महामोहना उदयवडे क्रोधरूप-अंधारावडे ढंकायली चक्षुवाळा तेओ साधुनो (शांतिरूप)-समुचित आचार छोडीने बन्ने प्रकारे ज्ञानथी तथा, वयथी अशक्त बनेला जेम, समुद्रमांथी बहार जतां माछलुं नाश पामे; तेम गच्छमांथी नीकळीने तेओ एकला फरतां धर्मभ्रष्ट थाय छे, अथवा कोइ माणस वचनथी एम कहे केः—

"आ माथामां लोच करावेला मेलथी शरीर गंधातावाळा प्रगत अवसरे (दहाडो चडेज) आपणे देखवा. (अर्थात् आ अपशुकन थया के सामा मळ्या.) आवुं बोलतांज केटलाक साधु क्रोधथी अंधा बनी जाय छे, अथवा कोइनो स्पर्श थाय; तोपण, कोपायमान

थइ जाय छे, अने कोपायमान थइ बीजा साथे लडे; तेथी एवा अनेक दोषो जे गुरुथी जुदा पड्या होय; सिद्धांतनो परमार्थ न जाण्यो होय; तो तेने रक्षकना अभावे दोषो थाय; पण, गुरु साथे होय; तो, लडनारने उपदेश आपे केः—

आक्रुष्टेन मतिमता तत्त्वार्थान्वेषणे मतिः कार्या। यदि सत्यं कः कोपः? स्यादनृतं किं नु कोपेन ॥१॥

बुद्धिमान पुरुषे क्रोध करतां विचार करवोः अने तत्त्व शोधवामां बुद्धि जोडवी. जो, ते कहेनारनुं बोलवुं सत्य होय; तो, कोप केम करवो? अने तेनुं बोलवुं जूठुं होय; तो, तारे कोप शुं काम करवो? (कारणके के ते तने लागतुं नथी.)

अपकारिणि कोपश्चेत्, कोपे कोपः कथं न ते! धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रसह्य परिपान्थिनि ॥ २ ॥

जो तारे बगाडनार उपरज कोप करवो होय, तो ते कोप उपरज तारो कोप केम थतो नथी कारण के धर्म अर्थ काम अने मोक्ष आ चारेने अतिशय विघ्नकारक आ कोप छे, (कोपवाळो माणस चारेने भूली जाय, अने अनर्थ करे छे) विगेरे प्रश्नः—क्या कारणे वचनथी पण ठपको आपतां आ लोक अने परलोकनुं बगाडनार स्वपरने बाधा करनार क्रोधने लोको पकडी राखे छे? उः—जेने उन्नत (घणुं) मान छे, अथवा जे पोताना आत्माने उंचो माने छे, तेवो माणस प्रबळ मोहनीय कर्मना उदयथी अथवा अज्ञानना उदयथी मुंझाय छे एटले कार्य अकार्यना विचारना विवेकथी शून्य थाय छे, तेवा मुंझायलाने कोइए शीखामण आपवा कांइ कह्युं होय, अथवा मिथ्यात्वीए वाणीथी तिरस्कार कर्यो होय त्यारे, पोते जाति विगेरे कोइपण जातनो मद उत्पन्न थतां मानरूप मेरुपर्वत उपर चढीने कोपायमान थाय छे, के हुं आवो! तेनो पण आ तिरस्कार करे छे, धिक्कार छे मारी उंच जातिने! धिक् छे मारा पुरुषार्थने!

धिक् छे मारा ज्ञानने ! आ प्रमाणे अभिमानग्रहथी घेरायेलो वचनना ठपका मात्रथी पण गच्छमांथी नीकळी जाय छे, अथवा नीकळ्या पछी बीजा साथे क्लेश करवाथी विटंबना पामे छे अथवा कोइ ओछी बुद्धिवाळा मनुष्ये तेने फुलाव्यो होय के आ उत्तम कूळमां उत्पन्न थएलो, सुंदर चेहरावाळो, तीक्ष्ण बुद्धिवाळो कोमळ वचनवाळो बधां शास्त्र जाणनारो भाग्यशाळी सुखथी सेववा योग्य छे, एवां साचां जूठां वचन सांभळीने उंचे चढावेलो अहंकारी बनीने महान चारित्रमोहथी अथवा संसारना मोहथी मुंझाय छे, अने ते अहंकारथी महामोहे मुंझायेलाने कोइ वचनथी पण जरा ठपको आपे, तो गच्छमांथी नीकळी जतां ओछुं भणवाथी गाम गाम विचरतां शुं दुःख थाय ते कहे छे, ते ओछुं भणेलाने एकला फरतां उपसर्ग संबन्धी पीडा थाय, अथवा जुदा जुदा रोगो संबन्धी पीडा वारंवार थाय ते पीडाओने एकला विचरता साधुने शास्त्रोने न जाणवाथी निरवद्य विधिए दूर करवी मुश्केल छे, केवा साधुने मुश्केल छे ? ते कहे छे ते जुदी जुदी रीते आवेली पीडाओ सारी रीते सहेवानो उपाय न जाणवाथी, तथा सारीरीते सहेवानुं फळ न जाणतो होवाथी तेने ते पीडा सहेवी मुश्केल छे, पछी आतंक पीडाथी पीडाइ आकूळ बनेलो एषणाशुद्धिने पण त्यजी दे, प्राणीने थतुं दुःख पण विसरी जाय वाक् (वचन) रुप कंटकथी प्रेरायलो अंदर पण क्रोध करीने वळे पण आवी उत्तम भावना न भावे के, आ पीडाओ मारा कर्मना विपाको उदयमां आव्याथी थइ छे पण, बीजो प्राणीतो, तेमां निमित्त मात्र छे. वळी

आत्मद्रोहममर्यादं मूढमुज्झितसत्पथम् । सुतरामनुकम्पेत, नरकार्चिष्मदिन्धनम् ॥ १ ॥

आत्माने द्रोह करनार जे अमर्यादा छे, ते मूढ माणसने सुमार्गेथी घसडीने नरकनी अग्निरूप–ज्वाळामां इधन तरीके नांखे. (अर्थात् मर्यादा छोडीने बहार नीकळे; ते नरकनां जेवां दुःखो अहीं अने परलोकमां बन्ने जग्याए भोगवे)

आवी उत्तम भावनाओ आगमने न भणवाथी आपरिमलित मतिवाळाने होती नथी. आ बतावीने गुरुमहारज शिष्योने कहे छे केः—आ एकला फरनाराने बाधा दूर करवी मुश्केल होवाथी अजाणपणाथी पीडा देखवा विना मारा उपदेशथी तुं बहार न जतो पण आगमने अनुसरी सदा आपणा गच्छमां रहेनारो बन, सुधर्मास्वामि कहे छेः–आ 'अभिप्राय कुशळ एवा वर्धमानस्वामीनो छे, के जेम, एकला भटकनाराने दोषो छे, तेम आचार्य पासे हमेशां रहेनाराने गुणो छे. हवे, आचार्यना समिपमां रहे; तेणे शुं करवुं ते कहे छेः–ते आचार्य महाराजनी दृष्टि जेमां होय; ते प्रमाणे हेय उपादेय पदार्थोमां वर्तवुं; (जेम कहे तेम करवुं;) अथवा संयममां दृष्टि ते 'तद्दृष्टि' अथवा तेज आगमज दृष्टि एटले आगममां बताव्या प्रमाणे सर्व व्यवहार करवो; एटले, आगममां बताव्या प्रमाणे सर्वसंगथी विरति करी (ममत्व–त्यगी) ने संयमकृत्य करवां; तथा पुरस्करने सर्वत्र आगळ स्थापवो; अने ते प्रमाणे आचार्य संबन्धी वर्तवुं; तथा आचार्यनी संज्ञा प्रमाणे आचरवुं. अर्थात् तेमनुं कहेलुं ध्यानमां लइ पछी ते प्रमाणे वर्तवुं; पण पोतानी मतिकल्पनाथी कंइ पण कार्य न करे; तथा गुरुनुं निवेशन ते पोतानुं करे; एटले सदा गुरुकुळ–वास सेवे; त्यां गुरुकुळमां वसतो केवो थाय? ते कहे छे. यतनाथी विहार करनारो थाय; यतनाथी पलेहणा डिकरतो प्राणीने उपमर्दन न करे वळी, आचार्यना चित्त (अभिप्राय) प्रमाणे क्रियामां प्रवर्ते; ते. चित्तनिपाती कहेवाय छे, तथा गुरु कोइ जग्याए गया होय तो, ते तरफ ध्यान राखे; ते पंथ निर्ध्यायी कहेवाय; तथा गुरुना संथारानो देखनार ते संस्तारक प्रलोकी. अने गुरु भुख्या होय; तो आहार शोधे; ते विगेरे दरेक रीते गुरुनी आराधना करवाथी सदा गुरुनो आराधक बने. वळी, दरेक वखते गुरुनो अवग्रह कार्यप्रसंग सिवाय आगळपाछळ साचवे, (कार्य-प्रसंगे अवग्रहमां जाय, नहि तो साडात्रण हाथनी अंदर न जाय,) आ सूत्रथी त्रण इर्या उद्देशकमां रही छे. (तेमां इर्यासमितिनुं

वर्णन छे,) वळी कोइ पण कार्यमां गुरुए मोकल्यो होय, तो प्राणीओने साडात्रण हाथनी जग्यामां शोधतो तेने दुःख न थाय, तेम यतनाथी चाले वळीः—

से अभिक्कममाणे पडिक्कममाणे संकुचमाणे पसारेमाणे विणिवट्टमाणे संपलिज्जमाणे एगया गुणसमियस्स रीयओ कायसंफासं समणुचिन्ना एगतिया पाणा उद्दायंति, इहलोगवेयणविज्जावडियं, जं आउट्टिकयं कंमं तं परिन्नाय विवेगमेइ, एवं से अप्पमाएण विवेगं किट्टइ वेयवी ॥ सू० १५८॥

ते साधु सदा गुरुनी आज्ञा प्रमाणे चालनारो होय छे, ते अभिक्रम जतो के पाछो फरतो, के हाथ पगने संकोचतो; हाथ विगेरे अवयवने पसारतो, बधा अशुभ वेपारथी पाछो हटतो, होय त्यारे बरोबर रीते बधी बाजुए हाथ पग विगेरे शरीरना अवयवोने तथा तेना स्थानोने रजोहरण विगेरेथी पूंजीने गुरुकुलवासमां वसे, त्यां रहेनारनी विधि कहे छे. जमीन उपर एक उरु (जांघ) स्थापीने बीजो उंचो राखीने बेसे, निश्चळ स्थाने तेम न बेसाय तो भूमि देखीने पूंजीने कुकडीना बेसवा प्रमाणे संकोचे, अथवा जरुर पडे लांबा पहोळा पण करे सुवुं होय; तो पण मोरनी माफक सुवे. कारणके ते मोरने बीजा प्राणीनो भय होवाथी एक पासे सुवे, तथा हमेशां सचेतन सुवे, तेज प्रमाणे साधुने पासुं फेरववुं होय तो पण देखीने पूंजीने फेरवे एज प्रमाणे बधी क्रियाओ पुंजी प्रमार्जीने यतनाथी करे; आ प्रमाणे अप्रमादीपणे क्रिया करतां छतां अवश्य बनवाकाळने लीधे शुं थाय, ते कहे छे, कदाच ते गुणयुक्त साधुने अप्रमत्तपणे बधां अनुष्ठान करवा छतां, जतां आवतां संकोचतां पसारतां पाछा

फरतां प्रमार्जन करतां कोइपण अवस्थामां पोतानी कायाना समागममां आवेला संपातिम (उडता) केटलाक जंतुओ परिताप पामे, केटलाक ग्लानी पामे, कोइनो अवयव नाश पामे, अने अंतअवस्था तो सूत्रकारज बतावे छे के, केटलाक प्राणथी पण दूर थाय छे, आमां कर्म संबन्धी विचित्रता छे, शैलेशी अवस्थामां रहेला साधुने मशक विगेरेना कायनो स्पर्श थतां कोइ जंतु मरण पामे, तो पण वन्धना उपादान कारण योगना अभावथी वन्ध नथी. उपशांत तथा क्षीणमोह तथा संयोगी केवलिने स्थिति निमित्त 'कषायो' ना अभावथी एक समयनोज वन्ध छे. अप्रमत्त साधुने जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी कोडाकोडी सागरोपमनी अंदरनो वन्ध छे, पण प्रमत्त साधुने अनाकुट्टीना कारणे तथा विना देखे वर्तन करवाथी कोइ प्राणीनो पोताना पग विगेरेथी स्पर्श थतां तेने उपतापना विगेरे थतां जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी अप्रमत्त माफक छे, पण प्रमादना कारणे कांइक विशेष वन्ध छे. अने ते तेज भवे क्षेपाय (दूर थइ शके) छे, ते सूत्र वडेज बतावे छे. आ जन्ममांज भोगववुं, ते आलोकवेदन छे, तेनावडे भोगववुं ते आलोकवेदनवेद्य छे, तेथी आवी पडेलुं वे आलोकवेदनवेद्य आपतित छे, तेनो भावार्थ आ छे, प्रमत्त यतिए पण जे विना इच्छाए भूल करी ते कायना संघट्टन विगेरेथी कर्म वन्ध थयो, ते आ भवना अनुवन्धरूपे छे, ते भवे खेरवी शकाय तेम छे, आकुट्टीथी करेला कृत्यमां शुं करवुं ते कहे छे, आगममां कहेल कारण विना (फक्त भुलथी) प्राणीने दुःख दीधुं होय, तो ज्ञ परिज्ञाए जाणीने विवेक करवो, प्रायश्चित लेवुं, ते दश प्रकारनुं छे, (ते गुरु पासे लेवुं) अथवा तेनो अभाव करे, अर्थात् एवुं कृत्य करे के तेनो अभाव थाय, कर्मनो जेम अभाव थाय, ते बतावे छे, 'एव'—हवे बतावे ते उपाय प्रमाणे ते क्रोधादिथी करेला कृत्यना विवेक माटे वेदविद् (ज्ञाता) साधु प्रमादने दूर करी दश प्रकारमांथी कोइ पण प्रकारनुं जे योग्य होय, ते सम्यग् अनुष्ठानवडे करीने अभाव करे अथवा तीर्थकर

तेज वेदविद् छे अथवा आगम जाणनारा गणधर चौद पूर्वी विगेरे मुनिओ अप्रमादवडे शीघ्र अभाव करे छे. हवे अप्रमादी केवी रीतनो होय छे, ते कहे छे.

से पभूयदंसी पभूयपरिन्नाणे उवसंते समिए सहिए सयाजए, दट्ठुं विडिवेएइ अप्पाणं किमेस जणो करिस्सइ ?, एस से परमारामो जाओ लोगंमि इत्थीओ, मुणिणा हु एयं पवेइयं, उब्बाहिज्जमाणे गामधम्मेहिं अवि निब्बलासए अवि ओमोयरियं कुज्जा अवि उड्ढं ठाणं ठाइज्जा अवि गामाणुगामं दूइज्जिज्जा अवि आहारं वुच्छिदिज्जा अवि चए इत्थीसु मणं, पुव्वं दंडा पच्छा फासा पुव्वं फासा पच्छा दंडा, इच्चेए कलहासंगकरा भवंति, पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणाए त्तिबेमि, से नो काहिए नो पासणिए नो संपसारणिए नो मामए णो कयकिरिए वइगुत्ते अज्झप्पसंवुडे परिवज्जइ सया पावं एयं मोणं समणुवासिज्जासित्तिबेमि (सू० १५९) ॥ ५–४ ॥ लोकसारे चतुर्थः ॥

ते साधु प्रमादना विपाक विगेरेनुं अथवा अतीत अनागत वर्त्तमानना कर्मविपाकनुं प्रभूत (घणुं रहस्य) देखवाना स्वभाववाळो होवाथी प्रभूतदर्शी कहेवाय छे, पण वर्त्तमाननो स्वार्थ देखीने कांइ पण न करे, तथा सत्व [जीव समूह] नुं रक्षण करवाना उपायमां घणुं ज्ञान धरावे, अथवा संसार भ्रमण तथा मोक्ष मेळववानां कारण घणी रीते जाणे, माटे 'प्रभूत परिज्ञानी' कहेवाय छे, अर्थात् संसारनुं जेवुं स्वरूप होय तेवुं वधा जीवोने बतावे छे, 'किंच'–वळी कषायनो उदय न करे, तेथी अथवा इन्द्रिय अने मनने कबजामां राखवाथी 'उपशांत' छे, तथा पांच समितिवडे अथवा सम्यग् रीते मोक्षमार्ग तरफ चालवाथी समित छे. तथा ज्ञान विगेरेथी सहित छे, तथा सदा यत्न करवाथी सदायत छे, आ प्रमाणे अप्रमत्त बनीने गुरु सेवामां रहेतो, पोताना प्रमादथी पूर्वे करेलां अशुभ कृत्योनो अंत करे छे, ते साधु स्त्री विगेरेना अनुकूल परिषह आवतां शुं करे, ते कहे छे. 'दृष्ट्वा' स्त्रीओने पोताना आत्माने उपसर्ग करवाने आवती देखीने विचारे के, हुं सम्यग् दृष्टि छुं, तथा पंच महाव्रतनो भार में लीधो छे, शरद ऋतुना चंद्र समान निर्मळ कुलमां में जन्म लीधो छे. हुं अकार्य त्यजवा माटेज तैयार थयो छुं, ते स्त्रीसमूहने देखी विचारे, के आ स्त्रीओथी मारे शुं प्रयोजन छे? में जीववानी आशा त्यग करी छे, आ लोकनुं सुख सर्वथा छोड्युं छे, तेथी ते स्त्री मने शुं उपसर्ग करवानी छे? मारुं मन केम चलायमान करशे? अथवा विषयोनुं सुख दुःख रुपे परिणमवाथी मने आ स्त्रीओ शुं सुख आपवानी छे? अथवा पुत्र कलत्र विगेरे मने काळ झडपशे, अथवा रोगो पीडशे, त्यारे ते केवीरीते वचावी शकशे? अथवा आ प्रमाणे स्त्रीओना स्वभावने चिंतवे ते सूत्रकारज बतावे छे. के आ स्त्रीसमूह रमणता करावे माटे आराम छे, तथा परम आराम होवाथी परमाराम छे, तेवुं सुख देखाडनारी स्त्री तत्व जाणनार ज्ञानी साधुने पण तेनाहास विलास उपांग तथा आंखना कटाक्ष देखडवा विगेरे बिंबोकवडे ते मुंझवे छे, आ लोकमां

जे कोइ स्त्रीसमूह छे तेने मोहरूप जाणीने तेओ पोते पुरुषने न त्यजे, ते पहेलां पोते त्यजवी, आ तीर्थंकरे कहेलुं छे, ते बतावे छे, 'मुनिना' श्री वर्धमानस्वामीने केवळज्ञान उत्पन्न थया पछी तेमणे कह्युं छे के:-स्त्रीओ भाव बन्धनरूप छे' एवुं पूर्वे प्रकर्षथी कह्युं छे, अने आ पण कह्युं छे के अतिशय मोहना उदयथी पीडायलो ते 'उद्बाध्यमान' छे प्र:-शाथी? उ:-इन्द्रियोना ग्राम एटले तेओना धर्ममां फसतां पीडाय त्यारे गच्छमां रहेला होय तो गुरु समजावे. प्र:-केवी रीते? उ:-ते कहे छे के तेवो साधु निर्बल निःसार एटले लुख्खुं सुकुं खानारो बने, अथवा निर्बळ बनीने खाय, अर्थात् घणी तपस्या करवाथी शरीर थाकतां इन्द्रियोना विषयो पण शांत थइ जाय छे, कारणके आहार ओछो लेवाथी बळ ओछुं थइ जाय छे, ते बतावे छे. अवमोदरी (ओछुं खावुं ते) करे, अने जो अंतप्रांत खाया छतां पण मोह शांत न थाय, तो तेथी पण अस्निग्ध आहार वाल चणा विगेरेना ३२ कोळीया मात्र खाय, तेथी पण शांत न थाय, तो कायोत्सर्ग विगेरे काय क्लेशनो तप करे, ते बतावे छे. उर्ध्वस्थाने रहे तथा शीत अथवा उष्णता विगेरेमां (एटले ठंडमां नदी किनारे अने उनाळामां तपेली रेतीमां) काउसग्ग करे, तेथी पण शांत न थाय, तो गाम गाम विचरे जो के कारण विना विहार निषेध्यो छे, छतां मोह शांत करवा रोज चाली चालीने काया थकवीने मोह दूर करे, एथी वधारे शुं कहे? अर्थात् जे कारणथी विषय इच्छा दूर थाय, तेवुं कृत्य करे अने छेवटे आहार पण त्याग करे, अतिपात करे (उंचेथी पडीने मरे) उद्बन्धन करे (गळे फांसो खाय) पण स्त्रीमां मन न करे, (अपि समुच्चयना अर्थमां छे) स्त्रीमां जे मन गयुं, ते त्यजे, तेना परित्यागमां बे प्रकारना कामो (इच्छा काम मदन काम) पण दूरथी त्यजेला जाणवा. कह्युं छे के—

काम जानामि ते रूपं, सकल्पात् किल जायसे । न त्वां संकल्पयिष्यामि, ततो मे न भविष्यसि ॥ १ ॥

हे काम हुं तारुं स्वरूप जाणुं छुं, के तुं संकल्पथी उत्पन्न थाय छे पण हुं तारो संकल्प करवानो नथी, तेथी तुं मारा हृदयमां आववानो नथी !

प्रश्नः—पण शा माटे स्त्रीमां मन न करवुं ? उः—स्त्रीसंघमां वर्तनारो अपरमार्थ दृष्टिवाळो प्रथमथीज ते स्त्रीनो संग न छोडवा पैसो पेदा करवा खेती वेपार विगेरेनी सावद्य क्रिया करतो अगणित (अत्यंत) भूख तरस ठंड ताप विगेरेना परिषहो सहेवाना आ लोकमांज दुःखरूप दंडो सहे छे, अने ते दंडो स्त्री संवन्ध करवा पहेलांज कराय छे, (तेथी पूर्वे कह्युं छे) अने स्त्री ग्रहण कर्या पछी विषयना निमित्तथी बंधायला पापवडे नरक विगेरेनां दुःखोना स्पर्शो भोगववा पडशे, स्त्रीना अकार्यमां प्रवर्त्तेलाने पूर्वे दंड अने पछी हाथ पग विगेरे छेदावाना स्पर्शो छे, अथवा पूर्वे (कोइ स्त्री साथे छुपुं कुकृत्य करतां) ताडना (लाकडीनो मार) विगेरे छे अने पछीथी स्त्रीनो संवन्ध तथा आलिंगन चुंबन विगेरे छे ते बतावे छे.

वन्दी ए आणेल अने रोकेल राजकुमारीए गवाक्षमांथी फेंक्यो ते नीचे पडेल आवीलने लेवाथी राजपुरुषोए देखवाथी ठोक्यो, त्यारे राजकुमारीने मूर्छा थवाथी तेने देखतां इन्द्रदत्त वणिकने प्रथमथी दन्डा खावा पड्या, अने पाछळथी कन्या मळतां स्पर्श विगेरेनुं सुख मळ्युं, अथवा कोइने प्रथम सुख विगेरेना स्पर्शो छे, अने पाछळथी ललितांग कुमारनी माफक बीजा व्यभिचारीओने दुःख पडे छे, 'किंच' वळी आ स्त्री संवन्धो क्लेश संग्रानो सङ्ग (संवन्ध) करावे छे, अथवा कलह (क्रोध) तथा आसङ्ग ते राग छे, एटले रागद्वेष करावनारा छे, जो एम छे तो शुं करे, ते कहे छे. ऐहिक आमुष्मिक (आ लोक परलोक) संवन्धी अपायोना कारणे स्त्री संगनी प्रत्युपेक्षावडे 'आगमेत्तत्ति' जाणीने आत्माने आसेवन (कुचाल) थी रोके, आ प्रमाणे हुं कहुं छुं, ते तीर्थंकरना वचन

प्रमाणे कहुं छुं स्त्रीसंगमां दुःख छे, माटे संग न करवो. वळी ते त्यागवानो उपाय बतावे छे.

'स' ते स्त्रीसंगनो त्यागी मुनि स्त्रीना कपडांनी, वेषनी तथा शणगारनी कथा न करे, आ प्रमाणे ते त्यजाय छे, तथा तेमने नरकमां लइजनारी तथा स्वर्गमोक्षमां विघ्नरूप अर्गला जेवी जाणीने ते स्त्रीनां अंगउपांगने न देखे, कारण के स्त्रीओने देखतां तेना कटाक्षो महान अनर्थने माटे थाय छे. कह्युं छे केः—

सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति पुरुषस्तावदेवेन्द्रियाणां, लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालम्बते तावदेव ॥
भ्रूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथजुषो नीलपक्ष्माण एते, यावल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुषो दृष्टिबाणाः पतन्ति ।१।

नीतिकार कहे छे के पुरुष सन्मार्गमां इन्द्रियोने राखवा त्यां सुधीज समर्थ थाय छे, तथा त्यां सुधीज लज्जा छे, तथा विनय पण त्यां सुधीज छे, के लीलावती (सुंदर स्त्री) ना कानना छेडा सुधी खेंचाइने नीली पांखोवाळा पापणना चापवडे खेंचीने छोडेला (कटाक्षो) पुरुषना हृदयनी धीरजने चोरनारा दृष्टिबाणो त्यां सुधी न पडे. तथा ते स्त्रीओने नरकनी आपनारी जाणीने तेनी साथे संप्रसारण (खानगी वात) पोतानी सगी बेन विगेरेथी पण न करवुं. कह्युं छे केः—

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा, न विविक्तासनो भवेत् । बलवानिंद्रियग्रामः पंडितोऽप्यत्र मुह्यति ॥ १ ॥

माता बेन के दीकरी पोतानी होयः तेनी साथे पण एकान्तमां न बेसे कारण के इन्द्रियोनुं प्रबळ वधारे छे जेमां, पंडित पण मोह पामे छे ! आवुं जाणीने स्वार्थमां तत्पर स्त्रीओमां ममत्व न करवो; तथा ते स्त्रीने मोह करनारी मंडन विगेरेनी क्रिया पोते न

करे; तथा स्त्रीओनी वैयावच्छ पोते न करे. अर्थात् कायाना व्यापारनो निषेध कर्यो; तथा आ स्त्रीओने सारा-(मोक्षनां) अनुष्ठानमां विघ्नरूप मानीने वाणी मात्रथी पण आलाप न करे. आथी वचननो निषेध कर्यो, तेम अध्यात्म-(मनने) कबजामां राखी स्त्रीना भोगमां मन पण न राखे; एटले सूत्रनो अर्थ विचारवामां ध्यान राखीने मननो ते संबन्धी व्यापार पण रोके. आवो उत्तम साधु बीजुं शुं करे? ते कहे छे के:—सर्वथा सर्वकाळ पाप तथा पापनां उपादान कारण छोडे. हवे समाप्त करे छे के, आ आखा उद्देशामां शरुआतथी कहेलुं मुनिनो भाव मौन छे, तेने आत्मामां तुं चिंतवजे. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे. चोथो उद्देशो समाप्त थयो.

॥ इति श्रीआचाराङ्गसूत्रे तृतीयो भागः समाप्तः ॥

समाप्तः

रुपीया ११ नो किंमतनो ग्रंथ फक्त रुपीया ४ मांज मलशे.

(मूळकर्ता–धर्मदासगणी) (टीकाकार–रामविजयगणी)

उपदेशमालासटीक.



आगलथी ग्राहक थनार पासेथी रु. ४ पाछलथी ग्राहक थनार पासेथी रु. ६

लेजरना कागल उपर सुपररोयल साइझमां पत्राकारे छपाय छे.

आगाउथी रु. मोकलनारने पोस्टेज नहिं.

हीरालाल हंसराज–जामनगर.

॥ इति श्रीआचाराङ्गसूत्रे तृतीयो भागः समाप्तः ।

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

(श्रीसुधर्मास्वामीए रचेलुं अने श्री श्रुतकेवलीभद्रबाहुरचित निर्युक्तिसहित)

॥ आचाराङ्गसूत्रम् ॥ भाग चोथो ॥

(मूळ अने शीलाङ्काचार्ये रचेली टीकाना भाषांतरसहित)



जामनगरनिवासी स्व० पण्डित हंसराजभाइ शामजीना स्मर्णार्थे

छपावी प्रसिद्ध करनार–पण्डित हीरालाल हंसराज–(जामनगरवाळा)

१९९० पडतर किंमत रु. २–८–० प्रति २००

श्रीजैनभास्करोदय प्रिन्टिंग प्रेसमां छाप्युं—जामनगर.

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥श्रीआचाराङ्गसूत्रम्॥

(मूळ अने शिलाङ्काचार्यें रचेली टीकानुं भाषांतर)

भाग चोथो

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

पांचमो उद्देशो कहे छे.

पांचमा उद्देशानो चोथा साथे आ प्रमाणे संबन्ध छे के, चोथामां कह्युं केः—अगीतार्थ अपाकव वयनो साधु एकलो विचरतां दुःख पामे छे, तेथी ते दुःखो दूर करवा इच्छता साधुए हमेशां आचार्यनी सेवामां रहेवुं; तथा, ते आचार्य पण ह्रदनी उपमावाळा थवुं; अने तेमनी साथे बीजा साधुए रही तप-संयमथी युक्त बनीने निःसंगपणे विचरवुं. [ए पांचमां उद्देशामां छे,] आवा संबन्धे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे,

से बेमि तंजहा—अवि हरए पडिपुण्णे समंसि भोमे चिट्ठइ उवसंतरए सारक्खमाणे, से चिट्ठइ सोयमज्झगए से पास सव्वओ गुत्ते, पास लोए महेसिणो जे य पन्नाणमंता पबुद्धा आरंभोवरया सम्ममेयंति पासह, कालस्स कंखाए परिव्वयंति, त्तिबेमि (सू० १६०)

से (जेवा) गुणवाळो आचार्य होय; ते हुं तमने तीर्थकरना उपदेशना अनुसारे कहुं छुं. ते आ प्रमाणे छेः—(वाक्य स्थापवा 'तथा' वपराय छे. तथा, अपि शब्द भांगाना समुच्चय माटे वपराय छे.)

हृद (होद—कुंड) नुं वर्णन.

तेना चार भांगा नीचे मुजब छे. (१) ते होदमां धीरे धीरे पाणी नीकळतुं होय अने पाछुं बीजी बाजुथी भरातुं होय ते सीता तथा सीतोदा नदीना प्रवाहना कुंड जेवुं छे. (२) बीजो कुंड ते पाणी नीकळे खरुं; पण पाछुं बीजुं न आवे ते पद्मद्रह जेवुं छे. (३) तथा त्रीजो पाणी नीकळे नहीं पण आवे खरुं ते लवण समुद्र जेवो छे, (४) जेमां पाणी आवे पण नहीं अने नीकळे पण नहीं, ते, मनुष्य लोकनी बहारना समुद्र माफक छे, तेज प्रमाणे आचार्य पोते श्रुतने अंगीकार करीने बीजाने भणावे छे, तेथी ते पहेला भागमां आवे छे, तथा क्रोधना कारणे बीजा भांगामां आवे छे, एटले कषायना उदयमां ग्रहणनो अभाव छे तेथी तप तथा कायोत्सर्ग विगेरेथी क्षपणना उपपत्तिनुं कारण छे, आलोचनाने अंगीकार करवाथी त्रीजो भांगो लागु पडे, आलोचनाना कारणे कोइने संभळावी शके नहीं, कुमार्गमां पडेलो चोथा भांगामां छे कारण के तेने प्रवेशनिर्गमननो अभाव छे, अथवा धर्मि

भेदथी भेदो योजाय छे, स्थविर कल्पिआचार्यो प्रथम भंगमां छे, बीजा भांगामां तीर्थंकरो छे, त्रीजा भांगामां अहालंदिक छे तेमने कोइ वखत अर्थनी प्राप्ति थइ न होय, त्यारे आचार्य विगेरे पासेथी तेमने तेना निर्णयनो सद्भाव छे, अने प्रत्येक बुद्धोने उभय [लेवुं आपवुं ने भणवुं भणाववुं] तेनो निषेध होवाथी तेओ चोथा भांगामां छे, पण आ जग्याए प्रथम भंगमां आवेला ने भणवा भणाववानो सद्भाव होवाथी तेनो अधिकार छे, अने तेवा ह्रदरुप आचार्यनोज अहीं दृष्टांत छे, अने ते ह्रद निर्मल जलनो भरेलो तथा सर्व ऋतुमां जन्मनारां [उत्पन्न थनारां] कमळोथी शोभायमान छे, समभूभागमां रहेल पाणीनुं नीकळवुं अने आववुं नित्यज थाय छे, पण कोइ दहाडो सुकातो नथी, अने सुखेथी तेमां तरवानुं तथा नीकळवानुं बनी शके तेवो छे, तथा उपशांत ते रज विगेरे जे पाणीने काळुं बनावे ते जेमांथी दूर थयेल छे, तथा जुदी जुदी जातना जळचर जीवोना समूहने बचावतो अथवा जळचर जीवोवडे पोतानी रक्षा करतो रहेल छे, आ आपणी चालु क्रिया दृष्टांतमां लेवानी एटले आ ह्रद जेवा आचार्य छे, ते प्रथम भांगाना लेवा, पांच प्रकारना आचार युक्त छे. अने आचार्यनी आठ प्रकारनी संपदाथी जोडायेलो छे, ते बतावे छे.

आयार सुअ सरीरे वयणे वायण मई पओगमई । एए सुसंपया खलु अट्ठमिआ संगहपरिन्ना ॥१॥

आचार, श्रुत, शरीर, वचन, वाचना, मति, प्रयोगमति, अने आठमी संग्रह–परिज्ञा छे. अर्थात् आचारमां सारो, सिद्धांतनुं पूर्वापरनुं ज्ञान, शरीर सुंदर, वचन माननीय होय; वाचना आपवामां हौंशीयार होय; बुद्धि तीक्ष्ण होय; प्रयोगमतिवाळो, तथा साधु–समुदायने योग्य उपकारण विगेरेनो संग्रह करनारो होय.

तथा, छत्रीस प्रकारना गुणोना समुदायने धारनारो कुंडनी माफक निर्मळ ज्ञाने भरेलो समान–भूमाग एटले, संसक्त विगेरे (रागद्वेष)–दोषथी अदोषित, अथवा सुखविहारनां क्षेत्रमां मध्यस्थ रहे; तथा, ज्ञानदर्शन–चारित्र नामनो मोक्षमार्ग उपशमवाळा साधुओनो छे, तेमां रहे छे. समता धारे, केवो बनीने ? उपशांत थइ छे रजरुप मोहनीकर्म जेने, शुं करतो? जीवनीकायनी पोते रक्षा करतो बीजाने सारो उपदेश देवावडे रक्षा करावतो; अथवा नरकपात अटकावी बचाववाथी परनो रक्षक बने छे. 'स्रोतो मध्य गतः' आथी प्रथम भांगामां आवेला स्थविर आचार्यने कहे छे, तेने श्रुतअर्थना दान ग्रहणनो सद्भाव छे, तेथी स्रोत मध्यगतपणुं छे ते आचाय केवा होय? ते कहे छेः—ते आचार्य क्षोभायमान न थाय; तेवा ह्रद जेवा बधी रीते इन्द्रियो तथा मनने वश राखनारा गुप्तिए गुप्त छे तेने तुं जो, (आवुं शिष्यने गुरु कहे छे,) तथा आचार्य शिवाय पण, एवा बीजा बहु साधुओ संभवे छे. एवुं बतावना कहे छेः—आ मनुष्य लोकमां पूर्वे बतावेला स्वरूप–(गुणो) वाळा महर्षिओ [मोटा मुनिओ] छे तेमने तुं जो ते महर्षिओ केवा छे? ते कहे छेः—फक्त आचार्योज ह्रद जेवा छे. एटलुंज नहि; पण, बीजा साधुओ पण तेवा ह्रद जेवा छे. प्रकर्षथी जणाय ते प्रज्ञान. पोतानुं तथा परनुं स्वरुप बतावनार ते आगम छे, तेने भणेला अर्थात् आगमना जाण (गीतार्थ) होय; कदाच, तेवुं जाणनारा छे छतां, मोहना उदयथी कोइ वखत हेतु उदाहरणना असंभवमां, अने ज्ञेयना गहनपणाथी संशयमां पडेला सम्यग—श्रद्धानने न माननारा पण होय; तेथी, खुलासो करे छे के, 'प्रबुद्धा' प्रकर्षथी जेम, तीर्थंकर कहे तेवुंज तत्त्व पोते समजेला होय; अने तेवा छतां भारी कर्मने लीधे सावद्य–अनुष्ठानने छोडनारा न होय; (चारित्र न पाळे;) तेथी खुलासो करे छे के, 'आरंभो परताः' ते सावद्ययोगथी दूर रहेला महर्षिओ छे. अमारा उपरोध (शरमथी) ग्रहण न कर; पण तमारे तमारी निर्मळ बुद्धिवडे

१० विचारीने जोवा, ते बतावे छे, आ जे में कह्युं; ते तमे (हे शिष्यो!) पण, मध्यस्थता धारण करीने समर्यादने जुओ; वळी आ पण जुओ. काळ ते, समाधि—मरण छे. तेनी अभिकांक्षावडे साधुओ मोक्षमार्गवाळा संयममां बधी प्रकारे वर्ते छे. आ प्रमाणे हुं
१३॥ कहुं छुं. इति ब्रवीमि शब्द, प्रकरण, उद्देशो, अध्ययन, श्रुतस्कंध के, परिसमाप्तिमां आवे छे, तेमां, अहीं अधिकारनी समाप्तिमां जाणवो. आचार्यनो अधिकार कह्या पछी विनेय (शिष्य) नो अधिकार कहे छेः—

वितिगिच्छसमावन्नेणं अप्पाणेणं नो लहइ समाहिं, सिया वेगे अणुगच्छंति, असिता वेगे अनुगच्छंति, अणुगच्छ माणेहिं अणणुगच्छमाणेकहंनिविज्जे ? (सू० १६१)

विचिकित्सा ते, चित्तनो विप्लव छे, आम पण छे. एवा प्रकारना संकल्पो ते, युक्तिथी उत्पन्न थता अर्थमां मोहना उदयथी मतिनो विभ्रम थाय छे. ते आ प्रमाणेः—आ महान् तपनो कलेश रेतीना कोळीया खावा जेवुं निःस्वाद छे, ते करवाथी तेनुं फळ मळशे के नहि? कारण के, खेती करनार विगेरेने महेनत करवा छतां, फळ मळे छे के, नथी पण मळतुं ? आवी मति मिथ्यात्वनो अंश उदयमां आववाथी तथा, ज्ञेयने जाणवुं गहन छे तेथी थाय छे, ते ज्ञेयने बतावे छे.

अर्थ त्रण प्रकारनो छे. (१) सुखथी समजाय दुःखथी समजाय; अने बीलकुल न समजाय. आ त्रणे सांभळनारना आधार उपर भेद छे, तेमां सुखाधिगम बतावे छे. जेमके—चक्षुवाळो होय; अने चित्रकळामां निपुण होय; तेने रुपप्रसिद्धि (चित्र करवुं) सुलभ छे, अने अनिपुणने दुःखेथी चीतराय; पण आंधळाथी तो, बीलकुल देखायाविना न चीतराय; तेमां अनधिगम रुप तो, अत्र-

स्तुज छे, अने सुखाधिगम पण शंकानो विषय न थाय, पण जे देशकाळ स्वभावथी विप्रकृष्ट होय; तेमांज शंका थाय, ते धर्म—अधर्म, आकाश विगेरेमां जे विचिकित्सा थाय ते जाणवी; अथवा 'विइगिच्छति' विद्वाननी जुगुप्सा एटले, विद्वानो ते साधुओ छे. जेमणे संसारनो स्वभाव जाण्यो छे, अने समस्त संगनो त्याग कर्यो छे, तेओनी जुगुप्सा (निंदा) करे छे. कारणके, तेओ स्नान करतानथी; तथा, परसेवाना मेलथी गंधातां शरीरवाळा छे. तेओने निंदे छे, 'निंदनारा कहे छे के,' जो, अचित्त पाणीथी स्नान करे; तो, शुं दोष छे? आ जुगुप्सा छे, ते जुगुप्साने अथवा, विचिकित्साने प्राप्त करेला आत्मावाळो (शंकावाळो) चित्तनी समाधि अथवा ज्ञानदर्शन चारित्ररुप समाधिने पामतो नथी, कारण के विचिकित्साथी मलीन चित्तवाळाने आचार्य कहे तोपण सम्यक्त्व नामनी बोधि [भगवानना वचन उपर आस्था] मेळवतो नथी; अने जे बोधि मेळवे छे, ते गृहस्थ अथवा साधु होय, ते बतावे छे, 'सितां:' पुत्र स्त्री विगेरेमां रागी बनेला होय, अथवा लघुकर्मवाळा सम्यक्त्वने पमाडनार आचार्यने अनुसरे छे. अर्थात् आचार्यनुं कहेलुं माने छे ते प्रमाणे केटलाक गृहवास छोडेला साधुओ शंका विगेरेथी रहित बनी आचार्यना मार्गने अनुसरे छे. तेमनामां पण जो कोइ कोरडु माफक होय, ते पण तेवा बीजा उत्तम मार्गने अनुसरनारा साधुने जोइ ते आ कोरडु जेवो पण तेनां अशुभ कर्म ओछां थतांते पण सम्यक्त्व पामे, ते बतावे छे. आचार्यनुं कहेलुं सम्यक्त्व माननार श्रावकोथी परिचयमां आवतो अथवा प्रेरणा करातो न माने, तो पछी केवी रीते निर्वेद न पामे? अर्थात् खराब कृत्यनी मिथ्यात्वादि रुप विचिकित्साने छोडीने ते पण सम्यक्त्व पामे; अथवा साधु—श्रावक जेओ संसारमां रक्त अथवा विरक्त होय; तेओ आचार्यनुं कहेलुं समजे; तो, कोइ अज्ञानना उदयथी मंद बुद्धि होवाथी तपस्वी साधु घणा वर्षनो दीक्षित होय; ते जो, न समजे; तो, केम खेद न पामे? (कदाच) तप

अने संयमनो निर्वेद न होय; अने अनिर्वेदी होय; तो आवीपण भावना भावे. जेमके—जो, हुं भव्य नही होउं तो, मने संयमभाव पण नथी. के, प्रकट–(खुल्लुं करीने) गुरु कहे छे तोपण, हुं समजतो नथी. आ प्रमाणे खेद पामताने आचार्य समाधिनां वचन कहे छे केः—हे साधु ! खेद न कर ! तुं भव्य छे. कारण के, तुं सम्यक्त्व पाम्यो छे, अने ते ग्रन्थीभेद विना न होय. अने ग्रन्थीभेद भव्यत्व विना न होय, कारण के, अभव्यने भव्य, के अभव्यपणानी शंका पण न थाय.

वळी, अविरतिनो परिणाम बार कषायनो क्षय उपशम उपशम के क्षय थतांज होय छे, अने ते विरति तुं पाम्यो छे. तेथी, दर्शनचारित्र–मोहनीयनो तारे क्षयोपशम थयो छे. नहीतो, सम्यग्दर्शन–चारित्रनी प्राप्ति न होय पण, तने कह्या छतां जो, बधा पदार्थो न समजाय; तो, ज्ञानावरणीयकर्मना उदयनुं लक्षण जाणवुं; त्यां तो, तारे श्रद्धारुप—सम्यक्त्व स्वीकारवुं. ते कहे छे;—

तमेव सच्चं नीसंकं जं जिण हिं पवेइयं (सू० १६२)

ज्यां आगळ स्वसमय, परसमयना जाण आचार्य न होय; तथा, झीणी गूढ बाबतोमां, अने अतींद्रिय पदार्थोमां बन्ने पक्षने मान्य दृष्टांत तथा, सम्यग्हेतुना अभावथी ज्ञानावरणीयना उदयथी सम्यग्ज्ञान न होय; त्यां पण आ प्रमाणे चिंतववुं के, तेज एक सत्य छे अने तेज निःशंक छे के, जिनेश्वरे कहेला अत्यंत सूक्ष्म–अतींद्रिय पदार्थो जे फक्त आगमथी मानवायोग्य छे (ते मारे प्रमाण छे.) तथा मानवामां शंका न होय; ते निःशंकि कहेवाय. के धर्म–अधर्म, आकाश, पुद्गळ विगेरे जे तीर्थंकरे कहेलुं छे, ते रागद्वेषने जीतेला जिनो छे, माटे तेमनुं कहेलुं सत्यज छे. आवुं श्रद्धान करवुं. बरोबर रीते पदार्थ न समजाय; तोपण, शंका न करवी.

प्र०—शुं साधुने पण शंका थाय छे के, तमे आम कहो छो ?
उ०—संसारनी अंदर रहेला जीवोने मोहना उदयथी शुं न थाय ? ते प्रमाणे आगमां कहेलुं छे.
गौतमनो प्र०—हे भगवन् ! साधुनिग्रन्थो कांक्षामोहनीयकर्म वेदे छे ?

" अत्थि णं भंते ! समणावि निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? हंता अत्थि, कहन्नं समणावि णिग्गंथा कखामोहणिज्जं कम्मं वेयंति ? गोयमा ! तेसु तेसु नाणन्तरेसु चरित्त तरेसु संकिया कंखिया विइगिच्छासमावन्ना भेयसमोवन्ना कलुससमावन्ना, एवं खलु गोयमा ! समणावि निग्गंथा कखामोहणिज्जं कम्मं वेदंति तत्थालंबणं 'तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं' से णूणं भंते एवं मणं धारेमाणे आणाए आराहए भवति? हंता गोयमा ! एवं मणं धारेमाणे आणाए आराहए भवति, "

उ०—हा. प्र०—केवी रीते ते वेदे छे ?
उ०—तेवा तेवा ज्ञानना के, चारित्रना विषयमां न समजातां शङ्का, कांक्षा, विचिकित्सावाळा बनी भेदोने पामेला न समजातां हृदयमां झंखवाणा बने छे तेथी हे गौतम ! ते ठीकछे के, साधुने पण शङ्का विगेरे थाय.

गौतम कहे छेः—हे भगवान्! ते समये साधु मनमां एम चिंतवे के, "तेज सत्य, निःशङ्क छे. के जे, जिनेश्वरे कहेलुं छे." तो, ते आज्ञा पाळवानो आराधक थाय के?

उत्तर—हे गौतम! एम मनमां धारे; तो आराधक थाय छे.

वळी गुरु उपदेश आपे छे के, साधुए विचारवुं के—

वीतरागा हि सर्वज्ञा मिथ्या नं ब्रुवते क्वचित्। यस्मात्तस्माद्वचस्तेषां, तथ्यं भूतार्थदर्शनम् ॥१॥

वीतराग पोते सर्वज्ञ छे. अने तेथी, निश्चे तेओ जुठुं न वोले. जेथी, तेमनुं वचन जीवोनुं स्वरुप बतावनारुं साचुं छे. विगेरे समजी लेवुं. वळी, आ विचिकित्सा दीक्षा लेनारने आगममां मति स्थिर थयली न होवाथी थाय छे. तेवाए पण उपर बतावेलुं रहस्य चिंतववुं ते कहे छेः—

सड्ढिस्स णं समणुन्नस्स संपव्वयमाणस्स समियंति मन्नमाणस्स एगया समिया होइ १, समियंति मन्नमाणस्स एगया असमिया होइ २, असमियंति मन्नमाणस्स एगया समिया होइ ३, असमियंति मन्नमाणस्स एगया असमिया होइ ४, समियंति मन्नमाणस्स समिया वा असमिया वा समिया होइ उवेहाए ५, असमियंति मन्नमा-

णस्स समिया वा असमिया वा असमिया होइ उवेहाए ६, उवेहमाणो अणुवेहमाणं बूया-उवेहाहि समियाए, इच्चेवं तत्थ संधी झोसिओ भवइ, से उट्टियस्स ठियस्स गइं समणुपासह, इत्थवि बालभावे अप्पाणं नो उवदंसिज्जा (सू० १६३)

श्रद्धा धर्मनी इच्छा ते जेने होय; ते, श्रद्धावान् छे. तेवा भव्यजीवने संविग्न, अने योग्य विहार करनारा साधुओए, अथवा संविग्न विगेरे गुणोथी दिक्षा लेवायोग्य होय; तेने दिक्षा लेतां शंका थाय; तो, तेने जीवादि पदार्थमां बोध पामवानी अशक्ति होय; तो, तेने समजाववुं के, हे भद्र ! जिनेश्वरे जे कहेलुं छे, ते शंकारहित अने सत्य छे. आ प्रमाणे दिक्षालेता बोध आपवाथी तेनो आत्मा चारित्रथी निर्मळ थतां; चडता कंडकथी पछोना काळमां पण निर्मळ भावना वधे; अथवा बरोबर रहे; ओछी पण थाय अथवा अभाव पण थाय. आवी जीवनी विचित्र परिणामता बतावे छे, ते श्रद्धावाळाने समजावीने दिक्षा लीधा छतां, पोते जिनेश्वरनुं कहेलुं वचन शंकारहित साचुं मानतो पाछळथी पण शंका, कांक्षा, विचिकित्सा, विगेरेथी रहित निर्मळ सम्यक्त्ववाळो होय छे, पण भगवानना वचनमां शंका उत्पन्न थती नथी. (१) कोइने दीक्षा लेतां श्रद्धा होवाथी मानवा छतां पाछळथी न्याय भणतां कोइ जातनो एकांत पक्ष पकडतां हेतु दृष्टांतनो लेश हाथमां आवतां पूर्वापर विचार न थवाथी; अने ज्ञेयपदार्थ गहन होवाथी मति मुंझातां कोइ वखत मिथ्यात्वना अंशनो उदय थतां; ते जिनवचनने सम्यक् मानतो नथी. ते कहेः—आ बधा नयना समूहना अभिप्रायना कारणे अनंत धर्मथी युक्तवस्तु जेवी छतां, मोहना उदयथी एकनयना अभिप्रायवडे एक अंश साधवा माटे ते साधु जाय छे. जो, नित्य

जिनेश्वरे कहेल; ते फरी अनित्य केम थाय ? अथवा अनित्य ते, नित्य केम थाय ? कारणके, ते बन्ने परस्पर विरोधी छे.

ते प्रमाणे अप्रच्युत अनुत्पन्न स्थिर एक स्वभाववाळुं नित्य छे. अने तेथी उलटुं दरेक क्षणे नाश पामनारुं अनित्य छे, विगेरे असम्यक्भावने पामे छे, पण ते एवुं विचारतो नथी, के अनंत धर्मवाळी अने बधा नयना समूहथी युक्त वस्तु छे, ते मंद बुद्धिवाळाने ते मानवुं अति गहन होवाथी अशक्य छे, पण श्रद्धाथी मानवा योग्य छे, पण हेतुथी क्षोभायमान न थवुं, कह्युं छे के:—

सर्वैर्नयैर्नियतनैगमसंग्रहाद्यैरेकैकशो विहिततीर्थिकोशासनैर्यत् ॥
निष्ठां गतं बहुविधै र्गमपर्ययैस्तैः श्रद्धेयमेव वचनं न तु हेतुगम्यम् ॥ (इत्यादि)

बधा नयोवडे एटले नैगम संग्रह विगेरे अने कथा नियत एक एक अंशथी अन्य तीर्थीक शासनवाळाए बतावेल जे बहु प्रकारना गमपर्यायोवडे संपूर्णता पामेलुं तमारुं वचन श्रद्धा करवा योग्य छे. पण त्यां हेतुथी जाणवा योग्य नथी,

जेथी विचारवुं के हेतुतो एक नयना अभिप्राय प्रमाणे वर्ते छे. तथा एक धर्मने साधे छे, पण बधा धर्मने साथे साधनारने हेतुनो असंभव छे, (तेथी तेने शङ्का थाय छे.)(२)वळी विचित्र भावनाने बतावे छे, के कोइ मिथ्यात्वना लेशथी मुझाएलाने शङ्का थाय के शब्द पुद्गलनो केवीरीते बने एवुं उलटुं मानीने मिथ्यात्वना परमाणुओना उपशमपणाथी पछीथी शंका विगेरे गुरुना उपदेशथी दूर थतां ते श्रद्धावाळो थाय छे; के जो शब्द पुद्गलनो बनेलो न होय तो तेनो करेलो अनुग्रह अथवा उपघात कान उपर केवी रीते थाय ? कारण के आकाश माफक शब्द अमूर्त्त होय तो कानने कांइ पण न थाय एम समजीने सम्यक्त्व पामे छे (३) कोइने आग-

ममां रमणता न थवाथी मति अपरिणत थतां विचारे के एक समयमांज परमाणु लोकांते केवी रीते जाय एम खोटुं मानतां कोइ वखत कु हेतुना वितर्कना प्रकट अवसरे पूरेपूरो मिथ्यात्वी बने छे, के चौदराज लोकनो एक छेडाथी बीजा छेडा सुधी जतां आकाश प्रदेशने साथे स्पर्श न थवाथी समयनो भेद पडे, ते भेद न पडे तो बे जग्याए एक साथे स्पर्श न थाय तेथी परमाणुनुं तेटला पणुं थाय, एटले ते एवुं माने के लोकने बन्ने छेडे रहेला प्रदेशोनो एक वखते परमाणुए स्पर्श कर्यो माटे तेटलो मोटो परमाणु छे, अथवा-ते बन्नेनुं छेटुं परमाणु जेटलुं छे, आ तेनुं मानवुं खोटुं छे. पण ते आग्रही बनेलो विचारतो नथी, के विस्रसा परिणामवडे शीघ्र गतिपणाथी परमाणुनुं एक समयमां असंख्येय प्रदेशनु गमन थाय छे, जेमके आंगळीना माप जेटला एक द्रव्यना असंख्यात आकाश प्रदेश छे, तेटला बधाने एक समयमां परमाणु ओळंगी जाय छे. प्र०—ए केवी रीते बने ? उ०—जे प्रत्यक्ष देखाय छे ते ना नहि पाडी शकाय, कारण के ज्यां सौने देखीतुं प्रत्यक्ष प्रमाण होय, त्यां अनुमान विगेरेनुं प्रयोजन नथी जो एक समयमां अनेक प्रदेश ओळंगवा न मानीये तो अंगुल मात्र प्रदेश ओळंगतां असंख्येयसमय नीकळी जाय, तो आपणे देखेलुं इष्ट छे तेने पण बाधा आवे, माटे ते शंका नकामी छे. (४).

हवे भांगानी समाप्ति करवा परमार्थ बतावे छे.

भगवाननुं वचन साचुं छे, एवुं मानीने शङ्का विगेरे छोडीने ते वस्तु यत्न वडे तेवा रुपेज सम्यक् अथवा असम्यक् पूर्वे भावी होय तो पण गुरुना सद्वासथी तेमनो उपदेश विचारतां ते शिष्य श्रद्धावाळो थाय छे, जेम इर्यापथमां उपयोग राखनारने कोइ वखत जीवहिंसा थाय. (तो पण तेने दोष लागतो नथी.) (५) हवे तेथी उलटुं बतावे छे, कोइ वस्तु खोटी रीते मानतां छद्मस्थ साधुने

टुंक बुद्धिथी शंका थाय, ते समये ते वस्तु खोटी अथवा साची विचारी होय, तो तेणे खोटी विचारेली होवाथी खोटा विचारने लीधे अशुभ अशुभ अध्यवसाय होवाथी ते मिथ्यात्व छे, कारण के जेवी शंका करे तेवोज भाव मेळवे, एवुं वचन छे, (६) अथवा सम्यक् माननारने बीजी रीते खुलासो करे छे, शमिनो भाव शमिता छे ते शमिताने माननारो शुभ अध्यवसायवाळो उत्तर काळमां पण उपशमवाळोज रहे छे, अने बीजो तो शमिताने मानवा छतां कषायना उदयथी अशमिता थाय छे, एज प्रमाणे बीजा भांगामां सम्यक् शब्दनी योजना करवी, के सारुं विचारे तो सारुं फळ मेळवे, तेज प्रमाणे सारुं नरसुं तेनो विवेक विचारतो बीजाने पण उपदेश देवाने समर्थ थाय छे, कह्युं छे के, आगममां मति परिणत थवाथी यथायोग्य पदार्थनो स्वभाव बतावबाथी आ योग्य छे,आ अयोग्य छे, एवुं विचारतो विद्वान बीजा नहि विचारताने पण समजावे छे, एटले गाडरनां टोळा माफक एक पछी एक जेम दोडे तेम कोइ विना विचारनो शंकावाळो होय, तेने कहे के हे भद्र ! तुं मध्यस्थता राखीने निर्मळ भावथी विचार के जिनेश्वरनुं कहेलुं जीवादितत्व विचार युक्तिने योग्य छे के नहीं ? ते आंखो वींचीने विचार, अथवा संयने सारी रीते पाळनारो होय, ते संयम सारी रीते न पाळनारने कहे, के हे भद्र ! सम्यग् भाव पामीने हवे संयममां सारा रीते उद्यम कर ! शुं आलंबीने ? उ०—पूर्वे कहेला प्रकारे ते संयममां कर्म संतति क्षय करवा रुप जे संधि छे. ते जो संयम सारो पाळे तो, कर्म दूर कराय तेम छे, आ कर्म संतति तेसिवाय बीजी रीते क्षय थाय तेम नथी. वळी सारीरीते संयम पाळनारने शुं लाभ थाय, ते कहे छे, 'से'—ते सम्यक् रीते दीक्षा लेवाने तैयार थएलाने शंका रहित धर्म श्रद्धा होवाथी चारित्र लइ गुरुकुल वासमां रहेवाथी अथवा गुरुनी आज्ञामां वर्त्तवाथी जे गति थाय छे, अथवा जे पदवि प्राप्त थाय छे, तेने हे शिष्यो! तमे सारी रीते जुओ! बधा लोकमां प्रशंसा, ज्ञानदर्शनमां स्थिरता चारित्रमां

निष्कंपता अने तेने श्रुत ज्ञाननी आधारता थाय छे, अथवा स्वर्ग मोक्ष विगेरेनी उत्तम गति मळे छे, तेने जुओ ! अथवा संयममां प्रयत्न (न) करनारने उपग्ना उत्तम गुणो विना पासत्था विगेरेनी गति जे बधा लोकोने हांसी रुप छे. ते अथवा अधम स्थाननी गति मळे छे. ते तमे देखो ! आ प्रमाणे संयम पाळनार अने प्रमाद करनार साधुनी उंच नीच गतिने जाणीने पांच प्रकारना सारा आचारमां तमारे प्रवर्त्तन करवुं, पण जे चारित्र लेवामां प्रमाद करे तेनी नीच गति थाय तेथी शुं समजवुं, ते कहे छे, के जेओ असंयममां बाल भावमां रमेला छे, जे सुगति सकल कल्याणना आधाररुप छे, तेने न मेळवी शके, अर्थात् हे शिष्य ! तुं दीक्षा लइने बाळ चेष्टा माफक कुकृत्य न करीश ! ते बाल जेवो आचार शाक्य कपिल विगेरेना मतने माननारा आचरे छे, अने बोले छे, के नित्य, अने अमूर्त आत्मा होवाथी आकाश माफक तेनो अति पातज नथी ! अथवा वृक्ष छेदतां के बाळतां आकाशनो भेद के बळवुं थतुं नथी, तेमज शरीर विकारी छे. तेने घा विगेरे थतां अविकारी आत्माने कंइ पण थतुं नथी, तेओ कहे छे के.

न जायते न म्रियते कदाचिन्नायं भूत्वा भवितेति ॥

आत्मा जन्मे नहीं, तेम मरतो पण नथी, कोइ पण दिवस आ थइने थवानो नथी ! (जेवो छे तेवोज रहेवानो छे)

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः । नचैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः ॥१॥

जीवने शस्त्रो छेदे नही, अग्नि बाळे नहीं, पाणी भींजावे नहीं, तेम पवन शोषण करतो नथी.

अच्छेद्योऽयमभेद्योयमविकारी स उच्यते । नित्यः सततगः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥

आ आत्मा अछेद्य अभेद्य अविकारी नित्य तथा हंमेशां गमन करनार स्थाणु तथा अचल अने सनातन (पुराणो) छे. (विगेरे तेमनां वचनो छे) ते प्राणीने हणवा विगेरेमां प्रवर्त्तनाराने तेना निषेध माटे कहे छे.

तुमंसि नाम सच्चेव जं हंतव्वंति मन्नसि, तुमंसि नाम सच्चेव जं अज्जावेयव्वंति मन्नसि, तुमंसि नाम सच्चेव जं परियावेयव्वंति मन्नसि, एवं जं परिघित्तव्वंति मन्नसि, जं उद्दवेयंति मन्नसि, अंजू चेयपडिबुद्धजीवी, तम्हा न हंता नवि घायए, अणुसंवेयणमप्पाणेणं जं हंतव्वं नाभिपत्थए (सू० १६४)

तमे जे आत्माने हणवा पणे विचार्यो ते तुंज छे, (नाम शब्द संभावना माटे छे,) जेम तमे माथुं हाथ पग पासां पीठ पेटवाळा छो, तेम आ पण छे. के जेने तमे हणवा योग्य मानो छो, जेम तमने कोइ मारवा आवे तो ते देखीने तमने दुःख थाय छे, तेवी रीते बधाने छे, तेने दुःख उत्पन्न करवाथी पाप बंधाय छे, तेनो भावार्थ आ छे, के अहींयां अंतर आत्मा जे आकाश जेवो छे तेनी हिंसा मारवा वडे नथी पण शरीर आत्मानी हिंसा छे, कारण के ज्यां कंइ पण आधार रुप पोतानुं शरीर छे, तेने सर्वथा दूर करवुं तेज हिंसा छे, एवुं जैनो माने छे. कह्युं छे केः—

पंचेन्द्रियाणि त्रिविधं बल च, उच्छ्वासनिःश्वासमथान्यदायुः ॥

प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषां वियोजी करणं तु हिंसा ॥ १ ॥

पांच इन्द्रियो त्रण बळ श्वासोश्वास, अने आयु ए दश प्राण भगवाने कहेला छे. तेनो वियोग करवो ते हिंसा छे.

वळी संसारमां रहेला जीवने सर्वथा अमूर्तपणुं न घटे. के आकाशनी माफक जेनावडे विकार न थाय, तथा बधी जग्याए प्राणीने दुःख देतां पहेलां आत्मानी तुलना विचारवी, एवुं जोडेना सूत्रथी बतावे छे. तुं पण तेज छे. के तने आज्ञा करवामां आवे ते माने छे. तथा बीजा जीवने परितापवा. एवुं माने छे. तेज प्रमाणे जेने ग्रहण करवा, ते तुं माने छे. जेने दुःख देवुं ते पण तुं माने छे. पण जेवुं तने विरुद्ध थतां दुःख थाय तेम बीजाने पण जाणवुं. अथवा जे कायने तु हणवानो विचार करे छे. त्यां अनेकवार तुं हतो. आ प्रमाणे जुठ विगेरेमां पण समजवुं के. बीजो जुठुं बोली तने ठगे तो तने न गमे, तेम तुं जुठुं बोले तो बीजाने न गमे, जो हणानारो तथा हणनारो बन्नेने उपर कह्या प्रमाणे एकता थाय तो शुं? ते कहे छे.

'अज्जु' रुजु प्रगुण तेज छे के, जे घातक अने हंतव्यना एकपणाना बोधने माने (पोताना जीव माफक सर्वे जीवोने माने) तेज प्रतिबुद्धजीवी साधुज पोते परिज्ञानवडे जीवे छे, पण जीवनी हिंसा करनारो पोताना समान बीजाने न माननारो जीवतो नथी. जो एम छे, तो शुं करवुं ? ते कहे छे. हणनारा जीवने पोतानी माफक मोटुं दुःख थाय छे, माटे पोतानी उपमाथी बीजानी हिंसा न करवी, न बीजा पासे मरावया, हणनाराने अनुमोदवा नहि, वळी संवेदन ते अनुभव छे. के जे बीजा जीवोने 'मोहना उदयथी हणवा विगेरेथी दुःख दे छे, ते पोते पछवाडे दुःख भोगवे छे, एवु जाणीने कोइने पण हणवो नहिं, प्र०—आत्माथी अनुभव

साता के असातारुप छे, ते वातने नैयायिक तथा वैशेषिक मतवाळा आत्माथी भिन्न गुण भूत संवेदननुं एकार्थपणुं समवायिज्ञान वडे माने छे, तेवुं तमे मानो छो, के आत्मा सर्थे एकपणे मानो छो? तेनो उत्तर सूत्रकार आपे छे,

जे आया से विन्नाया, जे विन्नाया से आया, जेण वियाणइ से अया, तं पडुच्च पडिसंखाए, एस आयावाई समियाए परियाए वियाहिए त्तिवेमि (सू० १६५) ॥ ५–५ ॥

जे आत्मा नित्य उपयोग लक्षणवाळो छे. तेज विज्ञाता छे, पण ते आत्माथी पदार्थनो अनुभव करावनार ज्ञान जुदुं नथी अने जे विज्ञाता छे, ते पदार्थनो परिछेदक उपयोग ते पण आ आत्माज छे. कारण के जीवनुं लक्षण उपगोग छे अने उपयोग ते ज्ञानस्वरुप छे, ज्ञान अने आत्माने अभेदपणे मानवाथी बौद्धमतने अनुकुळ ज्ञानज एकलुं सिद्ध थशे, एम तमने शंका थाय तो जैनाचार्य कहे छे, के तेम नथी, भेदनो अभाव फक्त अमे अहीं बताव्यो, पण एकता कही नथी, जो एम मानता हो के ज्यां भेदनो अभाव तेज अैक्यता छे, तो ते मानवुं फक्त वार्तामात्र छे; कारण के 'धोळुं वस्त्र' तेमां धोळुं तथा पट ए बन्नेमां भेदनो अभाव होवाछतां एकतानी प्राप्ति नथी, एमां पण शुक्ल पणाना व्यतिरेकवडे वीजो कोइपण पट [वस्त्र] नथी, एम मानो तो ते अशिक्षित (मुर्ख) नो उल्लाप छे, कारण के तमारा कहेवा प्रमाणे मानतां शुक्ल (धोळा) गुणनो अभाव थतां सर्वथा पटनो अभाव थवा जशे.

वादी—त्यारे एम मानतां आत्मा विनष्ट थयो?

जैनाचार्य—थवा दो! अमारी कंइ हानि नथी, कारण के अनंत धर्मवाळी वस्तुनो अपर (वीजो) मृदु विगेरे धर्मनो सद्भाव

छे, तेनो नाश थायतो पण अविनष्ट (कायम) ज छे, एज प्रमाणे आत्मानो पण प्रत्युत्पन्न ज्ञान आत्मकपणाथी विनाश थवा छतां बीजो अमूर्त्तत्व असंख्य प्रदेशपणुं अगुरुलघु विगेरे धर्मोना सद्भावथी आत्मानो अविनाशज छे ! आटलुंज बस छे ! (जैनमत प्रमाणे मूळ वस्तु द्रव्य पणे कायम रहे छे. अने फक्त पर्यायोनोज नाश अने उत्पति छे. तेथी पर्याय नाश थवा छतां मूळ द्रव्य वस्तु तो कायमज रहे छे.)

शंका—जे आत्मा ते जाणनारो, एम तृप्रत्ययवाळो कर्त्ताना अभिधानथी अने आत्माना कर्त्तव्यपणाथी एम थवुं के जे आत्मा तेज विज्ञाता एम अहीं विपत्ति पत्तिनो अभाव थयो, के जेना वडे आ जाणे छे, ते भिन्न पण होय. जेमके ते करण अथवा क्रिया थशे? जो करण मानीए तो दातरडा माफक भिन्न पदार्थ थशे, अने जो क्रिया मानीए तो कर्त्तामां रहेली संभवे छे, एम कर्ममां रहेली पण संभवे छे, आ प्रमाणे भेदना संभवमां क्यांथी ऐक्यता होय ? जैनाचार्य शिष्यने कहे छे, के तेवाने खुल्लुं कहेवुं जे मति विगेरे ज्ञान रुप करणवडे अथवा क्रियावडे सामन्य विशेष आकारपणे जे कोइ (जीव) वस्तुने जाणे छे ते आत्मा छे. अने ते आत्माथी भिन्न ज्ञान नथी; तेम करणपणे भेद नथी, एकने कर्म करणना भेदवडे उपलब्धि थाय छे, जेमके देवदत्त आत्माने आत्मावडे जाणे छे, क्रियाना पक्षमां पक्षसंबंधी अभेद छे एवुं तमे पण स्वीकार्यु छेज, वळी

भूतिर्येषां क्रिया सैव, कारकं सैव चोच्यते

जेमां भूति (थवापणुं) छे तेज क्रिया छे, अने तेज कारक छे, आ वचन विगेरेथी एकपणुंज छे,

ज्ञान अने आत्मानुं एकपणुं मानतां शुं थाय ? ते कहे छे

ते ज्ञान परिणामने आश्रयी आत्मा ते नामेज व्यपदेश कराय छे, जेमके इन्द्रिथी उपयुक्त होय ते इन्द्र कहेवाय, अथवा मतिज्ञानीश्रुत ज्ञानी अवधिज्ञानी मनपर्यवज्ञानी, केवळज्ञानी छे. अने जे ज्ञान आत्मानुं एकपणुं स्वीकारे छे, तेने शुं गुण थाय, ते कहे छे. उपर बतावेली नीतिए यथावस्थित आत्मवादी थाय, अने तेना सम्यग् भाववडे अथवा शमिता (उपशमपणा) वडे पर्यायरुप छे, एटले तेज संयम अनुष्ठानरुप प्रसिद्ध छे, (इति शब्द समाप्ति माटे छे) लोकसार अध्ययनमां पांचमो उद्देशो पूरो थयो.



छट्ठो उद्देशो.

पांचमो उद्देशो कह्यो हवे छट्ठो कहे छे. तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे, गया उद्देशामां कह्युं के आचार्ये निर्मळ हृद (कुंड) जेवा थवुं, तेवा उत्तम आचार्यना संसर्गथी शिष्यने कुमार्गनो परित्याग थाय. तेथी रागद्वेषनी अवश्ये हानि थाय, माटे आ प्रतिपादन [सिद्ध] करवाना संबन्धवडे आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे,

अणाणाए एगे सोवट्ठाणा आणाए एगे निरुवट्ठाणा, एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स
दंसणं तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए तप्पुरक्कारे तसन्नी तन्निवेसणे (सू० १६६)

अहींआं तीर्थंकर गणधर विगेरेनो उपदेश माननार होय, तेने विनेय [शिष्य] कहेल छे, अथवा सर्व भावना संभावितपणाथी

सामान्यथी अभिधान छे, अनाज्ञा एटले भगवानना उपदेश विना पोतानी मेळे आचरे, ते अनाचार छे, ते अनाचारमां प्रवर्त्तेला केटलाक इन्द्रियोने वश थएला अने दुर्गतिमां जवानी इच्छाथी पोताना मतना अभिमान ग्रहथी बंधायला [कदाग्रही]छे, तथा उपस्थान ते बनावटी तेमनुं धर्माचरण छे, तेमां उद्यम 'करनारा' ते सोपस्थानवाळा छे, तेओ बोले छे, के 'अमे पण प्रव्रजित छीए' छतां सारा धर्मना विवेकथी रहित बनीने सावद्य आरंभमां वर्ते छे. तेम केटलाक कुमार्गनी वासनावाळा (मिथ्यात्वी) नथी, पण आळस निंदा स्तंभ [मान] विगेरे (१३ काठिया) थी बुद्धि हणातां तीर्थंकरना कहेला सदाचारमां निरुपस्थानवाळा(सारा धर्मानुस्थान रहित) छे. एटले मिथ्यात्वी चारित्रना नामे अनाचार करे, अने सम्यक्त्वी जीवो प्रमादथी संयम पाळवामां खेद पामे छे. ते बन्नेने दुर्गति मळवानी छे, तेवुं जाणीने गुरु कहे छे हे शिष्य ! तने तेवी दुर्गति न थाओ ! [माटे सम्यक्त्व धारण करीने प्रमाद छोडी पुरो संयम पाळ !] आवुं सुधर्मास्वामी पोतानी बुद्धिथी नथी कहेता, ते कहे छे, 'एतद' उपर कहेलुं (जिनेश्वरनुं छे) अथवा आज्ञा रहित निरुपस्थानपणुं छे, अने आज्ञा पालनमां सोपस्थानपणुं (चारित्र) छे, आवुं तीर्थंकरनुं दर्शन (मंतव्य) छे.

अथवा हवे पछी जे उपदेश कहे छे, ते तीर्थंकरनुं दर्शन छे, के कुमार्ग छोडीने हमेशां आचार्यनी सेवा करनारा थवुं ते आचार्यनी दृष्टिमां रहेवुं ते 'तद्दष्टि' छे, एटले तीर्थंकरे कहेला आगममां दृष्टि राखनारो छे; तथा ते आचार्य अथवा तीर्थङ्करनी आज्ञा पालनारनी मुक्ति थाय छे, ते ' तन्मुक्ति ' छे, तथा ते साधु आचार्यने बधां कार्यमां आगळ करे तेथी पुरस्कार छे अर्थात् आचार्यनी अनुमतिथी कार्य करनारो छे, तत्संज्ञी, ते तेमना ज्ञानथी उपयुक्त छे, तथा ' तन्निवेशन ' एटले ते सदा गुरुकुळ निवासी छे, तेवाने शुं गुण थाय ते कहे छे.

अभिभूय अदक्खू अणभिभूए पभू निरालंबणयाए जे महं अबहिमणे, पवाएण पवायं जाणिज्जा, सह संमइयाए परवागरणेणं अन्नेसिं वा अंतिए सुच्चा (सू० १६७)

परिषहो तथा उपसर्गोने जीतीने अथवा घाति चतुष्टयने जीतीने तत्वने जोयुं, तथा अनुकूल प्रतिकूल उपसर्ग आवतां अथवा अन्य तीर्थिकोथी पोते हार्यो नहीं; एवो समर्थ (प्रभु) निरालंबनताने धारण करे; पण ते आ संसारमां मातापिता, स्त्री विगेरेनुं अवलंबन न चाहे; तथा तीर्थंकरनी आज्ञा बहार वर्तवामां नरक विगेरेमां जवानुं छे. एवुं भाववामां समर्थ थाय; प्र०—पण क्यो पुरुष परिषह उपसर्गने जीतनारो छे ? तथा कोइथी पण, न हारीने निरालंबनपणुं लेवामां समर्थ थाय ? आवुं शिष्य पूछे तो तीर्थंकर, सुधर्मास्वामी अथवा आचार्य तेने कहे छेः—

उ०—जेणे मोक्षने लक्ष्यमां राख्यो छे, ते महापुरुष लघुकर्मवाळो मारा उपदेशथी बहार न होय. माटे अबहिर्मन (स्थिरचित्तवाळो) छे, ते सर्वज्ञना उपदेश प्रमाणे चाले.

प्र०—पण, तेना उपदेशनो निश्चय केवी रीते थाय ? के, आ जिनेश्वरनो छे ?

उ०—प्रकृष्टवाद ते, प्रवाद छे. आचार्यनी परंपराए चालेलो; तेने सर्वज्ञना उपदेश तरीके जाणीले अथवा अन्य मतवाळानी अणिमादि आठ प्रकारनी लब्धि (ऐश्वर्य) देखीने पण तीर्थंङ्करना वचनथी बहार मन न करे, पण तेवाओने इन्द्र जाळीया जेवा ठगनारा जाणीने तेमनुं अनुष्ठान तथा तेमना वादो (वचननो) ने विचारे (परिक्षा करे)

प्र०—केवी रीते ? उ० – "पवाएण पवायं जाणिज्जा" प्रकृष्टवाद ते प्रवाद 'सर्वज्ञ वाक्य' छे, ते प्रवादवडे बीजा तीर्थिकोना प्रवादनी परिक्षा करे, जेमके वैशेषिको तेनु भुवन विगेरे करनारने इश्वर मांने छे, कहे छे केः—

अन्यो जंतुरनीशः स्यादात्मनः सुखदुःखयोः। ईश्वरप्रेरितो गच्छेत् स्वर्गं वा श्वभ्रमेव च ।१॥

बीजो जीव पोतानुं सुख दुःख भोगववा असमर्थ छे, पण इश्वरनी प्रेरणा थतां ते स्वर्गे अथवा नरकमां जाय छे.

आवा प्रवादोने जिनेश्वरना प्रवादवडे विचारवा जेमके आकाशमां इन्द्र धनुष्य विगेरे विस्रसा परिणामे परिणमीने पोताने रुपे बनेलां छे, तेनो बनावनार जुदो इश्वर विगेरे कारणनी कल्पना करवामां अति प्रसंग आवशे, तथा घटपट विगेरेमां दंड चक्र चीवर (कपडुं) पाणी कुंभार तुरी वेम शलाका कुविद विगेरेना व्यापारथी आंतरा विना मळता आत्मलाभवाळाने मुकी तेने बदले नहीं देखाता एवा इश्वरथी पदार्थो बने छे एवी कल्पना करतां रासभ (गधेडा)ने पण कर्ता कां न गणवो ?

वादीनो उत्तर—तनुकरण विगेरेमां पण पोतानुं करेलुं कृत्य अने तेथी बन्धाएलुं कर्म तेना विना अवंध्य छे. पण पोताना कर्मनी विचित्रता छे. कर्मनी उपलब्धि सिवाय आवुं क्यांथी होय ? जैनाचार्य कहे छे, जो तमे एम मानो तो बन्नेमां ते समान कथन छे, वळी कारणरुप माता पिता एक छतां अपत्यनी विचित्रता देखवाथी अधिक निमित्तवडे भाववुं, अने ते इश्वरनो स्वीकार करवा करतां अदृष्ट (नशीब) नेज इच्छवुं सारुं छे? कारण के तेना विना सुख दुःख सुभग दुर्भग विगेरे जगत्नी विचित्रता न होय ! हवे सांख्य मतवाळा कहे छे.

सत्त्व, रज, तमः ए बधांनी साम्यअवस्था प्रकृति छे. प्रकृतिथी महान, तेथी अहंकार, तेथी अग्यार इन्द्रियो, तेथी पांच तन्मात्र, तेथी पंचभूत, अने तेथी बुद्धि, ए विचारेल अर्थने पुरुष (आत्मा) जाणे छे. पण, ते पोते अकर्ता, अने निर्गुण छे. ते प्रमाणे प्रकृति करे छे, अने पुरुष भोगवे छे. त्यारपछी, कैवल्य अवस्थामां हुं दृष्टा छुं. एवुं निवर्ते (दूर थाय) छे. विगेरे तेमनुं मानवुं युक्तिविकळ होवाथी तेमना आंतरा विनाना मित्रोज मानशे. कारणके, प्रकृति अचेतन होवाथी केवीरीते आत्माना उपकार माटे क्रियानी प्रवृत्ति करशे? अने हुं दुःख देनारो छुं. एवुं आत्मा देखीने पोताना उपकारनी प्रवृत्ति पोते न करे? कारणके प्रकृति अचेतन होवाथी तेने विकल्प थवानो संभवज नथी; अने प्रकृति जो, नित्य होय; तो, प्रवृत्तिनी निवृत्तिना अभाव थइ जाय; अने पुरुषनुं कर्तापणुं न होय; तो, संसारथी उद्वेग, अने मोक्षनी उत्कंठा विगेरेनो अभाव थशे. कह्युं छे केः—

न विरक्तो न निर्विण्णो, न भीतो भवबंधनात् । न मोक्षसुखकांक्षी वा, पुरुषो निष्क्रयात्मकः ॥१॥

ते विरक्त नथी; खेद पामेलो पण नथी; तेम, भवबंधनथी डरेलो नथी; अथवा, मोक्ष–सुखनो आकंक्षी नथी. एवा गुणवाळो क्रियारहित पुरुष छे, तेनो उत्तर जैनाचार्य कहे छेः—

कः प्रव्रजति सांख्यानां, निष्क्रिये क्षेत्रभोक्तरि । निष्क्रियत्वात्कथं वाऽस्य, क्षेत्रभोक्तृत्वमिष्यते ॥

आत्मांनिष्क्रिय छे.त्यारे,सांख्यमतमां दीक्षा कोण ले छे? तथा क्षेत्र भोगवामां निष्क्रयपणाथी तेनुं क्षेत्र भोगववुं केवीरीते इच्छे छे?

बौद्धमतवाळा बधु क्षणिक माने छे. तेनो उत्तरः—

जो, अन्वय रहित विनाश थाय; तो प्रतिनियतकार्य कारणभाव सिद्ध न थाय; पण एक संतान परंपराथी सिद्ध थाय छे. तेवुं तमारुं कहेवुं भण्या विनाना जेवुं छे! कारणके संतानवाळाना व्यतिरेक (अभावथी) कोइपण संतान नथी, अने संताननुं मूळ पूर्व काळमां रहेवा पणुं छे, तेज कारण होय तो बधुं ए बधांनुं कारण थशे, कारण के बधाने पूर्व काळमां रहेवापणुं छे, तेथी तमारुं कहेवुं माल विनानुं छे, वळी.

यज्जातमात्रमेव, प्रध्वस्तं तस्य का क्रिया कुंभे? । नोत्पन्नमात्रभग्ने क्षिप्तं सन्तिष्ठते वारि ॥१॥

जो घडो बनवा वखतेज नाश पामेतो ते घडामां शुं क्रिया थइ? अने उत्पन्न थतांज घडो भांगेतो तेमां नांखेलुं पणी रही शके नहिः

कर्त्तरि जातविनष्टे धर्माधर्म्मक्रिया न संभवति । तदभावे बंधः को बन्धाभावे च को मोक्षः? ॥२॥

धर्म पाप करनारो तुर्त नाश पामे, तो धर्म अने अधर्मनी क्रिया संभवे नहि, अने धर्म अधर्मना अभावमां पुण्य पापनो बंध न होय, अने ते बंधना अभावमां मोक्ष कोनो थाय?

बृहस्पिति (चार्वाक) मतवाळा फक्त पांच भूतोने मानता होवाथी जीव पुण्य पाप परलोकनो तेमने अभाव थतां निर्मर्यादापणे अमानुषी कृत्य करनाराने तिरस्कार पदयुक्त कृत्यवाळाने उत्तर न आपवो, तेज उत्तर छे[तेमनी जोडे वात करवी अयोग्यछे]वळी.

अब्रह्मचर्यरक्तैर्मूढैः परदारघर्षणाभिरतैः । मायेन्द्रजालविषयवत्प्रवर्त्तितमसत्किमप्येतत् ॥१॥

दुराचारमां रक्त अने परस्त्री आलिंगनमां मूड बनेला इंद्र जालना जुठा पदार्थ माफक आ लोकोए एवुं असत् मंतव्य फेलाव्युं छे? वळी.

मिथ्या च दृष्टिर्भवदुःखधात्री, मिथ्यामतिश्चापि विवेकशून्या; ॥
धर्माय येषां पुरुषाधमानां, तेषामधर्मो भुवि कीदृशोऽन्यः? ।२॥

भवोनुं दुःख आपनारी माता समान जेमनुं मिथ्यादर्शन छे, अने जेमनी मिथ्या मति विवेक रहित छे, के जे अधम पुरुषोए धर्मने नामे अधर्म फेलाव्यो छे, तेवाने पृथ्विमां बीजो क्यो अधर्म हशे ?

आ प्रमाणे वधा तीर्थोना वादमां जिनेश्वरना मतने अनुसरीने विचारी असत्यने दूर करवुं; अने ते सर्वज्ञनुं वचन तथा कुमार्गनुं वरोवर निराकरण करीने तीर्थीकोना प्रवादोने आ बतावेला त्रण प्रकारवडे जाणे. (१) मनम करवुं ते मति छे, अने ज्ञानआवरणीयकर्मना क्षय उपशमथी कोइपण ज्ञान थाय; ते ज्ञानज छे, तेथी एकदम तेज क्षणे मनना कारणे मतिश्रुत अवधि के, बीजां ज्ञानवडे (निर्मळता थतां) पोते बीजा वादोनी परीक्षा करे; अथवा ज्ञानवडे जोवायोग्य तेमने शोभनिक तथा, मिथ्यात्व कलंकरहित निर्मळमति (बुद्धिवडे) बधा वादोना स्वरुपने जाणे, कारणके, स्व, अने परनुं सत्यपणुं बतावनार मति छे. कोइ वखतपर [तीर्थकरना] उपदेशथी जाणे; अथवा तेमनुं कहेल आगम भणीने तेनावडे जाणे; अथवा तेथी न समजाय; तो, बीजा आचार्य विगेरे पासे सांभळीने यथार्वस्थित वस्तुना सद्भावने जाणे; अने जाणीने शुं करे ? ते कहे छेः—

निद्देसं नाइवट्टेजा मेहावी सुपडिलेहिया सव्वओ सव्वप्पणा सम्मं समभण्णाय, इह आरामो परिव्वए निट्ठियट्ठी वीरे आगमेण सया परक्कमे (सू० १६८)

(निर्देश कराय ते) निर्देश एटले, जिनेश्वर विगेरेनो जे उपदेश (साधुना हित माटे) छे, तेनुं मर्यादामां रहेल मेधावीसाधु उल्लंघन न करे. शुं करीने ? ते कहे छेः—

सारीरीते विचारीने के, आ त्यागवाजोग अन्य मतो छे, अने आ ग्रहण करवायोग्य तीर्थंकरनां वचन छे. तेने पोते बधा प्रकारोथी एटले, द्रव्यक्षेत्र काळभाव–रुपे तथा सामान्य विशेषरुपे–बधा पदार्थोने उत्तम मति विगेरे त्रण ज्ञान थी विचारीने हमेशां आचार्यनी आज्ञा पालन करनारो बनी बधां दर्शनोनुं निराकरण करे.

प्र०—शुं करीने ? ते कहे छेः—बधा मतोनुं तत्त्व सारीरीते जाणीने, विचार करी निराकरण करे. वळी, आ मनुष्यलोकमां संयममां रति करे; कारणके, परमार्थथी विचारतां एकांत अत्यंत रति (आनंद) संयममां छे, ते संयमने पूरो पाळवानी परिज्ञावडे जाणीने तेमां लीन रही इन्द्रियोनी उन्मत्तता रोकीने संयम—अनुष्ठानमां रक्त रहेवुं. 'किभूत' विगेरे. अहीं निष्ठित ते मोक्ष छे, तेनो अर्थी बन, अथवा निष्ठित ते पूरो. अने अर्थ ते, प्रयोजन छे. ते प्रयोजनवाळो वीर ते कर्मने विदारण करवामां तैयार बनीने सर्वज्ञे वतावेला आचार विगेरेमां सर्वकाळ यत्न करीने कर्मरिपुने जीत अथवा, मोक्षमार्गमां गमन कर.

आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे. आवो उपदेश वारंवार शामाटे करे छे ? तेनुं कारण कहे छेः—

उड्ढं सोया अहे सोया, तिरियं सोया वियाहिया । एए सोया विअक्खाया, जेहिं संगंति पासह ॥१॥

श्रोतो एटले, कर्म आववानां आस्रवद्वारो छे, ते दरेक भवना अभ्यासथी विषयोना अनुबंध विगेरेथी जीवकर्म पुद्गलोने लीधांज

करे छे, तेथी उंचे श्रोत ते वैमानिक देवीना अभिलाशनी इच्छा, अथवा वैमानिक देवना सुखनुं नियाणुं करवुं; के, मने तेवुं मळो. अधो (नीचे) भवनपतिना देवोना सुखनो अभिलाष, अने तिर्यक्लोकमां व्यंतर तथा मनुष्य तथा तिर्यंचना विषयोनी इच्छा थाय छे, ते श्रोतो छे, अथवा प्रज्ञापकना आश्रयथी उंचे ते पहाडनां शिखरो तथा मोटां मेदान होय; अथवा मोटा धोध पडता होय. नीचे नारकी तथा नदीना किनारानी उंडी गुफाओनां स्थान तथा तिर्यक्लोकमां आराम सभा विगेरे जीवोने उपभोगनां स्थानो छे, ते बनावटी के स्वभाविक वने छे अथवा कर्म परिणतिना कारणे मळेलां छे, ए वधां (रमणिक अरमणिक) स्थानो कर्मना आस्रवद्वारो होवाथी श्रोतनी माफक श्रोतो छे, आ त्रणे प्रकारोवडे तथा बीजां पापोनां उपादानना हेतुवडे प्राणीओनी थती आसक्तिने अथवा कर्मना अनुसंगने जो, ते कर्मना अनुसंगना कारणथीज ए श्रोतो छे. एम कहे कहे छे, माटे तुं सदा जैनागम प्रमाणे उद्यम कर.

आवट्टं तु पेहाए इत्थ विरमिज्ज वेयवी, विणइत्तु सोयं निक्खम्म एसमहं अकम्मा

जाणइ पासइ पडिलेहाए नावकंखइ इह आगइं गइं परिन्नाय (सू० १६९)

राग द्वेष कषाय अने विषयरुप जे आवर्त्त छे, ते अथवा कर्म बंधनो जे भाव आवर्त्त छे, तेने जोइने तुं विषयरुप भाव आवर्त्तने वेद (आगम)ने जाणनारो बनीने तेनाथी विरम, अर्थात् आस्रवद्वारनो अटकाव कर, बीजी प्रतिमां "विवेगं किट्टइ वेदवी" पाठ छे. एटलेआस्रवद्वारने अटकावी तेनाथी थता कर्म बन्धनो वेदविद् माणस अभाव करे ? आस्रवद्वारना निरोधथी शुं थाय ? ते कहे छे, आस्रवद्वारने दूर करवा दीक्षा लइने प्रयास करे, तेज आ प्रत्यक्ष प्रयोजन छे. अने ते आपणी चालु वातमां मुख्य छे. तेथी

'आ' सर्वनाम वांची शब्दथी सूचव्युं, के जे कोइ महा पुरुष अतिशयवाळां (उत्तम संयमनां) कृत्य करीने केवो थाय ? ते कहे छे—अकर्मा एटले घाति कर्म रहित बने, (कर्मनो अर्थ घाति कर्म लीधेल छे) आ घाति कर्म दूर थवाथी ते विशेषथी जाणे, तथा सामान्यथी देखे छे, तथा बधी लब्धिओ तेने थाय छे, एथी ते पूर्वे जाणे छे, अने पछी देखे छे. आथी क्रमनो उपयोग बताव्यो छे; ते प्रमाणे तेने दिव्य (केवळ) ज्ञान उत्पन्न थवाथी त्रण लोकमां माथाना मुकुटना मणि समान (माननीय) तथा सुरासुर नरेन्द्रथी पूज्य बने छे, तथा संसार समुद्रना किनारे पहोंचनारो संपूर्ण जाणेल बनी ते पोते शुं करे ? ते कहे छे, ते जाणवानुं जाणेला सुर असुर तथा माणसोथी थती पूजाने अनुभवीने पण तेने कृत्रिम अनित्य असार सोपाधिक [इन्द्रजाळ जेवी] मानीने इन्द्रियोना विषयोने जीतवाथी उत्पन्न थएल सुखनी निस्पृहताथी तेवी इन्द्रादिनी पूजाने पण तेओ इच्छतानथी, वळी आ मनुष्यलोकमां रह्या छतां केवळ ज्ञानथी जीवोनी आगति संसार भ्रमण तथा तेनां कारणोने ज्ञपरिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे संसार भ्रमण दूर करेछे, तेना निराकरणथी शुं थाय ? ते कहे छे.

अच्चेइ जाईमरणस्स वट्टमग्गं विक्खायरए, सव्वे सरा नियट्टन्ति, तक्का जत्थ न विज्जइ, मई तत्थ न गाहिया, ओए, अप्पइट्ठाणस्स खेयन्ने, से न दीहे न हस्से न वट्टे न तंसे न चउरंसे न परिमंडले न किण्हे न नीले न लोहिए न हालिद्दे न सुक्किल्ले न सुरभिगंधे न दुरभिगंधे न तित्ते न कडुए न कसाए न अंबिले न महुरे न

कक्खडे न मउए न गरुए न लहुए न उण्हे न निद्धे न लुक्खे न काऊ न रुहे न संगे न इत्थी न पुरिसे न अन्नहा परिन्ने सन्ने उवमा न विज्जए, अरूवी सत्ता, अपयस्स पयं नत्थि, (सू० १७०)

जाति (जन्म) अने मरणना मार्गना उपादान कारणरुप कर्मने ते केवळी साधु उलंघे छे, अर्थात् बधां कर्मोनो क्षय करे छे, अने कर्म क्षय थवाथी शुं गुण थाय छे, ते कहे छे, विविध प्रकारे प्रधान पुरुषार्थपणे रचेलां शास्त्रोना विषयथी तप अने संयम अनुष्ठाननो विषय अंते मोक्ष आपनार कह्यो छे, ते मोक्ष बधा कर्मना क्षयरुप छे, अथवा जे स्थानमां मोक्षना जीवो [सिद्ध भवंगतो] रहेला छे, ते स्थान जे आकाश प्रदेशमा रहेल छे, तेमां पोते रत छे. (सूत्रमां व्याख्यातनो अर्थ मोक्ष लीधो छे) अने त्यां पोते अत्यंत एकांत बाधा रहित सुखवाळा छे, अने क्षायिक ज्ञान दर्शनरुप संपदाथी युक्त बनेला अनत काळ रहेवाना छे-(नमुत्थुणंमां सिव मयल मरुय मणंत मुक्खेय मव्वा वाह मपुणरावित्ति सिद्धि गइ नाम धेयं ठाणं संपत्ताणं नो अर्थ विचारवो.)

प्र०—त्यां केवी रीते रहेला छे? ते कहे छे त्यां शब्दोनी प्रवृत्ति नथी, अर्थात् शब्दोथी कहेवाय एवी त्यां कोइ पण अवस्था नथी, ते बतावे छे, 'सव्वे' संपूर्ण स्वरो ते अध्ययन (भणवानुं भणाववानुं) जेम अहीं छे, तेम त्यां वाच्य वाचक संबन्धमां उच्चारण पण नथी, कारण के शब्दो तो रुप रस गंध अने स्पर्श समजाववामां कोइ पण कारणे संकेत काळमां ग्रहण कर्या होय, त्यारे अथवा तेनी तुलनामां प्रवर्ते छे, पण त्यां सिद्धोने शब्द विगेरेनी प्रवृत्ति नथी. एथीज मोक्ष अवस्था शब्दोथी कहेवाय तेम नथी; फक्त

शब्दथी कहेवाय तेम नथी, एम नहीं पण उत्पेक्षणीय पण नथी ते पण बतावे छे,

ज्यां पदार्थनो संबन्ध होय त्यां तेना अध्यवसायना अस्तित्वमां उह तर्को थाय, पण ज्यां ते नथी त्यां शब्दोनी प्रवृत्ति केवी रीते थाय ? प्र०—शा माटे त्यां तर्कनो अभाव छे ? ते कहे छे–'मनन' करवुं ते मति छे अर्थात् ते मननो व्यापार छे. अने पदार्थनी चिंता [विचार] नी चार प्रकारनी औत्पादिका विगेरे बुद्धि छे. त्यां तेनो ग्राहक नथी. (प्रयोजन नथी) कारण ते मोक्ष अवस्थामां बधा विकल्पोनो अभाव छे, [त्यां विकल्प थइ शकतो नथी] त्यां मोक्षमां जे जीवो जाय तेओने कोइ पण जातना कर्मोनो अंश छे के अथवा अकर्म बनीने जाय छे, ? तेनो उत्तर—कर्म सहित जे जीवो छे तेमनुं त्यां गमन नथी, एवुं बतावे छे. 'ओजः' एकलोज अर्थात् संपूर्ण मलरुप कलंकथी रहित त्यां सिद्ध भगवंत छे, वळी तेमने ओदारिक शरीर विगेरेनुं अथवा कर्मनुं प्रतिष्ठान नथी,माटे तेओ अप्रतिष्ठान छे.एटले मोक्ष अप्रतिष्ठान छे, ते मोक्षने जाणवामां 'खेदज्ञ' (निपुण) छे. अथवा अप्रतिष्ठान नामनो नरक छे. त्यां तेमने लोकनाडी पर्यंतनुं परिज्ञान छे, तेना आवेदनवडे बधा लोकनी खेदज्ञता बतावेली छे [सर्वे जीवोनुं तेओ दुःख सुख जाणे छे] सर्व स्वरनुं निवर्तन जे अभिप्रायवडे कह्युं छे ते अभिप्रायने हवे प्रकट करे छे. ते परमपदनो अभ्यासी लोकांते कोशना छट्टा भागे ($\frac{1}{6}$ कोश) जे क्षेत्र छे, तेमां रहेल छे, तेमने अनंत ज्ञान तथा दर्शन छे, ते संस्थाने आश्रयी पोते दीर्घ न थाय, न ह्रस्व थाय, न गोलाकारे न त्रिकोण, न चतुष्कोण, न गोळा जेवो, तेमज वर्णरहित ते काळो नीलो लोहित (लाल) हारिद्र (पीळो) धोळो कोइपण जातनो रंग तेमने नथी, तेम सुरभि के दुरभि गंधनथी, तेम तीखो कडवो कषायलो खाटो मधुर रस नथी, तेमज कर्कश [खरबचडो] मृदु गुरु शीत उष्ण स्निग्ध लूखो कोइपण जातनो स्पर्श नथी, तथा उष्ण शब्दथी कापोत विगेरे लेश्यापण नथी,

अथवा कायवाळो नथी, एटले जेम वेदतांवादी कहे छे के, एकज मुक्त आत्मा तेनी कायमां बीजा क्षीण कलेशवाळा प्रवेश करे छे, सूर्यनां किरणो सूर्यमां समाइ जाय छे, (तेम इश्वरमां बधुं समाइ जाय छे,) तेम जैनमां सिद्धनुं स्वरुप नथी.

वळी न रुह (एटले बीज अने जन्मना अर्थमां रुह शब्द वपराय छे) एटले कर्म बीजना अभावथी फरीथी तेमने जन्म नथी. पण जेम बौद्धमतवाळा माने छे के पोताना दर्शननुं अपमान थवाथी ते मुक्त परमात्मा पण जन्म ले छे.

दग्धेंन्धनः पुन रुपैति भवं प्रमथ्य, निर्वाणमप्यनवधारितभीरुनिष्ठम् ॥
मुक्तः स्वयंकृतभवश्च परार्थ शूरस्त्वच्छासनप्रतिहतेष्विह मोहराज्यम् ॥१॥

जैनाचार्य तेमना मंतव्यथी तेमनुं खंडन करवा जिनेश्वरनी स्तुति करतां कहे छे के, बळेलुं लाकडुं जेम उगी न शके, तेम मोक्षमां गयेला कर्म रहित थएला जीवने जन्म मरण न होय छतां संसारनुं प्रमथन करीने निर्वाण प्राप्त कर्या पछी मुक्त थइने पण बौद्ध नायक पोतानी मेळे नवो भव लेनार पारकाने (शिक्षा करवा) माटे शूर बनेला तेणे विनां विचारे बीकणपणाना अंतवाळुं निर्वाण मान्युं छे (अर्थात् परोपकार करवा दुष्टने दंड देवा पोताना शाशननुं महत्व वधारवा जन्म ले छे) एवा विपरीत बोलनारा जेओ तमारी आज्ञाथी बहार रहेला छे, तेमने विषे मोह राजानुं आवुं प्रबळ राज्य छे! (जैन धर्ममां एवुं मंतव्य छे के मुक्त जीवने फरी जन्म नथी)

तथा अमूर्त थवाथी तेने संग न होवाथी ते असंग छे, तथा स्त्री पुरुष नपुंसकनी गणतरीमां नथी. (त्यारे केवा छे ते कहे छे) विशेषथी जाणे ते परिज्ञ छे, तथा सामान्य बरोबर जाणे [देखे] एवी संज्ञावाळो ज्ञानदर्शन युक्त छे. प्र०—जोस्वरूपथी मुक्तात्मा

न जणाय तो, उपमाद्वारवडे आदित्यनी गति माफक जणाय छे के ? उ०—नहीं ते कहे छे, सादृश वस्तुनी उपमा थाय छे के तेनी माफक आ छे पण ते सिद्ध मुक्त आत्मानी तुलना के तेमना ज्ञान के सुखनी तुलना लोकनी वस्तुनी साथे थती न होवाथी अनुपम छे. प्र०—शा माटे ? उत्तर–ते मुक्त आत्मानी जे सत्ता छे ते रुप रहित छे. अने ते अरुपीपणुं उपर कहेल दीर्घ विगेरेनो निषेध करवाथी बतायुंज छे.

वळी तेने पद 'ते अवस्था कोइ पण जातनी न होवाथी अपद छे, तेनुं अभिधान पण नथी के जे पद वडे अर्थ बोलाय का- रण के वाच्य पदार्थनो अभाव छे. कारण के जे कहेवाय छे, तेज शब्दरुप गंध रस फरस विगेरेमांथी कोइ पण एक विशेषणथी बोलाय छे. तेनो अभाव छे ते बतावे छे. अथवा दीर्घ विगेरे शब्दोथी रुप विगेरेनुं विशेषथी निराकरण कर्युं हवे सामान्यथी पछीना सूत्रमां निराकरण करे छे.

सेनसद्दे न रूवे गंधे न रसे न फासे, इच्चेव त्तिबेमि (सू० १७१) षष्ठ उद्देशकः। लोकसाराध्ययनं समाप्तम् ५–६॥

ते मुक्त आत्माने शब्दरुप गन्ध रस के स्पर्श नथी आज भेदो मुख्यत्वे वस्तुना छे, अने तेना प्रतिषेधथी बीजो कंइ विशेष भेद देखातो नथी, के जेथी अमे बीजुं बतावीए ! आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे. सूत्रानुगम कह्यो, अने तेनी समाप्तिथी अपव- र्गने पामेलो (मोक्ष विषय कहेवानो) उद्देशो पूरो थयो, ते मोक्षनी प्राप्तिमां तपनी वक्तव्यता थोडामां बतावी पंचम अध्ययन पुरुं थयुं

टीकाना श्लोक १११५ थया

धुताख्य नामनुं छठ्ठुं अध्ययन.

पांचमुं अध्ययन कह्युं, हवे छठ्ठुं अध्ययन कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया अध्ययनमां लोकमां सारभूत संयम अने मोक्ष बताव्यो छे, अने ते निःसंगता सिवाय संयम न होय, तथा कर्म दूर कर्या विना मोक्ष न थाय. तेथी कर्म दूर करवा आ धुत ते कर्म धोवानुं बताववा कहे छे, आ संबंधे आवेला धुत नामना अध्ययनना चार अनुयोग द्वार थाय छे, तेमां प्रथम उपक्रम छे. ते उपक्रममां अर्थाधिकार बे भेदे छे, अध्ययननो अर्थ अधिकार अने उद्देशानो अर्थाधिकार छे, तेमां अध्ययननो अर्थाधिकार १ला अध्ययनमां कहेल छे, अने उद्देशानो अर्थाधिकार कहेवा निर्युक्तिकार कहे छे,

पढमे नियगविहुणणा, कम्माणं वितियए तइयगंमि । उवगरणं सरिराणं चउत्थए गारवतिगस्स ॥२५०॥

पहेला उद्देशामां पोताना जे सगां छे, तेओनुं विधून न (मोह त्याग) करवो जोइए. बीजा उद्देशामां घातिकर्मने दूर करवां, त्रीजामां उपकरण शरीरने, अने चोथामां त्रण गारवने दूर करवा तथा उपसर्ग के सन्मान थाय, तोपण रागद्वेश न करवो, तथा साधुओए (पूर्वे) ते प्रमाणे कर्म विगेरे धोयां छे, ते आ पांचमा उद्देशामां बतावे छे. आ प्रमाणे अर्थाधिकार बतावीने निक्षेपो कहे छे, ते त्रण प्रकारनो छे, ओघ निष्पन्नमां अध्ययन छे, नाम निष्पन्नमां धुत नाम छे तेना चार प्रकारे निक्षेपा छे, तेमां सुगमनाम स्थापना छोडीने द्रव्य अने भाव बताववा अडधी (पूरी) गाथा कहे छे.

उवसग्गा सम्माणयविहुआणि पंचमंमिउद्देसे । दव्वधुयं वत्थाई, भावधुयं कम्म अट्ठविहं ॥२५१॥

द्रव्यधुत बे प्रकारे छे, आगमथी अने नो आगमथी तेमां आगमथी धुतनो ज्ञाता (जाणनारो) होय, पण तेमां उपयोग न होय अने नो आगमथी तो ज्ञ शरीर भव्य शरीर सिवाय द्रव्यधुत ते कपड विगेरेनी धूळ दूर करवानुं छे. (द्रव्य ते कपडां विगेरेने अने धूत ते मेल दूर करवानुं छे)

आदि शब्दथी वृक्ष विगेरे फळ माटे धोवानुं छे (सूकां पांदडां विगेरे दूर थवाथी फळ तैयार थाय छे, अथवा विना जरुरनी वनस्पति वचमांथी निंदी काढे छे) अने भाव धूत तो आठे कर्मने दूर करवा [मोक्ष माटे] उपाय कराय ते छे, [आ अडधी गाथानो अर्थ छे.] फरी आज विषयने खुलासाथी कहे छे.

अहियासित्तुवसग्गे, दिव्वे माणुस्सए तिरिच्छे य । जो विहुणइ कम्माइं, भावधुयं तं वियाणाहि ॥२५२॥

उपसर्गोने अतिशे (सारी रीते) सहन करीने कर्म धोवां, एटले देवताना के मनुष्योना के तिर्यंचोना दुःख सुखरुप जे उपसर्गो आवे तेमां समभाव राखीने जे संसार वृक्षना बीज समान मोहनीय विगेरे कर्मोने दूर करे, ते भाव धुत छे; एवुं तुं जाण अथवा क्रिया अने कारकनो भेद नथी, तेथी कर्म धुनन तेज भावधूत छे, एम जाण नामनिक्षेप कह्यो हवे त्रीजा सूत्रालापाक निष्पन्न निक्षेपामां सूत्रानुगममां अस्खलितादि गुणयुक्त सूत्र कहेवुं ते आ छेः—

ओवूज्झमाणे इह माणवेसु आघाइ से नरे, जस्स इमाओ जाइओ सव्वओ सुपडिलेहियाओ भवंति, आघाइ से नाणमणेलिसं, से किट्टइ तेसिं समुट्ठियाणं निक्खित्तद-

पडाणं समाहियाणं पन्नाणमंताणं इह मुत्तिमग्गं, एवं (अवि) एगे महावीरा विप्परिक्कमंति, पासह एगे अवसीयमाणे अणत्तपन्ने से बेमि, से जहावि (सेवी) कुंमे हरए विणिविट्ठचित्ते पच्छन्नपलासे उम्मग्गं से नो लहइ भंजगा इव संनिवेसं नो चयंति एवं (अयि) एगे अणेगरूवेहिं कुलेहिं जाया रूवेहिं सत्ता कलुणं थणंति नियाणओ ते न लभंति मुक्खं, अह पास तेहिं कुलेहिं आयत्ताए जाया गंडी अहवाकोढी, रायंसी अवमारियं काणियं झिमियं चेव, कुणियं सुज्जियं तहा ॥१॥ उदरिंच पास मूयं च सुणीयं च गिलासणिं वेवइं पीढसप्पिं च, सिलिवयं महुमेहणिं ॥२॥ सोलस एएरोगा, अक्खाया अणु पुव्वसो अहणं फुसंति आयंका, फासा य असमंजसा ॥३॥ मरणं तेसिं संपेहाए उववायं चवणं च नच्चा, परियागं च संपेहाए (सू० १७२)

स्वर्ग तथा मोक्ष, तथा तेनां कारणो तेमज संसारनां कारणोने आवरणरहित (केवळ) ज्ञानना सद्भावथी जे माणस जाणे; अने आमर्त्य (मनुष्य)–लोकमां मनुष्योनो धर्म समजावे एटले, ते घातिकर्म दूर थयां पछी; पोते अघातिकर्मरूप [शरीरधारी] मनुष्यपणामां रहेलो थको धर्म कहे छेः—

पण जेम–बौद्धमतमां भींत विगेरेमांथी पण धर्मोपदेश प्रकट थाय छे. तेम जैनधर्ममां नथी; अथवा जेम, वैशेषिकोनुं उलुक भाववडे पदार्थोनुं बतावबापणुं छे, एवुं अमारुं (जैनशासन) नथी.

प्र०—शा माटे ? उ०—घातिकर्म क्षय थया पछी, केवळ ज्ञान उत्पन्न थवाथी मनुष्यपणामां रहेलाज (तीर्थंकर) पोते कृतार्थ थया छतांपण, जीवोना हितने माटे मनष्य अने देवोनी सभामां धर्मनो उपदेश करे छे.

प्र०—तीर्थङ्करज धर्म कहे छे, के, बीजो पण कहे छे ? उ०—बीजो पण कहे छे. जेने विशिष्टज्ञान होय, अने सारीरीते पदार्थोनो परिच्छेदक होय; ते धर्मोपदेश करे छे. ते कहे छे:—

जेओ अतींद्रियज्ञानि छे, अथवा श्रुत केवळी छे, तेओ धर्म कहे छे. एवुं शस्त्रपरिज्ञा नामना १ला अध्ययनमां कहेल छे. (तेथी आ प्रत्यक्ष सूचक–विशेषणवडे सूचव्युं के,) ते विशिष्टज्ञानीए आ एकेन्द्रिय विगेरे जातीओ बधा प्रकारो एटले सूक्ष्मबादर पर्याप्त—अपर्याप्तरूपे बरोबर रीते [शंकारहित] जाणेली छे, तेज साधु धर्म कहे छे. पण, एम न जाणनारो बीजो (अजाण) धर्म कहेतो नथी. तेज कहे छे:—

'स आख्याति' ते तीर्थङ्कर अथवा सामान्य केवळी अथवा अतिशय ज्ञानी [जातिस्मरण–ज्ञानवाळा, अवधिज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानी] अथवा श्रुत केवळी होय ते कहे छे. प्र०—शुं कहे छे, जेनावडे जीव विगेरे पदार्थो जणाय छे, ते ज्ञान मति विगेरे पांच प्रकारनुं छे, ते, प्र०–ते ज्ञान केवुं छे ? उ०–तेवुं बीजे नथी, माटे 'अनीदृशं' छे, अथवा सकल [बधा] शंसयने दूर करवावडे धर्म संभळावता तेज पोतानुं अनन्य सदृश (अनुपम) ज्ञान बतावे छे, [अर्थात् संसारी ज्ञानथी तृष्णा वधे, पण तेमना उपदेशना ज्ञानथी

तृष्णानी जड दूर थाय माटे ते ज्ञान अनुपम छे] प्र०—तेओ कोने धर्म कहे छे? उ०—ते तीर्थङ्कर गणधर विगेरे यथावस्थित भावो (पदार्थो) ने धर्मचरण माटे योग्यरीते जे पुरुषो उठेला होय, तेमने कहे छे, अथवा द्रव्यथी शरीरवडे, अने भावथी ज्ञान विगेरेना उत्सुक बनी विनय सहित (उभा थया होय) तेमने धर्म कहे छे.

समोसरणनो विनय

समोसरणमां स्त्रीओ बन्ने प्रकारे उभी थइने विनय पूर्वक सांभळे छे, अने पुरुषो उभा थइने अथवा बेठा रहीने पण सांभळे पण भावथी उत्सुक होय; तेमज बीजा उठेलां जीवो, तथा देवता अने तीर्यंच विगेरेने धर्म संभळावे छे. एटलुंज नहि पण जेओ भाव विना फक्त कौतुक विगेरेथी आवी सांभळे, तेमने पण धर्म कहे छे, भावथी उठेलानुं विशेषथी कहे छे.

मन वचन कायाने जेमणे कबजे लीधां छे, एटले मन वचन कायाथी जीवोने दुःख देवारुप जे दंड छे, ते दूर करवाथी ते निक्षिप्त दंडवाळा [संयम पाळनारा] छे. तथा तप संयममां उद्यम करवाथी समाहित (शांत) अंतःकरणवाळा छे, तेमने जिनेश्वर विशेषथी धर्म कहे छे, तेज प्रमाणे प्रकर्षथी जणाय ते प्रज्ञान छे, तेवुं ज्ञान धरावनार बुद्धिमानोने आ मनुष्यलोकमां ज्ञानदर्शन चारित्ररुप मुक्ति मार्ग छे ते बतावे छे, आ प्रमाणे समोसरणमां साक्षात् धर्म संभळावतां केटलाक लघुकर्मी जीवो (पूर्ण श्रद्धा थतां) तेज वखते चारित्र ग्रहण करे छे, पण बीजा तेम चारित्र लेता नथी, ते कहे छे, एटले उपर कह्या प्रमाणे कर्मविवर जेमने मळ्युं तेवा केटलाक भव्यात्माओ जिनेश्वर पासे धर्म सांभळतांज सयम संग्रामनी टोचे पराक्रम बतावे छे, अथवा पर ते इन्द्रियो अथवा कर्म शत्रुने जीतवा पराक्रमी बने छे, (अपि शब्दनो अर्थ 'च' छे, अने 'च' नो अर्थ वाक्यनो उपन्यास करवा माटे छे) हवे तेथी

उलटुं कहे छे. तीर्थङ्कर पोतें बधा संशयने छेदनारा धर्म कहे छे, छतां केटलाकने प्रबळ मोहना उदये घेरी लेवाथी संयममां खेद पामता रहे छे, (कांतो संयम लेता नथी, ले, तो पूरो पाळता नथी) तेवाने तमे जुओ [गुरु शिष्यने कहे छे] ते बहोळा कर्मी संयममां दुःख पामता जीवो केवा छे. ते कहे छे, आत्माना हितने माटे जेमनी प्रज्ञा [बुद्धि] काम करती नथी, ते अनात्म प्रज्ञावाळा (कुबुद्धिवाळा) छे, प्र०—तेओ शा माटे संयममां खेद माने छे? उ०—हुं कहुं छुं. अहीं दृष्टांत वडे समजावे छे के शा कारणे तेओ खेद पामे छे. [सूत्रमां 'से' शब्द 'ते' ना अर्थमां छे, 'अपि' शब्द 'च'ना अर्थमां छे, अने ते वाक्यना उपन्यास माटे छे]

कुंडना काचबानुं दृष्टांत.

कोइ काचबो मोटा कुंडमां विनिविष्ट[प्रेमी]चित्तवाळो बनीने गृद्ध बनेलो अने पलाश (कोमळ पांदडांवडे)ढंकायलो(तथा सूत्रमां प्राकृतना नियम प्रमाणे व्यत्यय करवाथी)उन्मार्ग एटले, उपर आववानां विवर(छिद्र)ने मेळवतो नथी; अथवा, जेनावडे उंचे कुदाय; ते उन्मज्य छे. अथवा, उंचे जवाय ते, उन्मार्ग छे, तेवो उन्मार्ग मेळवी शकतो नथी. अर्थात् जे कुंडमां ते काचबो रहेल छे, ते, पाणी उपर पांदडां विगेरे छवाइ जवाथी बीलकुल ढंकाइ गयो छे. तेथी ते काचबो बहार आवी शकतो नथी. आ कहेवानो आ सार छे:—

कोइ मोटो कुंड होज] एक लाख जोजनना विस्तारवाळो छे, अने ते अतिशे शेवाळना झुंडथी कठण बनी गयेला जाळोना समूहथी ढंकाइ गयलो छे, अने ते कुंडना जुदा जुदा रुपवाळा करि मगर, माछलां, विगेरे जळचर जीवोनो आश्रय छे, तेना मध्य भागमां कुदरतीज एक फाटनुं बाकुं पडेलुं हतुं. जेमां फक्त काचबानी गरदन उंचे आवी शके; तेवा कुन्डमांथी एक काचबाए पोताना टोळांथी जुदां पडतां वियोगथी आकुळ बनीने आम तेम गरदन फेरवतां कोइपण रीते तेवी भवितव्यताना योगथी ते काणामां पो-

ताना गरदनने बहार काढी; ते समये त्यां तेणे शरदृऋतुना चंद्रनां चांदरणाथी क्षीरसागरना पाणीना प्रवाहथी छवाइ रहेलुं शोभायमान बनेलुं तथा, खीलेलां कुमुदना समूहथी पूजा करवा जेवा उगेला ताराओथी भराइ गयेलुं आकाश जोयुं.

आवुं देखीने ते घणो खुश थयो; अने तेना मनमां आ प्रमाणे संकल्प थयो के—मारा सहचारी मित्रो आ स्वर्गसमान पूर्वे न देखेलुं मनोरथ (विचारमां) पण, न कळी शकाय; तेवुं ते काचबाओ जुए, तो बहु सारुं थाय. आ प्रमाणे विचारी शीघ्रताथी पोताना बन्धुओने शोधवा माटे भटक्यो; अने तेमने मळीने तेमने तेवुं बताववा माटे पेलुं छिद्र शोधतो आम तेम भटके छे, छतां, होजनी विस्तीर्णताथी, तथा जीवोनो समूह त्यां घणो मोटो छे, तेथी ते छिद्र मेळवी शक्यो नहि; पण, त्यांज ते, (विनादेखे) मरण पाम्यो. तेनो सार आ लेवानो छे के—संसाररुपी–होज छे. तेमां जीवरुपी–काचबो छे, कर्मरुपी–चीकणी सेवाळ छे, तेमां छिद्र समान–मनुष्यजन्म, तथा आर्यक्षेत्र सुकुळमां जन्म मळवो; अने सम्यक्त्वनी प्राप्तिरुप–सुंदर चन्द्रवाळुं आकाशतळ मेळवीने मोहना उदयथी पोतानी ज्ञाति माटे, अथवा विषयस्वादना उपभोग माटे सारां संयममां अनुष्ठान न करतां, सफळता (मोक्षने) पामतो नथी; अने तेवीरीते वखत गुमावी; ते सामग्री गुमावी देवाथी पाछो काचबाना विवर माफक क्यांथी तेवी उत्तम सामग्री मेळवी शके ?

आ कारणथी गुरु उपदेश आपे छे के, हे भव्य ! सेंकडो भवोमां पण, दुष्प्राप्य एवुं कर्मविवररुप–सम्यक्त्व पामीने एकक्षण मात्र पण, तमारे प्रमादवाळा न थवुं. फरीथी पण, संसारलुब्ध–जीवोनुं बीजुं दृष्टांत कहे छेः—

'भंजगा'—वृक्षो पोते ठंड, ताप, धुजारो [कंपवुं] छेदन शाखा (डाळीओनुं) खेंचवुं; क्षोभ पमाडवो; मरडवुं; भांगीनाखवुं. एवां अनेक उपद्रवोने सहेवा; छतां पण, पोतानां स्थानने तेमां स्थिर बनीने ते छोडतां नथी. ते प्रमाणे साधुने बोध आपे छे के,

ए वृक्षो प्रमाणे जेओ कर्मथी भारे छे, तेवा मोहांध–जीवो अनेक उंचनीच कुळमां उत्पन्न थइने धर्मचारित्रने योग्य पोते होवा छतां पण रुप विगेरेनी चक्षुइन्द्रियोनी अनुकुळतामां, अने तेज प्रमाणे मधुर अवाज विगेरे विषयोमां गृद्ध बनी शरीर मननां दुःख भोगववा छतां; राजाना उपद्रवथी पीडावा छतां, अने अग्निदाहथी बधुं बळी गयेला जेवा बनवा छतां, अने जुदा जुदा निमित्तथी अनेक आधि (चिंतावाळा) छतां पण सकळ (बधां) दुःखोना घरसमान –गृहवासनुं कर्म छोडवा समर्थ थता नथी; पण, घरमां रहीनेज तेवां दुःखो आवतां दीन स्वरे रडे छे, अने बोले छे के, " हे बाप ! हे मा ! हे दैव ! आवा अवसरे तमने आवुं दुःख देवुं योग्य नथी ! तेज कह्युं छे केः—

किमिदम चिन्तित मसदृशं, मनिष्ट मतिकष्टमनुपमं दुःखं ॥ सहसैवोपनतं मे, नैरयिकस्येव सत्वस्य ॥१॥

न चिंतवेलुं अजायबीवाळुं अनिष्ट, तथा अनुपम आवुं (भयंकर) दुःख जेम नारकीना जीवने आवे; तेम मने एकदम क्यांथी आवी पड्युं छे ! विगेरे, ते बोले छे.

अथवा रुप विगेरेमां आसक्त थएला चीकणां कर्म बांधीने नरक विगेरेमां उत्पन्न थइ त्यां दुःख भोगवतां करुण स्वरे उपर मुजब रडे छे, अने ते प्रमाणे करुण स्वरे रडवाथी पण ते रांकडो जीव ते दुःखथी मुकातो नथी, ते बतावे छे. दुःखनुं निदान ते उपादान कर्म छे, तेनावडे दुर्गतिमां उत्पन्न थएला दुःख भोगवतां रडवा छतां पण त्यांथी दुःखनी मुक्ति (छुटकारो) अथवा मोक्षनुं कारण जे संयम अनुष्ठान छे, ते पामी शकता नथी, अने दुःखना छुटकाराना अभावमां संसार उदरमां जुदी जुदी व्याधिओथी घेरायला जीवो आम तेम भमे छे, ते बतावे जे (अथ शब्द वाक्यना उपन्यास माटे छे). हे शिष्य ! तुं जो ! ते संसारी रखडता जीवो

उच्च नीच कुळमां पोताना शुभ अशुभ कर्म भोगववाने गयेला (जन्म पामेला) छे, अने ते कर्मना उदयथी आवी अवस्थाने भोगवे छे, तेमां तेमने उत्पन्न थता सोळ रोग बतावनार त्रण श्लोको छे. तेमां (१) प्रथम रोग, वात, पित्त, श्लेष्म अने ते त्रणेना भेगा थवाथी संनिपात एम चार प्रकारे गंड (कंठमाळ) छे, ते गंड जेने होय ते गंडी कहेवाय छे, एटले गंडमाळा नामनो रोग ते संसारी जीवने थाय छे, तेज प्रमाणे बीजा पण रोगो थाय छे, ते बतावे छे, (अथवा शब्द दरेक रोग साथे जोडवो) अथवा राजांसी एटले अपस्मार (क्षयनो भेद) विगेरेनो रोग थाय छे, अथवा अढार प्रकारना कोढ रोगवाळो कोढीयो थाय छे. तेमां सात मोटा कोढ छे, ते आ प्रमाणे

(१) अरुणो (२) दुम्बर (३) निश्यजीव्ह (४) कपाल (५) काकनाद (६) पौण्डरीक (७) दद्रु. (लाल दादर) आ साते प्रकारना कोढो बधी धातुमां प्रवेश थवाथी अने असाध्य थइ जवाथी ते साते भयंकर छे.

नीचला अगीआर कोढ क्षुद्र छे.

(१) स्थूळआरुष्क (२) महाकुष्ट (३) एककुष्ट (४) चर्मदळ (५) परिसर्प [६] विसर्प [७] सिध्म [८] विचर्चिका (काळीदादर) [९] किटिभ (खरसवुं) [१०] पामा (खस) [११] शतारुक (घणी फोल्लीओ.) कुल नाना मोटा १८ छे, ते सामान्यथी जोतां, बधाए कोढ—रोगो संनिपातथी थाय छे. छतां पण, वात विगेरेना ऊत्कट दोषथी जुदा जुदा भेदवाळा गणाय छे. तथा, राजांस रोग ते, राज्यक्ष्मा (क्षय) रोगवाळो, राजांसी (क्षयी) कहेवाय छे, अने ते क्षयरोग संनिपातथी चार कारणे थाय छे. कह्युं छे केः—

त्रिदोष जायते यक्ष्मा, गदो हेतुचतुष्टयात् वेगरोधात् क्षयाच्चैव, साहसाद्विषमाशनात् ॥१॥

त्रण दोषवाळो यक्ष्मा (क्षय) नामनो रोग वीर्यना वेगना रोधथी वेगना क्षयथी, साहस करवाथी; तथा विषम [अयोग्य] खोराकथी-एम चार कारणे थाय छे. तेज प्रमाणे अपस्मारनो रोग वात, पित्त अने कफना संनिपातथी चार प्रकारे छे, ते रोगवाळो सारा माठाना विवेकथी विकल होय छे, तथा भ्रम (चक्री) मूर्छा विगेरेनी अवस्थाने ते रोगी भोगवे छे. कह्युं छे के,

भ्रमावेशः ससंरम्भो, द्वेषोद्रको हृतस्मृतिः अपस्मार इति ज्ञेयो, गदो घोरश्चतुर्विधः ॥२॥

भमेळ चडे, मूर्छा विगेरे थाय, द्वेषनो उछाळो थाय, विसरी जवानी टेव थाय, एम चार प्रकारनो आ 'घोर' अपस्मार रोग जाणवो. तेमां ब्रह्मरंध्र पर्यंत भ्रमण करनारो वायु छे, तेनुं मुख्य स्थान हृदयनो प्रदेश छे. तथा 'काणियंति' अक्षि [आंख] नो रोग बे प्रकारे छे, प्रथमनो गर्भमांज रोग थाय छे, अने बीजो जन्म्या पछी थाय छे, तेमां गर्भवाळाने दृष्टिनो भाग अपूर्ण होय छे, तेने तेज (प्रकाश) जन्मथी आंधळो बनावे. तेज प्रमाणे, एक आंखमांथी तेज जतां काणो बनावे छे. तेज प्रमाणे रक्तपणामां जतां, रक्तता-[लालाश आंखमां वधारो होय.] पित्तपणामां जतां, पिंगाक्ष [पीळी आंखवाळो] अने श्लेष्मपणाने पामतां शुकलाक्ष (धोळी आंखवाळो) बने छे, वातने पामतां विकृत आंखवाळो बने छे, अने जन्म्या पछी जे रोग थाय; ते वात विगेरेथी अभिष्यंद-(आंखमांथी पाणी झरवुं) थाय छे. कह्युं छे के:—

वातात्पित्तात् कफाद्रक्ता, दभिष्यन्दश्चतुर्विधः प्रायेण जायते घोरः सर्व नेत्रामयाकरः ॥१॥

वात, पित्त, कफ, अने रक्त-(लोही.) ए चारथी अभिष्यंद चार प्रकारे पाणीनुं झरवुं थाय छे, अने प्रायेकरीने तेथीज

आंखना बधा रोगोनो घोर आकर (समूह) थाय छे तथा 'जिमियंति' जाडयता-(चरबीनुं वधवुं; अने लोहीनुं पाणी थवुं.) तेथी शरीरनां बधां अवयवोनुं परवशपणुं (अवशित्व) छे. [जेने लीधे जोइए; तेम, हाली-चाली शकाय के, फरी शकाय नहि] 'कुणियंति' गर्भाधानगा दोषथी एक पग टुंको होय; अथवा, एक हाथ खोडवाळो होय ते कुणिरोग छे. 'खुज्जियंति' कुबडो. पीठ विगेरेमां कुबडापणुं होय; ते, 'कुबजी छे.' मातपिताना लोही-वीर्यनो दोष होय; तो तेथी, गर्भमां रहेला दोषोथी कुब्ज-(कुबडो) वामन विगेरेनी खोडो शरीरमां थाय छे; कह्युं छे केः—

गर्भे वातप्रकोपेन, दौहृदे वाऽपमानिते ॥ भवेत् कुब्जः कुणिः पंगुर्मूको मन्मन एवा वा ॥१॥

गर्भनी अंदर वायुना प्रकोपथी अथवा दोहला न पूरावाथी गर्भमां रहेलो जीव कुबडो कुणिरोगवाळो पांगळो मुंगो के मन्मन रोगवाळो थाय छे, आंमां 'मुंगो' अने मन्मन एकांतरित (पेटना रोग पछीना रोगमां) मुखदोषमां बतावे छे, तथा 'उंदरिं च' ति ('च' समुच्चयना अर्थमां छे) वात, पित्त विगेरेना कारणे उत्पन्न थयेला आठ प्रकारना उदर रोग छे, ते रोगवाळो उदरी छे, तेमां जलोदर रोग असाध्य छे, बाकीना तुर्त थएला दवा करतां मटे तेवा छे, तेना आ प्रमाणे भेदो छे.

पृथक् समस्तैरपि चानिलाद्यैः प्लीहोदरं बद्धगुदं तथैव ॥ आगंतुकं सप्तममष्टमं तु जलोदरं चेति भवंति तानि ॥१॥

बधा अनिल [वायु] विगेरे एकेकथी के समुदायथी १ वायुनो (वातोदर) २ पित्तनो [पितोदर] ३ कफनो (कफोदर) तथा ४ संनिपात (कष्ठोदर) पालीह (बरोळनी गांठ) ५ उदर रोग (काचबी अकृत विगेरे) ६ बद्धगुद [अजीर्णांश] ७ आंगतुक ताव साथे उदर रोग (जीर्णज्वर) ८ जलोदर ए आठ रोग पेटना छे,

'पासमूयंति' हे शिष्य ! तुं मुंगा अथवा मन्मन (बोबडुं) बोलनाराने जो,! ते गर्भना दोषथी अथवा पछवाडेथी ६५ प्रकारना मुखनारोगो सात आयतन [स्थान]मां थाय छे, ते आयातन नीचे मुजब छे, १ होठ २ दांतनुं मूळ ३ दांत ४ जीभ ५ ताळवुं ६ कंठ ए बधां मळीने सात छे, तेमां बे होठना आठ रोग छे, दंतमूळमां १५, दांतना आठ छे, जीभना ५ छे, ताळवाना ९ छे, कंठमां १७ अने बधाना साथे मळीने त्रण छे. कुल ६५ छे, 'सूणियंति' शून्यपणुं श्वयथु [सोजानो] रोग वात पित्त श्लेष्म संनिपात रक्त अने अभिघात (मार लागवाथी) थी छ प्रकारनो छे, कह्युं छे केः—

शोफः स्यात् षड्विधो घोरो, दोषै रुत्सेध लक्षणः यस्तैः समस्तैश्चापीह तथा रक्ताभिघातजः

शोफ नामनो छ प्रकारनो घोर रोग जुदा जुदा के, सामटा दोषथी शरीर फुलेलुं देखाय; ते लोहीना बिगाडथी थाय छे. एटले, श्लोक पहेलां बताव्या प्रमाणे वात, पित्त, कफ, अने संनिपात, रक्त, अने अभिघातथी सोजानो रोग थाय छे, तथा "गिलासणिति" ते भस्मक नामनो व्याधि छे. ऊष्णता, वात, अने पित्तना ऊत्कटपणाथी, अने कफना न्यूनपणाथी तथा गरमी वधारे थवाथी थाय छे, तथा वेवईति ते वायुथी उत्पन्न थयेल शरीरनां अवयवो कंपरूप छे. कह्युं छे केः—

प्रकामं वेपते यस्तु, कंपमानश्च गच्छति, कलाप खंजं तं विद्या, न्मुक्त संधिनिबंधनम् ॥१॥

जे घणो कंपे, तथा कंपतो चाले, तेने संधि निबंधनथी मुकाएलो कलाप खंज (लकवानो रोग), जाणवो. तेज प्रमाणे "पिढसप्पि च ति" जीवने गर्भना दोषथी ते पीढ सर्पिपणे उत्पन्न थाय छे, अथवा जन्म्या पछी अशुभ कर्मना दोषथी थाय छे,

आ रोगीने स्पर्श इंद्रिनुं भान रोगवाळी जग्याएथी नष्ट थाय छे, ते रोगवाळाने हाथमां पकडेलुं लाकडुं खसी जाय छे, अने सूइ घोंचे तो पण असर न थाय तथा 'सीलीवयं त्ति' श्लीपद ते पग विगेरेमां कठण पणुं होय छे, ते आ प्रमाणे—वात, पित्त, कफना प्रकोपथी छातीमां रोग उत्पन्न थइ जंघामां स्थिर थइ धीरे धीरे काळांतरे पगोनो आश्रय करीने सोजो चडावे छे, ते रोगोने श्लीपद कहे छे.

पुराणोदक भूमिष्ठाः, सर्वर्तुषु च शीतलाः ये देशा स्तेषु जायन्ते, श्लीपदानि विशेषतः ॥ १ ॥

जे देशमां पाणी भराइ रहेलुं होय, अने छए ऋतुमां शीतल (भेज) रहेतो होय, तेवा देशोमां विशेषे करीने श्लीपद रोग थाय छे;

यादयोर्हस्तयोश्चापि, श्लीपदं जायते नृणां; कर्णोष्ठनाशास्वपि च, केचि दिच्छन्ति तद्विदः ॥ २ ॥

बे पगमां बे हाथमां माणसोने ते रोग थाय छे, पण केटलाक विद्वानोनो एवो मत छे के ते रोग कान होठ अने नाकमां पण थाय छे. तथा 'मधुमेहणिं' ति मधु मेह ते 'बस्ति रोग' छे ते जेने होय ते मधुमेहि कहेवाय छे, एटले मधना जेवो तेनो पेसाब होय छे, ते प्रमेह, (परमीओ) ना २० भेद छे, ते असाध्य पणे गणाय छे. तेमां बधाए प्रमेहो प्राये बधा दोषोथी थाय छे, तो पण वात विगेरे उत्कट थवाथी २० भेदो थाय छे, तेमां कफथी १० पित्तथी ६ अने वायुथी ४ थाय छे, अने ए बधा असाध्य अवस्थामां मधुमेहपणामां थाय छे. कह्युं छे केः—

सर्वएव प्रमेहास्तु, कालेना प्रतिकारिणः मधुमेहत्वामायान्ति, तदाऽसाध्या भवंति ते ॥ १ ॥

बधा प्रमेहना रोगो योग्य समयमां दवा न करवाथी मधुमेहपणुं पाम्या पछी असाध्य बने छे.

आ प्रमाणे उपर बतावेला सोळे रोगोनुं वर्णन अनुक्रमे कर्युं, ('अथ' अने 'ण' जे छे. ते 'अथ' नो अर्थ गुजरातीमां 'पछी' थाय छे. अने 'ण' तो फक्त शोभा माटे छे) उपर बतावेला रोगो संसारी जीवने थाय छे, तथा आतंक एटले शीघ्र जीव लेण रोग जे शूळ विगेरे छे, तथा गाढ प्रहार (जोरथी लागेलो मार) विगेरे दुःख देनारा स्पर्शो कां तो अनुक्रमे आवे अथवा साथे पण थाय, एटले कंइ निमित्तथी आवे अथवा अनिमित्ते आवे, अने ते रोगोथी पीडाय छे. आ रोगोथीज ते मुकातो नथी. बीजुं पण ते संसारी जीवने अधिक दुःख थाय छे, ने बतावे छे, ते कर्म रोगथी भारे थयेला गृहवासमां आसक्त थएला मनवाळा अ समंजस रोगथी पीडा थतां अंते प्रणित्याग थाय छे. ते विचारीने अने पाछो तेमनो उंपपात तथा च्यवन (देवता जन्म मरणने बदले उपपात च्यवन कहेवाय छे.) ते कर्मनुं संचित जाणीने एवुं करवुं जोइए के जेथी उपर बतावेल गंड (गुमडां) विगेरे १६ रोग तथा मरणनो तथा उपपातनो संपूर्ण अभाव थाय, वळी मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योगथी मेळवेल कर्मनो 'अबाधा' काळनी मुदत पछी उदय थाय छे. त्यारे तेनो परिपाक (अनुभव) थाय छे. तेज शरीर तथा मन संबंधी दुःख उत्पन्न करे छे, ते विचारीने तेने जड मूळथी काढवा प्रयत्न करवो जोइए; ते दुःखीओ दीनस्वरे रडे छे. विगेरे ग्रंथ (सूत्र) वडे ऊपपात. तथा च्यवन सुधी बताव्या छतां पण, तेनुं मोटापणुं बतावबा जेनावडे प्राणीओने संसारमां निर्वेद (खेद) उत्पन्न थाय; माटे बीजुं सूत्र कहे छेः—

तंसुणेह जहा तहा संति पाणा अंधा तमसि वियाहिया, तामेव सइं असइं अइअच्च उच्चावय

फासे पडिसंवेएइ, बुद्धेहिं एयं पवेइयं संति पाणा वासगा रसगा उदए उदएचरा आगास गामिणो पाणा पाणे किलेसंति, पासलोए महब्भयं (सू० १७७)

(आचार्य शिष्यने कहे छे.) जे यथावस्थित (जेवो छे, तेवा) कर्मविपाकने मारी पासे तमे सांभळो. जेमके—नारकी, तिर्यंच, नर, अमर, ए लक्षणवाळी चार गतिओ छे. तेमां नरकगतिमां, चारलाख योनियो, तथा २५ लाख कुल कोटिओ छे, अने ३३ सागरोपमनी ऊत्कृष्ट स्थिति छे, त्यां परमाधार्मिक देवतानी करेली वेदना छे, तथा परस्पर त्यां रहेला नारकीना जीवो (कुतरा माफक) एक बीजाने दुःख दे छे, तथा स्वभाविक पीडा त्यां जे थाय छे, ते आपणाथी कही शकाय तेम नथी. जो के, थोडामां कहेवानी इच्छाथी कहेवाना विषयने पूरो न कहेवाय; तोपण, त्यांना कर्मविपाक कहेवाथी जेम, प्राणीओने वैराग्य थाय; तेम श्लोकोवडे वर्णन करे छे.

श्रवण लवनं नेत्रोद्धारं करक्रम पाटनं । हृदय दहनं नासाच्छेदं प्रतिक्षण दारुणम् ॥
कट विदहनं तीक्ष्णापात त्रिशूल विभेदनम् । दहवदनैः कङ्कैर्घोरैः समन्त विभक्षणम् ॥ १ ॥

कानने कापवा; आंखोना डोळा खेंचीकाढवा; हाथपगने छेदवा; छातीने बाळवी; नाक छेदीनाखवुं; दरेकक्षणे भयंकर अवाज करवो; कटविदहन, तीक्ष्ण आपात, त्रिशूळथी भेदवुं; बळनां मोढांवाळा घोर—कंक पक्षीओथी वारंवार भक्षण करवुं. आवी मोटी वेदनाओ परमाधामीथी छे.

तीक्ष्णै रसिभिर्दिप्तैः कुन्तै विषमैः परश्वधै श्चक्रैः परशु त्रिशूलमुद्‍गरतामरे वासी मुषंढीभि ॥ २ ॥

वळी, देदीप्यमान तीक्ष्ण तलवारोथी तथा विषमभाला, परशुअध चक्रोवडे, तथा परशु-त्रिशूल मुद्‍गर, तोमरवासी मुषंढीथी दुःखदेछे.

संभिन्नतालु शिरसश्छिन्न भुजाश्छिन्न कर्णना सौष्ठाः भिन्नहृदयोदरान्त्रा भिन्नाक्षि पुटाः सुदुःखार्त्ता ॥ ३ ॥

एटले, ताळवुं-माथुं जुदुं पाडे छे, तथा भुजा, कान, अने होठ छेदीनाखे; तथा छाती-पेट, आंतरडां भेदीनांखे; तथा आंखोना डोळा खेंची काढवाथी रांक नारकीना जीवो पीडायला छे.

निपतन्त उत्पतन्तो विचेष्टमाना महीतले दीनाः नेक्षंते त्रातारं नैरयिका कर्म्म पटलान्धाः ॥ ४ ॥

नीचे पडेला पाछा ऊछळता जुदी जुदी चेष्टा करता महीतळ (पृथ्वी) उपर दीन थइ रहेला कर्मना पडदाथी अंधा बनेला नारकीना जीवो कोइ रक्षकने जोइ शकता नथी.

शार्दुल विक्रिडित,

छिन्द्यते कृपणाः कृतान्त परशो स्तीक्ष्णे न धारासिना; क्रदन्तो विषवीचि (वच्छ) भिः परिवृता संभक्षण व्यापृतैः ॥
पाटयन्ते क्रकचेन दारुवदसिन प्रच्छिन्न बाहुद्वयाः कुंभीषु त्रपुपान दग्धतनवो मूषासु चान्तर्गताः ॥ ५ ॥

(हडकायला कूतरा जेवा) विषना समूहथी भरेला. जमराजा परशुनी तीक्ष्ण तलवार जेवी धारावडे ते रांकडा छेदाय छे, तथा करडवा माटे वींटायला पोकार करता रहे छे, तथा करवतीवडे जेम, लाकडुं चीरे; तेम चीराय छे, तथा तलवारवडे तेना बे बाहु छेदी नाखे छे, तथा कुंभीमां राखीने गरम गरम तरवुं पाय छे, तथा मूषमां (घालीने जेम सोनी सोनुं पीगळावे; तेम) घालीने

शरीरमां बळता राखेला छे.

भृज्ज्यन्तेज्वलदम्बरीषहुतभुग् ज्वालाभिराराविणो, दीप्तां गारनिभेषु वज्र भवनेष्वं गारके षूत्थिताः ॥
दह्यन्ते विकृतोर्ध्व वाहुवदनाः क्रदन्त आर्त्तस्वनाः पश्यन्तः कृपणा दिशो विशरणा स्त्राणायको नो भवेत् ॥ ६ ॥

वळी, ते नारकीना जीवो बळता अंबरीय अग्निनी ज्वाळावडे पोकार कराता भुंजाय छे, तथा बळता अंगारावाळा वज्रभवन माफक अंगारामां ऊभा थयेला रांकडा मोंवाळा ऊंचा हाथ करीने खोखरा अवाजवाळा रडता बळे छे. अने ते विचारा नारकीना जीवो शरणरहित थइने बधी दिशामां (आश्रय) आपनारने देखे छे, पण तेमने बचाववा कोइ समर्थ नथी; विगेरे, नारकीनां दुःख छे. तथा तिर्यग्गतिमां पृथ्वीकायनी ७ लाख योनि छे, तथा बार लाख कुल कोटि छे. तेमने नीचली (पीडाओ) छे.

स्वकाय–परकायनां शस्त्रोथी पीडा छे, तथा शीत–ऊष्णनी पीडा छे. तेज प्रमाणे अप्काय (पाणी) ना जीवोनी ७लाख योनि, तथा कुल कोटि, तथा जुदी जुदी जातिनो वेदनाओ छे. अग्निकायनी ७ लाख योनि, तथा ३ लाख कुल कोटि, अने पूर्व माफक वेदना छे. वायुनी पण ७ लाख योनि, तथा ७ लाख कुल कोटि, अने ठंड–ऊष्णतानी जुदा जुदा प्रकारनी वेदना छे. प्रत्येक वनस्पतिनी दशलाख योनि, साधारण वनस्पतिनी १४ लाख योनि, अने बंनेनी २८ लाख कुल कोटि छे. तेमां गयलो जीव अनंतकाळ सुधी पण छेदन–भेदन मोटन विगेरेनी जुदी जुदी वेदनानें अनुभवे छे.

विकळइंद्रिय, बेइंद्रिय, तीनइंद्रिय, चारइंद्रियनी बबे लाख योनि, तथा कुल कोटि ७–८–९ लाख अनुक्रमे छे, अने ते दरेकने भूख तरस, ठंड–ताप, विगेरेथी थतुं दुःख आपणे प्रत्यक्ष जोइए छीए. तीर्यंच–पंचेन्द्रियनी चारलाख योनि छे, अने जळचरनी कुल

कोटि १२॥ लाख छे, पक्षीओनी कुल कोटि १२ लाख, अने चोपगांनी १० लाख, ऊर परि सर्पनी १० लाख, भुज-परिसर्पनी ९ लाख छे, अने जुदी जुदी वेदना तिर्यचोनी जे छे, ते प्रत्यक्षज छे. कह्युं छे केः—

क्षुत्तृड् हिमात्युष्ण भयार्दितानां, पराभि योगव्यसना तुराणां अहो ! तिरश्चामति दुःखिताना, सुखानु षंगः किलवार्त्तमेतद् ॥१॥

भूख तरस, ठंड ताप तथा भयथी दुःखी थएला तथा पारकाना कवजामां रहेवाना दुःखथी सदा पीडायेला एवा तिर्यचो जे अति दुःखी छे, तेमनामां सुखनो अनुसंग शोधवो ने तो निश्चे एक वार्त्ता मात्र छे! (अर्थात् सुखतो लेश पण नथी) विगेरे छे.

मनुष्य गतिमां पण १४ लाख योनि तथा १२ लाख कुल कोटि अने आवी रीतनी वेदनाओ छे.

दुःखं स्त्री कुक्षिमध्ये प्रथममिह भवे गर्भवासे नराणां बालत्वेचापि दुःखं मललुलिततनुः स्त्रीपयः पानमिश्रं ॥
तारुण्येचापि दुःखं भवति विरहजं वृद्धभावोप्यसारः संसारे रे मनुष्या वदत यदिसुखं स्वल्पमप्यस्ति किंचित् ॥ १ ॥

प्रथम मातानी कुखमां आ भवमां पहेलुं दुःख मनुष्योने गर्भवासमां रहेवानुं छे, अने जन्म्या पछी बालपणामां मलथी खरडायलुं शरीर संबंधी तथा मानुं दूध पीवानुं दुःख छे, जुवानीमां पण (स्त्री पुरुष तथा दीकरा दीकरी मावाप सगांना) विरहनुं दुःख छे, अने वृद्धावस्था तो असारज छे, (माटे डाह्यो माणस मुग्ध जीवने पूछे छे के) हे मनुष्यो! जो तमने कयांय पण संसारमां थोडुं पण सुख देखातुं होय तो बोलो! (अर्थात् संसार दुःख सागरज छे)

बाल्यात् प्रभृति चरोगै, र्दष्टो भिभवश्च यावदिह मृत्युः शोक वियोगायोगै, र्दुर्गत दोषैश्च नैकविधैः ॥ २ ॥

बालपणमांथीज रोगोवडे डंखायलो, अने मृत्यु सुधी (मर्ण पर्यंत) शोक वियोग तथा कुयोग वडे तथा अनेक प्रकारना गरी-

बीना दोषो वडे पराभव रहेल छे.

क्षुत्तृड् हिमोष्णानिल शीतदाह दारिद्र्य शोकप्रिय विप्रयोगैः दौर्भाग्य मौर्ख्यान भिजात्यदास्य वैरूप्य रोगादि भिर स्वतंत्रः ॥२॥

भूख तरस ठंड ताप, पवन तथा ठंडो दाह तथा दरिद्रता शोक वहालांना वियोगथी, तथा दुर्भागीपणुं, मूर्खता, नीचजाति, तथा दासपणुं, कुरुप, तथा रोगोथी, आ मनुष्यदेह सदा परतंत्र छे.

देवगतिमां पण चारलाख, योनि, २६ लाख कुल कोटि छे, तेमां पण अदेखाइ, विषाद; मत्सर च्यवनभय, शल्य विगेरेथी पीडायला मनवाळाने दुःखनोज प्रसंग छे. सुखनुं अभिमान तो, आभास, मात्र छे. कह्युं छे केः—

देवेषु च्यवन वियोगदुःखितेषु क्रोधेर्ष्या मदमदनाति तापितेषु आर्या! नस्त दिह विचार्य सं गिरन्तु यत्सौख्यं किमपि निवेदनीयमस्ति

देवो, च्यवन, तथा वहालांना वियोगथी दुःखी छे, क्रोध, इर्ष्या, अहंकार, कामदेवथी अति पीडायला छे. तेथी हे आर्य! (उत्तम) पुरुषो! अहीं कंइपण सुख वर्णववायोग्य होय; ते विचारीने कहो; (विगेरे समजवुं.)

तेथी, आ प्रमाणे चार गतिमां पडेला संसारी जीवो जुदा जुदा रुपे कर्मविपाकने भोगवे छे, तेज सूत्रकार बतावे छे. 'संति' प्राणीओ विद्यमान छे. तेओ चक्षुइंद्रियथी विकळ ते द्रव्यअंधा छे, अने सारा—माठा विवेकथी रहित भावअंध पण छे. तेओ नरक-गति विगेरेना द्रव्यअंधकारमां तथा मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, विगेरेना कर्मविपाकथी मळेला भावअंधकारमां पण रहेला (शास्त्रकारे) वर्णव्या छे. 'किं च' वळी, तेवी, कुष्ट (कोढ) विगेरेनी अधम अवस्थामां, अथवा एकेंद्रियनी, अथवा अपर्याप्ति अव-स्थाने एकवार अनुभवीने पाछुं कर्म ऊदय आवतां तेमज, अवस्थाने वारंवार अनुभवीने ऊच-नीच तीव्रमंद दुःख विशेषना स्पर्शोने

जीव अनुभवे छे. आ बधुं तीर्थंकरे कहेलुं छे. ते कहे छे.– आ बधुं तीर्थंकरे प्रकर्षथी अथवा प्रथमथी कहेलुं छे, माटे प्रवेदित छे. तथा हवे पछी, कहेवातुं पण तेमनुं कहेलुं छे. 'संति' जीवो विद्यमान छे. एटले, (वास धातुनो अर्थ शब्द, तथा कुत्साना अर्थमां छे. माटे,) जेओ वास करे छे, ते वास ना (बोलनारा) भाषा लब्धि पामेला बेइंद्रिय विगेरे जीवो पण छे. तेज प्रमाणे रसने अनुसारे जनारा ते कडवो–तीखो कषायलो विगेरे रसने जाणनारा एटले, मनवाळा संज्ञी–जीवो पण छे. (आ प्रमाणे संसारी जीवोनो कर्मविपाक विचारीने महाभय जाणवो;) तेमज ऊदक–(पाणी) रुप–एकेंद्रिय जीवो छे. पर्याप्त–अपर्याप्त अवस्थामां, तथा ऊदकमां चरनारा ते पोरा, छेदनक, लोड्डणक विगेरे त्रस जीवो छे, तथा माछलां, काचबा विगेरे पण छे. तेमज, स्थळ उपर जन्मनारा. अने केटलाक जळने आश्रये रहेला महोरग तथा पक्षीओमांना केटलाक, ते पाणीमां पोतानुं जीवन गुजारनारा जाणवा; अने बीजां पक्षीओ आकाशगामी छे. आ प्रमाणे बधां प्राणीओ (पोतानाथी बीजां नबळां) प्राणीने आहार विगेरे माटे, अथवा मत्सर विगेरे माटे दुःख आपे छे. तेथी शुं समजवुं? ते कहे छेः—(हे शिष्य!) तुं अवधार! के, आ चौद रज्जुप्रमाण–लोकमां कर्मविपाकना कारणे जुदी जुदी गतिमां दुःख तथा क्लेशनां फळरूप–महाभय छे. (पण तेमां सुख तो, कहेवामात्र छे.) शामाटे कर्मविपाकथी महाभय छे? ते कहे छेः—

बहुदुक्खा हु जन्तवो, सत्ता कामेसु माणवा, अबलेणा वह गच्छंति सरीरेणं पभंगुरेण अट्टे से बहुदुक्खे इइ बाले पकुव्वइ एए रोगा बहू नच्चा आउरा परियावए नालं पास, अलं तवेएहिं एयं

पास मुणी! महब्भयं नाइ वाइज्ज कंचणं (सू० १७८)

(गुरु कहे छे हे शिष्यो!) कर्मना विपाकथी आवेलां बहु दुःखो जे जीवोने छे, जेथी ते जाणीने तमारे तेमां अप्रमादवाळा थवुं. प्र० वारंवार आवो उपदेश केम करो छो? उ—कारण के अनादि भवना अभ्यासथी न गणाय, तेटला उत्तर परिणामवाळा इच्छामदन विषयोमां गृद्ध थयेला पुरुषो छे, तेथी पुनरुक्ति दोष लागतो नथी, हवे काम (कुचेष्टा) मां जे जीवो आसक्त छे, ते शुं मेळवे छे, ते कहे छे—बलरहित (निःसार) तुष (डांगरनां फोतरां) नी मुठी समान औदारिक शरीर जे पोतानी मेळे भंग नाशना स्वभाववाळुं छे, तेना वडे सुख मेळववा कर्मनो उपचय करीने अनेकवार वध (मरण घात) ने मेळवे छे;

प्र—कयो माणस आवा कडवा विपाकवाळी संसारी वासनामां रति (आनंद) माने? ते कहे छे—

जे मोहना उदयथी आर्त्त थयेल छे. अने कार्य अकार्यना विवेकने गणतो नथी, ते प्राणी जेना वडे बहु दुःख पमाय तेवा काम विषयोमां गृद्ध थाय छे, अथवा प्राणीओने कलेशरुप कृत्यने पोते रागद्वेषथी आकुळ बनेल बाळजीव प्रकर्षथी करे छे. अने तेवां पाप करवाथी तेना कर्मना फळरुप विपाकथी अनेकवार पोते वध पामे छे, (बुरे हाले मरे छे) अथवा पूर्वे बतावेला रोगो आवतां हवे पछी कहेवातां अकृत्यने बाळ (मूर्ख) जीव करे छे, ते बतावे छे-गंडमाळा कोढ क्षय विगेरे रोग आवतां ते रोगोनी वेदनाथी गभराइने तेने दूर करवा माटे बीजा प्राणीओने संतापे छे, लावक विगेरे पक्षीनुं मांस खातां क्षय रोग मटशे, आवा कुवाक्योने सांभळीने जीववानी पोते आशाए प्राणीओने महा दुःखरुप अकार्यमां पण वर्ते छे, पण आम विचारता नथी, के पोतानां करेलां पापोनां फळ ऊदयमां आव्या विना रहे नहि, माटे उदयमां आवेल छे, तथा कर्म शांत थतां ते उपशम (शांत) थाय छे,

पण प्राणीओने दुःखरुप चिकित्सा (उपाय) करवाथी फक्त नवां पापोज बंधाय छे, ते कहे छे, के हे शिष्यो! विमळ विवेकरुप ज्ञान चक्षुवडे धारीने जुओ! के ते रोगोने दूर करवा चिकित्सा विधिओ समर्थ नथी.

प्र०—जो एम छे तो शुं करवुं ?

उ—'अलं' हे शिष्य तुं! सारा नरसानो विवेकवाळो छे; माटे तारे एवी पाप चिकित्सानी जरुर नथी! किंच—वळी प्राणीने दुःख देवारुप कृत्य बहु भयरुप होवाथी महा भय तरीके हे मुनि! तुं तेने जाण—(त्रण जगतना स्वभावने जाणे, माने ते मुनि छे) प्र—जो एम छे तो शुं करवुं? उ—कोइ पण प्राणीने तुं हणतो नहिं; कारण के एक पण प्राणीने हणतां आंठे प्रकारनां कर्मो बंधाय छे, अने तेनो क्षय न कराय तो संसार भ्रमण करावे छे. माटे महाभय छे, अथवा उपर कहेला रोगो बहु प्रकारे जाणीने कुवासनाने आश्रयी ते जाणवा, अर्थात् कामो (कुचेष्टाओ) पोतेज रोगरुप छे, एवुं अतिशे जाणीने जेम आतुर बनेला कामचेष्टामां अंधा थएला जीवो बीजा प्राणीओने दुःख दे छे, (तेम तमारे न देवुं) ए प्रमाणे रोग अने काम चेष्टामां आकुळ थयेला सावद्य अनुष्ठानमां प्रवर्त्तेलाने उपदेश आपवारुप महा भयरुप जीव हिंसा बतावीने तेवी हिंसा न करनारा गुणवान (मुनिराजो) ना स्वरुपने बताववा प्रस्ताव रचीने बतावे छेः—

आयाण भो सुस्सूस! भो धूयवायं पवेयइस्सामि इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं आभसेएण अभिसंभूया अभिसंजाया। अभिनिव्वुडा अभिसंवुड्ढा अभिसंवुद्धा अभिनिक्कंता अणुपुव्वेण

महामुणी (सू० १७९)

हे शिष्य! [भो अव्यय आमंत्रणना अर्थमां छे] हुं तमने हवे पछी जे कहीश, ते बरोबर जाणो, अने सांभळवानी आकांक्षा राखो! (बीजी वार भो शब्द आ विषय महत्वनो छे एम बतावे छे) के तमारे अहीं प्रमाद न करवो, हुं धूतवादने कहु छुं आठ प्रकारना कर्मने धोइ नांखवा, ते धूत छे अथवा ज्ञाति [सगांना मोह]नो त्याग करवो, ते धूत छे. तेनो वाद (कथन) कहीश, ते तमारे एक चित्ते सांभळवो आना संबंधमां नागार्जुनीया कहे छे के, (धुतोववायं पवेयंति) एटले आठ प्रकारना कर्मने अथवा पोताने धोवानो उपाय तीर्थंकर विगेरे कहे छे, ते उपाय कयो छे? ते कहे छे (इह) आ संसारमां [खलु वाक्यनी शोभा माटे छे] आत्मानो भाव ते आत्मता [आत्मपणुं] ते जीवनुं अस्तित्व छे, अथवा पोतानां करेला कर्मनी परिणति छे, तेना वडे आ जीव समूह छे, पण अन्य लोकना मानवा प्रमाणे पृथ्वी विगेरे भूतोना कायाकारे परिणमवाथी जीवो बन्या नथी, अथवा प्रजापति (ब्रह्मा) ए बनावेल नथी एटले तेवा तेवा ऊंच नीच कुळमां पोताना पूर्वना कर्म संचयथी मेळवेला शुक्रशोणीत [वीर्य लोही माताना उदरमां] एकत्र थवाथी अनुक्रमे मनुष्यनी उत्पति छे, तेनो आ प्रमाणे क्रम छे.—

सप्ताहं कललं विन्द्या, ततः सप्ताहमर्बुदम् अर्बुदाज्जायते पेशी, पेशीतोऽपि घनं भवेत् ॥ १ ॥

ते वीर्य लोहीनुं सात दिवसे कलल थाय, पछी अर्बुद थाय छे, पछी पेशी थाय. त्यार पछी घन थाय छे. तेमां ज्यांसुधी कलल थाय त्यांसुधी अभिसंभूत कहेवाय छे, पेशी थतां सुधी अभिसंजात कहेवाय छे, त्यार पछी सांगोपांग स्नायु शिर रोम विगेरे अनुक्रमे थतां अभिनिवृत्त छे, त्यारथी प्रसूत थतां अभिसंवृद्ध छे, अने धर्म श्रवणनी अवस्थामां आवतां धर्मकथा विगेरे निमित्त

मेळवीने मेळवेल पुण्य पापपणाथी अभिसंबुद्ध जाणवा, त्यार पछी सत् असत्‌नो विवेक जाणनारा होय ते अभिनिष्क्रांत छे, त्यार पछी आचारांग सूत्र भणेला तथा तेनो अर्थ समजीने चारित्र पाळनारा अनुक्रमे प्रथम शिक्षक (शिष्य) गीतार्थ पछी क्षपक (तपस्वी) पछी परिहारविशुद्धि चारित्रवाळो तथा एकलविहारी जिन कल्पिक सुधी ऊंचे चढनारा मुनिओ वने छे. अने कोइ अभिसंबुद्ध पुरुष दीक्षा लेवा तैयार थयो होय तो तेन पोतानां सगां जे करे ते कहे छे.

तं परिक्कमंतं परिदेवमाणा मा चयाहि इय ते वयंति! छंदोवणीया अज्झोववन्ना अक्कंदकारी जणगा रुयंति, अतारिसे मुणि [णय] ओहं तरए जणगा जेण विप्पजढा, सरणं तत्थ नो समेइ, कहं नु नाम से तत्थ रमइ ?, एयं नाणं सया समणुवासिज्जासि तिबेमि(सू० १८०) धूताध्ययनोद्देशकः ६-१

जे तत्व स्वरुप जाणीने गृहवासथी पराङ्मुख वनीने महा पुरुषोए आचरेला मार्गे जवा (दीक्षा लेवा) तैयार थयो होय तेने माता पिता पुत्र कलत्र विगेरे मळतां ते सगां तेने रोइने कहे छे, के अमने तुं न त्यज, एम दया उपजावतां बोले छे, तथा बीजुं शुं बोले छे, ते कहे छे, ताराछंद (अभिप्राय) ने अमे अनुकूळ छीए, तारा उपर अमारो पूर्ण विश्वास छे, तेथी अमने न छोड, एम आक्रंद करीने ते सगां रडे छे, वळी आ प्रमाणे बोले छे, के "तेवो मुनि संसार तरी शकतो नथी के जे पाखंड (मुनिना बोध) थी ठगाइने माबापने त्यजीने दीक्षा ले." आम कहे, तो पण जेणे संसारनुं तत्व जाण्युं छे, तेवो जे करे, ते कहे छे, जो के आ सगां मारा उपर पूर्ण प्रेमी छे, छतां पण ते खरे वखते शरण आपतां नथी, अर्थात् तेमनुं शरण स्वीकारतो नथी, शा माटे आ शरण नथी ? ते कहे छे, ते गृहवास बधा तिरस्कारने योग्य नरकना प्रतिनिधि समान अने शुभद्वारने परिघ समान छे, तेमां कोण

डाह्यो माणस रमणता करे? वळी गृहवास बधा द्वंद्व (रागद्वेष विगेरेनां जोडलां) रूप छे, तेमां जेनुं मोह 'कपाट' घटी [ओछुं थइ] गयेल छे, ते रति करे? [अर्थात् तेमनो मोह न करे] आ बधानो उपसंहार करे छे, के पूर्वे कहेलुं ज्ञान हंमेशां आत्मानी अंदर स्थापी राखजो, एवुं सुधर्मास्वामी शिष्यने कहे छे. धूतअध्ययननो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशो.

प्रथम उद्देशो कह्यो, हवे, बीजो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबध छे. गया उद्देशामां सगांनो मोह छोडवा सूचव्युं. ते जो, कर्मनुं विधुनन थाय; तो, सफळ थयुं कहेवाय; माटे कर्मनुं विधुनन करवा आ उद्देशो कहेवाय छे. आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे.

आउरं लोगमायाए चइत्ता पुव्वसंजोगं हिच्चा उवसमं वसित्ता बंभचेरंसि वसु वा अणुवसु वा जाणित्तु धम्मं अहा तहा अहेगे तमचाइ कुसीला (सू० १८१)

लोक ते, मातापिता, पुत्र, कलत्र विगेरे स्नेहना संबधथी वियोग थतां पीडाय छे, अथवा तेमनुं बगडतां पीडाय छे, अथवा संसारी-जीवोनो समूह कामरागमां पीडातो होय; तेने ज्ञानवडे ग्रहणकरीने (समजीने) तथा पोतानां मातापिता विगेरेनो संबंध छोडीने तथा, उपशम मेळवीने ब्रह्मचर्यमां वसीने उत्तम साधु केवो होय? ते कहे छेः—वसु ते, द्रव्य छे. ते द्रव्यवाळो अर्थात् कषायरूप-कालाश विगेरे मळने दूर करी पोते वीतराग बने छे, अने तेथी उलटो, अनुवसु सराग छे. अथवा वसु ते, साधु छे.

अने अनुवसु ते, श्रावक छे. तेमज, कह्युं छे के:—

वीतरागो वसुर्ज्ञेयो, जिनो वा संयतोऽथवा; सरागो ह्यऽनु वसुः प्रोक्तः, स्थविरः श्रावकोऽपिवा;

वीतराग ते वसु जाणवो, पछी ते जिन होय अथवा संयत [साधु] होय, अने सराग होय, ते अनुवसु कह्यो छे, अथवा बुढ्ढो अथवा श्रावक पण होय छे.

तथा श्रुतचारित्ररुप–धर्म जाणीने पछी यथायोग्यपणे स्वीकारीने पण पछी केटलाक जीवो प्रबळ मोहना उदयथी तेवी भवितव्यताना योगे तेवा उत्तम धर्मने पाळवा शक्तिवान थता नथी, ते केवा छे? उत्तर–कुशीला एटले खराब शील (आचार) वाळा छे, एटले जेओ धर्म पाळवामां अशक्त छे, तेथीज तेओ कुशीलवाला छे, एवा बनीने शुं करे छे? ते कहे छे:—

वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं विउसिज्जा, अणुपुव्वेण अणहियासेमाणा परीसहे दुराहियासए कामे ममायमाणस्स इयाणिं वा मुहुत्तेण वा अपरिमाणाए भेए, एवं से अंतराएहिं कामेहिं आकेवलिएहिं अवइन्ना चेए (सू० १८२)

करोडो भवे पण दुःखेथी मेळवाय, तेवो मनुष्य जन्म पामीने पूर्वे कदीपण न मेळवेल एवी संसार समुद्रथी पार उतरवा समर्थ नाव समान बोधि (सम्यक्त्व) मेळवीने मोक्ष वृक्षना बीज समान सर्व विरति लक्षणवाळुं चारित्र स्वीकारीने पाछा कामदेवनो मार दुःखेथी निवारण थाय तेवो होवाथी, मन ढीलुं थवाथी, इंद्रियोनो समूह लालचु थवाथी अनेक भवना अभ्यासथी मेळवेली

विषयनी मधुरताथी प्रबळ मोहनीय कर्मना उदयथी, अशुभ वेदनीयनो भाव एकदम प्रकट थवाथी, अयशःकीर्त्ति उत्कटपणे थवाथी, आयति (भविष्यनुं हित) ने तरछोडीने कार्य अकार्यने विचार्या विना महादुःखनो सागर स्वीकारीने वर्त्तमान सुखने देखनारा कुलमां वर्ततो आचार नीचे नांखीने (उत्तम रत्नरुप) चारित्रने त्यजे छे!!! अने तेनो त्याग धर्मोपकरण त्यागवाथी थाय छे, ते बतावे छे. वस्त्र ए शब्दथी क्षौमिक [सूत्रनां] कल्प (वस्त्र) लीधो छे, तथा पात्रां अने उननी कांवळ अथवा पात्रांनो नियोग तथा रजोहरण ए धर्मोपकरणोने बेदरकारीथी त्यजीने कोइ साधु फरीथी देशविरति [श्रावकनां व्रत] स्वीकारे छे, कोइ तो फक्त सम्यक्-दर्शनज राखे छे, कोइ तो तेनाथी पण भ्रष्ट थइ जाय छे, (वटली जाय छे.)

प्र० आवुं दुर्लभ चारित्र पामीने पाछु केम तजी दे छे!

उ—परीषहो दुःखे करीने सहन थाय छे, तेथी क्रमेकरीने अथवा सामटा परिषहो आवतां सहन न करी शकवाथी परिषहथी भागेला मोहना परवशपणाथी दुर्गतिने आगळ करीने मोक्षमार्ग (उत्तम चारित्र) ने त्यजे छे!!! ते रांकडाओ भोगो भोगववा माटे त्यजे छे, छतां पापना उदयथी शुं थाय? ते कहे छे.—

विरुप कामोने पोताने वहाला मानी स्वीकारतो भोगना अध्ययवसायवाळो बनवा छतां, पोतानां अंतरायकर्मना उदयथी तेज क्षणे प्रव्रज्या मुक्या पछी अथवा भोगो प्राप्त थया पछी, अंतर्मुहूर्त्तमां, अथवा कंडरीक राजर्षिनी माफक चारित्र मुक्या पछी एक रात दिवसमां अपरिमाण (वधारे खावाने) लीधे शरीर भेदाय छे, आ प्रमाणे दुराचारना अध्यवसायथी, अथवा कुकर्म सेवीने शीघ्र मरण पामताने पोताना आत्मा साथे चारित्र पाळवारूप धर्म देहनो भेद थतां तेवुं शरीर अने पचेन्द्रियपणुं अनंताकाळे पण

मळतुं नथी, (अर्थात् निगोदमां अनंतकाळ भ्रमण करे छे.) एज विषयनो उपसंहार करवा कहे छे. 'एवं' ए प्रमाणे भोगनो अभिलाषी अंतरायवाळा काम भोगो जेमां अनेक प्रकारनां विघ्नो रहेलां छे, तेने चाहे छे, ते भोगो (न केवळ ते अकेवळ तेमांथी थाय ते.) अकेवळीक, (द्वंद्व—जोडकांवाळो) छे. जेमनो प्रतिपक्ष पण छे, अथवा असंपूर्ण भोगो छे. जेने मेळववा पाछा संसारमां पडे छे, अथवा (कामभोगने बीजीना बदले त्रीजीनो अर्थ लइए; तो,) ते कामभोगोवडे भोगना अभिलाषीओ अतृप्त बनीनेज (वधारे भोगसुख लेवा जतां) शरीरनो नाश करे छे. ज्यारे, ते रांको आम मरण पामे छे त्यारे, बीजा उत्तम साधुओ जेमनो मोक्षसमीप छे, तेवा क्यांय पण, कोइपण रीते कोइपण वखत चरणनो परिणाम आवतां लघुकर्मनां कारणथी दरेकक्षणे चडताभाववाळा बने छे, ते बतावे छे.

अहेगे धम्ममायाय आयाणप्पभिइसु पणिहिए चरे, अप्पलीयमाणे दढे सव्वं गिद्धिं परिन्नाय, एस पणए महामुणी, अइअच्च सव्वओ संगं न महं अत्थित्ति इय एगो अहं, अस्सिं जयमाणे इत्थ विरए अणगारे सव्वओ मुंडे रीयंते, जे अचेले परिवुसिए संचिक्खइ ओमोयरियाए, से आकुट्ठे वा हए वा लुंचिए वा पलियं पकत्थ अदुवा पकत्थ अतहेहिं सद्दफासेहिं इय संखाए एगयरे अन्नयरे अभिन्नाय तितिक्खमाणे परिव्वए जे य हिरी जेय अहिरीमाणा। (सू० १८३)

उपर बतावेला चडता परिणामवाळा साधुए चारित्र लीधापछी विशुद्ध परिणामथी तेमनो मोक्ष जलदी थवानो होवाथी श्रुत-
चारित्ररुप-धर्म पामीने वस्त्र-पात्र विगेरे धर्मोपकरण स्वीकारीने धर्मकरणमां समाधिवाळा बनी परिषह सहन करीने सर्वज्ञ-प्रभुए
कहेला धर्मने पाळे छे, अने पूर्वे बतावेलां प्रमादनां सूत्रो अप्रमादना अभिप्राय प्रमाणे कहेवां(अर्थात् ते दरेक प्रकारे चारित्र निर्मळ
पाळी ज्ञान भणीने सम्यक्त्वमां दृढ थइ अशुभकर्मने क्षय करी नाखे छे.) कह्युं छे केः—

यत्र प्रमादेन तिरोऽप्रमादः, स्याद्वाऽपि यत्नेन पुनः प्रमादः। विपर्ययेणापि पठंति तत्र, सूत्राण्यधीकारवशाद् विधिज्ञाः ॥ १ ॥

ज्यां प्रमादवडे सूत्र कहेवायां होय; त्यां विरोधि अप्रमाद होवाथी अप्रमादना वर्णननां सूत्रो अधिकारना वशथी विधिने जाण-
नारा विपर्ययवडे भणे छे (कहे छे.) अथवा, अप्रमादनां कही ते यत्नवडे पाछां प्रमादनां (सूत्रो) कहे छेः—ते उत्तम साधुओ वळी
केवा थइने धर्म आचरे छे? ते कहे छेः—कामभोगोमां अथवा मातपिता विगेरे लोकमां मोह न करनारा, अने धर्मचारित्रमां एटले
तपसंयम विगेरेमां दृढता राखनारा धर्म आचरे छे. वळी, बधा प्रकारनी भोगाकांक्षाने ज्ञ-परिज्ञावडे दुःखरुप जाणीने प्रत्याख्यान-
परिज्ञावडे त्यागे छे, ते भोगाकांक्षा त्यागवाथी जे गुणो थाय; ते कहे छेः—'एष' ए काम पिपासानो त्यागनारो प्रकर्षथी नमेलो
'प्रह्व' प्रणमेलो संयममां, अथवा कर्म धोवामां (लीन थयेलो) महामुनि बने छे, पण तेवा गुणथी रहित होय; ते महामुनि बनतो
नथी, 'किंच' वळी, सर्वे प्रकारे पुत्रकलत्रादिनो संबध, अथवा विषयाभिलाषनो मोह उल्लंघी (त्यागीने) शुं भावना भावे? ते कहे
छेः—"आ संसारमां पडतां मारुं अवलंबन (आधारभूत) थाय तेवुं कंइपण नथी; अने तेना अभावथी उपर प्रमाणे हुं संसार-उद-

रमां एकलोज छुं. तेम, हुं पण कोइनो नथी. आ भावना भावनारो जे करे; ते कहे छे. 'अत्र' आ मौनींद्र (जिनेश्वरना) प्रवचनमां सावद्य–अनुष्ठान त्यागीने दश प्रकारनी साधु–समाचारी पाळवामां यतनावाळो थाय. 'कोऽसौ?' कोण थाय? ते कहे छे. अनगार–प्रवर्जित [दीक्षा लीधेलो] होय; ते एकत्वभावना भावतो रहे. [ते पछीना सूत्रमां कहे छे. एटले, आ क्रिया जोडला सूत्रमां पण लेवी.] 'किंच' वळी, ते सर्वे प्रकारे द्रव्यथी अने भावथी मुंड बनीने 'रीयमाणः' संयमअनुष्ठानमां वर्ते छे.

प्रः—केवो बनेलो?

उः—जे अचेल ते अल्प वस्त्रवाळो अथवा जिनकल्पिक संयममां रही योग्य विहार करनारो अंतप्रांत आहार खानारो बने छे, ते पण वधारे प्रमाणमां नहि, ते कहे छे, अवमोदरी (ओछुं भोजन) करे, अने उनोदरी तप करतां कदाच प्रत्यनीक [जैनधर्मना विरोधीओ जेओ ग्राम कंटक छे तेमनाथी पीडाय, ते बतावे छे, 'स' ते मुनि कुवचनोथी आक्रोश करायलो, दंडा विगेरेथी मरातो, वाळ खेंची काढवाथी लुंचित करेलो (दुःखी थया छतां) पोते पोताना पूर्वकर्मथीज आ उदयमां आव्युं छे, एम मानतो सम्यक्‌ प्रकारे सहन करतो विहार करे; तथा आवी भावना भावे,

"पावाणं च खलु भो कडाणं कम्माणं पुव्विदुच्चिन्नाणं दुप्पडिक्कंताणं वेदयित्ता मुक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता"

पोते पूर्वे दुष्ट रीते जे कृत्यो आचर्या होय, अने दुष्ट कृत्य कर्यापछी तेने आलोचना के तपश्चर्याथी खेरव्यां न होय, ते दुष्ट पापो कांतो भोगवतां छुटे, अथवा तपश्चर्या करवाथी दूर थाय छे.

प्र०—वचनो वडे केवी रीते आक्रोश करे छे?

उ—'पलियं' ति ते साधुए पोते गृहस्थावस्थामां वणकर विगेरेनुं नीच कृत्य (धंधो) कर्यो होय तो ते याद करीने तेनी निंदा करे छे, ते आ प्रमाणे—कोलिक! हे साधु बनेला! तुं पण मारी सामे बोले छे! अथवा जकार चकार विगेरे शब्दोथी बीजी रीते बोलीने निंदे छे! ते हवे बतावे छे.—'अतथ्यैः' तद्दन जुठां कलंकना शब्दोवडे तिरस्कार करे जेमके "तुं चोर छे! तुं परदार लंपट छे, आवां असत्य आळो जे साधुने करवा योग्य नथी तेनो कानमां स्पर्श थतां (साधुने क्रोध चढे) तथा कलंक चडाववा साथे हाथ पग छेदवा विगेरेथी [दुख थाय तेवा समये] आ मारा पोताना करेला दुष्ट कृत्योनुं फळ छे एम चिंतवीने विगेरे अथवा आवुं चिंतवे.

पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उप्पन्ने उवसग्गे सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ, तंजहा—जक्खाइट्ठे अयं पुरिसे १, उम्मायपत्ते अयं पुरिसे २, दित्तचित्ते अयं पुरिसे ३, मम च णं तब्भवेअणीयाणि कम्माणि उदिन्नाणि भवंति जन्नं एस पुरिसे आउसइ बंधइ तिप्पइ पिट्टइ परितावेइ ४, ममं च णं सम्म सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स एगं तसो कम्मणिज्जरा हवइ ५, पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिन्ने परीसहे उवसग्गे जाव अहियासेज्जा, जाव ममं च णं अहियासेमाणस्स वहवे छउमत्था समणा निग्गंथा उदिन्ने परिसहोवसग्गे सम्मं सहिस्सति जाव अहियासिस्संति इत्यादि ॥

पांच स्थानमां छद्मस्थ साधुओ उपसर्गोने सहन करे क्षमा राखे क्रोध न करे हृदयमां शांति राखे, तेओ विचारे के आ अपमान करनारो पुरुष यक्षथी घेरायलो छे, आ पुरुष उन्माद पामेलो छे. आ पुरुष अहंकारी छे, मारे ते भवमां वेदवानां कर्म

उदीरणामां आववानां छे तेथी आ पुरुष मने आक्रोश करे छे, वांधे छे तपे छे पीटे छे, संतापे छे, पण मने सारी रीते सहन करवाथी एकांतथी सकाम निर्जरा थाय छे, केवली भगवान तेज पांच स्थानमां आवेला परीसह उपसर्ग सहन करे तेओ जाणे छे. के, केवली ज्यारे आवां दुःख सहन करे छे, त्यारे घणा छद्मस्थ साधुओ निर्ग्रंथो आवेला परीसह उपसर्गोने तेमना दृष्टांतथी सारी रीते सहन करशे अने आत्मामां शांति राखशे आ उपरथी साधुए सार ए लेवो के कोइ गांडो थयेलो बीजाने मारे तो तेना उपर दया आवे छे. तेज प्रमाणे साधुने दुःख देनार उपर साधुने दया लाववी जोइए. आ प्रमाणे जे परीसहो आवे ते अनुकूल प्रतिकूल एम वे भेदे छे. ते वन्नेमां रागद्वेष कर्या विना शांति राखीने विचरे, अथवा बीजी रीते परीसह वे प्रकारना बतावे छे. जे सत्कार अने पुरस्कार साधुने आनंदकारी छे अने प्रतिकूल मनने अनिष्ट छे, अथवा लज्जारुप याचना करवी अने अचेल विगेरे छे, अने लज्जा विनाना ठंड ताप विगेरे छे, ए प्रमाणे वन्ने प्रकारना परीसहोने सम्यक् प्रकारे सहन करतो विचरे, वळी

चिच्चा सव्वं विसुत्तियं फासे समियदंसणे, एए भो णगिणा वुत्ता जे लोगंसि अणागमणधम्मिणो आणाए मामगं धम्मं एस उत्तरवाए इह माणवाणं वियाहिए, इत्थोवरए तं झोसमाणे आयाणिज्जं परिन्नाय परियाएण विगिंचइ, इह एगेसिं एगचरिया होइ तत्थियरा इयरेहिं कुलेहिं सुद्धेसणाए सव्वेसणाए से मेहावी परिव्वए सुब्भि अदुवा दुब्भि अदुवा तत्थ भेरवा पाणा पाणे किले-

संति ते फासे पुट्ठो धीरे अहियासिज्जासि त्तिबेमि (सू० १८४) धूताध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥ ६-२ ॥

बधा परिसहोनी थती वेदनाने सहन करी दुःखने अनुभवतो छतां चित्तमां शांति राखे. प्रश्न. केवो बनीने ? उ० सम्यक्प्रकारे दर्शन पामेलो ते समित दर्शनवाळो अर्थात् सम्यग्दृष्टी बने. ते परिसहोने सहन करनार साधुओ केवा होय ते कहे छे, ते निष्किंचन निर्ग्रंथ (भावनग्र) जीनेश्वरे बतावेला छे. आ मनुष्य लोकमां आगमन धर्मरहित छे. अर्थात् घर छोडीने दीक्षा लीधा पछी पाछा घेर जवानो इच्छा करता नथी, पण पोतानी दीक्षामां लीधेली प्रतिज्ञा पूरीपाळी पंच महाव्रतनो भार वहन करे छे, वळी जेनावडे आज्ञा कराय ते जिनेश्वरनुं वचन तेज मारो धर्म छे. तेथी तेने बरोबर पाळे. अथवा धर्मनुं अनुष्ठान पूरेपुरु करे, अने विचारे के धर्म तेज मारे सार छे, बाकी बधुं पारकुं [असार] छे, एथी हुं तीर्थकरना उपदेश वडे विधि अनुसारे बरोबर क्रिया करुं प्र-धर्म केवीरीते आज्ञाथी पळाय ? ते कहे छे, 'एष.' आ बतावेलो उत्तर (उत्कृष्ट) वाद अहिं मनुष्योने कहेलो छे. 'किंच' वळी आ कर्म दूर करवाना उपायरूप संयममां समीप (अंदर) रत (लीन) थइने आठ प्रकारना कर्मने झोषतो [दूर करतो] धर्मने पाळे वळी बीजुं शुं करे? ते कहे छे.—

जेनावडे ग्रहण कराय ते आदानीय (कर्म) छे. तेने जाणीने मूळ उत्तर प्रकृतिनुं विवेचन करे, अर्थात् साधुपणुं निर्मळ पाळीने क्षय करे, अहीं संपूर्ण कर्म दूर करवामां असमर्थ जे बाह्यतप छे, तेने आश्रयी कहे छे, आ जैनसिद्धांतमा केटलाक शिथील [ओछां] कर्मवाळाने एकचर्या एटले एकल विहारनी प्रतिमा अंगीकार करेली होय छे, तेमां जुदी जुदी जातीना अभिग्रहो तप तथा चारित्र

संबंधी धारण करेला होय छे. तथी प्राभृतिकाने आश्रयी कहे छे, ते एकाकी विहारमां बीजा सामान्य साधुथी विशेष प्रकारे अंत-प्रांत कुलोमां दश प्रकारनी एषणा दोषरहित आहार विगेरेनी शुद्ध एषणावडे तथा सर्व एषणा ते वधी एषणा. आहार विगेरे संबंधी उद्गम उत्पाद तथा ग्रास एषणा संबंधी परिशुद्ध विधिए संयममां वर्ते छे, बहुपणामां एक देशपणाने कहे छे, ते मर्यादामां रहेलो मेधावी साधु संयममां वर्ते वळी ते तेवां बीजां फुलोमां आहार सुगंधवाळो के दुर्गंधवाळो होय, त्यां रागद्वेष न करे वळी त्यां एकलविहार करतां मसाणमां प्रतिमा ए रहेतां यातुधान (राक्षस) विगेरेए करेला शब्दो भयकारक लागे; अथवा बीभत्स प्राणीओ दीप्त जीभवाळां [वाघ विगेरे] बीजा जीवोने पीडे; संतापे छे अने तेने पण संतापे तो, तुं तेवा विरूप-दुःखना स्पर्शोने सम्यक्प्रकारे धैर्य राखीने सहन कर; एवुं सुधर्मास्वामि जंबूस्वामिने कहे छेः—

बीजो उद्देशो समाप्त थयो.

त्रीजो उद्देशो कहे छे.

बीजो उद्देशो कही त्रीजो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. बीजामां कर्मधोवानुं बताव्युं; अने ते उपकरण शरीरना विधूनन विना न थाय. माटे हवे, उपकरण विगेरेनुं विधूनन कहे छे. आवा संबंधे आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे.

एयं खु मुणी आयाणं सया सुयक्खायधम्मे विहूयकप्पे निज्झोसइत्ता, जे अचेले परिवुसिए तस्स णं भिक्खुस्स नो एवं भवइ—परिजुण्णे मे वत्थे वत्थं जाइस्सामि सुत्तं जाइस्सामि सूइं जाइस्सामि

संधिस्सामि सीविस्सामि उक्कसिस्सामि वुकसिस्सामि परिहिस्सामि पाउणिस्सामि, अदुवा तत्थ परिक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसन्ति सीयफासा फुसन्ति तेउफासा फुसन्ति दंसमसग फासा फुसन्ति एगयरे अन्नयरे विरूवरूवे फासे अहियासेइ अचेले लाघवं आगममाणे, तवे से अभिसमन्नागए भवइ, जहेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमिच्चा सव्वओ सव्वत्ताए समत्तमेव समभिजाणिज्जा, एवं तेसिं महावीराणं चिररायं पुव्वाइं वासाणि रीयमाणाणं दवियाण पास अहियासियं (सू० १८५)

आ उपर बतावेलुं अथवा हवे पछी, कहेवातुं (जे ग्रहण कराय ते आदान.) ते कर्मनुं उपादान छे, अने ते कर्म उपादान थवानुं कारण साधुने जोइतां धर्मउपकरणथी अधिक प्रमाणमां हवे पछी कहेवातां वस्त्र विगेरे छे, ते वधारानां वस्त्र विगेरेने मुनिए त्याग करी देवा.

प्रः—ते मुनि केवो होय छे.—उः—ते सदाए सारी रीते वर्णवेला धर्मवाळो छे. एटले, तेने संसार-भ्रमणनो डर होवाथी पोताने अर्पण करेलां महाव्रतनो भारवाही छे, तथा विधूत (क्षुणण) एटले, सारी रीते जेणे कल्प-(साधुनो आचार) आत्मामां फरस्यो छे, तेवो मुनि आदान-(कर्मने) खेरवशे.

प्रः—ते वस्त्र विगेरे आदान केवां होय; के ते दूर करवां पडे?

उः—(अल्प -अर्थमां नकार छे. जेमके—आ साधु अज्ञान छे. एटले, अल्पज्ञानवाळो छे, ते प्रमाणे अर्थ लेतां) साधु अचेल एटले, अल्प वस्त्र राखनारो संयममां रहेलो छे, तेवा साधु (भिक्षु) ने आवुं विचारवुं न कल्पे के, मारुं वस्त्र जीर्ण थइ गयुं छे. हुं अचेलक थइश. मने शरीरनुं रक्षक वस्त्र नथी; तेथी, ठंड विगेरेथी मारुं रक्षण केम थशे? तेथी हुं विना वस्त्रनो थयो छुं. तेथी कोइ श्रावकने त्यां जइ वस्त्र याचीलावुं; अथवा ते जीर्णवस्त्रने सांधवाने सोय–दोरो याचीश; अथवा ज्यारे सोय–दोरो मळशे; त्यारे, जीर्णवस्त्रनां काणांने सांधीश; फाटेलांने सीवीश; अथवा टुकां वस्त्रने जोडी मोटुं बनावीश; अथवा, लांबानो टुकडो फाडी सरखुं अथवा, नानुं बनावीश.

एम योग्य बनावीने हु पहेरीश; तथा, शरीर ढांकोश. विगेरे, आर्त्तध्यानथी हणायलो अंतःकरणनी वृत्ति धर्ममां एकचित्त राखनार आत्मार्थी साधुने वस्त्र जीर्ण थवा छतां, अथवा होय नहीं; तोपण भविष्य संबंधी (चिंता) न थाय.

अथवा आ सूत्र जिनकल्पीओने आश्रयी कहेलुं छे. एम व्याख्या करवी कारण के ते मुनिओ अचेल (वस्त्र रहित) होय छे. तथा तेमना हाथमांथी तेमनी तपोबळनी लब्धिने लीधे पाणीनुं बिंदु पण न गळतुं होवाथी तेओ पाणिपात्र कहेवाय छे.

पाणि एटले, हाथ, अने हाथमांज भोजन लइने करे छे. तेमने पात्रां विगेरेनो सात प्रकारनो नियोग होतो नथी; [कारण के तेवो तेमनो अभिग्रह छे.] तथा, कल्पत्रय पण त्यागेल छे. फक्त, तेमने रजोहरण, तथा मुखवस्त्रिका (ओघो, अने मुहुपत्ति) मात्र होय छे तेवा अचेल जिन–कल्पीमुनिने उपर कहेल आर्त्तध्यान वस्त्र फाटवा–सांधवा विगेरे संबंधी न होय. (कारण के, धर्मीवस्त्र

तेना अभावथी धर्म–फाटवुं विगेरेनो अभाव छे. ज्यारे, धर्मी होय; त्यारे, धर्म शोधवो; ए न्यायनो उत्तम मार्ग छे. तथा जिन-कल्पी मुनिने आवुं पण न होय. के हुं बीजुं नवुं वस्त्र याचीश; ए बधुं पूर्वमाफक जाणवुं.

वळी, जेने जिन–कल्पी जेवी लब्धि न होय; तेवो स्थविर कल्पि–साधु हाथमांथी पाणी विगेरेनुं बिंदु नीचे पडे छे. तेथी, तेओ पात्रना नियोगयुक्त होय छे, अने वस्त्रनां कल्प प्रमाणे त्रणमांथी कोइपण एक वस्त्र होय; तेवो मुनि पण वस्त्र विगेरे जीर्ण थवाथी के, नाश थवाथी नवु न मळे; त्यां सुधी आर्त्तध्यान न करे; तथा, जे अल्पपरिकर्मी (निस्पृही) होय; तेवाने सोय–दोरो फाटेलाने सांधवा माटे पण शोधवानुं न होय, (जेने उपदेश माटे परोपकारनी विशेष लागणी करतां आत्मार्थ साधवा माटे एकांतवास होय; तेवाने फाटेलुं के, वस्त्र न होय; तेनी शुं परवाह छे? जेमकेः—

धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शांतिश्चिरंगेहिनी । सत्य सूनुरयं दया च भगीनी भ्राता मनः संयमः ॥
शय्या भूमितल दिशोपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनं । एते यस्य कुटुंविनो वद सखे कस्माद्भयं योगिनां ॥ १ ॥

धैर्य पिता, क्षमा माता, घणा काळनी शाति वहु, सत्य पुत्र, दया बेन, मन संयम भाइ छे, पथारी जमीनमां छे, दिशा वस्त्रो छे. ज्ञानअमृत भोजन छे, तेवा कुटुंववाळा योगीने कोनो भय छे? एवुं एक मित्र बीजा मित्रने पूछे छे.

अचेल अथवा वस्त्रवाळाने तृण (डाभना कांटा) वीगेरे लागतां शुं करे ते कहे छे. तेवो अचेलपणे रहेतां जीर्णवस्त्र आर्त्त–रौद्र [अप]ध्यान न थाय; अथवा आ थाय. ते अचेलपणे वर्त्तातां; ते साधुने अचेलपणाना कारणथी कोइ गामडां विगेरेमां शरीरना रक्षणना अभावथी घासना संथारे सुतां घासना कांटानो कडवो अनुभव दुःख देनारो थाय; अथवा घास पोते खुंचे तेवुं होय; तो,

शरीरमां दुःख दे, तेवा समये साधु दीनतारहित मन राखीने तेने सहे.

तेज प्रमाणे शियाळामां ठंडा देशमां वस्त्रविना ठंड सहेवी पडे; तथा, गरम देशमां उनाळामां वस्त्रविना तडको सहेवो पडे; तथा डांस-मच्छरोना डंख लागे. आ बधा परिसहो एकसाथे डांस-मच्छर, तथा घासना कडवा फरसनां दुःख साथे आवे छे. अथवा ठंड-ताप विगेरे परस्पर विरुद्ध दुःख छे. तेमांथी कोइएक अनुक्रमे आवे. (बहुवचननो सूत्रमां प्रयोग छे, तेथी जाणवुं के, ते दरेक तीव्रमंद के, मध्यम अवस्थावाळो फरस छे.) ते हवे बतावे छे.

विरुप [बीभत्स] ते, मनने दुःख देनार, अथवा जुदी जुदी जातना मंद विगेरे भेदना स्वरुपवाळा विरुपरुप जे फरसो छे, तेनाथी थतां दुःखो पडे; अथवा, ते दुःख आपनार घास विगेरेना स्पर्शो होय; ते बधांने चित्त स्थिर करीने दुर्ध्यान छोडीने सहन करे.

प्रः—कोण सहन करे.—उः—उपर बतावेल वस्त्ररहित अल्प-वस्त्रवाळो, अथवा अचलन-स्वरुपवाळो (प्रतिमाधारी) सम्यक्प्रकारे सहे.

प्रः—शुं विचारीने सहे? उ० जे लघु गुण छे तेनो भाव लघुता छे. ते द्रव्यथी अने भावथी बे प्रकारे लाघवपणुं छे. तेने जाणनारो समताथी परिसहो तथा उपसर्गोने सहे छे. आ संबंधे नागार्जुनीया कहे छे.

"एवं खलु से उवगरणलाघवियं तवं कम्मक्खय कारणं करेइ"

ए प्रमाणे उपकरणना लाघवपणाथी कर्मने क्षय करनारो तप निश्चयथी उत्तम साधु करे छे.

ए प्रमाणे कहेला कर्म वडे भाव लाघव माटे उपकरण लाघवनो तप करे छे, ए कहेवानो सार छे.

वळी ते उपकरणना लाघवथी कर्म ओछां थाय छे, अने कर्म ओछां थवाथी उपकरण लाघव मेळवतां तृण विगेरेना स्पर्शो सहेतां काय कलेशरुप बाह्य तप पण थाय छे. तेथी ते साधु सारी रीते सहे छे. आ मारुं कहेलुं नथी, एवुं सुधर्मास्वामी कहे छे. के जे में कह्युं अने हवे पछी कहीश. ते बधुं भगवान महावीरे पोते प्रकर्षथी अथवा शरुआतमां कहेलुं छे. प्र—जो भगवान महावीरे कह्युं छे. तेथी शुं समजवुं? उ—उपकरण लाघव अथवा आहार लाघव तपरुप छे. एवुं जाणीने शुं करवुं ते कहे छे. द्रव्यथी क्षेत्रथी काळथी अने भावथी तेमां लघुता राखवी जेमके द्रव्यथी आहार उपकरणमां लाघवपणुं राखवु (एटले जरुर जेटलांज राखवां) क्षेत्रथी वधां गाम विगेरेमां बोजारुप न थवुं. काळथी दीवस अथवा रातमां अथवा दुकाळ विगेरे खराब वखतमां शांति राखवी तथा भावथी कृत्रिम अने मलिन विगेरे कुभाव त्यागवा (अर्थात् पोते कष्ट सहन करीने मनमां कुभाव न करतां चारित्र निर्मळ पाळवुं. तथा गृहस्थोने के बीजा जीवोने कोइपण रीते पीडाकारक न थवुं.)

सम्यक्त्व एटले प्रशस्त अथवा शोभन तत्व अथवा एक संगतवाळुं(जेनाथी एकांत हित थाय तेवुं)तत्व ते सम्यक्त्व छे. कह्युं छे केः—

"प्रशस्तः शोभनश्चैव, एकः सङ्गत एव च। इत्येतैरुप सृष्टस्तु, भावः सम्यक्त्वमुच्यते" ॥ १ ॥

प्रशस्त शोभन एक संगतवाळो जे भाव थाय ते सम्यक्त्व छे (भावार्थ उपर आवेल छे.)

आवुं सम्यक्त्वज अथवा समत्वज सारी रीते समजे विचारे, के पोते अचेल होय अने बीजो एक वस्त्र विगेरे राखनारो होय, तेने पोते निंदे नहिं. कह्युं छे केः—

"जोऽवि दुवत्थतिवत्थो एगेण अचेलगो व संथरइ। ण हु ते हीलंति परं सव्वेऽवि य ते जिणाणाए" ॥ १ ॥

जे बे वस्त्र धारण करे, त्रण वस्त्र धारण करे, अथवा एक वस्त्र राखे, अथवा अचेलक फरे, पण ते बधा जिनेश्वरनी आज्ञामां वर्त्ते छे, तेथी एक बीजाने निंदे नहीं.

" जे खलु विसरसकप्पा संघयणधियादिकारणं पप्प । णऽवमन्नइ ण य हीणं अप्पाणं मन्नई तेहिं ॥ २ ॥

जेओ जुदा जुदा कल्पवाळा छे, तेओ शरीर संघयण तथा ओछी वधती धैर्यताने लीधे छे तेथी एक बीजाने अपमान न करे, तेम ओछापण न माने, (एटले पोतानी शक्ति वधारे होय तो ओछां वस्त्रथी निभाव करे, पण वधारे राखनारने निंदे नहीं, तेम कारण पडतां वधारे वस्त्र राखवां पडे तो पोते दीनता न लावे के हुं पतित छुं. पण जरुर जेटली वारज मंदवाड विगेरेमां वधारे वस्त्र वापरे.)

सव्वेवि जिणाणाए, जहाविहिं कम्मखवणट्ठाए; विहरंति उज्जया खलु, सम्मं अभिजाणई एवं ॥ ३ ॥

ते बधा जिनेश्वरनी आज्ञामां कर्मक्षय करवाने यथाविधि रहेला छे, पण तेओ योग्य विहार करता विचरे छे, एवुं निश्चयथी पोते मनमां उत्तम साधु जाणे छे.

अथवा तेज लाघवपणाने समजीने सर्वे प्रकारे द्रव्यक्षेत्र काळ भाव विचारीने आत्मावडे सर्वथा नाम विगेरे (चार–निक्षेपाथी) सम्यक्त्वनेज सारी रीते जाणे. अर्थात् तीर्थंकर गणधरोना उपदेशथी दरेक क्रिया बरोबर करे. आ बधां अनुष्ठानो जेम तावने दुर करवा माटे तक्षक नागनां माथा उपर रहेल मणीरत्न लाववा रुप अशक्य उपदेश नथी; पण बीजा घणा उत्तम साधुए घणो काळ सुधी एवुं उत्तम संयम पाळ्युं छे. ते बतावे छे के आ प्रमाणे ओछां वस्त्र अथवा बीलकुल वस्त्र विना रहीने घास

विगेरेना कठोर फरसोनां दुःखोने सहन करनार महावीर (बळवान योद्धा) पुरुषोए बधा लोकने चमत्कार पमाडनारा घणो काळ आखी जींदगी सुधी अनुष्ठान कर्युं छे. तेज विशेषथी कहेछे. (चोराशी लाख, ने चोराशी लाखे गुणतां जे संख्या थाय; तेटलां वरसोनुं पूर्व थाय छे.) तेवां घणां पूर्व सुधी संयम—अनुष्ठान पाळता मुनिओ विचर्या छे. पूर्वनी संख्या ७०, ५६०००-००००००० वर्षनी छे. आ वात रिखवदेव भगवानना वखतथी ते दशमा शीतळनाथ सुधी पूर्वेनां आउखा हतां; तेने आश्रयी छे.

(आठ वर्ष उपरनी उमरना शिष्यने दीक्षा अपाय; अने तेनुं लांबु आयुष्य होय तेने आश्रयी छे.) त्यारपछी, श्रेयांसनाथ भगवानथी वर्षनी संख्यानी प्रवृत्ति जाणवी; तथा भव्य जीवो जे मुक्ति जवाने योग्य छे, तेमने तुं जो, अने जे घासना कठोर फरसो विगेरे उपर बताव्या; ते तमारे सारी रीते सहेवां. जेम तेमणे सह्या; तेम, बीजा उत्तम साधुओ सहन करे छे. आ प्रमाणे जे उत्तम साधु सहन करे; तेने शु लाभ थाय ते कहे छे:—

आगयपन्नाणाणं किसा बाहवो भवंति पयणुए य मंससोणिए विस्सेणिं कट्टु परिन्नाय, एस तिण्णो मुत्ते विरए वियाहिए त्तिबेमि (सू० १८६)

आगत ते मेळवेलुं छे. प्रज्ञान जेमणे तेवा गीतार्थ साधुओ तप करीने तथा परीसहो सहीने कृश (पातळी) बाहु वाळा बने छे, अथवा महान् उपसर्ग तथा परीसह विगेरेमां तेओ ज्ञान मेळवेला होवाथी तेमने पीडा ओछी होय छे. कारण के कर्म खपाववा तैयार थयेल साधुने शरीर मात्रने पीडा करनारा परीसह उपसर्गो मने सहाय करनारा छे. एवुं मानवाथी तेने मननी पीडा नथी

थती. तेज कह्युं छे केः—

" णिम्माणेइ परो च्चिय अप्पाण उ ण वेयणं सरीराणं । अप्पाणो च्चिअ हिअयस्स ण उण दुक्खं परो देइ ॥ १ ॥

बीजो माणस आत्माने पीडा नथीज आपतो पण शरीरने दुःख आपे छे, पण आत्माना हृदयनुं दुःख पोतानुं मानेलुं छे. पण पारको ते दुःख आपतो नथी.

शरीरनी पीडा तो थाय छेज ते बतावे छे. ज्यारे शरीर सुकाय अने पातळुं थाय, त्यारे मांसने लोही सुकाय, तेवा उत्तम साधुने लुखो तथा अल्प आहार होवाथी प्राये खलपणे परिणमे छे. पण रस पणे नहीं. कारणना अभावथीज थोडुज लोही अने तेज शरीरपणे होवाथी मांस पण थोडुज होय छे, तेज प्रमाणे मेद विगेरे पण ओछां होय छे. अथवा रुक्ष [लुखुं] होय ते प्राये वातल (वायु करनार) होय छे. अने वायु प्रधान थवाथी मांस अने लोहीनुं प्रमाण ओछुंज होय छे. तथा अचेलपणुं होवाथी शरीरने घासना कठोर फरस विगेरे थतां शरीरमां दुःख थवाथी पण मांस अने लोही ओछां थाय छे.

संसारश्रेणी जे रागद्वेषरूप कषायनी संतति छे, तेने क्षांति विगेरे गुणो धारीने विश्रेणी [नष्ट] करीने तथा समत्व भावपणुं जाणीने ते प्रमाणे वर्ते जेमके जिनकल्पी कोइ एक कल्प [वस्त्र] धारी कोइ बे, अने कोइ त्रण पण धारण करे छे, अथवा स्थविर कल्पी मुनि मास क्षपण होय, कोइ पंदर दिवसना उपवास करनारो होय, तथा कोइ विकृष्ट अने कोइ अविकृष्ट तप करनारो होय, अथवा कोइ क्रूरगडु जेवो रोजनो पण खानारो होय, तो ते बधाए तीर्थंकरना वचन अनुसारे वर्ते छे, अने परस्पर निंदा करनारा न होवाथी समत्वदर्शी छे, कह्युं छे केः—

जोवि दुवत्थ तिवत्थो, एगेण अचेलगो व संथरइ; नहुनेहिलेंति, परं सव्वेवि हु ते जिणाणाए; ॥ १ ॥

जे बे, त्रण, एक अथवा वस्त्र रहित निभाव करे, ते बधा जिनेश्वरनी आज्ञामां होवाथी परस्पर निंदा करता नथी;

तथा जिनकल्पिक, अथवा प्रतिमा धारण करेल, कोइ मुनि कदाचित् छ महिना सुधी पण पोताना कल्पमां भिक्षा न मेळवे, तेवो उत्कृष्ट तप करवा छतां पोते रोज खानार क्रूरगडु जेवा मुनिने एम न कहे के हे भात खावा माटे दीक्षा लेनारा मुंड! तें खावा माटेज मात्र दीक्षा लीधी छे! [एवुं कहीने अपमान न करे.]

तेथी आ प्रमाणे समत्व दृष्टिनी प्रज्ञावडे संसार भ्रमण रुप कषायने दूर करी समता धारण करीने ते मुनि संसार सागर तरेलो छे तेज सर्व संगथी मुक्त छे, तेज सर्व सावद्य अनुष्ठानथी छुटेल जिनेश्वरे वर्णव्यो छे, पण बीजो नहिं. एवुं सुधर्मास्वामी कहे छे.

प्र०—हवे ने प्रमाणे जे संसार श्रेणीने त्यागी संसारसागर तरेलो मुक्त वरणव्यो तेवा उत्तम साधुने अरति पराभव करे के नहि?

उ—कर्मना अचिंत्य (विचित्र) सामर्थ्यथी परिभवे पण खरी! तेज कहे छे.—

विरयं भिक्खुं रायंतं चिरराओसियं अरई तत्थ किं विधारए?, संधेमाणे समुट्ठिए, जहा से दावे असंदीण एवं से धम्मे आरियपदेसिए, ते अणवकंखमाणा पाणे अणइवाएमाणा जइया मेहाविणो पंडिया, एवं तेसिं भगवओ अणुट्ठाणे जहा से दिया पोए एवंते सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइय त्तिबेमि (सू० १८७) धूताध्ययने तृतीयोद्देशकः ॥ ६–३ ॥

असंयमथी बचेल भिक्षाथी निर्वाह करनार तथा अप्रशस्त स्थान रुप असंयमथी नीकळी गुणोने उत्कृष्टपणे प्राप्त करवाथी उपर उपरना प्रशस्त गुण स्थान रुप संयममां वर्त्तता साधुने शुं स्खलायमान करे? अर्थात् तेवा उत्तम साधुने अरति मोक्षमां जतां जतां अटकावी शके के? उ. हा दुर्बळ अने अविनय वाळी इंद्रियो छे. तेने अचिंत्य मोह शक्ति अने विचित्र कर्म परिणति शुं न करे? (अर्थात् कुमार्गे लइ जायज) कहुं छे के:—

" कम्माणि णूणं घणचिक्कणाइ गरुयाइं वइरसाराइं। णाणट्ठिअंपि पुरिसं पंथाओ उप्पहं णिंति " ॥ १ ॥

निश्चे कर्म घणां चीकणां वधारे प्रमाणमां वज्रसार जेवां भारे होय; तो, ज्ञानथी भूषित होय; तेवा पुरुषने पण सारा मार्गथी कुमार्गे लइ जाय छे.

अथवा आक्षेपमां आ 'किम्' शब्द छे तेनो परमार्थ आ छे के, अरति तेवा उत्तम साधुने धारी शके के? उ. नज धारी शके? कारण के, आ उत्तम साधु क्षणे क्षणे वधारे वधारे निर्मळ चारित्रना परिणामथी मोहना उदयने रोकेलो होवाथी लघुकर्मवाळो छे, तेथी तेने अरति कुमार्गे न दोरी शके; ते बतावे छे. क्षणे क्षणे विनाविलंबे संयमस्थानना चडता चडता कंडकने धारण करतो सम्यग्प्रकारे चारित्र पाळतो रह्यो छे. अथवा, चडता चडता गुणस्थानने पहोंचतो यथाख्यात–चारित्रना संमुख जतो होवाथी तेने अरति केवी रीते अटकावी शके? (न अटकावे.)

अने आवो साधु पोताना आत्मानोज अरतिथी रक्षण करनार छे. एम नहीं पण, बीजाओनी पण अरति दूर करनार होवाथी रक्षक छे, ते बतावे छे. बन्ने बाजुए जेमां पाणी छे ते द्वीप छे; ते द्रव्य, अने भाव एम बे भेदे छे ते द्रव्यद्वीपमां आश्वास

(विश्रांति) ले छे. तेथी ते आश्वास लेवाने माटे जे द्वीप होय; ते आश्वासद्वीप छे, ते नदी समुद्रना घणा मध्यभागमां [नदीनी पहोळाइ विशेष होय तेमां बन्ने बाजुए पाणी वहेतुं होय अने वचमां खाली जग्या होय; तो, बेट कहेवाय छे. तेज प्रमाणे समुद्रमां जग्या उपसेली होय तो वरसाद लीधे ते उपसेली जग्याना मेदानमां फळद्रुप जग्या थाय छे, त्यां] वहाण कोइ पण कारणे नदी समुद्रमां भांगी जतां डूबतां माणसो आश्रय ले छे. आ बेट पण बे प्रकारे छे. जे पखवाडीए अथवा महीने पाणीथी भराइ जाय ते संदीन कहेवाय, अने तेवो बेट जो भरतीना पाणीथी भराइ न जाय तो असंदीन कहेवाय. जेमके सिंहलद्वीप विगेरे छे. अने वहाणवाळा ते द्वीपनो आश्रय ले छे. अने पाणी विगेरेनो उपयोग करे छे. अने ते बेटथी तेमने आश्रय मळे छे. तेवीज रीते उत्तम रीते वर्तता साधुने जोइने भव्य जीवो तेनो आश्रय ले छे.

अथवा द्वीपने वदले दीप [दीवो] प्रकाश आपनार लइए तो ते प्रकाशने माटे होवाथी प्रकाश द्वीप छे. अने ते सूर्य चंद्रमणि विगेरे असंदीन छे. अने बीजो विजळी उल्कापात विगेरेनो संदीन छे. [सूर्य चंद्र प्रकाश आपे पण ते प्रकाश स्थायी अने उपकारक होवाथी लोको आश्रय ले छे. पण तेवा गुणथी रहित विजळीनो प्रकाश नकामो छे अथवा दुःखदायी छे तेवीज रीते कुसाधु अस्थिर चारित्रवाळो लोकोने धर्मथी भ्रष्ट बनावे छे.] अथवा घणां लाकडां एकठां करी सळगाव्याथी इच्छित रसोइ विगेरे बनाववामां उपयोगी होवाथी असंदीन छे. अने घासना भडका जेवो अग्निनो प्रकाश संदीन छे. [तेज प्रमाणे सुसाधु अने कुसाधुना दृष्टांत समजवां.] जेम आ स्थपुट विगेरेना बताववाथी हेय उपादेयने छोडयुं, गृहण करवुं, एवा विवेकने वांच्छनारा भव्य जीवोने खुल्लु बताववाथी ते उत्तम साधु उपयोगी छे. ते प्रमाणे कोइ समुद्रना अंदर रहेला प्राणीओने विश्रांति आपनार छे. तेज

प्रमाणे ज्ञान मेळववा उद्यत थयेलो परीसह उपसर्गमां दीनता न लाववाथी असंदीन छे. ते साधु विशेष प्रकारे उत्तम बोध आपवाना कारणे बीजा जीवोने पण उपकार माटे थाय छे.

बीजा आचार्यो भावद्वीप अथवा भावदीपने बीजी रीते वर्णवे छे; ते आ प्रमाणे भावद्वीप ते सम्यक्त्व छे. अने ते पाछुं जवानुं बताववाथी औपशमिक अने क्षायोपशमिक संदीन भावद्वीप छे, अने क्षायिक सम्यक्त्वने मेळवीने ससार भ्रमणनी हद आवी जवाथी प्राणीओने धैर्य आवे छे (के हवे आ दुःख अमुक काळ सुधीनुंज छे.)

पण संदीन भाव दीप तो श्रुतज्ञान छे, अने असंदीन ते केवळज्ञान छे, तेने मेळवीने प्राणीओ अवश्ये धैर्य मेळवे छे, अथवा धर्मने सारी रीते धारण करी चारित्र पाळतो छतो अरतिना वशमां ते साधु जतो नथी एवुं वर्णन करतां कोइ वादी पूछे के—केवो आ धर्म छे के जेना संधानने माटे आ साधु उठ्यो छे? तेनो उत्तर जैनाचार्य आपे छे.

जेम आ असंदीन द्वीप पाणीथी न भींजायलो भागेलां वहाणना माणसो तथा बीजा घणा जीवोने शरण आपवाथी विश्रांति आपवा योग्य छे, तेम आ जिनेश्वरे कहेलो धर्म कष ताप छेद निर्घटित एम चार प्रकारे परीक्षा करतां असंदीन द्वीप समान आश्रय आपनार छे, [सोनानी परीक्षा कष लेवाथी सारो कष आपे, तापमां नांखवाथी काळुं न पडे, पण विशेश चळकाट आपे, छीणीथी कपातां अंदरथी पण उत्तम जाति ओळखावे, तथा घडवाथी भांगी न जतां चीकणाशथी हथोडीना घा पडवा छतां विशाळ थतुं चाले. तेम जैन धर्मी जीवने कोइ तिरस्कार करे, संतापे, हाथ पग छेदे, घाणीमां घालीने पीले, अथवा अणघटतो अतिशय मार मारे, प्राण ले, तोपण उत्तम साधु पोताना आत्मधर्मथी विमुख थतो नथी.]

अथवा कुतर्कवडे पोते गभरातो नथी. पण योग्य उत्तर आपवाथी प्राणीओने रक्षण माटे आश्वास भूमि छे.

प्र०—ते धर्म आर्य पुरुषोए कहेलो होवाथी ते प्रमाणे वर्तनारा शुं बरोबर अनुष्ठान करनारा छे? उ–हा, अमे कहीए छीए,

प्र०–जो ते होय तो ते केवा छे? उ.—ते साधुओ निर्मळ भाव चालु राखवा संयममां अरतिना प्रणोदक (दूर करनार) छे. मोक्षनी समीपमां रही भोगनी इच्छा छोडीने धर्ममां सारी रीते उद्यम करे छे.

आ प्रमाणे बधे समजवुं. के तेओ प्राणीओने हणता नथी. तेम बीजां महाव्रत पाळनारा जाणवा. तथा कुशळ अनुष्ठान करवाथी सर्व लोकोना दयित (रक्षका) छे. तथा मेधावी एटले साधुनी मर्यादामां रहेला छे, पापना कारणोने छोडवाथी सम्यग् रीते पदार्थने जाणनारा पंडित साधुओ धर्म चारित्र पाळवा माटे उठेला छे.

पण जेओ तेवु निर्मळ ज्ञान धरावता नथी, तेओ सम्यग् विवेकना अभावथी हजु सुधी पण तेओ तेवुं चारित्र पाळवा तैयार नथी. तेवा ज्ञान रहित साधुओने पूर्वे बतावेला निर्मळ बोधवाळा आचार्य विगेरेए सुबोध आपीने ज्यांसुधी तेओ ज्ञाने करीने विवेकवाळा थाय त्यांसुधी पाळवा जोइए, ते बतावे छे. उपर बतावेली विधिए ओछुं ज्ञान मेळवेला अस्थिर मति वाळाने भगवान महावीरना धर्ममां सारी रीते तेओ न जोडाया होय; तो, सुबोधनां उपदेश वडे तेमनुं पालन करीने स्थिरमति वाळा बनाववा

अहीं दृष्टांत कहे छे:—

जेमके:—द्विज ते पक्षी छे, तेनुं पोत (बच्चुं) ते द्वीजपोत छे, ते बच्चांने तेनी मा गर्भना प्रसवथी लइने इडुं मुके, त्यारपछी, अनेक अवस्थाओ आवे; ते बधामां ज्यांसुधी ते बच्चुं पुरुं उडवायोग्य मजबुत पांखोवाळुं थाय; त्यांसुधी पाळे छे: तेज प्रमाणे

आचार्य पण नवा चेलाने दीक्षा आपीने तेज दिवसथी साधुनी दश प्रकारनी समाचारीनो उपदेश, तथा अध्यापन (भणाववावडे) ज्यांसुधी ते गीतार्थ थाय; त्यांसुधी पाळे; पण जे चेलो आचार्यना उपदेशने उल्लंघीने पोतानी इच्छा प्रमाणे स्वतंत्र विचरी कंइपण क्रिया करे; तो, ते (लाभ मेळववाने बदले) उज्झन नगरना राजकुमारनी माफक दुःख पामे ते बतावे छे.

उज्झन नामनुं नगर छे. तेमां जीतशत्रु नामनो राजा छे तेने बे पुत्रो छे. मोटा पुत्रे धर्मघोष आचार्य पासे संसारनी असारता समजीने दीक्षा लीधी. अनुक्रमे आचारांग विगेरे शास्त्रो भणीने तेनो परमार्थ समजीने जिनकल्पने स्वीकारवानी इच्छाथी बीजी सत्वभावनाने भावे छे, ते भावना पांच प्रकारनी छे. (१) उपाश्रयमां (२) तेनी बहार (३) त्रीजो तथा चोथो शून्यघरमां, तथा पांचमी भावना मसाणमां छे, ते पांचमी भावनाने भावतो हतो.

ते समये मोटाभाइना प्रेमथी नानोभाइ खेंचाइने, आचार्य पासे आवीने बोल्यो केः—मारो मोटोभाइ कयां छे ? साधुए कह्युं तारे शुं काम छे? तेणे कह्युं केः—मारे दीक्षा लेवी छे. आचार्ये कह्युंः—तुं प्रथम दीक्षा ले, पछी तारो भाइ देखीश. तेणे दीक्षा लीधी; अने पूछ्युं. मोटो भाइ क्यां छे ? आचार्ये कह्युंः—देखवानी शुं जरुर छे ? कारण के, ते कोइथी बोलतो नथी, अने ते जिनकल्प धारण करवा इच्छे छे.

नानाभाइए कह्युंः—तोपण, हुं तेने जोइश, घणो आग्रह करवाथी मोटोभाइ बताव्यो, ते चूप बेठेलो नानाभाइए वांद्यो. पछी, मोटाभाइ उपर घणो प्रेम होवाथी आचार्ये ना पाडी. उपाध्याये रोक्यो; साधुओए पकडी राख्यो; अने ते नानाभाइने बोल्याः— के आ स्मशानमां रहेवानुं, तारे अमुक समय सुधी थोभवानुं छे. कारण के, तारा जेवाने ए कठण अने विचारमां पडवानुं छे.

आवुं समजाव्या छतां पण, तेणे कह्युंः—हुं पण, तेज बापथी जन्म्यो छुं (मारामां पण तेटलोज हींमत छे.) एवुं ओठुं लइने मोहथी ते पण, तेमज मसाणमां मोटाभाइ माफक बेठो. मोटाभाइने देवीए वांद्यो, पण नवा साधुने न वांद्यो, तेथी अस्थिर मतिना कारणे ते देवी उपर कोपायमान थयो. देवताए पण तेना अविधिना कृत्यथी कोपायमान थइने लात मारीने तेनी बे आंखोना डोळा बहार काढी नाख्या.

तेथी मोटोभाइ हृदयथीज (प्रेमथी) देवताने कहेवा लाग्यो, के आ अज्ञान छे, तेने शा माटे दुःख दीधुं तेनी आंखो नवी बनाव. देवीए कह्यु, जीवना प्रदेशोथी जुदा पडेला आ डोळा जोडाय तेम नथी, साधुए कह्युं नवा बनाव, तेमनुं वचन ओलंघाय तेवुं नथी, एम विचारीने देवीए तेज क्षणे चंडाडे मारेला एल [बकरा]नी आंखोना बे डोळा लावीने तेनी आंखो नवी बनावी.

आ प्रमाणे उपदेशथी बहार वर्तनारने दुःख थाय छे, तेम विचारीने शिष्ये हंमेशां आचार्यनी आज्ञामां वर्त्तवुं.

आचार्ये पण हंमेशां परोपकारनी वृत्ति राखीने पोताना शिष्यो यथोक्त विधिए पाळवा तेज बतावे छे. के जेम पक्षीना बच्चांने माबाप पाळे तेम आचार्ये पण रातदिवस शिष्योने पाळवा अनुक्रमे वाचना आपवी, शिखामण आपवी, बधा कार्यमां धैर्यतावाळा करवा के जेथी तेओ ते प्रमाणे वर्तीने संसारथी पार उतरवा समर्थ थाय छे. एवु सुधर्मास्वामि कहे छे.

त्रीजो उद्देशो समाप्त.

चोथो उद्देशो कहे छे.

त्रीजो उद्देशो कह्या पछी चोथो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां शरीर उपकरणनो ममत्व त्याग वताव्यो अने ते त्रण गौरवने धारण करनारने संपूर्ण न होय, तेथी ते गौरव त्यागवा आ उद्देशो कहे छे. तेना आ संबधथी आवेला उद्देशानुं पहेलु सूत्र आ छे.

एवं ते सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइया तेहिं महावीरेहिं पन्नाणमन्तेहिं तेसिमंतिए पन्नाणमुवलब्भ हिच्चा उवसमं फारुसियं समाइयंति वसित्ता बंभचेरंसि आणं तं नोत्ति, मन्नमाणा आघायं तु सुच्चा निसम्म, समणुन्ना जीविस्सामो पगे निक्खमंते असंभवंता विडज्झमाणा कामेहिं गिद्धा अज्झोववन्ना समाहिमाधायमजोसयंता सत्थारमेव फरुसं वयंति (सू० १८८)

उपर बतावेल पक्षीना बच्चाना वधवाना क्रमथीज ते शिष्यो पोताने हाथे दीक्षा आपेला अथवा वडी दीक्षा आपेला तथा भणवा आवेला साधुओने दीवस अने रात्रे क्रमथीज भणावेला होय.

तेमां कालिक सूत्र दिवसनी पहेली तथा चोथी पोरसीमां भणावाय छे. पण जे उत्कालिक छे ते संध्यासत्रयनी काळ वेळा छोडीने आखो दिवस रात गमे त्यारे भणाय छे. तेनुं अध्यापन आचारांग विगेरे क्रमथी कराय छे, अने आचारांगसूत्र भणाववानुं

त्रण वरसना पर्यायवाळाने छे. विगेरे क्रमथी भणावेला चारित्र लीधेला साधुओ होय छे, तेमने उपदेश आपेलो छे के, युग मात्र
दृष्टिए जवुं. काचबा माफक अंगने संकोची राखवां आ प्रमाणे शिखामण आपेला, अने भणावी तैयार करेलां साधुओ होय छे.
प्रः—कोणे भणावेला छे. उः—ते तीर्थंकर गणधर–आचार्य विगेरे महावीर पुरुषोए भणाव्या छे.
प्रः—ते भणावनार केवा छे? उः—ज्ञानीओ छे. कारण के, तेमनो कहेलो उपदेशज असर करे छे. (माटे, ज्ञानीनुं विशे-
षण आपेल छे.) अने ते शिष्यो बन्ने प्रकारे प्रेक्षा पूर्वकारी छे. तेओ आचार्य पासे रहीने (प्रकर्षथी जणाय; ते प्रज्ञान.) श्रुतज्ञान
भणे छे. कारण के, ते श्रुतज्ञानना प्रतापथीज नवो नवो बोध थाय छे, तेथी ते बहु श्रुत बनीने प्रबळ मोहना उदयने लीधे आचा-
र्यना सद्उपदेशने उत्कट मदथी दूर करीने उपशम छोडीने दुःखी थाय छे ते उपशम द्रव्य, अने भाव एम बे भेदे छे. द्रव्यथी
उपशम ते, कतक नामनी वनस्पति (एक जातनुं बीज आवे छे. ते) तेने चुरीने जो गारावाळा पाणीमां नांखेल होय; तो, पाणी
गारो नीचे बेसतां निर्मळ थाय छे, भाव उपशम ते, ज्ञान विगेरेथी त्रण प्रकारनुं छे. (१) ज्ञानवडे जे क्रोध न करे; ते ज्ञानउपशम
छे. ते आ प्रमाणे आक्षेपणी विगेरे कोइपण प्रकारनी धर्मकथावडे कोइ जीव शांति धारण करे ते, ज्ञानउपशम छे.
(२) शुद्ध शम्यग्दर्शनथी तेवा क्रोधीने शांति पमाडे. जेमके—श्रेणिक राजाए जे देवता अश्रद्धावाळो हतो, तेने बोध करीने
शांत पमाड्यो. (पोताना दृढ सम्यक्त्वथी ते देवता श्रद्धावाळो थयो;) अथवा आठ दर्शनप्रभावकोथी कोइ जीव संमती विगेरेथी
शांत पामे छे, अने चारित्र–उपशम तो, क्रोध विगेरेनो उपशम छे, तेनामां विनयथी नम्रता होय छे.
तेमां केटलाक क्षुद्र साधुओ ज्ञानसमुद्रमां अंदरनुं रहस्य न जाणवाथी समुद्रना उपरज डुबकी मारनारा होय छे. तेओ उपर

कहेल उपशम छोडीने ते ज्ञाननो लेश हाथमां आवतां अहंकारी बनीने कठोरता ग्रहण करे छे (अहंकारी बने छे,) ते बतावे छे. परस्पर सूत्र तथा गाथा गणतां; अथवा अर्थ विचारतां एक बीजाने कहे छे. " जे तें कह्युं, ते अर्थ आ शब्दनो नथी. तेथी तुं जाणतो नथी. वळी. बोले छे के—मारा जेवा शब्दना अर्थनो निर्णय करवांमा समर्थ कोइकज होय छे, पण बधा नहीं,

" पृष्टा गुरवः स्वयमपि परीक्षितं निश्चितं पुनरिदम् नः ॥ वादिनि च मल्लमुख्ये च मादृगेवान्तरं गच्छेत् ॥ १ ॥

गुरुओने पूछेल, अने पोते पण आ निश्चय करेलो छे एवुं अमारुं आ कथन छे. तथा वादिओमां विद्वान्, अने सुभटमां महारा जेवो कोइकज बीजो हशे. बीजो साधु कहे छे के, खरेखर, हशे (पण) अमारा आचार्य तो, आ प्रमाणे कहे छे. तेथी ते फरीथी बोले छे के, ते आचार्य बोलवामां कुंठ [बुटा] जेवो बुद्धिहीण शुं जाणे ? तुं पण, पोपटनी माफक भणावेलो विचार कर्या विनानो छे, आ प्रमाणे बीजा केटलांक वाक्यो ते दुष्ट बुद्धिए ग्रहण करेल थोडा अक्षरनुं ज्ञान धरावनार साधु बोले छे, तेथी एम जाणवुं के, महान् उपशमनुं कारण जे ज्ञान छे, तेने विपरीतपणे परिणामतां ते आवुं बोले छे. कह्युं छे केः—

" अन्यैः स्वेच्छारचितानर्थविशेषान् श्रमेण विज्ञाय । कृत्स्नं वाङ्मयमित इति खादत्यङ्गानि दर्पेण " ॥ १ ॥

बीजाओए इच्छानुसार रचेला कोइपण अर्थने श्रमथी जाणीने पोते जाणे के, संपूर्ण सिद्धांतनो पारंगामि होय; नेम, अहंकारवडे अंगोने खाय छे. [बीजानुं अपमान करे छे.]

" क्रीडनकमीश्वराणां कुक्कुटलावकसमानवाल्लभ्यः । शास्त्राण्यपि हास्यकथां लघुतां वा क्षुल्लको नयति " ॥ २ ॥

श्रीमंतोनी क्रीडा समान वस्तुने कुकडाना लावक समान जेवो बनीने पवित्र शास्त्रोने पण, हास्य कथा जेवी लघुताने क्षुद्र साधु

पमाडे छे. (उत्तम जातीनुं मोती जे श्रीमंतोनुं मन रीझावे; तेवा मोतीने न समजनार कुकडानुं बच्चुं जुवारनो दाणो समजी लेवा जतां; कदर न थवाथी फेंकी दे छे. तेज प्रमाणे क्षुद्र साधु गंभीर सूत्रना परमार्थने न समजवाथी हांसीना वाक्य तरीके मानी ले छे.) विगेरे. अथवा बीजी प्रतिमा 'हेच्चा उवसमं अहगे पारुसियं समारुहंति' पाठ छे, तेनो अर्थ आ छे के—उपशम छोडीने बहुश्रुत बनेला केटलाक (वधा नहीं) कठोरताने स्वीकारे छे, तेथी, तेमने बोलावतो, अथवा पूछवा जतां कां तो, चुप रहे छे. अथवा हुंकार शब्द बोलीने माथु विगेरे हलावीने जवाव आपे छे.

वळी, केटलाक ब्रह्मचर्य जे संयम रुप छे, तेमां रहीने; अथवा, आचारांगसूत्र भणीने तेनो अर्थ ब्रह्मचर्य छे, तेमां रहीने आचारांगना विषयने अनुसार अनुष्ठान करवा छतां पण तेनो तिरस्कार करीने तीर्थंकरना उपदेश रुप आज्ञाने कंइक माने कंइक न माने; परंतु, सातागौरवनां बाहुल्यपणाथी तीर्थंकरना वचनने वहु मान आपता नथी; पण शरीरनी बकुशपणाने अवलंबे छे. (शरीरनी शोभा करवामां वीतरागनी आज्ञा उल्लंघे छे.)

अथवा, अपवादने आलंबीने वर्ततां उत्सर्ग मार्गनो उपदेश आपतां तेओ एकांत पकडे छे के, 'ते उत्सर्ग मार्ग जिनेश्वरनो कहेलो नथी.' हवे, समजवा माटे अपवाद वतावे छे.

कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स, अगिलाए समाहियं;

निरोगी भिक्षु (साधु) मांदा साधुनी समाधि माटे योग्य रीते वेयावच्च करे. जे कारणे (रोगे) साधु मांदो होय; ते रोग दूर करवा आधाकर्मी आहार विगेरे पण लावी आपे.

प्र०—ठीक तेम हशे; पण कुशील साधुओ जेओ तीर्थंकरना वचननी आशातना करे तेमने दीर्घ संसार थाय छे, तेमने थवानां भविष्यना दुःखो केम वताव्यां नथी ? उ०—एज अमे वताव्युं, के जे शरीर शोभा विगेरे माटे कुशीलता सेवे छे, तेमने थवाना कडवा विपाक विगेरे सूचव्या तेवुं हितशिक्षानुं वचन गुरु पासे सांभळीने ते कुशीलीया साधुओ ते गुरुनेज कडवां वचन संभळावे छे. प्र०—त्यारे कुशीलीआ साधु शा माटे गुरु पासे सिद्धांत सांभळता हशे ?

उ०—समनोज्ञ (लोकमां संमत) वनीने मान मेळवी अमे जोवन गुजारीशुं, आवा हेतुथी सिद्धांतना गुढ रहस्यना प्रश्नोना खुलासा माटेज शब्द शास्त्रादि (व्याकरण विगेरे) शास्त्रो भणे छे.

अथवा आ उपायवडे लोकमां मानीता थइने अमे जीवीशुं, एटला माटेज केटलाक दीक्षा लइने, पछवाडे कुशीलीया वने छे.

अथवा समनोज्ञ ते प्रथम दीक्षा लेतां विचारे के अमे उद्युक्त विहारी वनीने संयम जीवितवडे जीवीशुं, अने दीक्षा लइ पाछळथी मोहना उदयथी चारित्र वरोवर न पाळे, तेओ गौरवत्रिक (ऋद्धि रस साता)ना कारणे अथवा तेमांथी कोइपण एकना कारणे ज्ञानादिक मोक्षमार्गमां सारी रीते वर्त्तता नथी, तेम गुरुना उपदेशमां वर्त्तता नथी, अने जुदी जुदी जातनी इच्छाओथी गृद्ध थइने चित्तमां बळता गौरवत्रिकमां ध्यान राखीने विषयोमां रक्त बनी इन्द्रियोने स्थिर करवा रुप जे तीर्थंकर विगेरेए पांच यमो [महाव्रतो] वतावेला छे तेने बरोबर न पाळीने पोतानी मेळे पंडित मानी बनीने आचार्य विगेरेए वीतरागना शास्त्र प्रमाणे प्रेरणा कर्या छतां ते कुसाधुओ ते गुरुने कडवां वचन संभळावे छे. अने बोले छे के 'आ विषयमा तमे शुं जाणो'

कारण के जेवीरीते सूत्रना अर्थने व्याकरणने गणितने अथवा निमित्तने हुं जाणुं छुं. तेवी रीते बीजो कोण जाणे छे? आ

प्रमाणे आचार्य विगेरेने कुसाधु कडवां वचन कहे छे.

अथवा धर्मोपदेशक तीर्थंकर विगेरे छे. तेमने पण कडवां वचन कहे छे. ते बतावे छे. कोइ वखत ते साधु भूल करे, त्यारे आचार्य ठपको आपे त्यारे कुसाधु कहे, के तीर्थङ्कर अमारुं गळुं कापवाथी वधारे बीजुं शुं कहेनार छे? विगेरे अनुचित वचन बोले छे. अने विद्याना खोटा मदना अवलेपथी मदांध बनीने शास्त्र रचनार गणधर भगवंतोने पण दूषण आपे छे. वळी, आचार्योने दूषण आपे छे, एटलुंज नहि; पण, बीजा साधुओने पण कडवां म्हेणां संभळावे छे.

सीलमंता उवसंता संखाए रीयमाणा असीला अणुवयमाणस्स बिइया मंदस्स बालया (सू० १८९)

शील ते अढार हजार भेदवाळुं छे, अथवा महाव्रतो पाळवानुं छे, तथा पांच इन्द्रियोनो जय करवानुं छे. कषायनो निग्रह छे, त्रण गुप्ति पाळवानी छे. एवुं निर्मळ शील पाळे ते शीळवंत छे, तथा कषायने शांत करवाथी उपशांत छे.

शंका—शीळवान ग्रहण करवाथी उपशांत तेमां समाइ गया. त्यारे फरी केम कह्यु ?

उत्तर—कषायना निग्रहनुं प्रधानपणुं बताववा माटे, सम्यक्रीते जेनावडे कहेवाय; ते संख्या अथवा प्रज्ञा छे, तेना वडे संयम अनुष्ठानमां पराक्रम करनारा आचार्यो होय; छतां, कोइ साधुना नबळा भाग्यथी सदाचार रहित ए आचार्यो छे. एवी निंदा करनारा, अथवा पछवाडे निंदा करनारा, अथवा मिथ्या दृष्टि विगेरे बोले के तेओ कुशील छे, एवुं कहेतां पासत्था विगेरेनी आचार्यने खोटां वचन कहेवा रुप आ बीजी मूर्खता छे.

एटले, कुसाधु प्रथम तो, पोते सारा चारित्रथी रहित छे, अने पोते सारा चारित्र पाळनार उद्युक्त विहारी उत्तम साधुने निंदे

छे. आ तेमनी बीजी मूर्खता छे. अथवा, जे शीळवन्तो छे ते उपशांत छे. एवुं बीजाए कहे छते, ते कुसाधु बोले के "ए घणो उपकार करनारा आचार्य विगेरेमां तमारा कहेवा मुजब क्यां शील अने उपशांतता छे?" आ प्रमाणे बोलता दुराचारी साधुनी बीजी मूर्खता थाय छे. पण, बीजा केटलाक साधुओ वीर्यांतराय कर्मना उदयथी जो के, पोते पुरु चारित्र न पाळता होय; छतां पण बीजा उत्तम साधुओनी प्रशंसा करता रहीने पोते पण बीजाने सारा आचार बतावे छे. ते कहे छेः—

नियट्टमाणा वेगे आयारगोयर माइक्खंति, नाणब्भट्ठा दंसणलूसिणो (सू० १९०)

अशुभ कर्मना उदयथी संयमथी दूर थाय, अथवा लिंग मुकी दे, अर्थात् केटलाक साधुओ मोहना उदयथी चारित्र न पाळी शके, त्यारे कोइ साधुनो वेष मुकी दे, अथवा वेष राखे तो पण पोते साधुनो जेवो आचार होय, तेवो लोकोने बतावे छे. अने पोतानी निंदा करता कहे छे, के तेवो उत्तम आचार पाळवाने अमे समर्थ नथी, आ कारणथी चारित्र न पाळ्युं, तेज तेमनी मूर्खता छे. पण वचन साचुं बोलवाथी बीजी मूर्खता थती नथी, तेओ एवुं खोटुं नथी बोलता, " के अमे जे करीए छीए तेवोज अमारो आचार छे " (पोतानी भूल कबुल करे छे.) वळी आम न बोले के 'हवे आ दुःखम काळना अनुभावथी बळ विगेरे ओछुं थवाथी मध्यम वर्तन एज कल्याणनुं कारण छे. हमणा उत्सर्गनो अवसर नथी (आवुं खोटुं न बोले) कह्युं छे केः—

" नात्यायतं न शिथिलं, यथा युञ्जीत सारथिः । तथा भद्रं वहन्त्यश्वा, योगः सर्वत्र पूजितः ॥१॥ "

न जोरथी, न धीरे, एम सारो हाकनार घोडा विगेरेने हाके ते हाकनारो डाह्यो गणाय, तथा घोडा पण ते प्रमाणे मध्यम चाले तो ते योग बधे माननीय थाय छे. वळीः—

जो जत्थ होइ भग्गो, ओवासं सी परं अविंदंतो । गंतुं तत्थऽचयंतो, इम पहाणंति घोसेति

जे ज्यां भांग्यो होय तो ते बीजा अवकाशने न जाणतो अने त्यां जवाने असमर्थ होवाथी पोते पोतानी कुटेवने पण प्रधान बतावे छे. (आवुं कुसाधुनुं वर्तन छे, ते तेनी बेवडी मूर्खता छे.)

प्र०—तेओ शामाटे आवा कुशीळनुं समर्थन करता हशे ? उ०—सारा माठाना विवेकनुं जे ज्ञान छे, तेनाथी तेओ भ्रष्ट थयेल छे, तथा सम्यक्दर्शनथी दूर रही असत् (खोटुं) अनुष्ठान करवा वडे पोते नाश पामेला छे, अने शंका उत्पन्न करावीने तेओ बीजाने सारा मार्गथी भ्रष्ट करे छे. वळी बीजा केटलाक पोते बाह्य क्रिया करवा छतां पण (अंदरनी श्रद्धा विना) पोताना आत्मानुं अहित करे छे, ते बतावे छे.

नममाणा वेगे जीवियं विप्परिणामंति पुट्ठा वेगे नियट्टंति जीवियस्सेव कारणा, निक्खंतंपि तेसिं दुन्निक्खंतं भवइ, बालवयणिज्जा हु ते नरा पुणो पुणो जाइं पकप्पिंति अहे संभवंता विद्दायमाणा अहमंसीति विउक्कसे उदासीणे फरुसं वयंति पलियं पकथे अदुवा पकथो अतहेहिं तं वा मेहावी जाणिज्जा धम्मं (सू० १९१)

ते कुसाधुओ आचार्य विगेरेने श्रुत ज्ञान मेळववा माटे द्रव्यथी देखवा मात्र ज्ञान विगेरेना भाव विनय शिवाय नमवा छतां आत्माने दूर राखे छे. वळी पण, तेओमांना केटलाक अशुभ कर्मना उदयथी संयय जीवितने विराधे छे. अर्थात् उत्तम चारित्रथी

बीजुं शुं छे ? ते कहे छेः—चारित्रमां अस्थिर मतिवाळा त्रण गौरवना बन्धायला बनी परीषहोथी फरसातां संयम अथवा साधु वेषथी तेओ दुर थाय छे. प्र०—शा माटे ?

उ०—असंयम नामना जीवितना निमित्तर्थाज अर्थात् हवे, अमे सुखेथी संसारमां जीवीशुं, एम वीचारीने सावद्य अनुष्ठान करीने संयमथी दुर थाय छे, तेवा जीवोनुं शुं थाय छे ? ते कहे छे. ते कुसाधुओ घरवासथी नीकळ्या छतां ज्ञान दर्शन चारित्रना मूळ उत्तर गुणमां कंइ पण खामी आववाथी तेने दीक्षा पाळवी मुश्केल थाय छे, तेवा भ्रष्ट साधुओनुं जे थाय; ते कहे छे (हु अव्यय हेतुना अर्थमां छे.) जेथी असम्यग्अनुष्ठानथी दीक्षा छोडेला साधु बाळ बुद्धिवाळा जे सामान्य पुरुषो छे, तेमनाथी पण निंदाय छे. (ज्यां होय; त्यां तिरस्कार पामे छे.)

वळी, तेओ संयम मुकवाथी कुवाना अरहट्टना न्याये वारंवार नवी जाति [जन्म] मेळवे छे.

प्र०—तेओ केवा छे ? उ०—अधःसंयम स्थानमां वरवते रहेला होय; अथवा अविद्याथी नीचे [कुमार्गे]. वर्तता होय; छतां पोते पोताने विद्वान मानता लघुताथी आत्माने उंचे चडावे छे. (पोताने हाथे पोतानी स्तुति करे छे.) वळी, पोते थोडुं भणेलो होय; तोपण, मानथी उंचो बनीने रस अने साता गौरवनी बहुलताथी माने छे. के, हुं बहुश्रुत छुं, अने आचार्य जे जाणे छे ते में तत्वने थोडाज काळमां जाणी लीधुं छे. एवुं मानीने आत्माने अहंकारी बनावे छे.

ते आत्मश्लाघाथीज संतोष पामतो नथी; पण, बीजा उत्तम साधुओनी निंदा करे छे ते बतावे छे.

उदासीन ते रागद्वेष रहित मध्यस्थ साधुओ घणुं भणेला होवाथी शांत होय छे, तेवा आचार्य विगेरे ज्यारे ते साधुनी भूल

पडे, त्यारे कहे तो, तेमनी पण निंदा करे छे अने बोले छे के, तमे तो, प्रथम कृत्य अकृत्यने जाणो; अने पछी बीजाने उपदेश आपजो. वळी ते कडवुं बोले छे ते सूत्र वडे बतावे छे. 'पलियं' अनुष्ठान छे तेना वडे तृण हार विगेरेथी बोले, (तुं आ तणखला जेवो छे.) अथवा कुंट, मंट, विगेरे गुणोथी अथवा मुखना विकार वगेरेथी कुचेष्टा करीने गुरुनुं अपमान करे, तथा खोटां आळ चडावीने गुरुनो तिरस्कार करे. हवे समाप्त करतां कहे छे, ते वाच्य अवाच्य अथवा श्रुत चारित्र नामनो धर्म उत्तम साधु जे गुरु आज्ञामां रहेल होय ते सारी रीते जाणे.

अने जे असभ्यवादमां बाळ साधु वर्ततो होय तो गुरु विगेरे ए तेने शिखामण आपवो ते बतावे छे.

अहम्मट्ठी तुमंसि नाम बाले आरंभट्ठो अणुवयमाणे हण पाणे घायमाणे हणओ यावि समणुजायमाणे, घोरे धम्मे, उदीरिए उवेहइ णं अणाणाए, एस विसन्ने वियद्दे वियाहिए तिबेमि (सू० १९२)

अर्थ जेने होय, ते अर्थी अने ते अधर्मनो अर्थी ते अधर्मार्थी छे, एवा अधर्मार्थीने पण शीखामण देवाय छे, प्र०—ते अधर्मार्थी केवी रीते छे, ? उ०—ते बाळ छे. प्र०—शा माटे बाळ छे ? उ०—सावद्य आरंभमां वर्त्ते छे. प्र०—केवी रीते आरंभमां वर्त्ते छे ? उ०—प्राणीओने दुःख देवारुप वादोने बोलतो आ प्रमाणे कहे छे.

प्र०—केवी रीते आरंभमां वर्त्ते छे ? उ०—प्राणीओने दुःख देवारुप वादोने बोलतो आ प्रमाणे कहे छे. "जीवो ने हणो" ए प्रमाणे बीजा पासे हणावी अने हणताने अनुमोदतो त्रण गौरवथी बन्धायलो रांधवा रंधाववानी क्रियामां प्रवर्त्तेला गृहस्थीओ आगळ तेमना पिडनो वांछक बनीने आ प्रमाणे कहे छे.

'आमां शुं दोष छे! कारणके शरीर विना धर्म बनी शके नहीं; माटे धर्मना आधाररूप शरीरने यत्नाथी पाळवुं जोइए' कह्युं छे के.

शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणीयं प्रयत्नतः। शरीराज्जायते धर्मो, यथा बीजात्सदंकुरः ॥ १ ॥

धर्मथी जोडायलुं शरीर प्रयत्नथी बचाववुं;-कारणके जेम बीज होय, तो सारो अंकुरो थाय, तेम शरीर (सारु) होय, तो धर्म थाय छे, (त्यारे आचार्य तेने शीखामण आपे के हे भव्य!) तुं शा माटे एवुं बोले छे ?-

सांभळ ! धर्म छे, ते घोर भयानक छे, कारण के बधा आश्रवोनो तेमां निरोध छे, अने तेथी ते दुरनुचर छे, एवुं तीर्थंकर विगेरेए उदीरित (कहेलुं) छे, तेवा अध्यवसायवाळो तुं बन, अने एवा उत्तम संयम अनुष्ठाननी अवगणना जे करे छे (णं वाक्यनी चोभा माटे छे) अने सावद्य अनुष्ठान करे, ते तीर्थंकर गणधरना उपदेशथी बहार जइ स्वेच्छाथी वर्ते छे.

प्र०—कोण एवो होय? उ०—उपर बतावेलो अधर्मार्थी बाळ आरंभनो अर्थी बनीने प्राणीओनो घात करे, करावे हणनारने अनुमोदनारो धर्मनी अवगणना करनारो, तथा काम भोगमां खेद पामेलो (कामांध) विविध प्रकारे तर्द (हिंसा) करनारो (तर्द धातुनो अर्थ हिंसा छे) अथवा सयममां प्रतिकूल ते वितर्द छे. एवा स्वरुपवाळो बाळ साधु जिनेश्वरे कहेलो छे. एवुं सुधर्मास्वामी पोताना शिष्योने कहे छे. के तुं मेधावी छे. माटे धर्मने जाण, वळी हवे पछीनुं पण हुं कहुं छुं; ते बतावे छे.

किमणेण भो ! जणेण करिस्सामित्ति मन्नमाणे एवं एगे वइत्ता मायरं पियरं हिच्चा नायओ यपरिग्गहं वीरायमाणा समुट्ठाए अविहिंसा सुव्वया दंता पस्स दीणे उप्पइए पडिवयमाणे

वसट्टा कायरा जणा लूसगा भवंति अहमेगेसिं सिलोए पावए भवइ, से समणो भवित्ता विब्भते २ पासहेगे समन्नागएहिं सह असमन्नागए नममाणेहिं अनममाणे विरएहिं अविरए दविएहिं अदविए अभिसमिच्चा पंडिए मेहावी निट्ठियट्ठे वीरे आगमेणं सया परिक्कमिज्जासि त्तिबेमि (सू० १९३) इति धूताध्ययने चतुर्थ उद्देशकः ॥ ६–४ ॥

केटलाक साधुओ तत्व समजीने सम्यग् उत्थानथी तैयार थइ वीर माफक वर्त्तता पाछळथी प्राणीनी हिंसा करनारा थाय छे. प्र०—ते केवी रीते तैयार थयेल हता ? उ०—ते विचारे छे के हे भाइ! मारे आ स्वार्थमां तत्पर एवा माता पिता पुत्र कलत्र (स्त्री) विगेरे जेओ परमार्थ द्रष्टिए जोतां अनर्थ रुप छे. तेमनी जोडे हुं शुं करीश ? कारण के तेओ मारुं कांइपण कार्य करवुं के रोग दूर करवामां समर्थ नथी, तेथी तेनावडे हुं शुं करीश ? एम जाणीने दीक्षा ले छे. अथवा कोइ दीक्षा लेनारने कोइए कह्यु. के हे भाइ ! रेतीना कोळीआ खावाजेवी निःसार दीक्षा लेवा वडे शुं करीश ? पण पूर्वना भाग्ये मळेलुं भोजन विगेरे (सुखेथी) भोगव एम कहेतां ते दीक्षा लेनार वैराग्यथी रंगायलो होवाथी बोले, के हे बन्धो ! हुं आ भोजन विगेरेथी हवे शुं करीश ? में आ संसारमां भमतां अनेकवार भोगव्युं, तो पण तृप्ति न थइ, तो हमणां आ भवमां शुं थवानुं छे ? ए प्रमाणे विचारता केटलाक पुरुषो संसार स्वभावने जाणनारा दीक्षा लेवा तैयार थइने माबाप तथा बीजां सगांने तथा धन धान्य हिरण्य बे पगवाळां दास दासी तथा चार पगवाळां पशु विगेरेने छोडवामां (सिंह माफक) वीर माफक आचरण करनारा बनीने योग्य रीते संयम अनुष्ठानमां तत्पर

थयेला होय छे, अने हिंसा त्यागी विहिंस [दयाळु] तथा शोभन व्रत धारण करीने सुव्रत बनेला छे, तथा इन्द्रियो दमीने दांत छे, आवुं निर्मळ वर्तन करनारा छे. आना संबन्धमां नागार्जुनीया कहे छेः—

समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसूया अविहिंसगा सुव्वया दंता परदत्तभोइणो पावं कम्मं न करेस्सामो समुट्ठाए ॥

अमे आगार (घर) रहित अणगार थइशुं; तेम, अकिंचन अपुत्र अप्रसूत (स्त्री विनाना) दयाळु सारा व्रतवाळा, इन्द्रि दमन करनारा गोचरीथी निर्वाह करनारा बनीने पाप कर्म नहीं करशुं. एम जाणीने दीक्षा ले छे. [सुगम सूत्र होवाथी टीका नथी.] आ प्रमाणे प्रथम सिंह जेवा बनी दीक्षा ले छे, अने पछी दीन (रांक) शीयाळीया जेवा विहार करवामां ढीला बनीने त्यागेला भोगोने पाछा ग्रहण करी पतित थयेलाने तुं जो. प्रथम तेओ दीक्षा ले छे, अने पछी पापना उदयथी दीक्षा मुकी दे छे. [गुरुए पोताना शिष्यने स्थिर करवा शिथिळतानो आवो दृष्टांत आपेल छे.

प्र०—तेओ शा माटे दीन थाय छे ? उ०—तेओ इन्द्रियोना विषयो तथा कषायोथी परवश थवाथी वशार्त्त छे, तेवा शिथिलने कर्मनो बन्ध थाय छे. ते कहे छेः—

सोइंदियवसट्टेणं भंते ! कइ कम्म पगडीओ बन्धइ? गोयमा ! आउअवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ जाव अणुपरिअट्टइ, कोह वसट्टेणं भंते ! जीवे एवं तं चेव ॥

गौतमनो प्रश्न—हे भगवन् ! कानने वश थइने जीव केटली कर्म प्रकृतिओ बांधे ? उ०—आयु छोडीने सात. प्र०—क्रोधने वश थइने केटली ? उ०—एज प्रमाणे. आ प्रमाणे मान विगेरेमां पण समजवुं, वळी ते ढीला साधुओ परीसह उपसर्ग आवतां

कातर बने छे, अथवा विषयना रसीआ कातर (बीकण) बने छे.

प्र०—तेओ कोण छे ? अने शुं करे छे ? उ०—तेओ ढीला मनवाळा बनीने व्रतोना विध्वंसक बने छे, आवुं अढार हजार शीलांगवाळुं ब्रह्मचर्य कोण धारी शके! आवुं विचारीने द्रव्य लिंग अथवा भावलिंग त्यजीने जीवोना विराधक बने छे, ते लिंग त्यजेलानुं पछी शुं थाय छे ते कहे छे. (अथनो अर्थ पछी छे) केटलाक व्रत लइने भांगी नांखे छे, तेमने (पापना उदयथी) वखते अंतर्मुहुर्त्तमांज मरण आवे छे, केटलाकनी पापरुप निंदा थाय छे, पोताना साधु के बीजा साधुओमां तेनी अपकीर्ति थाय छे, ते कहे छे. ते आ पतित साधु मसाणना लाकडा जेवो भोगनो अभिलाषी दीक्षा ले छे, अने मुकी दे छे माटे तेनो विश्वास न करवो कारणके तेने अकर्त्तव्यनुं भान नथी ? कह्युं छे केः—

परलोक विरुद्धानि, कुर्वाणं दूरतस्त्यजेत् ॥ आत्मानं यो न सधत्ते, सोऽन्यस्मै स्यात् कथं हितः ॥१॥

जे परलोक विरुद्ध अकृत्य करे छे, तेने दूरथी त्यजवो, जे आत्माने चारित्रमां स्थिर नथी राखतो, ते बीजाने हितकारक केवी रीते थाय ? विगेरे समजवु.

अथवा सूत्र वडेज तेनी अश्लाघा बताववा कहे छे, ते आ साधु बनीने विविध रीते भमतो साधुपणाथी भ्रष्ट थयेलो छे. वीप्सा वडे अत्यंत जुगुप्सा (निंदा) बतावे छे. वळी, (गुरु शिष्यने कहे छे.) तमे जुओ. कर्मनी प्रबळता केवी छे ? के, जेमनुं नशीब फुटेलुं छे, तेवा उद्युतविहारी (उत्तम साधु) साथे रहेवा छतां पण, हजु तेओ शिथिळ विहार बनी रह्या छे, तथा संयम अनुष्ठान वडे विनयशील बनेला साथे रहीने तेओ निर्दय बनेला पाप अनुष्ठान करनारा छे, तथा विरत साथे अविरत,, द्रव्य, भूत साथे

अद्रव्य भूत पापनां कलंकथी अंकित थवाथी एवा उत्तम साधुओ साथे वसतां पण सुधरता नथी. (अर्थात् जगत्मां सारा साधुओ नजरे जोवा छतां पण, ढीला साधु सुधरता नथी) आवा ढीला साधुने जाणीने शुं करवुं ? ते कहे छे:—हे साधु ! तुं पंडित छे. ज्ञाता ज्ञेय छे, मर्यादामां रहेल मेधावी छे, विषय सुखनी तृष्णा तें दूर करी छे, तथा तुं वीर होवाथी कर्म विदारण करवामां शक्तिवान् छे, तेथी सर्वज्ञप्रणीत उपदेशना अनुसारे सर्वदा संयम अनुष्ठानमां वर्त्तजे. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामि कहे छे:—

धूत अध्ययननो चोथो उद्देशो समाप्त.



धूत अध्ययन पंचम उद्देशो.

चोथो कहीने पांचमो कहे छे. तेनो आ संबंध छे. गया उद्देशामां कर्म दूर करवा त्रण गौरव छोडवानुं बताव्युं; अने ते कर्म विधूनन उपसर्ग विधूनन विना संपूर्ण भावने अनुभवतुं नथी, तथा सत्कार पुरस्काररुप सन्मानना विधूनन विना गौरव त्रिकनी विधूनना संपूर्णताने न पामे; एथी उपसर्ग सन्मानने विधूनन करवा आ उद्देशो कहे छे. आ संबन्धे—आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे. अस्खलितादि गुण युक्त उच्चारवुं ते कहे छे:—

से गिहेसु वा गिहंतरेसु वा गामेसु वा गामंतरेसु वा नगरेसु वा नगरंतरेसु वा जणवयेसु वा जणवयंतरेसु वा गामनयरंतरे वा गामजणवयंतरे वा नगरजणवयंतरे वा संतेगइया

जणा लूसगा भवंति अदुवा फासा फुसंति ते फासे पुट्ठे वीरो अहियासए, ओए समियदंसणे, दयं लोगस्स जाणित्ता पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं आइक्खे, विभए किट्टे वेयवी, से उट्ठिएसु वा अणुट्ठिएसु वा सुस्सूसमाणेसु पवेयए संतिं विरइं उवसमं निव्वाणं सोयं अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं अणइवत्तियं सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं सत्ताणं सव्वेसिं जीवाणं अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खिज्जा (सू० १९४)

ते पंडित मेधावी निष्ठित अर्थवाळो वीर साधु सदा सर्वज्ञ प्रणीत उपदेश प्रमाणे वर्तनारो गौरवत्रिकथी अप्रतिबद्ध निर्मम निष्किंचन निराश एकाकी विहारपणे [जीनकल्पी जेवो] गाम गाम विचरतो क्षुद्र तीर्यच नर, देवे करेला उपसर्ग परिसहोथी दुःखना स्पर्शो भोगवतो छतां निर्जरानो अर्थी बनीने सारी रीते सहन करे.

प्र०—कइ जग्याए तेने तेवा परिसह उपसर्गो दुःख दे ? ते कहे छे. आहार विगेरे माटे घरमां जतां (उंच नीच मध्यम जातिनां घरो होय माटे बहु वचन सूत्रमां छे) तथा घरोना वचमां जतां तथा (बुद्धि विगेरे गुणोने खाइ जाय ते गाम) गाममां गामांतरमां तथा कर विनानां नगरोमां अथवा अंतराळे जतां थाय छे, तथा ज्यां लोकोने रहेवानां स्थान ते जनपद छे, ते अवति

(माळवो) विगेरे छे, ते देशो साधुने विहार योग्य २५ देश छे (ते आर्य देश छे बाकीना ३१९७४ अनार्य छे.) नीचे टीपणमां बीजा सूत्रनो* पाठ मुक्यो छे.

ते समये साधुओने विचरवा योग्य क्षेत्रनी बन्धायली हद नीचे प्रमाणे हती.

पूर्व दिशामां साधु साध्वीने मगध देश सुधी विचरवुं कल्पे, दक्षिणमां कोशंबी, पश्चिममां थुणा देश सुधी अने उत्तरमां जाव कुणाला देश सुधो आर्य क्षेत्र छे, तेनी बहार जवुं साधु साध्वीने न कल्पे, उपर बतावेल हदमां आर्य भूमिमां २५॥ देश छे, ते जिनेश्वरे धर्म क्षेत्र तरिके वर्णव्या छे.

ते देशोनी वचमांना भागमां साधु विचरे, अथवा गाम नगरना अंतराले अथवा गाम देशना वचमां तेज प्रमाणे नगर देशना वचमां अथवा उद्यानमां अथवा तेना आंतरे विचरतां अथवा जतां आवतां अथवा ते भिक्षुने गाम विगेरेमां रहेतां कायोत्सर्ग विगेरे करतां केटलाक पापरुप काळाशथी मलिन अंतःकरणवाळा जे माणसो लूषक (हिंसक) होय; ते साधुने दुःख दे छे. (चार गतिमां भमता जीवोमां) साधुने नारकी दुःख देवाने अशक्त छे. तिर्यंच अने देवतानो उपसर्ग कोइकज वार थाय; तेथी मनुष्योथीज प्राये साधुने उपसर्ग थाय छे. माटे, जन [माणस] शब्द लीधो छे. अथवा, जेओ जन्मे; ते जन छे, अने तेथी जन शब्दनो अर्थ ति-

*'पुरच्छिमेणं कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा जाव मगहाओ एत्तए, दक्खिणेणं कप्पइ निग्गंथीण वा निग्गंथीण वा जाव कोसंबीओ एत्तए, पच्छिमेणं जाव थूणाविसओ, उत्तरेणं जाव कुणालाविसओ, ताव आरिए खित्ते, नो कप्पइ इत्तो बहिं' ति अस्यां च आर्यभूमिकायां सार्धपञ्चविंशतिर्जनपदा धर्मक्षेत्राण्यर्हद्भिरुक्तानि ॥

तिर्यंच नर, अने अमर लीधो छे. एटले, साधुओने विहार विगेरेमां आ त्रणे अनुकूळ तथा प्रतिकूळ एक अथवा बन्ने प्रकारे उपसर्ग करे छे, तेमां देवताना उपसर्ग चार प्रकारना छे. (१) हास्यथी. (२) द्वेषथी. (३) विमर्शथी. (४) प्रथक् विमात्रथी छे. तेमां प्रथमनो क्रीडामां तत्पर कोइ व्यंतर देव हास्यथीज विविध उपसर्गोने करे. जेमके—भिक्षा माटे आवेला नाना साधुओए भिक्षाना लाभने माटे पलल विकट तर्पण विगेरेथी याचता व्यंतरने मळ्या. पछी, भिक्षा प्राप्त थया पछी तेणे ते चीजो मागी; तेथी, ते व्यंतरने खुशी करवा क्यांयथी ते चीज लावीने तेमणे आपी. ते व्यंतरे पण क्रीडामांज ते नाना साधुओ क्षीबा माफक बनव्या.

[२] द्वेषथी भगवान महावीरने महा महिनामां खरी ठंडमां तापसीनुं रुप धारीने व्यंतरीए पोताना चोटलामां झाडनी छालनुं वस्त्र पाणीथी भींजावीने तेना वडे पाणीनो ठंडो छंटकाव कर्यो. [३] विमर्शथी आ साधु धर्ममां दृढ छे के नहि ? ते जोवा अनुकूळ प्रतिकूळ उपसर्गोथी परीक्षा करे ते बतावे छे. जेमके—संविग्न साधुनी भक्त बनेली कोइ व्यंतरीए स्त्रीनो वेष धारीने उज्जड देवळमां बेठेला साधुने अनुकूळ उपसर्गोथी चलायमान करवा धार्युं पण ते चलायमान न थवाथी आ दृढ धर्मी छे. एम जाणीने भक्तिथी वांद्या. (४) जुदी जुदी रीते हास्यथी, द्वेषथी के, विमर्शथी कोइपण एकथी परिक्षा करे. जेमके—भगवान महावीरने संगम नामना एकज देवताए विमर्शथी शरु कर्या, अने द्वेषथी परिषह पुरा कर्या. एटले, आ उपसर्गमां प्रारंभ अने अंत जुदी जुदी रीते थाय छे.

माणसथी पण साधुने चार प्रकारे उपसर्ग थाय छे. [१] हास्यथी (२) द्वेषथी, [३] विमर्शथी, (४) कुशीळताना सेवन माटे. तेमां हास्यथी देवसेनागणीकाये नाना युवक साधुने कुमार्गे दोरवा सताव्यो; त्यारे साधुए दांडाथी ताडना करी, वेश्याए राजा पासे फरीयादी करी. नाना साधुने राजाए बोलाव्यो. युवके श्रीगृहनां दृष्टांतथी समजाव्यो.के हे राजन्! तारो खजानो लुंटे तो तुं

शुं करे ? उत्तर—शिक्षा करुं. साधुए कह्युं केः—तेवी रीते में घणी समजावी के, साधुओनुं धन निर्मळ शीळ छे. माटे, तुं दूर था. पण, तेणे कोइ रीते न मान्युं. माटे, जरा शिक्षा करवी पडि छे. (२) द्वेषथी सोमभूति ससराए गजसुकुमारने माथा उपर बळता अंगारा भर्या. [३] विमर्शथी चाणाक्य मंत्रीनी प्रेरणाथी चंद्रगुप्त राजाए धर्मनी परीक्षा करवा पोतानी राणीओ पासे धर्म संभळावता साधुने उपसर्ग कराव्यो. साधुए पण बीजो कोइ उपाय छेवट सुधी न जोवाथी थोडी ताडनाथी दूर करी, राणीओए फरीयाद करी. साधुए राजना भंडारनो दाखलो आपी राजाने प्रतिबोध्यो. [४] कोइ दुराचार माटे प्रार्थना करे. जेमके—इर्ष्यालु शेठना घरमां धणीना अभावमा कोइ पण संजोगोथी त्यां एक साधु रात रह्या. तेमने चार जुवान स्त्रीओए धणीना अभावे वाराफरती तेमने आखी रात पजव्या; पण दरेक पहोरमां ते न लोभातां मेरु पर्वत माफक निश्चळ रह्यां तिर्यंचना पण भय, द्वेष, आहार अने बाळक रक्षणना माटे चार प्रकारेज उपसर्ग छे. (१) भयथी साप विगेरे चमकीने करडे छे. द्वेशथी भगवान महावीरने चंडकोशीए उपसर्ग कर्यो. आहारमाटे सिंह वाघ विगेरे मारे छे. अने अपत्य रक्षण माटे काकी [ ] विगेरे पीडे छे.

उपर बताव्या प्रमाणे उपसर्ग करवाथी (उपर बतावेला अर्थ प्रमाणे जनो साधुओना लूषक (दुःख देनारा) छे.

अथवा तेवा तेवा गाम विगेरे स्थानमां जतां दुःखना स्पर्शो आत्माने पीडनारा थाय छे. ते चार प्रकारना छे. जेमके आंखमां कणु विगेरे पडवाथी घट्टनता थाय छे. अने भमेलनी मूर्छा विगेरेथी पतनता [पडवुं] थाय छे. वायु विगेरेथी स्तंभनता (रोकाण) थाय छे अने ताळवा विगेरेमां अंगुळी विगेरे घालवाथी श्लेषणता ( ) थाय छे.

अथवा वात पित्तश्लेष्म विगेरेना क्षोभथी कडवा स्पर्शो थाय छे. अथवा निष्किंचनपणाथी तृण स्पर्श डांस मच्छर तथा ठंड

ताप विगेरेना पीडारूप स्पर्शो कोइ वखत थाय छे.

तेवा कोइ पण परीसहो आवे तो तेना दुःखना स्पर्शोथी साधु पोते धीर बनीने सहन करे, मनमां चिंतवे, के आथी पण वधारे दुःखो नारकी विगेरेमां कर्मना अवंध्यपणाथी बांधेलां उदयमां आवतां पछी पण भोगववानां रहेशे, माटे हमणांज भोगववां ठीक छे, एम विचारी सहे.

केवो मुनि सहन करे ? उ०—कहे छे. अथवा उपर बतावेल साधु पोताना उत्तम गुणोथी परीसहो सहीने पोतानोज रक्षक छे. एम नहीं पण सुबोध वडे बीजाओनो पण रक्षक छे. ते बतावे छे. 'ओजः' एकलो राग विगेरेथी रहित सारी रीते दर्शनने पामेलो ते समित दर्शन छे अथवा सम्यग्दृष्टि छे, अथवा उपशमने पामेला दर्शनवाळो, अर्थात् दृष्टि ते ज्ञान छे. ते समित दर्शन छे. एटले उपशांत अध्यवसायवाळो जाणवो.

अथवा समताने पामेला दर्शनवाळो अर्थ दृष्टि लेतां समदृष्टि जाणवो एटले एवा उत्तम गुणोने धारण करनार साधु परीसहोने सहे अथवा (पछीना क्रीयापद साथे संबन्ध लेतां) ते धर्मने कहे.

प्र०—शुं आलंबन लइने ? उ०—कहे छे. ते जंतुलोक (जीवमात्र) उपर द्रव्यथी दया जाणीने धर्म कहे. [के ए जीवो कोइपण रीते तरो] क्षेत्रथी पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर तथा बीजी पण दीशाना विभागोमां (बधी जग्याए) जोइने सर्वत्र दया करतो ते साधु धर्म उपदेश करे छे. काळथी आखी जींदगी सुधी दया पाळे छे. भावथी रागद्वेष त्यागीने मध्यस्थ पणे धर्म कहे छे.

प्र०—केवी रीते कहे ? उ०—बधा जीवो दुःखना द्वेषी सुखना चाहनार पोताना आत्मानी माफक सदा जाणी लेवा कह्युं छे के.

न तत्परस्य संदध्यात्, प्रतिकूलं यदात्मनः ॥ एष सङ्ग्राहिको धर्म्मः, कामादन्यः प्रवर्त्तते ॥१॥

जे पोताने गमतुं नथी, तेवुं बीजाने न करवुं. एज संग्राहिक (सार रुप) धर्म छे ते काम (इच्छाओ)थी जुदो प्रवर्त्ते छे. (पोते दुःख भोगवीने पण बीजाने सुख आपवुं) विगेरे छे. ते प्रमाणे धर्मने कहेतां पोते पण द्रव्य क्षेत्र काळ अने भावना भेदोवडे अथवा आक्षेपणी विगेरे चार प्रकारनी कथाओ वडे पोते पण जीव हिंसा जुठ चोरी कुसंग परिग्रह अने रात्री भोजन विगेरे अकार्यथी दूर रही धर्म पाळे. अथवा आ पुरुष कोण छे ? क्या देवने माने छे ? तेनो अभिप्राय केवो छे ? अथवा अभिप्राय विनानो छे ? एवुं बधुं विचारीने सांभळनारनी योग्यता प्रमाणे व्रतो तथा संयम अनुष्ठाननुं फळ बतावे.

प्र०—आवो धर्म कोण कहे ? उ०—वेद [जैन आगम] जाणनारो होय ते. आ संबंधमां नागार्जुनीया आ प्रमाणे कहे छे.

जे खलु समणे बहुस्सुए बज्झागमे आहरणहेउकुसले धम्मकहालद्धिसम्पन्ने खेत्तं कालं पुरिसं समासज्ज केऽयं पुरिसे कं वा दरिसणमभिसम्पन्नो ? एवं गुणजाइए पभू धम्मस्स आघ वित्तए ॥

जे निश्चये साधु बहुश्रुत आगमनो जाण दृष्टांत हेतु बताववामां कुशळ धर्म कथानी लब्धिवाळो क्षेत्रकाळ पुरुष ए बधानो विचार करे के आ पुरुष कोण छे. तेनुं मंतव्य शुं छे. ए प्रमाणे गुणोनी जातिए युक्त होय तेज धर्म कहेवाने समर्थ छे.

प्र०—ते केवा निमित्तोमां धर्म कहे ? उ०—ते आगमनो जाण पोताना तथा बीजा मतना सिद्धांतने जाणनारो भावउत्थान वडे उठेला साधुओमां धर्म कहे. (वा शब्दनो संबंध बीजा पक्षनो प्रकाश करे छे.) एटले पार्श्वनाथ भगवानना मोक्ष गया पछी पण तेमना साधुओ ते समयना रिवाज प्रमाणे चार महाव्रत पाळता विचरे, तेमने समय बदलातां महावीर प्रभुना शासनमां रहेल गण-

धरो पांच महाव्रतनो धर्म बतावे (जेम केशी गणधरना शिष्योने गौतमस्वामिना शिष्योनो मेळाप थयो, अने बन्नेमां शंका थतां बन्नेना गुरुओ भेगा थतां गौतमस्वामिए केशीगणधरने पंच महाव्रतनो धर्म समजाव्यो. अने तेमणे स्वीकार्यो.)

अथवा पोताना शिष्यो जेओ विनयथी सांभळवा उभा थया होय तेमने नवुं तत्व जाणवा माटे धर्म संभळावे, अथवा दीक्षा न लीधेला श्रावक विगेरे जेओ धर्म सांभळवानी इच्छावाळा बनी गुरु विगेरेनी सेवा (वैयावच्च) करता होय; तेमने संसारथी पार उतारवा गुरु धर्म कहे छे. प्रः—केवो धर्म कहे ? उः—शमन [शांति अहिंसा] तेवा जीव दयाना धर्मने कहे; तथा जीव रक्षा करवा विरति समजावे. आ विरतिना सूचनथी जुठ विगेरेनी विरति जाणवी. एटले, पांचे महाव्रत समजावे; तथा उपशम क्रोधना जयनुं स्वरूप बतावे; तेथी उत्तर गुणोनो पण उपदेश करे एम जाणवुं; तथा निर्वृत्ति (निर्वाण) मोक्षनुं स्वरुप बतावे. के, मूळ गुण अने उत्तर गुण बरोबर पाळवाथी आ लोकमां बहु मान, अपूर्व शांति, अने पर भवमां स्वर्गनुं सुख, अने छेवटे मोक्ष मळे छे.

तथा शोच एटले बधी उपाधीथी रहित पवित्र व्रतनुं धारवुं, तथा मायानी वक्रता त्यागवाथी आर्जव छे, तथा मान स्तब्धपणुं त्यागवाथी कोमळता छे, तथा बाह्य अभ्यंतर ग्रन्थ त्यागवाथी लाघव छे, ते केवी रीते कहे छे. ते बतावे छे यथावस्थित वस्तु जेवी रीते आगममां कही होय तेवी रीते ओलंघ्या विना कहे छे. प्रः—कोने कहे छे ? उः—दश प्रकारना प्राणने धारनारा प्राणीओ ते सामान्यथी संज्ञी पंचेन्द्रियोने कहे छे. तथा मुक्ति गमन योग्य जे भव्यपणे भूत [रहेला] छे, तेमने कहे छे. तथा संयम जीवितवडे जीवे छे. अने जीववानी इच्छावाळा जीवो छे. तथा तिर्यंच नर, अमर, जेओ संसारमां दुःख पामता रहेला छे. अने दयाने पात्र छे, तेवा बधा सत्वोने धर्म कहे छे, अथवा प्राणी भूत जीव सत्व ए चारे एक अर्थवाळा छे. तेवा जीवोने तेमनी योग्यता प्रमाणे

क्षांति विगेरे दश प्रकारनो धर्म पूर्वे बतावेलो छे, ते कहे छे. अने शांति विगेरे पदोमां बतावेल तत्वने विचारीने स्व अने परना उपकार माटे भिक्षु जे धर्म कथानी लब्धिवाळो होय ते कहे छे. अने ते धर्म जेवी रीते कहे छे, ते बतावे छे.

अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खमाणे नो अत्ताणं आसाइज्जा नो परं आसाइज्जा नो अन्नाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसाइज्जा, से अणासायए अणासायमाणे वज्झमाणाणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं जहा से दीवे असंदीणं एवं से भवइ सरणं महामुणी एवं से उट्ठिए ठियप्पा अणिहे अचले चले अबहिल्लेसे परिव्वए संखाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिनिव्वुडे, तम्हा संगंति पासह गंथेहि गढिया नरा विसन्ना कामक्कंता तम्हा लूहाओ नो परिवित्तसिज्जा, जस्सिमे आरंभा सव्वओ सव्वप्पयाए सुपरिन्नाया भवंति जेसिमे लूसिणो नो परिवित्तसंति, सेवंता कोहंच माणंच मायं च लोभं च एस तुट्टे वियाहिए त्तिबेमि (सू० १९५)

ते मुमुक्षु भिक्षु–धर्मने पूर्वापर विचार करीने, अथवा सांभळनार पुरुषनी पूर्वा पर स्थिति विचारी जेने जेवुं कथन योग्य होय, तेवो धर्म तेने कहे छे. (आ उपसर्ग मर्यादाना अर्थमां छे तेथी,) मर्यादावडे सम्यग् दर्शन विगेरेनुं जेवुं अनुष्ठान होय, तेथी शातना (विरुद्ध) करतां अशातना थाय छे माटे, तेवी अशातनाथी आत्माने दोषित न करे. अर्थात् जेम आशातना न थाय; तेम

धर्म कहे; अथवा आत्मानी अशातना बे प्रकारे छे. द्रव्यथी तथा भावथी, द्रव्यथी जेम; आहार उपकरण विगेरे द्रव्यनी काल अतिपातादि संबंधी आशातना (बाधा) न थाय; तेम कहे. (लोकोने जमवानो वखत होय; तेटली मोडी वार सुधी कथा कहे; तो, लोकोने शरमथी न उठतां जमतां अंतराय थाय; अथवा शिष्योने गोचरी लावतां वहेंवतां मोडुं थतां, पोताने तथा बाळवृद्ध तपस्वी मांदाने काळ उल्लंघतां बाधा थाय) ते आहार विगेरे द्रव्यनी बाधाथी पोताना शरीरने पण पीडा थाय; तेथी भाव मलिन थतां भावाशातना पण थाय, अथवा कहेतां गात्र भंग रुप भाव आशातना न थाय तेम कहे; तथा सांभळनारनी हीलना (निंदा) न करे; के, सांभळनारने क्रोध चडतां आहार उपकरण अथवा साधुना शरीरनी कोइ पण रीते पीडा करवामां तत्पर थाय तेम कथा न करे, एथीज सांभळनारनी आशातना वर्जीने धर्म कहे, अथवा अन्य प्राणी भूत जीव सत्वोने बाधा न करे, ते मुनि पोतानी मेळे पोतानो रक्षक होवाथी अनाशातक छे. तेम बीजा क्रोधी न बनाववाथी पोते बीजानी आशातना करतो नथी. तेम कोइ आशातना करे तो तेनी अनुमोदना न करतो (बीजा) मराता प्राणीओ भूतो जीवो सत्वोने पोताना तरफथी के पारका तरफथी पीडा न थाय तेवो धर्म कहे. जेमके कोइ लौकिक कुप्रावचनीक पासत्था विगेरेने दान आपवानी प्रशंसा करे, अथवा कुवा तळाव बनाववानी प्रशंसा करे तो पृथ्वीकाय विगेरेने दुःख थाय, तेनो दोष साधुने लागे, तथा ते दाननी निंदा करे तो ते बीजा जीवोने दान न मलवाथी साधुने अंतराय कर्म बन्धावानो विपाक भोगववो पडे. कह्युं छे केः—

जे उ दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं । जे उ णं पडिसेहिंति, वित्तिच्छेअं करिंति ते ॥१॥

जेओ साधु थइने असाधुना दाननी प्रशंसा करे छे. ते सावद्य होवाथी साधुओने प्राणीओना वधनो दोष लागे छे. अने ते

दाननी निंदा करे तो दान लेनारनी वृत्तिनो छेद करे छे.

तेथी ते दान तथा कुवा तळाव संबंधी विधि निषेधमां मध्यस्थ भाव राखीने यथावस्थित शुद्ध दाननी प्ररुपणा करे, तथा सावद्य अनुष्ठाननुं स्वरुप बतावे, (के आ पाप न करवां जोइए.) आ प्रमाणे उपयोग राखी बोलनारो साधु बन्ने दोषने त्यागनारो जीवोने आश्वास भूमि आपनारो थाय छे. आ बाबतने दृष्टांतथी समजावे छे. के पूर्वे बतावेल असंदीन द्वीप (भरतीना पाणीथी न डुबतो) शरण रुप थाय छे. तेम आ महामुनी जीवोना रक्षणनो उपाय बताववाथी मारनारा जीवोनो रक्षा करनार तथा मरनार हिंसकने तेना पापी विचारथी बचाववाथी विशिष्ट गुण स्थान मेळववाथी शरण लेवा योग्य थाय छे. ते कहे छे.(पूर्वे कह्या प्रमाणे विधिए जे धर्म कथाने कहे, ते केटलाक जीवोने दीक्षा अपावे छे. केटलाकने श्रावको बनावे छे. केटलाकने सम्यग्दर्शनवाळा करे छे, अने केटलाकने मिथ्यात्वथी हठावी भद्र परिणामवाळा बनावे छे.

प्र०—केवा गुणवाळो आ साधु द्विप माफक शरण योग्य थाय छे ?

उ०—हवे पछी कहेवाता भाव उत्थानवडे संयम अनुष्ठान करतो उत्कृष्टथी तैयार होय; तथा ज्ञानादिकरुप मोक्षना मार्गमां स्थित होय तथा स्नेह रहित होय तथा रागद्वेष छोडवाथी अप्रतिबद्ध होय, तथा परिसह उपसर्गमां चलायमान न थाय, माटे अचळ छे. अने एक जग्याए पडी न रहेतां योग्य विहार करवाथी चल पण छे तथा संयमथी जेनी लेश्या [अध्यवसाय] बहार न होय, ते अबहिर्लेश्यावाळो कहेवाय. एवो मुनी वधी रीते संयम अनुष्ठानमां वर्ते. पण कोइ जग्याए फसाय नहि, प्र. ते शा माटे संयम अनुष्ठानमां वर्ते 'संख्याय' एटले शोभन धर्मने विचारी अविपरीत दर्शन [दृष्टि]वाळो थाय अथवा सदनुष्ठानरुप दृष्टिवाळो [दृष्टिमान]

बने, अने तेनुं कारण तेना कषायो कांतो शांत होय छे, क्यांतो क्षय होय छे, तेथी पोते परिनिवृत शीतीभूत (ठंडा स्वभावनो) छे, पण तेवा गुणवाळो न होय, ते मिथ्यादृष्टि जीव पेशल धर्मने पामतो नथी, ते बतावे छे, (इति अव्यय हेतुना अर्थमां छे) जेथी मिथ्या दृष्टिनुं विपरीत दर्शन होवाथी संग (प्रेम) वाळो मोक्षमां न जाय, तेथी तेना माता पिता पुत्र स्त्री संबंधी अथवा धन धान्य विगेरेथी थता संग विपाक ने तमे जुओ! विवेकथी हृदयमां विचारो! सूत्रथीज संग कहे छे, ते संगवाळा नरो बाह्य अभ्यंतर ग्रन्थथी गुंथायेला गृद्ध थयेला ग्रन्थना संगमां इच्छित न थतां खेद पामता छता संग्रह निमग्न इच्छा मदन कामथी आक्रांत (अवष्टब्ध, खुंचेला) बनेला मोक्षमां जता नथी.

प्र०—जो एम छे तो शुं करवुं ? उ०—जे कामथी आसक्त (प्रेमी) चित्त थइने सगां तथ धन धान्य विगेरेमां मूर्छा पामेला काम संबधी शरीर मन विगेरेनां दुःखोथी पीडायेला छे, तेनाथी हे शिष्य! तुं लुखा देखाता संग दूर करवा रुप संयमथी त्रास न पामीश, संयम अनुष्ठानथी कंटाळतो नहि, कारणके संयमना दुःख करतां प्रभूत (अतिशे) दुःख भोगवनारा संसार संगी जीवो छे.

प्र०—क्या साधुने संयमथी न डरवानो संभव छे ? उ०—जे महामुनिए सारी रीते संसार मोक्षनां पूर्वे कहेलां कारणो जाण्यां छे, तेने आ संग रुप आरंभो अविगान (एक सरखा) पणे बधा माणसे आचरेल छे, अने ते प्रत्यक्ष होवाथी इदम् [आ) शब्दवडे बताव्या छे, ते आरंभो सर्वे प्रकारे जाणीता छे.

प्र०—ते आरंभो केवा छे ? उ०—जेमां ग्रन्थना गुंथायेला विषण्ण चित्तवाळा काम [इच्छा] ओना भारथी फसायेला माणसो हिंसक बनेला अज्ञान मोहना उदयथी पाप करतां त्रास पामता नथी, पण जे उपर बतावेला आरंभोने ज्ञ परिज्ञावडे जाणीने

भत्याक्यानपरिज्ञावडे त्यागे छे, तेणेज आरंभो सारीरीते जाणेला समजवा.

प्र०—जे आरंभोनो परिज्ञाता छे, ते बीजुं शुं करे ? ते कहे छे.

ते महा मुनी पूर्वे बतावेला उत्तम गुणवाळो छे, ते क्रोध मान माया लोभने त्यागीने मोहनीय कर्म तोडे; ('त्यागीने' ए अव्यय प्रथम लेवानुं कारण ए छे के ते क्रोध विगेरे चारे कषायो बधा भेद सहित त्यागवाना छे. अने क्रोधने प्रथम लेवानुं कारण तेनो संबन्ध मान साथे छे. एटले मानीने क्रोध थाय छे. तथा लोभने माटे माया थाय, माटे प्रथम माया लीधी छे. अने बधा दोषोना आश्रय तथा सौथी मोटो अने छेवट सुधी रहेतो होवाथी लोभने छेल्लो लीधो छे.

अथवा क्षपणा ते कर्मनी निर्जरामां ते प्रमाणे क्रम छे. 'चकार' निश्चयथी जुदी जुदी अपेक्षा माटे समुच्य अर्थमां छे) तेथी ए प्रमाणे क्रोध विगेरे मोहने त्यागनारो संसार संतति (भवभ्रमण) थी तुट्ट (छुटेलो) तीर्थंकर विगेरेए वर्णव्यो छे. एवुं सुधर्मास्वामि कहे छे. अथवा हवे पछीनुं पण तेओ कहे छे, ते बतावे छे.

कायस्स वियाघाए एस संगामसीसे वियाहिए सेहु पारंगमे मुणी, अविहम्माणे फलगावयट्ठी कालोवणीए कंखिज्ज कालं जाव सरीरभेउत्तिबेमि धूताध्ययनम् (सू० १९६) ६–५ ॥

औदारिक विगेरे त्रण शरीर अथवा चार घाति कर्मनो नाश करवा माटे ते मुनी संग्रामना मथाळे उभेलो वर्णव्यो छे. अथवा [चि धातुनो अर्थ एकठुं करवानो छे ते एकठु थाय छे.] ते कायने आयुष्यना क्षय सुधी घात करनारो बने, [कायानो ममत्व मूकी

कर्म तोडवा जींदगी सुधी प्रयास करे. तेज मुनि पारंगामी जाणवो.]

जेम संग्रामने मोखरे शत्रुना सैन्य सामे तिक्षण तलवारनी प्रभाथी उगता सुरजनी माफक विजळीना चमकारा माफक देखाव करी जोनारनी आंखोमां चमत्कार करावनार अने पोतानुं कार्य करवा छतां पण,ते सुभट चित्तनो विकार (कोइ वखत) करे छे.तेज प्रमाणे मरण समय आवे छते, स्थिर मनवाळो होय; तो पण, कोइ वखत संजोगोने आधारे तेनो भाव वगडी पण जाय; तेथी कहे छे केः—जे मरण काळे अनेक दुःख आवे छते पण मोह पामतो नथी. तेज मुनि संसारनो पारंगामी अथवा कर्मनो, अथवा पोते लीधेला महाव्रतना भारनो पर्यंत पामी (छेवट सुधी पहोंचनारो विजयी) छे.

वळी, जुदा जुदा परिषह उपसर्गो वडे हणयलो छतां, कंटाळो न खातां उंचेथी पडीने अथवा गार्द्धपृष्ठ (आपघात) अथवा बीजी कोइ पण रीते आपघात न करे.

अथवा हणातां पण बाह्य अभ्यंतर तप तथा परिषह उपसर्गो वडे धैर्य राखी पाटीया माफक स्थिर रहे; पण, मरवाना भयथी दीनता न लावे. तेज प्रमाणे काळे परवशता पमाडेलो (जीर्ण शरीर थतां) बार वरसनी संलेखना वडे आत्माने दुर्बळ करी पहाडनी गुफा विगेरेमां जग्या निरवद्य जोइने पादपोपगमन इंगित मरण अथवा भक्त परिज्ञा ए त्रणमांथी कोइ पण अवस्थावाळुं अणसण करीने मरणनी अवस्था सुधी आयुनो क्षय थाय; अने शरीरथी जीव जुदो पडे; त्यां सुधी स्थिरता राखे आज खरी रीते मृत्युनो समय छे. अथवा शरीरनो भेद छे. आज जीवनो विनाश छे. पण, सर्वथा जीवनो विनाश नथी; एवुं सुधर्मास्वामी कहे छे.

आ प्रमाणे—पांचमो उद्देशो समाप्त थतां, धूताख्य नामनुं छठुं अध्ययन पण समाप्त थयुं. (टीकाना श्लोक ८३५ छे.)

छठुं अध्ययन समाप्त

छट्ठा पछी सातमुं अध्ययन कहेवुं जोइए, पण ते विच्छेद जवाथी आठमुं विमोक्ष नामनुं अध्ययन कहे छे.

अथाष्टमं विमोक्षाध्ययनम्

सातमुं अध्ययन महापरिज्ञा नामनुं हतुं, ते विच्छेद जवाथी तेने मुकी छट्ठा साथे आठमानो संबंध कहेवो जोइए, ते आ प्रमाणे छे. छट्ठा अध्ययनमां पोतानां कर्म शरीर, उपकरण तथा गौरवत्रिक तथा उपसर्ग सन्मानना विधूनन वडे निःसंगता बतावी, पण जो अंतकाळे सम्यग् निर्वाण थाय तोज ते सफळता पामे तेथी सम्यग् निर्याण (समाधि मरण) बताववा माटे आ आरंभ करे छे.

अथवा निःसंग विहारी साधुए अनेक प्रकारना परिसह उपसर्गो सहन करवा, एवुं छट्ठामां बताव्युं, तेमां मारणांतिक उपसर्ग आवे छते अदीन मनवाळा बनीने सम्यग् निर्याणज करवुं, ए विषय बताववा आ आठमुं अध्ययन छे; आ संबंधे आवेला आ अध्ययनना उपक्रम विगेरे चार अनुयोग द्वार थाय छे, तेमां उपक्रम द्वारमां आवेलो अर्थ अधिकार बे प्रकारनो छे, तेमां अध्ययननो पूर्वे कह्यो छे, अने उद्देशानो अर्थाधिकार निर्युक्तिकार कहे छे.

असमणुन्नस्स विमुक्खो, पढमे बिइए अकप्पियविमुक्खो; पडिसेहणा य रुट्ठस्स, चेव सब्भावकहणा य; ॥२५३॥
तइयंमि अंगचिट्ठाभासिय आसंकिए य कहणा य; सेसेसु अहीगारो उवगरणसरीरमुक्खेसु ॥२५४॥

उद्देसंमि चउत्थे, वेहाणसगिद्धपिट्ठमरणं च । पंचमए गेलन्नं, भत्तपरिन्ना य बोधव्वा ॥२५५॥
छट्ठंमि उ एगत्तं, इंगिणिमरणं च होइ बोधव्वं । सत्तमए पडिमाओ, पायवगमणं च नायव्वं ॥२५६॥
अणुपुव्विविहारीणं, भत्तपरिन्ना य इंगिणिमरणं । पायव गमणं च तहा अहिगारो होइ अट्ठमए ॥२५७॥

पहेला उद्देशामां आ प्रमाणे अर्थाधिकार छेः—

अ समनुज्ञ (पासत्था) वाळा असमनोज्ञ [स्वछंदाचारी] अथवा त्रणसो त्रेसठ अन्यवादीओनो विमोक्ष [परित्याग] करवो, तेज प्रमाणे तेमनो आहार उपधि शय्या तथा तेमनुं मंतव्य त्यागवुं, तेमां प्रथम भगवाननी आज्ञा बहार वर्ते ते पासत्था विगेरे छे, अने असंमनोज्ञ ते चारित्र तप अने विनयमां हीन तथा यथाच्छंद साधु ते ज्ञानविगेरे पांचे आचारमां हीन होय, तेवानी संगति न करवी [त्रणसेंत्रेसठ एकांत वादीनो पण त्याग करवो]

बीजा उद्देशामां अकल्पनीय ते आधाकर्मी विगेरे दोषित वस्तुनो त्याग करवो, अथवा आधाकर्मी आहारवडे कोइ निमंत्रणा करे, तो तेनो निषेध करवो अने तेनो निषेध करतां दान देनारने क्रोध चडे, तो तेने सिद्धांतनुं तत्व समजाववुं के आवा निर्दोष आहारनुं अमने दान आपे तो तने तथा अमने गुणकारी छे.

त्रीजा उद्देशानो अधिकार

गोचरी गयेला साधुने ठंड विगेरेथी अंग धूजतां गृहस्थने आवी शंका थाय के, इन्द्रियोनी उन्मत्तताथी पीडायेला अने शृंगार भावमां रमेला चित्तवाळा आ साधुने कंपारो थाय छे, आवुं बोले, अथवा तेने शंका पडे, तो ते शंका दूर करवा खरी वात समजा-

ववी (अने तेने शांत उरवो)

बीजा पांचमा उद्देशानो अधिकार—उपकरण तथा शरीरनो मोक्ष (त्याग) करवो, ते संक्षेपथी तथा खुलासाथी कहे छे, एटले चोथा उद्देशामां आ अधिकार छे, के वैहानस ते उद्बन्धन (फांसो खावो) गार्द्ध पृष्ठ ते बीजाने मांस विगेरेना हृदयना न्यासथी (बीजाने पोतानुं मांस अर्पण करवु ते) गृद्ध (गीध) विगेरेथी पोतानो नाश करावदो.

ए बे प्रकारना मरण [आपघात] नुं वर्णन—पाचमा उद्देशामां–ग्लानता अने भक्त परिज्ञा समजवी, छट्ठामां एकत्व भावना तथा इंगित मरण जाणवुं. सातमामां मास विगेरेनी भिक्षुकनी प्रतिमाओ बतावी छे तथा पादपोपगमननुं वर्णन छे, आठमामां अनुपूर्वे विहार करनारा दीर्घ संयम पाळनारा शास्त्रार्थ ग्रहणना स्वीकार पछी तेनाथी निवृत्ति लेवा संयम अध्ययन तथा अध्यापन (शीखववुं) तथा निर्मळ क्रिया करनारा साधुओ तैयार थया पछी (उत्कृष्ट तप वडे) कायाने दुर्बळ बनावीनी (आचार्य के गच्छनायक) भक्त परिज्ञा, इंगित मरण अथवा पादपउगमन ए त्रणमांथी कोइ पण स्वीकारे तेनुं वर्णन छे.

आ प्रमाणे पांच गाथामो संक्षेपथी अर्थ कह्यो, अने विस्तारथी तो दरेक उद्देशामां कहेवाशे, निक्षेप त्रण प्रकारे छे, ओघ निष्पन्न नाम निष्पन्न अने सूत्रालापक निष्पन्न छे, ओघमां अध्ययन छे; नाममां विमोक्ष छे, ते विमोक्षना निक्षेपा निर्युक्तिकार कहे छे.

नामठवणविमुक्खो, दव्वे खित्ते य काल भावे य; एसो उ विमुक्खस्सा निक्खेवो छव्विहो होइ ॥२५८।

नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्र काळ अने भाव विमोक्ष एम छ प्रकारे छे, संक्षेपथी कह्या, अने विशेषथी कहेवा नाम स्थापना सुगमने छोडी द्रव्यादि विमोक्ष बताववा कहे छे.

दव्वविमुक्खो नियलाइएसु खित्तंमि चारयाईसुं; काले चेइयमहिमाइएसु अणघायमाईओ । २५९॥

द्रव्य विमोक्ष आगम अने नो आगम एम बे भेदे छे, आगमथी ज्ञाता पण तेमां तेनो उपयोग न होय.

नो आगमथी ज्ञ शरीर भव्य शरीरथी व्यतिरिक्त (जुदो) निगडादिक विषयभूत (बेडीमांथी) जे छुटकारो थाय ते द्रव्य विमोक्ष छे, (अथवा मागधीमां सातमी विभक्ति छे तेनो अर्थ पांचमी विभक्तिमां लइए तो) बेडी विगेरे द्रव्यथी छुटवु, ते द्रव्य विमोक्ष छे, (अपर कारक वचननो संभवतो अर्थ भणेलाए पोतानी मेळे विचारीने योजवो ते बतावे छे जेमके) द्रव्य वडे, के द्रव्यथी, एटले सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्यथी मोक्ष ते द्रव्य विमोक्ष विगेरे समजवो.

क्षेत्र विमोक्ष ते जे क्षेत्रमां पोते चारक विगेरेथी पकडाएलो होय, तेमांथी छुटकारो थाय, ते क्षेत्र विमोक्ष छे.

अथवा क्षेत्रना दानथी अथवा जे क्षेलमां मोक्षनुं वर्णन चाले ते क्षेत्र विमोक्ष छे. अने काळ विमोक्ष चैत्य महिमा विगेरेमां जे-टलो काळ अमारी पटह वगडावे. अने आरंभ जीवहिंसा विगेरे वन्ध थाय ते अथवा जे काळे मोक्षनुं वर्णन चाले, तेने आश्रयी काळ मोक्ष छे. आ गाथानो अर्थ छे. हवे भाव विमोक्ष बतवे छे.

दुविहो भावविमुक्खो देसविमुक्खो य सव्वमुक्खो य । देसविमुक्खा साहू सव्वविमुक्खा भवे सिद्धा ॥२६०॥

भाव विमोक्ष बे प्रकारे छे. आगमथी ज्ञाता अने उपयाग राखनार छे. अने नोआगमथी बे प्रकारे छे. देशथी तथा सर्वथी छे. देशथी अविरत सम्यग् दृष्टि जीवोने अनंतानुबधीनी चोकडी क्षय उपशम थवाथी तथा देश विरतीने अनंतानुबंधी तथा अप्रत्याख्यानी चोकडीओ क्षय उपशम थवाथी छे. अने साधुओने प्रथमना बार कषायो (संज्वलननी चोकडी सिवाय) क्षय उपशम थवाथी अने

क्षपक श्रेणीमां जेने जेटलो काळ कषायो क्षीण थाय, तेने तेटलानो क्षय थवाथी देश विमुक्ति छे, तेथी साधुओ देश विमुक्त छे. भवस्थ केवली साधुओ पण भव उपग्राहिक कर्मना सद्भावथी देश विमुक्तज छे, अने सर्वथा विमुक्त तो सिद्ध भगवंतज थाय छे. (गाथार्थ)

शंका—मोक्षनी पूर्वे बंधपणुं होय छे, जेमके निगड (हेड) विगेरे बन्ध होय तो तेना मोक्षना संभव थाय, ते शंका दूर करवा माटे बन्ध अभिधान पूर्वक मोक्ष बतावे छे.

कम्मयदव्वेहिसमं, संजोगो होइ जो उ जीवस्स । सो बन्धो नायव्वो, तस्स विओगो भवे मुक्खो ॥२६१॥

कर्म वर्गणाना द्रव्य (पुद्गलो) साथे जे जीवनो संयोग छे, ते प्रकृति स्थिति अनुभाव अने प्रदेश रुप बद्ध स्पृष्ट निधत्त निकाचन अवस्थावाळो बन्ध जाणवो. कारण के आत्मानो एकेक प्रदेश अनंत=अनंत कर्म पुद्गलो वडे बन्धायलो छे, अने अनंत अनंत नवा बन्धाइज रह्या छे, कारणके बाकीना अग्रहण योग्य छे.

प्र०—आठ प्रकारनां कर्म केवी रीते बन्धाय छे ? उ०—मिथ्यात्वना उदयथी–कह्युं छे, के.

" कहं णं भंते ! जीवा अट्ठ कम्मपगडीओ बंधंति ?, गोअमा ? णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दरिसणावरणिज्जं कम्मं निअच्छन्ति, दंसणमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मिच्छत्तं णियच्छन्ति, मिच्छत्तेणं उइन्नेणं एवं खलु जीवे अट्ठ कम्मपगडीओ बन्धइ " यदि, वा–" णेहतुप्पिअगत्तस्स; रेणुओ लग्गई जहा अंगे । तह रागदोसणेहालियस्स कम्मंपि जीवस्स ॥१॥ "

प्र०—हे भगवन् जीवो आठ प्रकारनं कर्मो केवी रीते बांधे छे ?

उ०—हे गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी दर्शनावरणीय कर्म बन्धाय छे, तेथी मिथ्यात्वनो उदय थाय छे' अने तेथी आठे कर्म प्रकृति बन्धाय छे. अथवा स्नेह (घी तेल)थी चीकणा बनेला शरीरवाळाने जेम शरीरमां झीणी रेती चोंटे छे. तेवी रीते रागद्वेषनी चीकणासथी जीवोने कर्म चोंटे छे, ए आठे प्रकारना कर्मना आस्रवना निरोधथी अथवा तप वडे अपूर्वकरण क्षपकश्रेणीना अनुक्रमथी अथवा शैलेशी अवस्थामां जे कर्मनो वियोग थाय छे, तेज कर्मक्षय रुप मोक्ष छे. एनुं पुरुषना बधा अर्थोमां प्रधानपणुं होवाथी प्रारंभेल तलवारनी धारा माफक महाव्रतोना अनुष्ठाननुं मुख्य फळ होवाथी तथा बीजा मतवाळानी साथे तेनो भेद होवाथी जेवुं मोक्षनुं स्वरुप जिनेश्वरे साचुं बताव्युं छे. ते कहे छे. अथवा प्रथम कर्मना वियोगना उद्देश वडे मोक्षनुं स्वरुप बताव्युं. हवे जीव वियोगना उद्देश वडे मोक्षनुं स्वरुप बतावे छे.

जीवस्स अत्तजणिएहिं चेव कम्मेहिं पुव्वबद्धस्स । सव्वविवेगो जो तेण तस्स अह इत्तिओ मुक्खो ॥२६२॥

जीव असंख्यात प्रदेशवाळो छे. तेने पोतानी मेळे (पोतानुंज) अनंतुंज्ञान स्वभावथीज छे, तेने पोतानो आत्मा जे मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योगमां परिणत थवाथी जे कर्मो पोतानाथी बन्धाय छे, ते कर्मने पूर्वे बांधेल होवाथी तेनो प्रवाह अनादि काळनी अपेक्षाथी चालु छे. ते कर्मनो सर्वथा अभाव रुप विवेक करवो, अर्थात् आत्माने तेनाथी निर्लेप करवो, तेज जीवने तेट-लोज मोक्ष छे. पण बीजा निर्वाण प्रदीप (बुझाएला दीवा) माफक कल्पेलो मोक्ष नथी, भाव विमोक्ष कह्यो, अने जेने ते मोक्ष थाय छे, तेणे सर्वथा मोक्ष प्राप्त करवा अवश्ये भक्त परिज्ञा विगेरे त्रण मरण (अणसण)मांथी काइपण स्वीकारवुं जोइए. अने कार्यमां कारणनो उपचार करवाथी ते मरणज भावविमोक्ष छे. ते बतावे छे.

भत्त परिन्ना इंगिणि पायवगमणं च होइ नायव्वं । जो मरइ चरिममरणं भावविमुक्खं वियाणाहि ॥२६६॥

भक्त (भोजन)नी परिज्ञा [पच्चख्खाण) अणसण ते भक्त परिज्ञा छे, तेमां त्रण प्रकारनो आहार त्यागीने फक्त अचित्त पाणीनी छुट राखीने अणसण करे, पण ते शरीरनी वैयावच्च करवा दे, अने ते धैर्यता तथा मजबूत संघयणवाळो होय, ते जेम पोताने समाधि रहे तेम अणसण करे.

तथा इंगित प्रदेशमां मरण पामवुं ते इंगित मरण छे. ते चार प्रकारना आहारनी निवृत्ति रुप छे. अने ते जेनुं संघयण मजबुत होय, ते पोतानी मेळेज पासुं फेरववुं विगेरे क्रिया करे, एम जाणवुं. ते प्रमाणे चारे प्रकारनो आहार छोडीने तथा बधी क्रियाओ तथा चेष्टाओ छोडीने एकांतमां शरीरनी वैयावच्च कराव्या विना झाडनी माफक स्थिर शरीर करवुं. ते पादप उपगमन जाणवुं.

पण जे भव सिद्धिक जीव छे. ते छेल्ला अणसणने आश्रयीने मरे छे. अने तेथी उत्तम साधु जे मोक्षनी इच्छावाळो छे ते उपर बतावेला त्रण अणसणमांथी कोइ पण एक स्वीकारे छे; पण ते वैहानस विगेरे बाळ मरण (आपघात)थी मरतो नथी अने त्रण अणसणमां थोडो भेद होवाथी त्रण प्रकारनुं भावमोक्ष एवुं तुं जाण, हवे तेज मरणने सपराक्रम अने अपराक्रम एवा बे भेदे बतावे छे.

सपरिक्कमे य अपरिक्कमए य वाघाय आणुपुव्वीए । सुत्तत्थजाणएणं समाहिमरणं तु कायव्वं ॥२६४॥

पराक्रम [सामर्थ्य बळ] जेने होय ते सपराक्रमी कहेवाय, अने तेवी रीते मरे तो सपराक्रम मरण छे, तेना उलटापणामां अपराक्रम छे. एटले जंघा बळ क्षीण थतां भक्तपरिज्ञा इंगित मरण अने पादप उपगमन एम त्रण भेदवाळुं अणसण छे. छतां पण ते पराक्रम सहित अने पराक्रम रहित एम दरेक बे प्रकारनुं छे. अने ते दरेक भेद पण व्याघात अने ते रहित छे. तेमां सिंह अने

वाघ विगेरेथी जे नाश थाय ते व्याघात छे. अने ते सिवायनो अव्याघात छे. एटले दीक्षा लीधा पछा सूत्र अर्थ ग्रहण करीने अनुक्रमे विपकित्रम [मरण न आवेलुं] एवी अवस्थाने भोगवतो जे छे. ते अव्याघात छे.

अहींया अनुपूर्वी शब्द छे तेनो परमार्थ वतावतां समाप्त करे छे. व्याघात वडे अनुक्रमे अथवा सपराक्रम अथवा अपराक्रमवाळा साधुने मरण आवे छते सूत्र अर्थना जाणनारे काळ आवेलो जाणीने समाधि मरणे मरवुं. भक्त परिज्ञा इङ्गित मरण पादप उपगमन ए त्रणमांथी कोइ पण एक मरण पोताने जेम समाधि रहे तेम करवुं. पण बाळ मरण न करवुं. (गाथा अर्थ)

तेमां सपराक्रम मरण दृष्टांत वडे बतावे छे.

सपरक्कममाएसो जह मरणं होइ अज्जवइराणं पायवगमणं च तहा एयं सपरक्कमं मरणं ॥२६५॥

पराक्रम सहित ते सपराक्रम मरणनो आदेश आचार्यनी परंपरामां संभळातो आवेलो वृद्ध वाद आ प्रमाणे छे. ते कहे छे, (यथा शब्द उदाहरणना उपन्यास माटे छे) एटले आ प्रमाणे ते आदेश जाणवो. आर्य वज्रस्वामिनुं मरण पादप उपगमन छे अने ते सपराक्रम मरण छे. ते प्रमाणे बीजे पण समजवुं [गाथा अर्थ] तेनो भावार्थ कथाथी जाणवो, अने ते कथा प्रसिद्धज छे. जेम आर्य वज्रस्वामिए पोते दवा माटे सुंठनो गांगडो कानमां राखेलो, ते वापरवो भूली जवाथी पोते जाण्युं के आवो प्रमाद मने थयो छे. तेथी तेमणे मरण नजीक आवेलुं जाणीने सपराक्रमी बनीने रथावर्त्त पर्वत उपर पादप उपगमन अणसण कर्युं. हवे अपराक्रम मरण बतावे छे.

अपरक्कममाएसो जह मरणं होइ उदहिनामाणं । पाओवगसेऽवि तहा एयं अपरक्कमं मरणं ॥२६६॥

पराक्रम न होय तो अपराक्रम कहेवाय तेवुं मरण जेने जंघाबळ सर्वथा क्षीण थयेलुं होय तेवा उदधि [सागर] नामना ते आर्य समुद्र मुनिनुं मरण थयेलुं छे. तेनो वृद्धवाद आ प्रमाणे छे. ते प्रमाणे पादप उपगमन अणसण वडे तेमनुं मरण थयेल छे. जेवी रीते आर्य समुद्रनुं अपराक्रम मरण छे. तेवुं बीजी जग्याए पण जाणवुं. (गाथा अर्थ)

तेनो भावार्थ कथाथी जाणवो. आर्य समुद्र नामना आचार्य स्वभावथीज दुर्बळ हता, पछीथी जंघा बळे सर्वथा क्षीण थतां शरीरथी बीजो लाभ न जाणीने तेने तजवानी इच्छाथी पोताना गच्छमां रहीने उपाश्रयना एक भागमां आहार रहीत पादप उपगमन अणसण कर्युं, हवे व्याघातवाळुं अणसण कहे छे.

वाघाइयमाएसो अवरद्धो हुज्ज अन्नतरएणं । तोसलि महिसीइ हओ, एयं वाघाइयं मरणं ॥२६७॥

विशेषथी आघात ते सिंह विगेरेए करेलो व्याघात छे एटले शरीरनो नाश थाय छे. तेना वडे जे अणसण समाप्त थाय अथवा तेवुं मरण थाय तो ते व्याघातिम अणसण छे. एटले कोइ साधुने सिंह विगेरेए घेर्यो होय, अने तेनाथी मरण थाय, ते व्याघातिम छे तेना माटे वृद्धवाद आ प्रमाणे छे. के तोसली नामना आचार्यने भेंसोए घेर्यो, अने मरण वखते तेमणे चार प्रकारनो आहार त्यागीने अणसण कर्युं ते व्याघातिम मरण छे. तेनो भावार्थ कथाथी जाणवो ते कहे छे.

ते देशमां भेंसो घणी थाय छे. तोसली नामना आचार्यने जंगली भेंसोए घेर्यो, तेमणे पीडातां बीजो उपाय न जोइने चार प्रकारना आहार त्यागवानुं अणसण कर्युं हवे अव्याघातिम अणसण बताववा कहे छे.

अणुपुव्विगमाएसो पव्वज्जासुत्तअत्थकरणं च । वीसज्जिओ (य) निन्तो, मुक्का तिविहस्स नीयस्स ॥२६८।

अनुपूर्वी (क्रम) ने पामे, ते अनुपूर्वीग छे.

प्र०—ते आ देश क्यो छे ? (आ देशनो अर्थ वृद्धवाद छे.) ते वृद्धवाद आ प्रमाणे छे.

प्रथम आत्मार्थी जीवने दीक्षा आपवी, पछी सूत्र भणाववां छेवटे अर्थ आपवो. ते बन्नेमां प्रविण थयेलो अने गुरुए सुपात्र जोइने सूत्रार्थ भणाव्या पछी तेने आज्ञा आपे तो पोते कोइपण जातनुं अगसण करवा तैयार थइने नीकळे. ते प्रथम आहार उपधि शय्या एम त्रणेनो त्याग करे छे. अने पोते प्रथम रोज भोगवतो तेनाथी पोते मुकाय छे. तेमां जो आचार्य होय तो तेवुं अणसण करवा पहेलां शिष्योने तैयार करीने बीजो आचार्य स्थापीने पोते निवृत थइने बार वरसनी (उत्कृष्ट तपस्या) संलेखना वडे अनुभव करीने पोते गच्छनी अणुज्ञा [संमति] लइने गच्छने छोडीने अथवा पोते नीमेला आचार्यनी समति लइने अणसण करवा बीजा आचार्यनी पासे जाय छे. तेज प्रमाणे उपाध्याय प्रवर्त्तक स्थविर गणावच्छेदक, अथवा सामान्य साधु हाय ते आचार्यनी रजा लइने संलेखना वडे परिकर्म करीने भक्त परिज्ञा विगेरे अणसण न स्वीकारे. तेमां पण, भाव संलेखना करे कारण के द्रव्य संलेखना जो, एकली होय; तो, दोषनो संभव छे. ते कहे छे:—

पडिचोइओ य कुविओ, रण्णो जह तिक्ख सीयला आणा । तंबोले य विवेगो घट्टणया जा पसाओ य ॥२६९॥

आचार्ये प्रेरणा करेलो के तुं फरी संलेखना कर, एवुं कहेवाथी क्रोधायमान थएला शिष्यने जेम राजानी आज्ञा तीक्ष्ण होय छे. पछी शीतळ थाय छे. तेम आचार्ये पण बीजाओना रक्षण माटे प्रथम त्याग करवो जोइए. वळी नागरवेलनुं सडेलुं पान जेम बीजां पान बचाववा माटे दूर करवुं जोइए. तेम कुशिष्यने प्रथम शिक्षा करी पछी ते माफी मागे तो तेना उपर दया लावी राखवो

जोइए. (गाथा अर्थ) भावार्थ कथाथी जाणवो.

एक साधुए बार वरसनी उत्कृष्ट तपस्याथी संलेखना करी, अने आचार्य पासे अणसणनी याचना करी आचार्ये कह्युं, तुं हजु पण संलेखना कर, तेथी आ शिष्ये कोपायमान थइने फक्त चामडी अने हाडकुं रहेल एवी मांस लोही विनानी आंगळी भांगीने देखाडी, के हवे शुं अशुद्ध बाकी रह्युं छे? आचार्ये पोताना हृदयनो अभिप्राय प्रगट कर्यो, के तुं क्रोधने लीधे अशुद्ध छे. के वचननी कडवासथी शीघ्र तारी आंगळी तें भांगीने भावनी अशुद्धता देखाडी छे. तेथी तेने बोध करवाने माटे दृष्टांत कह्युं, के कोइ राजानी बे आंखो रोज पाणीथी झरती हती, राजाना वैद्योए घणी दवा करी पण सारुं न थयुं. एक वखत कोइ परदेशी वैद्य आव्यो तेणे कह्युं, जो तुं एक मुहुर्त्त सुधी वेदना सहन करे, अने मने न मरावे, तो तने सारो करुं राजाए कबुल कर्युं. अंजन (सुरमो) आंखमां नाख्या पछी उत्पन्न थयेली तीव्र वेदनाथी मारी आंखो गइ, एवी वाणी बोलीने राजाए मारवानी आज्ञा करी; तेथी राजानी आज्ञा तीक्ष्ण थइ; अने पूर्वे न मारवानुं वचन आपवाथी शीतळ आज्ञा करवी पडी; पण ज्यारे मुहुर्त्त पछी वेदना दूर थतां सारी आंखोवाळो थतां तेज राजाए खुश थइ वैद्यनी पूजा करी. ए प्रमाणे आचार्यनी आज्ञा पण तीक्ष्ण छे. एटले, शिष्यनी भूल देखतां कडवां वचननी आज्ञा करे; पण शिष्यनुं अंतरंग तपासी तेनां कार्यथी प्रसन्न थाय; एटले, परिणामे शिष्यने हितकर होवाथी ते आज्ञा शीतळ छे. आवुं समजाव्या छतां पण क्रोधथी शिष्य शांत न थाय; तो, बीजाओना रक्षण माटे सडेला पाननी माफक तेने दूर करवो.

जो, गुरुनी आज्ञा शिष्य माने; तो, गच्छमांज रहेवा दइने दुर्वचनथी तेनो तिरस्कार करी परीक्षा करवी. जो, तेम करतां न

कोपे, तो ते शुद्ध छे, एम जाणीने तेने अणसणनी आज्ञा आपे; तथा तेने आर्त्तध्यान विगेरे न थाय; माटे तेनी खबर, राखी गुरु प्रसाद करे. प्र०—आ प्रमाणे केवो, अने केटलो काळ, अने केवी रीते आत्माने संलेखे ? तेथी, हृदयमां विचारने कहे छे:—

निष्फाईया य सीसा सउणी जह अंडगं पयत्तेणं । बारससंवच्छरियं सो संलेहं अह करेइ ॥२७०॥

चत्तारि विचित्ताइं विगई निज्जूहियाइं चत्तारि । संवच्छरे य दुन्नि उ एगं तरियं तु आयामं ॥२७१॥

नाइविगिट्ठो उ तवो, छम्मासे परिमियं तु आयामं । अन्नेऽवि य छम्मसे होइ विगिट्ठं तवो कम्मं ॥२७२॥

वासं कोडीसहियं आयामं काउ आणुपुव्वीए । गिरिकंदरंमि गंतुं, पायवगमणं अह करेइ ॥२७३॥

सूत्र अर्थ तथा बन्ने प्रकारे पोताना शिष्योने तथा भणवा आवेला बीजा साधुने भणावीने जेम शकुनी पक्षी इंडाने सेवीने तैयार करे, तेम प्रयत्नथी तैयार करवा जोइए. त्यारपछी आचार्य बार वरषनी संलेखना करे ते आ प्रमाणे.

चार वरस सुधी जुदा जुदा तपना अनुष्ठान करे छे. एटले एक बे त्रण चार पांच उपवास विगेरे करीने पारणुं करे छे. पारणामां वखते विगय वापरे. अने नपण वापरे, पांचमा वरसथी बीजां चार वरस तेवो तप करीने पारणामां वीगइ न वापरे नवमा दशमा वरसमां उपवासने पारणे आंबेल एम करे अग्यारमां वरसमां पहेला छ महीना सुधी अति विकृष्ट तप न करे अथवा एक बे उपवास करीने परिमित आंबेलथी पारणुं करे (उणोदरी तप करे) बीजा छ मासमां विकृष्ट तप अने पारणामां आंबेलमां उणोदरी तप करे बारमा वरसे कोटी सहित आंबेल करे एटले रोज आंबेलथी खाय. एटले आंबेलनी कोटी कोटी मळे माटे कोटी सहित कह्युं छे चार मास बाकी रहे त्यारे तेलना कोगळा अस्खलित नमस्कार विगेरे शिखवा माटे वायु दूर करीने मुख यंत्रना प्रचार माटे

वारंवार करे. आ प्रमाणे बार वरस सुधी अनुक्रमे वधुं करीने सामर्थ्य होय तो गुरुनी आज्ञा लइने पहाडनी गुफामां जइने निर्दोप जग्या जोइने पादप उपगमन अणसण करे इङ्गित मरण अथवा भक्त प्रत्याख्यान जेम समाधि रहे तेम करे आ प्रमाणे बार वरसनी संलेखना कर्म वडे आहार ओछो करतां आहारनी अभिलाषानो उच्छेद थाय छे ते बे गाथा वडे बतावे छे.

कह नाम सो तवोकम्मपंडिओ जो निच्चुजुत्तप्पा । लहुवित्तीपरिक्खेवं वच्चइ जे मंतओ चेव ? ॥२७४॥
आहारेण विरहिओ, अप्पाहारो य संवरनिमित्तं । हासंतो हासंतो, एवाहारं निरुंभिज्जा ॥२७५॥

केवी रीते ए साधु तप करवामां पंडित थाय ? जे नित्य उद्युक्त आत्मा बनीने बत्रिस कोळियाना परिणामवाळी वृत्ति न राखे? एटले दिवसे दिवसे लघु वृत्तिनो परीक्षेप न करे; तो, तप कर्ममां पंडित केवी रीते थाय (जो, गोचरीमां लोलुपता राखी वधारे वधारे खाय; तो, ते तप करवामां निपुण न थाय;) तथा आहार वडे बे त्रण दिवस सुधी वियोग करे. अर्थात् बे त्रण पांच छ उपवास करी; पछी पारणुं करे तो, शा माटे अल्पाहारी न थाय ? (थायज)

प्र०—शा माटे तप करे ? उ०—अणसण करवा माटे, आ प्रमाणे उपवास करतो तथा दरेक पारणामां अल्पआहारने लीधे ओछो ओछो करतां टेव पडतां उपर बतावेली विधिए भक्त पच्चख्खाणनुं अणसण करे. नाम निक्षेपो कह्यो. हवे सूत्र अनुगममां अस्खलित विगेरे गुणयुक्त सूत्र कहेवुं. ते कहे छेः—

से बेमि समणुन्नस्स वा असमणुन्नस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं

वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंच्छणं वा नो पादेज्जा नों निमंतिज्जा नो कुज्जा वेयावडियं परं आढायमाणे त्तिबेमि (सू० १९७)

सुधर्मास्वामि कहे छे. जे–में भगवान पासे सांभळ्युं; ते कहुं छुं, अने हवे कहेवातुं पण भगवाननुं वचन छे. एटले समनोज्ञ, अथवा अमनोज्ञ होय; एटले, दृष्टि (सम्यग्दर्शन,) तथा लिंगथी समनोज्ञ एटले उत्तम श्रद्धावाळो होय; पण, भोजन विगेरेमां त्यागी न होय, अने अमनोज्ञ ते बौद्ध मत विगेरेना साधुने चार प्रकारना आहार विगेरेनी निमंत्रणा न करे; ते कहे छे. अशन [भोजन] ते, भात विगेरेनुं छे, अने पाणी ते, द्राख विगेरेनुं छे, अने थोडा टेका रुप नाळीयेर (कोपरुं) विगेरे छे, अने स्वाद माटे कपुर, लवंग, विगेरे छे. तेज प्रमाणे वस्त्र, पात्र, कंबल, रजोहरण, आ बधां पोतानां उपकरण कुसाधुने वापरवा न आपे. तेज प्रमाणे तेमनी वैयावच्च न करे; अने घणां आदरवाळो बनीने तेमने तेवी वस्तुनुं आमंत्रण न करे; तेम थोडी घणी वैयावच्च पण न करे. हवे, पछीनुं पण हुं कहुं छुं.

धुवं चेयं जाणिज्जा असणं वा जाव पायपुछणं वा लभिया नो लभिया भुंजिया नो भुंजिया पंथं विउत्ता विउक्कम्म विभत्तं धम्मं जोसेमाणे समेमाणे चलेमाणे पाइज्जा वा निमंतिज्ज वा कुज्जा वेयावडियं परं अणाढायमाणे त्तिबेमि (सू० १९८)

ते बौद्ध विगेरे मतना कुशीळवाळा साधुओ अशन विगेरे बतावीने एवुं बोले के, आ निश्चय जाणो के, अमारा मठमां रोज तमे

भोजन विगेरे मेळवशो एटले बीजी जग्याए मळे न मळे अथवा खाइने अथवा विना खाधे अमारी धीरजने माटे तमारे अवश्य आववुं, जो न मळे तो लेवा माटे अने मळे तो वधारे खावा माटे वारंवार भोजन माटे न खाधुं होय ते वखते सवारनो नास्तो करवा अमारी धीरज माटे कोइ वखत पण आववुं अथवा ज्यारे तमने जे कल्पे तेवुं अमे तमने आपशुं वळी अमारो मठ तमारा रस्तामांज छे कदाच तमे बीजे रस्ते जता हो तो थोडो फेरो खाइने पण आडा मार्गे बीजे घेरे जइने पण अमारे त्यां आववुं आ आगमनमां खेद मानवो नहीं (आ प्रमाणे प्रेम धरावी जैन साधुने बौद्ध विगेरेना साधु आमंत्रण करे.) प्र०—शा माटे आवुं बौद्ध साधु करे छे? उ०—ते कहे छे विभक्त (जुदा) धर्मने पाळता अने कदाच जैन साधुना उपाश्रयमां आवीने अथवा रस्तामां जतां निमंत्रण करे अथवा पोतानी पासेनुं भोजन विगेरे आपे अथवा भोजन आपवानी निमंत्रणा करे अथवा भक्त माफक वैयावच्च करे आ बधुं जैन साधुने कुशील साधुनुं न कल्पे तेम तेनो परिचय पण न करे केवी रीते जैन साधु रहे? उ०—ते कुशील साधु बहु मानथी साधुनो आदर करे तोपण पोते तेमां गृद्ध न थाय तोज दर्शनशुद्धि साधुनी रहे छे, (जो तेवा कुशीलनी सोबत करे तो जैन साधुने पोनाना कठण संयममां अनादर थाय अने पोते पण तेवुं कुशील आचरे.) अथवा हवे पछीनुं पण सुधर्मास्वामी कहे छे.

इहमेगेसिं आयारगोयरे नो सुनिसंते भवति ते इह आरंभट्ठी अणुवयमाणा हण पाणे घायमाणा हणओ यावि समणुजाणमाणा अदुवा अदिन्नमाययंति अदुवा वायाउ विउज्जंति, तंजहा—अत्थि लोए नत्थि लोए धुवे लोए अधुवे लोए साइए लोए अणाइए लोए सप-

ज्जवसिए लोए अपज्जवसिए लोए सुकडेत्ति वा दुक्कडेत्ति वा कल्लाणेति वा पावेत्ति वा साहूत्ति वा असाहुत्ति वा सिद्धित्ति वा असिद्धित्ति वा निरएत्ति वा अनिरएत्ति वा, जमिणं विप्पडिवन्ना मामगं धम्मं पन्नवेमाणा इत्थवि जाणह अकस्मात् एवं तेसिं नों सुयक्खाए धम्मे नो सुपन्नत्ते धम्मे भवइ (सू० १९९)

आ मनुष्य लोकमां केटलाक पूर्वे करेल अशुभ कर्मनो विपाक जेमने छे. तेवा निर्भागी जीवोने मोक्ष माटे जे अनुष्ठान रुप आचार छे, तेसारी रीते हृदयमां ठस्यो नथी, ते अपरिणत आचारवाळा जेवा होय, ते कहे छेः—

ते आचारनुं स्वरुप न जाणनारा गोचरीमां नाह्या विना परसेवाना मेलना परिषहथी कंटाळेला जे साधुओ छे; तेमने सुख विहार करनारा बौद्ध मत विगेरेना साधुओए पोताना जेवा विचारवाळा बनावेला छे. तेथी, जैनसाधुओ पण, तेनी सोबतथी संयममां शिथिळ थइ आरंभना अर्थी बने छे, अथवा ते शक्य विगेरेना साधु, अथवा जे कुशीळ छे, तेओ सावद्य आरंभना अर्थी छे. तेज प्रमाणे मठ, आराम, तळाव. कुवा बनाववा पोताने माटे रांधेलुं खानारा विगेरे साधुओ बोले छे के, प्राणीओने मारो, आ प्रमाणे बीजा पासे मरावता; अने मारनारनी अनुमोदना करता;अथवा बीजानुं द्रव्य लेवाथी कडवुं फळ छे. तेने विसरीने, तथा जेना शुभ अध्यवसायो ढकाइ गया छे. तेओ चोरीनुं द्रव्य ले छे. वळी, पहेला त्रीजा व्रतमां थोडुं कहेवानुं होवाथी तेने प्रथम कहीने बीजा महाव्रतनुं वधारे कहेवानुं होवाथी बीजा व्रतनो उपन्यास हवे करे छे. [अथवा ए अव्यय बीजो पक्ष बतावे छे. ते कहे छे.]

एटले, अदत्त ले छे. अथवा, नाना प्रकारनी युक्तिओ योजे छे. ते बतावे छे के, स्थावर जंगम स्वरूपवाळो लोक छे, तेमां नव खंडवाळी पृथ्वी छे अथवा सात द्वीपवाळी पृथ्वी छे. बीजा मतनां माने छे के, ब्रह्माना अंडामां पृथ्वी अंदर रहेली छे. वळी बीजा मतवाळा कहे छे के ब्रह्माना अंडा जेवी पाणीमां रहेली भींजाती एवी सेंकडो पृथ्वीओ पाणीमां रहे छे तथा जेओ पोताना कर्मना फळने भोगवनारा छे परलोक छे वंध मोक्ष छे पांच महाभूत छे (आवा जुदा जुदा अनेक मत छे.)

नास्तीको कहे छे के आ बधो लोक जे देखाय छे ते बधुं माया [जुठ] नी इन्द्र जळ जेवुं तथा स्वप्नमां देख्या जेवुं छे अने अविचारीत रमणीयपणे भूतनो अभ्युगम [स्वीकार] करवा छतां परलोकनो अनुयायी जीव पण नथी, शुभ अशुभ फळ-नथी पण जेम किणु विगेरेमांथी जेम नसो उत्पन्न थाय छे, तेम भूतोमांथी चैतन्य थाय छे. आ बधुं मायाकार गंधर्व नगरना जेवुं छे. कारण के पून्य पाप विगेरे युक्तिथी सिद्ध थतां नथी. वळी चार्वाक कहे छे:—

यथा यथाऽर्थाश्चिन्त्यन्ते, विविच्यन्ते तथा तथा। यद्येतत्स्वयमर्थे भ्यो रोचते तत्र के वयम्। १॥
भौतिकानि शरीराणि, विषयाः करणानि च। तथापि मन्दैरन्यस्य, तत्त्वं समुपदिश्यते॥ २॥

जेम जेम अर्थो विचारीए तेनुं विवेचन करीए तेम तेम जे जे अर्थ तरफ रुचे तेमां आपणे कइ गणत्रीमां (जेम जेम विचार करीये तेम तेम आ बधुं विषय तरफ खेंचाइ जाय त्यारे आपणे विचार करवानी शुं जरुर.)
आ शरीर तथा विषय अने इन्द्रियो बधुं भूतमांथी बनेलुं छे. तोपण मंद बुद्धिवाळाए बीजा जीवोने फसाववा तत्व तरिके ठसावी दीधुं छे.

वळी सांख्य विगेरे मतवाळा कहे छे, लोक नित्य छे. कारणके प्रकट थवुं, लय थवुं एटलुंज मात्र उत्पात अने विनाशनुं स्वरुप

छे. कारण के जे नथी तेनुं उत्पादन नथी. तथा जे छे तेनो नाश नथी. अथवा ध्रुव ते नदी समुद्र पृथ्वी पर्वत आकाश ए बधांनुं निश्चयपणुं होवथी ते ध्रुव छे (माटे तेमना मत प्रमाणे बधुं नित्य छे)

बौद्ध विगेरे कहे छे लोक अनित्य छे कारण के दरेक क्षणे तेनो स्वभाव क्षय थवारूप छे. विनाशना हेतुना अभावथी अने नित्य वस्तुना अनुक्रमथी के एक साथे अर्थ क्रियामां असामर्थ्यपणुं छे. (आ प्रमाणे तेमनुं मानवुं छे के बधुं अनित्य छे.) अथवा अध्रुव ते चळ छे जेमके भूगोळ (पृथ्वीनो गोळो) केटलाक न कहेवा प्रमाणे नित्य चलायमान छे. (तेओ माने छे के पृथ्वी फरे छे) अने सूर्य स्थिर छे तेमां सूर्य मंडळ दूर होवाथी जेओ पूर्वमांथी जुए छे तेमने सूर्यनो उदय देखाय छे. अने सूर्यना मंडळना निचे रहेलाने मध्यान्ह देखाय छे. अने जेओने सूर्य दूर थवाथी न देखाय तेओने आथमेलो जणाय छे. वळी बीजा मतवाळा एवुं माने छे के लोकनी आदि छे. तेओ कहे छे.

आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम् । अप्रतर्क्यमविज्ञेयं, प्रसुप्तमिव सर्वतः ॥ १ ॥

आ बधुं पूर्वे अंधारारूप, अजाण्युं, लक्षण रहित विचाराय नहीं तेवुं, न जणाय तेवुं, बधी रीते सूतेला जेवुं हतुं.

तस्मिन्नेकार्णवीभूते, नष्टस्थावरजंगमे । नष्टामरनरे चैव, प्रनष्टोरगराक्षसे ॥ २ ॥

ते एक समुद्ररुप बनेलुं स्थावर जंगमनो तथा देवता मनुष्यनो नाश हतो तेम नाग तथा राक्षसनो पण नाश हतो(त्यारे केवुं हतुं ते कहे छे)

केवलं गह्वरीभूते, महाभूत विवर्जिते । अचिन्त्यात्मा विभुस्तत्र, शयानस्तप्यते तपः ॥ ३ ॥

तस्य तत्र शयानस्य, नाभेः पद्मं विनिर्गतम् । तरुणरविमण्डलनिभं, हृद्यं काञ्चनकर्णिकम् ॥ ४ ॥

तस्मिन् पद्मे तु भगवान् दण्डी यज्ञोपवीतसंयुक्तः । ब्रह्मा तत्रोत्पन्नस्तेन जगन्मातरः सृष्टाः ॥ ५ ॥
अदितिः सुरसङ्घानां दितिर् सुराणां मनुर्मनुष्याणाम् । विनता विहङ्गमानां माता विश्वप्रकाराणाम् ॥ ६ ॥
कद्रुः शरीरसृपाणां सुलसा मात तु नागजातीनामू । सुरभिचतुष्पदानामिला पुनः सर्व्व बीजानाम् ॥ ७ ॥

फक्त गह्वर (पोलाण) ना आकारवाळुं महाभूतोथी रहित हतुं तेमां अचिंत्य आत्मा विभु (इश्वर) पोते सुतेलो तप करे छे. ३ ते त्यां सुतेला विभुनी नाभीमांथी एक कमळ उत्पन्न थयुं ते उगता सूर्यना मंडळ जेवुं सोनानी कर्णिकावाळुं रमणिक हतुं (४) ते पद्ममांथी भगवान दंड धारण करेल जनोइ पहेरेलो ब्रह्मा उत्पन्न थयो तेणे जगतनी माताओने रची छे. (५)

देवताओना समूहनी माता अदिति छे, अने असुरोनी माता दिति छे. मनुष्यनो मनु छे. पक्षीओनी माता विनता छे. आ प्रमाणे विश्वना प्रकारोनी माताओ ब्रह्माए बनावी.(६)

सरीसृपनी माता कद्रू छे. अने नागनी जातीओनी माता सुलसा छे. तेम बधां चोपगां प्राणीनी मा सुरभि छे. अने सर्व बीजोनी माता इला छे. [आ प्रमाणे पुराणवादीओ बोले छे, तेम बीजा धर्मवाळा पण पोतानी बुद्धि प्रमाणे कल्पना करे छे, तेम समजवुं

बीजा मतवाळा केटलाक अनादि लोक माननारा छे जेमकेशाक्य मतवाळा कहे छे हे भिक्षुओ !

अनव दग्र [अनादि] आ संसार छे तेनी पूर्व कोटी जणाती नथी, निवारण सत्वोने अविद्या नथी, तेम जीवोनो उत्पाद नथी,

वळी अंतवाळो आ लोक छे जगतना प्रलयमां बधानो नाश थाय छे, तथा अंत विनानो लोक छे कारण के विद्यमान वस्तुनो सर्वथा नाशनो असंभव छे. कारण के एवुं नथी [अर्थात् छेज] केटलाक तो बन्नेने पण माने छे ते बतावे छे.

द्वावेव पुरुषौ लोके, क्षरश्चाक्षर एव च । क्षरः सर्वाणि भूतानि, कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥ १ ॥

बेज पुरुषो लोकमां पूर्वे हता, एक क्षर (नाशवंत) बीजो अक्षर [अनाशवंत] तेमां क्षरमां सर्व भूतो छे. अने अक्षर ते कूटस्थ कहेवाय छे. आ प्रमाणे परमार्थने नहीं जाणनारा लोक छे. विगेरे स्वीकारवा वडे विवाद करता जुदी जुदी वाणी काढे छे तेज प्रमाणे आत्माने पण जुदी जुदी रीते बतावे छे जेमके सारुं कर्युं, ते सुकृत माने अथवा दुष्कृत माने एम क्रियावादीओ माने छे. एटले कोइ बोले के सर्व संगनो त्याग करवाथी महाव्रत ग्रहण कर्युं, ते सारुं कर्युं. तथा बीजा बोले छे के हे भाइ ! आ सरळ मृग-लोचनवाळी स्त्रीने पुत्र उत्पन्न कर्या विना तें त्यागी, ते खोटुं कर्युं. तथा जे दीक्षा लेवा तैयार थयो होय, तेने कहे, के आ कल्याण छे. तेनेज बीजो कहे के आ तो पाखंडीओना जाळमां फसाएलो क्लीब छे! गृहाश्रम पाळवाने असमर्थ छे ! विना पुत्रे दीक्षा लीधी तेथी पापरुप छे तथा आ साधु छे, असाधु छे एम पोतानी मतिए कल्पना करी इच्छानुसार बोले छे तथा सिद्धि छे अथवा सिद्धि नथी, अथवा नरक छे अथवा नथी ए प्रमाणे बीजुं पण पोताना आग्रह प्रमाणे पकडी विवाद करे छे ते बतावे छे के आ पूर्वे बनावेलुं लोक विगेरेने आश्रयी जुदुं जुदुं माननारा ते विप्रतिपन्न वादीओ छे ते कहे छे.

इच्छंति कृत्रिमं सृष्टि–वादिनः सर्व मेव मितिलिङ्गम् । कृत्स्नं लोकं माहेश्वरादयः सादि पर्यन्तम् ॥ १ ॥

सृष्टिना वादीओ माहेश्वर विगेरे बधुंज मितिलिंग अने कृत्रिम माने छे, अने बधा लोकने सादि पर्यंत माने छे.

नारीश्वरजं केचित्, केचित् सोमाग्निसंभवंलोकं । द्रव्यादि षड्विकल्पं, जगदेतत्केचिदिच्छन्ति ॥ २ ॥

नारी तथा इश्वरथी उत्पन्न थएलुं माने छे, केटलाक मतवाळा सोमाग्निथी लोक उत्पन्न थयेलुं माने छे. तथा द्रव्यगुण विगेरे

छ विकल्पवाळुं जगत् केटलाक माने छे.

ईश्वरप्रेरितं केचित्, केचिद् ब्रह्मकृतं जगत्। अव्यक्त प्रभवं सर्वं, विश्वमिच्छंति कापिलाः ॥ ३ ॥

केटलाक इश्वरनी प्रेरणाथी थएलुं माने छे, केटलाक ब्रह्माए जगत् करेलुं माने छे, एने कपिल मतवाळा अव्यक्तथी बधुं विश्व थएलुं माने छे.

यादृच्छिक मिदं सर्वं, केचिद् भूत विकारजं। केचिच्चानेकरूपं तु, बहुधा संप्रधाविताः ॥ ४ ॥

केटलाक यादृच्छिक (स्वभाविक) बधुं माने छे, केटलाक भूतोना विकारथी थएलुं माने छे, केटलाक मतवाळा अनेक रुपवाळुं जगत् माने छे, आ प्रमाणे अनेक प्रकारे मतवादीओ पोताना विचार बतावत्रा दोडेला छे. आ प्रमाणे जेमणे स्याद्वाद समुद्र अवगाहन कर्यो नथी तेवा एकांश ग्रहण करी मतिना भेदवाळा बनेला परस्पर दोषित बनावे छे, तेज कह्यु छेः—

लोकक्रियाऽऽत्मतत्त्वे, विवदन्ते वादिनो विभिन्नार्थं। अविदित पूर्वं येषां, स्याद्वाद विनिश्चितं तत्त्वं ॥ १ ॥

लोक, क्रिया, आत्मा, तथा तत्त्व संबंधी जुदा जुदा विषयने बताववा तेज वादीओ झगडा करे छे के जेमणे स्याद्वादथी विशेष प्रकारे निश्चय कर्या विना तत्त्वनुं वर्णन करेलछे; पण जेमणे स्याद्वाद मतनो निश्चय कर्यो छे, तेओने अस्तित्व नास्तित्व विगेरे अर्थनो नयना अभिप्राय प्रमाणे कथंचित् (कोइ अंशे) आश्रय करवाथी तेमने विवादनो अभावज छे,

ग्रन्थ वधी जवाना भयथी अहीं बहु कहेवानुं छे, छतां कहेता नथी, तथा तेनुं वर्णन सूत्रकृत विगेरे सूत्रमां विस्तारथी कह्यु छे.

ते वधा परस्पर विवाद करता पोताना तत्वनो आग्रह करी तेनुं समर्थन करता पोते नाश पाम्या छे, अने बीजानो नाश करे

छे, ते बतावे छेः—केटलाक सुखथी धर्मने इच्छे छे, बीजा दुःखथी धर्म माने छे, केटलाक स्नानथी धर्म माने छे तथा मारोज धर्म मोक्ष आपनार छे, बीजो बोलवा जेवोज नथी, एम बोलनारा अपुष्ट (तुच्छ) धर्मवाळा परमार्थ नहि जाणनारा (भोळा जीवो) ने फसावे छे. हवे तेमनो उत्तर जैनाचार्य आपे छे. लोक छे अथवा नथी विगेरेमां तमे जाणो.

अकस्मात् (मागध) देशमां आ शब्द गोवाळणी सुधां पण संस्कृतमां बोले छे, तेथी तेजरुपे लीधो छे एटले कस्माद् (ते हेतु छे अने अ साथे लेवाथी अकस्माद् ते अहेतु छे) तेमां ते हेतुना अभावथी बनतुं नथी, एम समजवुं के दरेकमां हेतु रहेल छे, जो तेम न मानीने एकांतथीज "लोक छे," एवुं मानीए तो ते अस्ति (छे), शब्द साथे समान अधिकरणपणे थवाथी जगतमां जे जे छे, ते बधुं लोक थशे, अने तेम मानतां तेनो प्रतिपक्ष पण 'अलोक' अस्ति (छे), तेथी लोकज अले थशे, अने व्याप्यना सद्भावमां व्यापकनो सद्भाव थतां अलोकनो अभाव थशे, अने तेना अभावमां तेना प्रति पक्ष लोकनो प्रथमज अभाव थशे. अथवा लोकनुं सर्व गतपणुं सिद्ध थशे.

अथवा "लोक अस्ति" पण लोक न भवति [नथी] लोक पण नामज छे, अने लोक नथी लोकनो अभाव छे. ए प्रमाणे थशे, आ बधुं अनिष्ट छे, अने अस्तिनुं व्यापकपणुं होवाथी लोक साथे अस्ति एकांत लागवाथी घट पट विगेरेमां पण लोकपणानी प्राप्ति थशे कारण के व्याप्यना व्यापकना सद्भाव साथे अंतरपणुं नथी वळी अस्ति लोक आ प्रतिज्ञा पण लोक एम मानवाथी हेतुनुं पण अस्तित्वपणुं छे, तेथी "प्रतिज्ञा अने हेतु" बन्नेमां एकत्व प्राप्ति थशे, अने ते एक थतां हेतुनो अभाव थशे, अने हेतुना अभावमां कोण केनाथी सिद्ध थशे, अथवा एम मानीए के "अस्तित्वथी अन्य लोक छे, तो प्रथम करेली प्रतिज्ञानी हानि थशे, तेथी ए

प्रमाणे एकांतथीज लोक अस्तित्व मानतां हेतुनो अभाव बताव्यो, एज प्रमाणे नास्तित्वनी प्रतिज्ञामां पण समजवुं, ते बतावे छे, कोइ एम कहे के "लोक नथी" आवुं बोलनारने पूछवुं के तमे छो के नहि ? अने जो तमे छो तो लोकमां के लोक बहार जो लोकमां हो, तो लोक नथी एवुं केम बोलो छो ? अने लोक बहार एम बोलशो तो खर, विषाण (गधेडानुं शींगडा) माफक असत्य सिद्ध थया, तेथी मारे कोने उत्तर आपवो ? आ प्रमाणे दरेक विद्वाने पोतानी मेळे विचारीने एकांत वादीओनुं समाधान करवुं.

'एवं'–जेम अस्तित्व नास्तित्व वाद तेमने मानेलो आकस्मिक निर्युक्तिक (युक्ति विनानो) छे, एज प्रमाणे ध्रुव अध्रुव विगेरे वादो पण निर्युक्तिज छे, पण अमारा जैन स्याद्वाद वादीना जैनमतमां कथंचित् (कोइ अंशे) ना स्वीकारथी उपर बतावेला दोषनो प्रसंग नथी, कारण के स्वपर सत्ताना उपादान व्युदासथी वस्तुनुं वस्तुपणुं उपाद्य छे, एथी स्व द्रव्य क्षेत्र काळ स्वभावथी वस्तुनुं अस्तिपणुं छे, अने परद्रव्य क्षेत्र काळ स्वभावथी नास्तिपणुं छे, कह्युं छे केः—

सदेव सर्वं को नेच्छेत्, स्वरूपादिचतुष्टयात् । असदेव विपर्यासान् न चेन्न व्यवतिष्ठते ॥ १ ॥

स्वरूप विगेरे चार (द्रव्य क्षेत्र काळ भाव) थी बधा पदार्थोने सत् तरीके कोण न इच्छे ? अने तेथी उलटुं ते बीजाना द्रव्यादि चष्टुयथी पोते असत् छे, जो तेम न मानीए तो वस्तुनी व्यवस्था रहे नहि. विगेरे जाणवुं, कारण के सूत्रना संबंधना लीधे आ प्रयास थोडमां समजाववा माटे कहेल छे, माटे वधारे कहेता नथी, ए प्रमाणे ध्रुव अध्रुव विगेरेमां पण पांच अवयव अथवा दश अवयव अथवा बिजी रीते एकांत पक्ष साथे स्याद्वाद पक्ष सरखावी विचारीने योजवो. (आ पांच अवयव अने दश अवयवनुं स्वरुप दशवैकालिक प्रथम अध्ययनमां हरिभद्रसूरि महाराजनी टीकमां बतावेल छे.

हवे समाप्त करे छे—ए प्रमाणे उपर बतावेली नीतिए ते बधा एकांत वादीओनो धर्म. तेंओए योग्य रीते कह्यो नथी, तेम शास्त्र प्रणयनवडे सारी रीते प्रज्ञापित पण नथी,

प्र०—पोतानी बुद्धिए तमे आ केम कहो छो ? उ०—नहीं, अथवा वादी पूछे छे के जो ते वादीओनो एकांत पक्ष बरोबर कहेलो नथी, तो केवो धर्म सुप्रज्ञापित थाय छे. तेथी जैनाचार्य (गणधरो) सूत्र कहे छेः—

से जहेयं भगवया पवेइयं आसुपन्नेण जाणया पासया अदुवा गुत्ती वओगोयरस्स त्तिबेमि सव्वत्थ संमयं पावं, तमेव उवाइक्कम्म एस महं विवेगे वियाहिए, गामेव। अदुवा रण्णे नेव गामे नेव रण्णे धम्ममायाणह पवेइयं माहणेण मइमया, जामा तिन्नि उदाहिया जेसु इमे आयरिया संबुज्झमाणा समुट्ठिया, जे णिव्वुया, पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते वियाहिया (सू० २००)

वस्तुनुं आ स्याद्वादरुप लक्षण बधा व्यवहारने अनुसरनारुं कोइपण वखत न हणानारुं (सर्वत्र जय पामेलुं) भगवान महावीरे कहेलुं छे अथवा हवे पछीनुं कहेवानुं पण महावीर प्रभुए कह्युं छे.

तेओ केवा छे उ०—केवळज्ञान होवाथी तेओ आशुप्रज्ञावाळा छे अर्थात् तेओ सदा उपयोगवाळा छे. प्र०—बन्ने उपयोग साथे छे के ? उ०—नहीं. कारण के ज्ञान उपयोगथी जाणता, तथा दर्शन उपयोगथी देखता महावीर प्रभुए कह्या छे. तेवो धर्म एकांतवादीओए कह्यो नथी. अथवा गुप्ति ते वाचानी छे. एटले भाषा समिति जाणवी ते भगवान महावीरे कह्यु के दरेके भाषा

समिति राखवी. (विचारीने बोलवुं) अथवा अस्ति नास्ति ध्रुव अध्रुव विगेरे बोलनारा वादीओ वाद करवाने माटे तैयार थयेला जेओ त्रणसो तेसठनी संख्यावाळा छे. तेवा त्रणसो तेसठनी प्रतिज्ञा हेतु दृष्टांत उपन्यासना द्वारवडे भूलो बतावी तेमनुं गीतार्थ साधुए समाधान करवुं. अथवा वचननी गुप्ति साधुए राखवी तेनुं स्वरुप हु कहुं छुं. अने हवे पछी कहीश. ते वादीओ जे वाद करवा आवे तेमने आ प्रमाणे कहेवुं. जेम तमारा वधामां पण पृथ्वी पाणी अग्नि वायु वनस्पतिनो आरंभ करवो, कराववो, अनुमोदवो एम संमति आपी छे. एथी बधी जग्याए आ पाप अनुष्ठान छे. एम अमारो मत छे. अर्थात् तमे ते हिंसाने पाप मानता नथी, पण जीवोने दुःखरुप होवाथी अमे तेमने जैनमत प्रमाणे पाप मानीए छीए. ते कहे छे.

'तदेव'–आ पाप अनुष्ठान छोडीने हुं रह्यो छुं एज मारो विवेक छे. [जे बीजाने दुःख देवानुं छोडे छे, तेज पोते पापथी बचेलो छे. अने तेज धर्म कहेवाने योग्य छे] तेथी हुं वधाथी अप्रतिसिद्ध आस्रवद्वारोवाळा साथे केवी रीते भाषण करुं. (जे जीवोने बचाववा चाहे ते हिंसकोनी साथे केवी रीते वाद करी शके?) तेथी वाद करवो दूर रह्यो. ए प्रमाणे असमनुज्ञ [असंमति] नो विवेक करे छे. प्र०—अन्य तीर्थिओ पापनी संमतिवाळा अज्ञानी मिथ्या दृष्टि चारित्र रहित अने अतपस्वी छे तेवुं केवी रीते मानो छो? कारण के तेओ न खेडाएली भूमि उपर जे वन छे तेमां वास करनारा छे. कंदमुळ खानारा छे. अने झाड विगेरेना आश्रये रहेनारा छे अहीं जैनाचार्य कहे छे.

उ०—अरण्यवासथीज धर्म नथी पण जीव अजीवना संपूर्ण ज्ञानथी तथा तेमनी रक्षानां अनुष्ठान करवाथी धर्म छे अने तेवो धर्म तेमनामां नथी, तेथी तेओ असमनोज्ञ छे (उत्तम साधु नथी) वळी सारा माठानो विवेक जेमां होय ते धर्म छे अने तेवो धर्म

गाममां पण थाय अने अरण्यमां पण थाय पण धर्मनु निमित्त के धर्मनो आधार गाम के अरण्य नथी, जेथी भगवाने रहेवासने आश्रयी के बीजी रीतनो आश्रय लइने धर्म बताव्यो नथी, तेमनुं कहेवुं ए छे के प्रथम जीवादि तत्वनुं ज्ञान मेळववुं अने सम्यग् अनुष्ठान करवां [के सर्व जीवोने अभयदान मळे ते धर्म छे.] ते धर्मने तमे बरोबर जाणो एवुं भगवान महावीरे कह्युं छे. प्र०—भगवान केवा छे ? उ०—मनन ते बधा पदार्थोनुं परिज्ञान छे तेज मति छे अने ते मतिवाळा (केवळज्ञानी) भगवाने कह्युं छे.

प्र०—केवो धर्म कह्यो छे ? उ०—याम ते महाव्रतो छे तेमां त्रण बताव्या छे. जीव हिंसा जुठ अने परिग्रह ते त्रणेनो त्याग ते याम छे. ते परिग्रहमां अदत्तादान अने मैथुन समाव्या छे माटे पांचने बदले त्रण संख्या कही छे. अथवा याम ते वय (उमर) नी अवस्था छे. जेमके आठ वरसथी त्रीस अने त्यारथी साठ सुधी बीजी अने त्यारपछी त्रीजी एमां दिक्षा लेवाने अयोग्य एवा तद्दन नाना आठ वरसनी अंदरना अने छेकज बुढ्ढानो समावेश न कर्यो. (जुदा काढ्या) अथवा जेनावडे संसार भ्रमण विगेरे दूर थाय ते याम ते ज्ञानदर्शन चारित्र छे. एम यामनो त्रण प्रकारे त्रणनी संख्यानो अर्थ कर्यो. (एटले महाव्रत पाळवां त्रण अवस्थामां धर्म करवो. अने रत्नत्रय ज्ञान विगेरे प्राप्त करवां)

जो आ प्रमाणे छे तो शुं करवुं. ते त्रण अवस्थामां अथवा ज्ञान विगेरेमां आर्य देशमां उत्पन्न थयेला अथवा पाप धर्मो दूर करनारा बोध पामेला चारित्र पाळवा तैयार थयेला साधुओ छे. तेओ केवा छे.? ते बतावे छे.

जेओ क्रोध विगेरे दूर करीने शांत थयेला छे अने पाप कर्ममां जेओ वासना राखता नथी तेज उत्तम साधुओ (मोक्षना अधिकारीओ) छे. प्र०—तेओ कइ जग्याए पाप कर्ममां वासना रहित छे.? ते बतावे छे.!

उड्ढं अहं तिरियं दिसासु सव्वओ सव्वावंति च णं पाडियक्कं जीवेहिं कम्मसमारम्भे णं तं परिन्नाय मेहावी नेव सयं एएहिं काएहिं दंडं समारंभिज्जा नेवन्ने एएहिं काएहिं दंडं समारभाविज्जा नेवन्ने एएहिं काएहिं दंडं समारम्भतेऽवि समणुजाणेज्जा जेवऽन्ने एएहिं काएहिं दंडं समारम्भंति तेसिंपि वय लज्जामो तं परिन्नाय मेहावी तं वा दंडं अन्नं वा नो दंडंभी दंडं समारमिज्जासि त्तिबेमि (सू० २०१) विमोक्षाध्ययनोद्देशकः ८-१ ॥

उंचे नीचे के तिरछी दिशामां बधा प्रकारे जे जे दिशाओ छे अने च शब्दथी विदिशा [खुणा] छे, तेमां एकेन्द्रिय सूक्ष्म बादर विगेरेमां जे कर्मोनो समारंभ छे. अर्थात् जीवोने दुःख देवा रुप जे क्रियाओनो समारंभ (संसारी कृत्य) छे. ते बधा कर्म समारभने ज्ञ परिज्ञा वडे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञा वडे त्याग करवा.

प्र०—कोण त्याग करे.? उ०—मर्यादामां रहेलो बुद्धिमान साधु. प्र०—केवी रीते त्यागे ?

उ०—पोते पोताना आत्मार्थीज चौद भूतग्राममां रहेला पृथ्वीकाय विगेरे जीवोने दुःख रुप आरंभ न करे. पण बीजा पासे पण आरंभ न करावे. तेम आरंभ करनानी अनुमोदना न करे.

(सूत्रमां छट्टी विभक्ति छे. तेनो अर्थ त्रीजीमां लइए तो) ते हिंसाना करनाराओथी अमे शरमाइए छीए. एवो उत्तम विचार करीने साधु पोते मर्यादामां रहीने तथा कर्मनो समारंभ मोटा अनर्थ माटे छे, एम जाणीने पोते ते कर्म समारंभ छोडे. तथा जुठ

विगेरे दंडथी पोते डरे. तेथी दंडभीवाळो साधु जीवोने दुःख रुप दंडनुं कंइ पण कार्य न करे अर्थात् करवुं करावबुं अनुमोदवुं ते त्रण करण अने मन वचन काया ए त्रण योग छे. तेना वडे त्यागे. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामि कहे छे.

पहेलो उद्देशो समाप्त.

बीजो उद्देशो,

पहेलो उद्देशो कह्यो. हवे बीजो कहे छे तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां पाप रहित संयम पाळवा माटे कुशीलनो परित्याग बताव्यो आ परित्याग अकल्पनीयना परित्याग विना संपूर्णपणाने न पामे. माटे साधुने अकल्पनीयना परित्यागनो विषय बतावनार आ उद्देशो कहे छे. एवा संबंधे आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे.

से भिक्खू परिक्कमिज्ज वा चिट्ठिज्ज वा निसाइज्ज वा तुयट्टिज्ज वा सुसाणंसि वा सुन्नागारंसि वा गिरिगुहंसि वा रुक्खमूलंसि वा कुमारायतणंसि वा हुरत्था वा कहिंचि विहरमाण तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावई बूया—आउसंतो समाणा! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा पाणं वा खइमं वा सइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आ-

हट्टु चेएमि आवसहं वा समुस्सिणोमि से भुंजह वसह, आउसंतो समणा ! भिक्खू तं गाहावइं समणसं सवयसं पडियाइक्खे—आउसंतो ? गाहावई नो खलु ते वयणं आढामि नो खलु ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्ठाए असणं वा ४ वत्थं ४ पाणाइं वा ४ सणारम्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएसि आवसहं वा समुस्सिणासि, से विरओ आउसो गाहावई ? एयस्स अकरणयाए (सू० २०२)

सामायिक उच्चरेलो ते साधु सावद्य अनुष्ठान छोडवाथी मंदर [मेरु] पर्वते चडवा समान प्रतिज्ञा करेलो भिक्षार्थी जीवन गुजारनार साधु—भिक्षा लेवा के वाजा कार्य माटे पराक्रम (विहार) करे, अथवा ध्यानमां लीन थइने उभो रहे, अथवा भणवुं भणाववुं, अथवा सांभळवुं के संभळाववुं होय त्यारे वेसे, तथा कोइ जग्याए मार्गमां थाकतां आडो पडे (सुइ रहे) प्र०—आ बधुं कइ जग्याए करे ? ते बतावे छे—मशाण एटले ज्यां मुडदां दाटे बाळे ते स्थान, (जेनुं बीजुं नाम पितृवन) छे तेमां सुवानुं संभवे नहि, माटे यथायोग्य ज्यां घटे, ते लेवुं, ते विचारतां गच्छ वासीओने ते मशाण विगेरे स्थान कल्पतां नथी, कारण के तेवा स्थानमां रही प्रमाद थतां व्यंतर विगेरेनो उपद्रव थाय छे, तथा जिनकल्पी मुनि थवानी सत्व भावनाने भावनार स्थविर कल्पी मुनिने पण मशाणमां निवास करवानी संमति आपी नथी, पण प्रतिमाधारी मुनिने तो ज्यां सूर्य आथमे त्यांज रहेवानुं छे, तेवाने आश्रयी अथवा जिनकल्पी मुनिने आश्रयी मसाणनुं स्थान सूत्र प्रमाणे समजवुं, ए प्रमाणे ज्या जेनो संभव थाय. त्यां ते योजवुं. शून्यागार

(उज्जड घरमां) रहे; अथवा, पर्वतनी गुफामां अथवा झाड नीचे अथवा, कुंभारनां स्थानमां अथवा, गामनी बहार कोइ पण जग्याए ते साधु कोइ वखत विहार करे; तेने घरनो मालिक आवीने साधुनी जग्यामां जइने बोले. जे बोले ते बतावे छे.

मसाण विगेरे स्थानमां परिक्रमण विगेरे क्रियाने करता साधु पासे कोइ त्यां पहेलां उभो रहेल कोइ माणस स्वभावथी भद्रक जीव अथवा समकीत वारी श्रावक गृहस्थ होय, ते साधुना आचारमां अजाण होय; ते साधुने उद्देशीने कहे. आ आपेलो आहार खानारा छे. आरंभ छोडेला छे. अनुकंपा लाववा योग्य छे अने एटलुं छतां, तेओ सत्य शुचिवाळा (स्नान रहित) छे. माटे, एमने आपेलुं अक्षय फळ आपनार छे माटे, हुं तेमने दान आपीश. एम विचारीने साधु पासे आवे अने बोले. हे अयुष्मन्! हे साधु! हुं संसारसमुद्र तरवानी इच्छावाळो तमारे माटे भोजन, पाणी खादिम, तथा स्वादिम वस्तु लावुं; अथवा वस्त्र, पात्रां, कांबळ, रजोहरण, विगेरे बनावीने लावुं. अर्थात् आम कहीने ते गृहस्थ शुं करे ? ते कहे छे. पंचेन्द्रिय जेओ श्वास ले छे, ते प्राणीओ छे. तथा त्रणे काळमां थया, थाय छे अने थशे. ते भूत छे, तथा जीवता हता, जीवे छे, अने जीवशे; ते जीवो छे. तथा सुख दुःखमां सक्त छे ते सत्त्वो छे. तेमनो आरंभ करीने लावे; तेमां भोजन विगेरेना आरंभमां प्राणीनुं उपमर्दन अवश्य थवानुं छे. आ गृहस्थोनुं कहेलुं बधुं अथवा थोडुं, कोइ साधु स्वीकारी ले. माटे खुलासो करे छे. आ अविशुद्धि कोटि लीधी छे ते बतावे छे.

आहा कम्मुद्देसिअ मीसज्जा बायरा य पाहुडिआ । पूइअ अज्झोयरगो उग्गमकोडी अ छब्भेआ ॥ १ ॥

आधाकर्मी उद्देशीक मिश्र, अने बादर प्राभृतिक पूति अने अध्व पूरक, उमद्गकोटी आ छ भेदो ते, अविशुद्धि कोटि छे.

(आ दशवैकालिक सूत्रनी पांचमा अध्ययननी निर्युक्तिनी गाथा छे. तेमां सूचव्युं के, जे कार्यमां जीवोने साक्षात् हणे; ते

साधु निमित्ते थवाथी अविसुद्धि कोटि छे.) हवे. विशुद्धि कोटि बतावे छे. मूल्यथी लीधेलुं, उधारे लीधेलुं, छीनवी लीधेलुं. जेम कोइ राजा गृहस्थ पासेथी साधुने आपवा माटे छीनवी ले. तथा पारकानुं बदले लीधेलुं आवुं कोइ साधुने दान देवा माटे करे; तथा पोतानां घरथी साधुना सामे लावीने आपे; ते विशुद्ध कोटी छे. (आमां साक्षात् जीव हिंसा साधु माटे थती नथी. माटे, विशुद्ध कोटी) आ प्रमाणे साधुने आपवा कोइ बोले; तथा हुं तमारे माटे उपाश्रय बनावीश; अथवा सुधरावीश. एवुं बोले; अने ते गृहस्थ हाथ जोडीने माथुं नमावीने आहार विगेरेनी निमंत्रणा करे अने बोले हे साधु ! आ भोजन वापरो; मारां सुधारेलां घरमां रहो; ते वखते साधु जे सूत्र अर्थनो भणेलो विद्वान होय; तेणे दीनतावाळुं मन न करतां तेने ना पाडवी; ते माटे गुरु शिष्यने कहे छेः—हे आयुष्मन् ! हे साधु ! हे भिक्षु! ते गृहस्थ बुद्धिमान होय; मित्र होय; अथवा बीजो कोइ होय तेने साधुए केवो उत्तर आपवो ? ते बतावे छे, हे आयुष्मन् ! हे गृहस्थ ! तमारुं ए वचन हुं स्वीकारतो नथी. ('खलु' अपिना अर्थमां छे, अने ते समुच्चयना अर्थमां छे.) मारे साधुनो आचार जे पाळवानो छे, तेनुं ज्ञान मने होवाथी हुं स्वीकारुं नहीं. तुं मारे माटे जीवोने दुःख देवा रुप भोजन विगेरे बनावे, अथवा उपाश्रय बनावे; तो मने ते कल्पे नहीं. कारण के, हे आयुष्मन् ! हे गृहपति ! तेवा आरंभ कराववा रुप अनुष्ठानथी हुं मुक्त थयेल छुं.

माटे जाणी जोइने हुं केवी रीते स्वीकारुं ? माटे हुं स्वीकारतो नथी. आ प्रमाणे भोजन विगेरेना संस्कारनो साधुए निषेध कर्यो. पण जो, कोइ गृहस्थ प्रथमथी तेवो साधुनो अभिप्राय जाणीने छानुंज तेवुं भोजन, विगेरे करे अने साधुने आपे; तो पण, साधुए बुद्धि बळथी कोइ पण रीते जाणीने तेनो निषेध करवो ते बतावे छे.

से भिक्खु परिक्कमिज्ज वा जाव हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावई आयगयाए पेहाए असणं वा ४ वत्थं वा ४ जाव आहट्टु चेएइ आवसहं वा समुस्सिणाइ भिक्खू परिघासेउं, तं च भिक्खू जाणिज्जा सहसम्मइयाए परवागरणेणं अन्नेसिं वा सुच्चा—अयं खलु गाहावई मम अट्ठाए असणं वा ४ वत्थ वा ४ जाव आवसहं वा समुस्सिणाइ, तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणाए त्तिबेमि (सू० २०३)

ते साधुने मसाण विगेरेमां कोइ स्थाने विचरतां कोइ गृहस्थ मळतां ते हाथ जोडीने प्रकृतिथी भद्र होय; ते मनमां विचारे के हुं आ साधुने गुप्त रीते आरंभ करीने गोचरी विगेरे आपीश.

प्र०—शा माटे ? उ०—ते साधुने आहार करवा माटे आपीश; अथवा, साधुओने रहेवा माटे मकान बनावी आपीश. ते साधु माटे बनावेल आहर विगेरे दोषित छे एम साधु जाणी ले. प्र०—केवी रीते जाणे ? पोतानी तीक्ष्ण बुद्धिथी अथवा, तीर्थङ्करे बतावेला उपायोथी अथवा, बीजा माणसो एटले, तेना नोकर चाकर विगेरेने पूछीने जाणी ले के आ गृहस्थ मारे माटे आरंभ करीने आहार विगेरे अथवा, उपाश्रय आपे छे, आवु बीजा पासे साधु सांभळे तो, ते वातनी खात्री करीने ते साधु कहे के, आ अमारे माटे बनावेलुं छे तेथी कल्पतुं नथी; माटे, हुं नहीं लउं. जो आवुं करनार श्रावक होय; तो, तेने टुंकाणमां पिंड निर्युक्तिनुं स्वरुप समजाववुं. बीजो, भद्रक स्वभावनो होय तो, तेने निर्दोष भोजनना दाननुं फळ बतावे; तथा गोचरीना सोळ उद्गम विगेरे दोष बतावे;

तथा यथाशक्ति ते संबंधी धर्मकथा कहे छेः—

काले देशे कल्प्यं श्रद्धायुक्तेन शुद्धमनसा च । सत्कृत्य च दातव्यं दानं प्रयतात्मना सद्भ्यः ॥१॥
दानं सत्पुरुषेषु स्वल्पमपि गुणाधिकेषु विनयेन । वटकणिकेव महान्तं न्यग्रोधं सत्फलं कुरुते ॥२॥
दुःखसमुद्रं प्राज्ञास्तरन्ति पात्रार्पितेन दानेन । लघुनेव मकरनिलयं वणिजः सद्यानपात्रेण ॥३॥

योग्य काळ देशमां साधुने कल्पे तेवुं श्रद्धा सहित शुद्ध मनथी उद्यमवाळा थइने प्रासुक दान उत्तम साधुओने आपवुं (१)

उत्तम पुरुषो जे गुणमां अधिक छे, तेमने विनय वडे थोडुं पण, आपेलुं दान मोटुं फळ आपे छे. जेम—वडनी कणिका नानी छतां, वडनुं झाड सारां फळवाळु बनावे छे. (२)

तीक्ष्ण बुद्धिवाळा पात्रमां योग्य दान आपीने दुःख समुद्रने तरे छे. जेम-मगरनां स्थानवाळो मोटो समुद्र होय; तेने वेपारीओ नानां वहाण वडे तरी जाय छे. (३)

आ प्रमाणे सुधर्मास्वामि कहे छे, अने हवे पछीनुं पण तेओ कहे छेः—

भिक्खुं च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा जे इमे आहच्च गंथा वा फुसंति, से हंता हणह खणह छिंदह दहह पयह आलुपह विलुंपह सहसाकारेह विप्परामुसह, ते फासे धीरो पुट्ठो अहियासए अदुवा आयारगोयरमाइक्खे, तक्किया णमेणलिसं अदुवा वइगुत्तीए गोयरस्स अणुपु-

वेण संमं पडिलेहए आयतगुत्ते बुद्धेहिं एयं पवेइयं (सू० २०४)

('च' समुच्चयना अर्थमां छे. 'खलु' वाक्यनी शोभा माटे छे.) ते भिक्षाना आचारवाळा साधुने कोइ कहेः–हे साधु ! हुं तमारे माटे भोजन विगेरे अथवा उपाश्रय विगेरे तैयार करावीश; अथवा सुधरावीश. साधुए तेने संमति न आपी होय; तो पण, ते करावे; अने मीठां वचन, अथवा बळात्कारथी हुं साधु पासे ग्रहण करावीश एवुं माने; अने बीजो कोइ गृहस्थ साधुना थोडा आचारने जाणतो होय; ते पूछया विनाज छानुं कार्य करे; अने विचारे के, हुं तेमने भोजन विगेरे आपीश. हवे ते न भोगववाथी श्रद्धानो भंग थवाथी अथवा, मधुर सेंकडो वचनना आग्रहथी, अथवा क्रोधना आवेशथी निश्चयथी सुख दुःख पणे अवलोक जाणनारो आ साधु छे. एम जाणीने पश्चाताप पूर्वक राजानी आज्ञा लइने न्यकार भावना पामेलो द्वेषी बनीने ते साधुने मारे पण खरो ते बतावे छे, अने एक बताववथी घणानो आदेश छे तेथी जेओ आ पूछीने अथवा विना पूछे आहार विगेरे लाववामां घणुं द्रव्य खरचीने साधुने अर्पण करे, अथवा द्रव्य खरची बनावेलुं भोजन विगेरे साधुओ न ले; तो तेमने ते गृहस्थ क्रोधी बनीने पीडा करे छे.

प्र०—केवी रीते ? उ०—कहे छे. ते शेठ विगेरे क्रोधी बनीने पोते साधुने मारे छे. अथवा, मारवा माटे बीजाने प्रेरणा करे छे, अने बोले छे के–आ साधुने दंडा विगेरेथी मारो; तथा एना हाथ पग कापीने घायल करो; तथा अग्नि विगेरेथी बोळो; तथा तेमना साथळनुं मांस पकावो; तेनां वस्त्रो विगेरे लुंटी ल्यो; तथा तेनुं बधुं छीनवी ल्यो. एकदम बधुं प्रहार वडे करावो; शीघ्र पंचत्व (मरण) पमाडो; तथा, दुःख देवाना जुदा जुदा विचार करोः जुदी जुदी पीडाथी बाधा करो. आ प्रमाणे हुकम करवाथी ते साधुने बीजाओ अनेक प्रकारे दुःखना स्पर्शो करे; तो पण, धीर बनीने ते फरसोने फरशी शांतिथी सहन करे. तथा बीजा भूख तरस

विगेरेना परिषहो आवे; ते पण सहे; पण; परिषह उपसर्ग आवेथी कंटाळीने विकलवता (खेद) पामीने तेनो उद्देशिक विगेरे दोषित आहारनी अभिलाषा न करे; अथवा, सांत्ववाद (मीठां वचन) विगेरे अनुकुळ उपसर्गोथी ललचावतां पण, अशुद्ध आहार न ले. जिनकल्पी मुनि तो आचार पाळे; पण, तेनाथी जुदो स्थविरकल्पी साधु पण सामर्थ्य होय; तो, पोतानो निर्दोष संयम पाळे. ते कहेः—जुदा जुदा उपसर्गोथी थती पीडाओने सहे; अथवा, साधुओना आचारनो विषय (अनुष्ठान) जे मूळ गुण उत्तरगुणना भेद संबंधी छे ते समजावे; पण, ते समये नयां वडे द्रव्य विचार समजाववा न बेसे, तेमां पण, मूळ गुणोनी स्थैर्यता माटे उत्तर गुणाने (विशेष प्रकारे) समजावे; अने तेमां पिंडैषणानी विशुद्धि समजावे;अने आ स्थळे पिंडैषणा सूत्रोने समजाववां जोइए. वळी,कहेवुंके.

यत्स्वयमदुःखितं स्यान्न, न च परदुःखे निमित्त भूतमपि । केवलमुपग्रहकरं, धर्मकृतेतद् भवेद्देयम् ॥१॥

जेथी, पोते दुःखी न थाय; तेम. बीजानां दुःखमां पोते निमित्तभूत पण न थाय. फक्त धर्म करवा माटे आश्रय आपनारुं निर्दोष भोजन विगेरे होय; तेज साधुओने आपवानुं छे.

शुं बधा पुरुषोने आ बधुं कहेवुं ? उ०—ना. आवनार पुरुष संबंधी विचार करीने कहेवुं के—आ पुरुष कोण छे ? कोने माने छे ? आग्रहवाळो के, आग्रह रहित छे ? मध्यस्थ छे ? भद्रक छे ? एम बधुं विचारीने यथाशक्ति कहे अने शक्ति होय; तो, पांच अवयव अथवा, बीजी रीते ए प्रसिद्ध करे के, स्वपक्षनी स्थापना थाय; अने पर पक्षनी योग्य रीते भूलो बतावी तेने सुधारे. एवां अनन्य सदृश वचन कहे. पण साधु पोते सामर्थ्य रहित होय; अथवा, सामेनो माणस तत्त्वनी वात संभळावतां वधारे कोपे तेम होय, अथवा, अनुकूळनो प्रत्यनीक होय; तो वाक् गुप्ति (मौन) राखवी ते कहे छे. एटले, साधु बुद्धिमान होय; अने सांभळनार इच्छा

राखे, तो, साधुनो निर्दोष संयम बताववो; पण तेम न होय तो, मौन राखीने पोताना आत्मानुं हित विचारतो पिंड विशुद्धि विगेरे आचारना विषयने उद्गम दोष विगेरेथी दोषित छे के नहि ? एम बीजाथी पूछी लइने सम्यक् शुद्धि विचारे. प्र०—केवो बनीने ?

उ०—आत्म गुप्त ते, सदा पोताना संयममां उपयोग राखनारो बनीने विचरे. आ में नथी कह्यं तेवुं सुधर्मास्वामि कहे छे. 'बुद्धैः' ते कल्प्य अकल्प्यनी विधि जाणनारा तीर्थङ्कर विगेरेए उपर बतावेलुं कह्युं छे. तथा हवे पछीनुं पण तेमनुं कहेलुं छे.

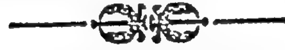
से समणुन्ने असमणुन्नस्स असमणं वा जाव नो पाइज्जा नो निमंतिज्जा नो कुज्जा वेयावडियं परं आढायमाणे त्तिबेमि (सू० २०५)

फक्त, गृहस्थ अथवा कुशीलीया पासेथी अकल्प्य एम जाणीने आहार विगेरे न ले. तेमज, उत्तम साधु ढीला साधुने पूर्वे बतावेल आहार विगेरे पोते पण जे शुद्ध लावेलो होय ते न आपे; अथवा, तेवा पतितो बहु आदरमानथी आहार विगेरे आपे; अथवा बीजी रीते ललचावे; तो पण, तेमनी वैयावच्च न करे; त्यारे पोते केवो बने ? अने कोनी वैयावच्च करे ते कहे छेः—

धम्ममायाणह पवेइयं माहणेण मइमया समणुन्ने समणुन्नस्स असणं वा जाव कुज्जा वेयावडियं परं आढायमाणे (सू० २०६) त्तिबेमि ॥८—२॥

गुरु कहे छे—हे शिष्यो ! तमे केवळी वर्द्धमान स्वामिए कहेला दान धर्मने जाणो, समनोज्ञ साधु ते योग्य विहार करनारो होय ते अपर समनोज्ञ चारित्रधारी संविग्न होय, समाचारीमां रही साथे गोचरी करतो होय, तेवाने अशन विगेरे चार प्रकारनो

आहार, वस्त्र पात्र विगेरे चार प्रकारनुं द्रव्य आपे, तथा ते आपवा माटे निमंत्रणा करे, अथवा पेशल वैयावच्च करे अर्थात् अंगमर्दन (चोळवुं चांपवुं) विगेरे पण करे, पण एथी विरुद्ध आचारवाळा जे गृहस्थो कुतीर्थिओ पासत्थाओ असंविग्न असमनोज्ञ साधुओ होय, तेमने आपे नहि, परंतु समनोज्ञनेज पोते आपे, तथा अतिशे आदर सत्कार करीने तथा ते वस्तु माटे सीदातो होय, अथवा तपेलो होय; तो तेनी योग्य रीते वैयावच्च करे, आथी एम बताव्युं, के गृहस्थ तथा कुशीलीया साधुनी वैयावच्च न करवी, आहार विगेरे न आपवा. पण आटलुं विशेष छे, के गृहस्थ पासे जे कल्पनीय छे ते लेवुं अने अकल्पनीयनोज निषेध छे, पण असमनोज्ञ साधु पासेथी तो सर्वथा लेवानो निषेध कर्यो. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे. विमोक्ष अध्ययनमां बीजो उद्देशो समाप्त थयो.



त्रीजो उद्देशो

बीजो कह्यो पछी त्रीजो उद्देशो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां अकल्पनीय आहार विगेरेनो निषेध कह्यो. तथा तेना निषेधथी अपमान मानीने कोइ कोप करीने मारवा तैयार थाय, तेने दान केवी रीते देवु ते यथावस्थित दान विधिनी प्ररुपणा साधुए करवी, तेम आ उद्देशामां पण आहार विगेरे निमित्त माटे घरमां पेठेला साधुनुं अंग ठंड विगेरेथी कंपतुं देखीने गृहस्थने उलटुं समजाय के आ साधु काम चेष्टादिना कारणे धूजे छे, तेवा गृहस्थने यथावस्थित स्वरुप बतावीने गीतार्थ साधुए तेनी खोटी शंका दूर करवी. आ प्रमाणे आवा संबंधे आवेला उद्देशानुं सूत्रानुगममां सूत्र उच्चारवुं जोइए ते कहे छे.

मज्झिमेणां वयसावि एगे संबुज्झमाणा समुट्ठिया, सुच्चा मेहावी वयणं पंडियाणं निसामिया

समियाए धम्मे अरिएहिं पवेइए ते अणवकंखमाणा अणइवाएमाणा अपरिग्गहेमाणा नो परिग्गहावंती सव्वावंति चणं लोगंसि निहाय दंडं पाणेहिं पावं कम्मं अकुव्वमाणे एस महं अंगथे वियाहिए, ओए जुइमस्स खेयन्ने उववायं चवणं च नच्चा (सू० २०७)

अहीं त्रण अवस्थाओ छे. जुवानी मध्यम वय, अने वृद्धावस्था छे, तेमां मध्यम वयवाळो परिपक्व (स्थिर) बुद्धिवाळो होवाथी धर्मने योग्य छे, ते प्रथम वतावे छे, केटलाक मध्यम वयमां बोधपामेला धर्म चरण माटे तैयार थएला ते समुत्थित जाणवा. जो के युवावस्था के वृद्धावस्थामां दीक्षा लेनारा होय छे, छतां पण, वाहुल्यताथी तथा प्राये मध्यम अवस्थामां भोग तथा कुतूहलनी इच्छा दूर थयेल होवाथी अविघ्नपणे धर्मनो अधिकारी थाय छे. माटे मध्यम वय लीधी छे.

प्र०—केवी रीते बोध पामेला तैयार थया छे? उ०—कहे छे. अहीं त्रण प्रकारना बोध पामनारा जाणवा. (१) स्वयं बुद्ध (२) प्रत्येक बुद्ध, (३) बुद्धबोधित. ते त्रणमां अहीं बुद्धबोधितनो अधिकार छे, ते कहे छे. 'मेघावी' ते मर्यादामां रहेल बुद्धिमान साधु पंडितो (तीर्थङ्कर) विगेरेनुं हित ग्रहण करवुं; अहित छोडवुं; ए वचन प्रथम सांभळीने पछी विचारीने समताने धारण करे.

प्र०—शा माटे? उ०—कारण के समता एटले मध्यस्थपणुं धारीने आर्य तीर्थंकर विगेरे ए प्रकर्षथी श्रुति चारित्ररूप धर्म कह्यो छे. अने मध्यम वयमां तेमणे धर्म सांभळीने बोध पामीने चारित्र लेवा तैयार थयेला छे. ते शुं करे ते कहे छे. तेओ दीक्षा लइने मोक्ष तरफ प्रयाण करी काम भोगोने त्यागी तथा जीवोने दुःख न दइने परिग्रहने धारण न करता विचरे. (पहेलुं छेल्लुं

लेवाथी वचलां त्रण आवे छे.) तेथी जुठ न बोलता चोरीने त्यागी ब्रह्मचर्य पाळता विचरे एवा साधुओ पोताना देहमां पण ममत्व त्यागे छे. एमज बधा लोकने विषे कोइपण जातनो परिग्रह तेओ राखता नथी. (च समुच्चयना अर्थमां छे. अने ते भिन्न क्रम बतावे छे. णं वाक्यनी शोभा माटे छे.) वळी प्राणीओने दंडे ते दंड छे. अने ते दंड बीजा जीवने परिताप करनार छे. ते दंडने प्राणी तरफ अथवा प्राणी विषे, नांखवाथी पाप थाय कर्म बंधाय तेथी ते पाप रुप कर्म ते अढार प्रकारनुं छे. तेने पोते उत्तम साधु आचरतो नथी.तथा बाह्य अभ्यन्तर ग्रन्थ छे तेने त्यागवाथी तेवा साधुने तीर्थङ्कर गणधर विगेरेए अग्रंथ (निर्ग्रन्थ) कह्यो छे.

प्र०—आवो कोण थाय ? उ०—'ओजः ते अद्वितीय एटले रागद्वेष रहित होय छे. तथा द्युतिवाळो एटले संयम अथवा मोक्ष छे तेना खेदने जाणनारो छे. अने ते निपुण होवाथी देवलोकमां पण उपपात च्यवन छे. एम जाणीने विचारे छे के बधां संसारी स्थान अनित्य छे. एवी बुद्धिथी पोते पाप कर्मने वर्जनारो थाय छे. केटलाक पुरुषो तो मध्यम वयमां पण चारित्र लीधेला परिषह तथा इन्द्रियोथी ग्लानता पामे छे. ते बतावे छे.

आहारोवचया देहा परीसहप भंगुरा पासह एगे सव्विदिएहिं परिगिलायमाणेहिं (सू० २०८)

आहारथी उपचय थाय ते आहारोपचय छे.

प्र०—ते कोण छे ? उ०—देहो छे. ते देहो आहारना अभावमां झांखाश लावे छे अथवा ते नाश पामे छे. ते प्रमाणे परिषहो आवेथी भंगुर छे. तेथी आहारथी देहो पुष्ट थया छतां पण परिषहो आवतां अथवा वायु विगेरेना अटकावथी ग्लानी पामे छे. एटले गुरु शिष्यने कहे छे. हे शिष्यो तमे जुओ के केटलाक बधी इन्द्रयो झांखी पडतां कलीबताने पामे छे. ते बतावे छे. भूखथी

पीडाएलो देखतो नथी, सांभळतो नथी, सुंघतो नथी, विगेरे जाणवुं; तेमां आहार विना केवळीनुं पण शरीर ग्लान भाव पामे छे. तो ते सिवायना बीजा जे स्वभावथीज भंगुर शरीरवाळा छे तेनुं शुं कहेवुं ?

प्र०—केवळी विनाना साधुओ अकृतार्थ छे, अने क्षुधा वेदनीयनो सद्भाव छे, तेथी तेओ आहार करे छे अने दया विगेरे महाव्रतो पाळे छे ए मानवुं ठीक छे पण, केवळी तो नियमथी मोक्षमां जनार छे. त्यारे शा माटे शरीरने धारे छे ? अने ते धारण करवा शुं काम खाय छे ?

उ०—तेने पण, चार अघाति कर्मनो सद्भाव छे. तेथी एकांतथी कृतार्थता नथी, अने तेनी खातर शरीर धारे छे ! अने आहार विना तेनुं धारण न थाय; तथा तेमने क्षुधावेदनीय कर्मनो सद्भाव छे माटे खाय छे. ते कहे छेः—वेदनीयना सद्भावथी तेना करेला ११ परिसहो पण, केवळी ने ओछा के बधा परिषहो उदयमां आवे छे तेथी केवळी पण खाय छे. ए सिद्ध थयुं; अने तेथीज आहार विना इन्द्रियोनी ग्लानता छे एम बताव्युं. आ प्रमाणे तत्त्वने जाणनारो परिसहथी पीडातो होय, छतां पण शुं करे ते कहे छेः—

ओए दयं दयइ, जे संनिहाणसत्थस्स खेयन्ने से भिक्खू कालन्ने बलन्ने मायन्ने खणन्ने विणयन्ने समयन्ने परिग्गहं अममायमाणे कालेणुट्ठाइ अपडिन्ने दुहओ छित्ता नियाइ (सू० २०९)

ओज—ते एकलो रागद्वेष रहित बनीने भूख तरसनो परिषह आवे छते पण, दया (कृपा) पाळे (धारण करे) पण परिषहथी पीडातां दया छोडी न दे. प्र०—क्यो पुरुष दयाने पाळे छे ? उ०—जे लघुकर्मा होय ते. जेनावडे सम्यक् रीते नारकी विगेरे

गतिमां रखाय ते) संनिधान कर्म छे, तेना स्वरूपने जणावनार शास्त्र छे, तेनो निपुण खेदज्ञ छे, अथवा संनिधान कर्म छे, तेनुं शस्त्र संयम छे, तेना खेदने जाणनारो छे. अर्थात् संम्यक् संयमनो जाणनारो छे अने जे संयमनी विधि जाणनारो छे, ते भिक्षु काळज्ञ ते उचित अनुचित अवसरनो जाण छे आ बधां सूत्रोनो अर्थ 'लोक विजय' नामना बीजा अध्ययना पांचमा उद्देशामां बतावेल होवाथी त्यांथी जाणी लेवुं; तथा बलज्ञ, मात्रज्ञ क्षणज्ञ, विनयज्ञ, समयज्ञ, बधी बाबतमां निपुण साधु परिग्रहनो ममत्व त्यागीने कालमां उत्थायी तथा अप्रतिज्ञ (कदाग्रह रहित) बनीने उभयथी (द्रव्य भावथी) ममताने छेदनारो बनीने ते साधु संयम अनुष्ठानमां निश्चयथी वर्त्ते; तेने संयमअनुष्ठानमां वर्त्ततां शुं थाय? ते कहे छे:—

तं भिक्खु सीयफासपरिवेवमाणगायं उवसंकमित्ता गाहावई बूया आउसंतो समणा! नो खलु ते गामधम्मा—उव्वाहंति? आउसंतो गाहावई! नो खलु मम गामधम्मा उव्वाहंति, सीयफासं च नो खलु अहं संचाएमि अहियासित्तए, नो खलु मे कप्पइ अगणिकायं उज्जालित्तए वा (पज्जालित्तए वा) कायं आयावित्तए वा पयावित्तए वा अन्नेसिं वा वयणाओ, सिया स एवं वयंतस्स परोअगणिकाय उज्जालित्ता पज्जालित्ता कायं आयाविज्ज वा, पायविज्ज वा, तं च भिक्खू—पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणाए त्तिबेमि [सू० २१०] ॥ ८—३॥

अंतप्रांत आहारथी तेज रहित बनेला निष्किंचन तथा भिक्षाथी निर्वाह करनारा साधुने गरम अवस्थानी युवानी जतां योग्य

वस्त्र ठंड रोकवा जोइए; ते न मळवाथी ठंडथी कंपता शरीरवाळाने नजीक गृहस्थ मळतां शुं थाय? ते कहे छे:—ते गृहस्थ ऐश्वर्यनी गरमीथी अहंकारी छे. कस्तुरीथी लेप कर्यो छे. उत्तम जातिना केसरना जाडा रसथी गात्र लींपेलुं छे. मीन मद आगुरु घन सार धूपित रैल्लिकाथी लेपेला शरीरवाळो छे.अने जुवान सुंदरीओना संदोहथी वींटायेलो छे.अने शीत स्पर्शनो अनुभव जेने नाश पाम्यो छे तेवो शेठीयो तेवा कंपता मुनिने जोइ विचारे के आ मुनि मारी सुंदर स्त्रीओ जे देवांगनानी रुप संपदाने हसी काढे छे, तेने जोइने सात्विक भावने पामेलो धूजे छे के ठंडना लीधे? आवी रीते शंकामां पडेलो शेठ बोले, के हे आयुष्मन्! हे श्रमण! पोताना आत्मानी कुलीनताने प्रकट करतो प्रतिषेध द्वारवडे पूछे छे के तमने शुं इन्द्रियोनी उन्मत्तता दुःख दे छे? आवुं गृहस्थ पूछे तो तेनो अभिप्राय जाणीने साधुए कहेवुं, के आ गृहस्थने पोताना आत्माना अनुभव वडे अंगना (स्त्री)ना अवलोकनना प्रकट करेल भावथी खोटी शंका थइ छे, तो हुं तेनी शंका दूर करुं आवुं विचारी साधु बोले हे आयुष्मन्! हे गृहस्थ! मने इन्द्रियोनी उन्मत्तता नथीज बाधती; पण, तमे मारुं शरीर जे, कंपतुं जोयुं छे, ते फक्त ठंडनुंज कारण छे' पण ते कामदेवनो विकार नथी. अति ठंडनो स्पर्श सहन करवाने हुं शक्तिवान नथी. आ प्रमाणे साधु बोले त्यारे, ते गृहस्थ भक्ति अने करुणा रसथी भिंजायला हृदयवाळो बनीने कहे के:—शीघ्र ठंड उडाडनार सारा बळेला अग्निने केम सेवतो नथी? मुनि कहे:—मने अग्निकाय सेववो कल्पतो नथी; तथा सळगाववो पण कल्पतो नथी; तथा कोइए सळगावेलो होय तो, त्यां थोडो घणो ताप लेवो पण मने कल्पतो नथी; तेम बीजनां वचनथी पण, एम करवुं मने कल्पतुं नथी; अथवा बीजाने अग्नि बाळवानुं कहेवुं पण मने कल्पतुं नथी. ते साधुने आवुं बोलतो जाणीने ते गृहस्थ कदाच आवुं करे ते कहे छे:—

ते गृहस्थ आवुं मुनि पासे सांभळीने (पोतानी भक्तिथी) अग्नि सळगावीने भडको करीने साधुनी कायाने थोडी अथवा घणी
तपावे, ते अग्नि सळगाववो मुनि देखे, ते पोतानी सुबुद्धिथी अथवा तीर्थङ्करना वंचनोथी अथवा बीजा पासे तत्त्व समजीने ते गृह-
स्थने समजावे के आ अग्नि सेववो मने कल्पतो नथी, पण तमे साधु उपर भक्ति अने अनुकम्पाथी पुण्यनो समूह उपार्जन कर्यो छे.

आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे. त्रीजो उद्देशो समाप्त थयो.

चोथो उद्देशो

त्रीजो कह्या पछी चोथो कहे छे. तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे, गया उद्देशामां गोचरी गयेला साधुने ठंडथी शरीर कंपतां गृह-
स्थने खोटी शंका थाय, तो साधुए दूर करवी, पण जो गृहस्थना अभावमां जुवान स्त्रीने साधुना उपर काम चेष्टानी खोटी शंका
थाय, अने कुचालनी इच्छाथी स्पर्श करवा आवे, तो गळे फांसो खाइने अथवा गार्ध पृष्ठ विगेरे आपघातनुं मरण पण स्वीकारवुं;
(पण खोटुं काम करवुं नहिं) आवुं उपसर्गनुं कारण न होय तो आपघात न करवो, ते बतावत्रा आ उद्देशो कहे आ संबन्धे आ-
वेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे.

**जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिए पायचउत्थेहिं तस्स णं नो एवं भवइ—चउत्थं वत्थं जाइ-
स्सामि, से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाइज्जा अपरिग्गहियाइं वत्थाइं धारिज्जा, नो धोइज्जा नो**

धोयरत्ताइं वत्थाइं धारिज्जा, अपलिओवमाणे गामंतरेसु ओमचेलिए, एयं खु वत्थधारिस्स सामग्गियं (सू० २११)

अहीं प्रतिमा धारी अथवा जिनकल्पी जे अछिद्र हाथ (लब्धि) वाळो मुनि जाणवो; कारणके, तेनेज पात्र निर्योग युक्त पात्र, तथा कल्पत्रय (वस्त्रनी) आवी ओघ उपधि होय छे, तेने औपग्रहिक (संथारीउं विगेरे) उपधि होती नथी; तेमां ठंडमां शिशिर विगेरे ऋतुमां क्षौमिक (सूत्रनां) बे कपडां (२॥) हाथ लांबा पहोळां होय छे, अने त्रीजुं उननुं होय छे, तेवा मुनिने ठंड विशेष होय; तो पण, ते साधु बीजुं कपडुं इच्छतो नथी ते बतावे छे. जे भिक्षु त्रण कपडांथी निर्वाह करनारो छे, ते ठंडमां एक कपडुं ओढे छे. जो ठन्ड वधारे लागे; अने सहन न थाय तो, बीजुं ओढे. ते बन्नेथी पण, घणी ठन्डना लीधे न सहाय तो, त्रीजुं उननुं कपडुं पण ते बन्ने उपर ओढे छे. उनना कपडाने बहारना भागमां सर्वथा राखवुं; अंदर तो, सूत्रनुज राखवुं. ए त्रण वस्त्रो केवां छे? ते बतावे छे. 'पात्र चतुर्थैः' पडता आहारने न पडवा दे ते पात्र छे, अने ते पात्र ना लेवाथी पात्रनो निर्योग सात प्रकारनो पण लीधो जाणवो कारण के तेना विना पात्र लेवाय नहीं. ते आ प्रमाणे छेः—

पत्तं पत्ताबन्धो, पायट्ठवणं च पायकेसरिआ। पडलाइ रयत्ताणं च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥ १ ॥

[१] पात्र [२] पात्रानुं बन्ध [३] पात्रानु स्थापन (४) पात्र केशरिका (पूंजणी) (५) पडला (६) रज त्राण [७] गुच्छो आ सात पात्रानो निर्योग छे. आ प्रमाणे सात प्रकारनो पात्र निर्योग तथा कल्प त्रण, तथा रजोहरण [ओघो] मुखवस्त्रिका (मुहपत्ति)

ए पांच मेळवतां बार प्रकारनो उपधि छे. आ बार प्रकारनी उपधि धारण करनारने आवो विचार न थाय, के मने आ ठन्डी रुतुमां त्रण वस्त्रोथी ठन्ड दूर थती नथी, माटे चोथुं वस्त्र हुं याची लावुं. आम अध्यवसायनो निषेध करवाथी याचवुं तो दूरथीज काढी नाख्युं. जो त्रण कल्प न होय, अने ठन्डी रुतु आवी पहोंची, तो आ जिन कल्पी विगेरे मुनि यथा एषणीय [निर्दोष] वस्त्रोनी याचन करे. उत्कर्षण अपकर्षण रहित अपरि कर्मवाळां याचे तेमां [१] उद्दिष्ट, [२] पहे, (३) अंतर, [४] उज्झियधम्मा ए चार वस्त्रनी एषणा छे, तेमां पाछली बेनो अग्रह छे, बाकीनी बे लेवाय छे, तेमां कोइपण एकनो अभिग्रह होय छे. याचना करतां शुद्ध वस्त्रो मळे, तो ले अने जेवां लीधां तेवांज पहेरे, पण, तेने उत्कर्षण के धोवुं विगेरे परिकम्र्म न करे तेज बतावे छे. अचित्त जळ वडे पण न धुए स्थविर कल्पीने तो वर्षाद आव्या पहेला अथवा मंदवाडमां अचित्त पाणीथी यतनाथी धोवानी अनुज्ञा (संमति) छे, पण जिनकल्पीने तेम धोवुं न कल्पे, तेम प्रथम धोइने पछी रंगेलां कपडां होय ते पण न पहेरे, तथा बीजा गामे जतां वस्त्र संताड्या विना चाले, अर्थात् अंत प्रांत (तदन सादां जीर्ण जेवां) वस्त्र धारे; के तेने चोरावाना डरथी ढांकी राखवां न पडे तेथीज जिनकल्पी मुनि अवम चेलिक छे; तेने चेल (वस्त्र) प्रमाणथी तथा मूळथी अवम [ओछी कींमतनुं] होय; तेथी अवम चेलिक छे; ('खु' अवधारणना अर्थमां छे;) आ प्रमाणे वस्त्रधारी जिनकल्पी मुनिने त्रिकल्पवाळी अथवा बार प्रकारनी ओघ उपधिवाळी सामग्रीं होय छे. पण बीजी उपधि न होय; अने ठन्ड दूर थतां ते वस्त्रो पण त्यजी देवानां छे, ते बतावे छे.

अह पुण एवं जाणिज्जा-उवाइक्कंते खलु हेमंते गिम्हे पडिवन्ने अहापरिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठ:

विज्जा अदुवा संतरुत्तरे अदुवा ओमचेले अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले (सू० २१२)

जो, ते वस्त्रो बीजा शीयाळा सुधी चाले तेवां होय, तो बन्ने वखते पडिलेहणा करी धारण करे; अथवा, पासे राखे पण जो जीर्ण जेवां थइ गयां होय तेवुं जाणे तो, ते त्यजी दे ते आ सूत्र वडे बतावे छे. पछी ते साधु एम जाणे के, निश्चे हवे हेमंत ऋतु [शीयाळो] गयो; अने उनाळो आव्यो छे. ठंड पण दूर थइ छे, अने आ वस्त्रो पण जीर्ण थइ गयां छे. एवुं जाणीने ते वस्त्रो त्याग करे. जो बधां जीर्ण थयेलां न होय; तो जे जे जीर्ण होय ते परठवी दे, अने त्यागीने निःसंग थइने विचरे. पण जो शिशिर (पोष माघ) वीत्या पछी कोइ क्षेत्र काळ के पुरुषने आश्रयी शीत (ठन्डी) वधारे लागती होय तो शुं करवुं? ते कहे छेः—शीत जतां वस्त्रो त्यागवां अथवा क्षेत्रादिना गुणथी हिम पडनारो वायरो ठन्डो वाय तो, आत्मानी तुलना तथा ठन्डनी परीक्षा करवा सान्तर उत्तर वस्त्रवाळो थाय. अर्थात् तेमांथी कांइक तो ओढे; कांइक बाजुए राखे पण, ठन्डनी शंकाथी त्यजी न दे. अथवा अवमचेल [ओछां वस्त्रवाळो] ते एक कल्पना त्यागवाथी बे वस्त्र धारण करे, अने धीरे धीरे ठन्ड जतां बीजुं वस्त्र पण दूर करे, तेथी एक साडो (चादर) थी शरीर ढांकनारो बने, अथवा तद्दन शीतनो अभाव थाय तो ते पण त्यजी दे, अने पोते अचेल (वस्त्र रहित) बने एटले तेनी पासे मात्र मुहपत्ति अने रजोहरण (ओघो) ए बेज मात्र उपधि रहे.

प्र०—ए एक वस्त्र पण शा माटे त्यजी दे? ते कहे छे.

लाघवियं आगममाणे, तवे से अभिसमन्नागए भवइ (सू० २१३)

लघुनो भाव लाघव जेने होय ते लाघविक छे, तेवी लाघविक (लघुता) नें पोते धारण करवा एक पण वस्त्र त्यजी दे, अथवा शरीर अने उपकरणना कर्ममां लाघव पणाने पामीने वस्त्र त्याग करे, तेवा त्यागीने शुं थाय? ते कहे छे. ते वस्त्रनो परित्याग करनार साधुने तपनी प्राप्ति थाय छे. कारण के कायाने क्लेश आपवो ते पण बाह्य तपनो भेद छे. कह्युं छे केः—

" पंचहिं ठाणेहिं समणाणं निग्गंथाणं अचेल गत्ते पसत्थे भवति तंजहा,! अप्पा पडिलेहा १
वेसासिए रूवे २ तवे अणुमए ३ लाघवे पसत्थे ४ विउले इन्दियनिग्गहे ५ "

पांच कारणे साधु निर्ग्रंथने अचेलकपणुं प्रशंसवा योग्य छे. [१] अल्पपडिलेहणा (२) विश्वासवाळुं रुप. (३) तपनी अनुमति [४] प्रशस्त लाघव, [५] अतिशे इन्द्रियनो निग्रह आ जिनेश्वरे कह्युं छे ते बतावे छेः—

जमेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमिच्चा । सव्वओ सव्वत्ताए समत्तमेव समभि जाणिज्जा [सू० २१४]

आ बधुं वीर वर्द्धमान स्वामीए कहेलुं छे एम जाणीने बधा प्रकारोथी सर्व आत्माथी सम्यक्त्व अथवा समत्वपणुं धारे, अर्थात् सचेल अचेल अवस्थानी तुलनाने पोते जाणे, अने आ सेवन परिज्ञाथी पालन करे; पण जे साधुनी शक्ति तेवी न होय, तो ते प्रभुनो मार्ग बरोबर न जाणी शके, तो ते साधु हवे जे बतावे छे, तेवा अध्यवसायवाळो थाय ते कहे छे.

जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ-पुट्ठो खलु अहमंसि नालमहमंसि सीयफासं अहियासित्तए,से वसुमं सव्वसमन्नागाय पन्नाणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणयाए आउट्टे तवस्सिणो हु तं सेयं जमेगे

विहमाइए तत्थावि तस्स कालपरियाए सेऽवि तत्थ विअंतिकारए, इच्चेयं विमोहायतणं हियं सुहं खमं निस्सेसं आणुगामियं त्तिबेमि [सू० २१५] ८—४ ॥विमोक्षाध्ययने चतुर्थ उद्देशकः॥

(णं वाक्यनी शोभा माटे छे) जे भिक्षुने मंद संहनना कारणे आवो अध्यवसाय थाय, के हु रोग आतंकथी अथवा ठन्ड विगेरेना कारणे अथवा स्त्री विगेरेना उपसर्गथी मारुं आ शरीर त्यागवुं ते श्रेय छे, पण ठन्ड विगेरेनुं दुःख के भाव ठन्ड ते स्त्री विगेरेनो उपसर्ग सहन करवा हुं शक्तिवान नथी; तेथी, मारे भक्तपरिज्ञा इंगित मरण अथवा पादप उपगमन उत्सर्गथी मरण करवा योग्य छे.पण,मारे आ अवसरे तेवुं करवुं वनी शके तेवुं नथी.कारण के,तेमां अमुक समय सुधी काळ क्षेप करवो जोइए.ते उपसर्ग माराथी सहन थाय तेम नथी; अथवा, रोगथी वेदना घणो काळ सहेवाने हुं शक्तिमान नथी. तो मारे हमणा अपवादनुं वेहानस अथवा गार्द्धपृष्ठ मरण स्वीकारवुं योग्य छे. पण, जे उपसर्गथी पीडायलोहोय ते पाप सेववुं तेने योग्य नथी तेवुं बताववा कहे छेः—

'स' ते साधुने वसु-द्रव्य (संयम) छे, ते संयमवाळो होय ते वसुमान् छे. तेने अनुक्रमे सिद्धांतनुं ज्ञान माप्त थवा छतां, कोइ स्त्रीना कटाक्षनो उपसर्ग संभव थतां पण. ते न सेववाथी 'आवृतो' (आ समंतात् व्यवस्थित चारे बाजुथी मर्यादामां रहेलो ते) आवृत छे, अथवा वायु विगेरेथी थयेल ठन्डो स्पर्श जे दुःख आपनार छे, तेनी चिकित्सा न करवाथी वसुमान् सिद्धांतथी माप्त करेल ज्ञानवाळा आत्मा वडे व्यवस्थित छे, तेवो उपसर्ग आवतां वायु विगेरेनी ठन्डी वेदनाने सहन न करी शकवाथी शुं करे ? ते कहे छे. ('हु' अव्यय हेतुना अर्थमां छे.) जेथी, घणो काळ वायु विगेरेनी ठन्डी वेदनाने सहन न करी शकवाथी अथवा, जे कारणथी

युवा स्त्री उपसर्ग करवा आवेली छे, ते विष भक्षणथी के, फांसो खाइने मरवानुं बताव्या छतां पण न मुके; तेथी, ते तपस्वीए घणो काळ जुदा जुदा उपायो वडे करेली तपस्याना धनवाळा साधुने मरवुं तेज श्रेय छे, जेमके कोइ साधुने तेना सगांए स्त्रीवाळा ओरडामां प्रवेश कराव्यो; अने प्रेमवाळी पत्नीए घणीवार प्रार्थना कर्या छतां साधुए धैर्य राख्युं. पण अंते नीकळवानो बीजो उपाय न जोवाथी फांसो खाधो, तेम फांसो खावा माटे उंचे लटकवुं, अथवा विष भक्षण करवुं, अथवा उंचेथी पडवुं, तेज प्रमाणे घणो काळ ठन्ड विगेरे सहन न थवाथी सुदर्शन माफक प्राण त्यागवा. शंका—फांसो खावो विगेरे बाळ मरण छे, अने ते अनर्थ माटे छे, त्यारे तेनो केवी रीते तमे उपदेश कर्यो? कारण के सिद्धांतमां कह्युं छे केः—

" इच्चेएणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ जाव अणाइयं चणं अणवयग्गं चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो भुज्जो परियट्टइत्ति "

उ०—आ दोष अमारा अर्हत (जिनेश्वर) ना मतमां नथी, कारण के कंइपण एकांतथी निषेध कर्यो छे, के स्वीकार्युं छे, तेवुं नथी फक्त एक मैथुनमां जुदुं छे; अने सिवाय दरेकमां द्रव्य क्षेत्र काळ भावने आश्रयीने जे प्रथम निषेध कर्यो हतो, तेज स्वीकाराय छे, उत्सर्ग मार्ग पण कोइ वखत अगुण (नुकशान) माटे छे अने अपवाद पण गुणने माटे काळ [समय] जाणनारा साधुने थाय छे, तेज बतावे छे. दीर्घ काळ संयम पाळीने संलेखना विधि ए काळना पर्यायवडे भक्तपरिज्ञा विगेरेनुं मरण गुणने माटे छे, अने स्त्री विगेरेना उपसर्गमां वेहानस गार्धपृष्ठ विगेरेथी मरण थाय तेमां काळ पर्यायज छे. अर्थात् जेवी रीते भक्त परिज्ञा विगेरेनुं मरण गुणवाळुं छे, तेम आ काळ पर्यायना मरण जेवुं वेहानस विगेरे मरण लाभदायी छे. घणा काळ पर्यायमां जेटलुं

कर्म आसाधु खपावे छे, तेटलुंज आवा समयमां थोडा काळमां कर्म क्षय करी नाखे छे ते बतावे छे. 'सोऽपि' वेहानस विगेरेथी मरनारो पण फक्त भक्त परिज्ञा विगेरे करनारो नहि पण आ साधु वेहानस विगेरे मरणमां ('वि॰अंति कारएति') विशेष प्रकारे अन्तक्रिया करनारो ते व्यन्तिकारक छे तेवाने तेवा समयमां वेहानसादि मरण उत्सर्गज मार्ग छे. कारणके, आवुं अकाळ मरण जे अपवाद रुप छे, तेना वडे मरेला अनन्ता सिद्धो पूर्वे थया अने थशे. उपसंहार करवा कहे छे के, आ उपर बतावेलुं वेहानस विगेरे मरण मोह दूर थयेला साधुओनी कर्त्तव्यताथी आयतन [आश्रय] छे अने अपाय दूर करतुं होवाथी हित छे. जन्मांतरमां पण सुख आपनार होवाथी सुख छे. तथा काळ आवेलो होवाथी क्षम (युक्त) छे. तथा, कर्म क्षय करनार होवाथी निःश्रेयस छे. तथा, पुण्यनो अनुगम उपार्जन करवाथी आनुगमिक छे, आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छेः—

चोथो उद्देशो समाप्त.



पांचमो उद्देशो

चोथो उद्देशो कहीने हवे पांचमो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबन्ध छे गया उद्देशामां गार्धपृष्ठ विगेरे बाळमरण बताव्युं पण आ उद्देशामां तो तेथी उलटुं भक्तपरिज्ञानामनुं मरण ग्लान भाव पामेला साधुए स्वीकारवुं ते कहे छे. तेथी आ संबन्धे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

जे भिक्खू दोहिं वत्थेहिं परिवुसिए पायतइएहिं तस्स णं नो एवं भवइ तइयं वत्थं जाइस्सामि, से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाइज्जा जाव एवं खु तस्स भिक्खुस्स सामग्गियं, अह पुण एवं जाणिज्जा–उवाइक्कंते खलु हेमंते गिम्हे पडिवण्णे, अहापरिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठविज्जा, अहापरिजुन्नाइं परिट्ठवित्ता अदुवा संतरुत्तरे अदुवा ओमचेले अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले लाघवियं आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए भवइ जमेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमिच्चा सव्वओ सव्वत्ताए सम्मतमेव समभिजाणिया, जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ–पुट्ठो अबलो अहमसि नालमहमंसि गिहंतरसंकमणं भिक्खायरियं गमणाए, से एवं वयंतस्स परो अभिहडं असणं वा ४ आहट्टु दलइज्जा, से पुव्वामेव आलोइज्जा–आउसंतो ? नो खलु मे कप्पइ अभिहडं असणं ४ भुत्तए वा पायए वा अन्ने वा एयप्पगारे (सू० २१६)

तेमां त्रण कल्पमां रहेल स्थविरकल्पी अथवा जिनकल्पी मुनि होय, पण बे कल्प (वस्त्र) धारण करनार अवश्ये जिनकल्पी होय, अथवा परिहार विशुद्धिक अथवा यथालंदिक के प्रतिमाधारी तेमांनो कोइ पण होय, आ सूत्रमां बतावेल जे जिनकल्पी विगेरे बे वस्त्रो धारण करनारो होय, आमां वस्त्र शब्द सामान्यथी लीधो छे, माटे एक सुतनुं बीजुं उननुं एम बे वस्त्र धारण करी संय-

ममां रहेल छे, केवां बे कल्प वस्त्र छे? उ०—पात्र तीजुं धारण करेलो, साधु छे. ते बधुं पूर्वना सूत्र प्रमाणे जाणवुं, ते ठन्डथी पीडाया सुधीनुं जाणवुं, ते प्रमाणे अहीं कहे के हुं वायु विगेरेना रोगथी पीडायेल निर्बळ होवाथी एक घरथी बीजे घेर जवा असमर्थ छुं तेथी भीक्षा माटे जवा हुं अशक्त छुं आवुं बोलनार साधु पासे कोइ गृहस्थ उभो होय, ते साधुनुं बोलवुं सांभळीने अथवा बोल्या विना पण तेने अशक्त देखीने पर (बीजो) गृहस्थ विगेरे अनुकम्पा तथा भक्तिना रसथी कमळ हृदयवाळो बनीने अभिहृत ते जीवोने दुःख दइ बनावेलुं अशन पान खादिम स्वादिम लावीने ते साधुने आपे, ते समये ग्लान साधुए सूत्रार्थने अनुसारे जीवितने नहि वांछतां मरवुं वहेतर! एम विचारीने तेणे शुं करवुं ते कहे छे, पूर्वे बतावेला जिन कल्पी विगेरे चारेमांथी कोइ पण एक साधुए प्रथम विचारवुं, के उद्गम विगेरे क्या दोषथी आ दूषित छे? तेमां अभ्याहृत जाणीने तेनो निषेध करवो, ते आ प्रमाणे हे आयुष्मन्! हे गृहपते! आ मारा सामे आणेलुं अशन खावाने, पाणी पीवाने अथवा तेवुं बीजुं आधाकर्म विगेरे दोषथी दुष्ट अमने कल्पतुं नथी, आ प्रमाणे ते दान आपता गृहस्थने समजावे, बीजो प्रतिमां—

"तं भिक्खुं कोइ गाहावई उवसंकमित्तु बूया, आउसंतो समणा! अहन्नं तव अट्ठाए असणं वा ४ अभिहडं दलामि, से पूव्वामेव जाणेज्जा—आउसन्तो गाहावई! जन्नं तुमं मम अट्ठाए असणं वा ४ अभिहडं चेतेसि णोय खलु मे कप्पइ एयप्पगारं असणं वा ४ भोत्तए वा पायए वा अन्ने वा तहप्पगारेत्ति"

आमां पण तेज पाठ छे के कोइ गृहस्थ साधु पासे आवीने कहेके हुं तमारे माटे चार प्रकारनो आहारमांथी कोइ पण सामे लावीने आपुं! ते साधु प्रथमथी जाणे तो कहे के गृहस्थ! तुं मारे माटे कंइ पण सामे लावीने आपे तो मने खावा पीवाने कल्पे

नहि, तेम तेवुं बीजुं पण न कल्पे.

आ प्रमाणे निषेध करेलो पण श्रावक सम्यग्दृष्टि प्रकृति भद्रक अथवा मिथ्यादृष्टिमांथी कोइ पण दयाळु एवुं चिंतवे, के आ ग्लान साधु भिक्षा लेवा जवाने अशक्त छे, तेम बीजाने लाववा पण कही शके नहि, माटे तेणे निषेध कर्यां छतां पण हुं कोइ बहाने लावीने आपीश ए प्रमाणे विचारीने आहार विगेरे एम लावीने आपे, तो ते समये साधुए ते आहारने अनेषणीय (अयोग्य) छे, एम विचारीने ते गृहस्थने निषेध करवो. वळी—

जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्पे—अहं च खलु पडिन्नत्तो अपडिन्नत्तेहिं गिलाणो अगिलाणेहिं अभिक्खं साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं साइज्जिस्सामि, अहं वावि खलु अपडिन्नतो पडिन्नत्तस्स अगिलाणो गिलाणस्स अभिकंख साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए आहट्टु परिन्नं अणुक्खिस्सामि आहडं च साइज्जिस्सामि १, अहट्टु परिन्नं आणक्खिस्सामि आहडं च नो साइज्जिस्सामि २, आहट्टु परिन्नं नो आणक्खिस्सामि आहडं च सा इज्जिस्सामि ३, आहट्टु परिन्नं नो आणक्खिस्सामि आहडं च नो साइज्जिस्सामि ४, एवं से अहाकिट्टियमेव धम्मं समभिजाणमाणे संते विरए सुसमाहियलेसे तत्थावि तस्स कालपरियाए से-

तत्थ विअंतिकारए, इच्चेयं विमोहाययणं हियं सुह खमं निस्सेसं आणुगामियं त्तिबेमि (सू० २१७) ॥८-५॥ विमोक्षाध्ययने पंचम उद्देशकः ॥

(णं वाक्यनी शोभा माटे छे) जे भिक्षु परिहार विशुद्धि चारित्रवाळो अथवा यथालंदिक होय, तेने हवे पछी कहेवातो प्रकल्प (आचार) छे, ते आ प्रमाणे (खलु वाक्यनी शोभा माटे, च समुच्चयना अर्थमां छे) हुं बीजाए करेली वैयावच्चनी अभिलाषा राखीश, हुं केवो छुं? प्रतिज्ञप्त वैयावच्च करवाने बीजाए कहेलो छुं अर्थात् तेओ कहे छे, के अमे तमारी वैयावच्च यथा उचित करीए, ते बीजा केवा छे!

प्रः—अप्रतिज्ञप्त न कहेला; हुं केवो छुं? उः—विकृष्ट तपवडे कर्तव्यतामां अशक्त छुं अथवा वायु विगेरे रोकावाथी ग्लान छुं बीजा कहेनारा केवा छे? अग्लान छे, उचित कर्तव्य करवाने शक्तिवान छे, तेमां परिहार विशुद्धि चारित्रवाळा तप करनारनी अनुपारिहारिक (वैयावच्च करनार) सेवा करे छे, ते वैयावच्च करनार कल्पमां रह्यो होय, अथवा बीजो पण होय, हवे जो ते सेवा करनार पण ग्लान (मांदा) होय, तो ते बीजानी वैयावच्च न करे, ए प्रमाणे यथालंदिक साधुनुं पण जाणवुं, पण एटलुं विशेष के स्थविरकल्पी साधु पण तेनी सेवा करी शके छे, ते बतावे छे.

निर्जराने हृदयमां विचारीने सरखा कल्पवाळा साधर्मिक अथवा एक कल्पमां रहेला बीजा साधुओथी करायेली वैयावच्चने हुं इच्छीश जेनो आ आचारछे, ते तेवा आचारने पाळतोभक्त परिज्ञावडे पण जीवितने छोडे, पण आचारनुं खंडन न करे आ भावार्थछे;

तेज प्रमाणे अन्य साधर्मिक वडे करायेलुं वैयावच्च अनुमति आपेलुं छे. हवे बीजानी वैयावच्च पोते करे ते बतावे छे (च समुच्चयना अर्थमां अने अपि पुनःना अर्थमां छे अने ते पूर्वना कहेवाथी कंइ विशेष बताववा माटे छे. खलु शब्द वाक्यनी शोभा माटे छे) अने हुं अप्रतिज्ञप्त कहेवायेलो छुं अने जे बीजो प्रतिज्ञप्त वैयावच्च न करवाने माटे कहेवायेलो छे ते ग्लान साधुनी हुं अग्लान (साजो) छु माटे निर्जराने उद्देशीने तेवा कल्पधारी साधार्मिक साधुनी वैयावच्च करुं;

प्र०—शा माटे? तेना उपकार [शांति] ने माटे तेथी आ प्रमाणे प्रतिज्ञा करीने पण भक्त परिज्ञाए प्राणोने छोडे पण प्रतिज्ञानुं खंडन न करे, [आ सूत्रनो परमार्थ छे] हवे प्रतिज्ञा विशेषना द्वारवडे चोभंगी कहे छे. कोइ एक आवी प्रतिज्ञा करे छे के हुं बीजा ग्लान साधर्मिक साधुने आहार विगेरे लावी आपीश, तथा हुं वैयावच्च पण योग्य रीते करीश, तथा अपर [बीजा] साधर्मिके आणेण आहार विगेरेने वापरीश; आ प्रमाणे प्रतिज्ञा करीने वैयावच्च करे (१) तथा बीजो साधु आवी प्रतिज्ञा करे के हुं बीजा माटे गोचरी विगेरे शोधीश, पण बीजानो आहार विगेरे लावेलो खाइश नहि, (२) त्रीजो आवी प्रतिज्ञा करे के हुं बीजाने निमिते आहार विगेरे शोधीश नहि पण बीजानो लावेलो खाइश;[३]चोथो आ प्रमाणे प्रतिज्ञा करे,हुं बीजाने निमिते आहार विगेरे शोधीश नहि, तेम बीजानुं लावेलुं खाइश पण नहि [४] आ प्रमाणे जुदी जुदी प्रतिज्ञाओ करीने कोइ जग्याए ग्लायमान (मांदो) पण थाय तो पण जीवितने त्याग करे, पण प्रतिज्ञानो भंग न करे. हवे आ विषयने संपूर्ण करवा कहे छे. आ प्रमाणे कहेली विधि ए तत्वने जाणनारो ते साधु शरीर विगेरेनो मोह छोडनारो बनीने यथाकीर्तित धर्मनेज बरोबर जाणीने आसेवन परिज्ञावडे पालतो तथा लाघविकने इच्छतो विगेरे चोथा उद्देशामां जे कह्युं, ते अहिं बधुं जाणी लेवुं, तथा पोते कषायना उपशमथी शांत छे, अथवा अनादि

संसारमां पर्यटन करवाथी श्रांत छे, ते सावद्य अनुष्ठानथी विरत छे, शोभन लेश्या ते जेणे अंतःकरणनी निर्मळवृत्ति तेजोलेश्या विगेरे धारण करवाथी तेसुसमाहृत लेश्यावाळो छे, आवो बनीने पूर्वे कहेली प्रतिज्ञा लइने पाळवामां समर्थ छे, ते तप अथवा रोगना कारणे ग्लान भावने पामेलो होय, छतां पण ते पोतानी प्रतिज्ञानो लोप न करतो शरीर त्यागवा भक्त प्रत्याख्यान करे, अने ते भक्त परिज्ञामां पण काळ पर्यायवडे अनागत् परिज्ञा (बार वर्षनी संलेखनानो समय नथी, तेमां पण काल पर्याय छे, जेणे शिष्योने भणावी गणावी तैयार कर्या होय, अने तप वडे संलिखित देहवाळो होय तेनो जे काळ पर्याय मृत्युनो अवसर प्रशंसवा योग्य छे, तेवो आ ग्लान थयेला कल्पधारीने पण एज अवसर छे. कारण के बन्नेमां कर्मनी निर्जरा समान छे, ते कल्पधारी भिक्षु ग्लानपणाथी अणशननां विधानमां व्यन्तिकारक कर्म क्षय करनारो छे बाकीनुं बधुं पूर्व माफक जाणवुं पांचमो उद्देशो समाप्त.



छट्ठो उद्देशो

पांचमो कह्यो पछी छट्ठो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां बताव्युं, के ग्लान साधुए भक्त प्रत्याख्यान करवुं, अने आ उद्देशामां बतावशे के धृतिसंहनन विगेरेथी बळवाळो साधु एकत्व भावनाने भावीने इंगित मरण करे आ संबंधे आवेला आ उद्देशानुं पहेलुं सूत्र कहे छे.

जे भिक्खु एगेण वत्थेण परिवुसिए पायबिईएण, तस्स णं नो एवं भवइ बिइयं वत्थं जाइ-

स्सामि, से अहेसणिज्जं वत्थं जाइज्जा अहापरिग्गहियं वत्थं धारिज्जा जाव गिम्हे पडिवन्ने अहापरिजुन्नं वत्थं परिट्ठविज्जा. २ त्ता अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले लाघवियं आगममाणे जाव समत्तमेव समभिजाणिया (सू० २१८)

जिनकल्पी विगेरे जे साधुने एवो अभिग्रह होय के मारे एक वस्त्र धारण करवुं अने बीजुं पात्र राखवुं तेवा उत्तम साधुने मनमां एम न आवे, के बीजुं वस्त्र याचुं. ते पोताने जरुर पडतां फक्त ठन्डी ऋतुमां एकज निर्दोष वस्त्र याची लावे, अने विधि प्रमणे लावी पहेरे, पण ज्यारे उनाळो आवे, त्यारे जुनुं वस्त्र जीर्ण थवाथी तेने परठवी दे, पण बीजा शीयाळामां चाले तेवुं होय तो पोते ते एक साटक (चादर) ने धारण करे, अने जीर्ण वस्त्र परठवी दीधुं होय, तो पोते वस्त्र रहित थइने विचरे, ते स्थिर मति-वाळा साधुनुं आ लाघवपणुं आगम अनुसारे होवाथी सम्यक्त्व अथवा सर्व प्राणी उपर समभावपणुं के रागद्वेष रहित पणुं जाणवुं तथा ते साधुने लघुता होवाथी तेने एकत्व भावनानो अध्यवसाय थाय ते बतावे छे.

जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—एगे अहमंमि न मे अत्थि कोइ न याहमवि, कस्सवि, एवं से एगागिणमेव अप्पाणं समभिजाणिज्जा, लाघवियं आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए भवइ जाव समभिजाणिया (सू० २१९)

(णं वाक्यनी शोभा माटे छे) जे साधुने आवो विचार थाय के " हुं एकलो छुं, संसारमां भ्रमण करतां परमार्थ दृष्टिए जोतां मने उपकार करनार बीजो कोइ नथी, अने हुं पण बीजा कोइना दुःखने दूर करवामां सहायक नथी, कारण के पोताना करेलां कर्मनुं फळ भोगववामां सर्व जीवोने इश्वर [समर्थ] पणुं छे " आ प्रमाणे आ साधु पोताना आत्माने अन्तरदृष्टिए सम्यग् रीते एकलो जाणे; अने आ आत्माने नरक विगेरेनां दुःखोथी बचाववा शरण आपवा योग्य बीजो नथी, एवुं मानतो होय ते पोताने जे जे रोग विगेरे दुःख देनारां कारणो आवे, त्यारे बीजाना शरणनी उपेक्षा करतो "में कर्युं छे माटे मारेज भोगववुं" आवो निश्चळ विचार करीने सम्यग् रीते भोगवे छे.

प्र०—ते केवी रीते एम समताथी सहन करे ? उ०—लाघविय विगेरे चोथा उद्देशा २१५ सू०मां बताव्युं ते " समत्वपणुं जाणवुं " त्यांसुधी जाणवुं, के आ साधुने कर्मनी लघुता थवाथी आ लोक परलोक बन्नेमां हित सुख निश्रेयस माटे थाय छे अने परंपराए मोक्ष फळ आपनार छे—तेथी तेणे एकत्वभावना भाववी आ अध्ययनना बीजा उद्देशामां उद्गम उत्पादन एषणा बतावी ते आ प्रमाणे "आउसंतो समणा ! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा ४" विगेरे सू० २०२मां बताव्युं ते प्रमाणे पांचमां उद्देशामां ग्रहण एषणा बतावी; "सीया य से एवं वयं तस्सवि परो अभिहडं असणं वा ४ आहट्टु दलएज्जा इत्यादि [सूत्र २१६मां वचमां आ पाठ छे] आ सूत्रवडे ग्रास एषणा बतावी तेने हवे पछीना सूत्रमां विशेषथी बताववा सूत्र कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा असणं वा ४ आहारे माणे नो वामाओ हणुयाओ दाहिणं

हणुयं संचारिज्जा आसाएमाणे, दाहिणाओ वामं हणुयं नो संचारिज्जा आसाएमाणे, से अ-णासायमाणे लाघवियं आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए भवइ, जमेयं भगवया पवेइयं तमेवं अभिसमिच्चा सव्वओ सव्वत्ताए समत्तमेव अ (सम) भिजाणीया (सू० २२०)

ते पूर्व बतावेलो साधु अथवा साध्वी अशन विगेरे आहार उद्गम उत्पादन एषणाथी शुद्ध अने मत्युत्पन्न ते ग्रहण एषणा शुद्ध एटले १६ गृहस्थ दान देनारना तथा सोळ लेनारना तथा दश बन्नेना भेगा मळी कुल ४२ दोषथी रहित आहार लावीने गोचरी करतां जे पांच दोष अंगार धूम विगेरे छे तेने वर्जीने आहार करे, ते अंगार अने धूम रागद्वेषना कारणे थाय छे, तेमां पण सरस नीरस आहार आवे तो रागद्वेष थाय छे, अने कारणनो अभाव थतां कार्यनो पण अभाव छे, एम जाणीने रसनी उपलब्धि [स्वाद]नुं निमित्त त्यजवानुं बतावे छे. ते साधु आहार करतां डावी बाजुथी जमणी बाजु स्वाद लेवा माटे भोजन विगेरे न लइ जाय तेज प्रमाणे स्वाद लेवा जमणी बाजुथी डावी बाजु न लइ जाय कारणके संसारना स्वादथी रसनी प्राप्तिमां रागद्वेषनुं निमित्त छे, अने तेथीज अंगार,तथा धूम दोष लागे छे, जेथी उत्तम साधु साध्वीए जे कंइ स्वादिष्ट होय तेनो स्वाद न करवो बीजी प्रतिमां "आढायमाणे" पाठ छे, तेनो अर्थ आ छे, के "आहारमां आदरवाळो मूर्च्छावाळो गृद्ध बनीने आहारने आम तेम न फेरवे"

हनु (हडपची)मां आम तेम डावी जमणीमां न फेरववुं, तेम बीजे पण स्वाद लेवो नहि ते बतावे छे. 'स' ते साधु चारे प्रकारना आहारने वापतो रागद्वेष छोडीने खाय, तेज प्रमाणे कोइ निमित्तथी डावी जमणी बाजु आहार फेरववो पडे तो पण पोते

स्वाद कर्या विना फेरवे. प्रः—शा माटे ! उः—आहारनी लाघवताने स्वीकारतो आस्वाद न करे, आ प्रमाणे आस्वादना निषेधथी अंतप्रांत आहारनो स्वीकार पण कहेलो समजवो. आ प्रमाणे स्वाद न करवाथी ते साधुने कर्मनी बहोळी निर्जरा थाय छे, ते बधुं पूर्व माफक छे, समपणु समत्वने पामे अथवा सम्यक्त्व निश्चळ थाय ए बधुं पूर्व माफक समजवुं. तेवा उत्तम साधु अथवा साध्वीने अंत प्रांत आहार खावाथी मांस लोही ओछा थवाथी जर्जरीत हाडकां थवाथी संयम अनुष्ठान शरीरथी बरोबर न थवाथी खेद थाय, तेवी कायचेष्टावाळाने शरीर त्यागवानी बुद्धि थाय, ते बतावे छे.

जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ–से गिलामि च खलु अहं इमंमि समए इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए, से अणुपुव्वेणं आहारं संवट्टिज्जा, अणुपुव्वेणं आहारं संवट्टिता, कसाए पयणुए किच्चा समाहियच्चे फलगावयट्ठी उट्ठाय भिक्खु अभिनिवुडच्चे (सू० २२१)

एकत्वभावना भावनार जे साधुने आहार उपकरणमां लाघवपणुं प्राप्त थयुं होय, तेने आवो अभिप्राय थाय छे, (से शब्दनो अर्थ तत् छे अने ते वाक्यना उपन्यास माटे छे, च समुच्चयना अर्थमां छे, खलु अवधारणना अर्थमां छे) के हुं आ संयमना अवसरमां लुखा आहारथी अथवा रोग उत्पन्न थवाथी पीडाइने ग्लानि पामी अशक्त थयो छुं, लूखा आहारथी के तपथी शरीर अशक्त थवाथी अनुपूर्विए योग्य रीते आवश्यक क्रिया के प्रतिलेखना विगेरे क्रिया करवामां अशक्त बनी गयो छुं. अने शरीर दरेक क्षणे नबळुं पडतुं होवाथी एक बे उपवास के आंबील तप वडे आहारनो संक्षेप करे. अर्थात् साजा शरीरमां बार वर्ष सुधी अनुक्रमे थोडा

घणा तपे संलेखना थती होय, ते अहीं ग्रहण न करें; पणं ग्लान साधुने तेटलो काळ स्थिति न रहे, माटे तेवी टुंका काळनी अनुपूर्वी वाळी द्रव्य संलेखना माटे आहारने रोके, आवी द्रव्य संलेखना करीने बीजुं शुं करे ? ते कहे छेः—

बे त्रण चार पांच उपवास विगेरेनो अनुक्रमे तप करीने आहारनो संक्षेप करे, अने कषायोने ओछा करीने शरीरनो मोह छोडे. कषायो हंमेशां ओछा करवा जोइए, पण आ संलेखनामां तो अवश्ये विशेष प्रकारे ओछा करवा. एथी तेमने विशेपथी ओछा करी सम्यक्प्रकारे स्थापन कर्युं छे. शरीर (अर्चा) जेणे तेवो मुनि " समाहित अर्च " छे. (नियमित कायना व्यापारवाळो छे,) अथवा अर्च्या ते लेश्या छे, ते लेश्याने सम्यक् रीते स्थापी छे माटे अति विशुद्ध अध्यवसाय वाळो पोते बन्यो छे, अथवा अर्च्या ते क्रोधादि अध्यवसाय रुप ज्वाळाने शांत करवाथी समाहित अर्च्या वाळो छे, तेवा साधुए कर्म क्षय रुप फळ (तेने क मत्यय लगाडवाथी फलक थयुं) ने संसार भ्रमण रुप आपदामां अर्थ (मयोजन वाळो छे माटे ते फळक आपद्अर्थी कहेवाय छे. अथवा फलक (पाटीया)ने बंने बाजुथी वांसला विगेरेथी सरखुं करवा छोले तेम अहीं बाह्य अभ्यंतर अवकृष्ट थवाथी [आर्ष वचन प्रमाणे विग्रह करतां] ' फलगावयट्ठी ' छे, अथवा दुर्वचन [महेणां] रुप वांसलाथी छोलवा छतां कषायना अभावथी फलक माफक रहे छे, तेवा स्वभावथी पोते ' फलकावस्थायी ' छे, अर्थात् पोते ' वासी चन्दन कल्प ' जेवो छे, [आ प्रमाणे मागधी सूत्रना अर्थ कर्या, कर्म क्षय रुप फळनो अर्थी, ते संसार भ्रमणनी आपदामांथी छुटवानो अर्थी, तथा क्रोधादिना ओछा थवाथी पाटीया जेवो मध्यस्थ रागद्वेष रहित बताव्यो] आवो उत्तम साधु प्रतिदिन साकार भक्त मत्याख्यान वाळो छे अने घणो वळवान रोग आवतां शीघ्र मरण नो उद्यम करनार बनो अभि निवृत्त अर्च्चवाळो एटले शरीर संताप रहित बने, धैर्य तथा संघयण विगे-

रेथी मुक्त होय, ते महा पुरुषोए आचरेला इङ्गित मरण ने स्वीकारे. प्र० केवी रीते ? ते कहे छे.

अणुपविसित्ता गामं वा नगरं वा खेडं वा कब्बडं वा मडंबं वा पट्टणं वा दोणमुहं वा आगरं वा आसमं वा सन्निवेसं वा नेगमं वा रायहाणिं वा तणाइं जाइज्जा तणाइं जाइत्ता से तमायाए एगंतमवक्कमिज्जा, एगतमवक्कमित्ता अप्पंडे अप्पपाणे अप्पबीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पोदए अप्पुतिंगपणगदगमट्टियमक्कडासंताणए पडिलेहिय २ पमज्जिय २ तणाइं संथरिज्जा, तणाइं संथरित्ता इत्थ विसमए इत्तरियं कुज्जा, तं सच्चं सच्चवाई ओएतिन्ने छिन्न कहं कहे आईयट्ठे अणाईए चिच्चाण भेउरं कायं संविहूय विरूवरूवे परीसहोवसग्गे अस्सिविस्सं मणयाए भेरव मणुचिन्ने तत्थावि तस्स काल परियाए जाव अणुगामियं तिबेमि (सू० २२२) ॥८–६॥ विमोक्षाध्ययने षष्ठ उद्देशकः

बुद्धि विगेरे गुणोनो ग्रास करे अथवा अढार करो ज्यां लेवाय ते गाम छे, (बधी जग्या एवा शब्दनो अर्थ गुजरातीमां अथवा लेवो) ज्यां कर न होय ते न कर (नगर) छे, धूळना ढगलाथी कोट बनाव्यो होय ते खेट (खेडु) छे, नाना कोटथी वीटायेलुं ते कर्बट छे, २॥ गाउने आंतरे गाम होय ते मडंब छे, पत्तन (पाटण) बे प्रकारे छे. जल पत्तन ते कानन द्वीप विगेरे छे,

स्थळ पत्तन ते मथुरा छे, द्रोण मुख ते जळ के स्थळ मार्गे नीकळवा तथा पेसवाना रस्ता होय जेमके भरुच खंभात [बंदर] छे सोना चांदी विगेरेनी खाणने अकर छे, तापस विगेरेनो मठ ते आश्रम [आश्रय] छे, यात्रा निमित्ते मळेलां माणसोनो ज्या जमाव थतो होय ते संनिवेश छे, घणा वाणीया [वेपारी] नुं रहेठाण ते "नैगम" छे, राजाने रहेवानुं नगर ते राज्यधानी छे. आमांथी कोइपण जग्याए जइने घासनी याचना करे.

प्र०—शा माटे ? उ०—पोताने संथारो करवा माटे सुकुं निर्जीव घास दर्भ वीरण विगेरेने कोइ गाम विगेरेमां जइने तेना मालिकनी आज्ञा लइने पोलुं सडेलुं लीलुं छोडीने सुकुं घास ले, ते लइने घास एकांत स्थळ पहाडनी गुफा विगेरेमां जइ महा स्थंडिल शोधे ते कहे छे, जेमां कीडी विगेरेनां इन्डां न होय, जेमां बे इन्द्रिय जीवो न होय, तथा नीवार श्यामाक विगेरे बीजो न होय, तथा लीलुं घास दरो विगेरे न होय, तथा उपर के अंदर ठारनुं पाणी पडेलुं न होय [अर्थात् छांटा पडेला न होय,] तथा वरसादनुं के नीचेनुं पाणी तेमां पडेलं न होय, तेज प्रमाणे कीडीयारुं, पांच वर्णनी सेवाळ, तुर्तनी पाणीथी पलाळेली माटी करोळीयानां जाळां रहित निर्दोष जग्या होय, तेवा महा स्थंडिलमां घासने पाथरे. प्र०—केवी रीते ? ते कहे छे. ते जग्याने आंखथी बरोबर जोइनेपछी रजोहरणथी बरोबर पूंजीने[दरेकमां बबे वार लेवानुं कारण बरोबर जुए]संथारो पाथरीने झाडा पेशाबनी जमिन बरोबर जोइने पूर्व दिशाना मोढे संथारा उपर बेसी हथेळी अने ललाटमां रजोहरण फसावीने सिद्ध भगवन्तने नमस्कार करीने पञ्चपरमेष्ठिने याद करी (अपि शब्दनो अन्यत्र अर्थ छे) समयमां मुकरर करेला स्थानना इङ्गित मरण करे, (इत्वर शब्दनो अर्थ पादपोपगमननी अपेक्षा माटे छे तेथी) पादपोपगमन अणसण अथवा करे, (पण इत्वरनो अर्थ साकार अमुक काळ

सुधीनुं एवो अर्थ न लेवो) कारण के जिन कल्पी विगेरे मुनिने बीजा काळमां पण साकार प्रत्याख्याननो संभव नथी, तो प्रत्याख्यान जेवा अंतिम वखते साकारनो संभव क्यांथी होय? कारण के इत्वर ते अमुक काळनुं पच्चक्खाण रोगी श्रावक करे, के जो आ रोगथी पांच दीवसमां मुकाइश, तो पछी भोजन करीश, ते शिवाय नहीं करुं विगेरे इत्वर पच्चक्खाण छे, पण इङ्गित मरण तो धैर्य संहनन विगेरेना बळवाळो पोतानी मेळेज पासुं फेरववानी विगेरे क्रिया करनारो आखी जींदगी सुधी चारे आहारनो त्याग करे छे. कह्युं छे के:—

पच्चक्खइ आहारं, चउव्विहं णियमओ गुरुसमीवे; इङ्गियदेसंमि तहा, चिट्ठंपि हु नियमओ कुणइ ॥ १ ॥

उवत्तइ परिअत्तइ, काइगमाईऽवि अप्पणा कुणइ; सव्वमिह अप्पणच्चिअ ण, अन्नजोगेण धितिबलिओ ॥ २ ॥

चारे प्रकारना आहारनुं गुरु पासे नियमथी प्रत्याख्यान करे,अने इङ्गित(मुकरर करेलां)भागमां चेष्टा पण नियमथी करे छे,[१] पासुं बदले, बाजुए जाय अथवा ठल्लो मातरुं करे, ते पण जाते करे, ते धैर्य तथा बळवाळो पोताना सिवाय बीजा पासे न करावे.

प्र.—इङ्गित मरण केवुं छे? अने कोण करे? ते कहे छे. संत पुरुषोनुं हित करे तेथी ते इंगित मरण सत्य छे. अने सुगति मार्गे लइ जवामां ते अविसंवादपणे होवाथी तथा सर्वज्ञना उपदेशथी ते इंगित मरण सत्य [तथ्य] छे. तथा पोते पण सत्य बोलनार होवाथी सत्यवादी छे, कारण के आखी जींदगी सुधी यथोक्त अनुष्ठान करवानी प्रतिज्ञा लीधेली ते भार उपाडवा समर्थ होवाथी अने तेमज पाळवाथी सत्यवादी छे, तथा 'ओज' पोते रागद्वेष रहित छे. तथा संसार सागरने तर्यो छे, अने भूतकाळ माफक भविष्यमां पण तरवा माटे तेवो उपचार करवाथी अवतीर्ण छे, तथा जेणे राग विगेरेनी विकथा कोइ पण रीते न करवानुं नक्की

[illegible]

सातमो उद्देशो

छट्ठो कहीने हवे सातमो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां एकत्व भावना भावनार धृति संहनन विगेरेथी युक्त साधुनुं इंगित मरण बताव्युं, अने अहीं तेज एकत्व भावना प्रतिमाओवडे बतावे छे, एथी अहीं ते प्रतिमाओ बतावे छे, तथा वधारे विशिष्ट संघयणवाळो पादपोपगमन अणशण पण करे, आ संबन्धे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

जे भिक्खु अचेले परिवुसिए तस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ–चाएमि अहं तणफासं अहियासित्तए सीयफासं अहियासित्तए, तेउफासं अहियासित्तए दंसमसगफासं अहियासित्तए एगयरे अन्नतरे विरूवरूवे फासे अहियासित्तए, हिरिपडिच्छायणं चऽहं नो संचाएमि अहियासित्तए, एवं से कप्पेइ कडिबंधणं धारित्तए (सू० २२३)

जे साधु प्रतिमा धारण करेलो अने विशेष अभिग्रहथी अचेल (वस्त्ररहित) पणे सयममां रहेलो होय, ते भिक्षुने आवो अभिप्राय थाय छे, के हुं धृति संहनन विगेरे युक्त होवाथी वैराग्य भावनाथी भावित अंतःकरणवाळो छुं. अने आगम चक्षुवडे (चारे गतिनुं ज्ञान होवाथी) नारकतिर्यंचनुं दुःख जाणुं छुं. अने मानुं छुं के मारे मोक्ष जेवुं मोटुं फळ लेवानुं होवाथी तृणनो स्पर्श कंइ दुःख देतो नथी, तेज प्रमाणे ठन्ड, ताप, डांस, मच्छरनो स्पर्श सहन करवा शक्तिमान छुं, तथा एक जातना के जुदी जुदी

जातिना अनुकूळ के प्रतिकूल विरूपरूपवाळा फरशो सहन करवाने हुं शक्तिवान छुं, पण लज्जाने लीधे गुह्य प्रदेशने ढांकवानी जरुर होवाथी ते छोडवा हुं चाहतो नथी. अने आ स्वभावथीज अथवा साधनना विकृत रुपपणाथी ते साधुने शरम लागे, तो तेने चोळपट्टो पहेरवो कल्पे छे, अने ते पहोळाइमां एक हाथने चार आंगळनो होय, अने लंबाइमां केडना प्रमाणमां होय, तेवो गणतरीनो एक राखे पण, जो तेवां कारणो न होय, तो अचेलपणेज विहार करे, अने अचेलपणेज ठन्ड विगेरे स्पर्श सारी रीते सहन करे, ए बतावबा कहे छे.—

अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसन्ति सीयफासा फुसन्ति तेउफासा फुसन्ति दंसमसगफासा फुसन्ति एगयरे अन्नयरे विरूवरूवे फासे अहियासेइ, अचेले लाघवियं आगममाणे जाव समभिजाणिया (सू० २२४)

एवु कारण तेने होय, तो ते साधु वस्त्र धारण करे, अथवा पोते लज्जा न पामतो होय, तो अचेल रही संयम पाळे, अने वस्त्ररहित संयम पाळतां तेने तृणना फरशो फरशे, तथा ठंड ताप डांस मच्छरना फरसो दुःख दे तेवा एक जातना के जुदी जुदी जातना भोगववा छतां पोते अचेल रही कर्मनुं लाघवपणुं माने, अने तेमांज समत्व माने, वळी प्रतिमाधारी साधुज विशेष अभिग्रह धारण करे, ते आ प्रमाणे के हुं बीजा प्रतिमाधारी मुनिओने किंचित् आपीश, अथवा तेमनी पासेथी लेइश एवो कोइ पण जातनो अभिग्रह धारण करे, तेनी चोभंगी कहे छे,

जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ–अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा ४ आहट्टु दलइस्सामि आरडं च साइज्जिस्सामि १ जस्स णं भिक्खुस एवं भवइ–अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा ४ आहट्टु दलइस्सामि आहडं चनो साइस्सामि २ जस्स णं भिक्खूस्स एवं भवइ अहं च खलु असणं वा ४ आहट्टु नो दलइस्सामि आहडं च साइज्जिस्सामि ३ जस्स णं भिक्खूस्स एवं भवइ अहंच खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा ४ आहट्टु नो दलइस्सामि आहडं च नो साइजिस्सामि ४, अहं च खलु तेण अहाइरित्तेण अहेसाणिज्जेण अहापरिग्गहिएणं असणेण वा ४ अभिकंख साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए, अहं वावि तेण अहाइरित्तेण अहेसणिज्जेण अहापरिग्गहिएणं असणेण वा पाणेण वा ४ अभिकंख साहम्मितर्हि कीरमाणं वेयावडियं साइज्जिसामि लाघवियं आगममाणे जाव सम्मत्तमेव समभिजाणिया (सू० २२५)

आ बधुं पूर्वे सू० २१७मां आवी गयुं छे, तेथी संस्कृत वडे कहे छे, जे भिक्षुने आवो अभिग्रह होय, के हुं बीजा साधुओ माटे

आहार लावीने आपीश, तथा तेमनुं लावेलुं खाइश (१) बीजा साधुने आवो अभिग्रह होय के बीजा साधुओने आहार लावीने आपीश पण बीजानो लावेलो खाइश नहि. (२) कोइने आवो अभिग्रह होय के बीजाने माटे आहार लावीने आपीश नहि, पण तेमने लावेलो खाइश [३] बीजाने माटे लावीने आपीश नहि तेम लावेलो खाइश पण नहि. आचारमांनो कोइ पण अभिग्रह धारण करे, अथवा प्रथमना त्रणमांनो एक पद वडेज कोइ अभिग्रह करे ते बतावे छे, जे साधुने आवो अभिग्रह होय, के हुं बीजा ए आहार करतां वधेला आहारनुं भोजन करीश, कारण के ते प्रतिमा धारीओने तेवुंज एषणीय [खावा योग्य] छे, ते आ प्रमाणे. पांच प्राभृतिकामां आग्रह छे, बेनो अभिग्रह छे, तेमज पोताने माटे लीधेला आहारमांथी साधर्मिक साधुनी वैयावच्च निर्जराने उद्देशीने करे, जो, के तेमणे प्रतिमा धारण करेली होवाथी एक जग्याए भेगा थइने न खाय, पण तेमनो अभिग्रह एक सरखो होवाथी सांभोगिक छे, अने तेथी तेवा उत्तम साधुनां उपकरण लाववा माटे हवे वैयावच्च करुं. आवो अभिग्रह कोइ ले, तथा बीजुं बतावे छे. [वा शब्दथी बीजो पक्ष बतावे छे अपि शब्द पुनःना अर्थमां छे] अथवा हुं तेमणे लीधेली गोचरीमांथी ४ निर्जराने उद्देशीने साधर्मिकाए करेली वैयावच्चने स्वीकारीश अथवा जे बीजानी वैयावच्च करे तेनी हुं अनुमोदना करीश. के हे साधो ! तमे बहु सारुं कर्युं छे ! एवुं वचन बोलीश, तथा काया वडे तथा प्रसन्न मनवाळा भाववडे अनुमोदना करीश, आ बधुं शा माटे करे ? कर्मनी लघुता माटे. आ प्रमाणे कोइ पण अभिग्रह धारण करेलो अचेल के सचेल साधु शरीर पीडा होय अथवा न होय, पण पोतानुं आयु थोडुं रहेलुं जाणीने उद्यत मरण स्वीकारे, ते बतावे छेः—

जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ–से गिलामि खलु अहं इमम्मि समए इमं सरीरगं अणु-

पुव्वेणं परिवहित्तए, से अणुपुव्वेणं आहारं संवट्टिजा २ कसाए पयणुए किच्चा समाहियच्चे फलगावयट्ठी उट्ठाय भिक्खु अभिनिव्वुडच्चे अणुपविसित्ता गामं वा नगरं वा जाव रायहाणिं वा तणाइं जाइज्जा जाव संथरिज्जा, इत्थवि समए कायं च जोगं च ईरियं च पच्चक्खाइज्जा, तं सच्चं सच्चावाई ओए तिन्ने छिन्नकहंकहे आइयट्ठे अणाईए चिच्चाणं भेउरं कायं संविहुणिय विरूवरूवे परीसहोवसग्गे अस्सिं विस्सभणाए भेरवमणुचिन्ने तत्थवि तस्स काल परियाए सेवि तत्थ वियन्तिकारए, इच्चेयं विमोहाययणं हियं सुहं खमं निस्सेसं आणुगामियं तिबेमि (सू० २२६) ॥ ८–७ ॥

(णं वाक्यनी शोभा माटे छे;) ते भिक्षुने आवो अभिप्राय थाय छे, के हुं ग्लान थयो छुं, एम जाणीने सू० २२२मां बताव्या प्रमाणे घास लावीने एकांत निर्दोष जग्यामां पाथरे अने त्यां बेसीने शुं करे ? ते कहे छे, आ अवसरमां पण बीजे स्थळे नहि पण तेज जग्याए संथारामां बेसीने सिद्धनी समक्ष पोतानी मेळेज पांच महाव्रतनो फरी आरोप करे [फरी चालवा गणी जाय] त्यारपछी चार आहारनुं पच्चक्खाण करे, पछी पादपोपगमन अणसण माटे शरीरने स्थिर करे, अने तेनो वेपार ते संकोचवुं,लांबा करवुं के आंख मींचवी उघाडवी ते पण रोके, तथा इरण ते इर्या ते सुक्ष्म,काय वचन संबन्धी तथा मन संबन्धी पण अप्रशस्तनुं पच्चक्खाण

करे, अने ते पादपोपगमन अणसण सत्य सत्यवादी विगेरे बधुं गया उद्देशा प्रमाणे जाणवुं,[इति तथा ब्रवीमि शब्दो पण जाणीताछे.]

सातमो उद्देशो समाप्त.

॥ इतिश्री आचाराङ्गसूत्रे चतुर्थो भागः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥

समाप्त.

॥ इति श्रीआचाराङ्गसूत्रे चतुर्थो भागः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

(श्रीसुधर्मास्वामीए रचेलुं अने श्रीश्रुतकेवलीभद्रबाहुरचित निर्युक्तिसहित)

॥ आचाराङ्गसूत्रम् भाग पाञ्चमो ॥

(मूळ अने शीलाङ्काचार्ये रचेली टीकाना भाषांतरसहित)

जामनगरनिवासी स्व० पण्डित हंसराजभाइ शामजीना स्मरणार्थे

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

प्रति २००

पडतर किंमत रु. २-८-०

संवत् १९९१

श्री जैन भास्करोदय प्रिन्टिंग प्रेसमां छाप्युं -जामनगर

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ श्रीआचाराङ्गसूत्रम् ॥

(मूळ अने शिलाङ्काचार्ये रचेली टीकानुं भाषांतर)

॥ भाग पांचमो ॥

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

आठमो उद्देशो.

सातमो कहीने हवे आठमो कहे छे, तेनो संबंध आ प्रमाणे छे, गया उद्देशाओमां कह्युं के रोगादि संभवमां काळपर्याये आवेलुं भक्त परिज्ञा, इंगित,, के पादपोपगमन मरण करवुं युक्त छे, अने अहीं तो अनुक्रमे विहार करता साधुओनुं काळ पर्याये आवेलुं मरण कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

अनुष्टुप् छंद.

अणुपुव्वेण विमोहाइं, जाइं धीरा समासज्ज ॥ वसुमन्तो, मइमन्तो, सव्वं नच्चा अणेलिसं ॥१॥
दुविहंपि विइत्ता णं; बुद्धा धम्मस्स पारगा ॥ अणुपुव्वीइ सङ्खाए, आरंभाओ (य) तिउट्टई ॥२॥
कसाए पयणू किच्च, अप्पाहारे तितिक्खए ॥ अह भिक्खू गिलाइज्जा, आहारस्सेव अन्तियं ॥३॥
जीवियं नाभिकंखिज्जा, मरणं नोवि पत्थए ॥ दुहओऽवि न सज्जिज्जा, जीविए मरणे तहा ॥४॥

अनुक्रमे दीक्षा लीधी. हित शिक्षा मळी, सूत्रार्थ मेळवी स्थिर मति थया पछी एकाकी विहार विगेरे प्रतिमा स्वीकारी होय, अथवा अनुपूर्वी ते बार वर्षनी संलेखना विधि जेमां चार वरस विकृष्ट तप विगेरे अनुक्रमे पूर्वे तप बताव्यो छे ते जाणवुं, त्यारपछी मोह रहित ते जेमांथी के जेनाथी मोह दूर थयो, तेवाने भक्त परिज्ञा इंगित के पादपोपगमन अणसण अनुक्रमे करवानां छे, तेमां धीर ते, क्षोभायमान न थाय, तेवा वसु (संयम) वाळा तथा मनन, ते मति होय उपादेय छोडवुं लेवुं ते संबन्धी विचार करनार मतिमंत छे, तथा सर्वे कृत्य अकृत्य जाणीने जे साधुने भक्त परिज्ञा विगेरे कोइ मरण उचित लागे तथा पोतानी धैर्यता संघयण विगेरे विचारी अद्वितीय (उत्तम) रीते जाणीने तेवा मरणे समाधिनुं पालन करे, (१) बे प्रकारनी अवस्था तथा तपनी बाह्य अभ्यंतर अवस्थाने विचारी पालन करीने, अथवा मोक्षाधिकारमां बे प्रकारनुं मुकावुं छे, तेमां पण बाह्य ते शरीर उपकरण विगेरे तथा अभ्यंतर रागादि छे तेने हेयपणे जाणे अने त्यागीने आरंभथी दूर थाय एटले, ज्ञाननुं फळ हेयने त्यागवानुं छे, कोण त्यागे ?

बुद्धिमान पुरुषो, ते तत्वने जाणनारा श्रुत चारित्र नामनो धर्म छे, तेनी पार पहोंचनारा छे, अर्थात् सम्यग् जाणनारा छे, ते पंडितो धर्म स्वरूपने जाणनारा प्रव्रज्याना अनुक्रमे संयम पाळीने जाणे के हवे मारा जीववाथी कंइ विशेष गुण नथी, एथी हवे मोक्षनो अवसर मळ्यो छे, एथी हुं क्या मरणे मरवा योग्य छुं एम विचारीने शरीर धारण करवामाटे अन्न पान विगेरे शोधवारुप आरंभथी छुटे छे, (अहीं पांचमीनां अर्थमां चाथी विभक्ति छे,) तथा कोइ प्रतिमां (कम्मुणाओ तिअट्टई) पाठ छे, एटले आठ भेदवाळा कर्मथी पोते छुटे छे, (व्याकरणना नियम प्रमाणे वर्त्तमानना समीपमां वर्त्तमान माफक थाय छे) पा. ३-३-१३१ना नियम प्रमाणे भविष्यकाळना अर्थमां वर्त्तमान काळ छे, [२]

अने ते अभ्युदत मरण माटे संलेखना करतो प्रधान भूत (श्रेष्ठ भावे संलेखना करे ते बतावे छे. एटले कष ते संसार छे. तेनो आय ते कषायो छे. ते क्रोध विगेरे चार छे, तेने पातळा [ओछा] करतो थोडुं खाय, ते बतावे छेः—

ते पण वधारे प्रमाणमां नहि, ते बतावे छे, अल्पाहारी (थोडुं खानारो) ते छठ अठम विगेरे संलेखनाना अनुक्रमे आवेला तपने करतो पारणामां पण अल्प खाय, अने अल्प आहार खावाथी क्रोधनो उद्भव थाय, तेनो उपशम करवो. ते बतावे छे-तुच्छ माणसथी पण तिरस्कारनां वचन सांभळे, तो पण सहन करे, अथवा रोग विगेरे पण बरोबर रीते सहन करे, ते प्रमाणे संलेखना करतो आहारने ओछा प्रमाणमां लेवाथी ते मुमुक्षु भिक्षु ग्लानता पामे, ते समये आहारनी अंत अवस्थाने स्वीकारे, एटले चार विकृष्ट विगेरे संलेखनाना क्रमनो तप छोडीने भोजन करे, अथवा ग्लानता पाम्याथी आहारनी समीपमां न जाय. ते आ प्रमाणे-हमणां थोडा दिवस खाइ लउं, अने पछी बाकीनी संलेखनानो तप करीश एवीआहार खावानी भावनामां न जाय. ॥३॥ वळी—

ते संलेखनामां रहेलो अथवा आखी जींदगी सुधी हमेशां ते साधु प्राण धारवा रुप जीवितने न चाहे, तथा भूखनी वेदनाथी कंटाळी मरण पण न वांछे तथा जीवित तथा मरणमां संग [ध्यान] न राखे (४) त्यारे ते साधु केवो होय? ते कहे छेः—

मज्झत्थो निज्जरापेही, समाहिमणुपालए ॥ अन्तो वहिं विऊसिज्ज, अज्झत्थं सुद्धमेसए ॥५॥
जं किंचुवक्कमं जाणे, आऊखेमस्समप्पणो ॥ तस्सेव अंतरद्धाए, खिप्पं सिक्खिज्ज पण्डिए ॥६॥
गामे वा अदुवा रण्णे, थंडिलं पडिलेहिया ॥ अप्पपाणं तु विन्नाय, तणाइं संथरे मुणी ॥७॥
अणाहारो तुयट्टिज्जा. पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥ नाइवेलं उवचरे, माणुस्सेहि विपुट्ठवं ॥८॥

रागद्वेषनी वचमां रहे ते मध्यस्थ छे, अथवा जीवित मरणनी आकांक्षा रहित ते मध्यस्थ छे, ते निर्जरानी अपेक्षा राखनार ते निर्जरापेक्षी छे. तेवो साधु जीवन मरणनी आ शंसा रहित समाधि जे अंत वखतनी छे, तेनुं पालन करे, अर्थात् कालपर्यायवडे जे मरण आवे ते समाधिमां रही पाळे तथा अंदरना कषायोने तथा बहारना शरीर उपकरण विगेरेनो ममत्व छोडी दे, अने अध्यात्मा ते अंतःकरणने शुद्ध करे, एटले मनमां थता रागद्वेष विगेरेनां बधां जोडकां दूर थवाथी विस्रोतसिका (चंचळता) रहित अंतःकरणने वांछे, वळी उपक्रम ते उपक्रम उपाय छे, तेवा कोइ पण उपायने जाणे.

प्र०—कोना उपक्रम? आयुष्यनुं क्षेम ते सम्यक् प्रकारे पाळवुं. प्र०—कोना संबन्धी ते आयु छे? उ०—ते आत्मानुं–तेनो परमार्थ आ छे. के आत्मा पोताना आयुष्यनो क्षेमथी प्रतिपालन करवा जे उपायने जाणे ते तेने शीघ्र शीखवे, एटले बुद्धिमान

साधु ते प्रमाणे वर्त्ते, पण ते संलेखनाना काळमां बार वर्ष पूरा थता पहेलांज अधवचमां शरीरमां वायु विगेरेना रोकाणथी शीघ्र जीवलेण रोग उत्पन्न थाय तो समाधि मरणने वांछतो तेना उपशमना उपायने एषणीय विधिए तेल चोळवुं विगेरे करे, अने फरी पाछी संलेखना शरु करे, अथवा आत्मानुं आयु (जीवित) ने कंइ पण आयुना पुद्गलोनुं संवर्त्तन (उपक्रमण) उत्पन्न थएलुं जाणे तो ते संलेखखनाना तपमांज अनाकुल मतिवाळो बनीने शीघ्रज भक्त परिज्ञा विगेरेने बुद्धिमान साधु शीखवे [आदरे] (६) संलेखना वडे शुद्ध कायवाळो बनीने मरण काल आवेलो जाणीने शुं करे? ते कहे छे.

ग्राम--शब्द जाणीतो छे. पण तेनो अर्थ अहीं प्रतिश्रय उपाश्रय बताव्यो छे, प्रतिश्रयज तेने स्थंडिल [संथारानी जग्या] छे. तेने जोइने संथारो करे आवा अरण्य एटले उपाश्रयनी बहार अर्थ बताव्यो, उद्यान अथवा पर्वतनी गुफामां संथारानी जग्या प्रथम निर्जीव जुए, अने गाम विगेरेथी याची लावेला दर्भ विगेरेना सुका घासमां यथा उचित काळनो जाणनारो साधु संथारो करे, घास पाथरीने शुं करे? ते कहे छे–

आहार रहित ते अनाहारी बने, तेमां शक्ति अनुसारे त्रण अथवा चारे आहारनुं प्रत्याख्यान करी पंच महाव्रतनुं फरी स्वयं आरोपण करी बधा प्राणी समूहने खमावेलो बनी सुख दुःखमां समभाव राखी पूर्वे मेळवेला पुण्यना समूहवडे मरणथी न डरतो संथारामां पासुं फेरववुं करे, परिसह उपसर्गो आवे तेने देह ममत्व छोडेल होवाथी सम्यक् प्रकारे सहन करे, तेमां मनुष्यना अनुकूल प्रतिकूल परीसह उपसर्ग आवतां मर्यादानुं उलंघन न करे, तेम पुत्र स्त्री विगेरेना सम्बन्धथी आर्त्त ध्यानने वश न थाय, तेमज प्रतिकूल परीसह उपसर्गोथी क्रोधथी हणायलो न थाय, तेज बतावे छे—

संसप्पगा य जे पाणा, जेय उड्ढमहाचरा ॥ भुञ्जन्ति मंससोणियं न छणे न पमज्जए ॥९॥
पाणा देहं विहिंसन्ति, ठाणाओ नवि उब्भमे ॥ आसवेहिं विवित्तेहिं, तिप्पमाणोऽहियासए ॥१०॥
गन्थेहिं विवित्तेहिं, आउकालस्स पारए ॥ पग्गहियतरगं चेयं, दवियस्स वियाणओ ॥११॥
अयंसे अवरे धम्मे, नायपुत्तेण साहिए ॥ आयवज्जं पडीयारं; विजहिज्जा तिहा तिहा ॥१२॥

संसर्पन करे, ते कीडी क्रोष्टु (शियाळ) विगेरे जे प्राणीओ छे, तथा उंचे उडनार गीध विगेरे छे, तथा बीलमां नीचे रहेनारा साप विगेरे छे, तथा सिंह वाघ विगेरे आवीने मांस भक्षण करे, तथा डांस मच्छर विगेरे लोही पीए, ते समये ते जीवोने आहार अर्थे आवेला जाणीने अवंति सुकुमार माफक तेमने हणे नहीं. तेम रजोहरण विगेरेथी उडाडीने खावामां अंतराय न करे (९) वळी आवेलां प्राणीओ मारी कायाने हणशे, पण मारां ज्ञानदर्शन चारित्रने नहीं हणे, तेम विचारी कायानो मोह छोडेल होवाथी तेने खातां अन्तरायना भयथी पोते न रोके, अने ते स्थानथी पोते भयना कारणे बीजे खसे नहि. प्र०—केवो बनीने ?

उ०—प्राणातिपात विगेरे पांच आश्रवो अथवा विषय कषाय विगेरेथी दूर रहीने शुभ अध्यवसाय वाळो बनीने डांस मच्छर विगेरेथी लोही पीवातो पण अमृत विगेरेथी सिंचन थवा माफक तेओनी करेली पीडाने पोते तप्या छतां पण सहन करे; (१०) वळी बाह्य अभ्यंतर ग्रंथ तथा शरीरना प्रेम विगेरेथी पोते दूर रही तथा अंग उपांग विगेरे जैन आगमथी आत्माने भावतो शुक्ल ध्यान ने धर्म ध्यानमां रक्त बनी मृत्यु कालनो पारगामी बने एटले ज्यां सुधी छेवटना श्वासोश्वास होय त्यां सुधी तेवी समाधि

राखे, आ भक्त प्रत्याख्यान मरणथी मोक्षमां जाय, अथवा देवलोकमां जाय.

भक्त परिज्ञा कहीने हवे इंगित मरण अडधा श्लोकथी कहे छे. प्रकर्षथी ग्रहित माटे प्रकर्ष ग्रहि छे, अने ते प्रकर्षथी लीधाथी प्रग्रहित तर छे. [अनेक, प्रत्यय लागवाथी] प्रग्रहित तरक छे. हवे इंगित मरण कहे छे कारण के आ भक्त प्रत्याख्यानना नियमथीज चार आहरनुं प्रत्याख्यान छे तथा इंगित प्रदेशमां संथारानी जग्यामांज विहार लेवाथी विशिष्टतर घृति संहनन विगेरेथी युक्त होय, तेज प्रकर्षथी ले छे,

प्र०—आ कोने होय छे? द्रव्य (संयम जेने होय ते द्रविक छे, अने ते गीतार्थनेज छे, अने ते जघन्यथी पण नव पूर्वनुं ज्ञान होय तेवाने छे. बीजाने नथी, अहीं इंगित मरणमां पण संलेखनामां कहेल तृण संथारो विगेरे समजवुं. (११)

आ अपर विधि छे? ते कहे छे. आ उपर बतावेलो विधि भक्त परिज्ञाथी जुदो इंगित मरणनो विधि विशेष प्रकारे वीर वर्द्धमान स्वामीए सम्यक् प्रकारे प्राप्त कर्यो छे, आ बन्ने जोडे कहेवाथी अने प्रत्यक्ष समान कहेवाथी (इदं) 'आ' विशेषण मुक्युं छे, आ इङ्गित मरणमां पण प्रव्रज्या विगेरेनो विधि कहेवो, संलेखना पूर्व माफक जाणवी, तेज प्रमाणे उपकरण विगेरे त्यजीने संथारानी जग्या बरोबर देखीने आलोचना करी पापथी पाछो हटीने पंच महा व्रत फरी उचरीने चार आहारनुं प्रत्याख्यान करीने संथारामां बेसे, अहीं आटलुं विशेष छे.

आत्माने छोडे एटले अंग संबन्धी वेपार विशेष प्रकारे त्यजे. त्रिविधि त्रिविधि ते त्रण मन वचन कायाथी करवुं कराववुं अनुमोदवुं विगेरे बधुं आत्म वेपार शिवायनुं त्यागे. जरुर पडतां पासुं फेरववुं पडे हालवुं पडे अथवा पेशाब विगेरे करवो होय

तो जातेज करे [बीजानीं मदद न छे] वळी वधी रीते प्राणीनुं रक्षण वारंवार करवुं ते बतावे छे.

हरिएसु न निवज्जिज्जा, थंडिलं मुणियासए ॥ विओसिज्ज अणाहारो, पुट्टो तत्थऽहियासए ॥१३॥
इंदिएहिं गिलायंतो, समियं आहरे मुणी ॥ तहावि से अगरिहे, अचले जे समाहिए ॥१४॥
अभिक्कमे पडिक्कमे, संकुचए पसारए ॥ काय साहारणट्ठाए, इत्थं वावि अचेयणो ॥१५॥
परिक्कमे परिकिलन्ते, अदुवा चिट्ठे अहायए ॥ ठाणे ण परिकिलन्ते, निसोइज्जा य अंतसो ॥१६॥

हरित ते द्रोना अकुरा विगेरेमां न सूए, पण निर्दोष जग्या जोइने सूए, तथा बाह्य अभ्यन्तर उपधि छोडीने अनाहारी बनीने परिसहो तथा उपसर्गथी फरसायलो पण संथारामां बेठेलो रही सम्यक् प्रकारे सहन करे, (१३) वळी आहारना अभावे मुनि इन्द्रियोथी ग्लान भाव पामे, तोपण आत्माने समाधिमां राखे एटले शमिनो भाव शमिता एटले समभावने धारण करी आर्तध्यान न करे. तथा जेम समाधान रहे तेम बेसे. एटले संकोचथी खेद पामे तो हाथ विगेरे लांबा करे. तेनाथी पण खेद पामे तो स्थिर चित्ते बेसे. अथवा मुकरर जग्यामां फरे. तेमां पण आ पोते छुट राखेली होवाथी निंदवा जोग नथी ते केवी छे, ते कहे छे. अचळ ते समाधिमां रहे ते इङ्गित प्रदेशमां पोतानी मेळे शरीर चलावे. पण खेदथी कंटाळी अभ्युदत्त मरणथी चलायमान न थाय. तेथी ते अचळ छे. (शरीरथी हाले पण शुभ ध्यानथी चलायमान न थाय.) पोते धर्म ध्यान के शुक्लध्यानमां मन राखे. अने भावथी निश्चळ रहीने इङ्गित प्रदेशमां संक्रमण विगेरे करे. (१४) ते बतावे छे.

प्रज्ञापकनी अपेक्षाए संमुख ते अभिक्रमण छे. अर्थात् संथाराथी दूर जाय. तथा प्रतीप एटले पाछो संथारा तरफ आवे पोताना मुकरर भागमां जा आव करे तथा निष्पन्न अथवा निषन्न रहीने जेम समाधि रहे तेम भुजा विगेरेने संकोचे अथवा लांबा करे.

प्र०—शा माटे ? उ०—ते बतावे छे. शरीरनी प्रकृतिना कोमळपणाना साधारण कारणथी करवुं पडे छे. अने कायने साधारणपणुं होवाथी पीडा थतां आयुना उपायना परिहार वडे पोतानो आयुनी स्थिति क्षय थवाथी मरण थाय. [शरीरनो तेवो स्वभाव होवाथी ते करवुं पडे छे. पण तेमने महा सत्वपणुं होवाथी शरीरनी पीडा थवाथी चित्तमां खोटो भाव थाय तेम न जाणवुं.]

शंका—जेणे कायानो बधो व्यापार रोकेलो छे. ते सुका लाकडा माफक अचेतन पणे पडेलो होय. तेने पुन्यनो समूह घणो एकठो थयेलो छे. तो शा माटे कायाने हलावे ?

उ०—तेवो नियम नथी, शुद्ध अध्यवसायथी यथाशक्ति भारवहन करवा छतां तेनी बरोबरज कर्म क्षय छे. अहीं वा अव्यय होवाथी जाणवुं के, पादपोपगमनमां अचेतन अक्रिय माफक इङ्गित मरणवाळो सक्रिय होय. तो पण बन्ने समाजन छे. (बन्नेनी भावमां समानता छे. काया संबन्धि इङ्गित मरणमां सक्रिय छे. अने पादपोपगमनमां कायाने हलाववानी नथी. माटे अक्रिय छे.

अथवा इंगित मरणमां अचेतन सुका लाकडा माफक सर्व क्रिया रहित जेम पादपोपगमनवाळो होय तेम पोते शक्ति होय तो निश्चळ रहे. (१५) तेवुं सामर्थ्य न होय तो आ प्रमाणे करे. ते कहे छे. जो बेठे अथवा न बेठे, गात्र भंग थाय तो त्यांथी उठीने फरे ते समये सरळ गतिए नियमित भागमां आवजा करे अने थाकी जाय तो जेम समाधि रहे तेम बेसे अथवा उभो रहे. जो स्थानमां खेद पामे तो बेसे, अथवा पलांठी मारीने अथवा अडधी पलांठी मारीने अथवा उत्कुडुक आसने बेसे अने थाके तो सीधो

वेसे तेमां पण उत्तानक (सीधो उंचे मोढुं राखीने) सुवे अथवा पासुं फेरवे अथवा सीधो सुवे अथवा लगंडशायी सुवे जेम समाधि रहे तेम करे. (१६) वळी—

आसीणेऽणेलिसं मरणं, इन्दियाणि समीरए ॥ कोलावासं समासज्ज, वितहं पाउरे सए ॥१७॥
जओ वज्जं समुपज्जे, न तत्थ अवलम्बए ॥ तउ उक्कसे अप्पाणं, फासे तत्थऽहियासए ॥१८॥
अयं चाययतरे सिया, जो एवमणुपालए ॥ सव्वगायनिरोहेऽवि, ठाणाओ नवि उब्भमे ॥१९॥
अयं से उत्तमे धम्मे, पुव्वट्ठाणस्स पग्गहे ॥ अचिरं पडिलेहित्ता; विहरे चिट्ठ माहणे ॥२०॥

प्र०—शुं आश्रयीने ? उ०—अपूर्व आ मरण छे. अने ते सामान्य माणसने विचारवुं पण दुर्लभ छे.

प्र०—तेवो बनीने शुं करे ? ते कहे छे. इन्द्रियोना इष्ट अनिष्ट पोताना विषयोथी रागद्वेष न करतां तेने समभावे प्रेरे कोलावास (घुणना कीडानुं स्थान) अथवा उधइनो समुह चोंटेलो देखीने जे चीज होय अथवा तेमां नवी जीवात उत्पन्न न थाय तेवुं जोइने खुल्लुं देखातुं पोलाण रहित पोताने टेको लेवा शोधे. (१७)

इंगित मरणने आश्रयी जे निषेध छे. ते कहे छे. आ अनुष्ठानथी अथवा टेका विगेरेथी वज्र माफक दूर रहे अर्थात् कीडाने थतुं दुःख साधुने वज्र लेप माफक त्यां दोष लागे माटे ते घुणवाळा लाकडानो टेको विगेरे ले नहीं, तथा उंची निची कायाने करतां अथवा खराब वचनथी अथवा आर्तध्यान विगेरे मनना योगथी पोताना आत्माने दोष लागतो जाणीने तेनाथी दूर रहे अर्थात्

पाप लागवा न दे अने तेमां धैर्य अने संहनन विगेरे मजबुत होय तो शरीरनी वैयावच्च न करे, अने चडता शुभ भावना कंडकवाळो बनी अपूर्व भावनी धाराए चढीने सर्वज्ञना कहेला आगम अनुसारे पदार्थना स्वरुपना निरुपणमां पोतानी मति स्थिर करीने आ शरीर आत्माथी जुदुं छे. माटे त्यागवा जोग छे एवो विचार करीने बधा दुःखना स्पर्शोने तथा अनुकूळ प्रतिकूळ आवेला उपसर्ग परीसहोने तथा वातपित्त कफना द्वंद्व अथवा जुदा रोगो आवे तो मारे कर्मक्षय करवानो होवाथी हुं उठ्यो छुं माटे मारेज आ पूर्वे करेलां पापने भोगववा जोइए. आवो विचार करीने दुःख सहे.

कारण के में जे शरीरने त्याग्युं छे. एनेज उपद्रव करशे, पण जे धर्म आचरणने करवुं छे, तेने बाधा लगाडे तेम नथी. माटे तेवुं विचारीने सहे. (१८) इङ्गित मरण कह्युं हवे पादपोपगमन अणसण कहे छे. ते जोडाजोड कहेल होवाथी आ विशेषणवडे मरणनो विधि बताव्यो छे. आ आयत तर छे ते बतावे छे. मर्यादानी विधिमां आ उपसर्ग छे. ते संपूर्ण यत थतां आयत शब्द छे. अने उपरना बे अणसण करतां वधारे आयत छे, माटे आयत तर छे.

अथवा उपरना बन्ने अणसणथी अतिशय आत्त छे. माटे आत्ततर छे अर्थात् यत्नथी अध्यवसायवाळा छे. प्रथम कहेला बे अणसण करतां पादपोपगमन वधारे दृढतर छे एमां पण इङ्गित मरणमां कह्या मुजब प्रव्रज्या संलेखना विगेरे बधुं जाणवुं.

प्र०—जो आ आयततर छे तो शुं करवुं? उ०—कहे छे. जे भिक्षुक आ कहेली विधिएज पादपोपगमन विधिने पाळे तथा शरीरना बधा व्यापार छोडवाथी काया तपे अथवा मूर्छा पामे अथवा मरण समुद्घात आवे, अथवा लोही मांस शियाळीया गीध कीडीओ विगेरेथी खवाय, पीवाय, तो पण महा सत्वना कारणे पोते जाणे के आ इच्छित मोटुं फळ आव्युं छे तेथी ते स्नानथी

द्रव्यथी, अने भावथी ते शुभ अध्यवसायथी चळायमान न थाय. न बीजा स्थाने जाय. (१९) वळी आ अंतःकरणमां उत्पन्न थवाथी प्रत्यक्ष मरण विधि छे. अने ते सौथी श्रेष्ठ होवाथी पादप उपगमन रुप मरणनो धर्म [विशेष] विधि छे. उत्तम पणाना कारणा बतावे छे. [सूत्रमां छट्ठी छे, तेनो पांचमीमां अर्थ लइए तो पूर्व स्थानथी एटले भक्त परिज्ञा तथा इंगित मरणना रुपथी आ प्रकर्षथी ग्रह छे; माटे पूर्व स्थान प्रग्रह छे. अर्थात् प्रग्रहिततर छे. ते प्रमाणे जे इङ्गित मरणमां कायाने हलाववानी छुट हती ते पण अहींया नथी. झाड़नुं मूळ जमीनमां होय, ते पोते वळातुं के छेदातुं स्थानथी खसतुं नथी. तेम पोते साधु झाड माफक चेष्टा क्रिया रहित दुःखमां आवेलो होय तो पण चिलाती पुत्र माफक स्थानथी खसतो नथी. पण त्यांज स्थिर रहे छे ते बतावे छे. अचिर स्थान ते पोताना संथारानी जग्या प्रथमथी जोइने कहेली विधिए तेमां रहे. आ पादपउपगमनना अधिकारथी विहरणनो अर्थ विहार न लेतां पोते विधिए पालण करे एम जाणवुं. पण स्थानथी न खसे तेज बतावे छे. बधा गात्रना निरोधमां पण स्थिर रहे पण खसे नहीं.

प्र०—आवो कोण छे? उ०—माहण साधु छे. ते बेठो होय उभो होय तो पण शरीरनी खबर राख्या विना जेवी रीते पोते प्रथम कायाने स्थापि होय तेमज अचेतन माफक रहे हाले नहीं (२०) आज वातने बीजी रीते कहे छे.

अचित्तं तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पगं ॥ वोसिरे सव्वसो कायं, न मे देहे परीसहा ॥२१॥
जावज्जीवं परीसहा, उवसग्गा इति सङ्ख्या ॥ संवुडे देहभेयाए, इय पन्नेऽहियासए ॥२२॥
भेउरेसु न रज्जिज्जा, कामेसु बहुतरेसुवि ॥ इच्छा लोभं न सेविज्जा, धुववन्नं सपेहिया ॥२३॥

सासएहिं निमन्तिज्जा, दिव्वमायं न सद्दहे ॥ तं पडिवुज्झ माहणे, सव्वं नूमं विहूणिया ॥२४॥

चित्त जेमां न होय ते अचेतन (जीव रहित) छे अने तेवी संथारानी जग्या अथवा पाटचुं विगेरे मेळवीने तेना उपर समर्थ पुरुष बेसे अथवा कोइ लाकडाउपर त्यां आत्माने स्थापन करे अने चार प्रकारनो आहार त्यागीने मेरु पर्वत माफक निश्प्रकंप रहे प्रथम गुरु पासे आलोचना विगेरे क्रिया करीने आत्माथी देहने दूर करे (मोह छोडे) ते समये जो कोइ परीसह उपसर्गो आवे तो भावना भावे के आ मारी देह हवे नथी कारणके में तेने त्यागी छे तो परिसह मने केवी रीते लागे? अथवा मारा शरीरमां परीसहो नथी, कारणके सारी रीते सहेवाथी ते संबन्धी पीडाना उद्वेगनो अभाव छे. एथी परीसहोने कर्म शत्रुने नजीवा माफक अपरीसहोज माने (शत्रुने जीतवाथी आनंद माने तेम परीसहोने जीते) (२१)

प्र०—ते क्यां सुधी सहेवा? आवी शंका दूर करवा कहे छे. आखी जींदगी सुधी परीसह अने उपसर्ग सहेवा एम जाणीने तेने सहन करे अथवा मने आखी जींदगी सुधी परिसह उपसर्गो नथी एम जाणीने सहे अथवा ज्यां सुधी जीवित छे त्यां सुधी परिसह उपसर्गनी पीडा थाय छे. तो थोडा आंखना पलकारा सुधी आ अवस्थामां हुं रहेल छुं तेवाने तो आ अल्प मात्र छे एम जाणीने कायाने बरोबर संवरीने शरीर त्याग माटे उठेलो छुं एम मानीने ते मुनि उचित विधानने जाणनारो कायाने पीडा करनारां जे जे कष्ट आवे ते बरोबर सहे. (२२)

आवा साधुने जोइने [आश्चर्य पामीने] कोइ राजा विगेरे भोगोनी निमंत्रणा करे ते बतावे छे. एटले जे भेदावाना स्वभावाळा छे ते भिदुर शब्द विगेरे पांच काम गुणो छे. तेमां राग न करे (मुनि तेनाथी न ललचाय) अथवा बीजी प्रतिमां "कामेसु

वहुलेसुवि" पाठ छे. एटले इच्छा मदनरुप जे काम छे. ते घणा प्रमाणमां होय तेमां न ललचाय अर्थात् ते राजा पोतानी कन्यानुं दान वीगेरे आपवा लोभावे. तो पण तेमां गृद्ध न थाय तथा इच्छा रुप लोभ ते इच्छा लोभ छे ते मुनी आ अणसणनुं फळ आवता भवमां मने चक्रवर्तीनुं पद अथवा इन्द्रनी पदवी विगेरे मळो. तेवा अभिलाषनुं नियाणुं पोते निर्जरानी अपेक्षा राखीने सेवे नहीं (नियाणुं न करे.) जेम देवतानी रिद्धि समान सनत्कुमार चक्रवर्तीनी रिद्धि देखीने ब्रह्मदत्ते पूर्व भवमां नियाणुं कर्युं तेम पोते न करे ते प्रमाणे आगममां कह्युं छे.

आ लोकनी आशंसा माटे तप न करे (१) तथा परलोकनी आशंसा माटे न करे (२) तथा जीवितनी आशंसा न करे. (३) मरणनी आशंसा (४) काम भोगनी आशंसा (५) माटे संलेखना तप न करे, विगेरे छे.

वर्ण--संयम अथवा मोक्ष ते दुःखे करीने जणाय छे. अथवा पाठांतरमां धुववन्न पाठ छे तेनो अर्थ आ छे के अव्यभिचारी ते ध्रुव छे ते ध्रुव वर्ण [संयम] ने अथवा शाश्वती यशकीर्त्तिने विचारीने काम इच्छा लोभने दूर करे. [२३]

वळी आखी जींदगी सुधी क्षय न थवाथी शाश्वत छे अथवा प्रतिदिन दान देवाथी शाश्वत अर्थ छे. तेवा सारा विभववडे कोइ ललचावे तो गुरु शिष्यने समजावे छे के तारे तेमां ललचावुं नहीं पण विचारवुं के आ धन शरीर माटे लेवाय पण ते नाशवंत छे. माटे धन नकामुं छे.

तेज प्रमाणे कोइपण रीते देवतानी मायाथी न ललचाय ते कहे छे. जो कोइ देवता परीक्षा करवा अथवा शत्रुपणाथी अथवा भक्तिथी अथवा कौतुक विगेरेथी जुदी जुदी रिद्धिओ बतावी ललचावे तो पण आ देव माया छे एम तुं जाण अने ललचाना नहीं.

कारण के जो ए माया न होय तो आ पुरुष एकदम क्यांथी आवे अने आटलुं बधुं दुर्लभ द्रव्य आवा क्षेत्रमां काळमां के भावमां कोण आपे ? आ प्रमाणे देव मायाने तुं जाणी ले अथवा कोइ देवी दिव्यरुप धारण करीने ललचावे तो पण पोते न ललचाय. तेवुं तुं समज. हे साधु ! तुं आ बधी मायाने अथवा कर्म बन्धने जाणीने देव वीगेरेनी कपट जाळने समजीने ललचातो नहीं. (२४)

सव्वट्ठेहिं अमुच्छिए, आउकालस्स पारए ॥ तितिक्खं परमं नच्चा, विमोहन्नयरं हियं ॥२५॥

तिबेमि विमोक्षाध्ययनमष्टमं समाप्तम् । उद्देशः ॥ ८—८ ॥

बधा अर्थो, इन्द्रियोना विषयो पांच प्रकारना छे. ते काम गुण छे अथवा तेने प्राप्त करावनार द्रव्य समूह छे. तेमां तुं मूर्छा न पामतो एटले प्राप्त करावनार द्रव्य समूह छे तेमां पोते मूर्छा न पामतो आयु पहोंचे त्यां सुधी पोते स्थिर रहे. अने तेनो एटले क्षय थाय त्यां सुधी रहे ते पारग छे एटले उपर बतावेली विधिए पादपउपगमन अणसणमां रहीने चढता शुभ भाव वडे पोताना आयुना काळनो पार पहोंचनारो थाय. आ प्रमाणे पादपउपगमननी विधि बतावीने समाप्त करवा भक्त परिज्ञा विगेरे त्रणे मरणोना काळक्षेत्र पुरुषनी अवस्थाने वीचारीने योग्यता प्रमाणे करे ते छेल्ला बे पदमां बताव्युं छे. परीसह उपसर्गथी जे दुःख आवे ते बधुं सारी रीते सहन करवुं. ते त्रणे मरणमां मुख्य छे ते विचारीने मोह रहितनां जे मरणे भक्त परिज्ञा इंगित मरण पादपउपगमन छे. ते त्रणेमां काळ क्षेत्र विगेरेने आश्रयी उत्तम भावे ते करवाथी बधामां समान फळ छे. माटे अभिप्रेत अर्थ मळवाथी हित छे, माटे यथाशक्ति त्रणमांनुं कोइ पण पोतानी शक्ति प्रमाणे ते अवसरे करवुं. [हाल तेवुं संघयण न होवाथी धैर्य न रहे तेम आयुष्यनो

काळ बतावनार ज्ञानी साधुना अभावे तेवुं अणसण थतुं नथी पण यथाशक्ति सागरिक एक बे उपवासनुं अथवा कलाक बे कलाकनुं अणसण वैयावच्च करनार मांदा साधुनी स्थिरता जोइ करावे छे. अने तेमां निर्मळ भावनी प्रधानता होवाथी पूर्वना मरण जेवोज लाभ छे.] आ प्रमाणे सुधर्मास्वामिए कह्युं नय विचार विगेरे तेमां थोडुं आवी गयुं छे. आठमा अध्ययननो आठमो उद्देशो समाप्त थयो. अने अध्ययन पण समाप्त थयुं [टीकाना श्लोक १०२०] आठमुं अध्ययन समाप्त.

उपधान श्रुत नामनुं नवमुं अध्ययन.

आठमुं अध्ययन कह्युं, हवे नवमुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबन्ध छे. के पूर्वे आठ अध्ययनोमां जे आचारनो विषय कह्यो हतो, तेवो श्री वीर वर्द्धमानस्वामिए पोते पाळेलो छे, तेथी ते नवमां अध्ययनमां कहे छे. तेनो आठमा साथे आ प्रमाणे संबन्ध छे, के तेमां अभ्युद्यत मरण त्रण प्रकारनुं बताव्यु, तेवा कोइ पण अणसणमां रहेलो साधु आठमा अध्ययनमां बतावेल विधिए अति घोर परीसह उपसर्ग सहन करी अने सन्मार्गनो अवतार प्रकट करी चार घाति कर्मनो नाश करीने अनंतज्ञान विगेरे अतिशयोवाळुं अप्रमेय महाविषयोनुं स्व तथा परनुं प्रकाशक एवुं केवळज्ञान मेळवनार श्री महावीर प्रभुने समोसरणमां बेठेला अने सवोना हित माटे देशना करे छे तेमने पोते ध्यानमां ध्यावे, एटला माटे आ अध्ययन कहे छे. आवा संबन्धे आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोगद्वार कहेवा, तेमां उपक्रमद्वारमां अर्थाधिकार बे प्रकारे छे, अध्ययन अर्थाधिकार तथा उद्देशार्थ अधिकार तेमां अध्ययननो अर्थाधिकार टुंकाणमां पहेला अध्ययनमां कहेल छे, अने तेनेज खुलासावार निर्युक्तिकार कहे छे—

जो जइया तित्थयरो, सो तइया अप्पणो य तित्थम्मि । वण्णेइ तवोकम्मं, ओहाणसुयंमि अज्झयणे ॥२७६॥

जे समये जे तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे, ते पोताना तीर्थमां आचरनो विषय कहेवाने छेवटना अध्ययनमां पोते करेला तपनुं वर्णन करे छे, (के बीजा जीवोने पण तेम करवानी रुचि थाय) आ बधा तीर्थंकरोनो कल्प छे, अहीं तो उपधान श्रुत नामनुं छेल्लुं अध्ययन [ते विषयनुं] छे, तेथी तेने उपधान श्रुत कहे छे. कोइने शङ्का थाय के जेम बधा तीर्थंकरनुं केवळ ज्ञान समान छे, तेम तप अनुष्ठान समान छे, के ओछुं वधतुं छे ? ते शङ्कानुं निवारण करवा कहे छे;

सव्वेसिं तवोकम्मं निरुवसग्गं तु वण्णिय जिणाणं; । नवरं तु वद्धमाणस्स, सोवसग्गं मुणेयव्वं; ॥२७७॥

तित्थयरो चउनाणी सुरमहिओ सिज्झियव्वय धुवम्मि; । अणिगूहियबलविरिओ, तवोविहाणंमि उज्जमइ ॥२७८॥

किं पुण अवसेसेहिं दुक्खक्खयकारणा सुविहिएहिं । होइ न उज्जमियव्वं सपच्चवायंमि माणुस्से ? ॥२७९॥

(त्रणे गाथानो अर्थ सरळ होवाथी टीका नथी तो पण टुंकामां लखीए छीए)

बधा तीर्थङ्करोनो तप शास्त्रमां उपसर्ग रहित बताव्यो छे [पार्श्वनाथनो थोडो होवाथी गण्यो नथी] पण वर्द्धमानस्वामिनो तप उपसर्गवाळो जाणवो. (तेमने संगम देवता विगेरेना घणा उपसर्ग आवेला छे, (२७७)

तीर्थङ्कर दीक्षा लीधा पछी तुरत मनःपर्यवज्ञान प्रकट थतां चार ज्ञानवाळा थाय छे, देवताओथी पूजाय छे, निश्चये मोक्षमां जनारा छे, तोपण पोतानुं बळ वीर्य न गोपवतां तप विधानमां उद्यम करेछे, (२७८) तो बीजा समान्य गीतार्थ साधु विगेरे ए (तपनो फायदो जाण्या पछी) अने मनुष्यपणानुं जीवन सोपक्रम (विघ्न वाळुं होवाथी शा माटे तपमां यथाशक्ति उद्यम न करवो?

हवे अध्ययननो अर्थाधिकार बतावीने उद्देशानो अर्थाधिकार कहे छे—

चरिया १ सिज्जा य २ परीसहाय ३, आयंकिया (ए) चिगिच्छा (४) य ॥ तवचरणेणऽहिगारो, चउसुद्देसेसु नायव्वो २८०

'चरण' चराय ते चर्या, एटले 'वर्द्धमानस्वामिना विहारने आ पहेला उद्देशामां वर्णव्यो छे.

बीजा उद्देशामां शय्या ते वसति (रहेवानुं स्थान) जेवुं महावीरे वापर्युं छे तेनुं वर्णन छे.

त्रीजा उद्देशामां परीसहो आवेथी निर्जरामाटे चारित्र मार्गथी भ्रष्ट न थतां साधुए तेने सहन करवा, अने तेना उपलक्षणथी अनुकूल तथा प्रतिकूल वर्द्धमानस्वामिने जे परीसहो थया ते बतावे छे.

चोथा उद्देशामां भूखनी पीडामां विशिष्ट अभिग्रहनी प्राप्तिमां आहारवडे चिकित्सा [उपाय] करे, अने तप चरणनो अधिकार तो चारे उद्देशामां चाले छे, (गाथार्थ)

त्रण प्रकारे निक्षेपो छे, ओघनिष्पन्न, नाम, अने सूत्रालापक तेमां ओघमां अध्ययन, नाममां उपधानश्रुत एवुं बे पदनुं नाम छे, ते उपधान अने श्रुतना यथाक्रमे निक्षेपा करवा ए न्याये उपधान निक्षेपनुं वर्णन करे छे.

नामंठवणुवहाणं दव्वे भावे य होइ नायव्वं । एमेव य सुत्तस्सवि निक्खेवो चउव्विहो होइ ॥२८१॥

नामस्थापना द्रव्य अने भाव एम चार प्रकारे उपधानना निक्षेपा छे, तेज प्रमाणे श्रुतना पण चारज छे, तेमां द्रव्यश्रुत अनुपयुक्त (उपयोग विना)नुं छे. अथवा द्रव्य मेळववा माटे जैनेतरनुं छे.

अने भावश्रुत ते अंग उपांगमां रहेलुं जे श्रुत छे, तेमां उपयोग होय ते, हवे सुगमनामस्थापना छोडीने द्रव्य विगेरे उप·

धान बताववा कहे छे.

दव्वुवहाणं सयणे भावुवहाणं तवो चरित्तस्स । तम्हा उ नाणदंसणतवचरणेहिं इहाहिगयं ॥२८२॥

समीपमां रहीने धारण कराय ते उपधान छे. द्रव्य संबन्धी होय ते द्रव्य उपधान छे. ते पथारी विगेरेमां सुखे सुवा माटे माथा नीचे टेको लेवा ओशीकुं विगेरे मुकाय छे. ते द्रव्य उपधान छे.

अने भावनुं उपधान ते भावोपधान छे, ते ज्ञानदर्शन चारित्र अथवा बाह्यअभ्यंतरतप छे. कारण के तेनावडे चारित्रमां परिणत थयेला भाववाळाने उपष्टंभन [आधार] कराय छे.जेथी ते प्रमाणे ज्ञान दर्शन तप अने चरणवडे अहींयां अधिकार छे. गाथार्थ

प्र०—शा माटे चारित्रना आधार माटे तपनुं भाव उपधान कहे छे ? उ०—कहीए छीए.

जह खलु मइलं वत्थं सुज्झइ उदगाइएहिं दव्वेहिं । एवं भावुवहाणेण सुज्झए कम्ममट्ठविहं ॥२८३॥

(यथा उदाहरणना उपन्यास माटे छे. जेमके आ छे. एम बीजुं पण जाणवुं. खलु शब्द वाक्यनी शोभा माटे छे.) जेम मेलुं वस्त्र प्रथम पाणी विगेरेथी शुद्ध कराय छे, तेम जीवने पण भाव उपधानरुप बाह्य अभ्यन्तर तपवडे आठे कर्मथी शुद्ध कराय छे. अने अहींया कर्मक्षयना हेतु माटे तपस्यानुं उपधान श्रुतपणे लेवाथी पर्यायो लेवा जोइए. [तत्त्व भेद अने पर्यायोवडे व्याख्या थाय छे.] माटे पर्यायो कहे छे. अथवा तप अनुष्ठानवडे अवधूनन विगेरे कर्म ओछां थवाना जे विशेष उपायो संभवे छे ते बतावे छे.

ओधूणण धूणण नासण विणासणं झवण खवण सोहिकरं । छेयण भेयण फेडण, डहणं धुवणं च कम्माणं ॥२८४॥

तेमां अवधूनन, ते अपूर्वकरणवडे कर्म ग्रन्थि भेदनुं उपादान जाणवुं. अने ते तपना कोइ पण भेदना सामर्थ्यथी आ क्रिया

थाय छे. एटले बाकीना अगीयार भेदमां पण आ जाणवुं. तथा 'धूनन' ते भिन्न ग्रन्थिवाळाने अनिवृत्तिकरणवडे सम्यक्त्वमां रहेवुं, तथा 'नाशन' कर्म प्रकृतिनुं स्तिबुक सङ्क्रमणवडे एक प्रकृतिनुं बीजी प्रकृतिमां सङ्क्रमण थवुं, 'विनाशन' शैलेशी अवस्थमां सम्पूर्णताथी कर्मनो अभाव करवो, 'ध्यापन' उपशमश्रेणिमां कर्मनुं उदयमां न आववुं, क्षपण ते अप्रत्यख्यानादि क्रमवडे क्षपकश्रेणिमां मोह विगेरेनो अभाव करवो, शुद्धिकर—अनंतानुबन्धीना क्षयना प्रक्रमथी क्षायिक सम्यक्त्व मेळववुं, 'छेदन' उत्तरोत्तर शुभ अध्यवसायमां चडवाथी स्थितिनी ओछाश करवी, 'भेदन' ते बादर संपराय अवस्थामां संज्वलनना लोभना खंड खंड करी नाखवा, (फेडण) त्ति—चौठाणीआ रसवाळी अशुभ प्रकृतिने त्रण रसवाळी विगेरे बनाववी. 'दहन' ते केवलीसमुद्घातरुप ध्यान अग्निवडे वेदनीयकर्मनुं राखतुल्य बनाववुं, अने बाकीना कर्मनुं वळेलां दोरडा माफक बनाववुं, 'धावन' ते शुभ अध्यवसायथी मिथ्यात्व पुद्गलोनुं सम्यक्त्वभावे बनाववुं, आ बधी कर्मनी अवस्थाओ प्राये उपशमश्रेणी क्षपकश्रेणी केवलि समुद्घात शैलेशी अवस्था प्रकट करवाथी प्रभूत रीते प्रकट थाय छे, [आत्मा निर्मळ करवा कराय छे] एटला माटे प्रक्रमाय (आरंभाय) छे, तेमां उपशमश्रेणीमां प्रथमज अनंतानुबन्धीओनी उपशमनी कहेवाय छे, अहीं असंयतसम्यग्दृष्टि देशविरति प्रमत्त अप्रमत्तमांथी कोइ पण बीजा योगमां जतां आरंभक होय छे, तेमां दर्शन सप्तक एकवडे उपशमाय छे, ते कहे छे.

अनंतानुबन्धी चोकडी, उपरनी त्रण लेश्यामां विशुद्ध होवाथी साकार उपयोगवाळो अंतःकोटीकोटी स्थितिनी सत्तावाळो परिवर्त्तन थती शुभ प्रकृतिओनेज बांधतो प्रति समये अशुभ प्रकृतिओना अनुभागने अनंतगुण हानीए ओछी करतो शुभ प्रकृतिओने अनन्त गुण वृद्धिए अनुभाग (रस) मां व्यवस्था करतो पल्योपमना असंख्य भाग हीन उत्तरोत्तर स्थितिबन्ध करतो करणकालथी

पण पहेलां अन्तर्मुहुर्त्तमां विशुद्ध मान बनीने त्रण करण करे छे, ते प्रत्येक अंतर्मुहूर्त्तना छे. ते कहे छे-(१) यथा प्रवृत्त (२) अपूर्व (३) अनिवृत्तिकरण छे-अथवा चोथीं उपशांतथी थाय छे. तेमां यथा प्रवृत्त करणमां दरेक समये अनंत गुण वृद्धिवाळी विशुद्धिने अनुभवे छे. तेमां स्थिति घात, रसघात, गुण श्रेणि, गुण सङ्क्रमण आमांथी कोइ पण होतुं नथी तेज प्रमाणे बीजा अपूर्वकरणमां छे. तेनो परमार्थ कहे छे के तेमां अपूर्व अपूर्व क्रियाने मेळवे छे. तेथी अपूर्व करण छे. तेमां प्रथम समयेज स्थिति घात रस घात गुणश्रेणि गुण सङ्क्रमण अने अन्य स्थिति बन्ध ए पांच पण अधिकार साथे पूर्वे न होता, अने हवे छे, तेथी अपूर्व करण छे. ते प्रमाणे अनिवृत्तिकरणमां अन्य अन्यने परिणामो उल्लंघता नथी. माटे ते अनिवृत्ति करण छे. एनो सार आ छे के पहेले समये जे जीवोए आकरण फरस्यो ते बधामां तुल्य परिणाम छे. ए प्रमाणे बीजा समयोमां पण जाणवुं. अहींया पण पूर्वे बतावेला स्थितिघात विगेरे पांचे पण अधिकार साथे वर्त्ते छे. तेथीज आ त्रण करणवडे उपर बतावेला क्रमवडे अनंतानुबंधीना कषायोने उपशमावे छे.

उपशमनुं वर्णन.—जेम धूळ पाणीथी छांटीने लाकडाना थाळावडे कुवो करतां चोंटी जवाथी वायु विगेरेथी उडाडवा छतां ते धूळ उडती नथी, तेम कर्म धूळ पण विशुद्धि भावरूप पाणीवडे भिंजावी अनिवृत्ति करण थाळावडे हणतां कर्मरज शांत थवाथी उदय उदीरण सङ्क्रम निधत्त निकाचनारूप करणोने अयोग्य थाय छे. (चीकणो कर्म बंध न थाय) तेमां पण प्रथम समये कर्मदलिक थोडुं उपशांत थाय. अने बीजा त्रीजा विगेरे समयमां असंख्येय गुण वृद्धिए उपशमता अंतर्मुहूर्त्तमां बधुं शांत थाय छे. आ प्रमाणे एक मतवडे अनन्तानुबन्धीनो उपशम बताव्यो.

बीजा आचार्योनो मतभेद.—अनंतानुबन्धीनी विसंयोजना बतावे छे, तेमां क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि जीवो चार गतिमां रहेला

छे. तेमां पण अनंतानुबन्धीना विसंयोजको छे. तेमां नारक अने देव अविरत सम्यग्दृष्टिओ छे, तथा तिर्यंचो अविरत देशविरत छे. मनुष्यो अविरत देश विरत प्रमत्त अप्रमत्त छे.

ए वधा पण यथा संभव विशोधि विवेक वडे परिणत थयेला अनंतानुबन्धीनी विसंयोजना माटे पूर्वे कहेल करण त्रण करे छे. तेमां पण अनंतानुबन्धीनी स्थितिने अपवर्तन करतो पल्योपमना असंख्येय भाग मात्र बनावे छे. अने पल्योपमना असंख्येय भाग जेटली मोह प्रकृतिओ जे वन्धाय छे, तेने प्रति समये सङ्क्रमावे छे. तेमां पण प्रथम समये स्तोक अने त्यार पछीना समयोमां असंख्येय गुण सङ्क्रमावे छे.ए प्रमाणे छेल्ला समयमां वधासङ्क्रमवडे आवलिका जेटलाने छोडी बाकीनी सर्वे सङ्क्रमावे छे.अने पछी आवलिकामां रहेल पण स्तिवुक सङ्क्रमवडे वेदांती वीजी प्रकृतिओमां सङ्क्रमावे छे.ए प्रमाणे अनंतानुबन्धी कषायो विसंयोजित थायछे.

दर्शन त्रिकनी उपशमना.—तेमां मिथ्यात्वनो उपशमक मिथ्यादृष्टि छे, अथवा वेदक सम्यग्दृष्टि छे पण सम्यक्त्व के सम्यग् मिथ्यात्वनो वेदक तेज उपशमक छे.

तेमां भिथ्यात्वनो उपशम करतो तेनुं अंतर करीने प्रथम स्थितिने विपाकवडे भोगवीने मिथ्यात्वनो उपशम करतो, उपशांत मिथ्यात्वी बने छे. अने उपशम सम्यग्दृष्टि थाय छे. हवे वेदक सम्यग्दृष्टि जीव उपशम श्रेणीने स्वीकारतो अनंतानुबन्धीने वीसंयोजीने संयममां रहेलो आ विधिए दर्शनत्रिकने उपशमावे छे तेमां यथा प्रवृत्त विगेरे पहेला बतावेल त्रण करणोने करीने अंतरकरण करतो वेदक सम्यक्त्वनी पहेली स्थितिने अंतर्मुहूर्त्तनी बनावे छे. अने बाकीनी आवलिका मात्र बनावे छे. त्यार पछी थोडी ओछी एवी मुहूर्त मात्रनी स्थिति खंड खंड करीने वध्यमान प्रकृतिओने स्थितिबन्ध मात्र काळवडे ते कर्मना दळियाने सम्यक्त्वनी

प्रथम स्थितिमां प्रक्षेप करतो आ प्रक्रियावडे सम्यत्त्वना बन्धना अभावथी अंतर क्रियमाण करेलुं थाय छे. मिथ्यात्व सम्यक् मिथ्यात्व प्रथम स्थिति दलिकने आवलिकाना परिमाण मात्र सम्यत्त्वनी प्रथम स्थितिमां स्तिबुक सङ्क्रमवडे सङ्क्रमावे छे. तेमां पण सम्यत्त्वनी प्रथम स्थिति क्षीण थतां उपशांत दर्शनत्रिकवाळो थाय छे. त्यार पछी चारित्रमोहनीयने उपशमावतो पूर्व माफक त्रण करण करे छे. एमां विशेष आ छे.यथा प्रवृत्त करण अप्रमत्त गुणस्थानेज थाय छे. अने बीजुं अपूर्वकरण तो आठमुं गुणस्थान छे. तेना प्रथम समयेज स्थितिघात, रसघात,गुणश्रेणि,गुणसङ्क्रम, अपूर्वस्थितिबंध, ए पांचे अधिकार साथे प्रवर्त्ते छे. तेमां अपूर्वकरणना संख्येय भाग जतां निंद्रा प्रचलाना बंधनो व्यवच्छेद थाय छे. तेमां पण घणां हजार स्थितिनां कंडको गये छते छेल्ला समयमां बीजा भवनी नाम प्रकृतिनी त्रीस प्रकृतिना बंधनो व्यवच्छेद करे ते आ प्रमाणे छे.

(१) देवगति (२) अनुपूर्वी (३) पचेंद्रिय जाति, (४) वैक्रिय (५) आहारक शरीर अने ते (६–७) बन्नेना अंगोपांग, (८) तेजस (९) कार्मण शरीर (१०) समचतुरस्र संस्थान (११ थी १४) वर्ण गंध रस स्पर्श (१५) अगुरुलघु (१६) उपघात (१७) पराघात (१८) उच्छ्वास (१९) प्रशस्तविहायोगति (२०) त्रस (२१) बादर (२२) पर्याप्त (२३) प्रत्येक (२४) स्थिर (२५) शुभ (२६) सुभग (२७) सुस्वर (२८) आदेय (२९) निर्माण (३०) तीर्थङ्करनाम तेथी अपूर्व करणना छेल्ला समयमां हास्य रति भय जुगुप्साना बधनो व्यवच्छेद थाय छे. अने हास्यादि षटकना उदयनो व्यवच्छेद थाय छे. बधा कर्मनो अप्रशस्तनो उपशम निद्धत निकाचना करवानुं व्यवच्छेद थाय छे. (टीकाना काउसमां लख्युं छे के देशना उपशमनो व्यवच्छेद थाय छे) तेथी ए प्रमाणे असंयत सम्यग्दृष्टि विगेरेथी अपूर्वकरणना अंत सुधी सात कर्मोनो उपशांत मेळवाय छे. त्यार पछी अनिवृत्तिकरण छे.

अने ते नवमो गुण (गुणस्थान) तेमां रहेलो एकवीस मोह प्रकृतिनो अंतर करीने नपुंसक वेदने उपशमावे छे. त्यारपछी स्त्री वेद पछी हास्यादि षटक पछी पुरुष वेदना बन्ध उदयनो व्यवच्छेद थाय छे. त्यार पछी बे आवलिकामां एक समय ओछे पुं वेदनो उपशम थाय छे. त्यार पछी बे क्रोधनो अने पछी संज्वलन क्रोधनो, पछी एज प्रमाणे मानत्रिक अने मायात्रिकनो उपशम करे छे. त्यार पछी संज्वलन लोभना सूक्ष्म खंडो बनावे छे. अने ते करणना काळना चरम समयमां वचला बे लोभने उपशमावे छे. आ प्रमाणे अनिवृत्तिकरणना अंतमां सतावीस प्रकृति उपशांत थाय छे, त्यार पछी सूक्ष्म खंडोने अनुभवतो सूक्ष्मसंपरायवाळो थाय छे. (दशमुं गुणस्थान फरसे छे.) तेना अंतमां ज्ञान अंतराय दशक दर्शनावर्ण चतुष्क यशकीर्त्ति अने उंच गोत्र एम सोळ प्रकृतिना बन्धनो व्यवच्छेद थाय छे. ए प्रमाणे मोहनीय कर्मनी २८ प्रकृति संज्वलन लोभ उपशमावतां उपशांत वीतराग थाय छे, (अगीयारमुं गुणस्थान फरसे छे.)

अने ते जघन्यथी एक समय अने ते उत्कृष्टथी अंतर्मुहूर्त्त छे. अने ते गुणस्थानेथी पडवानुं कारण कांतो मनुष्य भव समाप्त थाय अथवा काळ क्षय थाय. अने ते जेम चडेलो छे अने बंधादि व्यवच्छेद करे छे, तेज प्रमाणे पाछो पडतां कर्म बंध बांधे छे. अने तेमांथी कोइ पडतां मिथ्यात्व नामना पहेला गुणस्थाने पण जाय छे. अने जे भवक्षयथी पडे छे, तेने पहेला समयमांज बधा करणो प्रवर्त्ते छे. कोइ तो एक भवमां पण बे वार उपशमश्रेणि करे छे.

क्षपकश्रेणिनुं वर्णन.

आ श्रेणी करनार मनुष्यज आठ वरसनी उपरनो 'आरंभक' होय छे. अने ते प्रथमज-करणत्रयपूर्वक अनंतानुबन्धी कषायोने

विसंयोजे छे. (दूर करे छे.) पछी करण त्रण पूर्वकज मिथ्यात्वने अने तेमां बाकी रहेल भागने सम्यग् मिथ्यात्वमां नांखतो खपावे छे. ए प्रमाणे सम्यग् मिथ्यात्वने पण खपावे पण विशेष एटलुं छे के तेमां बाकी रहेलने सम्यक्त्वमां नांखे छे एज प्रमाणे सम्यक्त्वने खपावे छे. अने तेना छेल्ला समयमां वेदक (क्षयउपशम) सम्यग् दृष्टि थाय छे त्यार पछी क्षायिक सम्यग् दृष्टि थाय छे. आ सात कर्म प्रकृतिओ असंयत सम्यग् दृष्टिथी लइने अप्रमत्त गुणस्थान सुधी खपावे छे अने आ सम्यक्त्व पाम्या पहेलां जो आयु बन्धायुं होय तो श्रेणिक राजा माफक त्यांज टके छे. पण जेणे आयु बांध्युं नथी अने क्षायिक समक्ति मेळव्युं छे. तेवो कषाय अष्टकने खपाववा करणत्रय पूर्वक आरंभे छे. त्यां यथा प्रवृत्त करण अप्रमत्तनेज होय छे अपूर्व करणमां तो स्थितिघात विगेरे पूर्वनी माफक निद्राद्विक अने देवगति विगेरे त्रीस तथा हास्यादि चतुष्कनो यथाक्रम बंध व्यवच्छेद उपशमश्रेणिना क्रम माफक कहेवो अने अनिवृत्तिकरणमां तो थीणद्धि त्रिक नरक तिर्यंच गति तेनी अनुपूर्वि एकेंद्रिय आदि चार जाति आतप उद्योत स्थावर सूक्ष्म साधारण ए सोळ प्रकृतिनो क्षय थाय छे. पछी आठ कषायनो क्षय थाय छे.

बीजा आचार्यने मते प्रथम कषाय अष्टकने खपावे छे. त्यारपछी उपर कहेली सोळ प्रकृति खपावे छे. त्यार पछी नपुंसक वेद त्यार पछी हास्यादि षटक पछी पुरुष वेद पछी स्त्री वेद खपावे छे. पछी अनुक्रमे क्रोधथी माया सुधी त्रण संज्वलन कषायने खपावे छे. अने संज्वलन लोभना खंड खंड करी तेमांना बादर खंडोने खपावतो अनिवृत्ति बादर गुणस्थानवाळो होय छे. अने सूक्ष्म खंडोने खपावतो सूक्ष्म संपराय होय छे. तेना अंतमां ज्ञानावरणीनी दर्शनावरणीनी अतरायनी तथा यशकीर्ति उंच गोत्र मळी सोळ प्रकृतिनो बंध व्यवच्छेद करे छे. पछी क्षीण मोही बनीने अंतर्मुहूर्त रहीने तेना अन्तमां छेल्ला समयना पहेलामां बे निद्राने

खपावे छे. अन्त समयमां ज्ञान आवरण अने अंतराय पंचक तथा दर्शन आवरण चतुष्क खपावीने आवरण रहित ज्ञान दर्शनवाळो केवळी (सर्वज्ञ) बने छे. अने ते फक्त एकज सातावेदनीय कर्मने सयोगी गुणस्थान सुधी बांधे छे. आ गुणस्थाने जघन्यथी केवळी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी पूर्व कोडीमां थोडुं ओछुं आयु सुधी होय छे. त्यार पछी आ केवळी भगवानने मालम पडे के अंतर्मुहूर्त आयु बाकी छे. अने वेदनीय कर्म घणुं वधारे छे तो बन्नेनी स्थिति सरखी करवा केवळी समुद्घात अनुक्रमे करे छे.

केवळी समुद्घातनुं वर्णन.

औदारिक कायना योगवाळो आ लोकना अंत सुधी उंचे नीचे पहोंचे त्यां सुधी शरीरना परीणाह (अव–गाहनाना) प्रमाणनो प्रथम समयमां दंड आकार बनावे छे. बीजा समयमां तीर्छी दिशामां लोकांत पुरवा माटे कपाट (कमाड) माफक औदारिक कार्मण शरीरना योगमां रहीने बनावे छे. त्रीजा समयमां खुणाओ पुरवा माटे कार्मण शरीर योगमां रहीने मन्थान (मथणी) माफक बनावे छे. अने ते सम श्रेणि पछी श्रेणि लेवाथी लोकनो घणो भाग प्राये पुराय छे. अने चोथा समयमां कार्मण योगवडेज मंथानना वचमां रहेला आंतरा पुरवा माटे निष्कुटवडे पुरे छे तेज प्रमाणे उलटा क्रमे बीजा चार समयमां ते व्यापारने संकेलता ते ते योगवाळो थाय छे. फक्त 'छट्ठा' समयमां मंथाननो उपसंहार करतां औदारिक मिश्रयोगी थाय छे. ते प्रमाणे केवळी भगवान समुद्घातने संहरीने पछी फलक विगेरे पोते जे गृहस्थ पासे लीधुं होय ते पाछुं सोंपीने योगनो निरोध करे छे.

योग निरोधनुं वर्णन.

प्रथम बादर मन योगने रोके छे. पछी वचन योगने अने काय योग जे बादर होय तेने रोके छे पछी एज क्रमे सूक्ष्म मनो-

योग रोके छे. पछी सूक्ष्म वचनयोग रोके छे. त्यार पछी सूक्ष्म काय योगने रोकतो अप्रतिपाति नामना शुक्लध्यानना त्रीजा भेदने आरोहे छे अने सूक्ष्म क्रियाने रोकतो विशेषे करीने क्रिया रोकीने अनिवृत्ति नामना शुक्लध्यानना चोथा पायाने आरोहे छे.

अने तेमां आरुढ थयेलो अयोगी केवळी भावने पामेलो अन्तर्मुहूर्त जघन्य उत्कृष्टथी रहे छे. तेमां जे जे कर्मनो उदय आवेल नथी ते ते कर्मोने स्थितिना क्षयवडे खपावतो अने वेदाति प्रकृतिने बीजी प्रकृतिमां संक्रमावतो खपावतो छेवटना पहेला समयमां आवे छे. ते वखते देवगति साथेनी कर्म प्रकृतिओ खपावे छे.

देवगति अनुपूर्वी वैक्रिय आहारक शरीर बन्नेनां अंगोपांग अने बन्धन अने सङ्घात तथा बीजी प्रकृतिओ खपावे छे औदारिक तेजस कार्मण ए त्रण शरीर तेनां बन्धन अने सङ्घातन छ सस्थान छ सङ्घयण औदारिक शरीरना अंगोपांग वर्ण गंध रस फरस मनुष्य अनुपूर्वी अगुरु लघु उपघात पराघात उच्छवास प्रशस्त अप्रशस्त विहायोगति तथा अपर्याप्ति प्रत्येक स्थिर अस्थिर शुभ अशुभ सुभग दुर्भग सुस्वर दुःस्वर अनादेय, अयशकीर्ति निर्माण नीचगोत्र कोइ पण एक वेदनीय कर्म खपावे छे.

अने छेल्ला समयमां तो १ मनुष्य गति २ पचेन्द्रिय जाति ३ त्रस ४ बादर ५ पर्याप्त ६ सुभग ७ आदेय ८ यशः कीर्ति ९ तिर्थंकर नाम १० कोइ एक वेदनीय कर्म ११ आयु १२ उच गोत्र ए बार प्रकृतिओ तीर्थङ्कर खपावे छे, अने कोइ आचार्यने मते अनुपूर्वी सहित तेर प्रकृतिओ खपावे छे, अने तीर्थङ्कर न होय, ते प्रथम बतावेली बार अथवा अग्यार खपावे छे, संपूर्ण कर्म क्षय कर्या पछी तुरतज अस्पर्श गतिए एकांतिक अत्यंतिक अनाबाध लक्षणवाळा सुखने अनुभवतो सिद्ध स्थान जे लोकना अग्र भागे छे, त्यां पहोंचे छे.

हवे उपसंहार करता तीर्थङ्करना आ सेवनथी बीजा जीवोने मरोचनता थाय, ते वतावबा कहे छे.

एवं तु समणुचिन्नं, वीरवरेणं महाणु भावेणं । जं अणुचरित्तु धारा, सीवमचलं जन्ति निव्वाणं ॥२८४॥

आ प्रमाणे कहेली विधिए ज्ञानादि भाव उपधान अथवा तपने वीरवर्द्धमान स्वामिए स्वयं आदर्यों छे, तो बीजा पण मोक्षाभिलाषीए आदरवो. (गाथार्थ)

ब्रह्मचर्य अध्ययननी निर्युक्ति समाप्त थइ.

हवे सूत्रानुगममां सूत्र उच्चारवुं ते कहे छे—

अहासुयं वइस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्टाए ॥ संखाए तंसि हेमंते, अहुणो पव्वइए रीइत्था ॥१॥

आर्य सुधर्मास्वामीने पूछवाथी जंबूस्वामीने पोते कहे छे, यथाश्रुत अथवा यथा सूत्र हुं कहीश, ते आ प्रमाणे—

ते श्रमण भगवान् महावीर स्वामी उद्यत विहार स्वीकारीने सर्व अलंकार (भूषण) त्यागीने पांच मुठी लोच करीने इंद्रे आपेला एक देवदूष्य वस्त्र धारण करी सामायिकनी प्रतिज्ञा उच्चरीने मनपर्यवज्ञान उत्पन्न थएला आठ प्रकारना कर्म क्षय करवा माटे अने तीर्थ प्रवर्त्तावबा माटे उद्यत विहारवाळा बनीने तत्वने जाणीने ते हेमंत रुतुमां मागशर (गुजराती कारतक) मासमां वद १०ना रोज प्राचीनगामिनी छाया (आथमतो सूर्य) थतां दीक्षा लइने विहार कर्यो. अने कुंड ग्रामथी बे घडी दीवस बाकी रहे कर्मार गामे आव्या अने त्यां भगवान आव्या पछी अनेक प्रकारना अभिग्रह धारण करीने घोर परीसह सहन करता महासत्वपणे मलेच्छोने पण शांति पमाडता बार वर्षथी कांइक अधिक छद्मस्थपणे मौनव्रत लइ तप आदर्यो अहीयां भगवाने सामायक उचर्युं, त्यारपछी इंद्रे

भगवान उपर देवदूष्य वस्त्र खभे मुक्युं तेथी भगवाने पण निःसंग अभिप्रायवडेज धर्मोपकरण विना बीजा मुमुक्षुओथी पण धर्म थवो अशक्य छे. ए कारणनी अपेक्षाए मध्यस्थ वृत्तिए तेज प्रमाणे धारण कर्युं, पण तेना उपभोगनी इच्छा नथी, एम जाणवुं ते बतावबा कहे छे.

णो चेविमेण वत्थेण पिहिस्सामि तंसि हेमंते । से पारए आवकहाए, एयं खु अणुधम्मियं तस्स ॥२॥
चत्तारि साहिए मासे, बहवे पाणजाइया आगम्म । अभिरुज्झ कायं विहरिंसु, आरुसिया णं तत्थ हिंसिंसु ॥३॥
संवच्छरं साहियं मासं जं न रिक्कासि वत्थगं भगवं । अचेलए तओ चाइ तं वोसिज्ज वत्थमणगारे ॥४॥

भगवान विचारे छे के इंद्रे आपेला आ वस्त्रवडे आ मारा शरीर आत्माने ढांकीश नहीं. अथवा हेमंत (शीयाळा) नी ऋतुमां ते वस्त्रवडे शरीरनुं रक्षण करीश नहीं अथवा लज्जा माटे वस्त्र धारण नहीं करुं. ते भगवान केवा छे? ते बतावे छे.

ते भगवान प्रतिज्ञाने पुरी करे छे. अथवा परीषहो अथवा संसारथी पार जाय छे.

प्र०—केटलो काळ? ते कहे छे. आखी जींदगी सुधी. प्र०—शा माटे आम राखे छे?

उ०—ते वस्त्र धारण करवाथी एम बताव्युं के पूर्वना तीर्थङ्करोए ते प्रमाणे वस्त्र धारण कर्युं छे. (खु अवधारणना अर्थमां छे. अने ते भिन्न क्रम बतावे छे) बीजा तीर्थङ्करोनुं वस्त्र धारण करवुं आगम पाठथी बतावे छे.

" से बेमि जे य अईया जे य पडुप्पन्ना जे य आगमेस्सा अरहंता भगवन्तो जे य पन्नवयन्ति जे अ पन्नइ-

-स्सन्ति सव्वे ते सोव्वही धम्मो देसिअव्वोत्तिकट्टु तित्थधम्मयाए एसाऽणुधम्मिगत्ति एगं देवदूसमायाए पव्वइंसु वा पव्वयंति वा पव्वइस्सन्ति व " त्ति,

ते हुं कहुं छुं, पूर्वे जे अनन्ता तीर्थङ्करो थया जेओ हाल उत्पन्न थाय छे. अने भविष्यमां थशे. जेमणे दीक्षा लीधी छे अने भविष्यमां लेशे. तेओ बधाए उपधिवाळो धर्म शिष्यो माटे बताववो एम विचारी पोते आ धर्मनो मारग छे एम जाणीने एक देव दूष्य इन्द्र पासे दीक्षामां लीधु छे. वर्तमानमां ले छे अने भविष्यमां लेशे. वळी कह्यु छे के—

गरियस्त्वात्सचेलस्य, धर्मस्यान्यैस्तथागतैः । शिष्यस्य प्रत्ययाच्चैव, वस्त्रं दध्रे न लज्जया ॥ १ ॥

वस्त्र सहित साधुना धर्मनु विशेषपणु होवाथी बीजा तीर्थङ्करोए पण शिष्यना विश्वास माटे वस्त्र धारण कर्युं छे. पण लज्जाने माटे धारण कर्युं नथी. तथा भगवाने दीक्षा लीधा पछी जे देवता संबंधी सुगंध पट लागेल हतो (देवताए सुगंधीनुं विलेपन कर्युं हतुं) तेथी तेनी सुगंधीथी खेचाइ आवेला भमरा विगेरे भगवानना शरीरने दुःख आपता हता ते बतावे छे. चार महीनाथी पण वधारे घणा प्राणीओ भमरा विगेरे शरीरमां डंख मारता हता अने मांस लोहीना अर्थी बनीने करडीने आम तेम दुःख देता हता (ते प्रभुए समभावे सह्युं.) प्र०—भगवान पासे क्यां सुधी ते देव दूष्य वस्त्र रह्युं.

उ०—ते इंद्रे आपेलुं वस्त्र एक वरसथी कांइक अधिक मास सुधी रह्युं त्यां सुधी भगवान कल्पमां रह्याछे. माटे त्याग्युं नहीं. त्यार पछी वस्त्रने त्यागनारा थया अर्थात् भगवान वस्त्र त्यागीने अचेल थया, अने ते सुवर्ण वालुका नदीना पूरमां आवेला कांटामां भरायलुं ब्राह्मणे लीधुं, वळी—

अदु पोरिसिं तिरियं भित्तिं चक्खुमासज्ज अन्तो सो झायइ । अह चक्खुभीया संहिया ते हन्ता हन्ता बहवे कंदिंसु ॥ ५ ॥ सयणेहिं वितिमिस्सेहिं इत्थिओ तत्थ से परिन्नाय । सागारियं न सेवेइ य, से सयं पवेसिया झाइ ॥ ६ ॥ जे के इमे अगारत्था मीसीभावं पहाय से झाई । पुट्ठोवि नाभिभासिंसु गच्छई नाइवत्तइ अंजू ॥ ७ ॥ णो सुकरमेयमेगेसिं नाभिभासे य अभिवायमाणे । हयपुव्वे तत्थ दण्डेहिं लूसियपुव्वे अप्पपुण्णेहिं ॥ ८ ॥

पछी पुरुष प्रमाण पोरसी आत्म प्रमाण वीथी (मारग) जग्या शोधता विहार करे छे. अर्थात् साधुने चालतां तेज ध्यान छे के पोतानी उंचाइ जेटली जग्या शोधीने चालवुं.

प्र०—केवी वीथी छे ? उ०—तीर्यग भिति गाडानी धुंसरी प्रमाण मोढा आगळ सांकडी अने आगळ जतां पहोळी होय छे ते प्रमाणे भगवान जुए छे. प्र०—केवी रीते जुए छे ? उ०—आंखे बरोबर ध्यान राखीने तेमां जुए छे. तेवी रीते चालनारने जोइने कोइ वखत कोइ बाळक कुमार विगेरे पीडा करे ते बतावे छे.

(अहीं चक्षु शब्ददर्शननो पर्याय छे.) एटले तेमना दर्शनथीज डरेला एकठा थयेला घणां बाळक विगेरे धूळनी मुठी विगेरेथी हणी हणीने चाळा पाडवा लाग्या. अने बीजा बाळकोने बोलावीने कहुं—जुओ ! आ नागो मुंडीओ छे. तथा आ कोण छे ? क्यांथी आव्यो छे ? अने आ कोना संबन्धी छे ? आवी रीते कोलाहल कर्यो. (५) वळी जेनामां सुवाय ते शयन-ते रहेवानुं स्थान

छे. तेमां कोइ निमित्तथी भेगा मळेला गृहस्थ अथवा बीजा दर्शनवाळाओथी भेगा थतां तेमने एकला जोइने कोइ वखत स्त्रीओ प्रार्थना करे छे. तेथी तेओ शुभ मार्गमां भुंगळ समान ज्ञ परिज्ञावडे तेमने जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे त्यागता मैथुनने सेवता नथी. अने ज्यारे पोते एकला पण शून्य घरमां होय त्यारे भाव मैथुन पण सेवता नथी. आ प्रमाणे ते भगवान पोताना आत्मावडे वैराग्य मार्गे आत्माने दोरीने धर्मध्यान अथवा शुक्लध्यान ध्याय छे. (६)

तेज प्रमाणे केटलाक घरमां रहेनार अगारस्थ जे गृहस्थो छे. तेओ साथे कारण पडतां एकमेक थतां पण द्रव्यथी अने भावथी मिश्र भाव छोडीने ते भगवान धर्मध्यान ध्याय छे. (तेमनी साथे कोइ पण जातनी वातचीत करता नथी.)

प्र०—शा माटे भगवान बोलाव्याथी अथवा न बोलाव्याथी बोलता नथी. उ०—पोताना कार्य माटेज जाय छे. तेटला माटे तेओ बोलावे तो पण भगवान मोक्ष पंथने अथवा पोताना ध्यानने छोडता नथी. कारण के पोते संयम अनुष्ठानमां वर्त्तता होवाथी ऋजु (सरळ) छे आ संबंधमां नागार्जुनीया कहे छे.

पुट्ठो व सो अपुट्ठो व, णो अणुन्नाइ पावगं भगवं ॥

कोइ ग्रहस्थ पूछे, अथवा न पण पूछे, तो पण भगवान पोते पापनी संमति आपता नथी—

प्र०—हवे कहेवाती वात बीजाओने सुकर नथी (पण दुष्कर छे) तेथी अन्य प्राकृत पुरुषोथी पळाय तेम नथी, छतां पण भगवाने शा माटे ते आचर्युं ? ते बतावे छे—बोलावनारा बोलावे तो पण प्रसन्न थइने बोलता नथी, अने जे नथी बोलावता, तेमना उपर कोपता नथी, तेमज प्रतिकूल उपसर्ग करवाथी पण भगवान तेना उपर विरुप भाव करता नथी ते बतावे छे, भगवान ज्यारे

अनार्य (जंगली) देश विगेरेमां विचर्या त्यारे भगवानने ते अनार्य पापीओए प्रथम दंडावडे मार्या, तेज प्रमाणे केश विगेरे खेंची तोडीने दुःखी कर्या वळी—

फरुसाइं दुत्तितिक्खाइ अइअच्च मुणी परक्कममाणे । आघायनट्टगीयाई दण्डजुद्धाइं मुट्ठिजुद्धाइं ॥९॥

परुष (कर्कश) वचनोथी बीजा पापीओ दुःख देतां, तेवा कठोर तिरस्कारने भगवाने न गणतां जगतना स्वभावने जाणता भगवान चारित्रमां पराक्रम बतावी सहन करता तथा (कोइनां प्रेमभावना) गायेलां गीतो अने करेला नाचोथी पोते कौतक मानता नहोता. तथा दंड युद्ध तथा मुक्काबाजीनी कुस्ती थवानी सांभळी आश्चर्य मानीने खीलेला नेत्रवाळा तथा रोमराजी विकस्वरवाळा उत्सुक थता नहोता.

गढिए मिहुकहासु समयंमि नायसुए विसोगे अदक्खु । एयाइ से उरालाइं गच्छइ नायपुत्ते असरणयाए ॥१०॥

अवि साहिए दुवे वासे सीओदं अभुच्चा निक्खन्ते । एगत्तगए पिहियच्चे से अहिन्नायदंसणे सन्ते ॥११॥

ए प्रमाणे कोइ मांहोमाहे कथा करता होय. अथवा कोइ पोताना सिद्धांतमां कदाग्रही होय. अथवा बे स्त्रीओ पोतानी कथामां रक्त होय. ते समये भगवान महावीर हर्ष शोक छोडीने ते बधानी कथामां मध्यस्थ रहीने जोता हता. अने ए तथा बीजा अनुकूल प्रतिकूल परिषह उपसर्ग थतां उदार (अतिशय) न सहन थाय तेवा दुःखो आवे तो पण पोते न गणतां संयमअनुष्ठानमां रहेला छे. तथा ज्ञात नामना जे क्षत्रीओ तेमना वंशमां जे जन्मेला छे ते ज्ञात पुत्र महावीर आ दुःखने स्मरणमां लावता

नथी. (पण चारित्र निर्मळ पाळे छे.)

अथवा शरण ते घर छे. ते नथी माटे अशरण छे. अने ते संयम छे ते माटे पोते यत्न करे छे. ते बतावे छे. एमां आश्चर्य शुं छे के भगवान अतिशय वळ पराक्रमवाळा महाव्रत पाळवानी प्रतिज्ञारूप मेरु पर्वते चढेला पराक्रम करे छे? ते भगवान महावीरे ज्यारे दीक्षा नहोती लीधी त्यारे पण निर्दोष प्रासुक आहारथी निर्वाह करता हता ते संबंधी कथा कहे छे. ज्यारे भगवान महावीरना माता पिता देवलोकमां गयां त्यारे भगवान महावीरे मातानां गर्भमां जरा न हालवाथी माने अतिशय दुःख थयुं हतुं अने ज्यारे पोते हाल्या त्यारेज माताने धीरज थइ हती, तेथी ते समये अवधिज्ञाने मातानो अभिप्राय जाणानार महावीरप्रभुए अभिग्रह कर्यो हतो के मारा वियोगथी माता पिता कमोते न मरो, ते हेतुने ध्यानमां राखी 'मारे माता पिता जीवतां सुधी दीक्षा न लेवी.' अने ते प्रमाणे अठावीस वरसनी पोतानी उमर थतां माता पिता देवलोकमां गयां. त्यारे अभिग्रहनी प्रतिज्ञा पुरी थइ एम जाणीने दीक्षा लेवानी तैयारी करी ते समये नंदीवर्धन नामना मोटाभाइ तथा ज्ञाति बंधुओए प्रभुने प्रार्थना करी के हे प्रभु! 'घा उपर खार छांटवा जेवु' माता पिताना वियोगना दुःखमां तमारो वियोग न करो. भगवान महावीरे आ सांभळीने अवधिज्ञाने जाण्युं के मारा आ दीक्षाना समयमां घणा मनुष्यो घेला थशे, अने मरी जशे, एवुं विचारीने तेओने कह्युं के मारे केटलो काळ रोकावुं पडशे? तेओए कह्युं के अमने बे वरसमां शोक दूर थशे. प्रभुए कह्युं के ठीक छे, पण आहार विगेरे लेवुं ते मारी इच्छाए थशे पण ते इच्छा तोडवा तमारे न आववुं. तेओए विचार्युं के कोइ पण रीते भगवान रहो एम मानीने तेमणे हा पाडी, त्यारपछी भगवान ते वचनने अनुसारे निर्दोष आहार लइने गृहस्थपणामां पण साधु वृत्तिए हता, पछी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणीने

संसारनी असारता विशेष प्रकारे जाणीने तीर्थप्रवर्त्तन माटे उद्यम करे छे. ते बतावेछे. (१०) भगवानं महावीर बे वरसथी कांइक अधिक काळ सुधी काचुं पाणी त्यागीने पग धोवा विगेरे क्रिया पण प्रासुक जळवडेज करता जेवी रीते पहेलु व्रत जीवदयानुं पाळ्युं तेज प्रमाणे बीजां व्रतो पण पाळ्यां. तेज प्रमाणे एकत्व भावनावडे भावित अंतःकरणवाळा बनीने अर्चारुप क्रोध ज्वाळाने जेणे अटकावी छे. अथवा पिहित अर्च्च एटले शरीरने गुप्त राख्युं छे. (के कोइ पण जीवने पोतानी कायाथी पीडा थवा देता नथी.)

ते भगवान महावीर दीक्षा लीधा पछी छद्मस्थ काळमां सम्यक्त्वभावनावडे भावित हता, (तेमने धर्म उपर निर्मळ श्रद्धा हती) तथा इंद्रियो अने मनवडे पोते शांत हता. (उन्मार्गे जवा देता नहोता) एवा भगवान गृहवासमां पण छेवटना बे वरसमां सावद्य आरंभना त्यागी हता तो पछी दीक्षा लीधा पछी चारित्रकाळमां शा माटे निःस्पृह न होय? ते बतावे छे.

पुढविं च आउकायं च तेउकायं च वाउकायं च । पणगाइं बीयहरियाइं तसकायं च सव्वसो नच्चा ॥१२॥

एयाइं सन्ति पडिलेहे, चित्तमन्ताइ से अभिन्नाय । परिवज्जिय विहरित्था इय सङ्खाय से महावीरे ॥१३॥

अदु थावरा य तसत्ताए तसा य थावरत्ताए । अदुवा सव्वजोणिया सत्ता कम्मुणा कप्पिया पुढो बाला ॥१४॥

आ भगवान् महावीर पृथ्वीकाय अप्काय वायुकाय विगेरे जीवोने सचित्त जाणीने तेनो आरंभ त्यागीने पोते विचरे छे. ते बतावे छे. पृथ्वीकाय सूक्ष्म अने बादर बे भेदे छे. ते सूक्ष्म सर्वत्र छे. अने बादर पण कोमळ अने कठण एम बे भेदे छे. तेमां कोमळ माटी धोळा विगेरे पांच रंगनी छे. पण कठण पृथ्वी तो पृथ्वी शर्करा वालुका विगेरेथी छत्रीस भेदवाळी छे, ते प्रथम शस्त्र

परिज्ञा नामना पहेला भागमां ( ) पाने छे. त्यांथी समजवुं. अपकाय पण सूक्ष्म वादर बे भेदे छे. तेमां सूक्ष्म सर्वत्र छे. पण वादर अग्नि अङ्गारा विगेरे पांच भेदे छे.

वायुनुं पण तेमज छे. फक्त वादर वायु काय उत्कालिक विगेरे पांच भेदे छे. वनस्पति पण सूक्ष्म वादर बे भेदे छे. सूक्ष्म सर्वत्र छे. अने वादर अग्र मूळ स्कंध पर्व बीज संमूर्छन एम सामान्यथी छ भेदे छे.

वळी ते दरेक प्रत्येक अने साधारण एम बे भेदे छे. प्रत्येक वृक्ष गुच्छा वगेरे वार भेदे छे. अने साधारण तो अनेक प्रकारे छे. ते अनेक भेदवाळो छतां वनस्पतिकाय सूक्ष्म सर्वगत होवाथी अने अतींद्रिय होवाथी तेने छोडीने फक्त भेदोमां वादरकाय लीधो छे ते बतावे छे. पनक लेवाथी बीज अंकुर भाव रहित पनक विगेरे उल विगेरे अनंत काय लेवा अने बीजना ग्रहणथी अग्र बीज विगेरे लेवां हरित शब्दथी बीजा भेद लेवा (१२) आ प्रमाणे पृथ्वी विगेरे भूतो छे. एम जाणीने तथा ते चेतनावाळा छे एम जाणीने भगवान महावीर तेमनो आरंभ छोडीने विचर्या पृथ्वीकाय विगेरे जंतुना त्रस स्थावरपणे भेदो बतावीनें हवे एमनामां परस्पर अनुगम पण छे, ते बतावे छे. (१३) स्थावर ते पृथ्वी पाणी अग्नि वायु वनस्पति छे. ते त्रसपणे एटले बेइंद्रिय विगेरे कर्म वशथी जाय छे. अने त्रस जीवो कृमि विगेरे पृथ्वी विगेरेमां कर्मने लीधे जाय छे. ते प्रमाणे बीजे पण कहुं छे.

“ अयण्णं भन्ते ! जीवे पूढविकाइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववण्णपुवे ?, हंता गोअमा ! असइं अदुवा-
ऽणंतखुत्तो जाव उववण्ण पुव्वे ” त्ति

गौतमनो प्र०—हे भगवान ! आ जीव पृथ्वी काय पणेथी लइ त्रसकांयपणे पूर्वे उत्पन्न थयेल छे ?

उ०—हा, अनेक वार अनंतवार पूर्वे उत्पन्न थयेल छे, अथवा बधी योनिओ जे जीवोनां प्रति स्थान छे, ते सर्व योनिक जीव छे, अने जीवो बधी गतिमां जनारा छे, ते जीवो (मंद बुद्धिथी) बाल छे, अने राग द्वेषथी व्याप्त थइ चीकणां कर्म बांधी पोताना करेलां कर्मनां फळ जुदी जुदी रीते सर्व योनियोमां भोगववावडे कल्पित (व्यवस्था करायला) छे. कह्यं छे केः—

णत्थि किर सो पएसो, लोए वालग्गकोडिमित्तोऽवि । जम्मणमरणावाहा अणेगसो जत्थ णवि पत्ता ॥ १ ॥

आ लोकमां वाळना अग्रभाग जेटलो प्रदेश मात्र पण एवो नथी, के ज्यां आ जीवे जन्म मरणनी बाधा अनेक वार प्राप्त करी नथी! वळी

रंगभूमिर्न सा काचिच्छुद्धा जगति विद्यते । विचित्रैः कर्म्मनेपथ्यैर्यत्र सत्त्वैर्न नाटितं ॥ २ ॥

तेवी शुद्ध रंगभूमि जगत्मां कोइ विद्यमान नथी, के ज्यां कर्मने पथ्य (शणगार) पहेरीने सर्व सत्वो नाच्या नथी! विगेरे छे.(१४) वळी—

भगवं च एवमन्नेसिं सोवहिए हु लुप्पई बाले; कम्मं च सव्वसो नच्चा, तं पडियाइक्खे पावगं भगवं ॥१५॥

दुविहं समिच्च मेहावि किरियमक्खायऽणेलिसं नाणी; आयाणसोयमइवायसोयं, जोगं च सव्वसो णच्चा ॥१६॥

भगवान महावीरे तेमज बीजी रीते जाण्युं के उपधि सहित ते द्रव्यथी तथा भावथी उपधि सहित जे वर्त्ते ते कर्मथी लेपाय, पछी ते बाळ अज्ञ साधु दुःखोने अनुभवे छे अथवा (हुनो हेतुमां अर्थ लइए तो) सोपधिक बाळ साधु कर्मथी लेपाय छे, तेथी बधी रीते कर्म बंधातुं जाणीने उपधिनुं कर्म त्यागी दीधुं. एटले अंदरथी अने बहारथी जे उपधिरूप पापकर्मनुंअनुष्ठान हतुं ते भगवाने त्यागी दीधुं. (जरुर होय त्यां सुधी शक्तिना अभावमां उपधि साधुए राखवी, अने पाछळथी शक्तिमान थतां त्यागी देवानो मार्ग

भगवाने बताव्यो) (१५) वळी बे प्रकारवाळा ते द्विविध कर्म छे, इर्या प्रत्यय, अने सांपरायिक छे, ते बन्नेने पण सर्वज्ञ प्रभुए जाणीने संयम अनुष्ठानरूप जे कर्म छेदवाने माटे अन्यत्र नथी, तेवी अनन्य सदृशी क्रिया बतावी.

प्र०—भगवान केवा हता ? उ०—ज्ञानी, (केवळज्ञान प्राप्त थया पछी तेमणे आ क्रिया बतावी.)

प्र०—वळी तेमणे बीजुं शुं कह्युं ? उ०—जेनावडे नवां कर्म लेवाय ते आदान खोटुं ध्यान छे; तथा इंद्रियोना विकार संबंधी ते स्रोत छे. माटे जे आदान स्रोत छे, तेने जाणीने तथा जीव हिंसारूप तथा तेना लक्षणथी मृषावाद विगेरे पापोने तथा मन वचन कायाना व्यापारवाळुं दुर्ध्यान छे ते बधे प्रकारे कर्म बंधने माटे छे एम जाणीने तेमणे संयम लक्षणवाळी निर्दोष क्रिया बतावी. वळी—

अईवत्तियं अणाउट्टिं सयमन्नेसिं अकरणयाए; जस्सित्थिओ परिन्नाया, सव्वकम्मावहा उ स अदक्खु ॥१७॥

आकुट्टी (हिंसा) ने त्यागवाथी अहिंसा छे, ते पापथी अति क्रांत होवाथी निर्दोष छे, ते महावीर प्रभुए पोतेज प्रथम अहिंसा स्वीकारीने बीजाओने पण हिंसानी प्रवृत्तिथी दूर राख्या, तथा जेमने स्त्रीओ स्वरूपथी तथा विपाकथी कडवां फळ आपनारी छे, एवुं ज्ञान छे, ते परिज्ञात भगवान छे, तथा तेज स्त्रीओ सर्व कर्म समूहो एटले सर्व पापोना उपादान भूत छे. ते पण एमणे जोयुं छे, तेथीज तेओ संसारनुं रूप जाणनारा थया तेनो भावार्थ ए छे केः—स्त्रीना स्वभावना आवा परिज्ञानथी तथा ते जाणीने त्यागवाथीज भगवान परमार्थदर्शी थया छे मूळ गुणो बतावीने हवे उत्तर गुण प्रकट करवा कहे छेः—

अहाकडं न से सेवे सव्वसो कम्म अदक्खू; यं किंचि पावगं भगवं, तं अकुव्वं वियड भुंजित्था ॥१८॥

कोइ गृहस्थे साधुने पूछीने अथवा विना पूछे (छानुं) आधा कर्मादि भोजन विगेरे कर्युं होय तो पोते ते लेता नथी. प्र०—शा माटे ? उ०—तेमणे जोयुं के, ते लेवाथी बधी रीते आठे प्रकारना कर्मनो बंध थाय छे, तेवुं दोषित बीजु पण सेवता नथी, ते कहे छे, जे कंइ पापवाळुं एटले जेनावडे भविष्यमां पापनुं कारण थाय तेवुं भगवाने न लीधुं, पण विकट (प्रासुक निर्दोष) भोजन विगेरे लीधुं. (१८) वळी—

णो सेवइ य परवत्थं, परपाएवी से न भुंजित्था; परिवज्जि याण उमाणं, गच्छइ संखडिं असरणयाए ॥१९॥

मायण्णे असणपाणस्स, नाणुगिद्धे रसेसु अपडिन्ने; अच्छिंपि नो पमज्जिज्जा, नोवि य कंडूयए मुणी गायं

पोते प्रधान (पर) वस्त्र भोगवता नथी. तेम किंमती पात्रमां खाता नथी, तथा पोते अपमान छोडीने आहारने माटे (ज्यां आहार रंधाय तेवी रसोडानी जग्या) संखंडीमां कोइनुं पण शरण (आलंबन) लीधा विना अदीन मनवाळा 'आ मारो कल्प' छे एम जाणीने परीषहो 'जीतवा' माटे जाय छे. (१९)

आहारनी मात्रा (माप) जाणे छे, माटे मात्रज्ञ प्रभु छे, प्र०—क्यो आहार? उ०—खवाय ते भात विगेरेनुं भोजन, पीवाय ते पाणी, द्राखनुं धोवण विगेरे–तेमां पोते लोलूपी नथी, तेम रस [छवीगइ] मां गृहस्थपणामां पण लोलूपी नहोता, तो पछी दीक्षा लीधा पछीनुं तो शुं कहेवुं रस लेवाथी एम सूचव्युं, के पोते तेवा पदार्थमां अभिग्रह न धारे के आजे सिंह केसरीया लाडुज खावा ! पण आवी प्रतिज्ञा राखे के आजे कुलमास अडदना बाकळा विगेरे खावा ; तथा आंखमां रज पडी होय, तो ते दूर करवा

माटे पण आंख मसळे नहीं ! तथा खणज आवे तो लाकडाना छांडा विगेरेथी पण खणे नहीं, (२०) वळी—

अप्पं तिरियं पेहाए. अप्पि पिट्ठओ पेहाए । अप्पं बुइएऽपडिभाणी, पंथपेहि चरे जयमाणे ॥२१॥
सिसिरंसि अद्धपडिवन्ने, तं वोसिज्ज वत्थमणगारे । पसारित्तु बाहुं परक्कमे, नो अवलंबियाण कंधंमि ॥२२॥
एस विहि अणुक्कन्तो माहणेण मईमया । बहुसो अपडिन्नेण भगवया एवं रियन्ति ॥२३॥
त्तिबेमि ॥ उपधानश्रुताध्ययनोद्देशः ॥ १ ॥ ९ ॥ १ ॥

(अल्प शब्द अभावना अर्थमां छे.) भगवान महावीर विहारमां तीरछी दिशामां जोता नथी तेम बंने बाजुए जोता नथी. तेम मार्गमां चालतां कोइ पूछे तो पण बोलता नथी. मौनज चाले छे. ते बतावे छे के पोते रस्तामां चालतां पग नीचे जीवोने पीडा न थाय तेज यतना राखता हता. (२१) वळी शियाळामां मार्गमां खरी ठंडमां पण देवदूष्य वस्त्र छोड्या पछी बे बाहु लांबी करीने चाले छे. पण ठंडथी पीडातां हाथने वांका वाळी संकोचता नथी. तेम पोताना खभा उपर पण हाथ राखीने उभा रहेता नथी.हवे समाप्त करवा कहे छे. (२२) आ विहारनो विधि बताव्यो ते भगवान महावीरस्वामी जेओ तत्वना जाणनारा छे. अने कोइ जातनुं नियाणुं कर्युं नथी, तथा ऐश्वर्य विगेरे गुणोथी युक्त छे, तेमणे पोते आचर्यो छे. एज प्रमाणे बीजा मोक्षाभिलाषी साधुओ संपूर्ण कर्म क्षय करवा माटे आचरे छे. आवुं सुधर्मास्वामि कहे छेः—

उपधानश्रुतअध्ययननो पहेलो उद्देशो पुरो थयो.

पहेलो कहीने जोडाजोडज बीजा उद्देशानी सूत्र गाथानी व्याख्या टीकाकार कहे छे. तेमां प्रथम संबन्ध कहे छे. पहेला उद्देशामां भगवानुनी चर्या बतावी. अने तेमां कोइपण शय्या (वसति) मां रहेवुं पडे, तेथी आ बीजा उद्देशामां तेनुं वर्णन आवशे. आ संबन्धे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

बीजा उद्देशानी सूत्र गाथाओ

चरियासणाइं सिज्जाओ एगइयाओ जाओ बुइयाओ। आइक्ख ताइं सयणासणाइं जाइं सेवित्था से महावीरे ॥

आवेसणसभापवासु पणियसालासु एगया वासो। अदुवा पलियठाणेसुपला लपुंजेसु एगया वासो ॥२॥

आगन्तारे आरामागारे तह य नगरे व एगया वासो। सुसाणे सुण्णगारे वा रुक्खमूले व एगया वासो ॥३॥

एएहिं मुणी सयणेहिं समणे आसि पतेरसवासे। राइं दिवंपि जयमाणे अपमत्ते समाहिए झाइ ॥४॥

चरिया (चर्या) मां जे जे शय्या आसन विगेरे जरुरनां होय ते शय्या फलक (पाटीयुं) विगेरे सुधर्मास्वामिए जंबूस्वामिना पूछवाथी भगवान महावीरे जे प्रमाणे उपयोगमां लीधेल छे. ते बतावेल छे. (आ टीकाकार लखे छे के तेना पहेलांनी टीकामां आ गाथानो अधिकार वर्णव्यो नथी, तेनुं कारण ते सुगम छे के सूत्रमां नथी ते सूचन पुस्तकमां जणातुं नथी तेथी अमे पण तेमनो अभिप्राय समजता नथी.) (१)

जंबूस्वामिना प्रश्ननो उत्तर आपे छे. भगवान महावीरने आहारना अभिग्रह माफक प्रतिमा सिवाय प्राये शय्यानो अभिग्रह नथी.

फक्त ज्यां छेल्लो पहोर (चरम पोरसी) थाय त्यांज मालीकनी आज्ञा लइने रहे ते बतावे छे. सर्वथा ज्यां रहेवाय ते आवेश छे.

आवेशन–शून्यगृह–तथा 'सभा' ते गाम नगर विगेरेमां त्यांना लोकोने माटे तथा आवेला नवा माणसोने सुवा माटे भींतोवाळुं मकान बनावे छे (गुजरातमां जेने चोरो कहे छे) प्रपाणी पावानी जग्या, (जेने परब कहे छे) ते आवेशन, सभा प्रपा तेमां भगवाने वास कर्यो, तथा पण्यशाळा (दुकान) तथा पलिय एटले लोहार, सुतारनी ओसरीमां तथा पलालना ढगलामां अथवा मांचो उपर लटकाव्यो होय तेना नीचे रहे, पण तेना उपर न बेसे कारण के मांचो पोकळ होय छे. (२)

वली प्रसङ्गे आवेला अथवा आवीने त्यां बेसे ते मुसाफरखानुं के धर्मशाळा ते गाममां होय अथवा गाम बहार होय तथा आराम ते घर आराम तथा आगारमां कोइ वखत वास करे, तथा मसाणमां अथवा शून्य घरमां वास करे, (आवेशन तथा शून्य घरनो भेद ए छे के पेलानी भींत मजबुत होय पण बीजामां तेम नहीं कोइ वखत झाडना मूळ नीचे वास कर्यो. (३)

उपर बतावेल शयन ते वसतिमां त्रण जगतने जाणनारा ऋतुबद्ध काळमां अथवा चोमासामां भगवान तपस्यामां उद्युक्त बनीने अथवा ध्यान राखनारा बनीने वास कर्यो.

प्र०—केटलो काळ ? ते कहे छे. प्रकर्षथी तेरमा वरस सुधी एटले बार वरसथी कंइक अधिक मुदत सुधी आखी रात अने दिवस संयम अनुष्ठानमां उद्यमवाळा बनीने अप्रमत्त एटले निद्रा विगेरे प्रमाद रहित तथा विस्रोतसिकारहित धर्म ध्यान अथवा शुक्ल ध्यान ध्याय छे वळी—

णिद्दंपि नो पगामाए, सेवइ भगवं उट्ठाए। जग्गावइ य अप्पाणं इसिं साई य अपडिन्ने ॥५॥

संबुज्झमाणे पुणरवि आसिंसु भगवं उट्ठाए। निक्खम्म एगया राओबहि चंकमिया मुहुत्तागं ॥६॥
सयणेहिं तत्थुवसग्गा भीमा आसी अणेगरूवा य। संसप्पगा य जे पाणा अदुवा जे पक्खिणो उवचरन्ति ॥७॥
अदु कुचरा उवचरन्ति गाम रक्खा य सत्तिहत्था य। अदु गामिया उवसग्गा इत्थी इगइया पुरिसा य ॥८॥

भगवान पोते प्रमाद रहित बनीने निद्रा पण वधारे लेता नथी. अने तेज प्रमाणे बार वरसमां अस्थिक गाममां व्यन्तरना उपसर्ग पछी कायोत्सर्गमां रहीने अन्तर्मुहूर्त सुधी स्वप्नो देखतां सुधी एकवार निद्रा करी हती त्यारपछी उठीने आत्माने कुशळ अनुष्ठानमां प्रवर्तावे छे अहींया पण पोते प्रतिज्ञा रहित छे. एटले पोते मनमां इच्छीने सुता नथी. (५)

वळी ते वीर प्रभु जाणे छे के आ प्रमाद संसार भ्रमण माटे छे. एम जाणीने संयम उत्थानवडे उठीने विचरे छे. जो अन्दर रहेतां निद्रा प्रमाद थाय तो त्यांथी नीकळीने शियाळानी रात विगेरेमां खुल्ली जग्यामां मुहूर्त मात्र निद्रा प्रमाद दूर करवा ध्यानमां उभा रह्या. (६) वळी ज्यां आगळ उत्कुटुक आसन विगेरेथी आश्रय लेवाय तेवा स्थानमां अथवा ते स्थानोवडे ते भगवानने भय करावनारा अनेक जातिना ठन्ड ताप विगेरेथी अथवा अनुकूळ प्रतिकूलरूपे परिषह उपसर्गो थया तथा शून्य घर विगेरेमां अहिं नकुळ (साप नोळीया) विगेरे भगवाननुं मांस विगेरे खाता हता, अथवा मसाण विगेरेमां गीध विगेरे पक्षीओ मांस खाता हता, (तो पण भगवान रागद्वेष करता नहोता.) (७)

वळी कुचर ते चोर परदार लंपट विगेरे कोइ शून्य घर विगेरेमां भगवानने दुःख देता हता तथा गाम रक्षा करनारा कोटवाळ

विगेरे त्रिक चोतरा विगेरे उपर उभेला भगवानने जोइने पूछतां जवाब न आपवाथी हाथमां शक्ति कुंत (भाला) विगेरे राखनारा भगवानने पीडा करता हता. तथा इन्द्रियोथी उन्मत्त थयेल स्त्रीओ भगवान पासे एकांतमां भोगनी याचना सुंदर रुप जोइने करती हती. अथवा शरीर सुगंधी जोइने अथवा पोतानुं तेवुं सुंदर शरीर बनाववा इच्छता पुरुषो भगवान पासे उपाय पूछता हता. जवाब न मळवाथी भगवानने दुःख पण देता हता.

इहलोइयाइं परलोइयाइं भीमाइं अणेगरूवाइं । अवि सुब्भि दुब्भिगन्धाइं सद्दाइं अणेगरूवाइं ॥९॥
अहियासए सया समिए फासाइं विरूवरूवाइं । अरइं रइं अभिभूय रीयइ माहणे अबहुवाई ॥१०॥
स जणेहिं तत्थ पुच्छिसु एगचरावि एगया राओ । अव्वाहिए कसाइत्था पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ॥११॥
अयमंतरंसि को इत्थ? अहमंसित्ति भिक्खुआहट्टु । अयमुत्तमे से धम्मे तुसिणीए कसाइए झाइ ॥१२॥

आ लोकमां एटले मनुष्ये करेला दुःखना स्पर्शो तथा देवताए करेला दिव्य स्पर्शो तथा तिर्यंचोए करेला उपसर्गोनां दुःखो तथा पर भवे करेलां पापोथी उदयमां आवेलां दुःखोने पोते समताथी सहे छे. अथवा आज जनममां जे दंडाना प्रहार विगेरे दुःख दे छे. तथा ते शिवायना परलोक संबंधी भीम (भयंकर) जुदा जुदा उपसर्गो आवे छे. ते बतावे छे. एटले सुगंधीवाळा ते फुलनी माळा तथा चंदन विगेरे छे. अने कोहेलां मुडदां विगेरे दुर्गंधवाळा छे तेज प्रमाणे वीणा वेणुं मृदंग विगेरेथी मधुर अवाज तथा कमेलक (उंट) नुं बराडवुं विगेरे कानमां कठोर अवाज लागे छे. ते बन्नेमां भगवान रागद्वेष करता नथी. [९]

तथा वधो काळ पांचे समितिओथी युक्त छे अने जे कंइ दुःखना स्पर्शो आवे तो संयममां अरति लावता नथी तेम सुंदर भोगोमां रति लावता नथी एम बन्ने परिषहमां समभाव धारीने संयम अनुष्ठानमां वर्ते छे. पोते कोइ पण जीवने दुःख न देवुं, एवा माहण बनेला जरूर पडतां एक बे उत्तर आपता विचरे छे. (१०)

ते भगवान महावीर साडा बार पक्ष वधारे एवा बार वरस (बार वरस अने साडा बार पखवाडीयां) सुधी एकला विचरता शून्यगृह विगेरेमां रहेता लोकोथी पूछाता के तमो कोण छो ?

केम अहीं उभा छो अथवा क्यांथी आव्या छो. ते समये पोते मौन रहेता, तथा दुराचारीओ विगेरे एकत्रा भटकता त्यां आवीने कोइ वखत रातमां अथवा दिवसमां पूछता. पण भगवाने उत्तर न आपवाथी क्रोधमां आवी भगवानने मौन देखी तेओ अज्ञानथी दृष्टि छवाइ जतां दंड मुक्की विगेरेथी मारीने पोतानुं अनार्यपणुं आचरता हता. पण भगवान तो समाधिमां रही धर्म ध्यानमां चित्त राखीने सारी रीते सहेता हता. प्र०—भगवान केवा हता ? उ—प्रतिज्ञा रहित एटले तेनुं वेर लेवुं एवी इच्छा राखता नहोता.

प्र०—ते आवेलाओ केवी रीते पूछता हता ? उ०—अत्र कोण रहेलुं छे ? एम संकेत करीने दुराचारीओ अथवा काम करनाराओ पोताना साथीओनी राह जोइ भगवानने पूछता हता. वळी हंमेशां त्यां रहेला दुष्ट ध्यानवाळा पूछे छे. पण भगवान मौन रहेला हता. पण कोइ वखतघणोज दोष थतो होय तो टाळवाने माटे थोडुं बोलता पण हता. प्र०—केवी रीते ? उ०—हुं भिक्षु छुं, आम बोलतां जो तेओ संमति आपे तो त्यां रहेता, पण ते आवेला दुष्टोनी इच्छामां विघ्न थतुं होय, तो क्रोधायमान थइने मोहांध बनी वर्तमान लाभ देखनारा तुच्छ बुद्धिथी कहे के अमारा मुकामथी हमणां निकळ, तो भगवान आ अप्रीतिनुं स्थान छे, एम

विचारि तुर्त नीकळी जता. अथवा भगवान पोते प्रथमथी त्यांना मुख्य प्रणीनी आज्ञा लीधेली होवाथी नीकळता नहोता, अने आ मारुं ध्यान उत्तम धर्म छे. मारो आचार छे, एम विचारी ते आवनार गृहस्थनां कडवां वचन विगेरे सहन करी मौन रही जे थवानुं होय ते थाय, एम मानी दुःख सहन करे, पण ध्यानथी चलायमान थता नहोता, वळी शुं करता ते कहे छे.

जंसिप्पेगे पवियन्ति सिसिरे मारुए पवायन्ते । तंसिप्पेगे अणगारा हिमवाए निवायमेसन्ति ॥१३॥
संघाडीओ पवेसिस्सामो एहा य समादहमाणा । पिहिया व सक्खामो अइदुक्खे हिमगसंफासा ॥१४॥
तंसि भगवं अपडिन्ने अहे विगडे अहीयासए । दविए निक्खम्म एगया राओ ठाइए भगवं समियाए ॥१५॥
एस विहि अणुक्कन्तो माहणेण मईमया । बहुसो अपडिण्णेण भगवया एवं रीयन्ति ॥१६॥
त्तिबेमि ॥ नवमस्य द्वितीय उद्देशकः ९—२ ॥

शियाळाथी ऋतुमां केटलाक माणसो कपडांना अभावे दांत वीणा विगेरे युक्त कंपता हता. अथवा ठंडीना दुःखनो अनुभव करी आर्त्त ध्यानमां पडता हता. तेवा हिम पडवाना समयमां ठंडो वा वातां केटलाक साधु जेओ पासत्था जेवा हता, तेओमांना केटलाक तेवी घणी ठंड पडतां दुःखी थइने ठंडने दूर करवा माटे भडको करता अथवा अङ्गारानी सगडी शोधता तथा प्रावार (कामळो) विगेरे याचता अथवा अनगार ते पार्श्वनाथ भगवानना तिर्थमां रहेला गच्छवासी साधुओज ठंडथी पीडाइने ज्यां वायरो न आवे, तेवी शाळा विगेरे बंध जग्या शोधता हता. (१३)

वळी (सङ्घाटी शब्दवडे ठंड दूर करनारां बे अथवा त्रण वस्त्र जाणवां.) ते सङ्घाटी शोधवा माटे ठंडथी पीडाएला विचारता, के अमे क्यांयथी मागी लावीए. अने अन्य धर्मीओ तो एवा समिध बाळवानां लाकडां शोधता हता. के जेने बाळीने ठंड दूर करवा शक्तिवान थइशुं. तथा सङ्घाटीवडे एटले कामळो विगेरे ओढीने रहेता.

प्र०—शा माटे एवुं करे छे ? उ०—कारण के आ हिमनो ठंडो पवन दुःखे करीने सहन थाय छे.

आवी सखत ठंडी ऋतुमां कोइ अन्य तापस विगेरे तापणु तापी ठंड दूर करता, कोइ आ जैन साधु कामळो ओढी निभावता, तेवे समये भगवान शुं करता ? ते कहे छेः—आवी ककडती ठंडी अने ठंडा पवनमां बधा शरीरने पीडा थवा छतां भगवान् जेओ ऐश्वर्य आदि गुण युक्त छे, तेओ समभावे ठंडने (तापणुं के कपडा विना) सहे छे.

प्र०—भगवान केवा छे ? उ०—प्रतिज्ञा रहित छे. एटले तेओ ज्यां ठंडी न आवे तेवुं बंध कबजावाळुं मकान रहेवा विगेरे माटे याचता नथी. प्र०—तेओ कइ जग्याए ठंड सहे छे ?

उ०—बाजुनी भींतो रहित तथा उपरनुं ढांकण होय के नहीं, तेवा स्थानमां रहेता, तथा फरी भगवानना गुण कहे छे, राग द्वेष दूर थवाथी शुद्ध आत्मा द्रव्यवाळा अथवा कर्मग्रंथि दूर थवाथी द्रव्य संयम छे. ते द्रववाळा द्रविक (संयमी) छे, तेम मकानमां ठंडी सहेतां कदाच घणी सखत ठंडी पीडे, तो ते ढांकेला मकानथी बहार नीकळी कोइ वार रात्रीमां बे घडी सुधी त्यां रही ठंडी सहन करी पाछा तेज मकानमां आवीने समताथी खच्चरना दृष्टांतथी सहेवाने शक्तिवान थतां.

बीजो उद्देशो समाप्त थयो.

त्रीजो उद्देशो कहे छे.

बीजो उद्देशो कहीने हवे त्रीजो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां भगवाननी शय्या (वसति) नुं वर्णन कर्युं. अने ते स्थानोमां जे उपसर्गो अने परीषहो सहन कर्या, ते बताववा आ उद्देशो कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानी आ सूत्र गाथाओ छे.

तणफासे सीयफासे य तेउ फासे य दंसमसगे य । अहियासए सया समिए फासाइं विरूवरूवाइं ॥१॥

अह दुच्चरलाढमचारी वज्जभूमिं च सुब्भभूमिं च । पंतं सिज्जं सेविंसु आसणगाणि चेव पंताणि ॥२॥

लाढेहिं तस्सुवसग्गा बहवे जाणवया लूसिंसु । अह लूहदेसिए भत्ते कुक्कुरातत्थ हिंसिंसु निवइंसु ॥३॥

अप्पे जणे निवारेइ लूसणए सुणए दसमाणे । छुच्छुकारिंति आहंसु समणं कुक्कुरा दसंतुत्ति ॥४॥

कुश दर्भ विगेरे तृणना कठोर फरसो, तथा ठंडीना स्पर्शो तथा ग्रीष्म ऋतुमां उनाळा विगेरेनो ताप दुःखदायी हतो अथवा भगवानने चालतां तेज (अग्नि) कायज हतो, तथा डांसमच्छरो विगेरे हता, तेवा जुदी जुदी जातिना स्पर्शोने भगवान समताथी अथवा समितिवडे सहन करता.

वळी दुःखथी विहार थाय, तेवो दुश्कर देश लाढ छे, तेमां पण पोते विचर्या, तेना बे भाग छे, एक वज्र भूमि तथा बीजी शुभ्र भूमि छे, ते बंने जग्याए विचर्या छे, तथा प्रांत ते शून्य ग्रह विगेरे वसतिमां रहीने अनेक उपद्रवो भगवाने सहन कर्या,

तथा धूळना ढगला, जाडी रेती वेकर (वेळु) तथा माटीनां ढेफां विगेरेना प्रांत (तुच्छ) आसनो तथा लाकडां जेवां तेवां पडेलां तेना उपर पोते बेसता, (१) तथा ते लाढा देशमां जे बे विभाग उपर बताव्या तेमां प्राये लोकोना आक्रोश तथा कूतरांना करडवा विगेरेना घणा प्रतिकूल उपसर्गो थया, ते बतावे छे.

जनपदते देश—अने तेमां उत्पन्न थयेला ते जानपद माणसो छे, ते अनार्य देश होवाथी अनार्यो छे, तेथी ते दुष्टोए दांतथी करडवुं, भारे दंडनो प्रहार विगेरेथी दुःख देवुं; (अपि शब्दना अर्थमां अथ शब्द छे, तेथी एम जाणवुं, के) त्यां भोजन पण लुखुं अंतप्रांत आपता, तथा अनार्यपणाथी स्वभावथीज क्रोधी हता अने रुना अभावे घासवडे शरीर ढांकता, तेओ भगवान उपर विरूप आचरता हता, अने शीकारी कूतराओ भगवान उपर करडवा आवता (२) अने ते देशमां भाग्येज हजारमां एक दयाळु जन हतो के जे करडवा आवेला कूतराने अटकावे, उलटा भगवानने लाकडी विगेरेथी मारीने कूतराने तेना उपर दोडाववा सीत्कार (छुछु) करता के कोइ रीते आ साधुने ते कूतराओ करडे ! आवा दुष्ट अने भयङ्कर देशमां पण भगवान् छ मास सुधी रह्या वळी—

एलिक्खए जणा भुज्जो बहवे वज्जभूमि फरुसासी । लट्ठिं गहाय नालियं, समणा तत्थ य विहरिंसु ॥५॥
एवंपि तत्थ विहरंता, पुट्ठपुव्वा अहेसि सुणिएहिं । संलुच्चमाणा सुणएहिं दुच्चराणि तत्थ लाढेहिं ॥६॥
निहाय दंडं पाणेहिं तं कायं वोसज्जमणगारे । अह गाम कंटए भगवंते, अहियासए अभिसमिच्चा ॥७॥
नागो संगामसीसे वा पारए, तत्थ से महावीरे । एवंपि तत्थ लाढेहिं अलद्धपुव्वोवि एगया गामो ॥८॥

॥८३७॥

उपर बतावेल कष्ट आपनार ज्यां माणसो छे, तेवा देशमां भगवान वारंवार विचर्या, अने ते वज्र भूमिमां घणा माणसो लुखुं खानारा होवाथी क्रोधी हता, अने तेथी साधुने देखीने कदर्थना करे छे, तेथी बीजा साधुओ बौद्ध विगेरेना हता; तेओ शरीर प्रमाण अथवा तेथी चार आंगळ वधारे लांबी नळी (लाकडी) कुतरा हाकवा माटे हाथमां राखीने विचरता हता. (५)

वळी लाकडी विगेरेनी सामग्री राखवाथी बुद्ध मतना साधुओ विचरी शकता, अने ते प्रमाणे कुतराओथी करडावानो डर तथा तेमने निवारण करवानुं मुश्केल होवाथी अनार्य लोकना लाढ देशमां गाम विगेरेमां विचरवुं मुश्केल हतुं. ॥६॥

प्र०—आवा कठण देशमां भगवान् त्यारे केवी रीते विचर्या: ते कहे छे—प्राणीओ जेनावडे दंडाय ते दंड मन वचन काया संबन्धी छे, ते दंडने भगवाने छोडी दीधो, तेज प्रमाणे कायानो मोह छोडीने ते अणगार (भगवाने) गाम कंटक ते गामडाना नीच लोकोनां कठोर वाक्यो निर्जरानुं कारण मानीने समताथी सहन कर्यां. (७)

प्र०—केवी रीते सहन कर्यां ? ते दृष्टांत बतावीने कहे छे.

जेम हाथी संग्रामना मोखरे आगळ वधीने शत्रुना लश्करने भेदीने तेनी पार जाय छे, ते प्रमाणे भगवान महावीर ते लाढ देशमां परीषहनी सेनाने जीतीने तेनाथी पार उतर्या, तथा ते लाढ देशमां गामो थोडां होवाथी कोइवार कोइ स्थळे गाम वखते मळतुं पण नहोतुं (जंगलमां पण पडी रहेतां.)

उवसंकमन्तमपडिन्नं, गामंतियम्मि अप्पत्तं; । पडिनिक्खम्मित्तु लूसिंसु, एयाओ परं पलेहीत्ति ॥९॥

हयपुव्वो तत्थ दंडेण, अदुवा मुट्ठिणा अदु कुंतफलेण; । अदु लेलुणा कवालेण, हंइा बहवे कंदिंसु ॥१०॥

गोचरी लेवा जतां अथवा मकानमां रहेवा जतां भगवान प्रतिज्ञा रहित हता, एटले गाम पासे आवेलु होय, अथवा गाम न आव्युं होय, तो एम नहोता करता के; हुं अहीं हमेशां रहीश, अथवा अहीं नहीं रहुं, तथा त्यां अनार्य लोको भगवाननी पासे आवीने प्रथम मारता, अने कहेता के आ गामथी दूर जाओ. (९) तथा कदी गाम बहार रहेता तो त्यां पण अनार्य लोको आवीने प्रथम दंड (लाकडी) अथवा मुकीथी मारता, अथवा भालानी अणीथी माटीना ढेफाथी अथवा घडाना ठीकराथी मारी मारीने अनार्य लोको बीजाने बोलता के आवो आवो ! तमे जुओ तो खारा के आ कोण छे ? ए प्रमाणे कलकल करता हता. (१०)

मंसाणि छिन्नपुव्वाणि उट्ठंभिया एगया कायं; । परीसहाइं लुंचिंसु, अदुवा पंसुणा उवकारिंसु ॥११॥

उच्चा लइय निहणिंसु, अदुवा आसणाउ खलइंसु । वोसट्ठकायपयणाऽऽसी दुक्खसहे भगवं अपडिन्ने ॥१२॥

कोइ वखत तो भगवान पासे आवीने तेमना शरीरने झाली राखीने तेमांथी मांस कापी काढता, तथा बीजा पण दुःख देनारा परीषहो आपता, अथवा धूळथी हेरान करता. (११)

वळी कोइ वखत भगवानने उंचे उंचकीने नीचे पटकता हता, अथवा गोदोहिक उत्कुटुक वीरासन विगेरेथी धक्को मारी पाडी देता, आवुं दुःख थवा छतां पण भगवाने तो कायानो मोह मुकी दीधेलो होवाथी परिषह सहन करवामां लीन हता, अने मुश्केलीथी सहन थाय, तेवा परिषहोना दुःखने सहेता, पण ते दुःखने दूर करवानी अथवा देवा करवानी इच्छा न धराववाथी अप्रतिज्ञावाळा हता.

दुःख सहेनारा भगवान केवी रीते हता ते दृष्टांतथी बतावे छे.

सूरो संगामसीसे वा संवुडे तत्थ से महावीरे। पडिसेवमाणे फरुसाइं; अचले भगवं रीयित्था ॥१३॥

एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया। बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रियंति ॥१४॥

जेम संग्रामना मोखरे शूरवीर पुरुष शत्रुना सैन्यना भाला विगेरेथी भेदावा छतां पण बखतर पहेरेलुं होवाथी पाछो हठतो नथी, तेज प्रमाणे भगवान महावीर पण ते लाढ विगेरे देशोमां परिषहरुप शत्रुओए पीडा करवा छतां पण कठोर परीषहोना दुःखोने मेरु माफक निष्कंप बनीने धीरजवडे संवृत्त अंगवाळा बनीने सहेता ज्ञान दर्शन चारित्ररुप मोक्ष मार्गमां विचरे छे. (१३) आज प्रमाणे गया उद्देशामां बताव्या प्रमाणे बुद्धिमान भगवान महावीर कदाग्रह विना दुःखो सहेता विचर्या—

नवमा अध्ययननो त्रीजो उद्देशो समाप्त थयो.

चोथो उद्देशो कहे छे.

त्रीजो उद्देशो कहीने हवे चोथो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे के त्रीजा उद्देशामां भगवाने सहेला उपसर्ग परीषहोनुं वर्णन छे, अने आ उद्देशामां पण रोग आतंक पीडा आवतां पण तेनी चिकित्सा (उपाय) छोडी दइने भयंकर रोग उत्पन्न थया छतां पण बरोबर सहेता, अने एकांत तप चरणमां उद्यम करता, ते बतावशे. आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छेः—

ओमोयरियं चाएइ, अपुट्ठेऽवि भगवं रोगेहिं; । पुट्ठे वा अपुट्ठे वा, नो से साइज्जई तेइच्छं ॥१॥
संसोहणं च वमणं च, गायब्भंगणं च सिणाणं च । संबाहणं च न से कप्पे दंतपक्खालणं च परिन्नाए ॥२॥

उपर बतावेला शीतोष्ण दंशमशक आक्रोश ताडना विगेरे परिषहोमां थोडुं दुःख होवाथी सहेवा शक्य हता, पण उणोदरी (ओछुं खावुं) ते शक्य न होतुं, पण भगवान महावीर तो वातादि क्षोभना अभावे रोगमां सपडायां न होता छतां, पण ओछुं खावाने शक्तिवान थया एटले लोको तो रोगमां सपडाया होय, त्यारे ते रोग दूर करवा ओछुं खाता हता, पण भगवान तो ते रोगना अभावमां पण ममत्व ओछो करवा ओछुं खाता, अथवा खांसी के दम विगेरेना द्रव्य रोगथी पीडाया नहोता, छतां पण भविष्यमां आववाना भावरोगरूप कर्मने दूर करवा माटे उणोदरी तप करता हता.

प्र०—शुं भगवानने तेवा खांसी दम विगेरेना रोगो थता नहोता? के भाव रोगो दूर करवाना कारणे उणोदरी तप कर्यो?

उ०—कहे छे भगवानने खांसी विगेरे रोगो स्वभावथीज काया साथे थता हता, अने नवा तो शस्त्रना घा विगेरे लागवाथी थता, ते बतावे छे. ते भगवान महावीर कुतरांना करडवाथी अथवा खांसी श्वास विगेरेना रोगोथी पीडाय, छतां पण ते चिकित्सा (रोगना उपाय) ने करता नथी, अर्थात् तेओ रोगनी शांति करवा औषध लेवानी इच्छा करता नहोता. (१)

ते बतावे छे, शरीरनुं बरोबर रीते शोधवुं ते निःसोत्र (निसोतर) सुवर्णमुखी विगेरेथी जुलाब लेता नहोता, तथा मदनफळ (मींढळ विगेरेथी उलटी (वमन) करता नहोता, तथा सहस्र पाक तेल विगेरेथी शरीरनुं अभ्यंगन (चोळवुं) करता नहोता. तथा

उद्वर्त्तन विगेरेथी स्नान करता नहोता. हाथ पग विगेरेनुं संवाधन (दबाववुं) करावता नहोता. तथा आखुं शरीर अशुचि (गंदकी) थी भरेलुं छे, एम जाणीने दातण विगेरेथी दांत साफ करता नहोता.

विरए गामधम्मेहिं, रीयइ माहणे अबहुवाई । सिसिरंमि एगया भगवं, छायाए झाइ आसीय ॥३॥

आयावइ य गिम्हाणं, अच्छइ उक्कुडुए अभित्तावे । अदु जाव इत्थ लूहेणं, ओयणमंथुकुम्मासेणं ॥४॥

वळी पांचे इंद्रियोना विषयोमां शब्द विगेरेथी मोह न पामतां संयम अनुष्ठानमां तेने दोरे छे, तेथी तेओ विरत छे, तथा माहन (जीवोना रक्षक) प्रभु अबहु (थोडुं) बोलनारा छे, (एक वार बोले तेथी अबहु शब्द लीधो छे, बाकी तो अवादी छे एवुं बोलाय) तथा कोइ वखत शिशिर ऋतु (शीयाळा)मां भगवान धर्म ध्यान अथवा शुक्ल ध्यानमां स्थिर हता. (३)

वळी (छट्ठी विभक्तिने सातमीना अर्थमां लेतां) ग्रीष्म ऋतुमां भगवान् (खुल्ला मेदानमां) आतापना लेता ते बतावे छे. उत्कुटुक आसने भगवान् सूर्यना तडका सन्मुख बेसता, अने धर्मना आधाररूप देहने लुखा एवा कोदरा भातथी तथा बोरकूट विगेरेनो साथवो, तथा अडद (जे उत्तर दिशामां थाय छे) अथवा वाफेला वासी अडद अथवा सिद्ध मासा विगेरेथी कायानो निभाव करता.

हवे ते काळ अवधि (मुदत)ना विशेषणवडे बतावे छे.

एयाणि तिन्नि पडिसेवे, अट्ठ मासे अ जावयं भगवं; । अपि इत्थ इगया भगवं अद्धमासं अदुवा मासंपि ॥५॥

अवि साहिए दुवे मासे छप्पि मासे अदुवा विहरित्था; । राओवरायं अपडिन्ने अन्नगिलायमेगया भुंजे ॥६॥

कदाच कोइने एवी शंका थाय के प्रथम बतावेला भात मंथु तथा अडद साथे मेळवी खाता हशे, तेथी ते दूर करवा कहे छे. के ते त्रणे जो साथे मळे तो साथे लेइ खाता, अने त्रणेमांथी कोइ जुदुं जुदुं मळे तो तेम लेता अथवा एकलुं मळे तो तेम लेता अर्थात् त्रणमांथी जे मळे ते लेइ निर्वाह करता.

प्र०—आ केटली मुदत सुधी आम करता, ते कहे छे. (शीयाळा उनाळानी आठ मासनी ऋतुने ऋतुबद्ध काळ कहे छे. ते) आठे मास सुधी भगवाने तेवा लुखा भोजनथी निर्वाह कर्यो तथा तेज प्रमाणे पाणी पण अडधो मास के एक मास भगवाने तेवुं (सादुं) पीधुं. (५) तथा बे मासथी अधिक अथवा छ मासथी पण वधारे भगवाने पाणी पण पीधा विना रात दिवस निर्वाह करी लीधो, हुं पाणी 'पीश' तेवी इच्छा (प्रतिज्ञा) पण न करी, तथा कोइवार वासी (खवाय तेवुं) मळ्युं होय तो कोइ वार खाइ पण लेता. (६)

छट्टेण एगया भुंजे अदुवा अट्ठमेण दसमेणं, । दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ॥७॥

णच्चा णं से महावीरे नोऽविय पावगं सयमकासी, । अन्ने हिंवाण कारित्था, कीरंतंपि नाणुजाणित्था ॥८॥

वळी कोइ वखत छट्ठनो तप करी पारणुं करे छे,एटले प्रथमना दिवसे एक वखत खाय. त्यारपछी बे दिवस उपवास करे,अने चोथे दिवसे पाछुं एकवार खाय,एटले प्रथमनो एक वचला चार अने चोथादिवसनो एक टंक मळी छ वखत न खावाथी छठ भक्त थाय छे. ए प्रमाणे बे बे टंक एकेक दिवसना वधारतां आठ भक्त त्यागवाथी अठम अने तेवी रीते दशम तथा बार भक्त पच्चक्खाण

कर्युं. एटले वचमां पांच उपवास करे अने प्रथमनां दिवसे तथा सातमा दिवसे एक वार खांय; आ बधो तप पोते शरीरमां समाधि राखीने करता पण मन मेलुं करता नहोता, तथा नियाणुं (प्रतिज्ञा) करता नहोता, (७) तथा हेय उपादेय वस्तु तत्वने महावीरे जाणीने ते महावीर प्रभुए कर्मनी प्रेरणा करवामां वीर बनीने पाप कर्म पोते जाते न कर्युं, न बीजा पासे कराव्युं, अने अन्य पाप करनारने पोते प्रशंस्या नहीं, (८)

गामं पविसे नगरं वा घासमेसे कडं परट्ठाए । सुविसुद्धमेसिया भगवं, आयतजोगयाए सेवित्था ॥९॥
अदु वायसा दिगिंच्छत्ता जे अन्ने रसेसिणो सत्ता । घासेसणाए चिट्ठंति, सययं निवइए य पेहाए ॥१०॥

भगवान् महावीर गाम अथवा नगरमां पेसीने गोचरी शोधता, पण ते पर माटे बनावेलुं एटले उद्गम दोष रहित होय ते लेता, तथा सुविशुद्ध एटले उत्पाद दोष रहित लेता, आ प्रमाणे एषणा (गोचरी) ना दोष त्यागीने भगवान आयत ते संयम अने मन वचन कायाना योग (व्यापार) वाळा बनीने ज्ञान चतुष्टयवडे त्रणे गुप्ति पाळता आयत योगवाळो भाव (ते आयत योगता) छे, ते वडे शुद्ध आहार लावी गोचरी करतां पांच दोष थाय, ते टाळीने गोचरी करता [अहींयां पण ४२ दोष गोचरी लेतां अने '५' गोचरी करतां एम ४७ दोष टाळवानुं जाणवुं] [९]

हवे भगवान ज्यारे गोचरीए नीकळता. त्यारे मार्गमां भूखथी पीडायेला कागडा तथा बीजां रस [पाणी] नी इच्छावाळां कपोत कबुतर विगेरे सत्वो [प्राणीओ] तथा खावानुं शोधवा माटे जे प्राणीओ रस्तामां बेठेलां होय, तेमने जमीन उपर बरोबर

जोइने तेमने खावा पीवामां अडचण न पडे तेवी रीते हमेशां पोते धीरे धीरे गोचरीने माटे चाले छे. [१०]

अदुवा माहणं च समणं वा गाम पिण्डोलगं च अतिहिं वा;। सोवागमूसियारिं वा कुक्कुरं वावि विट्ठियं पुरओ वित्तिच्छेयं वज्जन्तो तेसिमप्पत्तियं परिहरन्तो;। मंदं परक्कमे भगवं अहिंसमाणो घासमेसित्था ॥१२॥

अथवा ब्राह्मणने लाभ माटे उभेलो जाणीने तथा बौद्ध मतना साधु आजीविक [गोशाळाना मतना] साधु तथा परिव्राट तापस अथवा पार्श्वनाथना अनुयायी जैन साधुमांथी कोइपण होय, अथवा गामना भीखारीओ जे होजरी भरवा माटे भटकता होय, अथवा कोइ अतिथि [परोणा] मुसाफर होय, तथा चांडाळ के बीलाडी कूतरुं के कोइपण पाणी मोढा आगळ उभेलुं होय तो [११]

तेमनी वृत्तिने छेदवा विना अने मनमांथी दुर्ध्यान काढीने तेमने जरा पण त्रास आप्या विना भगवान् मंद मंद चाले छे, तथा पर एवा कुंथुवा विगेरे नाना जंतुओने दुःख दीधा विना पोते गोचरीमां फरे छे. (१२)

अवि सूइयं वा सुक्कं वा सीयं पिंडं पुराणकुम्मासं। अदु बुक्कसं पुलागं वा लद्धे पिंडे अलद्धे दविए ॥१३॥

अवि झाइ से महावीरे आसणत्थे अकुक्कुए झाणं। उड्ढं अहेतिरियं च पेहमाणे समाहिमपडिन्ने ॥१४॥

दहीं विगेरेथी भोजन भींजावेलुं होय, तेमज वालचणा विगेरे सुकुं होय, अथवा ठंडु होय अथवा घणा दिवसना रांधेला जुना कुल्माष होय अथवा बुक्कस ते जुनुं धान्य के भात विगेरे होय' अथवा जुनो साथवो बोरकूट विगेरे होय, अथवा घणा दिवसनुं भरेलुं गोरस अने घउना मंडक (ढेबरां) होय, तथा जवना निष्पाव विगेरे पुलाक होय, ए प्रमाणे ठंडो उनो सारो

माठो रसिक अरसिक गमे तेवो पिंड मळे तो पण रागद्वेष छोडीने वापरता द्रविक (संयमवाळा) भगवान विचरे छे. एटले जो पुरी अथवा सारी गोचरी मळी होय तो अहंकारी थता नथी, तथा न मळतां ओछी मळतां खराब मळतां पोते पोतानी के आपनार गृहस्थनी निंदा करता नथी, (१३) पण तेवो आहार मळतां खाइने अने न मळतां भूख्या रहीने पण सारुं ध्यान महावीर प्रभु करे छे केवी अवस्थामां रहीने ध्यान करे छे. ते बतावे छे.

उत्कुटुक गोदोहिक वीरासन विगेरे आसन धारीने मुख विगेरेनी चंचळ चेष्टाने छोडीने धर्म ध्यान के शुक्ल ध्यान ध्याये छे.

प्र०—त्यां शुं ध्येयने भगवान धारे छे? ते कहे छे. उंचे, नीचे तथा तीरच्छा लोकमां जे परमाणु तथा जीव विगेरे विद्यमान छे, तेने द्रव्य पर्याय नित्य अनित्य विगेरे रुपपणे ध्यावे छे. तथा अंतःकरणनी पवित्र समाधिने देखता प्रतिज्ञा रहित बनीने ध्यान करे छे. (१४)

अकसाई विगयगेही य सद्दरूवेसु अमुच्छिए झाई । छउमत्थोऽवि परक्कममाणो; न पमायं सइंपि कुविरथा ॥१५॥ सयमेव अभिसमागम्म, आयएजोगमायसोहीए । अभिनिव्वुडे अमाइल्ले, आवकहं भगवं समियासी ॥१६॥ एस विहि अणुक्कंतो, माहणेण मईमया । बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रियंति ॥१७॥ त्तिबेमि ९–४ ब्रह्मचर्यश्रुतस्कंधे नवमाध्ययने चतुर्थ उद्देशकः

कषाय रहित (क्रोध विगेरेथी पांपण विगेरे चडाव्या विना) तथा गृद्ध पणुं दूर करीने तथा शब्द विगेरेमां मूर्च्छा राख्या

विना ध्यान करे छे, मनने अनुकूलमां राग नथी तेम प्रतिकूलमां द्वेष नथी. तथा ज्ञानआवरण, दर्शनावरण, मोहनीय, अंतराय, ए चार कर्म विद्यमान होवाथी छद्मस्थ हता, तो पण तेमणे विविध संयमना अनुष्ठानमां पराक्रम बतावीने कषाय विगेरे प्रमादने एकवार पण न कर्यो, (१५) तथा पोते पोताना आत्माथी तत्वने जाणीने संसार स्वभाव जाणनारा भगवान स्वयंबुद्ध बनी तीर्थ प्रवर्तन करवा उद्यम कर्यो. कह्यु छे के:—

आदित्यादिर्विबुधविसरः सारमस्यां त्रिलोक्या—मास्कन्दन्तं पदमनुपमं यच्छिवं त्वामुवाच; ॥
तीर्थं नाथो लघुभवभयच्छेदि तूर्णं विधत्स्वे—त्येतद्वाक्य त्वदधिगतये नो किमु स्यान्नियोगः? ॥१॥

आदित्य विगेरे विबुधोनो समूह (नव लोकांकित देवो) छे, तेमणे तेमने कह्यु के हे नाथ! आ त्रण लोकमां साररूप अनुपम जे शीघ्र भवोना भय छेदनार अने शिवपद आपनार तीर्थ (जैन शासन) छे. तेमने शीघ्र स्थापन करो! आ प्रमाणे आवुं वाक्य तमारी स्मृति माटे काने न पड्युं होत, तो आ नियोग केवी रीते थात? तथा तीर्थ प्रवर्त्तन माटे केवी रीते भगवाने उद्यम कर्यो ते बतावे छे:—

आत्म शुद्धिवडे एटले पोतानां कर्मनो क्षय उपशम तथा क्षय करवावडे सुप्रणिहित मन वचन कायाना योगो जे आयत योग छे, तेमने निर्मळ करी तथा विषय कषायो विगेरेने उपशम विगेरेथी दूर करवाथी ठंडी गुण प्राप्त करेला (शांत) भगवान छे. तथा माया रहित तेज प्रमाणे क्रोध मान लोभ रहित बनी जीवतां सुधी पांच समितिए समित (उपयोग राखी वर्त्तन करनारा) तथा त्रण गुप्तिथी गुप्त बनीने रह्या हता. (१६)

उद्देशो समाप्त करवा कहे छे. आ प्रमाणे शास्त्रमां बतावेली विधिए श्री वर्द्धमानस्वामी जेओ चार ज्ञान युक्त छे, तेमणे अनेक प्रकारे नियणुं कर्या विना आचर्यो, कारण के ते प्रमाणे बीजो मुमुक्षु पण भगवानना दाखलाथी मोक्ष आपनार मार्गवडे आत्महितने आचरतो विचरे, आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे. ते हुं कहुं छुं. जे वीर प्रभुना चरणनी सेवा करतां में सांभळ्युं छे.

आ प्रमाणे सूत्रानुगम तथा सूत्रालापक निष्पन्न निक्षेप सूत्र स्पर्शिक निर्युक्ति सहित वर्णव्यो छे. हवे नयोनुं वर्णन करे छे.

नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्र शब्द समभिरुढ एवंभूत ए प्रमाणे सामान्यथी ७ नय छे. ते संमतितर्क विगेरेमां लक्षणथी अने विधानथी विस्तारथी कह्या छे, माटे अहींया तेज नयोने ज्ञान क्रिया ए बंने नयोमां समावीने समासथी कहीए छीए.

आ आचारांग सूत्रना अधिकारमां ज्ञान क्रिया एम बे नयोनो समावेश थाय छे, तेथी तथा ते ज्ञान क्रियाने आधिन मोक्ष होवाथी, अने मोक्ष माटे शास्त्रनी प्रवृत्ति छे, एम जाणवुं, अने अहींआं ज्ञान तथा क्रिया परस्पर संबंध राखीनेज विवक्षित कार्य सिद्धिमां समर्थ छे, पण एकलुं ज्ञान के एकली क्रिया समर्थ नथी, माटे अहीं ते बे ज्ञान क्रिया नयने समजावीए छीए.

ज्ञान नयवाळानो अभिप्राय.

ज्ञान प्रधान छे, पण क्रिया नहीं, कारणके समस्त (बधा) हेय पदार्थने त्यागवा, उपादेयने स्वीकारवा, ए प्रवृत्ति ज्ञानने आधीन छे. तेज बतावे छे, के सारी रीते निश्चय करेला सम्यू ज्ञानथी प्रवर्त्तन करनारो अर्थ क्रियानो अर्थी पोतानुं कार्य बगाडतो नथी. कह्युं छे के.

विज्ञप्तिः फलदा पुंसां, न क्रिया फलदा मता। मिथ्याज्ञानात् प्रवर्त्तस्य, फलासंवाददर्शनाद् ॥ १ ॥

पुरुषोने जे ज्ञान छे, ते फळ देनारुं छे, पण क्रिया फळदायी नथी. कारण के मिथ्या ज्ञानवाळो क्रिया करवा जाय तो तेनुं अयोग्य फळ साक्षात् देखाय छे, अने सम्यग् प्रकारे ज्ञानथीज पार पहोंचाय छे, तथा विषय व्यवस्थितिनुं समाधान ज्ञान पूर्वक थाय छे, तथा बधा दुःखोनो नाश ज्ञानथीज थाय छे, अने ज्ञाननुंज अन्वयव्यतिरेकपणुं छे. एटले ज्ञान होय तो फळनी सिद्धि अने ज्ञान न होय तो फळनी असिद्धि छे; माटे दरेक रीते ज्ञाननुं प्रधानपणुं छे, ते बतावे छे. ज्ञानना अभावे अनर्थ दूर करवा माटे तैयारी करे तो पण करवा जतां अज्ञानताथी पतंगीया माफक अनर्थमां झीपलाइ जाय छे, अने ज्ञानना सद्भावे बधा अर्थोने अने अनर्थना संशयोने विचारीने यथाशक्ति विघ्नोने दूर करे छे, तेमज आगम पण कहे छे, "पढमं नाणं तओ दया" सूत्र छे. आ बधुं क्षायोपशमिकज्ञान आश्रयी कह्युं, अने क्षायिकने आश्रयी पण तेज प्रधान छे, कारण के नमेला सुर असुर देवताना मुकुटोना समुदायोनी वेदिकामां जेमना चरण युगलनी पीठ छे, तथा भव समुद्रना तटे पहोंच्या छे.

तथा दीक्षा लीधी छे, त्रण लोकना बंधु छे, तप चारित्र सारीरीते आदरवा छतां पण ज्यां सुधी जीव अजीव विगेरे बधा पदार्थोनुं परिच्छेद करनार घनघाति कर्म समूह क्षय थवारूप केवळज्ञान प्राप्त न थाय त्यां सुधी ते भगवानने मोक्ष प्राप्ति थती नथी, माटे ज्ञानज युक्तिए युक्त आ लोक परलोक फळनी इच्छित प्राप्ति करनार सिद्ध थाय छे,

क्रिया वादीनो नय (अभिप्राय)

क्रियाज आलोक परलोकनुं इच्छित फळनी प्राप्तिनुं कारण छे. कारण के ते युक्तिए युक्त छे. जो तेम न होय तो ज्ञानवडे देखवा छतां पण अर्थ क्रियाना समर्थन अर्थमां प्रमाता प्रेक्षा पूर्वकारी छतां पण जो छोडवा लेवारूप प्रवृत्ति क्रिया न करे तो तेनुं

ज्ञान पण निष्फळ जाय छे, कारण के ते ज्ञाननुं अर्थपणुं क्रिया साथे छे, कारण के जेनी जे अर्थ माटे प्रवृत्ति होय, तेनुं तेमां प्रधानपणुं छे, अने ते सिवायनुं अप्रधान (गौण) छे, ए न्याय छे, संविद् वडे विषय व्यवस्थाननुं पण अर्थ क्रियापणाथी अर्थपणुं क्रियानुं प्रधानपणुं बतावे छे, अन्वय व्यतिरेको पण क्रियामां सिद्ध थाय छे, कारण के सम्यक् चिकित्सानी विधि जाणनारो यथार्थ औषधनी प्राप्ति करे, तो पण उपयोग क्रिया रहित होय तो ते वैद रोगने दूर करी शकतो नथी. तेज कह्युं छे. के—

शास्त्राण्यधीत्यापि भवंति मूर्खाः । यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान् ॥
संचिन्त्यतामौषधमातुरं हि । किं ज्ञानमात्रेण करोत्यऽरोगम् ॥१॥

शास्त्रोने भणीने पण केटलांक क्रिया न करनारा मूर्खा होय छे; पण जे थोडुं भणेलो होय पण क्रिया करनारो होय ते विद्वान् छे. कारण के औषध चिंतवो, पण ते चिंतवेलुं औषध विना क्रिया करे शुं रोगीने निरोगी बनावी शकशे के ? वळी—

क्रियैव फलदा पुंसां, न ज्ञानं फलदं मतं; यतः स्त्रीभक्ष्यभोगज्ञो, न ज्ञानात् सुखितो भवेत् ॥ १ ॥

पुरुषोने क्रियाज फलदायी छे. पण ज्ञान फलदायी नथी कारण के स्त्रीःखावाना पदार्थ, तथा भोगववानी वस्तुओनो जाणनार एकला ज्ञानथी सुखीओ थतो नथी! पण ते क्रियाथी युक्त होय ते माणस पोतानी इच्छा प्रमाणे अर्थ मेळवनारो थाय छे.

जो पूछता हो के केवी रीते ! तो कहुं छुं. के " निश्चयथी देखेलामां न उत्पन्न थएलुं नथी, " अने ज्यां सकल (बधा) लोकमां प्रत्यक्ष सिद्ध अर्थ होय त्यां बीजुं प्रमाण मागी शकाय नहीं. ! तथा परलोकनुं सुख वांच्छतां होय, तेमणे पण तप चारित्रनी क्रियाज करवी, जिनेश्वरनुं वचन पण तेज कहे छे.

चेइयकुलगणसंघे, आयरियाणं च पवयण सुए य। सव्वेसुऽवि तेण कयं, तवसंजममुज्जमन्तेणं ॥ १ ॥

चैत्य कुळ गण संघ आचार्य प्रवचनश्रुत, ए बधामां पण तेणे तप अने संयममां उद्यम करवाथी कर्युं जाणवुं, माटे आ क्रियाज स्वीकारवी, कारण के तीर्थंकर विगेरेए पण क्रिया रहित ज्ञानने पण अफळ कह्युं छे वळी कह्युं छे के—

सुबहुं पि सुअमधीतं, किं काहि चरण विप्पहूण (मुक्क) स्स? अंधस्स जह पलित्ता, दीवसतसहस्सकोडिवि ॥१॥

घणाए सिद्धांत भण्यो होय, पण जो चारित्र रहित होय तो ते शुं करी शके? जेमके घरमां लाखो करोडो दीवा कर्या होय तो पण अंधो केवी रीते कार्य सिद्ध करी शके? अर्थात् देखवानी क्रियामां विफल होवाथी तेने दीवा नकामा छे. वळी क्षायोपशमिक ज्ञानथी क्रिया प्रधान छे, एम नहि, पण क्षायिक ज्ञानथी पण क्रिया प्रधान छे, जेमके जीव अजीव विगेरे संपूर्ण वस्तु परिच्छेदक केवळज्ञान विद्यमान होय, पण ज्यां सुधी क्रिया समाप्त करनारुं अयोगी गुणस्थानतुं 'ध्यानरूप क्रियापणुं' न फरसे, त्यां सुधी भवधारणीय कर्मनो उच्छेद थाय नहीं, अने तेनो उच्छेद न थवाथी मोक्ष प्राप्ति पण न थाय, माटे ज्ञान प्रधान नथी, पण चरणनी क्रियामां आलोक अने परलोकना इच्छित फळनी प्राप्ति छे, माटे ते क्रियाज प्रधान फळने अनुभवे छे.

आ प्रमाणे ज्ञान विना सम्यक् क्रियानो अभाव छे. अने ते क्रियाना अभावथी अर्थ सिद्धि माटे ज्ञाननुं वैफल्य छे. आ प्रमाणे बंने नयवाळो पोताना नयनी सिद्धि करी तेथी सामान्य बुद्धिवाळो शिष्य व्याकुल मतिवाळो बनीने गुरुने पूछे छे के आमां सत्य तत्व शुं छे? आचार्यनो उत्तर—हे देवोने प्रिय भाइ! अमे तो कह्युं छेज? पण तुं भूली गयो! कारण के ज्ञान तथा क्रियाना अभिप्रायो बन्ने एक बीजाने आधारेज बधा कर्म कंदना उच्छेदरूप मोक्षनां कारणो छे तेनुं दृष्टांत.

आखुं नगर ज्यारे बळ्युं, त्यारे अंदर रहेला आंधळो पांगळो बन्ने मळी जवाथी सुखेथी बहार नीकळ्या, तेज कह्युं छे. संजोयसिद्धीएँ फलं वदन्तीति. कारण के एक पैडाथी रथ चालतो नथी, बन्नेनो संयोग थतां कार्यनी सिद्धि थाय छे. पण स्वतंत्र प्रवृत्तिमां तो विवक्षित कार्यनी सिद्धि थती नथी, ए प्रसिद्धज छे. वळी क्रिया विनानुं ज्ञान हणायुं छे, आगममां पण सर्व नयोना उपसंहारना द्वार वडे आज विषय कह्यो छे. जेमके—

सव्वेसिंपि णयाणं बहुविहवत्तव्वय णिसामेत्ता । तं सव्वणय विसुद्धं जं चरण गुणट्ठिओ साहू ॥ १ ॥

बधा नयोनुं घणा प्रकारनुं वक्तव्य सांभळीने बधा नयथी विशुद्ध मंतव्यने चरण गुणमां स्थित साधु होय ते माने, तेथी आ आचारांगसूत्र ज्ञान क्रियारूप छे, तेने जाणेला सम्यग् मार्गवाळा साधुओ जेमणे कुश्रुत नदी कषाय माछलानां कुळथी आकुळ बनेल तथा प्रियनो वियोग अप्रियनो संयोग विगेरे अनेक दुःखथी मळेल महा आवर्त्तवाळुं मिथ्यात्व पवननी प्रेरणानी उपस्थापित भय शोक हास्य रति अरति विगेरे तरंगवाळुं विश्रसा वेलाथी चित थयेलुं सेंकडो व्याधि मगरना समूहना रहेवासवाळुं महा गंभीर भय आपनार त्रास उत्पादक महा संसार अर्णव (समुद्र) ने साक्षात् देखेलो छे, तेवा साधुओ ते संसार समुद्रथी पार जवा इच्छता होय तेमने आ आचारांग सूत्रमां बतावेलुं ज्ञान तथा क्रिया अव्याहत (निर्विघ्न) यानपात्र (वहाण) छे, एटला माटे मुमुक्षुए आत्यंतिक, एकांतिक, अनाबाध, शाश्वत, अनंत अजरामर, अक्षय, अव्याबाध तथा समस्त रागद्वेश विगेरे द्वंद्व रहित सम्यग दर्शन, ज्ञान, व्रत, चरणक्रियाकलापथी युक्त परमार्थ श्रेष्ठ कार्य जे सर्वोत्तम मोक्षस्थान छे, तेनी इच्छावाळा बनीने ते आचारांग सूत्रनो आधार लेवो, तेज ब्रह्मचर्य नामना श्रुतस्कंधनी निर्वृत्ति कुलवाळा श्री शील आचार्ये "तत्त्वादीत्या" नामनी वाहरि साधुना

सहायथी आ टीका समाप्त करी छे, (श्लोक ग्रंथमान ९७६) छे.

द्वासप्तत्यधिकेषु हि शतेषु सप्तसु गतेषु गुप्तानाम् । संवत्सरेषु मासि च भाद्रपदे शुक्लपञ्चम्याम् ॥१॥

७७२ वर्ष गुप्त वंशवाळा राजाओना संवत्सरनां गये थके भादरवा महिनानी शुक्ल पंचमीए.

शीलाचार्येण कृता गम्भूतायां स्थितेन टीकैषा । सम्यगुपयुज्य शोध्यं, मात्सर्यविनाकृतैरार्यैः ॥२॥

शीलाचार्ये गंभूता (गांभु) मां रहीने आ टीका बनावी छे, तेने मात्सर्य [अदेखाइ] कर्या विना उत्तम साधुओए शोधवी.

कृत्वाऽऽचारस्य मया टीकां यत्किमपि संचितं पुण्यम् । तेनाप्नुयाज्जगदिदं निर्वृतिमतुलां सदाचारम् ॥३॥

अने में आ आचारांगनी टीका बनावीने तेथी जे कंइ पुण्य उपार्जन कर्युं होय, तेनाथी आ जगत्‌ना जीवो अतुल मोक्ष तथा सदाचार प्राप्त करो.

वर्णः पदमथ वाक्यं पद्यादि च यन्मया परित्यक्तम् । तच्छोधनीयमत्र च व्यामोहः कस्य नो भवति ? ॥४॥

वर्ण (अक्षर) पद वाक्य पद्य विगेरे जे माराथी पूर्वनी टीका के सूत्रमांथी छुटी गयुं होय; तो ते विद्वाने सुधारी लेवुं. कारण के व्यामोह (भूल) कोनी नथी थती ?

तत्वादित्या जेनुं बीजुं नाम छे एवी आ आचारांगसूत्रनी वृत्ति ब्रह्मचर्यश्रुतस्कंधनी छे ते समाप्त थइ.

आ प्रमाणे श्रीभद्रबाहुस्वामीए रचेल निर्युक्ति सहित आचारांगसूत्र प्रथम स्कंधनी श्रीवाहरिगणिए करेल सहायथी श्रीशीलांक आचार्ये तत्वादित्या एवा बीजा नामवाळी रचेली आवृत्ति संपूर्ण थइ.

इति श्रीमद्भद्रबाहुस्वामिसंदब्धनिर्युक्तिसंकलिताचाराङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धस्य
वृत्तिः श्रीवाहरिगणिविहितसाहाय्यकेन श्रीशीलाङ्काचार्येण तत्त्वा-
दित्यापराभिधानेन विहिताऽऽयाता संपूर्त्तिम् ।

स्कंध २ जो (अध्ययन पांचमुं)

जयत्यनादिपर्यन्तमनेकगुणरत्नभृत । न्यत्कृताशेषतीर्थेशं तीर्थं तीर्थाधिपैर्नुतम् ॥ १ ॥

अनादि, अनंत काळ रहेनारुं, अनेक गुण रत्नोथी भरेलुं, बधा मतवाळाने सीधे रस्ते लावनार अने तीर्थंकरोए नमस्कार करेलुं एवुं तीर्थ (जैन शासन) जयवंतु वर्त्ते छे,

नमः श्रीवर्द्धमानाय, सदाचारविधायिने । प्रणताशेषगीर्वाणचूडारत्नार्चितांह्रये ॥ २ ॥

सदाचार बतावनारा अने नमेला बधा देवताओना मुकुटना रत्नोथी जेना पग पूजीत छे. एवा श्रीवर्द्धमानस्वामीने नमस्कार थाओ.

आचारमेरोर्गदितस्य लेशतः, । प्रवच्मि तच्छेषिकचूलिकागतम् ॥

आरिप्सितेऽर्थे गुणवान कृती सदा । जायेत निःशेषमशेषितक्रियः ॥३॥

आचारांग सूत्ररूप मेरुपर्वतनी चूलिका समान आ चूलिकामां जे थोडो विषय आवेल छे, तेने थोडामां कहुं छुं कारणके कारण के हंमेशा कृत्य करनारो गुणवान पुरुष आरंभेला इच्छित अर्थमां बाकी रहेली क्रिया करवाथीज संपूर्णपणा(नी अर्थसिद्धि)ने पामे छे.

नव ब्रह्मचर्यअध्ययनरूप आचार प्रथम श्रुतस्कंध कह्यो, हवे अग्रश्रुतस्कंध आरंभे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे.

पूर्वे आचारना परिमाणने बतावतां कह्युं के—

नवबंभचेरमइओ अट्ठारसपयसहस्सिओ वेओ । हवइ य सपंचचूलो बहुबहुअयरो पयग्गेणं ॥ १ ॥

नव ब्रह्मचर्यवाळो, अढार हजार पदवाळो पंच चूला सहित पदोना अग्रवडे घणो घणो आ वेद (जैनागम)आचारांग थाय छे.

तेमां प्रथम स्कंधमां नव ब्रह्मचर्य अध्ययनोने कह्यां, अने तेमां पण समस्त विवक्षित अर्थ कह्यो नथी अने कहेलो विषय पण संक्षेपथी कह्यो छे, जेथी न कहेवायेला विषयनो कहेवा माटे तथा संक्षेपमा कहेला विषयने विस्तारथी कहेवा तेना अग्रभूत (मुख्य) चार चुडाओ पूर्वे कहेला विषयनो संग्राहिकज अर्थ बतावे छे, तेथी ते अर्थवाळो आ बीजो अग्रश्रुत स्कंध छे; एथी आवा संबंधे आवेला आ स्कंधनी व्याख्या कहेवाय छे. नाम स्थापना सुगमने छोडी द्रव्य अग्रना निक्षेपा बताववा निर्युक्तिकार कहे छे.

दव्वो(१) गाहण(२) आएस(३) काल(४) कम(५) गणण(६) संचए(७) भावे(८) ॥
अग्गं भावे उ पहाण(१) वहुय(२) उवगारओ(३) तिविहं ॥ निर्युक्ति गाथा, ॥ २८५ ॥

द्रव्य अग्र बे प्रकारे छे, आगम अने नोआगम विगेरे छे. ते सिवाय व्यतिरिक्तमां द्रव्याग्र सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्यना वृक्ष (झाड) कुंत [भाला] विगेरेनो जे अग्रभाग छे ते लेवो. अवगाहना अग्र जे जे द्रव्यनो नीचलो भाग अवगाहना करे ते अवगाहना अग्र छे. जेमके मनुष्य क्षेत्रमां मेरु छोडीने बीजा पर्वतोनी उंचाइनो चोथो भाग जमीनमां दटायेलो छे अने मेरु पर्वतनो एकहजार जोजन भाग दटायेलो छे.

आदेश अग्र—आदेश कराय ते आदेश छे अने ते व्यापारनी नियोजना छे. अहीं अग्र शब्द परिमाण वाची तेथी ज्यां परिमित पदार्थोनो आदेश देवाय ते आदेश अग्र छे. ते आ प्रमाणे—त्रण पुरुषोवडे जे कृत्य कराय छे अथवा तेमने जमाडे छे.

कालाग्र—अधिकमास छे. अथवा अग्र शब्द परिमाणवाचक छे, तेमां अतीतकाल अनादि छे. अनागत [आवनारो] भविष्य काळ अनंत छे अथवा सर्वद्धा-संपूर्ण काळ छे.

क्रमाग्र—परिपाटीवडे अग्र ते क्रमाग्र छे. आ द्रव्यादि चार प्रकारनुं छे, तेमां द्रव्याग्र ते एक अणुथी बे अणु अने बे अणुथी त्रण अणु विगेरे छे. क्षेत्राग्र—एक प्रदेशना अवगाढथी बे प्रदेशना अवगाढ सुधी, बे प्रदेशना अवगाढथी त्रण प्रदेश अवगाढ विगेरे छे.

कालाग्र—एक समयनी स्थितिथी बे समयनी स्थिति सुधी, बे समयनी स्थितिथी त्रण समयनी स्थिति सुधी.

भावाग्र—एक गुण काळाशथी बे गुण काळाश, बे गुण काळाशथी त्रण गुण काळाश विगेरे छे.

गणना अग्र—सख्या धर्म स्थान ते, एक स्थानथी बीजा दश स्थान सुधी ते दश गुणो जेम एक–दश–सो–हजार.

संचय अग्र—संचित द्रव्यना उपर जे छे, ते ताम्र उपस्कर सचित्तना उपर शंख छे.

भावाग्रना त्रण प्रकार—१ प्रधान अग्र, २ प्रभूत अग्र, ३ उपकार अग्र, तेमां प्रधान अग्र सचित्त, अचित्त, मिश्र–एम त्रण प्रकारे छे. सचित्त पण बे पगवाळां चार पगवाळां अपद विगेरे त्रण भेदें छे, तेमां द्विपदमां तीर्थङ्कर, चोपदमां सिंह, अपदमां कल्पवृक्ष छे. अचित्तमां वैडुर्य विगेरे, मिश्रमां तीर्थङ्करज दागीनाथीज अलंकृत होय ते, प्रभूत अग्र ते अपेक्षा राखनार छे. जेमके—

"जीवा पोग्गल समया दव्व पएसा य पज्जवा चेव। थोवाऽणंताणंता विसेसमहिया दुवे णंता ॥ १ ॥"

१ जीव, २ पुद्गलो, ३ त्रणे कालना समयो, ४ द्रव्यो, ५ प्रदेशो, ६ पर्यवो. १ स्तोक [थोडा], २ अनंत गुणा, ३ अनंत गुणा, ४ विशेषअधिका बे अनंता [अनंत अनंत गुणा.]

आ बधामां एक पछी एक अग्र छे, अने पर्याय अग्र तो सौथी अग्र छे, उपकार अग्र तो पूर्वे कहेला विस्तारथी अने न कहेला बताववाथी उपकारमां वर्त्ते छे, जेमके—

दशवैकालिक सूत्रमां जे विषय कहेवानो बाकी रह्यो होय ते चुडामां कहेवाय-एवी बे चुडा दशवैकालिकमां छे. अथवा उपकार अग्र ते आ आचार श्रुतस्कंधनी चुडानो विषय छे अने तेथी उपकार अग्रनुंज अहीं प्रयोजन छे, अने ते निर्युक्तिकार कहे छे.

उवयारेण उ पगयं आयारस्सेव उवरिमाइं तु । रुक्खस्स य पव्वयस्स य जह अग्गाइं तहेयाइं ॥ २८६ ॥

आपणे अहींया उपकार अग्रथी अधिकार [प्रयोजन] छे. कारण के आ चूडाओ आचाराङ्गसूत्रना उपर वर्त्ते छे, एटले आचाराङ्गना विषयनेज विशेष खुलासाथी कहेवा आ चूडाओ गोठवायेली छे,जेमके वृक्षने अग्र[टोच]होय छे,तथा पहाडने टोच (शीखर)होय छे अने बाकीना अग्रना निक्षेपानुं वर्णन तो शिष्यनी मति खीलववा माटे छे तथा तेने लीधे उपकार अग्र सुखेथी समजी शकाय.कह्युंछेके

उच्चारिअस्स सरिसं, जं केणइ तं परूवए विहिणा । जेणऽहिगारो तंमि उ, परूविए होइ सुहगेज्झं ॥ १ ॥

जे कहेवानुं होय तेना जेवा पदार्थो विधिए कहेवाथी जेनावडे अधिकार छे तेमां पण बीजा सरखा पदार्थो सांभळवाथी कहेवानो मुख्य पदार्थ पण सुखेथी ग्रहण कराय छे. तेमां हमणां आ कहेवुं जोइए के आ चूलाओ [अग्रभागो] कोणे रची छे ? शा माटे ? अथवा क्यांथी उद्धरी ते त्रणनो खुलासो करे छे:—

थेरेहिऽणुग्गहट्ठा सीसहिअं होउ पागडत्थं च । आयाराओ अत्थो आयारंगेसु पविभत्तो ॥ २८७ ॥

श्रुतज्ञानना पारंगामी वृद्ध पुरुषो जे चौद पूर्वी छे तेमणे आ रची छे, तथा शिष्यना उपर अनुग्रह लावीने के एओ सहेलथी समजे. तथा अप्रकट (गुह्य) अर्थ खुल्लो थाय माटे आचारांग सूत्रमांथी आ बधा विषयोने विस्तारथी कह्यो छे. हवे जे अध्ययनमांथी जे अधिकार लीधो छे. ते विभाग पाडीने कहे छे,—

विइअस्स य पंचमए अट्ठमगस्स विइयंमि उद्देसे । भणिओ पिंडो सिज्जा वत्थं पाउग्गहो चेव ॥ २८८ ॥
पंचमगस्स चउत्थे इरिया वण्णिज्जई समासेणं । छट्ठस्स य पंचमए भासज्जायं वियाणाहि ॥ २८९ ॥

ब्रह्मचर्यनां नवे अध्ययनोमांथी बीजुं लोकविजय अध्ययन छे. तेना पांचमां उद्देशामां आ सूत्र छे, " सव्वामगंधं परिन्नाय निरामगंधो परिव्वए. " तेमां आम शब्दथी हणवुं. हणाववुं, हणताने अनुमोदवुं ए त्रण कोटी लीधी छे. गंध शब्द लेवाथी बीजी त्रण लीधी छे. आ छए अविशुद्ध कोटी छे ते नीचे प्रमाणे छे.

हणे हणावे हणताने, हणताने अनुमोदे, रांधे रंधावे रांधताने अनुमोदे ते छ छे. तथा ते अध्ययनमांज आ सूत्र छे.

" अदिस्समाणो कयविक्कएहिं " आ सूत्रथी त्रण विशोधि कोटी लीधी छे. खरीद करे, खरीद करेरावे अने खरीद करनारने अनुमोदे ते त्रण छे, तथा आठमा विमोह (विमोक्ष) अध्ययनना बीजा उद्देशामां आ सूत्र छे—

भिक्खू परक्कमेज्जा चिट्ठेज्जवा निसीएज्ज वा तुयट्टिज्ज वा सुसाणंसि वा " इत्यादि थी लइने "बहिया विहरिज्जा तं भिक्खु गाहावती उवसंकमितु वएज्जा अहमाउसंतो समणा ! तुब्भट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामीच्चं" इत्यादि,

आ बधांने आश्रयीने ११ पिंडैषणाओ रची छे, तथा तेज बीजा अध्ययनमां पांचमा उद्देशामां आ सूत्र छे,

से वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं उग्गहं च कडासणं " इति, तेमां वस्त्र कांबळ पादपुंछन लेवाथी वस्त्र एषणा लीधी. पात्रां लेवाथी पात्रैषणा लीधी छे, अवग्रह शब्दथी अवग्रह (इंद्र विगेरेनो पांच प्रकारनो) छे ते लीधी कटाशन लेवाथी शय्या लीधी,

तेज प्रमाणे पांचमुं अध्ययन 'आवंति' नामनुं छे. तेना चोथा उद्देशामां आ सूत्र छे, "गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दूज्जायं दुप्परिकंतं इत्यादि" आ सूत्रथी 'इर्या' समिति संक्षेपथी वर्णवी. तेथी इर्या अध्ययन रच्युं छे. तथा छट्ठा अध्ययनना पांचमा उद्देशामां आ सूत्र छे, "आ इक्खइ विहयइ किट्टइ धम्मकामी" आथी भाषा जात अध्ययन रच्युं छे तेम तुं जाण. ॥२८९॥

सत्तिक्कगाणि सत्तवि निज्जुढाइं महापरिन्नाओ। सत्थपरिन्ना भावण निज्जूढा उ धुय विमुति ॥ २९० ॥
आयारपकप्पो पुण पच्चक्खाणस्स तइयवत्थूओ। आयारनामधिज्जा वीसइमा पाहुडच्छेया ॥ २९१ ॥

तथा महापरिज्ञा नामना सातमा अध्ययनमां सात उद्देशा हता, तेमांथी एकेक लेवाथी सात लीधा छे. तथा शस्त्र परिज्ञामांथी भावना अधिकार लीधो छे, तथा धुतअध्ययनना बीजा चोथा उद्देशामांथी विमुक्ति अध्ययन लीधुं छे. ॥९॥

तथा आचार प्रकल्प ते निशीथसूत्र छे अने ते प्रत्याख्यान पूर्वनी त्रीजी वस्तु छे तेमां २० मुं पाहुड आचार नामनुं छे तेमांथी लीधेल छे. (आ पांचमी चूडा जुदी पाडी छे.)

ब्रह्मचर्यनां नव अध्ययनोथी आचार अग्र (चूलिकाओ) रचेल छे. एथी निर्युहन [रचवा] ना अधिकारथीज ते शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनथीज ते आचार अग्र (चूला) रची छे, ते बतावे छे.

अव्वोगडो उ भणिओ सत्थपरिन्नाय दंडनिक्खेवो। सो पुण विभज्जमाणो तहा तहा होइ नायव्वो ॥ २९२ ॥

अव्यक्त दंड निक्षेपो हतो ते बताव्यो छे, एटले प्राणीओने पीडारूप जे दंड छे, तेनो निक्षेप (परित्याग) छे, अर्थात् संयम छे, ते शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनमां गुप्त रीते कह्यो हतो, तेथी ते संयमनेज जुदा जुदा भाग पाडीने आठे अध्यनमां अनेक

प्रकारे वर्णव्यो छे, एम जाणवुं.

प्र०—आ संयम संक्षेपथी कहेलो छे, ते केवी रीते विस्तारथी कहेवाय छे? ते कहे छे.

एगविहो पुण सो संजमुत्ति अज्झत्थ बाहिरो य दुहा । मणवयणकाय तिविहो चउव्विहो चाउजामो उ ॥२९३॥

अविरतिनो त्यागरूप एक प्रकारनो संयम छे अने तेज आध्यात्मिक [अभ्यंतर] अने बाह्य एम बे भेद थाय छे, अने मन वचन कायाना योगना भेदथी त्रण प्रकारनो छे, तथा चार महाव्रतना भेदथी चार प्रकारनो छे,

पंच य महव्वयाइं तु पंचहा राइभोअणे छट्ठा । सीलंगसहस्साणि य आयारस्सप्पवीभागा ॥ २९४ ॥

पांच महाव्रतना भेदथी पांच प्रकारनो अने रात्रिभोजन विरमण मेळवतां छ प्रकारे छे, ए प्रमाणे अनेक प्रक्रियाथी भेद पाडेला १८ हजार शीलांगना भेद सुधी परिमाणवाळो संयम थाय छे.

प्र०—पण आ संयम केवो छे? उ०—ते प्रवचनमां पांच महाव्रतना भेद तरीके वर्णवाय छे ते कहे छे.

आइक्खिउं विभइउं विन्नाउं चेव सुहतरं होइ । एएण कारणेणं महव्वया पंच पन्नत्ता ॥ २९५ ॥

पंच महाव्रतरूपे व्यवस्थापेलो होय, तो सुखेथी कहेवाय अने शिष्यने सुखेथीज समजाय, ए कारणथीज पांच महाव्रतो बतावेछे, अने ए पांच महाव्रतो अस्खलित (संपूर्ण) होय तोज फलवाळा (सिद्धि आपनार) थाय छे, तेथी तेनी रक्षामां यत्न करवो, ते कहे छे.

तेसिं च रक्खणट्ठा य भावणा पंच पंच इक्किक्के । ता सत्थपरिन्नए, एसो अब्भितरो होई ॥ २९६ ॥

ते महाव्रतोनी दरेकनी पांच पांच वृत्ति समान भावनाओ छे, ते बधी आ बीजा अग्रश्रुत स्कंधमां कहेवाय छे, एथी आ

शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनमां अभ्यंतर थाय छे

हवे चूडाओनुं यथास्व (पोतानुं) परिमाण कहे छे.

जावोग्गहपडिमाओ पढमा सत्तिक्कगा विइअचूला । भावण विमुत्ति आयारपकप्पा तिन्नि इअ पंच ॥ २९७ ॥

पिंडैषणा अध्ययनथी आरंभीने अवग्रह प्रतिमा अध्ययन सुधीमां सात अध्ययनोनी पहेली चूडा छे, सात सातनी एकेक ए बीजी चूडा छे, भावना नामनी त्रीजी छे, अने विमुक्ति नामनी चोथी चुडा छे. आचार प्रकल्प निशीथ छे, ते पांचमी चुडा छे, ते चुडानो नाम विगेरे निक्षेपो छ प्रकारनो छे. नाम स्थापना सुगम छे, द्रव्य चुडा व्यतिरिक्तमां–सचित्तमां कुकडानी, अचित्तमां मुकुटना चुडानी मणि छे. मिश्रमां मयूरनी छे, क्षेत्र चुडामां लोक निष्कुट रुप छे, काल चुडामा अधिक मासना स्वभाववाळी, अने भाव चुडामां आज चुडा छे. कारण के ते क्षायोपशमिक (श्रुतज्ञान) मां वर्त्ते छे. आ सात अध्ययन रुप छे, तेमां प्रथम अध्ययन पिंडैषणा छे, तेना चार अनुयोगद्वार छे. नामनिष्पन्न निक्षेपामां पिंडैषणा अध्ययन छे, तेना निक्षेपद्वारे सर्व पिंड निर्युक्तिओ अहीं कहेवी, हवे सूत्रानुगममां अस्खलित विगेरे गुण युक्त सूत्र उच्चारवु जोइए, ते कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा–असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पाणेहिं वा पणगेहिं वा बीएहिं वा हरिएहिं वा संसत्तं उम्मिस्सं सीओदएण वा ओसित्तं रयसा वा परिघासियं वा तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परहत्थंसि वा परपायंसि वा अफासुयं अणेसणिज्जंति मन्नमाणे लाभेऽवि संते नो पडिग्गाहिज्जा ॥ से य आहच्च पडिग्गहे सिया से तं आयाय

एगंतमवक्कमिज्जा एगंतमवक्कमित्ता अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे अप्पपाणे अप्पबीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिंगपणगदगमट्टियमक्कडासंताणए विगिंचिय २ उम्मीसं विसोहिय २ तओ संजयामेव भुंजिज्ज वा पीइज्ज वा, जं च नो संचाइज्जा भुत्तए वा पायए वा से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा, अहे झामथंडिलंसि वा अट्ठिरासिंसि वा किट्टरासिंसि वा तुसरासिंसि वा गोमयरासिंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय तओ संजयामेव परिट्ठविज्जा ॥ (सू० १)

(से शब्द मगध देशमां पहेली विभक्तिना निर्देशमां वपराय छे. तेथी) जे कोइ भिक्षार्थी निर्वाह करनार भावभिक्षु मूळ उत्तरगुण धारनारो विविध अभिग्रह (तपविशेष) करनारो उत्तम साधु होय अथवा साध्वी होय, ते भावभिक्षु के साध्वी अशाता वेदनीय विगेरेना कारणोथी आहार ग्रहण करे छे, ते बतावे छे.

वेअण १ वेआवच्चे २ इरियट्ठाए य ३ संजमट्ठाए ४ तह पाणवत्तियाए ५ छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ १ ॥ "

१ अशाता वेदनिय कर्मदुर करवा. २ बीजा साधुओनी वेआवच्च करवा ३ इर्या समिति पाळवा माटे, ४ संयम पाळवा माटे ५ जीवित धारण करवा ६ अने धर्मचिंतवन करवा माटे आहार लेवाय छे, उपर बतावेला कारणोमांथी कोइपण कारणे आहारनो अर्थी बनीने गृहस्थना घरे जाय, प्र. शामाटे? उ० 'पिंडवाय पडियाए' भीक्षा (नो लाभ तेनी प्रतिज्ञा ते) अहीं मने मळशे, तेथी त्यां पेसीने अशन विगेरे जाणे, केवी रीते? ते कहे छे. प्राणि ते '२ सजा' (वासी पाणीवाळा रांधेला अनाजमां बेइंद्रिय विगेरे झीणा जीव उत्पन्न थाय छे ते) देखीने ते जीवो होय तो गोचरी न लेवी, तेज प्रमाणे पनक (उल आवे छे ते)

जोवी, तथा घउंना दाणा विगेरे अडकेल होय, हरित ते हरो जुव्हार विगेरे अंकुरावाळुं लीलुं घास होय, तेनी साथे मिश्र थइ गयुं होय, तथा काचा पाणीथी भींजायलुं होय, अथवा सचित्त रजथी परिगुंडित (खरडायेलुं) भोजन पाणी खादिम के स्वादिम होय ते चारे प्रकारनो आहार देनारना हाथमां होय के गृहस्थना वासणमां होय, ते सचित्त अथवा आधाकर्म विगेरे दोषथी अनेषणीय (दोषित) होय एवुं जाणे तो ते भावभिक्षु मळतुं होय, तो पण न ले, आ उत्सर्गनी विधि छे, हवे अपवादनी विधि कहे छे. के द्रव्यादि एटले द्रव्य क्षेत्र काळ भाव विचारीने जरुर पडतां लेवुं पडे तो ले पण खरो ते बतावे छे, द्रव्यथी ते द्रव्य जरुरनुं हो अने बीजे मळवुं दुर्लभ होय, तथा क्षेत्रथी ते बधा साधुने साधारण गोचरी मळे तेम न होय एटले लोको दृष्टि रागी होय, विशेषथी अन्यदर्शनीना रागी होय ? कालथी दुकाल विगेरे होय. अने भावथी ग्लान [मंदवाड] विगेरे होय, विगेरे कारण तो गीतार्थ साधु लाभ विशेष होय अने दोष ओछो लागतो होय तो ते ले.

वळी कोइ वखत अजाणपणे जीवातवाळुं अथवा जीव उत्पन्न थाय (तेवुं विदळ विगेरे) उन्मिश्र भोजन विगेरे तो तेनी परठववानी विधि कहे छे. "से अहच इत्यादि" एटले कोइवार उपयोग राखवा छतां पण भूलथी ओचिंतु विगेरे भोजन लेवायुं होय तो, ते 'अनाभोग' देनार, लेनार ए बेना भेदथी चार प्रकारनो थाय छे, [जेमके (१) साधुनो उपयोग होय गृहस्थनो न होय, [२] ग्रहस्थनो उपयोग होय साधुनो न होय, [३] बन्नेनो उपयोग न होय, (४) बन्नेनो उपयोग होय.] आवो आहार अशुद्ध आवेलो जणाय तो ते आहार लइने एकांतमां जाय, एटले ज्यां गृहस्थ लोक देखे नहि, तेम आवे पण नहि, ते एकांत स्थळ अनेक प्रकारनुं होय छे. ते बतावे छे.

आराम, उपाश्रय (अथ शब्द लोक आवता न होय तेवो विशिष्ट प्रदेशना संग्रह माटे छे.) अथवा शून्यगृह विगेरे स्थळ होय ते स्थळ केवुं होय, ते कहे छे. (अल्पशब्द अभाववाचक छे.) ज्यां इंडा न होय, बीज, हरित, ठार, काचुं पाणी, तथा उर्तिग घासना अग्र भागे पाणीनां बिंदु होय ते, पनक लीलण फूलण होय, वधारे पाणीथी भींजायेली माटी होय, मर्कट ते सूक्ष्म जीव अथवा करोलीयानां जाळां जेमां तेना बच्चां होय छे, ते दरेक जीवथी रहित आराम विगेरे स्थळे जइने पूर्वे लीधेला आहारमां जे जीव मिश्रित होय ते देखीदेखीने अशुद्ध आहारने त्यागवो, अथवा भविष्यमां जीव थाय तेवुं साथवो विगेरे होय तेमां जीवो जोइजोइने तेनुं भोजन दूर करीने खावा जेवु बाकी शुद्ध रह्युं होय ते बरोबर जाणीने पोते रागद्वेष छोडीने खाय अथवा पीए कह्युं छे के—

बायालीसेसणसंकडंमि गहणंमि जीव ! ण हु छलिओ । इण्हिं जह न छलिज्जसि भुंजंतो रागदोसेहिं ॥ १ ॥

बेंताळीस दोष गोचरीना छे. तेना संकटमां हे जीव ! तुं प्रथम ठगायो नथी, तेम हवे पण गोचरी करतां रागद्वेष वडे ठगातो नहीं!

रागेण सइंगालं दोसेण सधूमगं वियाणाहि । रागदोसविमुक्को भुंजेज्जा निज्जरापेही ॥ २ ॥

रागथी अंगार दोष थाय छे, द्वेषवडे धूम्र दोष लागे छे, माटे रागद्वेषथी रहित बनी सकामनिर्जरानी इच्छा राखी गोचरी करजे!

अने जे आहार विगेरे खावामां के पीवामां वधारे होय ते न खवाय, अथवा अशुद्ध पृथक् करवुं अशक्य होय तो परठववुं जोइए, तेथी ते भिक्षु तेवा वधेला के अशुद्ध आहारने लेइने एकांतमां जाय, एकांतमां जइने ते आहारने परठवे, हवे ज्यां परठवे, ते बतावे छे (अथनो अर्थ पछी छे, वा नो अर्थ अथवा छे) [झामेति] बळेलुं स्थान, [इंटना निभाडानी जग्या] अथवा अस्थि अचित्त ठळीयाना ढगलामां कीट, (लोढानो काट)ना ढगलामां, अथवा तुषना ढगलामां सूकां अडायां, के तेवा कोइपण ढगलामां

पूर्वे बतावेल फासु जग्यामां जइने त्यां वारंवार आंखे जोइने रजोहरण विगेरेथी पुंजीपुंजीने परठवे. प्रत्युपेक्षण अने प्रमार्जनने आश्रयी भांगा थाय छे.—

(१) अप्रत्युपेक्षित अप्रमार्जित, (२) अप्रत्युपेक्षित प्रमार्जित (३) प्रत्युपेक्षित अप्रमार्जित. तेमां पण देख्या विना प्रमार्जन करतो एक स्थानथी बीजा स्थाने जतां त्रस जीवोने विराधे छे. अने देखीने पूज्या विना आवता पृथ्वीकाय विगेरेने विराधे छे, बाकीना चार भांगा नीचे मुजब छे.—

(४) खराब रीते देखेलुं अने पुंजेलुं [५] खराब रीते देखेलुं बरोबर पुंजेलुं (६) सारी रीते देखेलुं खराब रीते पुंजेलुं (७) सारी रीते देखेलुं. सारी रीते पुंजेलु. तेथी आ सातमा भांगामां बतावेली रीतिए स्थंडिल जोइने उत्तम साधु उपयोग राखीनेज शुद्ध अशुद्ध पुंजना भागो परिकल्पीने त्यजे [परठवे]

हवे औषधिनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा गाहावइ० जाव पविट्ठे समाणे से जाओ पुण आसहीओ जाणिज्जा—कसिणाओ सासियाओ अविदलकडाओ अतिरिच्छच्छिन्नाओ अवुच्छिण्णाओ तरुणियं वा छिवाडिं अणभिक्कंतभज्जियं पेहाए अफासुयं अणेसणिज्जंति मन्नमाणे लाभे संते नो पडिग्गाहिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जाव पविट्ठे समाणे से जाओ पुण ओसहीओ जाणिज्जा—अकसिणाओ असासियाओ विदलकडाओ तिरिच्छच्छिन्नाओ वुच्छिन्नाओ तरुणियं वा छिवाडिं अभिक्कंतं भज्जियं पेहाए फासुयं एसणिज्जंति मन्नमाणे लाभे संते पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० २)

ते भावभिक्षु गृहस्थना घरमां गयेलो होय, त्यां शालीबीज विगेरे औषधि होय तेने आ प्रमाणे जाणे के आ बधी हणायेली नथी [सचित्त छे] आमां पण चोभंगी छे, तेमां द्रव्यकृत्स्ना ते अशस्त्र उपहत [शस्त्रथी हणायेली नथी,] भावकृत्स्ना ते सचित्त छे. तेमां कृत्स्ना आ पदवडे चार भांगामांना पहेला त्रण लेवा, एटले द्रव्यथी तथा भावथी बन्ने प्रकारे अचित्त थयेली होय ते चोथो भांगो लेवो कल्पे. बाकीना त्रण भांगावाळी न कल्पे.

"सासियाओ" त्ति—जीवनुं स्वपणुं ते उपजवानुं स्थान मत्याश्रय जेमां छे, ते स्वाश्रय छे. अर्थात् अविनष्टयोनिवाळुं अनाज छे, अने आगममां पण केटलीक औषधि (अनाज) नो अविनष्ट योनिकाल बताव्यो छे, ते आ प्रमाणे-"एतेसिणं भंते ! सालीणं के वइअं कालं जोणी संचिट्ठइ" ? एवा सूत्र पाठो छे, [गौतमस्वामी पूछे छे के हे भगवन् आ कमोदनी योनि केटलो काळ सचित्त (उपजवा योग्य) छे. विगेरे ['अविदल कडाओ' त्ति—ज्यांसुधी बे फाडचां उपरथी नीचे सुधी सरखां न कर्या होय अर्थात् दाळ न बनावी होय. [कठोळनी प्राये दाळ सर्वत्र बने छे] 'अतिरिच्छच्छिन्नाओ' त्ति—कंदली करेली न होय ते. ए द्रव्यथी कृत्स्न (आखी) छे अने भावथी सचित्त होय के न होय.

तेज प्रमाणे "अवोच्छिनाओ" त्ति—जीव रहित न थइ होय, ते अर्थात् भावथी कृत्स्न (आखी सचित्त) होय, तथा 'तरुणियं वा छिवाडिं' त्ति—अपरिपक्व मग विगेरेनी शींग [फळी] तेनुंज विशेष कहे छे. 'अणभिकंत भज्जिय' त्ति—जीवितथी अभिक्रान्त न होय अर्थात् सचित्त होय तथा 'अभज्जिय' अमर्दित 'अविराधित' होय आ प्रमाणे आवो आहार खावायोग्य होय, पण ते अप्रासुक अथवा अनेषणीय पोते देखीने सचित्त जाणतो होय तो, गृहस्थ आपे तो पण पोते सचित्तने ग्रहण करे नहि, हवे तेथी उलटुं

सूत्र कहे छे. ते भावभिक्षु तेवी औषधिने असंपूर्ण टुकडा थएली अने अचित्त थयेली विनष्टयोनिवाळी दाळ बनावेली कंदली करेली तथा फळी अचित्त थयेली अने भांगेली होय अने ते प्रासुक अने एषणीय (लेवायोग्य) होय अने गृहस्थ आपे तो कारण होय तो साधु तेने ले, लेवायोग्य अनें न लेवा योग्यना अधिकारवाळा आहार विशेषनुंज कहे छेः—

से भिक्खू वा० जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा—पिहुयं वा बहुरयं वा भुंजियं वा मंथुं वा चाउलं वा चाउलप-लंबं वा सइ संभज्जियं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा—पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा असइं भज्जियं दुक्खुतो वा तिक्खुत्तो वा भज्जियं फासुयं एसणिज्जं जाव पडिगाहिज्जा ॥[सू० ३]

ते भावभिक्षु गृहस्थने घेर गयेलो पृथुक शाली तथा वरीने शेकीने धाणी बनावे, तेमां तुप विगेरेनी बहु रज होय, तथा घउं विगेरेने भुंजेला (अडधा शेकेला) होय एटले एक बाजुथी के छेडा तरफथी शेक्या होय, अथवा तल, घउं विगेरे शेक्या होय तथा घउं विगेरे चूर्ण बनावी शेकेल होय अथवा शालीव्रीहीना तांदळा, अथवा तेनीज कणकी (चाउल पलंब) होय आवुं कोइपण जातनुं अनाज विगेरे एकवार थोडुं शेक्युं होय, थोडुं बीजा शस्त्रवडे मरडेलुं कुटेलुं होय पण ते जो अप्रासुक अने अनेषणीय पोते मानतो होय तो तेवुं अन्न ले नहि एथी विपरीत होय तो ते लेवुं एटले अग्नि विगेरेथी वारंवार शेक्युं होय, अथवा पूरेपुरुं कुट्युं होय, अने अधकाचुं विगेरे दोषवाळुं नहोय; अने प्रासुक होय तेवी खात्री थाय तो लाभ थतां जरुर होय तो साधु ग्रहण करे.

हवे गृहस्थना घरमां पेसवानी विधि कहेछे.—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं जाव पविसिउकामे नो अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ

वा अप्परिहारिएणं सद्धिं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा ॥ से भिक्खू वा० बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खममाणे वा पविसमाणे वा नो अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धिं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा ॥ से भिक्खू वा० गामाणुगामं दूइज्जमाणे नो अन्नउत्थिएण वा जाव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा (सू० ४)

ते साधुए गृहस्थना घरमां प्रवेश करवो होय तो आटला माणसो साथे न जवुं, अथवा पूर्वे ते पेठो होय तो, तेनी साथे न नीकळवुं. तेमनां नाम बतावे छे. (१) अन्य तीर्थिक ते लाल कपडां राखनारा बावा विगेरे. गृहस्थो–भीखना पिंड उपर जीवनारा ब्राह्मण विगेरे. तेमनी साथे पेसतां नीचला दोषो थाय छे, जो पाछळ चाले तो तेओनी करेली इर्या प्रत्ययनो कर्मबंध लागे–जीवरक्षा न थाय, तथा जैनशासननी निंदा थाय, तथा तेओनी जातिमां अहंकार थाय के आवा साधुओ पण अमारी पाछळ चाले छे ! ते प्रमाणे कदाच साधु आगळ चाले तो तेओने द्वेष उत्पन्न थाय, अथवा देनार असरल स्वभावी होय तो तेने द्वेष थाय, अने वस्तु वहेंचीने आपे तो खराब वखतमां पूरो आहार न मळतां जीवननिर्वाह न थइ शके, तेज प्रमाणे परिहरण ते परिहार छे, ते परिहार सहित चाले, ते 'पारिहारिक' एटले पिंडदोष त्यागवाथी उद्युक्तविहारी (उत्तम) साधु छे, तेवा उत्तम गुणवाळा साधुए पासत्था, अवसन्न कुशील, संसक्त, यथाछंद एवा पांच प्रकारना कुसाधु साथे गोचरी न जवुं, तेमनी साथे जतां अनेषणीय गोचरी आवे, अग्रहण दोष लागे एटले जो पासत्थो 'अनेषणीय' ले, तेवुं साधु पण ले, तो तेनी प्रवृत्तिनी प्रशंसानो दोष लागे, अने जो न ले तो असंखड विगेरे दोषो थाय, तेवुं जाणीने गोचरी लेवा माटे गृहस्थना घरमां तेवा साथे पेसे नहीं, तेम नीकळे

पण नहीं, तेवीज रीते तेमनी साथे बीजे पण जवानो निषेध करे छे. एटले साधुने स्थंडिल (विचार) भूमिए जवुं होय, अथवा विहार (भणवा) ना स्थळे जवुं होय, तो अन्य तीर्थि विगेरे साथे दोषोनो संभव होवाथी न जवुं, ते कहे छे स्थडिल साथे जतां प्रासुक जल स्वच्छ होय, अस्वच्छ होय. घणुं के थोडुं होय, तो तेनाथी जग्या स्वच्छ करतां उपघातनो संभव थाय, अथवा जोडे भणवा जतां सिद्धांतना आलावा गणतां ते पतित साधुने तेवुं न रुचवाथी विकथा करी विघ्न करे, ते भय छे अथवा सेह (नवा शिष्य) आदिने असहिष्णुपणाथी क्लेशनो संभव थाय छे, माटे तेवा साथे साधुए तेवा स्थळमां जवुं–आववुं नहिं, तेज प्रमाणे ते भिक्षुए एक गामथी बीजे गाम जतां के नगरथी बीजे नगर विगेरे स्थळे जतां उपर बतावेल अन्य तीर्थिओ विगेरे साथे दोषोनो संभव होवाथी जवुं नहि–कारण के मात्रुंस्थंडिल विगेरे रोकवाथी रोग थतां आत्मविराधन थाय, अने मात्रुस्थंडिल करवा जतां प्रासुक, अप्रासुक ग्रहण विगेरेमां उपघात अने संयमविराधनानो संभव छे, एज प्रमाणे भोजन [गोचरी] करतां पण दोषोनो संभव समजवो, सेहादि विप्रतारण (शिष्यने कुमार्गे दोरववा) विगेरेनो दोष पण थाय. हवे तेमना दाननो निषेध करे छे.

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा० जाव पविट्ठे समाणे नो अन्नउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा परिहारिओ वा अपरिहारियस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दिज्जा वा अणुपइज्जा वा ॥ [सू० ५]

ते साधु गृहस्थीना घरमां पेठेल होय, अथवा ते साधु उपाश्रयमां रहेल होय, तो ते साधुए अन्य तीर्थिओ विगेरेने दोषनो संभव होवाथी आहार पाणी विगेरे पोते आपवुं नहि, तेम गृहस्थ पासे पोते अपाववुं नहि, जो आपतां देखे तो लोको एवुं माने के आ साधु आवा अन्यदर्शनीओनी पण दाक्षिण्यतां (शरम) राखनारा छे. वळी तेमने टेको आपवाथी असंयममां प्रवर्त्तन विगेरेना दोषो थाय छे.

पिंडना अधिकारथीज 'अनेषणीय' दोष संबंधी निषेध करवा कहे छे.

से भिक्खू वा० जाव समाणे असणं वा ४ अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ, तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा बहिया नीहडं वा अनीहडं वा अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा आसेवियं वा अणासेवियं वा अफासुयं जाव नो पडिग्गाहिज्जा एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स चत्तारि आलावगा भाणियव्वा ॥ (सू० ६)

ते साधु गृहस्थने घेर गोचरी गयेलो होय ते नीचे बतावेला दोषोवाळुं अशन विगेरे न ले, 'असंपडियाए' त्ति—जेनी पासे स्व (द्रव्य) नथी ते अस्व (निर्ग्रंथ) छे, एवा निर्ग्रंथने कोइ भद्रक गृहस्थ जोइने विचारे के आ निर्ग्रंथ छे, माटे तेने माटे सचित्त अनाज विगेरे आरंभ समारंभ करीने वहोरावीश, संरंभ, समारंभ ने आरंभनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे.

संकप्पो संरंभो परियावकरो भवे समारंभो; । आरंभो उद्दवओ सुद्धनयाणं तु सव्वेसिं ॥१॥

संकल्प करवो ते संरंभ छे, परिताप करनारो समारंभ छे. अने उपद्रव करीने कराय ते बधा शुद्ध नयोमां आरंभ मुख्य छे, आ प्रमाणे समारंभ विगेरेने आचरीने आधाकर्म [साधु माटे रसोइ] बनावे, एनाथी बधी अशुद्ध कोटी लीधी तथा क्रीत–ते मूल्य आपीने लेवुं; पामिच्च–ते उछीतुं लेवुं, आछेद्य–ते बलजबरीथी छीनवी लेवुं, अनिसृष्ट–ते तेना बधा मालीके मळीने न आपेलुं चोल्लक विगेरे छे; अभ्याहृत गृहस्थे दूरथी लावी आपेलुं, आवुं वेचातुं विगेरे लावीने आपे, आ वाक्यथी बधी विशुद्धकोटी

लीधेली छे, ते आहार चारे प्रकारनो होय, ते आधाकर्म विगेरे दोषथी दोषित होय ते जो गृहस्थ आपे, ते बीजाए करेलुं पोते आपे, अथवा पोते जाते करीने आपे, तथा घरथी नीकळेलुं, अथवा न नीकळ्युं होय अथवा ते दाताएज स्वीकार्युं होय, अथवा न स्वीकार्युं होय, अथवा ते दाताए घणुं खाधुं होय अथवा न खाधुं होय अथवा थोडुं चाख्युं होय अथवा न चाख्युं होय, आवुं बधुं होय छतां जो ते अप्रासुक अनेषणीय पोताने मालुम पडे तो मळतुं होय छतां पण लेवुं नहीं आ पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना साधुओने (अकल्पनीय) छे, पण २२ तीर्थंकरोना साधुओने तो जेने उद्देशीने कर्युं होय तो तेने न कल्पे, बाकी बीजाने कल्पे, आ प्रमाणे घणा साधुओने आश्री उद्देशीने बनावेलुं होय तो ते लेवुं कल्पे नहीं, तेज प्रमाणे साध्वीओने आश्रयीपण बे सूत्रनी एकत्व बहुत्व योजना करवी.

हवे बीजा प्रकारे अविशुद्ध कोटीने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा० जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा असणं वा ४ बहवे समणा माहणा अतिहि किवणवणीमए पगणिय २ समुद्दिस्स पाणाइं वा ४ समारब्भ जाव नो पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० ७)

ते भावसाधु गृहस्थने घेर गोचरी गयेल होय त्यां एवुं जाणे के आ घणुं भोजन विगेरे घणा श्रमणोने माटे बनाव्युं छे, ते श्रमणो निर्ग्रंथ, शाक्य, तापस, गैरिक, आजीविक ए पांच छे, तेमने माटे बनावेल होय, ब्राह्मण माटे अथवा भोजनना समय पहेलां जे मुसाफर आवे ते अतिथि माटे अथवा कृपण (दरिद्री) माटे वणीमक [भाट विगेरे] माटे उद्देशीने बनावेलुं होय, एटले बेत्रण श्रमण पांच छ ब्राह्मण, एम संख्या गणीने सचित्त वस्तुना आरंभवडे अचित्त रसोइ बनावी होय तो ते भोजन संस्कारवाळुं

खाधेलुं के खाधा पछी वचेलुं अथवा अप्रासुक अनेषणीय आधाकर्मी भोजन मळतुं होय तोपण जाणीने ले नहीं.

हवे विशोधि कोटी आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा० जाव पविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा—असणं वा ४ बहवे समणा माहणा-अतिहिं किवणवणीमए समुद्दिस्स जाव चेएइ तं तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं वा अबहियानीहडं अणत्तट्टियं अपरिभुत्तं अणासेविय अफासुयं अणेसणिज्जं जाव नो पडिग्गाहिज्जा अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडं बहियानीहडं अत्तट्ठियं परिभुत्तं आसेवियं फासुयं एसणिज्जं जाव पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० ८)

ते साधु भोजन विगेरे आवा प्रकारनुं जाणे के–घणा श्रमण ब्राह्मण अतिथि कृपण वणीमकने माटे उद्देशीने बनावेलुं छे, अने कोइ गृहस्थ रसोइ तैयार थया पछी आपे छे, तेवुं भोजन तेज पुरुष त्यांज उभो रहीने पोताना कबजामां राखेलुं, खाधाविनानुं, वापर्याविनानुं, अप्रासुक, अनेषणीय आपतो होय तो त्यां गयेला जैन साधुए तेवुं जाण्या पछी ते न लेवुं, ते "जावंतिया भिक्ख" सूत्रथी उलटुं हवे कहे छे, (अथ शब्द पूर्वनी अपेक्षाए 'पण' ना अर्थमां छे, पुनःशब्द विशेषणना अर्थमां छे,) पण ते भिक्षु एम जाणे के ते भोजन बीजा माटे करेलुं छे, बहार आवेलुं छे, तेणे पोतानुं करेलुं छे, तेणे खाधुं छे, वापर्युं छे, प्रासुक छे, एषणीय छे. आवुं जाणीने मळे तो ते भोजन साधुए लेवुं, तेनो भावार्थ आ छे, के अविशोधि कोटीवाळुं भोजन जेम तेम कर्युं होय तो ते न कल्पे, पण विशोधि कोटीवाळुं पुरुषान्तर करेलुं होय, अने तेणे पोतानुं करेलुं होय तो ते साधुने लेवुं कल्पे छे, विशोधि-कोटीनो अधिकार कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिउकामे से जाइं पुण कुलाइं जाणिज्जा—इमेसु खलु कुलेसु निइए पिंडे दिज्जइ अग्गपिंडे दिज्जइ नियए भाए दिज्जइ नियए अवड्ढभाए दिज्जइ. तहप्पगाराइं कुलाइं निइयाइं निइउमाणाइं नो भत्ताए वा पाणाए वा पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा ॥ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिए सया जए [सू० ९] त्तिबेमि ॥ पिण्डैषणाध्ययन आद्योद्देशकः ॥ १-१-१ ॥

ते भिक्षुक गृहस्थीना घरमां जवानी इच्छावाळो आवां कुळो जाणे के, आ कुळोमां नित्य पिंड (पोष) अपाय छे, तथा अग्र पिंड कमोदनो भात विगेरे प्रथमथी भिक्षामाटे स्थापीने अपाय छे, ते अग्रपिंड नित्य भाग अर्धपोष अपाय छे, तथा पोषनो चोथो भाग अपाय छे, तेवा नित्य दानयुक्त कुल, नित्य दान देवाथी स्वपक्ष तथा परपक्षना साधुओ जाय छे. तेनो भावार्थ आ छे के, स्वपक्ष ते सयंत, परपक्ष वाकीना भिक्षुको ते बधा भिक्षामाटे जता होय, अने ते दानदेनारा एम समजे के घणा भिक्षुकोने आपीए एथी घणो आरंभ करी तेओ छए कायनो आरंभ करे, अने थोडुं रांधे तो बधाने अंतराय थाय माटे वधारे रांधे एवा स्थानमां उत्तम साधु गोचरी माटे के पाणी माटे त्यां न जाय, हवे बधानो उपसंहार करे छे.

प्रथमथी छेवटसुधी ते भिक्षुने समग्र जे उद्गम, उत्पादन ग्रहण एषणा संयोजना [प्रमाणथी वधारे] अंगार धुमकारणोवडे समजीने सुपरिशुद्ध पिंड साधुओए लेवो, तेज ज्ञानाचार समग्रता दर्शन चारित्र तप अने वीर्याचार संपन्नता छे. अथवा आ सूत्र-वडे समग्रता देखाडे छे, के जे सरस विरस विगेरे आहार मळे छे, तेनाथी अथवा रूप रस गंध स्पर्शवडे साधु समित छे. अर्थात् समभाव राखनार संयत छे, अथवा पांच समितिथी समित छे, शुभ अशुभमां रागद्वेष रहित छे, आवो साधु हित साधवाथी सहित

छे, अथवा ज्ञान दर्शन चारित्र सहित छे, आवो संयम युक्त साधु यतना करे (संयम पाळे) आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे के में भगवान पासे सांभळ्युं ते तमने कह्युं, पोतानी मतिकल्पनाथी कह्युं नथी. बाकी बधुं पूर्वमाफक जाणवुं.

पिंडेषणा अध्ययननो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशो.

पहेलो कहीने हवे बीजो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. के प्रथम उद्देशामां पिंडनुं स्वरुप बताव्युं, अने अहीं पण ते संबंधी विशुद्धकोटिने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा–असणं वा ४ अट्ठमिपोसहिएसु वा अद्धमासिएसु वा मासिएसु वा दोमासिएसु वा तेमासिएसु वा चाउम्मासिएसु वा पचमासिएसु वा छम्मसिएसु वा उऊसु वा उउसंधीसु वा उउपरियट्टेसु वा बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगे एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए तिहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए कुंभीमुहाओ वा कलोवाइओ वा सनिहिसंनिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे पेहाए तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवियं अफासुयं जाव नो पडिग्गाहिज्जा ॥ अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडं जाव आसेवियं फासुयं पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० १०)

ते भावभिक्षु आवा प्रकारनुं भोजन विगेरे जाणे के, आठमनो पौषध उपवास विगेरे ते अष्टमीपौषध ते जेमां होय ते अष्टमीपौषध उत्सव छे, तेज प्रमाणे पंदर दिवसे आवनारो ठेठ ऋतुना छेडे आवनारो, विगेरे महिने बे महिने त्रण महिने चार महिने छ महिने रुतुमां रुतुसंधिमां अथवा रुतु बदलातां कोइपण निमित्तने उद्देशीने घणा श्रमण माहण अतिथि कृपणवनीमगोने एक पिठरक (तपेलामां) थी भात विगेरे "परिएसिज्जमाण" आपेलाने खातां देखीने अथवा बे त्रण पिठरकथी अपातुं होय विगेरे जाणवुं. आ 'पिठरक' ते सांकडा मोढानी होय तो कुंभी (चरु) छे, अने 'कलोवाइअ' पिच्छी पिटक (देघडो) छे, तेमांथी कोइपणमांथी अपाय, अथवा संनिधि ते गोरस विगेरेनो संचय होय, तेमांथी अपातुं होय, ["तओ एवविहं जावंतियं पिंडं समणादीणं परिएसिज्जमाणं पेहाए"] त्ति आवो पिंड अपातो जाणीने तेज पुरुष साधु विगेरेने उद्देशीने बनावीने आपतो होय तो अप्रासुक अनेषणीय मानतो, मळतुं होय तो पण ते ले नहि, हवे अमुक विशेषणवाळुं लेवा योग्य बतावे छे,

एटले ते भिक्षु एवुं जाणे के पुरुषांतर थयुं छे. एटले बीजा गृहस्थने तेनी महेनत बदल अथवा बीजा कारणे मळ्युं होय अने ते पोते तेमांथी पोतानुं थया पछी वहोरावे, तो एषणीय प्रासुक जाणीने पोते ले.

हवे जे कुळोमां गोचरी माटे जवुं कल्पे तेनो अधिकार कहे छे—

से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जाइं पुण कुलाइं जाणिज्जा, तं जहा—उग्गकुलाणि वा भोगकुलाणि वा राइन्नकुलाणि वा खत्तियकुलाणि वा इक्खागकुलाणि वा हरिवंसकुलाणि वा एसियकुलाणि वा वेसियकुलाणि वा गंडागकुलाणि वा कोट्टागकुलाणि वा गामरक्खकुलाणि वा वुक्कासकुलाणि वा अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु कुलेसु

अदुगुंछिएसु अगरहिएसु असणं वा ४ फासुय जाव पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० ११)

ते भिक्षु गोचरी जवा चाहे तो आवां कुळो जाणीने तेमां प्रवेश करे, उग्रकुळ ते आरक्षिक [कोटवाळनुं काम ते वखते करनारा] भोगकुळ ते राजाने पूजवायोग्य होय, राजन्यकुळ ते राजाना मित्रतरीके हता, क्षत्रियकुळ राष्ट्रकूट विगेरेमां रहेनार, इक्ष्वाक ते ऋषभदेवना वंशमां जन्मेला, हरिवंश ते नेमिनाथना वंशना, 'एसिअ' गोष्ठ वैश्य (वणिज) गंडक ते नापित छे, जे गाममां उद्घोषणानुं काम करे छे, कोट्टाग (सुतार) बोकशालिय तंतुवाय (कपडां वणनारा) हवे क्यांसुधी कहेशे. ते खुलासो करे छे. के तेवां कुलोमां गोचरी जवुं के ज्यां जवाथी लोकोमां निंदा न थाय, जुदा जुदा देशना दीक्षा लीधेला शिष्योने सहेलथी समजाय तेटला माटे तेवा कुळोनां विशेषणो कहे छे, के न निंदवायोग्य कुळमां गोचरी जाय, एटले चामडानुं काम करनार मोची, चामडीया दासदासी विगेरेना कुळमां गोचरी न जवुं, पण तेनाथी उलटां सारां धर्मी कुळोमां ज्यां गोचरी निर्दोष प्रासुक मळे ते ले.

से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा—असणं वा ४ समवाएसु वा पिंडनियरेसु वा इंदमहेसु वा खंदमहेसु वा एवं रुद्दमहेसु वा मुगुंदमहेसु वा भूयमहेसु वा जक्खमहेसु वा नागमहेसु वा थूभमहेसु वा चेइयमहेसु वा रुक्खमहेसु गिरिमहेसु वा दरिमहेसु वा अगडमहेसु वा तलागमहेसु वा दहमहेसु वा नइमहेसु वा सरमहेसु वा सागरमहेसु वा आगरमहेसु वा अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूवरूवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगे एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए दोहिं जाव संनिहिसनिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे पेहाए तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं जाव नो पडिग्गाहिज्जा ॥ अह पुण एवं जाणिज्जा

दिन्नं जं तेसिं दायव्वं, अह तत्थ भुंजमाणे पेहाए गाहावइभारियं वा गाहावइभगिणिं वा गाहावइपुत्तं वा धुयं वा सुण्हं वा धाइं वा दासं वा दासिं वा कम्मकरं वा कम्मकरिं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा–आउसित्ति वा भगिणित्ति वा दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं भोयण जायं, से सेवं वयंतस्स परो असणं वा ४ आहट्टु दलइज्जा तहप्पगारं असणं वा ४ सयं वा पुण जा इज्जा परो वा से दिज्जा फासुयं जाव पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० १२)

ते भिक्षु आ प्रमाणे वळी आहार विगेरे ४ प्रकारनो जाणे के आ बीजा पुरुषने अपायो नथी तो अनेषणीय अप्रासुक जाणीने पोते न ले, ते केवो आहार ते कहे छे.

समवाय (मेळो) शंखच्छेदश्रेणी विगेरेनो पिंड निकर मरेलानी पाछळ पिंड अपाय छे. (गुजरातमां श्राद्ध कहेवाय छे) ते तथा इंद्रउत्सव [प्रथम कार्तिकी पूर्णीमाए थतो] स्कंद ते कार्तिकस्वामीनो महोत्सव पूर्वे करातो रुद्र (महादेव) विगेरे जाणीता छे. मुकुंद (बळदेव) एटले इन्द्र, स्कंद, रुद्र, मुकुंद, भूत, जक्ष, नाग, स्तुप, चैत्य, वृक्ष, गिरि, दरि, अगड, तलाग, द्रह, नदी, सरोवर, सागर, आगर अथवा तेवा कोइ देव विगेरेने उद्देशीने कोइ महोत्सव करे त्यां जे कोइ श्रमण ब्राह्मण अतिथि कृपण वणीमग विगेरे आवे तेने आपवा माटे भोजन बनावे, तेवुं जो कोइ जैनसाधु जाणे के ते रसोइ बनावनारना कबजामां छे, तो ते अशुध्ध जाणीने न ले, जोके त्यां बधाने दान देवातुं न होय, तो पण त्यां घणा माणसो एकठा थयां होय, तेथी त्यां संखडी (रसोइ-खाना) आगळ आहार लेवा न जवुं, तेज विशेषण सहित कहे छे—

वळी आवो आहार जाणे के जे श्रमण विगेरेने आपवनुं होय तेने अपायुं छे, अने गृहस्थलोकोने त्यां खातां जुए, तो त्यां

जरुर होय तो आहार माटे जाय, ते गृहस्थोनां नाम कहे छे, जेमके गृहस्थोनी भार्या विगेरेने पूर्वे खातां जुए, अथवा मालिकने जुए, तो मालिकने उद्देशीने साधु बोले के हे आयुष्यमति ! हे बेन ! मने जे कंइ भोजन तैयार होय ते आप, आवुं साधु बोले छते कोइ गृहस्थ भोजन विगेरे लावीने आपे, अने त्यां घणो जनसमूह एकठो थवाथी अथवा तेवां बीजां कारण होय तो साधु पोतानी मेळे याचे, अथवा याच्याविना पण गृहस्थ आपे, अने ते प्रासुक एषणीय अन्न विगेरे जाणे तो साधु ले.

हवे अन्य गामनी चिंता (विचार) ने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा २ परं अध्धजोयणमेराए संखडिं नच्चा संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भिक्खू वा २ पाईणं संखडिं नच्चा पडीणं गच्छे अणाढायमाणे, पडीणं संखडिं नच्चा पाईणं गच्छे अणाढायमाणे, दाहिणं संखडिं नच्चा उदीणं गच्छे अणाढायमाणे, उईणं संखडिं नच्चा दाहिणं गच्छे अणाढायमाणे, जत्थेव सा संखडि सिया, तंजहा—गामंसि वा नगरंसि वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा आगरंसि वा दोणमुहंसि वा नेगमंसि वा आसमंसि वा संनिवेसंसि वा जाव रायहाणिंसि वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए, केवली बूया—आयाणमेयं संखडिं संखडिपडियाए अभिधारेमाणे आहाकम्मियं वा उद्देसियं वा मीसजायं वा कीयगडं वा पामिच्चं वा अच्छिज्जं वा अणिसिट्ठं वा अभिहडं वा आहट्टु दिज्जमाणं भुंजिज्जा (सू० १३)

ते भिक्षु वधारेमां वधारे अर्ध योजनसुधी क्षेत्रमां जमणनुं ज्यां रसोडुं होय, त्यां जवानो विचार करे नहि, पण पोताना गाममां अनुक्रमे गोचरी जतां तेवुं जमण होय ते जाणीने शुं करवुं ते कहे छे—एटले पूर्वदिशामां जमण जाणे, तो तेथी उलटी

पश्चिमदिशामां गोचरी जाय, अनें पश्चिमदिशामां जमण होय तो पूर्वदिशामां गोचरी जाय, एम बीजी पण दिशामां जाणवुं, एटले जमणनी जग्याए जवानो अनादर करे. ज्यां जमण होय त्यां न जवुं, हवे जमण क्यां क्यां होय ते कहे छे, गाम ज्यां इंद्रियोनी पुष्टि थाय अथवा ज्यां करो लागु पडे ते छे, तेज प्रमाणे नगर, खेट कर्बट मडंब पतन (पाटण) आकर द्रोणमुख नैगम आश्रम राज्यधानी संनिवेश [आ बधा शब्दोनो अर्थ आचारांगना अगाउना भागमां पा० अपायेल छे] आवा स्थानमां संखडि (जमण) जाणीने जवुं नहि, केवळीप्रभु कहे छे के, ते जमण कर्मोना उपादाननुं स्थान छे, अथवा बीजी प्रतिमां आदानने वदले आयतन शब्द छे. तेनो अर्थ आ छे के संखडिमां जवुं ते दोषोनुं स्थान छे.

प्र०—संखडीमां जवुं ते दोषोनुं आयतन केवीरीते छे? ते कहे छे "संखडिं संखडि पडियाएत्ति"—जे जे संखडिने उद्देशीने पोते जाय, तो ते जग्याए आमांना कोइपण दोष अवश्ये लागु पडे ते बतावे छे. आधाकर्म, औदेशिक, मिश्र, क्रीत, उद्यतक, आच्छेद्य, अनिसृष्ट, अभ्याहृत आमांथी कोइपण दोषथी दोषित पोते भोजन वापरे, कारण के जमणनो करनारो एवुंज मनमां धारे के, आ आवनारो साधु मारा जमणने उद्देशीने आव्यो छे, माटे मारे कोइपण ब्हाने एने आपवुं एम विचारी आधाकर्म दोषवाळुं भोजन विगेरे बनावी आपे, अथवा जे साधु लोलुपी थइने जमणनी बुध्धिए त्यां जाय, ते मूढ बनीने आधाकर्म विगेरेनुं भोजन वापरे. वळी संखडि निमिते आवेला साधुने उद्देशीने ग्रहस्थ वसति (उतरवानुं स्थान) आ प्रमाणे करे ते कहे छे.

अस्संजए भिक्खुपडियाए खुड्डियदुवारियाओ महल्लिय दुवारियाओ कुज्जा, महल्लियदुवारियाओ खुड्डियदुवारियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जओ

निवायाओ कुज्जा, निवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा बहिं वा उवस्सयस्स हरियाणि छिंदिय छिंदिय दालिय दालिय संथारगं संथारिज्जा, एस विलुंगयाओ सिज्जाए, तम्हा से संजए नियंठे तहप्पगारं पुरेसंखडि वा पच्छासंखडिं वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए, एयं खलु तस्स भिक्खुस्स जाव सया जए (सू० १३) त्तिबेमि। पिण्डैषणाध्ययने द्वितीयः १-१-२

असंयत ते गृहस्थ छे, अने ते श्रावक अथवा प्रकृतिभद्रक अन्य दर्शनीय होय, ते साधुओने आवता जाणीने तेमने माटे सांकडा दरवाजा जे घरने होय ते साधुनिमित्ते मोटा करावे, अथवा घणा मोटा होय ते जरुर जेटला सांकडा करावे, अथवा सरखी जग्या होय ते स्त्रीओने आववाना भयथी विषम करावे, अथवा विषम होय ते साधुओना समाधान माटे सरखी बनावे छे, तथा घणी हवावाळी जग्याने शीयाळो होय तो पवन न आवे तेवी बनाववा आरंभ करे. अने उनाळो होय अने पवन विनानी जग्या होय तो हवावाळी बनाववा प्रयत्न करे, तथा उपाश्रयना चोकमां लीलुं घास होय तो छेदी छेदी–उखेडी उखेडीने उपाश्रय रहेवायोग्य संस्कारवाळो बनावे, अथवा सुवानी जग्या संस्तारकने सुधारे. अने ते मनमां एवो उद्देश राखे के साधुनी शय्याना संस्कारमां आपणुं कर्त्तव्य छे. माटे आपणे करवु जोइए, कारण के तेओ निर्ग्रंथ–अकिंचन छे, वळी गृहस्थ तेम न करे तो कारण आवे साधु पोते (निर्घृण थइने) करीले. तेटला माटे अनेक दोषथी दुष्ट एवुं संखडि (जमण) जाणीने लग्न विगेरेनी प्रथम अने मरण पाछळनी पछीनी संखडीमां जमणने उद्देशीने साधु न जाय, अथवा आगळ संखडि थवानी छे, माटे प्रथम साधु जाय, अथवा गृहस्थ जग्याने सुधारी राखे, अथवा संखडि पूरी थइ, माटे हवे वधेलुं भोजन (मिष्टान्न) खाइशुं एवी बुद्धिथी पछीथी साधुओ जाय,

माटे साधुए तेवी संखडिना जमणने उद्देशीने तेवा स्थानमां विहार नकरवो, ओज साधुनी संपूर्ण संयमशुध्धि छे, के संखडिमां सर्वथा जवानुं मांडीवाळवुं.

त्रीजो उद्देशो.

बीजो उद्देशो कहीने त्रीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां बताव्युं छे के संखडिमां दोषो जाणीने त्यां जवानो निषेध कर्यो, हवे बीजे प्रकारे तेमां रहेला दोषोने बतावे छे.

से एगइओ अन्नयरं संखडिं आसित्ता पवित्ता छड्डिज्ज वा वमिज्ज वा भुत्ते वा से नो सम्मं परिणमिज्जा अन्नयरे वा से दुक्खे रोगायंके समुप्पज्जिज्जा केवली बूया आयाणमेयं ॥ (सू० १४) इह खलु भिक्खू गाहावईहिं वा गाहावईणीहिं वा परिवायएहिं वा परिवाईयाहिं वा एगज्जं सध्धिं सुंडं पाउं भो वइमिस्सं हुरत्था वा उवस्सयं पडिलेहेमाणो नो लभिज्जा तमेव उवस्सयं संमिस्सीभावमावज्जिज्जा, अन्नमाणे वा से मत्ते विप्परियासियभूए इत्थिविग्गहे वा किलीबे वा तं भिक्खुं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो समण ! अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा राओ वा वियाले वा गामधम्मनियंतियं कट्टु रहस्सियं मेहुणधम्मपरियारणाए आउट्टामो, तं चेवेगईओ सातिज्जिज्जा—अकरणिज्जं चेयं संखाए एए आयाणा [आयतणाणि] संति संविज्जमाणा पच्चवाया भवंति, तम्हा से संजए नियंठे तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए (सू० १५)

ते भिक्षु कोइ वखत एक चर (एकलो फरनारो) होय, अने ते आगळ-पाछळ संखडिनुं भोजन खाइने तथा शीखंड के दूध विगेरे अति लोलुपीपणाथी रसनो स्वादीयो बनीने घणुं खाय, तो विशेष झाडा थाय, अथवा वमन थाय. अथवा अजीरणथी कोढ विगेरे कोइ रोग थाय, अथवा तुर्त जीव लेनारो आतंक शूळ विगेरे रोग थाय, माटे केवळी सर्वज्ञप्रभु कहे छे के ते संखडिनुं जमण कर्मोनुं उपादान छे, ते आदान केवी रीते थाय छे, ते बतावे छे. आ संखडिना स्थानमां आ अपायो (पीडाओ) थाय छे, अथवा जीभनो स्वाद करी इंद्रियो उन्मत्त थतां दुर्गति गमन विगेरे परलोकना अपायो छे, [खलु शब्द वाक्यनी शोभा माटे छे] ते भिक्षु गृहस्थ अथवा तेना घरनी स्त्रीओ साथे अथवा परिव्राजक (बावा) साथे अथवा बावीओ साथे कोइ दिवस एक वाक्य (एक चित्त थवा) थी प्रेमी बनीने तेओनी साथे ते साधु लोलुपपणे कोइ पण जातनुं नसो चडावनारुं पीणुं पण पीए, अने नसो चडतां रहेवानुं स्थान याचे, पण जो तेवो शीलरक्षणनो उपाश्रय न मळे तो ते संखडि नजीकनाज मकान (धर्मशाळा विगेरे) मां गृहस्थ अथवा बावी विगेरे ज्यां उतर्या होय तेमनी साथे उतरीने एकमेकपणे वर्त्ते, त्यां नसो चडेलो होवाथी कांतो गृहस्थ पोताने भूली जाय अथवा साधु पोताने साधुपणाथी भूले, अने तेथी आवुं चिंतवे, के हुं गृहस्थज छुं ! अथवा (इंद्रियो पुष्ट थयेल होवाथी) स्त्रीना शरीरमां मोहित थयेलो अथवा नपुंसक साथे कुचालथी साधुपणुं गुमावे, अथवा तेने उन्मत्त जोइ कोइ रखडती स्त्री अथवा नपुंसक तेनी पासे आवीने बोले के हे आयुष्मन् ! हे श्रमण ! हुं तारीसाथे एकांतमां मळवा इच्छुं छुं, आराममां अथवा उपाश्रयमां रात्रे अथवा संध्याकाळे ते साधुने इन्द्रियोथी परवश बनेलाने कहे के तमारे त्यां आववुं, अने तमारे अमारी इच्छाथी विपरीत न करवुं, पण मारी साथे तमारे हमेशां अमुक स्थळमां आववुं, आ प्रमाणे परवश बनावीने गामनी सीममां अथवा

कोइ एकांत स्थळमां जइने स्त्रीसंग अथवा कुचेष्टानी विज्ञप्ति करे, अने दुराचारथी भ्रष्ट थवा वखत आवे, माटे संखडिमां जवुं अयोग्य छे, एम मानीने संखडि (जमण) मां जवुं नहि, कारण के आ जमणो कर्मोपादनना कारणो छे, तेमां कर्म दरेक क्षणे एकठां थाय छे, एटले त्यां जवाथी बीजां पण अशुभ कर्मबंधनां कारणो मळी आवे छे, उपर बतावेला त्यां आलोक संबंधी रोगना दुराचारना अपायो छे. तेमज परलोक संबंधी दुर्गतिगमनना प्रत्यवायो छे, माटे संखडीने उद्देशीने त्यां पहेलां के पछी साधुए जवुं नहीं.

से भिक्खू वा २ अन्नयरिं संखडिं सुच्चा निसम्म संपहावइ उस्सुयभूएण अप्पाणेणं, धुवा संखडी, नो संचाएइ तत्थ इयरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिग्गाहित्ता आहारं आहारित्तए, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा ॥ से तत्थ कालेण अणुपविसित्ता तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिगाहित्ता आहारं आहारिज्जा ॥ [सू० १६]

ते भिक्षु आगळ-पाछळनी कोइपण 'संखडी' बीजा पासे के जाते सांभळीने निश्चय करे के त्यां अवश्ये जमण छे, तो त्यां उत्सुकपणाथी अवश्य दोडे के मने अद्भूत भोजन मळशे. तो त्यां गया पछी जुदा जुदा घरोथी समुदायनी एषणीय गोचरी आधाकर्मादि दोष रहित फक्त रजोहरण विगेरेना वेषथी मळे ते उत्पादन दोष रहित लेवी, ते तेनाथी बनी शके नहि, अने कपट पण करे, प्र०—केवी रीते? पोते गुरु पासेथी 'प्रतिज्ञा' करीने जाय, के जुदा जुदा घेरेथी गोचरी लइश, पण उपर बतावेली रीते तेम लेवा शक्तिवान न थाय. अने संखडिमांज जाय. माटे आलोक परलोकना अपायोना भयने जाणीने संखडि तरफ न जाय. केवी रीते करे. ते कहे छे. ते भिक्षु कारण विशेषे त्यां जाय तो पण योग्य समये जुदा जुदा घरोमां जइने सामुदायिक

आहार-पाणी प्रासुक वेषमात्रथी मळे ते धात्रीपिंड विगेरे दोषथी रहित लइने आहार करे.

से भिक्खू वा २ से जं पुण जाणिज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा संखडी सिया तंपि य गामं वा जाव रायहाणिं वा संखडिं संखडि पडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ केवली बूया आयाणमेयं अइन्नाऽवमा णं संखडिं अणुपविस्समाणस्स—पाएण वा पाए अक्कंतपुव्वे भवइ, हत्थेण वा हत्थे संचालियपुव्वे भवेइ, पाएण वा पाए आवडियपुव्वे भवइ, सीसेण वा सीसे संघट्टियपुव्वे भवइ, काएण वा काए संखोभियपुव्वे भवइ, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा अभिहयपुव्वेण वा भवइ, सीओदएण वा उस्सित्तपुव्वे भवइ, रयसा वा परिघासियपुव्वे भवइ, अणेसणिज्जे वा परिभुत्तपुव्वे भवइ, अन्नेसिं वा दिज्जमाणे पडिग्गाहियपुव्वे भवइ, तम्हा से संजए नियंठे तहप्पगारं आइन्नावमाणं संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ (सू० १७)

वळी ते भिक्षु जो आ प्रमाणे जाणे के गाममां, नगरमां अथवा राजधानीमां कोइपण स्थळे संखडि (जमण) थवानी छे त्यां चरक विगेरे अनेक भिक्षाचरो हशे. त्यां जमणनी बुद्धिए साधु विहार न करे. त्यां जवाथी थता दोषोने सूत्रवडे कहे छे, के केवळी (सर्वज्ञ) प्रभु तेने कर्म उपादान छे. एज बतावे छे. ते संखडि चरक विगेरेथी व्याप्त हशे. एटले १०० नी रसोइ होय त्यां पांचसो भेगा थशे. त्यां थोडी रसोइने लीधे आवा दोषो थाय छे. धक्काधक्कीमां एकना पग बीजाने लागशे. हाथथी हाथ अथडाशे. पात्रां साथे पात्रां अथडाशे. अथवा माथासाथे माथुं भटकाशे. साधुनी काय साथे चरक विगेरेनी काया अथडाशे. ते वखते धक्को लागतां

ते वावो कोपायमान थतां झगडो करशे. पछी ते रीसमां आवीने दंड (लाकडी) थी केरीना गोटला विगेरेथी मुकाथी माटीना ढेफाथी कपाल [घडाना ठीकरा] थी साधुने घायल करशे, अथवा ठंडा पाणीथी सिंचशे, धूळथी कपडां बगाडशे, आ दोषो तो जगाना संकोचने लीधे थाय छे, पण ओछी रसोइने लीधे आवा दोषो थाय छे. अशुद्ध आहार खावानो वखत आवशे, कारण के थोडुं रांधेलुं अने भिक्षु वधारे होय छे, त्यारे घरधणी एम समजे के मारुं नाम सांभळीने आ लोको आव्या छे, माटे मारे कोइपण रीते पण तेमने आपवुं जोइए, एवुं विचारीने साधुने रांधीने पण आपशे, तेथी दोषित आहार खावानो प्रसंग आवे, अथवा कोइ वखत दानदेनारने बीजा वावा विगेरेने आपवानी इच्छा होय अने वचमां साधु आवीने ले, तेथी घरधणीने तथा वावा विगेरेने खोटुं लागे, माटे आवा दोषोने जाणीने उत्तम साधुए आवी संखडिमां घणा लोको भरायेला होय, त्यां भोजननी तंगीने लीधे अथवा धक्कामुक्कीना कारणे संखडिनी बुद्धिए त्यां जवुं नहि, हवे सामान्यथी पिंडनी शंकाने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा असणं वा ४ एसणिज्जे सिया अणेसणिज्जे सिया वितिगिंछ-समावन्नेण अप्पाणेण असमाहडाए लेसाए तहप्पगारं असणं वा ४ लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० १८]

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गयेलो एपणीय आहरने पण शंकावाळुं जाणे, के आ उद्गमादि दोषोथी दुष्ट छे. तो साधुए तेवी शंका थया पछी तेवुं लेवुं नहि, कारणके "जं संके तं समावज्जे," ज्यां शंका थाय त्यां ते भोजन लेवुं नहि, (आ सूत्रमां एषणीय अथवा अनेषणीय चार प्रकारनो आहार होय, पण पोताने केटलांक कारणोथी मालुम पडे के ते उद्गम दोष विगेरेथी युक्त छे. आवी ज्यां पोतानी लेश्या थइ तो उत्तम साधुए ते लेवुं नहि.) हवे गच्छमांथी नीळेकला साधुओने आश्रयी सूत्र कहे छे.

से भिक्खु० गाहावइकुलं पविसिउकामे सव्वं भंडगमायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिज्ज वा निक्ख-
मिज्ज वा ॥ से भिक्खू वा २ वहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खममाणे वा पविसमाणे वा सव्वं भंड-
गमायाए वहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा ॥ से भिक्खू वा २ गामाणुगामं
दूइज्जमाणे सव्वं भंडगमायाए गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ (मू० १९)

ते भिक्षु गच्छमांथी जिनकल्पी विगेरे मुनि नीकळ्यो होय, ते गृहस्थने घेर गोचरी लेवा जाय, तो पोतानां बधां धर्मोपकरण
साथे लइने गृहस्थना घरमां पेसे, अथवा नीकळे, तेवा मुनीनां उपकरण अनेक प्रकारे छे.

“दुगतीग चउक्क पंचग नव दस एक्कारसेव बारसह” इत्यादि–ते जिनकल्पी बे प्रकारना छे, हाथमांथी पाणी टपके तेवा,
तथा जे लब्धिवाळा होय तेने पाणीनुं बिंदु टपके नहि, तेवा मुनिने शक्ति अनुसार विशेष अभिग्रह होवाथी फक्त बेज उपकरण
रजोहरण अने मुखवस्त्रिका छे, अने कोइने शरीरना रक्षण माटे एक सूत्रनुं कपडुं होवाथी त्रण उपकरण थया, पण तेवा साधुने वधारे
ठंडीना कारणे उननुं वस्त्र वधारे राखवाथी चार उपकरण थयां, तेथी पण ठंडी न सहन थाय तो बे सूत्रनां वस्त्र राखवाथी पांच थयां.

पण लब्धिविनाना जिनकल्पीने सात प्रकारनां पात्रानो निर्योग थवाथी १२ उपकरण थाय छे. “१ पत्तं २ पत्ताबंधो ३ पाय-
ठवणं च ४ पायकेसरिया ॥ ५ पडलाइ ६ रयत्ताणं ७ च गोच्छओ पायनिज्जोगो ॥ १ ॥”

१ पात्र २ पात्रानो बंध ३ पात्रस्थापन ४ पात्र केसरिका (पुंजणी) ५ पडला ६ रजस्त्राण ७ गोच्छो. उपरनां पांच तेमां मळतां
बार उपकरण वधारेमां वधारे जिनकल्पीने होय, ते गोचरीमां जाय, त्यारे साथे लेइ जाय तेम बीजे स्थळे पण जतां साथे लेइ जाय,

ते कहे छे, एटले गाम विगेरेनी बहार स्वाध्याय करवा अथवा स्थंडील जवा जाय तो पण बधां उपकरण लेइ जाय, आ बीजुं सूत्र छे, तेज प्रमाणे बीजे गाम जाय तो पण लेइने जांय, ए त्रीजुं सूत्र छे. हवे गमनना अभावनां निमित्त कहे छे.

से भिक्खू० अह पुण एवं जाणिज्जा—तिव्वदेसियं वासं वासेमाणं पेहाए तिव्वदेसियं महियं संनिचलमाणं पेहाए महावाएण वा रयं समुध्धुयं पेहाए तिरिच्छसंपाइमा वा तसा पाणा संथडा संनिचयमाणा पेहाए से एवं नच्चा नो सव्वं भंडगमायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ (सू० २०)

ते भिक्षु कदी आवुं जाणे के अहीं लंबाण क्षेत्रमां झाकळ पडे छे, अथवा धुमस पडे छे, अथवा वंटोळीयो वाइने धुळ घणी उडे छे, अथवा तीरछां-पतंगीयां विगेरे झीणां जंतुओ उडीने शरीर साथे आथडे छे, तो ते साधु पूर्वे त्रण सूत्रमां बतावेल उपधि लइने जाय आवे नहि, तेनो परमार्थ आ छे, के जिनकल्पीनो आ कल्प छे के ज्यारे बहार नीकळे त्यारे प्रथम उपयोग दे के वर्षाद झाकळ के धुमस वरसे छे के वरसवानो छे? जो प्रथम जाणे तो न नीकळे. कारण के तेनी शक्ति एवी छे के छमास सुधी पण ठल्लोमात्रुं (झाडो पेशाब) रोकी शके, अने स्थविरकल्पी पण उपयोग दे, अने जाण्या पछी कारण होय तो नीकळे खरो. पण पोतानी बधी उपधि लेइने न नीकळे, प्रथम बतावी गया के अधम कुलोमां गोचरी विगेरे माटे जवुं आववुं नहि. पण हवे अनिंदनीक कुलोमां पण दोषोना देखवाथी त्यां जवानो निषेध छे, ते बतावे छे.

से भिक्खू वा २ से जाइं पुण कुलाइं जाणिज्जा तंजहाखत्तियाण वा राईण वा कुराईण वा रायपेसियाण वा राय-

वंसट्ठियाण वा अंतो वा, बाहिं वा गच्छंताण वा संनिविट्ठाण वा निमंतेमाणाण वा अनिमंतेमाणाण वा असणं वा ४ लाभे संते नो पडिगाहिज्जा (सू० २१) ॥ १-१-३ ॥ पिण्डैषणायां तृतीय उद्देशकः ॥

ते भिक्षु एवां कुलो जाणे के, चक्रवर्ती, वासुदेव, बळदेव विगेरे क्षत्रियोनां आ छे, अथवा क्षत्रियोथी अन्य राजाओनां कुळो छे, कुराज ते नानां रजवाडा (नाना ठाकरडा विगेरे) ना कुळो छे, राजना प्रेष्य ते दंडपाशिक [हवालदार फोजदार] नां कुळो तथा राजवंशमां रहेला ते राजाना मामा तथा भाणेजो विगेरेनां कुळोमां संतापना भयथी पेसवुं नहि, त्यां जतां आवतां अंदर रहेला माणसोथी अथवा बहार रहेला माणसोथी अथवा जता आवता माणसोथी साधुओने नुकशान थाय, माटे कोइ गोचरीनुं निमंत्रण करे, अथवा भोजन मळतुं होय तोपण त्यां गोचरी लेवा जवुं नहि.

त्रीजो उद्देशो समाप्त थयो.

चोथो उद्देशो.

त्रीजो कहीने चोथो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां संखडी संबंधी विधि कही, अहीं पण तेनी बाकीनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० जाव समाणे से जं पुण जाणेज्जा मंसाइयं वा मच्छाइयं वा मंसखलं वा आहेणं वा पहेणं वा हिंगोलं वा समेलं वा हीरमाणं पेहाए अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया बहुहरिया बहुओसा बहुउदया बहुउत्तिंगपणगदगमट्टीयमक्कडासंतयाणा बहवे तत्थ समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगा उवागया उवागमिस्संति (उवाग-

च्छंति) तत्थाइन्ना वित्ती नो पन्नस्स निक्खमणपवेसाए नो पन्नस्स वायणपुच्छणपरियट्टणाणुप्पेहधम्माणुओगचिंताए, से एवं नच्चा तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिं संखडिपडिआए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण जाणिज्जा मंसाइयं वा मच्छाइयं वा जाव हीरमाणं वा पेहाए अंतरा से मग्गा अप्पा पाणा जाव संताणगा नो जत्थ बहवे समण० जाव उवागमिस्संति अप्पाइन्ना वित्ती पन्नस्स निक्खमणपवेसाए; पन्नस्स वायणपुच्छणपरियट्टणाणुप्पेहधम्माणुओगचिंताए, सेवं नच्चा तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा० अभिसंधारिज्ज गमणाए ॥ (सू० २२)

ते साधु कोइ गाम विगेरेमां भिक्षा माटे गयो होय, त्यां संखडि आवा प्रकारनी जाणेतो त्यां गोचरी जवुं नहि, जेमां मांस विगेरे प्रधान छे. मांसना स्वादुओ माटे मुख्य तेज वस्तु होय, एटले प्रथम तेने वधारे रांधे. अथवा बीजी रसोइ पूरी थया पछी ते तेना स्वादुओ माटे रांधे, त्यां कोइ सगो विगेरे तेवुं अभक्ष्य भोजन घेर लइ जाय, तेवुं देखीने त्यां साधु जाय नहि, तेना दोषो हवे पछी कहेशे, तेज प्रमाणे माछलांथी वधारे प्रधान होय, तेज प्रमाणे मांसखल आश्रयी पण जाणवुं. ज्यां संखडि माटे मांस छेदीने तेने सुकावे, अथवा सुकवेलुं, ढगलो करेलुं होय, तेज प्रमाणे माछलासंबंधी पण जाणवुं. अथवा विवाह पछी वहु घेर आवतां वरना घरे भोजन थाय छे, अथवा वहुने लइ जतां सासरे भोजन थाय छे, हिंगोल, ते मरेलानुं भोजन छे, अथवा यक्षनी यात्रा विगेरे माटे भोजन छे, 'संमेल' ते परिवारना सन्माननुं भोजन, अथवा गोठीयाओनुं भोजन, आवुं कोइपण प्रकारनुं जमण जाणीने त्यां कोइ सगां-व्हालांथी ते निमित्ते कंइपण लइ जवातुं देखीने त्यां भिक्षामाटे जवुं नहि, त्यां जवाथी थता दोषोने बतावे

छे, त्यां रस्तामां जतां बहु पतंग विगेरे प्राणीओ होय छे, तथा बहु बीज, बहु हरित, बहु अवश्याय घणुं पाणी बहु उत्तिंग पनक भींजवेली माटी करोळीयानां जाळां होय छे, तथा त्यां जमण जाणीने घणा श्रमण ब्राह्मण अतिथि कृपण वणीमग आव्या, आवशे अने आवे छे, ते चरक विगेरेथी व्याप्त होय छे, तेथी बुद्धिमान साधुने त्यां जवुं आववुं कल्पे नहि, तेम त्यां जनारने गीतवाजींत्रना संभवथी भणवुं भणाववुं अर्थचिंतयन विगेरे थइ शके नहि, तेथी ते साधुने आवतां जतां घणो काळ लागे, तेथी बहु दोषवाळी संखडिमां ज्यां मांस विगेरे मुख्य छे, तेवा प्रथमना जमणमां के पाछळना जमणमां तेने उद्देशीने साधुए जवुं नहि, हवे अपवाद मार्ग कहे छे.

ते भिक्षु मार्गमां विहार करतां दुर्बळ थाय, मंदवाडमांथी उठ्यो होय, तपचरणथी दुर्बळ थयो होय, अथवा बीजे कंइ आहार मळे तेवुं स्थान न होय, अथवा त्यांज दवानी चीज मळे तेम होय, तो तेवा जमणमां कारण प्रसंगे जवुं पडे तो जे रस्ते सूक्ष्म जीवो घास बीज के वचमां कांइ न पड्युं होय, तो ते रस्ते मांस विगेरेना दोषो दूर करवा समर्थ होय तो कारणे जाय, अने पोताने खपनी भक्ष्य वस्तु लइ आवे. (जैनोमां दश विकृति विगइ छे. घी, दूध, दहीं, तेल, गोळ, कडाइ एटले एकलुं घी, के दूध, दहीं, तेल, गोळ अने कडाइमां घी, तेल पुष्कळ नांखीने तळेल होय ते कडाइ विगय कहेवाय, आ पदार्थो जरूर पडे तो लेवाय छे, पण मांस मदिरा मांखण अने माखी वीगेरेनुं मध ए अभक्ष्य छे. कारणके तेमां जीवोनी उत्पत्ति छे. अने ते खानारने इंद्रियो दमन करवी तथा सुबुद्धि राखवी दुर्लभ छे, माटे जैन साधु के श्रावकने वर्जवा योग्य छे, माटे बने त्यांसुधी तेवा रस्ते पण जवानो निषेध छे, वखते खराब वस्तुनी दुर्गंधी आवे तो पण बुद्धि भ्रष्ट थाय छे.

चालता पिंडना अधिकारमां भिक्षा संबंधि खुलासावार कहे छे,

से भिक्खूवा २ जाव पविसिउकामे से जं पुण जाणिज्जा खीरिणियाओ गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए असणं वा ४ उवसंखडिज्जमाणं पेहाए पुरा अप्पजूहिए सेवं नचानो गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा ॥ से तमादाय एगंतमवक्कमिज्जा अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा– खीरिणियाओ गावीओ खीरियाओपेहाए असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए पुराए जूहिए सेवं नचा तओ संजयामेव गाहा० निक्खमिज्ज वा ॥ (सू० २३)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेसतां आ प्रमाणे जाणे के अहीं तुर्तनी प्रसुतिवाळी गायो दोहवाय छे, तो त्यां गायो दोहवाती देखीने चारे प्रकारनो आहार 'रंधातो' जोइने अथवा भात विगेरे रांधेलो तैयार देखीने पण प्रथम बीजाने न आपेलो होय तो पण प्रवर्त्तमान अधिकरणनी अपेक्षावाळो प्रकृतिभद्रक विगेरे कोइ गृहस्थ साधुने देखीने श्रद्धावाळो बनीने घणुं दूध तेमने आपुं, आवी बुद्धिथी वाछडाने पीडा करे, दोहवाती गायोने त्रास पमाडे, ते कारणथी साधुने परपीडाना कारणे संयम तथा आत्मानी विराधना थाय, अने अडधा रंधायेल भात विगेरेने जलदी रांधवा माटे प्रयत्न करे तेथी पण संयम विराधना छे, माटे तेवुं जाणीने साधु गोचरी माटे त्यां न जाय, न नीकळे तेवा स्थळे शुं करवुं ते कहे छे,

ते भिक्षु ते गायनुं दोहवुं, विगेरे जाणीने एक बाजुए ज्यां गृहस्थ न आवे, न देखे त्यां उभो रहे, त्यां उभा रहेतां आ प्रमाणे पछी जाणे के 'गायो दोहवाइ गइ छे, त्यारपछी गोचरीनी जरुर होय तो शुद्ध आहार लेवा योग्य होय ते लेवा जाय अने नीकळे,

पिंडना अधिकारथीज आ कहे छे.

भिक्खागा नामेगे एवमाहंसु—समाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे खुड्डाए खलु अयं गामे संनिरुद्धाए नो महालए से हंता भयंतारो बाहिरगाणि गामाणि भिक्खायरियाए वयह. संति तत्थेगइयस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया वा पच्छासंथुया वा परिवसंति, तंजहा—गाहावइ वा गाहावइणीओ वा गाहावइपुत्ता वा गाहावइधुयाओ वा गाहावइसुण्हाओ वा धाइओ वा दासा वा दासीओ वा कम्मकरा वा कम्मकरीओ वा, तहप्पगाराइं कुलाइं पुरेसंथुयाणिवा पच्छासंथुयाणि वा पुव्वामेव भिक्खायरियाए अणुपविसिस्सामि, अवि य इत्थ लभिस्सामि पिंडं वा लोयं वा खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा धयं वा गुळं वा तिल्लं वा महुं वा मज्जं वा मंसं वा सक्कुलिं वा फाणियं वा पूयं वां सिहिरिणं वा, तं पुव्वामेव भुच्चा पिच्चि पडिग्गहं च संलिहिय संमज्जिय तओ पच्छा भिक्खूहिं सद्धिं गाहा० पविसिस्सामि वा निक्खमिस्सामि वा, माइट्ठाणं संफासे. तं नो एवं करिज्जा ॥ से तत्थ भिक्खूहिं सद्धिं कालेण अणुपविसित्ता तत्थियरेयपरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिगाहित्ता आहारं आहारिज्जा, एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खूस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं० (सू०२४) ॥

१–१–४ ॥ पिण्डैषणायां चतुर्थ उद्देशकः ॥

केटलाक साधुओ जे एक स्थळे जंघाबळ क्षीण थवाथी एक जग्याए रह्या होय, तथा मासकल्पनो विहारकरनारा कोइ जग्याए मासकल्प रह्या होय ते समये बीजा विहार करनारा परोणा साधु त्यां आवीने उतर्या होय, तेमने पूर्वे स्थिर रहेला

अथवा मासकल्पी उतर्या हाय, तेओ कहे के, आ गाम क्षुल्लक (नानुं) छे, अथवा गोचरी आपवामां तुच्छ छे, तथा सूतक विगेरेथी घर अटक्यां छे, माटे घणुंज तुच्छ छे, तेथी हे पूज्य ! आप वने त्यांसुधी नजीकना गाममां गोचरी माटे जजो, तो ते प्रमाणे करवुं. हवे रहेला साधुनो दोष वतावे छे,

अथवा त्यां रहेनार साधुना पूर्वना सगां भत्रीजा विगेरे होय, अथवा पछवाडेना सगां. सासरीयांनां सगां विगेरे होय, ते बतावेछे. जेमके गृहस्थ, तेनी स्त्री तेना पुत्रो. दीकरीओ, दीकरांनी वहुओ, धावमाता दासदासी नोकर. नोकरडी तेवां संसारी संबंधवाळां पूर्वनां के पछीना सगां–संबंधी होय. तो त्यां पूर्वगोचरी जाउं, तो त्यां सारुं भोजनशालिना चोखा विगेरे तथा दूध, दहीं, मांखण, घी, गोळ तेल मद्य, दारु, मांस सक्कुली (तलसांकळी), गोळनीपेत, पूडा, शीखंड विगेरे गोचरीना वखत पहेलां लावीने खाउं, आ सूत्रमां भक्ष्य अभक्ष्य वस्तुओनो विवेक सू. २२ मां बताव्यो छे, ते आधारे अपवाद समजवो, अथवा कोइ साधु दुष्ट बुद्धिथी, रसगृधीथी पोताना हिंसक सगां जे पूर्वनां संबंधी होय तो त्यांथी लावीने बारोबार खाय. (ते माटे आ सूत्रमां तेनो निषेध कर्यो के तेणे त्यां जवुं नहि,) तेम अविवेकथी वस्तुओ लावीने खाय, पीणुं पीए. पछी पातरां त्रणवार साफ करीने पछी गोचरीना समये डाह्या (शांत) मनवाळो बनीने हुं नवा आवेला परोणा साथे गोचरी जइ आवीश, आवुं कपट कोइ करे तो,ते साधुनुं रसना लोलुपपणाथी साधुपणुं नष्ट थाय छे, माटे बिजा साधुए तेम न करवुं. त्यारे साधुए शुं करवुं ते कहे छे.

आवेला परोणा साथे त्यां रहेला साधुए गोचरीना वखते जुदाजुदा कुलोमांथी थोडी थोडी सामुदायिक एषणीय (उदगम) दोष रहित) तथा वैषिक ते फक्त साधुना वेषथी मेळवेल (धात्री पिंड विगेरे उत्पादन दोष रहित) गोचरी मेळवीने लेवी आज

साधुनी संपूर्णता छे, (आ सूत्रमां मांस–मदिरावाळां कुटुंबमांथी कोइए दीक्षा लीधी होय, तो तेवाए सगांने घेर गोचरी जुदा न जवुं, तेज श्रेयस्कर छे, कारणके कुबुद्धि केवी खराब छे, अने तेनुं जैन धर्ममां केवुं मायश्चित छे ते नीचेनुं बनेलुं दृष्टांत वांचवा जेवुं छे.

(कुमारपाळ राजाए जैनधर्म स्वीकार्या पहेलां मांसभक्षण करेलुं अने पाछळथी त्याग कर्युं हतुं, तेने एक समये घेबर खातां मांसनो स्वाद आव्यो, तेथी श्रीमान हेमचंद्रआचार्य पासे आवीने पूछयुं, के मने घेवरखावुं कल्पे के नहि? गुरुए कह्युं के नहि. प्र–शामाटे ? उ–पूर्वनो दुष्ट स्वभाव मांसभक्षणनो याद आवे. कुमारपाळे कह्युं के त्यारे जो तेवुं स्मरण थयुं होय तो तेनुं मने मायश्चित शुं आवे ? उ–बत्रीश दांत पाडी नांखवानुं. तेज समये लुहारने बोलावी दांत खेंची काढवा कह्युं, त्यारे हेमचंद्राचार्ये ते राजानी दृढता जोइ बीजुं प्रायश्चित आप्युं आथी समजवानुं ए छे के 'तेवा' मांसभक्षणवाळां कुटुंबोमां जतां कुमारपाळ माफक खराब चीज याद आवी जायतो साधुपणुं भ्रष्ट थाय, पण बीजा साधु साथे होय तो तेनी शरमथी त्यां रहेनारो साधु पण बचे, अने सगांने पण मांस भक्षण न करवा बोध मळवाथी पापथी बचे.

चोथो उद्देशो समाप्त.

पांचमो उद्देशो.

चोथो कह्यो, हवे पांचमो उद्देशो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां निर्दोष पिंड लेवानी विधि कही अने अहीं पण तेज कहे छे.

से भिक्खू वा २ जाव पविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा—अग्गपिंडं उक्खिप्पमाणं पेहाए अग्गपिंडं निक्खिप्पमाणं पेहाए अग्गपिंडं हीरमाणं पेहाए अग्गपिंड परिभाइज्जमाणं पेहाए अग्गपिंडं परिभुंज्जमाण पेहाए अग्गपिंडं पेहाए अग्गपिंड परिट्ठविज्जमाजं पेहाए पुरा असिणाइ वा अवहाराइ वा पुरा जत्थऽण्णे समण० वणीमगा खद्धं २ उवसंकमंति से हंता अमहवि खद्धं २ उवसंकमामि, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करेज्जा ॥ (सू० २५)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गयेलो एम जाणे के देवता माटे तैयार करेलो भात विगेरेनो आहार छे, तेमांथी थोडो थोडो काढे छे. अने बीजा वासणमां नाखे छे, तेवुं देखीने अथवा कोइ देवना मंदिरमां लइ जवातुं जोइने अथवा थोडुं थोडुं बीजाने अपातुं जोइने तथा बीजाथी खवातुं अथवा देवळनी चारे दिशामां बळि तरीके उछाळातुं अथवा पूर्वे बीजा ब्राह्मण विगेरेए त्यांथी एकवार जमी आवीने घेर लइ जता होय, अथवा एकवार जमीआवीने श्रमण विगेरे एम माने के बीजीवार पण आपणने त्यां मळशे, एम धारीने पाछा त्वराथी जता होय, आवुं देखीने कोइ भोळो साधु के लालचु साधु ते भोजनना स्वादथी ललचाइने तेम विचारे के हुं पण त्यां जइने गोचरी लावुं, आम करवुं साधुने कल्पे नहि कारणके आवुं करतां तेने पण बीजा माफक कपट करवुं पडे.

हवे भिक्षामां फरवानी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० जाव समाणेअंत रा से वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा तोरणाणि वा अग्गलाणि वा अग्गलपासगाणि वा सति परक्कमे जयामेव परिक्कमिज्जा; नो उज्जुयं गच्छिज्जा, केवली बूया आयाणमेयं से तत्थ परक्कममाणे पयलिज्ज वा पक्खलेज्ज वा पवडिज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा पक्खलेज्जमाणे वा पवडमाणे वा, तत्थ सेकाए उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणेण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूण्य वा सुक्केण वा सोणिएण वा उवलित्ते सिया, तहप्पगारं कायं नो अणंतरहियाए पुढवीए नो ससिणिद्धाए पुढवीए नो चित्तमंताए सिलाएनो चित्तमंताए लेलूए कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे जाव ससंताणए नो आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा संलिहिज्ज वा निलिहिज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वट्टिज्ज वा आयाविज्ज वा पायाविज्ज वा, से पुव्वामेव अप्पससरक्खं तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा साइज्जा, जाइत्ता से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा २ अहे झामथंडिलंसि वा जाव अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय तओ संजयामेव आमज्जिज्ज वा जाव पयाविज्ज वा ॥ (सू० २६)

ते साधु गृहस्थने घेर गोचरी जवा माटे जतां पाडो (महेल्लो), शेरी, के गाम विगेरेमां पेसतां मार्ग जुए, त्यां रस्तामां जतां वचमां समान भूभागमां अथवा बे गामना वचमां कयारा बनावेल जुए, अथवा घरने के नगरने खाइ के कोट होय, अथवा तोरणो अर्गला (अडगलो) अथवा अर्गलपाशक (जेमां अर्गलानो अंकोडो नांखे छे, ते जुए, तो ते कारणके लइने ते सीधे

मार्गे न जाय; कारणके त्यां जतां केवळीप्रभु कहे छे के कर्मबंधननुं ते कारण छे, वखते संयम विराधना अथवा आत्म विराधना थायछे ते बतावे छे. तेवे मार्गे जतां मार्गमां वमना कारणे विषमपणांथी कोइ वखत धूजे, कोइ वखत ठोकर खाय, कोइ वखत पडीजाय तो छकायमांथी कोइपण कायने विराधे, तेमज त्यां शरीरना मळथी, पिशाबथी बळखा, लींट, वमन, पित्त, परु, वीर्य, लोहीथी खरडाय माटे तेवे मार्गे न जवुं पडे तो ठोकरखातां गारामां पडीने खरडाय विगेरे कारणथी आवुं न करे, ते कहे छे.

ते साधु तेवा अशुचि गारा विगेरेमां पडतां वचमां वस्त्र राख्या विना खुल्ला शरीरे पृथ्वी साथे स्पर्श न करे, अथवा भीनी जमीन साथे के धुळवाळी पृथ्वी साथे तथा सचित्त पत्थर साथे तथा सचित्त माटीना ढेफासाथे अथवा धुणना कीडाथी सडेलुं लाकडुं जेमां अनेक नानां इंडां होय तेनी साथे अथवा करोळीयाना जाळांवाळी जग्या साथे एकवार न स्पर्श करे, न वारंवार स्पर्श करे, तेनाथी गारो दूर न करे, तेम त्यां बेसीने कादव दूर करवा खोतरे नहि, तेम त्यां बेसीने उद्वर्तन (चोळवुं) न करे, तेम सुकायलाने पण त्यां न खोतरे, तेम त्यां उभो रहीने सूर्यने तडके एकवार न तापे, अथवा वारंवार न तापे, शुं करे, ते कहे छे ते भिक्षु त्यांथी नीकळी अल्प रजवाळु तृण विगेरे याचे, अने अचित्त जग्याए निभाडा विगेरे एकांतमां जोइने त्यां बेसीने शरीरनो कादव दूर करे, अथवा तडके तपावे. अने पछी दूर करे. अने स्वच्छ करे, वळी शुं करे ? ते कहेछे.

से भिक्खू वा० से जं पुण जाणिज्जा गोणं वियालं पडिपहे पेहाए महिसं वियालं पडिपहे पेहाए एवं मणुस्सं आसं हत्थिं सीहं वग्घं विगं दीवियं अच्छं तरच्छं परिसरं सियालं बिरालं सुणयं कोलसुणयं कोकंतियं चिताचिल्ल

डयं वियालं पडिपहे पेहाए सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, नो उज्जुयं गच्छिज्जा । से भिक्खू वा० समाणे अंतरा से उवाओ वा खाणुएं वा कंटए वा घसी वा भिलुगा वा विसमे वा विज्जले वा परिया।ज्जिज्जा, सइ परक्कमे संजयामेव, नो उज्जुयं गच्छिज्जा ॥ (सू० २७)

ते भिक्षु रस्तामां जतां ध्यान राखे. अने जो त्यां एवुं जाणे के रस्तामां गाय, गोधो विगेरे छे, अने ते मारकणो होवाथी रस्तो बंध छे, अथवा झेरी साप छे, जंगली भेंस के पाडो छे, दुष्ट मनुष्य छे, घोडो हाथी, सिंह, वाघ, वृक (वरगडुं), चित्रो, बळद सरभ, जंगली डुक्कर, कोकंतिक, शीयाळना आकारनुं लोमडी जेवुं जनावर छे, जे रातमां कोको एम आरडे छे, चित्ता, चिल्लडय के जंगली जानवर छे. तेवुं कोइपण दुःखदायी प्राणी रस्तामां मालूम पडे तो प्रथम उपयोग दइने खात्री करे, अने बीजो रस्तो होय तो ते सीधे रस्ते न जतां भय विनाना रस्ते जाय, तेज प्रमाणे मार्गमां खाडो होय ठंठुं होय कांटा होय, ढोळाव होय, काळी फाटेली माटी होय, उंचानीचा टेकरा होय, कादव होय. तेवी जग्याए बीजो मार्ग होय तो चक्रावो खाइने पण ते रस्ते जवुं पण टुंका सीधा रस्ते न जवुं. कारणके त्यां जवाथी संयमनी तथा पोतानी विराधनानो संभव छे.

से भिक्खू वा० गाहावइकुलस्स दुवारबाहं कंटगबुंदियाए परिपिहियं पेहाए तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुन्नविय अपडिलेहिय अप्पमज्जिय नो अवंगुणिज्ज वा पविसिज्ज वा निक्खमिज्जवा, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुन्नविय पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय तओ संजयामेव अवंगुणिज्ज वा पविसेज्ज वा निक्खमेज्ज वा॥ (सू०२८)

ते साधु गृहस्थने घेर गोचरी जतां ते घरनुं बारणुं दीधेलुं जोइने ते घणीनी रजा लीधा विना, आंखथी जोइने रजो-

हरण विगेरेथी पूंज्या विना उघाडवुं नहि, उघाडीने पेसे नहिं, अने नीकळे पण नहि, तेना दोषो बतावे छे. गृहस्थने द्वेष थाय ते घरमांथी वस्तु खोवाय तो साधुना उपर शंका आवे अने उघाडेला द्वारथी पशु विगेरे घरमां पेसी जाय, तेथी संयम अने आत्मविराधना थाय, हवे जो कारण होय, तो अपवादमार्ग कहे छे.

ते घरमां जावानी जरुर होय तो तेना धणीनी रजा लइने आंखे देखीने ओघाथी पुंजीने बारणुं विगेरे उघाडे तेनो भावार्थ आ छे.

पोते दरवाजो उघाडीने पेसवुं नहि, जो मांदा आचार्य विगेरे माटे त्यां औषध विगेरे मळतुं होय, अथवा वैद्य त्यां रहेतो होय, अथवा दुर्लभ द्रव्य त्यां मळशे, अथवा ओछी गोचरी मळेली होय, एवां खास कारणो आवेथी दीधेला बारणा आगळ उभो रहीने शब्द करे (बोलावे) अथवा पोते संभाळथी पुजीप्रमार्जीने उघाडीने जवुं.

त्यां प्रवेश थया पछीनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा २ से जं पुण जाणिज्जा समणं वा माहणं वा गामपिंडोलगं वा अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए नो तेसिं संलोए सपडिदुवारे चिट्ठिज्जा, से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा २ अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, से से परो अणावायमसंलोए चिट्ठमाणस्स असणं वा ४ आहट्टु दलइज्जा, से य एवं वइज्जा—आउसंतो समणा! इमे भे असणे वा ४ सव्वजणाए निसट्ठे तं भुंजह वा णं परिभाएह वा णं, तं चेगइओ पडिगाहित्ता तुसिणीओ उवेहिज्जा, अवियाइं एयं ममभेव सिया, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करिज्जा से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा २ से पुव्वामेव आलोइआ—आउसंतो समणा! इमे भे असणे वा ४ सव्वजणाए निसिट्ठे तं भुंजह वा णं जाव

परिभाएह वा णं,सेणमेवं वयंतं परा वइज्जा–आउसंतो समणा ! तुम चेव णं परिभाएहि, से तत्थ परिभाएमाणे नो अप्पणो खध्धं २ डायं २ ऊसढं २ रसियं २ मणुन्नं २ निध्धं २ लुक्खं २, से तत्थ अमुच्छिए अगिध्धे अग (ना) ढिए अणज्झोववन्ने बहुसममेव परिभाइज्जा, से णं परिभाएमाणं परो वइज्जा–आउसंतो समणा ! माणं तु परिभाएहि सव्वे वेगइआ ठिया उ भुक्खामो वा पाहामो वा, से तत्थ भुंजमाणे नो अप्पणा खद्धं खद्धं जाव लुक्खं, से तत्थ अमुच्छि ए ४ बहुसममेव भुंजिज्जा वा पाइज्जा वा ॥ (सू० २९)

ते साधु गाम विगेरेमां भिक्षा माटे पेठेलो एम जाणे, के आ घरमां प्रथम श्रमण विगेरे पेठेल छे. तो तेने पहेलां पेठेलो जोइने दान देनार तथा लेनारने अप्रीति न थाय, तथा अंतरायकर्म न बंधाय, माटे ते बंने देखे, त्यां उभा न रहेवुं, तेमज नीकळवाना दरवाजा आगळ पण बंनेनी अप्रीति टाळवा विगेरे माटे उभा न रहेवुं, पण ते साधु एकांतमां जइ कोइ न आवे न देखे, त्यां उभो रहे, त्यां उभा रहेता पण जैन साधुने गृहस्थ जाते आहार आपीने आ प्रमाणे कहे के "तमे भिक्षा माटे बहु आवेला छो, अने हुं एकलो याकुलपणाथी आहार वहेंची आपवाने शक्तिवान नथी, हे श्रमणो ! में तमने बधा साधुओने चारे प्रकारनो आहार आप्यो छे. तेथी हवे तमे पोतानी इच्छा प्रमाणे ते आहारने एकठा बेसीने खाओ, वापरो, अथवा व्हेंचीने लो, आ प्रमाणे गृहस्थ आपे, तो उत्सर्गथी जैन साधुए ते आहार भागमां न लेवो, पण दुकाळ होय, अथवा लांबा पंथमां गोचरीनी तंगी होय तो अपवादथी कारणपडे ले पण खरो, पण ते आहार लेइने एवुं न करे, के ते आहारने छानोमानो लेइ एकांतमां पोताने मळेलो माटे थोडो होवाथी हुं कोइने न आपुं, एकलो खाउं तेवुं कपट न करे, त्यारे शु करवुं ते कहे छे.

ते भिक्षु आहारने लइने त्यां वीजा श्रमण विगेरे पासे जइने ते आहार तेमने देखाडे, अने बोले के हे आयुष्यमानो ! हे श्रमणो आ आहार विगेरे आपण बधाने गृहस्थे वहेंच्या विना सामटो आपेल छे, तेथी तमे बधा एकत्र बेसीने खाओ, वापरो आ आ प्रमाणे साधुने बोलतो सांभळीने कोइ श्रमण विगेरे आ प्रमाणे कहे, हे साधो ! तमेज अमने बधाने वहेंची आपो, तेवुं साधुए न करवुं पण कारणे करवुं पडे तो आ प्रमाणे करवुं, के पोते वहेंचतां घणुं उंचु शाक विगेरे पोते न ले, तेम लुखुं पण न ले, पण ते भिक्षु आहारमां मूर्छित थया विना अगृद्धपणे ममता रहित थइने बधाने सरखुं वहेंची आपे, कंइपण दाणो विगेरे सहेज वधारे रहे. (कारणके तोळीने आप्युं नथी) तो पण बने त्यांसुधी बधाने सरखुं वहेंची आपे, पण ते वहेंचतां कोइ श्रमण (अन्य-दर्शनी) एम बोले, के वहेंचो नहि, पण आपणे बधा साथे बेसीने जमीए, पीए, तो साथे न जमवुं, पण पोताना साधुओ होय, पासत्था विगेरे होय के संभोगिक (साथे गोचरी करे तेवा) होय, ते बधाने साथे आलोचना आपीने साथे जमवानी आ विधि छे. एटले पोते बधाने सरखु वहेंची आपे, अने बधा त्यां साथे बेसीने खाय पीए, गया सूत्रमां बहारनुं आलोकस्थान निषेध्युं, हवे त्यां प्रवेशना प्रतिषेधनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा से जं पुण जाणिज्जा समणं वा माहणं वा गामपिंडोलगं वा अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए नो ते उवाइक्कम्म पविसिज्ज वा ओभासिज्ज वा, से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा २ अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, अह पुणेवं जाणिज्जा पडिसेहिए वा दिन्ने वा, तओ तंमि नियत्तिए संजयामेव पविसिज्ज वा ओभासिज्ज वा एयं० सामग्गियं० (सू० ३०) ॥२-१-१-५॥ पिण्डैषणायां पञ्चम उद्देशकः ॥

ते भिक्षु गोचरी माटे गाम विगेरेमां पेठेलो एवुं जाणे के आ घरमां प्रथम श्रमण विगेरे पेठेलो छे, तो ते पूर्वे पेठेला श्रमण विगेरेने देखीने तेने ओळंगीने पोते अंदर न जाय, तेम त्यां उभो रहीने गृहस्थ पासे भिक्षा पण न मागे, पण तेने पेठेलो जाणीने पोते एकांतमां धणी न देखे तेम उभो रहे, पछी ते अंदरना भिक्षुने आपे अथवा ना पाडे, त्यारे ते त्यांथी पाछो नीकळे त्यारपछी जैन साधु अंदर जाय अने आहारनी याचना करे, आज साधुनुं साधुपणुं संपूर्ण रीते छे.

पांचमो उद्देशो समाप्त थयो.

छट्ठो उद्देशो

पांचमां पछी छट्ठो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां श्रमण विगेरेने अंतरायना भयथी गृहप्रवेश निषेध्यो, तेज प्रमाणे अहीं अपर प्राणीओना अंतरायना निषेध माटे कहे छे.

से भिक्खू वा से जं पुण जाणिज्जा–रसेसिणो वहवे पाणा घासेसणाए संथडे संनिवइए पेहाए, तंजहा–कुक्कड जाइयं वा सूयर जाइयं वा अग्गपिंडंसि वा वायसा संथडा संनिवइया पेहाए सइ परक्कमे संजया नो उज्जुयं गच्छिज्जा (सू० ३१)

ते भिक्षु गोचरी माटे गाम विगेरेमां जतां एम जाणे के आ मार्गमां घणां प्राणीओ रसनां इच्छुओ होयने पाछळथी

दाणा चुंगवा शेरी विगेरेमां घणा एकठां थइने जमीन उपर पडेलां छे, तेमने ते साधुए जोइने ते तरफ तेणे न जवुं, ते प्राणीओनां नाम बतावे छे, कुकडां विगेरे लीधाथी उडतां पक्षीओ जाणवा. तेज प्रमाणे सूवरजाति लीधाथी चोपगां ढोर विगेरे चरता होय अथवा अग्रपिंडी (बली) बहार फेंकेल होय तेमां कागडा खाता होय तेमने देखीने शरीरमां शक्ति होय त्यांसुधि सम्यक् उपयोग राखीने साधु ते रस्ते न जाय कारणके त्यां जतां अनेक प्राणीने अंतराय थाय छे. अने तेने उडतां के बीजे खसतां तेमनो वध पण वखते थाय. हवे गृहस्थना घरमां पेठेल साधुने गोचरीनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा २ जाव नो गाहावइकुलस्स वा दुवारसाहं अवलंबिय २ चिट्ठिज्जा, नो गा० दगच्छड्डणमत्ताए चिट्ठिज्जा, नो गा० चंदणिउयए चिट्ठिज्जा, नो गा० सिणाणस्स वा वच्चस्स वा संलोए सपडिदुवारे चिट्ठिज्जा, नो० आलोयं वा थिग्गलं वा संधि वा दगभवणं वा बाहाओ पगिज्झिय २ अंगुलिआए वा उद्दिसिय २ उण्णमिय २ अवनमिय २ निज्झाइज्जा, नो गाहावइअंगुलियाए उद्दिसिय २ जाइज्जा, नो गा० अं० चालिय २ जाइज्जा, नो गा० अं० तज्जिय २ जाइज्जा, नो गा० अं० उक्खुलंपिय (उक्खुलुंदिय) २ जाइज्जा, नो गाहावइं वंदिय २ जाइज्जा नो वयणं फरुसं वइज्जा ॥ (सू० ३२)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गोचरी पेठेलो नीचली बावतो न करे, तेना बारणानी शाखाने वारंवार अवलंबीने उभो न रहे, जो ते पकडे, तो वखते जीर्ण होय तो पडी जाय अथवा बरोबर न जामेल होय तो खसी जाय. तेथी संयमनी विराधना थाय तथा धोवानी (चोकडी) तथा उदक (पाणी) मुकवानी जग्या (पाणीयारा) तरफ तथा आचमन करे त्यां अथवा टांका

करे, टट्टी जइने पग धुवे, ए जग्या तरफ पोते उभो न रहे, के तेवा घरवाळा तरफ पोतानी दृष्टि पडे, तेमां आ दोष छे के, त्यां देखवाथी स्त्री विगेरेना संबंधीओने शंका थाय अने त्यां लज्जाइने बरोबर शरीर स्वच्छ न थवाथी तेने द्वेष थाय, तेज प्रमाणे गृहस्थना गोख झरुखा तरफ दृष्टि न करे, तथा फाट पडेली ते दुरस्त करी होय त्यां न जुए, अथवा चोरे खातर पाडेलुं होय, अथवा भींतने सांधो कर्यो होय, अथवा उदकगृह (पाणीनुं स्थान) होय, आ बधां स्थानो वारंवार हाथ लांबो करीने अथवा आंगुळी उंची करीने तथा माथुं उंचुं करीने नमावीने अथवा काया नीची नमावीने देखे नहि, बीजाने बतावे पण नहि, (सूत्रमां बेवार ते पाठ बताववानुं कारण भार देवानुं छे) जो वारंवार त्यां देखे के बीजाने देखाडे, तो घरमां कंइ चोराय के नाश पामे तो शंका उत्पन्न थाय, वळी ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेठेलो गृहस्थने आंगळी वडे उद्देशीने तथा अंगुली चलावीने अथवा आंगळीथी भय बतावीने तथा खरज खणीने तेमज वचनथी (भाट माफक) स्तुति करीने याचवुं नहि, तथा कोइ वखत गृहस्थ न आपे तो तेने कडवां वचन न कहे, के तुं जक्ष माफक पारकानुं घर रक्षे छे ! तारा नशीबमां दान क्यांथी होय ? तारी वातज सारी छे, पण कृत्य सारां नथी ! वळी

अक्षरद्वयमेतद्धि, नास्ति नास्ति यदुच्यते तदिदं देहिदेहीति, विपरीतं भविष्यति ॥ १ ॥

तु ' नथी नथी ' एवा बे अक्षर बोले छे, तेने बदले तुं ' आप आप ' ए बे अक्षर घरवाळाने कहे, के तेथी विपरीत थशे ! अर्थात् तारुं कल्याण थशे ! (आवुं पण कटाक्ष वचन साधु न बोले)

अह तत्थ कंचि भुंजमाणं पेहाए गाहावइं वा० जाव कम्मकरिं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा भइणित्ति

वा दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं भोयणजायं ? से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा मत्तं वा दव्विं वा भायणं वा सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलिज्ज वा पहोइज्ज वा, से पुव्वामेव आलोइज्जा-आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! मा एयं तु मं हत्थवा ४ सी ओदगवियडेण वा २ उच्छोलेहि वा २, अभिकंखसी मे दाउं एवमेव दलयाहिसे सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा० सीओ० उसी० उच्छोलित्ता पहोइत्ता आहट्टु दलइज्जा; तहप्पमारेणं पुरेकम्मकएणं हत्थेण वा असणं वा ४ अफासुयं जाव वो पडिगाहिज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा नो पुरेकम्मकएणं उदउल्लेणं तहप्पगारेणं वा उदउल्लेण वा हत्थेण वा ४ असणं वा ४ अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा। अह पुणेवं जाणिज्जा—नो उदउल्लेण ससिणिद्धेण सेसं तं चेव एवं—ससरक्खे उदउल्ले, ससिणिद्धे मट्टिया ऊसे। हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला अंजणे लोणे॥१॥ गेरुय वन्निक सेडिय सोरट्ठिय पिट्ठ कुकुस उक्कुट्ठसंसट्ठेण। अह पुणेव जाणिज्जा नो असंसट्ठे संसट्ठे तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा ४ असणं वा ४ फासुयं जाव मडिगाहिज्जा [सू० ३३]

गृहस्थना घरमां पेठेलो ते भिक्षु कोइ गृहस्थ विगेरेने खातां जुए, तेने खातां देखीने साधु मथम आवुं विचारे के आ गृहस्थ, पोते अथवा तेनी स्त्री अथवा तेनी नोकरडी विगेरे कोइ पण खाय छे, एवुं विचारीने तेनुं नाम लेइ याचना करे, के आयुष्मन् ! के अमुक गृहस्थ अमुक बाइ ! अथवा योग्य बीजुं वचन बोलीने कहे के तमारा घरमां जे रंधायुं होय तेमांथी अमने आपो ! एम याचना करे, ते तेम आपवाने हाजर न होय; अथवा कारण आवे आ ममाणे बोले, पछी तेना घरमांथी याचता भिक्षुने बीजो गृहस्थ कोइ वखत हाथ डोइ के बीजुं वासण काचा पाणीथी के बरोबर न उना थयेला पाणीथी अथवा उनुं

करेलुं पाछुं काले पहोंचतां सचित्त थयेल होय तेना वडे धुए, अथवा वारंवार धुए, आ प्रमाणे धोवानी चेष्टा करतां पहेलां साधु जोइने विचारे [अर्थात् ध्यान राखे,] अने पछी तेम देखीने तेनुं नाम लेइने निवारे, के तमे काचा पाणी विगेरेथी न धुओ पण पहेलो गृहस्थ सचित्त विगेरे धोइनेज आपे तो अप्रासुक जाणीने साधु ले नहि.

वळी ते साधु गृहस्थनां घरमां पेठेलो जो एम जाणे के साधु माटे नहिं, पण तेणे कोइ पण कारणे प्रथम काचा पाणीए हाथ के वासण धोयुं छे, अने तेनां टपकां पडे छे, एवुं देखे तो चारे प्रकारनो आहार अप्रासुक जाणीने लेवो नहि, कदाच पाणीनां टपकां न पडतां होय, पण काचा पाणीथी खरडेला हाथ के वासण होय तोपण ते आपतां साधुए न लेवुं, एज पूर्वे कह्या प्रमाणे न्याय छे, जेम काचा पाणीथी खरडेला हाथे न लेवुं, तेम सचित्त रज होय, माटीथी खरडेल होय, तेमां उप ते खारवाळी माटी. हडताळ, हिंगळोक, मणशिल, अंजन, लवण, गेरु, आ बधी पृथ्वीकायनी खाणमांथी नीकळेली सचित्त वस्तुओ साधुने न कल्पे, [वर्णिका ते पीळी माटी मेट छे, सेटिका खडी छे, सौराष्ट्रि ते तुवरिका छे, पिष्ट ते छड्याविनाना तंदूल चूरण [भूको] छे, कुकसा उपरनां कूटेलां छोतरां [उक्कुठ] पीलु पर्णिका विगेरेनी खांडणीमां खांडेल चुरो अथवा लीलां पांदडानो चुरो, विगेरे खरडेला हाथ विगेरेथी आपे तो ले नहि. ए प्रमाणे जो खरडेल न होय तो साधु गोचरी ले.

पण एम जाणे के खरडायेल छे, पण ते जातिना आहारथी हाथ विगेरे खरडेल छे, तेमां आठ भांगा छे.

"असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते निरवसेसे दव्वे"

आमां एकेक पद बदलवाथी आथी आठ भांगा थाय—तेमां संसृष्ट हाथ, संसृष्ट वासण अने शेष द्रव्य बाकी रहेल होय ते

आठमो भांगो सर्वोत्तम छे, पण एवुं जाणे के, काचा पाणी विगेरेथी असंसृष्ट हाथ विगेरे छे, तो ते लेवुं, अथवा ते जातिना द्रव्यवडे (भक्ष्य वस्तुथी) हाथ विगेरे खरडेल होय ते आहारने प्रासुक जाणीने साधुए लेवो, वळी

से भिक्खू वा २ से जं पुण जाणिज्जा पिहुयं वा बहुरयं वा जाव चाउलपलंबं वा असंजए भिक्खुपडियाए चित्तमंताए सिलाए जाव संताणाए कुट्टिंसु वा कुट्टिंति वा कुट्टिस्संति वा, उप्फणिंसु वा ३ तहप्पगारं पिहुयं वा० अफ्फासुयं नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ३४)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेठेलो जो एवुं जाणे, के चोखा विगेरेना कुरमुरा (ममरा) घणी रेतीथी भरेला छे, अथवा अडधा शेकेल चोखा विगेरेना कण विगेरे होय, तेने साधुने उद्देशीनेज सचित्त शिला उपर अथवा बीजवाळी, हरितवाळी अथवा नाना जंतुना इंडावाळी अथवा करोळीयाना जाळावळी शिला उपर ते ममरा के कणोने फुटेल होय फुटे अथवा फुटशे, (सूत्रमां एकवचन क्रियापदनु छे ते आर्षवचन होवाथी बहुवचनमां लेवु अथवा जातिमां एकवचन पण लेवाय) आम करीने पछी ते धाणी, पव्वा विगेरे सचित मिश्र होय. तेने सचित शिलामां कुटीने साधु माटे झाटके अने मछी आपे, के आपशे, तेवुं जाणीने तेवो पृथक् विगेरे आहार आपे तोपण ले नहि.

से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं० विलं वा लोणं उब्भियं वा लोणं अस्संजए जाव संताणाए भिंदिसु ३ रुचिंसु वा ३ विलं वा लोणं उब्भियं वा लोणं अफासुयं० नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ३५)

जो ते भिक्षु एवुं जाणे, के आ खाणनुं मीठुं (विल वीड) छे, अथवा सिंधव, संजल विगेरे बधी मीठानी जाति होय, तथा

उदभिज (समुद्रना किनारे सूकावेलुं मीठुं,) ते प्रमाणे रुमक विगेरे बीजुं मीठुं पण लेवुं, आवुं मीठुं जे काचुं छे, तेने उपर बतावेल शिला उपर कूटीने आपे. अेटले साधु माटे भेदे, भेदशे, अथवा वधारे झीणुं करवा चूरीने आपे तो लेवुं नहि. वळी

से भिक्खू वा० से जं० असणं वा ४ अगणिनिक्खित्तं तहप्पगारं असणं वा ४ अफासुयं नो०, केवली बूया आयाणमेयं, अस्संजए भिक्खुपडियाए उस्सिंचमाणे वा निस्सिंचमाणे वा आमज्जमाणे वा पमज्जमाणे वा ओयारेमाणे वा उव्वत्तमाणे वा अगणिजीवे हिंसिज्जा, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा एस पइन्ना एस हेऊ एस कारणे एसुवएसे जं तहप्पगारं असणं वा ४ अगणिणिक्खित्तं अफासयं नो० पडि० एयं० सामग्गियं ॥ (सू०३६) ॥ पिण्डैषणायां षष्ठ उद्देशकः २-१-१-६ ॥

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गोचरी गयेल होय, त्यां चारे प्रकारनो अहार अग्नि उपर वळता साथे लागेल होय तो आहार आपे तो पण लेवो नहि, त्यां केवली प्रभु कहे छे के, आ कर्मा दान छे, तेज प्रमाणे गृहस्थ भिक्षुने उदेशीने त्यां अग्नि उपर रहेल आहारने बीजा वासणमां नांखतो तेमांथी प्रथम आपेल होय ते वधेलामां बीजुं नाखे अथवा हाथथी मसळीने शोधे, तथा प्रकर्षथी शोधे, तथा निचे उतारीने अथवा अग्निने तीरछी करीने जीवोने पीडे.

आ वधी वात समजावीने कहे छे के उपर बतावेली साधुनी आ प्रतिज्ञा छे के अग्नि साथे लागेलुं भोजन विगेरे अप्रासुक छे, अने ते अनेषणीय छे, एम जाणीने आहार मळतो होय, तो पण ले नहि, आज साधुनुं सर्वथा साधुपणुं छे, पहेला अध्ययननो छट्ठो उद्देशो समाप्त थयो.

सातमो उद्देशो

छठो उद्देशो कहीने सातमो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां संयम विराधना बतावी, अने अहीं संयमनी आत्मानी दानदेनारनी विराधना बतावशे अने ते विराधनाथी जैनशासननी हीलना थाय, ते आ उद्देशामां बतावशे.

से भिक्खू वा २ से जं० असणं वा ४ खंधंसि वा थंभंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा हम्मियतलंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि उवनिक्खित्ते सिया तहप्पगारं मालोहडं असणं वा ४ अफासुयं नो० केवली बूया आयाणमेयं, अस्संजए भिक्खुपडियाए पीढं वा फलगं वा निस्सेणिं वा उदूहलं वा आहट्टु उस्सविय दुरूहिज्जा, सेताथ दुरुहमाणे पयलिज्ज वा पवडिज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा २ हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरुं वा उदरं वा सीसं अन्नयरं वा कायंसि इंदिजालं लूसिज्ज वा पाणाणि वा ४ अभिहणिज्ज वा वित्तासिज्ज वा लेसिज्ज वा संघसिज्ज वा संघट्टिज्ज वा परियाविज्ज वा किलमिज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामिज्ज वा, तं तहप्पगारं मालोहडं असणं वा ४ लाभे संते ना पडिगाहिज्जा, से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं० असणं वा ४ कुट्ठियाओ वा कोलेज्जाउ वा अस्संजए भिक्खुपडियाए उक्कुज्जिय अवउज्जिय ओहरिय आहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं असणं वा ४ लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ३७) ॥

ते भिक्षु गोचरीमां गयेलो जो आ प्रमाणे चारे प्रकारनो आहार जाणे, स्कंध (ते अर्धप्राकार-उंची भींत जेवो होय) लाकडो के पत्थरनो थंभो होय, तथा मांचडो बांधेलो होय अथवा शीका उपर होय, महेलमां, के हवेलीमां के कोइपण अंतरीक्ष (अधर)

स्थानमां आहार राखेल होय तो. तेवा उपरथी आहार लइने वहोरावे तो पण मालापत हृदोष लागतो जाणीने न लेवो, केवली
प्रभु तेमां आ प्रमाणे दोष बतावे छे, एटले त्यां उंचे वस्तु राखी होय ते लेवा गृहस्थ जाय तो हाथ पहोंचवा माटे साधु माटेज
मांची, पाटीयुं, नीसरणी, उंधी उखणी अथवा वीजुं कंइ पण अधर टेकवीने तेना उपर चडीने लेवा जाय तो चडतां पडी जाय,
अने खसीने पडतां हाथ, पग भांगतां अथवा इंद्रिय के शरीरमां लागी जाय, तेज प्रमाणे. पडतां बीजा जीवोने, प्राणीओने हणे,
त्रास पमाडे, अथवा धुळवडे ढांके, घसारो आपे, संघट्टन करे आ प्रमाणे थतां ते जीवोने परिताप करे, थकवे, एकस्थानथी बीजा
स्थानमां खसेडे, आवा दोषो जाणीने शीका के मेडा उपरथी लावीने आपे तो मळती वस्तु पण साधुए न लेवी

अथवा ते साधु आहार लेतां आ प्रमाणे जाणे, के माटीनी कोठीमांथी अथवा जमीनमां खोदेल अर्ध गोळाकार खाणमांथी
साधुने उदेशीने कायाने उंचीनीची करीने कुबडी थइने काढे, तथा खाणमां नीची नमीने अथवा तीरछी पडीने आहार लावीने
आपे, तो साधुए अधोमालाहुत (नीचे पडीने लीधेल) आहार गृहस्थ पासेथी मळतो होय तो पण लेवो नहि, हवे पृथ्वीकायने
आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा० से जं० असणं वा ४ मट्टियाउलित्तं तहप्पगारं असणं वा ४ लाभे सं०, केवली०, अस्संजए भि० मट्टिओ-
लित्तं असणं वा० उब्भिदमाणं पुढविकायं समारंभिज्जा तह तेउवाउवणस्सइतसकायं समारंभिज्जा पुणरवि उल्लिंपमाणे
पच्छाकम्मं करिज्जा, अह भिक्खूणं पुव्वो० जं तहप्पगारं मट्टिओलित्तं असणं वा लाभे०। से भिक्खू० से जं० असणं
वा ४ पुढविकायपइट्ठियं तहप्पगारं असणं वा० अफासुयं०। से भिक्खू० जं असणं वा ४ आउकायपइट्ठियं चेव, एवं

अगणिकायपइट्टियं लाभे० केवली०, अस्संज० भि० अगणिं उस्सक्किय निस्सक्किय ओहरिय आहट्टु दलइज्जा अह भिक्खूणं० जाव नो पडि० ॥ (सू० ३८)

ते भिक्षु गोचरीमां गयेलो आ प्रमाणे जाणे, के पिठरक (माटीना गोळा) विगेरेमां माटीथी प्रथम लींपीने चोडेल होय, तेमांथी काढीने चार प्रकारना आहारमांथी कांइपण आपे तो पश्चात्कर्मना दोषथी मळतो आहार पण न ले, प्र०—शामाटे ? उ० केवळी प्रभु तेने कर्म उपादान कहे छे, के ते गृहस्थ भिक्षुकनी निश्राए माटीथी लींपेलुं वासण होय, तेमांथी काढीने कांइपण आहार आपे, तो ते वासण खोलतां पृथ्वीकायनो आरंभ करे, तेज केवळी प्रभु कहे छे, तथा अग्नि वायुनो तेमज वनस्पति तथा त्रसकायनो पण आरंभ करे, अने साधुने आप्या पछी बाकी रहेल मालना रक्षण माटे ते वासणने पाछुं लींपे माटे साधुने पूर्वे कहेली आ प्रतिज्ञा होवाथी अने तेज हेतु तेज कारण होवाथी आ उपदेश छे के, तेवुं माटीथी लींपेलुं वासण उघडावीने मळतुं भोजन के वस्तु कंइपण लेवुं नहि.

वळी ते भिक्षुक गृहस्थना घरमां पेसतां वळी आवुं भोजन विगेरे जाणे, तो नले, एटले पृथ्वीकाय उपर स्थापेल आहारने जाणीने पृथ्वीकायना संघट्टन विगेरेना भयथी अप्रासुक जाणाने मळतुं होय तो पण नले, एज प्रमाणे पाणी उपर अग्निकायमां स्थापेल होय तो पोते ले नहि, कारण के केवळी तेमां आदान कहे छे, तेज बतावे छे, 'असंयत' गृहस्थ भिक्षु माटे अग्नि उपर स्थापेल वासणने आमतेम फेरवी आहार आपे तेथी ते जीवोने पीडा थाय माटे साधुओनी आ प्रतिज्ञा छे के तेवो आहार लेवो नहि.

से भिक्खू वा २ से जं० असणं वा ४ अच्चुसिणं अस्संए भि० सुप्पेण वा विहुणेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा साहाए

वा साहाभंगेण वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा फुमिज्ज वा वीइज्ज वा, से पुव्वामेव आलोइज्जा– आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! मा एतं तुमं असणं वा अच्चुसिणं सुप्पेण वा जाव फुमाहि वा वीयाहि वा अभिकंखसि मे दाउं, एमेव दलयाहि, से सेवं वयंतस्स परो सुप्पेण वा जाव वीइत्ता आहट्टु दलइज्जा तहप्पगारं असणं वा ४ अफासुयं वा नो पडी० ॥ (सू० ३९) ॥

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेठेलो जो आ प्रमाणे जाणे के आ घणो उनो भात विगेरे साधुने उद्देशीनेज गृहस्थ ठंडो करवा माटे सूपडाथी, वींजणाथी, मोरना पींछाना पंखाथी अथवा शाखाथी के शाखाना भंगवडे अथवा पींछाथी अथवा पींछाना समूहवडे, वस्त्रथी के वस्त्रना छेडाथी, हाथथी, मोढेथी अथवा तेवा कंइपण ओजारथी फुंकीने ठंडो करे, अथवा वस्त्रथी वींजे, आ प्रमाणे करवा पहेलां साधु लक्ष्य राखीने तेवुं गृहस्थ करे, ते पहेलां तेने नाम दइने बोले के हे भाइ ! हे बहेन ! आवुं तमे करीने मने आपवानी इच्छा धरावो छो, तो तेम फुंकया विनाज अमने आपो, आवुं साधु कहे तो पण गृहस्थ हठथी सूपडेथी के मुखना वायुवडे फुंकीने आपे तो तेने अनेषणीय (दोषित) आहार जाणीने लेवो नहि.

पिंडना अधिकारथीज एषणा दोषोने उद्देशीने कहे छे.

से भिक्खू वा २ से जं० असणं वा ४ वणस्सइकायपइट्ठियं तहप्पगारं असणं वा ४ वण० लाभे संते नो पडि० । एवं तसकाएवि ॥ (सू० ४०) ॥

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गयेलो एवुं जाणे, के वनस्पतिकायमां चारे प्रकारनो आहार छे, तो ते जाणीने ले नहि, ए प्रमाणे

त्रसकायनुं सूत्र पण जाणवुं, अहीं (वनस्पतिकायमां रहेलुं) आ सूत्र वडे निक्षिप्त नामनो एषणादोष लेनार आपनार वंनेनो भेगो बताव्यो, तेज प्रमाणे बीजा पण एषणादोष यथासंभव सूत्रोमां योजवा ते आ प्रमाणे छे.

संकीय मक्खिय निक्खित पिहिम साहरियदा यगुम्मीसे; अपरिणय लित्त छड्डिय, एसण दोसा दस हवंति ॥ १ ॥

(१) अधाकर्म विगेरेथी शंकित आहार विगेरे न लेवुं, (२) पाणी विगेरेथी मृक्षित [लींपायेल] होय, (३) पृथ्वीकाय विगेरेमां स्थापन करेलुं होय, (४) बीजोरा विगेरे फळथी ढांकेलुं होय (५) वासणमांथी तुष विगेरे न आपवा योग वस्तु बीजी सचित्त पृथ्वी विगेरे उपर नांखीने ते वासण विगेरेथी जे आपे, ते संहृत दोष छे. (६) बाल वृद्ध विगेरे दान देनार शुद्धि तथा शक्ति विनानो होय, (७) सचित्त विगेरे पदार्थथी मिश्रित वस्तु होय, (८) देवनी वास्तु बरोबर अचित्त न थइ होय, अथवा देनार लेनारना भावविनानी होय ते अपरिणत कहेवाय, (९) चरबी विगेरे निंदानीक पदार्थथी लिप्त होय (१०) छांटा पाडती वहोरावे. आ दस दोष एसणाना कह्या, ते टाळवा जोइए. हवे पीवाना आश्रयी कहे छे—

से भिक्खू वा २ से जं पुण पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा—उस्सेइमं वा १ संसेइमं वा २ चाउलोदगं वा ३ अन्नयरं वा तहप्पगारं पाणगजायं अहुणाधोयं अणंविलंअव्वुकंतं अपरिणयं अविद्धत्थं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा। अह पुण एवं जाणिज्जा चिराधोयं अंविलं वुकंतं परिणयं विद्धत्थं फासुयं पडिगाहिज्ज। से भिक्खू वा० से जंपुण पाणगजायं जाणिज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा ४ तुसोदगं वा ५ जवोदगं वा ६ आयामं वा ७ सोवीर वा ८ सुद्धवियडं वा ९ अन्नयरं वा तहप्पगारं वा पाणगजायं पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं पाणग-

जायं ? से सेवं वयतस्स परो वइज्जा–आउस्सं तो समाणा ! तुमं चेवेयं पाणगजायं पडिग्गहेण वा उस्सिंचिया णं उयत्तियाणं गिण्हाहि, तहप्पगारं पाणगजायं सयं वा गिण्हिज्जा परो वा से दिज्जा, फासुयं लाभे संते पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ४१)

ते साधु गृहस्थना घरमां पाणी माटे गयेल होय, त्यां एवु जाणे के आटोगुंदळवानुं आ पाणी छे, ते उस्सोइम छे, तथा तलने धोवानुं पाणी छे, ते संसेइम छे, अथवा अरणिका विगेरे धोवानुं पाणी छे, तेमां प्रथमनां बे तो प्रासुक छेज; पण त्रीजा चोथा नंवरना पाणी मिश्र छे, ते अमुक काळे परणित [फासु] थाय छे, ते चावल [चोखा] नुं धोवण छे, तेमां त्रण अनादेश छे, परपोटा थता होय, पाणीनां बिंदुओ वासणने लागेलां शोषाइ गयां होय, अथवा तंदुलरंधाइ गयां होय, पण तेनो खरो आदेश आ छे, के पाणी स्वच्छ थइ गयुं होय, [परपोटा बेसीने स्वच्छ थयुं होय तेज लेवाय]–अनाम्ल ते पोताना स्वादथी अचलित अव्युत्क्रांत अपरिणत अविध्वस्त अप्रासुक मालुम पडे ते साधुए लेवुं नहि, अने तेथी विपरित होय तो गृहण करवुं, फरी पाणीना अधिकारथीज विशेषे कहे छे.

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेठेलो आवुं पाणी जाणे, के [४] तलनुं धोवण कोइपण प्रकारे प्रासुक करेलुं पाणी, गृहस्थना घरमां छे, ए प्रमाणे [५–६] तुषथी, जवथी, अचित्त थयुं होय, [७] आचाम्ल [ओसामण] [८] आरनाल सोवीर [९] बरोबर उंनुं पाणी शुद्ध विकट अथवा तेवुं द्राक्षनुं धोवण विगेरे अचित्त पाणी जुए, तो गृहस्थने कहे, के हे भाइ ! हे बाइ ! जे कंइ आवुं अचित्त पाणी होय, ते मने आपो ! ते वखते गृहस्थ बोले, के हे साधु ! तमेज आ पाणी पोताना पातरा वडे के काचलीवडे के

कडायुं उंचकीने के वांकुवाळीने वासणमांथी लो, ते प्रमाणे कहे तो साधु पोते ग्रहण करे, अथवा गृहस्थ तेने आपे, तो प्रासुक पाणी साधुए लेवुं. वळी—

से भिक्खू वा० से जं पुण पाणगं जाणिज्जा—अणंतरहियाए पुढवीए जाव संताणए उद्धट्टु २ निक्खित्ते सिया, असंजए भिक्खूपडियाए उदउल्लेण वा ससिणिध्धेण वा सक्साएण वा मत्तेण वा सीओदेगेण वा संभोइत्ता आहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं पाणगजायं अफासुयं० एयं खलु समाग्गियं० ॥ (सू० ४२) ॥ पिण्डैपणायां सप्तमः २-१-१-७।

ते भिक्षु जो आवुं जाणे के ते अचित्त पाणी, सचित्त पृथ्वीकाय विगेरेमां आंतरा विना मुकेलुं छे, अथवा करोळीयाना जाळा विगेरेमां बीजा वासणमांथी लइ लइने तेमां वासण मुकेलुं छे, अथवा ते गृहस्थ भिक्षुने उद्देशीनेज काचा पाणीना गलतां टपकांवडे अथवा सचित्त पृथ्वी विगेरेना अवयवथी खरडायेलुं भाजन होय, अथवा ठंडा पाणीथी मिश्र करीने—भेगुं करीने आपे, तेवुं पाणी 'अनेषणीय' जाणीने लेवुं नहि, आ भिक्षुनी संपूर्ण साधुता छे.

सातमो उद्देशो समाप्त.

आठमो उद्देशो.

सातमो कहीने आठमो उद्देशो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां पाणीनो विचार बताव्यो, अहिं, पण तेज पाणी संबंधी विशेष कहे छे—

से भिक्खू वा २ से जं पुण पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा—अंबपाणग वा १० अंबाडगपाणगं वा ११ कविट्ठपाण० १२ माउलिंगपा० १३ मुद्दियापा० १४ दालिमपा० १५ खजूरपा० १६ नालियेरपा० १७ करीरपा० १८ कोलपा० १९ आमलपा० २० चिंचापा० २२ अन्नयरं वा तहप्पगारं पाणगजातं सअट्ठियं सकणुयं सबीयगं अस्संजए भिक्खूपडियाए छब्बेण वा दूसेण वा वालगेण वा आविलियाण परिवीलियाण परिसावियाण आहट्टु दलइज्जा तहप्पगारं पाणगजायं अफा० लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ४३) ॥

ते साधु गृहस्थना घरमां गयेल आवा प्रकारनुं पाणी जाणे, के केरीनुं तथा अंबाडानुं धोवण (१०–११) छे, तथा कोठ (१२) नुं धोवण छे, बीजोरुं (१३) मुद्रिका (द्राक्ष) नुं धोवण (१४) छे, दाडम (१५) नुं, खजुर (१६) नुं, नालियेर (१७) केर (१८) कोल (बोर) नुं (१९) आमणां (२०) चिंचा आंवली (२१) तथा तेवां बीजां बधां पाणी—एटले द्राक्ष, बोर, आंवली विगेरे कोइपण पाणीने ते क्षणेज चूरीने कराय छे, तथा अंबाडा विगेरेनुं पाणी बे त्रण दिवस साथे राखीने पलाळे आवुं पाणी होय अथवा तेवी जातनुं बीजुं होय, ते ठळियासाथे वर्त्ते, अथवा कणुक (छाल विगेरे अवयव) साथे होय, तथा बीज सहित वर्त्ते, ठळीयो तथा बीज आमणां विगेरेमां जुदापणुं प्रतीत छे, आवुं पाणी गृहस्थ साधुने उद्देशीने द्राक्ष विगेरे चुरीने अथवा वांसनी छालथी बनावेल छाबडी विगेरे पलाळीने अथवा गाय विगेरेनां छडाना पूंवाळना बनावेल चालणावडे अथवा सुगृहीपक्षीना माळा वडे. ठळियो विगेरे दूर करवा एकवार मसळीने के वारंवार चोळीने तथा परिस्रवण करीने—गाळीने साधु पासे लावीने आपे, आवुं पाणी उदगमदोषथी दुष्ट जाणीने मळतुं होय, तो पण ले नहि, उदगमदोषथी नीचे प्रमाणे छे,

आहाकम्मुद्देसोस्सिय पूतीकम्मे अ मीसजाए अ ॥ ठवाणा पाहुडियाएँ पाओअर कीय पामिच्चे ॥ १ ॥
परिट्टिए अभिहडे, उब्भिन्ने मालोहडे इअ अच्छेज्जे अणिसट्ठे, अज्झोअरए अ सोलसमे ॥ २ ॥

(१) साधुना माटे जे सचित्तनुं अचित्त करे, अथवा अचित्त रांधे ते आधाकर्म दोष छे (२) जे पोताना माटे तैयार रसोइ थइ होय ते लाडुना चूर्ण विगेरे गोळ विगेरेथी साधुने उद्देशीने वधारे संस्कारवाळुं बनावे, आ समान्यथी छे, (पण विशेषथी जाणवा इच्छनारे विशेष सूत्रथी जाणवुं (३) आधाकर्मना भागथी मिश्र करे ते पूतीकर्म छे, (४) साधु तथा गृहस्थने आश्रयी प्रथमथी आहार भेगो रंधाय ते मिश्र छे. (५) साधुने माटे खीर विगेरे जुदी काढी राखे ते स्थापना दोष छे, (६) घरमां लग्न विगेरेना अवसर आववानो होय ते साधुने आवेला जाणोने के आववाना जाणी तेमने ते मिष्टान्न विगेरे आपवा माटे आगळ पाछळ करे, ते प्राभृतिकादोष छे, (७) साधुने उद्देशीने झरुखा बारी विगेरे उघाडवी, अथवा अंधारामांथी लावीने अजवाळामां मुकवुं ते प्रादुष्करण छे, (८) द्रव्य विगेरे आपीने खरीद करे ते क्रीतदोष छे साधु माटे कोइनुं उछीकुं–उछीनुं ले ते 'पामिच्च' दोष छे (१०) कोदरा विगेरे आपीने पाडोशीना घरमांथी शालि विगेरेनाचोखा बदले लावे. ते परिवर्त्तितदोष छे, (११) घर विगेरेथी साधुना उपाश्रयमां लावीने आपे ते अभ्याहृतदोष छे, (१२) छाण विगेरेथी लींपेलुं वासण खोलीने आपे, ते उद्भिन्न दोष छे, (१३) माळा उपर विगेरेथी–निसरणी वडे लावीने आपे ते मालहृत दोष छे, (१४) नोकर विगेरेथी छीनवी लइने आपे ते आ छेद्य दोष छे, (१५) समुदाय आश्रयी रंधायेलुं, बधानी रजा लीधा सिवाय एकलो आपे ते अनिसृष्ट दोष छे, (१६) पोताना माटे रंधाता अन्नमां पाछळथी तांदुल विगेरे साधुने आवता सांभळीने रांधतां उमेरे ते 'अध्यवपूरक' दोष छे, आवा कोइपण दोषथी दोषित आहार

होय तो साधुए ते आहार लेवो नहि. पाछुं पण भोजन पाणी विगेरे आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा० २ आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावईगिहेसु वा परियावसहेसु वा अन्नगंधाणि वा पाणगंधाणि वा सुरभिगंधाणि वा आघाय २ से तत्थ आसायपडियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झो ववन्ने अहो गंधो २ नो गंधमाघाइज्जा (सू० ४४)

ते साधु आगंतार ते शहेरनी बहार मुसाफरो आवीने उतरे तेवी धर्मशाळा के मुशाफरखानामां अथवा आराम घरो [बगीचानी अंदरना मकान] मां अथवा गृहस्थना घरोमां पूजाना घरोमां अथवा भिक्षुकना मठमां ज्यां अन्न–पाणीनी सुगंधीना गंधोने सुंघी सुंघीने तेना स्वादनी प्रतिज्ञाथी मूर्छित गृद्ध थेलो बनेलो अहाहा ! शुं सुगंध छे ! एवो प्रेमी बनीने ते गंधने सुंघे नहि. फरी पण आहारने आश्रयी कहे छे—

से भिक्खू वा २ से जं० सालुयं वा विरालियं वा सासवनालियं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थपरिणयं अफासु० । से भिक्खू वा० से जं पुण० पिप्पलिं वा पिप्पलचुण्णं वा मिरियं वा मिरियचुण्णं वा सिंगबेरं वा सिंगबेरचुण्णं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं वा आमगं वा असत्थ प० । से भिक्खू वा० से जं पुण पलंबजायं जाणिज्जा, तंजहा–अंबपलंबं वा अंबाडगपलंबं वा तालप० झिज्झिरिप० सुरहि० सल्लरप० अन्नयरं तहप्पगारं पलंबजायं आमगं असत्थप० । से भिक्खू ५ से जं पुण पवालजायं जाणिज्जा, तंजहा–आसोट्ठपवालं वा निग्गोहप० पिलुंखुप० निपूरप० सल्लइप० अन्नयरं वा तहप्पगारं पवालजायं आमगं असत्थपरिणयं० । से भि० से जं पुण० सरडुयजायं जाणिज्जा, तंजहा–सरडुयं वा

कविट्ठसर० दाडिमसर० बिल्लस० अन्नयरं वा तहप्पगारं सरडुयजायं आमं असत्थ परिणयं० । से भिक्खू वा० से जं पु० तंजहा–उंबरमंथुं वा नग्गोहमं० पिलुंखुम० आसात्थमं० अन्नमरं वा तहप्पगारं वा मंथुजायं आमयं दुरुक्कं साणुवीयं अफासुयं० ॥ (सू० ४५)

ते भिक्षु सालुक (पाणीमां थनारुं कंद) विरालिय (स्थळमां थनारुं कंद) सरसवनी कंदलीओ तेवुं कंइपण काचुं कंद कांदळ विगेरे शस्त्रोथी परिणत थयेलुं नहोय, तेमज ते भिक्षु पीपर, पीपरनुं चुरण, मरचां मरचांनुं चुरण सींगोडा सींगोडानुं चुरण अथवा तेवुं कंइपण काचुं शस्त्र फरस्सीया विनानुं अप्रासुक होय ते, आंबाना फळ (केरीओ) अंबाडानां फळ, ताडनां फळ झिज्झि ते वल्लीपलास सुरभि ते शतद्रु छे सल्लर छे. आ प्रमाणे जे कंइ काचुं फळ होय, अने ते शस्त्रथी परिणत न होय तो सचित्त जाणीने लेवुं नहि.

वळी ते भिक्षु कोइपण जातिनुं प्रवाळ ते पीपळानुं; वडनुं पिलुंखु (पीपरी) निपुर (नंदीवृक्ष) शल्लकी अथवा तेवुं बीजुं कांइपण प्रवाळ होय तो, काचुं सचित्त होय तो लेवुं नहि, तेज प्रमाणे ते साधु कोइपण जातिनु 'सरडुअ' ते ठळीयो बंधाया विनानुं फळ होय, ते कोठ, दाडम, बिल्लुं अथवा तेवु कोइपण जातिनुं फळ होय ते. शस्त्रथी परिणत नहोय ते साधुए लेवुं नहि, तेज प्रमाणे साधु उंबरनुं मंथुं (चुरण) होय, वडनुं, पिलंखु, पीपळो अथवा तेवुं बीजानु चुरण होय तो, शस्त्रथी परिणत थया विनानुं होय तो लेवुं नहि, आमंथुं थोडुं पीसेलुं होय ते दुरुक कहेवाय छे, साणुवीय ते तेनां बीज वधां कायम रह्यां होय, तो ते काचुं जाणवुं. ते न कल्पे.

से भिक्खू वा० से जं पुण० आमडागं वा पूइपिन्नागं वा महुं वा मज्जं वा सप्पिं वा खालं वा पुराणगं वा इत्थ पाण अणुप्प-
सूयाइं जायाइं संवुड्ढाइं अव्वुक्कताइं अपरिणाया इत्थ पाणा अविद्धन्था नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ४६) ॥

वळी ते साधु एम जाणे के काचां पान ते अरणीक तंदुलीय (तांदळजा) विगेरेनां पांदळां अर्ध काचां अथवा तदन काचां छे, अथवा तेनो खल कर्यो छे, मध मांस जाणीतां छे, तथा घी तथा खोल दारुना नीचेनो कचरो आ बधां घणा वरसनां जुनां होय तो लेवां नहि, कारणके तेमां जीवो उत्पन्न थइ जाय छे, अने तेथी ते अचित्त होतां नथी, सूतमां संछद्दा विगेरे एक अर्थवाळा छतां जुदा जुदा देशना शिष्योने समजाववा सूत्रकारे लीधा छे अथवा तेमां किंचित् भेद छे. (आमां मध अने दारु अभक्ष्य छतां शास्त्र-कारे चोपडवा माटे कारण विशेष छूट एटला माटे आपी छे के हाथ पग उतरी गयो होय तो तेनो उपयोग करवो पडे, ते संबंधे साधुने महान् प्रायश्चित छे, माटे वर्त्तमानकाळमां पण बने त्यां सुधी चोळवा चोपडवामां तेवी चीज न वापरवी. पण बीजो उपायज न होय तो कदाच वापरवी पडे तो पण तेनुं छेदसूत्र प्रमाणे महान प्रायश्चित लेवुं के दुर्गति न थाय.)

से भिक्खू वा से जं० उच्छुमेरगं वा अंकरेलुगं वा कसेरुगं वा सिंघाडगं वा पूइआलुगं वा अन्नयरं वा० । सेभिक्खू वा० से जं० उपलं वा उप्पलनालं वा भिसं वा भिस- मुणालं वा पुक्खलं वा पुक्खलविभंगं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं० ॥ (सू० ४७) ॥

उच्छुमेरग ते छोलेली शेरडीना टुकडा, अंके करेलुं कसेरुग सींगाडां पूइआलूग अथवा तेवुं बीजुं कंइ काचुं शस्त्रथी हणाया विनानुं होय, तो साधुए लेवुं नहि. तेज प्रमाणे लीलुं कमळ, तेनी नाल, अथवा पदमनुं कंद तेनी नाळ, पोकखल, पदमना

केसरा अथवा तेनुं कंद अथवा तेवुं कोइपण कंद शस्त्रथी हणायाविनानुं काचुं होय तो कल्पे नहि.

से भिक्खू वा २ से जं पु० अग्गवीयाणि वा मूलवीयाणि वा खंधवीयाणि वा पोरवी० अग्गजायाणि वा मूलजा० खंधजा० पोरजा० नन्नत्थ तक्कलिमत्थए ण वा तक्कलिसीसे ण वा नालियेरमत्थएण वा खज्जूरिमत्थएण वा तालम० अन्नयरं वा तह० । से भिक्खू वा २ से जं० उच्छुं वा काणगं वा अंगारियं वा संमिस्सं विगदूमियं वित (त्त) ग्गगं वा कंदलीऊसुगं अन्नयरं वा तहप्पगा० । से भिक्खू वा० से जं० लसुणं लसुणपत्तं वा ल० नालं वा लसुणकंदं वा ल० चोयगं अन्नयरं वा० । से भिक्खू वा० से जं० अच्छियं वा कुंभिपक्कं तिंदुगं वा वेलुगं वा कासवनालियं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थप० । से भिक्खू वा० से जं० कणं वा कणकुंडगं वा कणपूयलिंय वा चाउलं वा चाउलपिट्ठं वा तिलं वा तिलपिट्ठं वा तिलपप्पगडगं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थप० लाभे संते नो प०, एवं खलु तस्स भिक्खुस्स सामग्गियं ॥ (सू० ४८) २-१-१-८ ॥ पिण्डैषणायामष्टम उद्देशकः ॥

ते भिक्षु आवुं जाणे, के जवा कुसुम विगेरे अग्रबीज छे, जाइ विगेरेनां मूळबीज छे, सल्लकी विगेरे स्कंधबीज छे, अथवा इक्षु (शेरडी) विगेरेनां पर्वबीज छे, तेज प्रमाणे अग्रजात, मूळजात, स्कंधजात, पर्वजात ते तेमांथीज जन्मे छे, पण बीजेथी नहि., तक्ली (कंदली) नुं मस्तक (वचलो गर्भ) अने कंदलीशीर्ष ते तेनो स्तवक ए प्रमाणे नाळियेर विगेरेमां पण समजवुं, अथवा कंदली विगेरेना मस्तक समान जे कंइ छेदवाथी तुर्तज ध्वंस पामे छे, तेवुं बीजुं पण काचुं अशस्त्र परिणत होय ते लेवुं नहि, तथा ते भिक्षु एवुं जाणे के शेरडी, रोग विगेरेथी छिद्रवाळी थाय अंगाररहित (रंगे बगडी गयेल) होय, तथा छाल छेदाइ गयेली होय,

विगदूमिय, ते वरगडे अथवा शियालिए थोडी खाधेल होय, आवा छिद्र विगेरेथी ते शेरडी विगेरे अचित्त थती नथी तथा वेत्राग्र तथा 'कंदली ऊस्सुयं' ते कंदलिनो मध्य भाग एवुं बीजुं पण काचुं अपरिणत होय तो लेवुं नहि, आ प्रमाणे लसण संबंधी पण जाणवुं के अपरणित होय ते न लेवुं, आमां 'चोयग' नो अर्थ कोशिकाना आकारे लसणने बहार छाल होय, छे. ते ज्यांसुधी लीली होय त्यांसुधी सचित्त जाणवी, अच्छियं ते कोइ वृक्षनुं फळ छे, तथा टींबरु, बीलुं कासवनालियं ते श्रीपर्णीनुं फळ छे, आ काचां फळो-ने एकदम पकववा खाडामां नाखीने पकवे ते पाकेलां पण सचित्त जाणवां, ते साधुने न कल्पे. (आमं जे पकवे ते कुंभीपाक कहेवाय छे.)

तथा शालि विगेरेना कण ते कणिका छे, तेमां कोइ नाभि (सचित्तयोनि) होय, कणिककुंड ते कणकीमिश्रित कुकस। तथा कणपूयलिय ते कणकीथी मिश्रित पूपलिक कहेवाय छे. आमां पण थोडुंक पकवेल होय तो नाभि (सचित्त योनि) संभवे छे. (वाकी तेमां तल, तलनो पीठ, तलनो पापड विगेरेमां वखते सचित्त योनि होय माटे काचुं लेवुं नहि, आवी चीज मळे तोपण लेवी नहि,) आज साधुनी संपूर्णता साधुता छे.

आठमो उद्देशो समाप्त थयो.

नवमो उद्देशो.

आठमो कहीने नवमो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां अनेषणीय पिंडनो त्याग बताव्यो, अहीं पण बीजे प्रकारे तेज बतावे छे.

इह खलु पाईणं वा ४ संतेगइया सड्ढा भवंति, गाहावई वा जाव कम्मकरी वा, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइजे इमे भवंति समणा भगवंता सीलवंतो वयवंतो गुणवंतो संजया संवुडा बंभयारी उवरया मेहुणाओ धम्माओ, नो खलु एएसिं कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा ४ भुत्तए वा पायए वा, से जं पुण इमं अम्हं अप्पणो अट्ठाए निट्ठियं तं असणं ४ सव्वमेयं समणाणं निसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो अट्ठाए असणं वा ४ चेइस्सामो, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म तहप्पगारं असणं वा अफासुयं० ॥ (सू० ४९)

'इह' शब्द वाक्यना उपन्यास माटे छे, अथवा प्रज्ञापकना क्षेत्र आश्रयी छे. खलु शब्द वाक्यनो शोभा माटे छे.) प्रज्ञापकनी अपेक्षाए पूर्व विगेरे दिशाओ छे, अर्थात गुरु–शिष्यने कहे छे, के–पुरुषोमां केटलाक एवा श्रद्धालुओ श्रावक अथवा प्रकृतिभद्रक अन्य पुरुषो होय छे, ते गृहस्थ अथवा कर्म करी (काम करनारा) होय छे, तेमने मालीक कहे के, आ गाममां आ आवेला साधु भगवंतो १८००० भेदे शीलव्रत पाळनारा छे, तथा पांच महाव्रत तथा छठुं रात्रिभोजन विरमणव्रत धारनारा, तथा पिंडविशुद्धि विगेरे उत्तरगुणयुक्त इंद्रिय मनने दमन करवाथी संयत छे, तथा आस्रवद्वार (पापस्थान) रोकवाथी संवृत छे, नवविध ब्रह्मचर्य गुप्ति पाळवाथी ब्रह्मचारी छे, मैथुन (कुसंग) थी दूर छे, १८ प्रकारनुं ब्रह्मचर्य पाळनारा छे, आवा साधुओने आधाकर्मी विगेरे

दोषित भोजन विगेरे कल्पतुं नथी, माटे आपणे आपणुं रांधेलुं बधुं तेमने वोहरावी दइए, आपणा माटे पछवाडे रांधी लइशुं. तेथी तेओ आवुं करे, तेम साधु पोते साक्षात् सांभळे अथवा बीजा पासे सांभळीने जाणीने तेवुं भोजन विगेरे अनेषणीय जाणीने मळवा छतां पोते ले नहि.

से भिक्खू वा० वसमाणे वा गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे से जं० गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा रायहाणिंसि वा संतेगइस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया वा पच्छासंथुया वा परिवसंति, तंजहा–गाहावइ वा जाव कम्म० तहप्पगाराइं कुलाइं नो पुव्वामेव भत्ताए वा निक्खमिज्ज वा पविसेज्ज वा २, केवली बूया–आयाणमेयं, पुरा पेहाए तस्स परो अट्ठाए असणं वा ४ उकरिज्ज वा उवक्खडिज्ज वा, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा ४ जं नो तहप्पगाराइं कुलाइं पुव्वामेव भत्ताए वा पाणाए वा पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज २, से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा वा २ अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, से तत्थ कालेणं अणुपविसिज्जा २ तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं एसित्ता आहारं आहारिज्जा सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आहाकम्मियं असणं वा उवकरीज्ज वा उवक्खडिज्जा वा तं चेगइओ तुसिणीओ उवेहेज्जा, आहडमेव पच्चाइक्खिस्सामि, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा, से पुव्वामेव आलोइज्जा आउसोत्ति वा भइणित्ति वा! नो खलु मे कप्पइ आहाकम्मियं असणं वा ४ भुत्तए वा पायए वा, मा उवकरेहि मा उवक्खडेहि, से सेवं वयंतस्स परो आहाकम्मियं असणं वा ४ उवक्खडावित्ता आहुट्टु दलइज्जा तहप्पगारं असणं वा अफासुयं० ॥

ते भिक्षु आवुं जाणे के गामथी लइने राजधानी सुधीनी आ स्थानोमां अमुक साधुना पूर्वनां सगां ते काका विगेरे छे अने पछवाडेथी थएला सगां सासरीयां विगेरे छे, ते त्यां घरवास करीने रहेलां छे, तेमां गृहस्थथी लइने काम करनार नोकर बाइ सुधां छे, तेवां कुळो जे सगां–संबंधीना छे तेमां न जवुं, न आववुं, सुधर्मास्वामी कहे छे के. तेवुं केवली प्रभु कहे छे, के तेमां अशुभकर्म बंधाय छे,

प्र०–शामाटे दोष छे ? उ०–ते घरमां साधुने माटे प्रथमथी विचार करी राखे, एटले प्रथमथी गृहस्थ ते साधु माटे उपकरण तैयार करावी राखे, तथा रसोइ विगेरे रंधावी तैयार करावे, तेथी साधुओ माटे आ प्रतिज्ञा विगेरे प्रथमथी कहेल छे, केतेवां सगां संबंधीनां कुलोमां भिक्षाकाळथी पहेलां जवुं आववुं नहि, त्यारे शुं करवुं ? ते कहे छे, ते आत्मार्थी साधुए ते गाममां पोतानुं कुळ जाणीने सगां न जाणे तेवी रीते पोते जाय अने त्यां घळवाळां न आवे, न देखे त्यां एकांतमां रहे, अने गोचरीनां वखते जुदां जुदां कुळमांथी एषणीय आहार बधेथी एटले सगां के बीजांनो भेद राख्या विना वेषमात्रथी मेळवे, एटले उत्पादन दोष विगेरे लागवा न दे. ते उत्पादन दोषो नीचे मुजब छे.

धाई दूइ निमित्ते, आजीव वणीमगे तिगिच्छा य । कोहे माणे माया, लोभे य हवन्ति दस एए ॥ १ ॥
पुव्विंपच्छासंथव–विज्जा मंते अचुण्णु जोगे य । उप्पायणाय दोसा सोलसमे मूलकम्मे य ॥ २ ॥

गोचरी माटे गृहस्थनां छोकरां रमाडवा विगेरेनुं कृत्य करे, ते (१) धात्रीपिंड छे, (२) दूतीपिंड गोचरी माटे गृहस्थनो संदेशो दूतनी माफक लइ जाय (३) अंगुठो तथा प्रश्न रेखा विगेरेनुं फळ बतावी आहार ले ते निमित्तपिंड छे. (४) आजीवपिंड ते पोतानी

पूर्वनी उत्तमजाति विगेरे बतावी पिंड ले ते, (५) वणीमगपिंड ते गृहस्थ जेनो धर्म पाळतो होय तेनी प्रशंसा करी गोचरी ले, (६) चिकित्सापिंड ते, गृहस्थने नानी मोटी दवा बतावी गोचरी ले ते, (७) क्रोधथी, (८) अहंकारथी, (९) कपट करीने, (१०) लोभथी वेष विगेरे बदलीने गोचरी ले, (११) पूर्व पश्चात् संस्तवपिंड, ते गृहस्थ दान आपे ते पहेलां तेना संबंधीनी प्रशंसा करे के तमे अवा कुळमां जन्म्याछो, आवा कुळमां परण्याछो—इत्यादि बोलीने गोचरी ले, (१२) विद्यापिंड, ते विद्या बतावी छोकरां भणावीने पिंड ले, (१३) मंत्रपिंड, मंत्रनो जाप बतावीने गोचरी ले (१४) चुर्णपिंड, वशीकरण विगेरे माटे द्रव्य (सुगंधी) चुर्ण मंत्रीने आपीने गोचरी ले, (१५) योगपिंड—ते अंजन विगेरे आपीने गोचरी ले, (१६) जे अनुष्ठानथी गर्भपात विगेरे थाय तेवुं करीने गोचरी ले, आ सोळे दोषो साधुथी उत्पन्न थाय छे माटे उत्पादन कहेवाय छे. (ते न लगाडवा जोइए) ग्रास एषणाना दोषो नीचे मुजब छे. १ संजोअणा २ पमाणे ३ इंगाले ४ धूम कारणे चेव

(१) आहारना लोलुपपणाथी दहिं, गोळ, (साकर) मेळवीने शीखंड बनावीने खाय, ते संयोजना दोष छे, बत्रीश कोळीयाथी वधारे प्रमाणमां आहार खाय तो प्रमाण अतिरिक्त (वधारे) दोष कहेवाय, (३) सारी गोचरी राग करीने खाय तो चारित्रने अंगारा माफक बळवाथी अंगार दोष तथा (४) अंत प्रांत आहार मळतां आहार तथा आहार आपनारनी निंदा करतो खाय तो चारित्रने काळुं करवाथी धुम्र दोष छे, (५) वेदना विगेरे कारण विना आहार करे तो कारण अभाव दोष छे.

आ प्रमाणे साधुना वेषमात्रथी प्राप्त करेलु ग्राष एषणा विगेरे दोष रहित आहार लेइने वापरवो, कदाच एम थाय, के गृहस्थ गोचरीना समये साधु जाय तो पण आधाकर्मी अशन विगेरे बनावे, ते वखते साधु उपेक्षा करे, शामाटे ? के ते लेतांज हुं

पच्चखाण करीश, अने हुं ते नहीं लउं एवुं धारे अने स्वादथी पछी कपट करे, अने छे, पण आवुं प्रथमज न करवुं, केवी रीते करवुं ? ते कहे छे, प्रथम गोचरी लेतां उपयोग राखे, अने तेवुं जाणे तो कहे, के हे शेठ ! हे वाइ ! अमने अमारा माटे बनावेलो आहार विगेरे खावापीवाने (आधाकर्मी) कल्पतो नथी ! माटे तेने माटे तमारे यत्न न करवो ! आवुं कहेवा छतां पण गृहस्थ आधाकर्मी आहार करे तो मळे छतां पण लेवो नहि.

से भिक्खू वा से जं० मंसं वा मच्छं वा भज्जिज्जमाणं पेहाए तिल्लपुयं वा आएसाए उवक्खडिज्जमाणं पेहाए नो खद्धं २ उवसंकमित्तु ओभासिज्जा, नन्नत्थ गिलाणणीसाए ॥ (सू० ५१)

ते साधु जो आवुं जाणे के मांस अथवा माछलां अथवा तेलना पूडाओ ते गृहस्थना घरमां मेमान आववाना छे, तेथी तेवो आहार वनतो त्यां जुए, तो जीभनी लालचथी दोडतो दोडतो शीघ्र न जाय अथवा त्यां जइने याचना करे नहि, पण पूर्वे बताव्या प्रमाणे त्यां दवा विगेरे कारणसर मांदा माटे जवुं पडे तोपण संभाळथी जाय.

से भिक्खू वा० अन्नयरं भोयणजायं पडिगाहित्ता सुब्भि सुब्भि भुच्चा दुब्भि २ परिट्ठवेइ, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा । सुब्भि वा दुब्भि वा सव्वं भुंजिज्जा नो किंचिवि परिट्ठविज्जा, ॥ (सू० ५२)

ते भिक्षु कोइपण जातनुं भोजन लइने सारुं सारुं खाइ जाय, खराब खराब त्यजी दे, ते कपट छे, माटे तेवुं कृत्य साधुए न करवुं पण सारुं माठुं जेवुं आवे तेवुं संतोषथी समभावे खाइ लेवुं पण परठववुं नहि.

से भिक्खू वा २ अन्नयरं पाणगजायं पडिगाहित्ता पुप्फं आविइत्ता कसायं २ परिट्ठवेइ, माइट्ठाणं संफासे, नोएवं करिज्जा

। पुप्फं पुप्फेइ वा कसायं कसाइ वा सव्वमेयं भुंजिज्जा, नो किंचिवि परि० ॥ (सू० ५३)

आ प्रमाणे पाणीनुं पण समजवुं, सारा रंगनुं सारी गंधनुं होय तो पुष्प कहेवाय अने तेथी विपरीत ते कषाय; एटले सुगंधी पीणुं पीए, अने बीजुं फेंकी दे, तेवुं कपट न करवुं. कारण के आहारना गृद्धपणाथी सूत्रार्थनी हानि थाय अने कर्मबंध थाय—

से भिक्खू वा० बहुपरियावन्नं भोयणजायं पडिगाहित्ता बहवे साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया, तेसिं अणालोइया अणामंते परिट्ठवेइ, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करेज्जा, से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा, २ से पुव्वोमेव आलोइज्जा—आउसंतो समाणा ! इमे मे असणे वा पाणे वा ४ बहुपरियावन्ने तं भुंजह णं, से सेवं वयंतं परो वइज्जा—आउसंतो समाणा ! आहारमेयं असणं वा ४ जावइयं २ सरइ तावइयं २ भुक्खामो वा पाहामो वा सव्वमेयं परिसडइ सव्वमेयं भुक्खामो वा पाहामो वा ॥ (सू० ५४)

ते साधु कोइ वखत घणुं भोजन विगेरे आचार्य तथा मांदा तथा परोणा विगेरे माटे आणेलु बधाने आपतां घणुं वधी जवाथी न खवाय, तो पोताना साधर्मिक गोचरीना वहेवारवाळा संविज्ञ साधुओ जोडे होय, अथवा घणे दूर न होय, तेवा साधुने पूछ्या विना फक्त जवाना प्रमादथी परठवीदे, तो साधुपणाने दोष लागे, माटे शुं करवु ? ते कहे छे, ते वधेलो आहार लइने ते साधु बीजा साधुओ पासे जइने बतावे अने कहे, के हे श्रमण ! आ मारे वधी गयुं छे, ते हुं खाइ शकतो नथी, जेथी तमे किंचित् खाओ, त्यारे तेओ कहे, के अमाराथी बने तेटलुं खाइशुं, देखीशुं, अथवा बधुं खाइशु, देखीशुं.

से भिक्खू वा २ से जं० असणं वा ४ परं समुद्दिस्स बहिया नीहडं जं परेहिं असमणुन्नायं अणिसिट्ठं अफा० जाव नो

पडिगाहिज्जा जं परेहिं समणुण्णायं सम्मं णिसिट्ठं फासुयं जाव पडिगाहिज्जा, एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं (सू० ५५) ॥ २–१–१–९ ॥ पिण्डैषणायां नवम उद्देशकः ।

ते साधु आवो आहार जाणे के, चार भट विगेरेने उद्देशीने घरमांथी काढेल छे, पण ते आहारने चार भट विगेरेए स्वीकार्यो नथी तो ते वहु दोषवाळो जाणीने लेवो नहि, पण जो ते आहार ते धणीए स्वीकारी पोतानो कर्यो होय, अने ते आपे तो लेवो, आ साधुनी सर्व साधुता छे.

नवमो उद्देशो समाप्त.

दशमो उद्देशो.

नवमो कह्यो, हवे दशमो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, नवममां पिंड ग्रहणविधि कह्यो, अहींया साधारण विगेरे पिंड मेळवीने वसतिमां गयेल साधुए शुं करवुं, ते कहे छे.

से एगइओ साहरणं वा पिंडवायं पडिगाहित्ता ते साहम्मिए अणापुच्छित्ता जस्स जस्स इच्छइ तस्स तस्स खद्धं खद्धं दलइ, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा । से तमायाय तत्थ गच्छिज्जा २ एवं वइज्जा–आउसंतो समाणा ! संति मम पुरेसंथुया वा पच्छा० तंजहा–आयरिए वा १ उवज्झाए वा २ पवित्तीवा ३ थेरे वा ४ गणी वा ५ गणहरे वा ६ गणावच्छेइए वा ७ अवियाइं एएसिं खद्धं खद्धं दाहामि, सेणेवं वयंतं परो वइज्जा–कामं खलु आउसो । अहापज्जत्तं निसि-

राहि, जावइयं २ परो वदइ तावइयं २ निसिरिज्जा सव्वमेवं परो वयइ सव्वमेयं निसिरिज्जा ॥ (सू० ५६)

ते भिक्षुने वधा साधुओ माटे सामान्य आहार आपेल होय, ते लइने ते बधा साधुओने पूछया विना जेने जे रुचे, तेवुं पोतानी बुद्धिथी शीघ्र शीघ्र आपे तो दोष लागे, माटे तेवुं न करवुं, असाधारण पिंड मळतां पण जे करवुं ते कहे छे.

ते साधु वेषमात्रथी मेळवेलो पिंड मेळवीने आचार्य विगेरे पासे जाय, अने आ प्रमाणे कहे, हे आयुष्मन्! हे श्रमण में अहीं जेनी पासे दीक्षा लीधी छे, तेना सगां छे, तथा जेनी पासे सिद्धांत भण्यो, तेनां संबंधीओ अन्यत्र रह्या छे, तेमनां नाम बतावे छे, आचार्य अनुयोग धर (१) उपाध्यायअध्यापक (२) वेयावच्च विगेरेमां यथायोग साधुओने प्रवर्त्तावे ते प्रवर्त्तक (३) छे. संयम विगेरेमां सीदाता साधुओने स्थिर करवाथी स्थविर (४) छे, गच्छन अधिप ते गणी (५) छे, आचार्य जेवो साधु गुरुनी आज्ञाथी साधुना समुदायने लइने जुदो विचरे ते गणधर (६) छे, गणनो अवच्छेदक ते गच्छना निर्वाहनी चिंता करनार (७) छे, आ प्रमाणे आवा साधुओने उद्देशीने बोले, के हुं तेमने तमारी आज्ञाथी शीघ्र शीघ्र आपुं, आ प्रमाणे साधुनी विज्ञप्तिथी मोटा साधु तेने आज्ञा आपेथी जेने जोइए तेटलुं दरेकने आपे, अथवा बधानी आज्ञा आपे तो बधुं आपे, (आ सूत्रमां पोताना सगां आश्रयी छे, अने टीकामां आचार्यदिना सगांने आश्रयी छे, तेथी रहस्यमां भेद पडतो नथी.)

से एगइओ मणुन्नं भोयणजायं पडिगाहित्ता पंतेण भोयणेण पलिच्छाएइ मा मेयं दाइयं संतं दट्ठूणं सयमाइए आयरिए वा जाव गणावच्छेए वा, नो खलु मे कस्सइ किंचि दायव्वं सिया, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा। से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा २ पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे पडिग्गहं कट्टु इमं खलुत्ति आलोइज्जा, नो किंचिवि णिगूहिज्जा। से एगइओ अन्न-

यरं भोयणजायं पडिगाहित्ता भद्दयं भुच्चा विवन्नं विरसमाहरइ, माइ० नो एवं० (सू० ५७)

ते साधु कोइ जग्याए गोचरी गयो होय, त्यां सारुं मिष्टान्न विगेरे भोजन मळ्युं होय, ते लेइने तेना उपर तुच्छ लुखुं भोजन विगेरे ढांकी दे, के मारुं आ सारुं भोजन आचार्य विगेरे देखशे तो लेइ लेशे, अने मारे तो आ थोडुं सारुं भोजन कोइने आपवुं नथी, एम धारी छुपावे तो कपट कहेवाय, माटे तेवुं न करवुं, त्यारे शुं करवुं ? ते कहे छे.

ते वधो आहार लइने छुपाव्या विना सारो माठो बतावी देवो, हवे गोचरी जतां कपट स्थान न करवानुं बतावे छे, के रस्तामां बीजे गाम गोचरी जतां सारुं सारुं भोजन मळे, तो त्यां खाइ जइने नवळुं नवळुं त्यां लइ जवुं ए कपट स्थान छे, ते न करवुं, वळी—

से भिक्खू वा० से जं० अंतरुच्छियं वा उच्छु गंडियं वा उच्छु चोयगं वा उच्छुमेरगं वा उच्छु सालगं वा उच्छुडालगं वा सिंबलिं वा सिंबलथालगं वा अस्सिं खलु पडिग्गाहियंसि अप्पे भोयणजाए बहुउज्झियधम्मिए तहप्पगारं अंतरुच्छुयं वा० अफा० ॥ से भिक्खू वा २ से जं० बहुअट्ठियं वा मंसं वा मच्छं वा बहुकंटयं अस्सिं खलु० तहप्पगारं बहुअट्ठियं वा मंसं० लाभे संतो० । से भिक्खू वा० सिया णं परो बहुट्ठिएणं मंसेण वा मच्छेण वा उवनिमंतिज्जा—आउसंतो समाणा ! अभिकंखसि बहुअट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए ? एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसीत्ति वा २ नो खलु मे कप्पइ बहु० पडिगा०, अभिकंखसि मे दाउं जावइयं तावइयं पुग्गलं दलयाहि, मा य अट्ठियाइं, से सेवं वयंतस्स परो अभिहट्टु अंतो पडिग्गहगंसि बहु० परिभाइत्ता निहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहं परहत्थंसि वा परपायंसि वा अफा० नो० । से आहच्च पडिगाहिए सिया तं नोहित्ति वइज्जा नो अणिहित्ति वइज्जा, से तमायाय एगं-

तमवक्कमिज्जा २ अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे जाव संताणए मंसगं मच्छगं भुच्चा अट्ठियाइं कंटए गहाय से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा, २ अहे झामथंडिलंसि वा जाव पमज्जिय पमज्जिय परट्ठविज्जा ॥ (सू० ५८)

ते गोचरी गयेलो साधु आवा प्रकारनो आहार जाणे के शेरडीना गांठोना वचला टुकडा, अथवा गांठोवाळा टुकडा अथवा पीलेला शेरडीना छोदिकां (छोतरा) मेरुक (त्यग्र) शेरडीना सालग ते दीर्घ शाखा (सांठा) डालग ते एक टुकडो सिंवली मग चोळा विगेरेनी अचित्त थएली सींग (फळी) 'सिंवली थालग' वालपापडीनी थाळी अथवा फलीओ रांधेली होय, आवी वस्तु जो साधुए खावा माटे लीधी होय तो शेरडी विगेरेना कुचा घणा नीकळे, खावानुं थोडुं, अने कुचामां कीडीओ विगेरे संख्याबंध जीवो बुरा हाले मरे, माटे अप्रासुक होय तो पण न लेवी, अने प्रासुक होय तो पण न लेवा,

तेज प्रमाणे कोइ जग्याए ठळीया वाळां फळ ते फणस विगेरे अने कांटावाळां ते अननास विगेरे फळ पाकेलां टुकडा कर्या होय, अने कोइ गृहस्थ ते साधुने आपे तो पण साधुए लेवा नहि. हवे कोइ गृहस्थ घणो भक्तिमान होय अने बहु आग्रह करे अने पूछे के आप लेशो के ? आ प्रमाणे तेनी प्रार्थना सांभळीने साधु कहे के हे आयुष्यमन ! मने ते लेवुं कल्पतुं नथी, पण जो तारो खास आग्रह होय तो ठळीया रहित कांटा रहित एवो जे वचलो फळनो गर्भ छे, ते आप, पण ध्यान राखजे के ठळीया के कांटा न आवे. आ प्रमाणे सांभळीने पेलो गृहस्थ ठळीया विनानुं कांटा विनानुं शोधी शोधीने साधुने आपे, पण ते वखते सचित्त भाग तेना हाथमांथी के तेना वासणमांथी आवे तो पोते न ले, ते प्रमाणे अचित्त फळनो गर्भ आपे तो पोते नोहि बोले, तेम अणिहि पण न बोले,

पछी ते लेइने ते बगीचामां कोइ झाड नीचे अथवा मकानना छापरा नीचे बेसीने ज्यां जीव जंतु एकेंद्रियथी पंचेंद्रिय सुधा न होय त्यां पोते शांतिथी बेसीने फळनो गर्भ लीधेलो होय तेने फरीथी जोइले, अने पोताना के गृहस्थना प्रमादथी ठळीयो के कांटो रही गयो होय, तो तेने खातां बाजुए राखीने खाइ रह्या पछी एकांतमां जइने अचित्त जग्या कुंभारनो निभाडो विगेरे होय, त्यां जग्या पुंजी पुंजीने परठवे.

आ जग्याए केटलाक आचार्यनो एवो अभिप्राय छे के आगळ गळत कोढ विगेरेमां ते साधुने अधिक पीडा थती होय, अने तेने संसारी न करी शकवाथी तेनी उमर जुवान होय, अने वैद एम सलाह आपे के आ रोगनी शांति माटे मरेला जनावर के माछलानो वचलो गर्भ तेना उपर बांधवो, आवा अपवादना कारणे छेदसूत्रना अभिप्राय प्रमाणे कदाच पेला साधुना रक्षण माटे लीधुं होय तो पण तेमां रहेल हाडकुं अथवा कांटो संभाळथी एकांतमां लइ जइ परठवो अहीं 'भुज' धातुनो अर्थ भोगववानो छे, पण खावा माटे नहि, जेम पदाति (पायदळ सेना) नो राजा भोग करे छे, अथवा साधु पाट पाटलाने भोगवे छे.

से भिक्खू० सिया :से परो अभिहट्टु अंतो पडिग्गहे बिलं वा लोणं उब्भियं वा लोणं परिभाइत्ता नीहट्टु दलइज्जा, से तहप्पगारं पडिग्गहं परहत्थंसि वा २ अफासुयं नो पडि०, से आहच्च पडिगाहिए सिया तं च नाइदूरगए जाणिज्जा, से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा २ पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा २ इमं किं ते जाणया दिन्नं, उयाहु अजाणया? से य भणिज्जा—नो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया दिन्नं, कामं खलु आउसो! इयाणिं निसिरामि, तं भुंजह वा णं परिभाएह वा णं तं परेहिं समणुन्नायं समणुसट्टं तओ संजयामेव भुंजिज्ज वा पीइज्ज वा, जं च नो संचाएइ भोत्तए वा पायए

वा साहम्मिया तत्थ वसंत्ति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया, तेसिं अणुप्पयायव्वं सिया, नो जत्थ साहम्मिया जहेव बहुपरियावन्नं कीरइ तहेव कायव्वं सिया, एवं खलु० ॥ (सू० ५९) ॥ २-१=१-१-१० ॥ पिण्डैषणायां दशम उद्देशकः ॥

ते भिक्षु घर विगेरेमां गोचरी जतां कदाच गृहस्थ पासे मांदा विगेरे माटे खांड विगेरे मांगतां बिड लवण खाणमां उत्पन्न थएल मीठुं तथा उद्भिज्ज ते समुद्रनुं मीठुं भूलथी आपे, ते वखते साधुए तेना हाथमां के वासणमांथी तपासीने लेवुं के भूलथी खांडने बदले मीठुं न आवे, पण कदाच बंनेने उतावळ होवाथी साधुना पात्रमां आवी गयुं होय अने थोडे दूर गया पछी साधुने खबर पडे तो पाछो आवीने ते गृहस्थने कहे के, आ तमे खांडने बदले मीठुं आपेल छे ते जाणमां के अजाणमां? जो अजाणमां आप्यानुं कहे अने पछी एम कहे के तमने जो खप होय तो वापरजो, आ प्रमाणे गृहस्थ जो रजा आपे तो प्रासुक होय तो साधुए वहेंचीने खावुं, कदाच अप्रासुक आवे अने गृहस्थ पाछुं न ले तो परठववानो महान दोष जाणीने पोते खाय पीये, वधारे होय तो नजीक रहेला उत्तम साधुओने वहेंची आपे, तेवा साधर्मिक न होय तो पोतानी शक्ति प्रमाणे वापरे, (बाकीनुं परठवी दे.) आ साधुनुं सर्वथा साधुपणुं छे. (एटला माटे बने त्यां लगी गोचरी जनारे गोचरीमांज पुरतुं लक्ष्य राखीने वस्तु लेवी के पछवाडे आवी तकलीफ न पडे.)

दसमो उद्देशो समाप्त.

अग्यारमो उद्देशो.

दशमो उद्देशो कह्यो, हवे अग्यारमो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गयाः उद्देशामां मळेला पिंडनो (लेवा न लेवा तथा वापरवा परठववा संबंधी) विधि कह्यो, तेनेज अहीं विशेषथी कहे छे.

भिक्खागा नामेगे एवमाहंसु समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे मणुन्नं भोयणजायं लभित्ता से भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह, से य भिक्खू नो भुंजिज्जा तुमं चेव णं भुंजिज्जासि, से एगइओ भोक्खामित्तिकट्टु पलिउंचिय २ आलोइज्जा, तंजहा–इमे पिंडे इमे लोए इमे तित्ते इमे कडुयए इमे कसाए इमे अंबिले इमे महुरे, नो खलु इत्तो किंचि गिलाणस्स सयइत्ति माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा, तहाठियं आलोइज्जा तहाठियं गिलाणस्स सयइत्ति, तं तित्तयं तित्तएत्ति वा कडुयं कसायं कसायं अंबिलं अंबिलं महुरं महुरं० (सू० ६०)

(भिक्षा माटे विहार करे शुद्ध गोचरी ले माटे भिक्षण शीला) ते साधुओ समान आचार विचार व्यवहारवाळा एकज जग्याए रह्या होय, अथवा बहार गामथी विहार करता आव्या होय, (वा शब्दथी असमान आचारवळा पण भेळा समजवा) तेमां कोइ साधु मांदो पडे, तो भिक्षामां फरनारा साधुओ गोचरीमां मनोज्ञ भोजननो लाभ थतां बीजा सोबती साधुने कहे के आ सारुं भोजन तमे लेइने मांदा साधुने आपो, अने जो ते न खाय, तो तमेज खाइ ले जो, आ प्रमाणे मांदानी वेयावच्च करनार ने कहेतां ते साधु मांदा माटे आहार लेइने विचार करे के, आ सारुं मिष्टान विगेरे स्वादिष्ट वस्तु हुं खाइश, पछी ते मांदा पासे जइने सारो

आहार छुपावीने मांदाने कहे के आ आहार तमने आपतां वायु विगेरे वधी जशे माटे तमारे खावा योग्य नथी, कारण के आ अपथ्य छे. एटले तेना आगळ आहारनुं पात्र मुकी कहे के तमारे माटे साधुए आहार आप्यो छे, पण आ तो लूखो छे, तीखो छे, कडवो छे, कषायेलो खाटो मधुर छे. ते अमुक रोग उत्पन्न करे तेवो छे. माटे तमनें तेनाथी उपकार थाय तेम नथी, आ प्रमाणे कही मांदाने डरावीने—ठगीने पोते खाइ जाय ते माटे कपट कर्युं कहेवाय, तेवुं पाप साधुए न करवुं, त्यारे तेणे शुं करवुं ? ते कहे छे—

जेवुं होय तेवुं मांदाने देखाडवु, अर्थात् कपट कर्याविना तेने अनुकुळ होय ते वधो आहार समजावीने आपी देवो.

भिक्खागा नामेगे एवमाहंसु–समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा मणुन्नं भोयणजायं लभित्ता से य भिक्खू गिलाइ से हदह णं तस्स आहरह, से य भिक्खू नो भुंजिज्जा आहारिज्जा, से णं नो खलु मे अंतराए आहरिस्सामि, इच्चेयाइं आइतणाइं उवाइकम्म ॥ (सू० ६१)

ते साधुओ सुंदर आहार लावीने पोताने त्यां रहेला अथवा नवा परोणा आवेला साधुओने मांदाने उद्दशीने कहे के, आमांथी मांदाने योग्य सारुं सारुं भोजन लो अने ते न खाय तो पाछुं लावजो, पछी लेवा वाळो कहे के हुं तेने अंतराय पाडया विना तेने योग्य आपीने बाकीनुं वधेलुं पाछुं लावीश. पछी आहार लइने मांदाने आहार गया सूत्रमां बताव्या प्रमाणे खोटुं समजावी तेने ठगी ते पोते वधुं खाइ ले, अने आहार आपनार साधुओने मोडेथी जइने कहे के, ते साधुए कंइ लीधुं नहि. तो ते पाछुं लावता मने वेयावच्च करतां गोचरी योग्य समये न वापरवाथी शूळ उठी, तेथी तमारी पासे पाछो आहार न लाव्यो, (पण में

जेम तेम दुःखेथी खाइ लीधो!) आवुं कपट न करवुं. माटे शुं करवुं? ते कहे छे—

तेवुं कपट कर्या विना मांदाने बधो आहार बतावी सत्य समजावीने ते जेटलो आहार ले; ते आपवो; अने न ले ते बीजा साधुओने पाछो आपी आववो.

पिंडना अधिकारथीज सातपिंडैषणाने आश्रयी सूत्र कहे छे.

अह भिक्खू जाणिज्जा सत्त पिंडेसणाओ सत्त पाणेसणाओ, तत्थ खलु इमा पढमा पिंडेषणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते तहप्पगारेण असंसट्ठेण हत्थेण वा मत्तेण वा असणं वा ४ सयं वा णं जाइज्जा परो वा से दिज्जा फासुयं पडिगाहिज्जा, पढमा पिंडेसणा १ ॥ अहावरा दुच्चा पिंडेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, तहेव दुच्चा पिंडेषणा २ ॥ अहावरा तच्चा पिंडेसणा—इह खलु पाईणं वा ४ संतेगयाइ सड्ढा भवंति—गाहावई वा जाव कम्मकरी वा, तेसिं च णं अन्नयरेसु विरुवरुवेसु भायणजाएसु उवनिक्खित्तपुव्वे सिया, तंजहा थालंसि वा पढरंसि वा सरगंसि वा परगंसि वा वरगंसि वा; अह पुणेवं जाणिज्जा—असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, संसट्ठे वा हत्थे असंसट्ठे मत्ते, से य पडिग्गहधारी सिया पाणिपडिग्गहिए वा, से पुव्वामेव०—अ.उसोत्ति वा! २ एएण तुमं असंसट्ठेण हत्थेण संसट्ठेण मत्तेणं संसट्ठेण वा हत्थेण असंसट्ठेण मत्तेण अस्सिं पडिग्गहगंसि वा पाणिंसि वा निहट्टु उचित्तु दलयाहि तहप्पगारं भोयणजायं सयं वा णं जाइज्जा २ फासुयं० पडिगाहिज्जा, तइया पिंडेसणा ३ ॥ अहावरा चउत्था पिंडेसणा—से भिक्खू वा० से जं० पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाए, तहप्पगारं पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा सयं वा णं० जाव

पडि०, चउत्था पिंडेसणा ४ ॥ अहावरा पंचमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा २ उग्गहियमेव भोयणजायं जाणिज्जा, तंजहा सारावंसि वा डिडिमंसि वा कोसगंसि वा, अह पुणेवं जाणिज्जा बहुपरियावन्ने पाणीसु दगलेवे, तहप्पगारं असणं वा ४ सयं० जाव पडिगाहि०, पंचमा पिंडेसणा ५ ॥ अहावरा छट्ठा पिंडेसणा—से भिक्खू वा २ पग्गहिमेव भोयणजायं जाणिज्जा, जं च सयट्ठाए पग्गहियं, तं पायपरियावन्नं तं पाणिपरियावन्नं फासुयं जं च परट्ठाए पग्गहियं पडि०, छट्ठा पिंडेसणा ६ ॥ अहावरा सत्तमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा० बहुउज्झियधम्मियं भोयणजायं जाणिज्जा, जं चऽन्ने बहवे दुपयचउप्पयसमणमाहणअतिहिकिवणवणीमगा नावकंखंति, तहप्पगारं उज्झियधम्मियं भोयणजायं सयं वाणं जाइज्जा परो वा से दिज्जा जाव पडि०, सत्तमा पिंडेसणा ७ ॥ इच्चेयाओ सत्त पिंडेसणाओ, अहावराओ सत्त पाणेसणाओ, तत्थ खलु इमा पढमा पाणेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते, तं चेव भाणियव्वं, नवरं चउत्थाए नाणत्तं। से भिक्खू वा० से जं पुण० पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा—तिलोदगं वा ६, अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्प पच्छाकम्मे तहेव पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ६२)

अथ शब्द अधिकारना अंतरमां आवे छे. प्र०—शुं अधिकार बतावे छे ? उ०—सातपिंडेषणा. अने पान (पाणी) नी एसणा अर्थात् भिक्षु एम जाणे के नीचे बतावेली पिंड एसणा तथा पान एसणा छे,

१ असंसट्ठा २ संसट्ठा ३ उद्धडा ४ अप्पेलवा ५ उग्गहिया ६ पग्गहिया ७ उज्झधम्मा.

साधुओना बे भेदो छे, गच्छमां रहेल स्थविर कल्पी अने गच्छथी नीकळेला जिनकल्पी, उपरनी साते पिंडएषणा स्थविर

कल्पीने लेवाय. पण जिनकल्पीने प्रथमनी बे छोडीने पाछळनी पांचलेवाय छे.

प्रथमनी पिंड एषणानुं स्वरुप—

असंसृष्ट हाथ, असंसृष्ट वासण, अने वहोराव्या पछी वासणमां द्रव्य रहे अथवा न रहे, तेमां जो बीलकुल द्रव्य न रहे तो तुर्त वासण धोवानो पश्चात् कर्मनो दोष लागे, छतां पण गच्छमां बालक, बूढो, तपस्वी विगेरेना आकुळपणाना कारणे निषेध नथी, तेथीज सूत्रमां तेनी चिंता करी नथी, न खरडेलो हाथ, न खरडेलुं वासण, तेथी असन विगेरे चार प्रकारनो आहार याचे, अथवा गृहस्थ पोते याच्या विना पण आपे, तो खप होय ते प्रमाणे फासु आहार ग्रहण करे.

बीजी पिंडएषणा.

खरडेलो हाथ, खरडेलुं वासण, गृहस्थ पोताना माटे ते वस्तु लेवा हाथ अने वासण खरडे—

त्रीजी पिंडएसणा.

प्रज्ञापकनी अपेक्षाए पूर्व विगेरे दिशामां केटलाक श्रद्धाळु श्रावको के भद्र गृहस्था रहेता होय, ते शेठथी लइने नोकरडी सुधी होय छे, तेमना घरमां अनेक जातिना वासणोमां अन्न विगेरे प्रथम नांखेलुं होय छे, ते थालमां पिठर सरग ते शारिका (सरकीया) ना घासनुं बनावेलुं सूपडुं विगेरे परग ते वांसनी बनावेली छाबडी विगेरे छे, 'वरग' ते मणि विगेरे रत्नो जडीने बनावेलुं किंमती वासण होय, तेमां कोइ चीज काढीने मुकी होय, तो हाथ न खरडेलो होय अने वासण खरडेलुं होय, तो पातरां धारण करनार स्थविर कल्पी अथवा पात्रां छोडीने हाथमां खानार जिनकल्पी होय, तो गृहस्थने प्रथमज कहे हे आयुष्मन्! अथवा हे बाइ!

तमे न खरडेला हाथे, खरडेला वासणे अथवा खरडेला हाथे, खरडेला वासणे आ पातरामां के आ हाथमां संभाळथी लइने आपो अथवा पोते जे वस्तु जोइती होय, तेनुं नाम कहीने याचे अने ते गृहस्थ आपे तो फासु आहार ले.

अहीं खरडेलो हाथ, खरडेलुं वासण अने थोडुं द्रव्य पछवाडे रहे एवो आठमो भांगो जिनकल्पीने कल्पे, स्थविर कल्पीने तो सूत्र अर्थनी 'हानि' विगेरेना कारणोने लइने बधा भांगा कल्पे छे—

अल्पलेपा नामनी चोथी पिंडेषणा.

कुरमुरा ममरा पृथुक विगेरे चोखा शेकीने बनावेला होय, तो ते लेतां वासण हाथने लेप लागतो नथी तथा अल्प ते चोखानी कणकी विगेरेना बनावेल होय तो अल्पपर्यय कहेवायो ते बंनेने लेवाय छे. तेम वाल, चणा विगेरे पण कल्पे.

अवगृहिता (५)—एटले गृहस्थे पोताने खावा माटे वासण धोयुं होय के हाथ धोया होय, तेवा वासणमां जो पाणीनो लेप देखातो होय तो लेवुं न कल्पे. पण बहु सुकाइ गयुं होय तेवा शरावला, डिंडिम (कांसानुं वासण) तथा कोशक मां खावानुं काढेलुं हाय तो साधुने लेवुं कल्पे

प्रगृहीता—गृहस्थे स्वार्थ माटे के बीजा माटे चरु, हांडी विगेरे रांधवाना वासणमांथी चाटवा विगेरेथी लइने बीजाने वस्तु आपी होय ते बीजाए न लीधी होय, अथवा साधुने अपावी होय तो प्रगृहीता कहेवाय, ते गृहस्थना वासणमां के हाथमां वस्तु होय तो फासु होय ते ले.

उज्झित धर्मा—ते घरनी अंदर घणा नोकर चोपगां के अन्य साधु ब्राह्मण अतिथि मागण इच्छे नहि तेवी लुखी सादी रसोइ

होय ते परठववा योग्य होय तेवुं भोजन पोते याचे अथवा गृहस्थ आपे तो ले.

हवे सात पाणीनी एषणाओ कहे छे.—तेमां प्रथमनी त्रण तो भोजन माफक छे अने चोथीमां भेद छे, कारण के ते पाणी स्वच्छ होवाथी तेमां अल्प लेपपणुं छे, तेथी संसृष्ट वीगेरेनो अभाव छे, आ पछीनी त्रण पाणीनी एषणाओ वधारे वधारे विशुद्ध होवाथी एवोज क्रम छे. (अन्न माफक पाणीनुं पण जाणवुं)

हवे आ बतावेला अथवा पूर्वे बतावेला सूत्र वडे शुं करवुं ते कहे छे.

इच्चेयासिं सत्तण्हं पिंडेसणाणं सत्तण्हं पाणेसणाणं अन्नयरं पडिमं पडिवज्जमाणे नो एवं वइज्जा—मिच्छापडिवन्ना खलु एए भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने, जे एए भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ता णं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जत्ताणं विहरामि सव्वेऽवि ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नुन्नसमाहीए, एवं च णं विहरंति, एयं खलु तस्स तस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं ॥ (सू० ६३) २–१–१–११ पिण्डैषणायामेकादश उद्देशकः ॥

आ सात पिंडेषणा अथवा पान एषणामांनी कोइपण प्रतिमाने साधु स्वीकारीने आवुं पछीथी न बोले, के—"बीजा साधु भगवंतो सारी रीते पिंडेषणा विगेरे अभिग्रहो पाळता नथी, हुंज एकलो बरोबर पाळुं छुं." तेथी भेंज विशुद्ध अभिग्रह लीधो छे, पण बीजाओए नथी लीधो, आ उपरथी गच्छमांथी नीकळेलाए के गच्छमां रहेलाए परस्पर समदृष्टिथी देखवा, पण उत्तम रीते पिंडेषणा पाळनारा चडती अवस्थाए पहोंचेला गच्छमां रहेला साधुए पण पोतानाथी नीचा साधु जेओ प्रथमनी पिंडएषणामां रह्या होय तेमने पण दोष देवो नहि. प्र०—त्यारे शुं करवुं ? ते कहे छे.

आजे साधु भगवंतो पिंडेषणा विगेरे विशेष अभिग्रहोने धारण करीने गाम गाम विचरे छे, अने हुं जे प्रतिमाने धारण करीने
विचरुं छुं. तेथी अमे बधा जिनेश्वरनी आज्ञामां छीए, अथवा जिनाज्ञाए विचरे छे, तेथो अभ्युद्यत विहार करनार संवरवाळा छे,
तेओ बधा एक बीजाने समाधिवडे जे गच्छमां जेने जे समाधि बतावी होय तेने 'ते' कारणके गच्छवासिओने उपर बतावी ते
साते यथाशक्ति पाळवानी छे. गच्छथी नीकळेलाओने पाछळनी पांचनो अभिग्रह छे, ते वडे तेओ प्रयत्न करे, ते प्रमाणे ते
पाळीने विचरता होय ते बधा जिनेश्वरनी आज्ञा उलंघता नथी, ते संबंधमां पूर्वे बतावेली गाथा कहे छे.

जोऽवि दुवत्थ तिवत्थो, बहुवत्थ अचेलओवि रंथरइ, न हु ते हीलंति परं, सव्वेविअ ते जिणाणाए ॥ १ ॥

कोइ बे कोइ त्रण कोइ वधारे कोइ बीलकुल वस्त्र न पहेरे, तो पण ते परस्पर निंदा न करे, कारण के ते बधा जिनेश्वरनी
आज्ञामां छे. आज ते साधुनुं समग्र साधुपणुं छे, (आ छेवटना सूत्रनो परमार्थ ए छे के स्व परने दुःख न थाय, तेम विचारपूर्वक
गोचरी विगेरे लेवुं वापरवुं, पण ते प्रमाणे निर्वाह न थाय, तो बने तेटलुं निर्मळ भावथी पाळवा प्रयत्न करवो. पण वधारे उत्कृष्ट
मार्ग पाळनारे पण पोते अहंकार करीने बीजानी निंदा न करवी, तेम पोतानी शक्ति वधतां समान्य पाळनारे पण उत्कृष्ट पाळवा
प्रयत्न करवो.)

शय्याएषणा नामनुं बीजुं अध्ययन—बीजा श्रुत स्कंधनुं प्रथम अध्ययन कहीने हवे बीजुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे,
गया अध्ययनमां धर्मना आधार रुप शरीरनी प्रतिपालना माटे प्रथमज पिंड ग्रहणनो विधि बताव्यो अने ते पिंड (आहार पाणी)
लइने ज्यां ग्रहस्थो न होय तेवा स्थानमां वापरवुं. तेथी ते स्थानना गुण दोष बताववा आ बीजुं अध्ययन कहे छे. आ संबंधे

आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोगद्वारो कहेवा, तेथी नाम निष्पन्न निक्षेपामां "शय्य एषणा" नाम छे, तेना निक्षेपा करवामां "पिंडैषणा निर्युक्ति" ज्यां संभवे त्यां टुंकाणमां प्रथम गाथा वडे अने बीजी एषणाओनी निर्युक्तिओने यथायोग संभवतां बीजी गाथा वडे प्रकट करीने त्रीजी गाथा वडे "शय्या" शब्दना 'छ निक्षेपा' ना विचारमां नाम स्थापना छोडीने निर्युक्तिकार कहे छे.

दव्वे खित्ते काले भावे, सिज्जाय जा तहिं पगयं केरिसियासिज्जा खलु संजय जोगत्ति नायव्वा ? ॥ २९८ ॥

द्रव्य शय्या क्षेत्र शय्या काळ शय्या अने भाव शय्या ए चार प्रकारे शय्या छे, तेमां द्रव्य शय्यानी जरुर छे, तेथी संयतोने केवी शय्या योग्य छे. तेज हवे बतावशे. द्रव्य शय्यानी हवे व्याख्या करे छे.

तिविहा य दव्वसिज्जा सचित्ताऽचित्त मीसगा चेव । खित्तंमि जंमि खित्ते काले जा जंमि कालंमि ॥ २९९ ॥

त्रण प्रकारनी द्रव्य शय्या छे, सचित्त अचित्त अने मिश्र. तेमां सचित्त ते पृथ्वीकाय विगेरे उपर, अने अचित्त ते प्रासुक पृथ्वी विगेरे उपर, अने मिश्र ते जे अर्धपरिणत पृथ्वी विगेरे उपर जे शय्या होय ते अथवा सचित्त शय्यानुं वर्णन निर्युक्तिकार हवे पछीनी गाथामां पोतेज कहे छे, क्षेत्र शय्या ते जे गाम विगेरे क्षेत्र (स्थान)मां शय्या कराय ते. कालशय्या ते जे ऋतुबद्ध-काळ विगेरेमां जे शय्या कराय, ते काळ शय्या छे, तेमां सचित्त द्रव्य शय्यानुं दृष्टांत बतावे छे.

उक्कल कलिंग गोअम वग्गुमई चेव होइ नायव्वा । एयं तु उदाहरणं नायव्वं दव्वसिज्जाए ॥ ३०० ॥

आ गाथानो भावार्थ कथाथी जाणवो.

एक अटवीमां बे भाइओ उत्कल अने कलिंग नामना विषम (विकट) प्रदेशमां पल्लि बनावीने चोरी करे छे. तेमनी बेन

वल्गुमती नामनी छे, त्यां गौतम नामनो निमित्तिओ आव्यो, बे भाइओए तेनो सत्कार कर्यो, पण वल्गुमतीए खानगीमां कह्युं के आ आपणुं भलुं करनार भद्रक नथी, आ अहीं रहीने आपणी पल्लीनो विनाश करशे, माटे तेने काढवो जोइए, तेथी ते बे भाइओए तेना वचनथी तेने काढ्यो, पेला निमितिआए पण तेना उपर द्वेषी बनीने आ प्रतिज्ञा करी के "जो हुं वल्गुमतीना उदरने चीरीने तेमां न सुउ तो मारुं नाम गौतम नहि." बीजा आचार्यो कहे के छे के ते समये तेने बाळको नाना होवाथी वल्गुमती पोतेज पल्लीनी मालीक हती, अने त्यां उत्कल अने कलिंग नामना बे नवा निमित्तिया आवेल हता, तेथी पूर्वे आवेल गौतम निमित्तियाने पोते काढयो, तेथी गौतमे द्वेषथी प्रतिज्ञा करीने मार्गमां सरसव वावतो गयो, चोमासामां सरसवो उग्या. ते उगेला सरसवोने आधारे बीजा राजानो प्रवेश करावी ते बधी पल्लीने लुंटावीने बाळी नांखी, गौतमे पण वल्गुमतीने केद पकडी तेनुं पेट चीरावीने थोडी जीवती तरफडती हती, ते समये तेना पेट उपर सूतो, आ सचित्त द्रव्यशय्या जाणवी.

भावशय्यानुं वर्णन.

दुविहा य भावसिज्जा कायगए छव्विहे य भावंमि । भावे जो जत्थ जया सहदुहगब्भाइसिज्जासु ॥ ३०१ ॥

बे प्रकारनी भावशय्या छे. (१) काय विषय संबंधी अने छ भाव संबंधी तेमां जे जीव औदयिक विगेरे भावमां जे काळे वर्त्ते, ते तेनी छ भावरुप भावशय्या छे, कारण के शयन ते शय्या स्थिति छे, तेज प्रमाणे जे जीव स्त्री विगेरेनी काय (उदर)मां गर्भपणे रहेलो होय, ते जीवने स्त्री विगेरेनी काया भावशय्या छे. कारण के स्त्री विगेरेनी कायमां सुखमां दुःखमां सुता उठतां दरेक वखते ते जीव तेनी अंदर रहेली बधी अवस्थावाळो थाय छे, माटे ते काय संबंधी भावशय्या छे.

आ अध्ययननो बधो अर्थाधिकार शय्या विषय संबंधी छे, अने हवे उद्देशानो अर्थाधिकार बताववा निर्युक्तिकार कहे छे.

सव्वे वि य सिज्जविसोहिकारगा तहवि अत्थि उ विसेसो । उद्देसे उद्देसे वुच्छामि समासओ किंचि ॥ ३०२ ॥

आ बधा एटले त्रणे उद्देशा जो के शय्या विशुद्धि करनारा छे; तोपण तेमां दरेकमां कांइक विशेष छे, तेने हुं टुंकाणमां कहीश, ते कहे छे—

उग्गमदोसा पढमिल्लुयंमि संसत्त पच्चवाया य १ । बियंमि सोअवाई बहुविहसिज्जाविवेगो २ य ॥ ३०३ ॥

तेमां प्रथम उद्देशामां वसतिना उद्‌गम दोषा आधा कर्म विगेरे छे, तथा गृहस्थ विगेरेना संसर्गथी अपायो चिंतवेला छे, तथा बीजा उद्देशामां शौचवादि (गृहस्थो) ना बहु प्रकारना दोषो तथा शय्यानो विवेक (त्याग) बतावे छे. आ अर्थाधिकार छे.—

तइए जयंतछलणा सज्झायस्सऽणुवरोहि जइयव्वं । समविसमाईएसु य समणेणं निज्जरट्ठाए ३ ॥ ३०४ ॥

त्रीजा उद्देशामां जयणा पाळनार उद्‌गम विगेरे दोषो त्यजनार साधुने जे छलना थाय, ते दूर करवा प्रयत्न करवो, तथा स्वाध्यायने अनुकूळ ए समविषम विगेरे उपाश्रयमां निर्जराना अर्थी साधुए रहेवुं, ए विषय छे, निर्युक्ति अनुगम कह्यो हवे सूत्रानुगममां सूत्र कहे छे—

से भिक्खू वा० अभिकंखिज्जा उवस्सयं एसित्तए अणुपविसित्ता गामं वा जाव रायहाणिं वा, से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा सअंडं जाव ससंताणयं तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेइज्जा ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा अप्पंडं जाव अप्पसंताणयं तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा

३ चेज्जा ॥ से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा अस्सिं पडिआए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं ४ समारंभ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ, तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा जाव अणासेविए वा नो ठाणं वा ३ चेइज्जा । एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण उ० बहवे समणवणीमए पगणिय २ समुद्दिस्स तं चेव भाणियव्वं ॥ से भिक्खू वा० से जं० बहवे समण० समुद्दिस्स पाणाइं ४ जाव चेएति, तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ३, अह पुणेवं जाणिज्जा । पुरिसंतरकडे जाव सेविए पडिलेहित्ता २ तओ संजयामेव चेइज्जा ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण अस्संजए भिक्खुपडियाए कडिए वा उक्कंबिए वा छन्ने वा लित्ते वा घट्ठे वा मट्ठे वा समट्ठे वा संपधूमिए वा तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं वा चेइज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडे जाव आसेविए पडिलेहित्ता २ तओ चेइज्जा ॥ (सू० ६४)

ते भिक्षु उपाश्रयमां रहेवाने जो इच्छतो होय तो गाम विगेरेमां जाय, त्यां जइने साधुने योग्य वसति शोधे, त्यां जो इंडां विगेरे, जंतु युक्त मकान होय, त्यां वास विगेरे न करवो, ते बतावे छे स्थान ते काउस्सग्ग शय्या ते संथारो करवो. निषीधिका ते स्वाध्याय (भणवानुं) आ त्रण न करवां, (अर्थात् जीव जंतुवाळा मकानमां उतरवुं नहि.) पण जेमां जतु न होय त्यां उतरी ते काउसग्ग विगेरे करवो. हवे उपाश्रय संबंधी उद्गम विगेरे दोषो बतावे छे.

ते भिक्षु एवुं जाणे के कोइ श्रावके आ उपाश्रय कराव्यो छे, पण ते एक साधु जे जिनेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे अनुष्ठान करे छे,

तेने उद्देशीने जीवोनो आरंभ करीने बनावेलो छे, अथवा ते साधुने उद्देशीने वेंचातो लीधो छे, अथवा अन्य पासेथी उछीको लीधो छे, अथवा नोकर विगेरे पासेथी बळ—जबरीथी लीधो छे, बधानो सामटो होय, तेमां बधानी रजा लीधा विना लीधो होय अथवा तैयार थयेलुं मकान के तंबु विगेरे बीजी जग्याथी लावेल होय, आवा स्थानने श्रावक साधुनी पासे आवीने आपे, तो तेवा उपाश्रयमां ज्यां सुधी बीजो पुरुष तेवा मकानने न वापरे, त्यां सुधी पोते तेमां काउसग्ग विगेरे के रहेवास न करे, आ एक साधु आश्रयी कह्युं. ते प्रमाणे घणा साधु एक साध्वी के घणी साध्वीने उद्देशीने ते आश्रयी पण समजवुं, वळी त्यारपछी श्रमण वणीमगआश्रयी सूत्रमां पण पिंडैषणा सूत्र प्रमाणे जाणवुं, एटले ते सूत्रमां समजवुं के प्रथम पोते न उतरवुं पण साधु सिवाय बीजो कोइ गृहस्थ उतरे, त्यारपछी पोते उतरे तथा साधु जाणे के आ उपाश्रय साधुने माटे गृहस्थे वांसनी कांबी (खापटो) विगेरेथी बांधेल छे, दर्भ विगेरेथी छायेल छे, छाण विगेरेथी लींप्यो छे, खडो विगेरे खडबचडा पदार्थथी घस्यो छे, अने तेने कळि विगेरेना लेपथी कोमळ बनाव्यो छे, तथा जमीन साफ करी संस्कार्यो छे, दुर्गंधी दूर करवा धुप विगेरेथी धुपाव्यो छे, आवुं जो साधु माटे करेलुं होय तो ज्यां सुधी कोइ गृहस्थ न वापरे, त्यां सुधी ते मकानमां पोते काउसग्ग विगेरे न करे, पण ज्यारे बीजो वापरे, तेवुं जाणे त्यार पछी ते मकान पडिलेही प्रमार्जीने काउसग विगेरे करे.

से भिक्खू वा० से जं० पुण उवस्सयं जा० अस्संजए भिक्खुपडियाए खुडियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, जहा पिंडेसणाए जाव संथारगं संथारिज्जा बहिया वा निन्नक्खु तहप्पगारे उवस्सए अपु० नो ठाणं ३ अह पुणेवं० पुरिसंतरकडे आसेविए पडिलेहित्ता २ तओ संजयामेव आव चेइज्जा ॥ से भिक्खू वा० से जं० अस्संजए भिक्खुपडियाए उदग्गप्प-

सूयाणि कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरइ वहिया वा निण्णक्खू त० अपु० नो ठाणं वा चेइज्जा, अह पुण० पुरिसंतरकडं चेइज्जा ॥ से भिक्खू वा से जं० अस्संज० भिं० पीढं वा फलगं वा निस्सेणिं वा उदूखलं वा ठाणाओ ठाणं साहरह बहिया वा निण्णक्खू तहप्पगारे उ० अपु० नो ठाणं वा चेइज्जा, अह पुण० पुरिसं० चेइज्जा, ॥ (सू० ६५)

ते भिक्षु आवा मकारनो उपाश्रय जाणे के ते गृहस्थे साधुने उद्देशीने नानी वारीनुं मोटुं बारणुं कर्युं छे, तेवा मकानमां ज्यां सुधी गृहस्थ विगेरे बीजो पुरुष ते मकान न वापरे त्यां सुधी साधु तेने न वापरे. आ बंने सूत्रमां पण उत्तर गुणो वर्णव्या छे, ते पूर्वे बतावेला दोषथी दुष्ट शय्या होय तो पण बीजा पुरुषे स्वीकार्या पछी कल्पे छे, पण मूळ गुणथी दुष्ट होय तो बीजा पुरुषे स्वीकार्या पछी पण कल्पती नथी, मूळ गुणना दोषो नीचे मुजब छे, "पट्ठी वंसोदो धारणा उचत्तारि मूलवेलीओ" एटले पृष्ठ वांस विगेरेथी साधु विगेरे माटे जे वसति तैयार करावाय, ते मूळ गुणथी दुष्ट छे.

पीठनो वांसडो, बे धारण करनारा, तथा चार मूळ वेलीओ होय-(साधु माटे वांसडा उभा करीने मकान बनावे ते साधुने कल्पे नहि) वळी ते साधु आवो उपाश्रय जाणे के गृहस्थ साधुने उद्देशीने पाणीथी तैयार थयेलां कंद विगेरे बीजा मकानमां (ते खाली करवा माटे) लइ जाय छे, अथवा तेनो बहार ढगलो करे छे, तेवा मकानमां ज्यां सुधी बीजो माणस आवीने न रहे त्यां सुधी साधु तेमां न उतरे, पण बीजाए वापर्या पछी साधु तेमां रहे, तेज प्रमाणे अचित्त वस्तु पण घरमांथी बहार काढे तोपण पुरुषांतर थया पछी साधुए ते मकान वापरवुं; कारण के तेमां पण फेरफार करतां त्रस जीवनो वध थवानो संभव छे. वळी—

से भिक्खू वा० से जं० तंजहा–खंधंसि वा मंचंसि वा मालंसि वा पासा० हम्मि० अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि, नन्नत्थ आगाढाणागाढेहिं कारणेहिं ठाणं वा नो चेइज्जा ॥ से आहच्च चेइए सिया नो तत्थ सीओदगवियडेण वा २ हत्थाणि वा पायाणि वा अच्छीणि वा दंताणि वा मुहं वा उच्छोलिज्ज वा, पहोइज्ज वा, नो तत्थ ऊसढं पकरेज्जा, तंजहा—उच्चारं वा पा० खे० सिं० वंतं वा पित्तं वा पूयं वा सोणियं वा अन्नयरं वा सरीरावयवं वा, केवली बूया आयाणमेयं, से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलिज्ज वा २, से तत्थ पयलमाले वा पवडमाणे वा हत्थं वा जाव सीसं वा अन्नयरं वा कायंसि इंदियजालं लूसिज्ज वा पाणि ४ अभिहणिज्ज वा जाव ववरोविज्ज वा, अथ भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा ४ जं तहप्पगारं उवस्सए अंतलिक्खजाए नो ठाणंसि वा ३ चेइज्जा ॥ (सू० ६६)

ते भिक्षु आवो उपाश्रय जाणे, के ते एक थांभाना उपर बनावेलुं मकान छे, अथवा मांचडा उपर छे, अथवा माळा उपर छे, प्रासाद ते बीजे मजले मकान आप्युं छे, (प्रासाद ते सारुं पाकुं मकान बांध्युं होय ते छे)–हर्म्यतल ते भोंयरावाळुं मकान छे, आवा मकानमां बने त्यांसुधी साधुए निवास न करवो, पण बीजा मकानना अभावे तेवुं मकान वापरवुं पडे तो शुं करवुं ते कहे छे. त्यां ठंडा पाणी विगेरेथी हाथ धुवे नहि, तथा त्यां रहीने टट्टी जवा विगेरेनी क्रिया न करे, कारण के केवळी प्रभु तेमां कर्मबंध अने संयमनी विराधना बतावे छे, त्यां त्याग करतो पडी जाय, अने पडतां हाथ पग विगेरे शरीरना अवयवने नुकशान थाय तथा पोते पडतां बीजा जीवोने पीडे, अथवा जीवथी हणे, आ प्रमाणे नुकशान जाणीने साधुए कांतो तेवा अधरना के भोंयराना स्थानमां उतरवुं नहि, (अथवा उतरवुं पडे तो संभाळीने चडवुं-उतरवुं के जग्या वापरवी.) वळी—

से भिक्खू वा० से जं० सइत्थियं सखुड्डं सपसुभत्तपाणं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए नो ठाणं वा ३ चेइज्जा। आयाणमेयं भिक्खूस्स गाहावइकुलेण सद्धिं संवसमाणस्स अलसगे वा विसूइया वा छड्डी वा उव्वाहिज्जा अन्नयरे वा से दुक्खे रोगायंके समुपज्जिज्जा, अस्संजए कलुणपडियाए तं भिक्खुस्स गायं तिल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा अब्भंगिज्जा वा मक्खिज्ज वा सिणाणेण वा कक्केण वा लुद्धेण वा वण्णेण वा चुण्णेण वा पउमेण वा आघंसिज्ज वा पघंसिज्ज वा उव्वलिज्ज वा उव्वट्टिज्ज वा सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलिज्ज वा पक्खालिज्ज वा सिणाविज्ज वा सिंचिज्ज वा दारुणा वा दारुपरिणामं कट्टु अगणिकायं उज्जालिज्ज वा पज्जालिज्ज वा उज्जालित्ता कायं आयाविज्जा वा प० अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा० जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ॥ (सू० ६७)

ते भिक्षु वळी आवो उपाश्रय जाणे के तेमां स्त्रीओ रहेली छे, अथवा ते वाळकोवाळुं छे, अथवा ते मकान शिह कुतरो विलाडी विगेरे क्षुद्र प्राणीथी रोकायेलुं छे, पशुओ रखाय छे, तथा भोजन पाणी छे, अथवा पशुओने चारो पाणी आपवामां आवे छे, आवा गृहस्थथी आकुळ उपाश्रयमां साधुए स्थान विगेरे न करवुं, कारणके तेमां नीचे मुजब दोषो छे, तथा आ 'कर्म' बंधननां कारणो छे. (१)गृहस्थना कुटुंब साथे वसतां त्यां शंका रहित भोजन विगेरेनी क्रिया न थाय, अथवा कोइ पण जातनो व्याधि थाय, ते वतावे छे, 'अलसग' ते हाथपग विगेरेनो अटकाव, अथवा श्वयथु ते लकवानो रोग थाय, विशूचिका (शूळ) छर्दी नो रोग थाय आवी व्याधिओ साधुने उत्पन्न थाय अथवा तेवा बीजो ताव विगेरे कोइ रोग थाय, अथवा तुर्त प्राण लेनारो शूळ विगेरे रोग थाय, तेवा रोगथी पीडायेला साधुने देखीने कारुण्यथी अथवा भक्तिथी गृहस्थ ते भिक्षुना शरीरने तेल विगेरेथी चोळे, अथवा

थोडुं मसळे, पछी सुगंधी द्रव्यथी उवटण करे, कल्क ते कषाय द्रव्यनो कवाथ (नाशक जील्लामां शीखाखाइ विगेरे पाणीमां उकाळी नाहावामां उपयोग करे छे,) लोध्र ते सुगंधी द्रव्य छे, वर्णक ते कपीलो विगेरे छे, जव विगेरेनुं चूर्ण—पदमक जाणीतुं छे, विगेरे द्रव्य वडे थोडुं थोडुं घसे अने चोळीने तेनुं उद्वर्त्तन करे, पछी ठंडा के उंना पाणीथी थोडुं स्नान करावे, अथवा वारंवार स्नान करावे, अथवा माथा विगेरेमां के नाभिना उपरना अंगमां पाणी सींचे; अथवा लाकडाथी अथवा लाकडां मांहोमांहे घसीने अग्नि बाळे, भडको करे, तेम करीने पछी साधुना शरीरने एकवार तपावे, के वारंवार तपावे, आवा दोषो जाणीने साधुने आ प्रतिज्ञा विगेरे छे. के तेवा गृहस्थना रहेवासवाळा मकानमां काउसग्ग विगेरे न करवुं. (तेम निवास पण न करवा.)

आयाणमेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए संवसमाणस्स इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरी वा अन्नमन्नं अक्कोसंतो वा पचंति वा रुंभंति वा उद्दविंति वा, अह भिक्खूणं उच्चावयं मणं नियंछिज्जा, एए खलु अन्नमन्नं अक्कोसंतु वा मा वा अक्कोसंतु जाव मा वा उद्दविंतु, अह भिक्खूणं पुव्व० जं तहप्पगारे सा० नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ।' (सू० ६८)

गृहस्थना रहेवासवाळा घरमां उतरतां साधुने कर्मनुं उपादान छे, तेथी त्यां बहु दोषो छे, तेज बतावे छे, के आवा घरमां गृहस्थ मांहोमांहे आक्रोश विगेरे करे, ते कलेश करतां देखीने साधु कदाच उंचुं नीचुं मन करे, (उंचुं मन ते आवुं न करे तो ठीक, अने अवच ते भले करे,) तेवीज रीते मांहोमांहे गृहस्थना घरमां घरवाळां परस्पर कलेश उपद्रव विगेरे करे तो पण साधुने असमाधि थाय, माटे त्यां न उतरवुं.

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स, इह खलु गाहावई अप्पणो सयट्ठाए अगणिकायं उज्जालिज्जा वा

पज्जालिज्ज वा विज्झविज्ज वा, अह भिक्खू उच्चावयं मणं नियंछिज्जा, एए खलु अगणिकायं उ० वा २ मा वा उ० पज्जा लिंतु वा मा वा प०, विज्झविंतु वा गा वा वि०, अह भिक्खूणं पु० जं तहप्पगारे उ० नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ॥ (सू० ६९)

गृहस्थ साथे एक मकानमां रहेतां गृहस्थ निश्चयथी पोताना माटे अग्निकाय बाळशे, भडको करशे, अथवा बुझावशे, ते समये साधुना मनमां गया सूत्रमां कह्या प्रमाणे उंचा निचा भाव प्रगट थशे अने व्यर्थ कर्म बंध थशे, माटे तेवा स्थानमां साधुए उतरवुं नहि,

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स, इह खलु गाहावइस्स कुंडले वा गुणे वा मणी वा मुत्तिए वा हिरण्णेसु वा सुवण्णेसु वा कडगाणि वा तुडियाणि वा तिसराणि पालंबाणि वा हारे वा अद्धहारे वा एगावली वा कणगावली वा मुत्तावली वा रायणावली वा तरुणीयं वा कुमारि अलंकिविभूसियं पेहाए, अह भिक्खू उच्चाव० एरिसिया वा सा नो वा एरिसिया इय वा णं बूया इय वा णं मणं साइज्जा, अह भिक्खूण पु० ४ जं तहप्पगारे उवस्सए नो० ठा० ॥ (सू० ७०)

वळी गृहस्थ साथे वसतां नीचला दोषो छे, घरमां गृहस्थने माटे बनावेला दागीना कुंडल, सोनानो दोरो, मणी, मोती चांदी सोनानां कडां बाजुबंध त्रणसेर वाळो हार झुमखां हार अर्धहार एकावलि कनकावलि मुक्तावलि रत्नावलि विगेरे जुए, अथवा तेवा दागीना पहेरेली सुंदर कुमारिकाने जुए, तेने देखीने ते साधु उंचा नीचां वचन बोले के आ सारो दागीनो के सुंदर कन्या छे, अथवा आ खामीवाळो दागीनो के कन्या छे, तेज प्रमाणे मनमां रागद्वेष करे,

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स, इह खलु गाहावइणीओ वा गाहावइधूयाओ वा गा० सुण्हाओ वा गा० धाईओ वा गा० दासीओ वा गा० कम्मकरीओ वा तासिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवंतिसमणा भगवंतो जाव उवरया मेहुणाओ धम्माओ, नो खलु एएसिं कप्पइ मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टित्तए, जा य खलु एएहिं सद्धिं मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टाविज्जा पुत्तं खलु सा लभिज्जा उयस्सिं तेयस्सिं वच्चस्सिं जसस्सिं संपराइयं आलोयणदरसणिज्जं, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म तासिं च णं अन्नयरी सड्ढी तं तवस्सिं भिक्खुं मेहुणधम्म पडियारणाए आउट्टाविज्जा, अह भिक्खूणं पु० जं तहप्पगारे सा० उ० नो ठा ३ चेइज्जा एयं खलु तस्स० ॥ (सू० ७१) पढमा सिज्जा सम्मत्ता २-१-२-१ ॥

वळी गृहस्थ साथे वसतां आ दोषो छे, गृहस्थनी स्त्री, दीकरी, दीकरानी वहु, धावमाता, दासी, नोकरडी बोले अथवा तेमना आगळ पूर्वे कोइ बोल्युं होय, के जे आ जैनना साधु भगवंतो महाव्रत पाळनारा मैथुन (संसार संग) थी विरत थएला छे, तेमने निश्चयथी मैथुन सेवन करवुं कल्पतुं नथी, अने तेथी जे कोइ स्त्री तेमनी साथे संबंध करे, अने पुत्र संपादन करे तो ते पुत्र बळवान दीप्तिमान रुपवान कीर्तिवाळो थाय, आवुं सांभळीने तेओ विचारीने कोइ पुत्र वांछक (वांझणी) स्त्री साधुने कुसंग करवा प्रार्थना करे, आवा दोषो जाणीने साधुओने तेवा मकानमां उतरवानी मना करेली छे, आज भिक्षुनुं सर्वथा साधुपणुं छे.

बीजो उद्देशो (प्रकरण)

पहेलो उद्देशा कहीने बीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, के गया उद्देशामां गृहस्थना घरमां वास करतां थता दोषो बताव्या, अहींया पण तेवा विशेष दोषो वसति संबंधी बतावे छे.

गाहावइ नामेगे सुइसमायारा भवंति, से भिक्खू य असिणाणए मोयसमायारे से तग्गंधे दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ, जं पुव्वं कम्मं तं पच्छा कम्मं जं पच्छा कम्मं, तं पुरे कम्मं, तं भिक्खुपडियाए वट्टमाणा करिज्जा वा नो करिज्जा वा, अह भिक्खूणं पु० जं तहप्पगारे उ० नो ठाणं ॥ (सू० ७२)

केटलाक गृहस्थो शुचि समाचारवाळा भागवत विगेरेना भक्त अथवा भोगीओ (वारंवार स्नान करनारा अथवा सुगंधी चंदन अगर केसर कपूर विगेरे वस्तुनो लेप करनार शोखीनो) होय छे, अने साधुओ तेवी रीते वारंवार के एकवार खास कारण विना फासु पाणीथी पण ब्रह्मचर्यना भंगना दोषने लीधे स्नान करनारा नथी, तथा कारण प्रसंगे मोया (पेशाब) नो पण उपयोग करनारा छे, (ज्यारे जंगलमां उतर्या होय अथवा उजड जग्यामां उतर्या होय, त्यां ओचींतो साप करडे तो तेना झेरथी बचवा रातना वैदनी खटपट न बनी शके, माटे पेशाबनो उपयोग पूर्वे थतो, सांभळवा प्रमाणे ओचींतो खीलो के ठोकर लागी लोही पुष्कळ नीकळ्युं होय, तो पेशाबनी धारा करवाथी बंध पडे छे, तेवा कोइ पण कारणे वखते कोइ साधुए उपयोग कर्यो होय तो वारंवार स्नान करनारा गृहस्थने दुगंच्छा थाय) माटे भिक्षु तेनी गंधवाळा छे, तथा कोइनो पेशाब गंधातो होय, परसेवो वास मारतो होय,

तो ते गृहस्थने खोटुं लागे, अने गृहस्थने ते गमे नहि. (वंनेना रस्ता उलटा छे.) माटे फावे नहि. (सूत्रमां पडिकूल पडिलोमा एक अर्थवाळा छतां वने मुकवानुं कारण फकत अतिशय विरुद्धता बतावी छे.) तथा ते गृहस्थ साधुना कारणेज भोजन तथा जमवाना स्थानमां तेमने स्नान पूर्वे करवुं होय, ते पछीथी करे छे, अने पाछळ करवानुं होय ते पहेलुं करे एम आगळ पाछळ घरमां कार्य थतां साधुओने अधिकरण दोष थाय छे, अथवा ते गृहस्थोने जमवानो काल थयो होय तो पण साधुने लीधे न खाय, तेथी अंतराय कर्म बंधाय, मननी पीडा विगेरेनो संभव थाय, अथवा ते साधुओ गृहस्थनी शरमथी पूर्वे पडीलेहणा करवानी ते पछी करे, अथवा काळ वीती गया पछी करे, अथवा न पण करे, माटे साधुओनी आ प्रतिज्ञा छे, के तेवा गृहस्थना वापरता घरमां निवास न करवो.

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धि सं०, इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूवरूवे भोयणजाए उवक्खडिए सिया, अह पच्छा भिक्खुपडियाए असणं वा४ उवक्खडिज्ज वा उवकरिज्ज वा उवकरिज्ज वा, तं च भिक्खू अभिकंखिज्जा भुत्तए वा पायए वा वियट्टित्तए वा, अह भि० जं नो तह० ॥ (सू० ७३) आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइणा सद्धिं संव० इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिन्नपुव्वाइं भवंति, अह पच्छा भिक्खुपडियाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिंदिज्ज वा किणिज्ज वा पामिच्चेज्ज वा दारुणा वा दारुपरिणामं कट्टु अगणिकायं उ० प०, तत्थ भिक्खू अभिकंखिज्जा आयावित्तए वा पयावित्तए वा वियट्टित्तए वा, अह भिक्खू० जं नो तहप्पगारे० ॥ (सू० ७४)

वळी जो गृहस्थ साथे साधु उतरे ता तेने आवां पण कर्म बंधन छे, के गृहस्थ प्रथम पोताना माटे जुदी जुदी जातनुं रांधे, अने पाछळथी साधु माटे अशन विगेरे चारे प्रकारनो आहार रांधे, अथवा भोजननुं वासण आगळ मूके ते देखीने भिक्षुक तेने

खावा पीवानी इच्छा करे, आथवा त्यां बेसवानी साधु इच्छा करे, तेटला माटे रहेवाना घरमां न उतरवुं (७३)

एज प्रमाणे गृहस्थे पोताना माटे जुदी जुदी जातिनां लाकडां चीरीने मुक्यां होय छे, अने पाछळथी साधु माटे जुदां जुदां लाकडां चीरावे, खरीद करे, बद्लो करे, अथवा ठंडीना दिवस होय तो तापणा माटे अग्निकाय सळगावे, भडको करे, त्यांसुधी तापवानी एकवार इच्छा करे, वारंवार तापवानी इच्छा करे, अथवा त्यां जइने बेसे, माटे तेवा स्थानमां कर्मबंधननुं कारण जाणीने साधुए उतरवुं नहि. (सू–७४) वळी

सेभिक्खू वा० उच्चारपासवणेण उब्बाहिज्जमाणे राओ वा वियाले वा गाहावईकुलस्स दुवारबाहं अवंगुणिज्जा, तेणे य तस्संधिचारी अणुपविसिज्जा, तस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ एवं वइत्तए–अयं तेणो पविसइ वा नो वा पविसइ उवल्लियइ वा नो वा० आवयइ वा नो वा० वयइ वा नो वा० तेण हडं अन्नेण हडं तस्स हडं अन्नस्य हडं अयं तेणे अयं उवचरए अयं हंता अयं इत्थमकासी तं तवस्सि भिक्खुं अतेणं तेणंति संकइ, अह भिक्खूणं पु० जाव नो ठा० ॥ (सू० ७५)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां साथे रहेलो स्थंडील विगेरेना कारणे रात्रे के परोडीये उपाश्रयनुं द्वार उघाडे, त्यां छिद्र शोधनारो चोर पेसी जाय, ते देखीने साधुने आवुं बोलवुं न कल्पे, के आ चोर घरमां पेसे छे, तथा चोर पेसतो नथी, ते प्रमाणे छुपी जाय छे के छुपातो नथी, अथवा कुदी आवे छे, अथवा नथी आवतो, ते बोले छे, अथवा नथी बोलतो, ते अमुक माणसे चोर्युं, अथवा बीजे चोर्युं, तेनुं चोर्युं, के बीजानुं चोर्युं, आ चोर छे अथवा तेने सहायता करवा पाछळ चालनारो छे, आ शस्त्र धारक छे, आ मारनारो घातक छे, एणे आ अहीं कर्युं छे, विगेरे न बोलवुं कारण के तेथी चोरने पीडा थाय, अथवा ते चोर साधु उपर द्वेष

करीने तेनेज मारशे, विगेरे दोषो छे, अने जो साधु तेमप्रमाणे चोरी करनारा चोरने न बतावे तो ते घरवाळाने आ साधु नथी पण चोर छे एवी शंका थाय माटे आवा दोषो जाणीने साधुए गृहस्थने रहेवाना घरमां न उतरवुं. फरीथी वसतिना दोषो बतावे छे.

से भिक्खू वा से जं० तणपुंजेसु वा पलालपुंजेसु वा सअंडे जाव ससंताणए तहप्पगारे उ० नो ठाणं वा० ॥ ३ ॥ से भिक्खू वा० से जं० तणपुं पलाल० अप्पंडे जाव चेइज्जा ॥ (सू० ७६)

ते साधु घासनो ढगलो होय, पराळनो पुंज होय, पण त्यां इंडां पडेलां होय, तेवा मकानमां साधु न रहे; पण उपर बतावेला घास के पराळमां इंडां न होय तेवा मकानमां उतरवुं, (अल्प शब्दनो अर्थ अभाववाची छे.)

हवे वसतिना परित्यागना उद्देशानो अर्थाधिकार कहे छे—

से आगंतारेसु आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा अभिक्खणं साहम्मिएहिं उवयमाणेहिं नो उवइज्जा ॥ (सू० ७७)

लोकोने उतरवानां मुसाफरखानां के बगीचानी अंदरनां घरो के मठो अथवा ज्यां पोताना सरखी समाचारीवाळा साधुओ वारंवार आवीने उतरता होय, तेवा स्थानमां मासकल्प विगेरे न करवो. (के बीजाने उतरतां संकोच न थाय)

हवे कालातिक्रांत वसतिना दोषो कहे छे—

से आगंतारेसु वा ४ जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवाइणित्ता तत्थेव भुज्जो संवसंति, अयमाउसो! कालाइक्कंतकिरियावि भवति १ ॥ (सू० ७८)

जे साधु भगवंतो ते मुसाफरखाना विगेरेमां शीतोष्ण ऋतुमां मासकल्प करीने पाछा चोमासुं ते मकानमां करीने फरीथी कारण विना रहे, तो (गुरु शिष्यने कहे छे) हे आयुष्मन् ! काल अतिक्रम दोष संभवे छे, तेज प्रमाणे स्त्री विगेरेनो प्रतिबंध अथवा स्नेहथी उद्गम विगेरे दोषोनो संभव थाय छे, माटे तेवुं स्थान साधुने न कल्पे. हवे उपस्थान दोषने बतावे छे—

से आगंतारेसु वा ४ जे भयंतारो उडु० वासा० कप्पं उवाइणावित्ता तं दुगुणा दु (ति) गुणेण वा अपरिहरित्ता तत्थेव भुज्जो० अयमाउसो ! उवट्ठाणकि० २ ॥ (सू० ७९)

जे साधुओ मुसाफरखाना विगेरेमां शीयाळा उनाळामां मासकल्प करीने अथवा चोमासुं करीने अथवा बीजे एक मास रहीने बमणो त्रणगणो कल्पवडे न छोडीने अर्थात् बे त्रण मास सुधी ते मकानमां न वसवुं तेवो कल्प उलंघीने पाछा त्यांज वसे छे, माटे आवो उपाश्रय उपस्थान क्रिया दोषथी दुष्ट थाय छे, माटे तेवाउपाश्रयमां साधुने उतरवुं कल्पतुं नथी.

हवे अभिक्रांत वसति बतावता कहे छे—

इह खलु पाईणं वा ४ संतेगइया सड्ढा भवंति, तंजहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा, तेसिं च णं आयारगोयरे नो सुनिसंते भवइ, तं सद्दहमाणेहिं पत्तियमाणेहिं रोयमाणेहिं बहवे समण माहण अतिहिकिवणवणीमए समुद्दिस्स तत्थ २ अगारीहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहा—आएसणाणि वा आयतणाणि वा देवकुलाणि वा सहाओ वा पवाणि वा पणियगिहाणि वा पणियसालाओ वा जाणगिहाणि वा जाणसालाओ वा सुहाकम्मंताणि वा दब्भकम्मंताणि वा वद्धकंवा० वक्कयकं० इंगालकम्मं० कट्ठक० सुसाणक० सुण्णागारगिरिकंदरसंतिसेलोवट्ठाणकम्मंताणि वा भवणगिहाणि वा,

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव गिहाणि वा तेहिं उवयमाणेहिं उवयंति अयमाउसो ! अभिक्कंतकिरिया यावि भवइ ३ ॥ (सू० ८०)

(अहीं प्रज्ञापक विगेरेनी अपेक्षाए) पूर्व विगेरे दिशामां श्रावको अथवा प्रकृतिभद्रक अन्य गृहस्थो नोकरडी सुधी होय, तेओने साधुनो "आवो उपाश्रय कल्पे" एवी खबर न होय पण उपाश्रय आपवाथी स्वर्ग विगेरेनुं फळ प्राप्त थाय, तेवुं क्यांयथी जाणीने श्रद्धा करीने हृदयमां ते रुचवाथी घणा साधु विगेरेने उद्देशीने त्यां आराम विगेरेमां यानशाला विगेरे पोताना माटे करतां साधु विगेरेने जग्या आपवा माटे ते मकानो मोटां कराव्यां होय, ते मकानोनां नाम कहे छे, आदेशन (लुहारनी शाळा) आयतन (देवकुलनी जोडे बनावेल ओरडाओ) देवकुल (देवळ) सभा (चारवेदने भणवानी पाठशाळा) परब पुण्य (दुकानो) पुण्यशाळा (घंघशाळा) यान ग्रह (रथ विगेरे राखवानुं स्थान) यानशाळा (रथ विगेरे बनाववानुं स्थान) सुधाकर्म ते (ज्यां खडीनुं परिकर्म थाय) आ प्रमाणे दर्भ वर्ध्र वल्कज अंगार काष्ठ कर्म विगेरे छे, एटले जेमां घास चामडां झाडनी छाल के कोयला के लाकडांना कामनुं कारखानुं होय, मसाण होय, शून्य घर होय, शांतिकर्मनुं घर होय, पर्वत उपरनुं घर होय, सुधारेली पहाडनी गुफा होय, शैल उपस्थान (पाषाणनो मंडप) होय, आवां घरो चरक ब्राह्मणो विगेरेथी पूर्वे वपरायां होय, पछी खाली पडेलां होय, तो पछवाडे साधु तेमां उतरे, तो तेमां अल्प दोष (निर्दोष) होय, छे, आवुं गुरु शिष्यने कहे छे, (अर्थात् तेवा मकानमां उतराय छे.)

इह खलु पाईणं वा जाव रोयमाणेहिं बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणिमए समुद्दिस्स तत्थ तत्थ अगारिहिं अगाराइं

चेइयाइं भवंति, तं०-आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा, जे भयंताणो तहप्प० आएसणाणि जाव गिहाणि वा तेहिं अणोवयमाणेहिं उवयंति अयमाउसो ! अणभिक्कंतकिरिया यावि भवइ ॥ (सू० ८१)

उपरना सूत्र प्रमाणे पूर्व विगेरे दिशामां गृहस्थथी ते कर्म करी सुधीनां माणसोए साधुने मकान उतरवा आपवानुं विशेष पुण्य फळ जाणीने श्रमण ब्राह्मण अतिथि विगेरेने आश्रयी आदेशन घर विगेरे बनाव्यां होय, तेमां पूर्वे श्रमण ब्राह्मणो विगेरे न उतर्या होय, तेमां साधु उतरे, तो ते दोषवाळी जग्या छे, माटे ते उतरवा योग्य नथी.

हवे न उतरवा योग्य वसति कहे छे—

इह खलु पाईणं वा ४ जाव कम्मकरीओ वा, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ-जे इमे भवंति समणा भगवंतो जाव उवरया मेहुणाओ धम्माओ, नो खलु एएसिं भयंताराणं कप्पइ आहाकम्मिए उवस्सए वत्थए, से जाणिमाणि अम्हं अप्पणो सयट्ठाए चेइयाइं भवंति, तं०—आएसणाणि वा जावगिहाणि वा, सव्वाणि ताणि समणाणं निसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो सयट्ठाए चेइस्सामो, तं०—आएसणाणि वा जाव०, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म जे भयंतारो तहप्प० आएसणाणि वा जाव गिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं वट्टंति, अयमाउसो ! वज्जकिरियावि भवति ५ ॥ (सू० ८२)

आ पूर्व विगेरे दिशामां गृहस्थ अथवा नोकरडी होय, अने तेओने पूर्वे एवुं कहेवामां आव्युं होय, के आ साधु भगवंतो पोते ब्रह्मचर्य पाळनार छे, तेओने साधु माटे बनावेलुं मकान उतरवाने कल्पतुं नथी, एटला माटे आपणे आपणा माटे बनावेलुं घर छे,

ते रहेवा आपी दइए, अने आपणे माटे नवुं बनावी लइशुं, आवी रीते गृहस्थे बनावेलुं मकान सूत्र ८० मां बतावेल विगतवाळुं होय, ते सुंदर के मध्यम होय, तो पण साधुओने रहेवा आपे, तो ते वर्ज्य क्रियावाळुं (त्याज्य मकान) होवाथी तेमां उतरवुं नहि.

हवे महावर्ज्या नामथी वसतिनुं वर्णन करे छे.

इह खलु पाईणं वा ४ संतेगइआ सड्ढा भवंति, तेसिं च णं आयारगोयरे जाव तं रोयमाणेहिं बहवे समणमाहण जाव वणीमगे पगणिय २ समुद्दिस्स तत्थ २ अगारीहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तं०—आएसणाणि वा जाव गिहाणि वा, जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव गिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं०, अयमाउसो ! महावज्जकिरियावि भवइ ६ ॥ (सू० ८३)

आ बधुं सुगम छे, के श्रावके श्रमणमाहण वणीमग माटे मकान बंधाव्युं होय, तेमां जो साधुओ स्थान करे, तो महावर्ज्य नामनी वसति थाय छे, माटे आ विशुद्ध कोटी अकल्प्य छे, तेमां उतरवुं नहि, ६ ॥

हवे सावद्य अभिधान (नामनी) वसति कहे छे.

इह खलु पाईणं वा ४ संतेगइया जाव तं सद्दहमाणेहिं तं पत्तियमाणेहिं तं रोयमाणेहिं बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगे पगणिय २ समुद्दिस्स तत्थ २ आगाराइं चेइयाइं भवंति तं—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा जे भयंतारो तहप्पगाराणि आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं, अयमाउसो ! सावज्जकिरियावि भवइ ७ ॥ (सू० ८४)

आ प्राये सुगम छे, फक्त विशेष आ छे के, पांच प्रकारना निर्ग्रंथो शाक्य तापस गैरीक अने आजीविकएवा श्रमणो माटे कल्पीने बनावेल वसति होय, तो ते सावद्य अभिधान वसति थाय, छे, आ अकल्पनीय छे, पण विशुद्ध कोटी छे, आमां स्थान करतां सावद्य क्रिया थाय छे. हवे महासावद्य वसतिनुं वर्णन करे छे.

इह खलु पाईणं वा ४ जाव तं रोयमाणेहिं एगं समणजायं समुद्दिस्स तत्थ २ अगारीहिं अगाराइं चेइयाइं भवन्ति, तं० आएसणाणि जाव गिहाणि वा महया पुढविकायसमारंभेणं जाव महया तसकायसमारंभेणं महया विरूवरूवेहिं पावकम्मकिच्चेहिं, तंजहा—छायणओ लेवणओ संथारदुवारपिहणओ सीसोदए वा परट्ठवियपुव्वे भवइ अगणिकाये वा उज्जालियपुव्वे भवइ, जे भयंतारो तह० आएसणाणि वा० उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं दुपक्खं ते कम्मं सेवंति, अयमाउसो ! महासावज्जकिरिया यावि भवइ ८ ॥ (सू० ८५)

अहीं एक साधर्मिक (साधु) ने उद्देशीने कोइ गृहपति विगेरेए पृथ्वीकाय विगेरेनो संरंभ समारंभ आरंभ विगेरे कंइ पण महान आरंभ करीने जुदा जुदा पाप कृत्योवडे एटले छापरुं ढांकवुं, लींपाववु, संथारा माटे बारणुं ढांकवा माटे, विगेरे प्रयोजनने उद्देशीने प्रथम काचुं पाणी नांखे, अथवा अग्नि प्रथम बाळे, विगेरेथी आरंभ करेला मकानमां स्थान विगेरे करतां बे पक्षनुं कर्म सेवन करे छे. ते आ प्रमाणे-आधाकर्मी वसतिना सेवनथी गृहस्थपणुं अने तेमां ममत्वना कारणे राग द्वेषपणुं छे, तेथी तथा इर्यापथ अने सांपरायिक इत्यादि दोषो छे. तेथी ते महासावद्य क्रिया अभिधान वसति छे.

हवे अल्प क्रियावाळी वसति कहे छे.

इह खलु पाईणं वा० रोयमाणेहिं अप्पणो सयट्ठाए तत्थ २ अगारीहिं जाव उज्जालियपुव्वे भवइ, जे भयंतारो तहप्प० आएसणाणि वा० उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं एगपक्खं ते कम्मं सेवंति, अयमाउसो ! अप्पसावज्जकिरिया यावि भवइ ९ ॥ एवं खलु तस्स० (सू० ८६) ॥ २-१-१-२-२ ॥ शय्यैषणायां द्वितीयोद्देशकः ॥

प्रथम बताव्या प्रमाणे ते घरमां गृहस्थोए पोताना माटे ते घरमां कंइ पण सावद्य क्रिया करी होय, तेवा मकानमां पाछळथी साधुओ आवी उतरे तो ते एक पक्षनुं कर्म सेवन करे छे, आवा मकानमां उतरतां साधुओने अल्प (दोष विनानी) क्रिया छे, अर्थात् ते मकानमां उतरतां दोष नथी. आज साधुनुं सर्वस्व छे.

" कालइकंतु १ वठाण २ अभिकंता ३ चेव अणभिकंता ४ य । वज्जा य ५ महावज्जा ६ सावज्ज ७ मह ८ ऽप्प-
किरिआ ९ य ॥ १ ॥ "

१ काल अतिक्रांत २ उपास्थान ३ अभिक्रांत ४ अनभिक्रांत ५ वर्ज्य ६ महावर्ज्य सावद्य ८ महासावद्य ९ अल्पक्रिया. एम नव प्रकारे नव सूत्रोमां वसति बतावी. तेमां अभिक्रांत अने अल्पक्रिया ए बे वसति योग्य छे, बाकीनी अयोग्य छे.

आ प्रमाणे बीजा अध्यनननो बीजो उद्देशो पूरो थयो.

त्रीजो उद्देशो,

बीजो कह्या पछी त्रीजो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां अल्पक्रियावाळी शुद्ध वसति बतावी. अहीं पण प्रथम सूत्रथी तेथी विपरीत शय्या बतावे छे.—

से य नो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे नो य खलु सुद्धे इमेहिं पाहुडेहिं, तंजहा—छायणओ लेवणओ संथारदुवारपिहणओ पिंडवाएसणाओ, से य भिक्खू चरियारए ठाणरहे निसीहियारए सिज्जासंथारपिंडवाएसणारए, संति भिक्खुणो एवमक्खाइणो उज्जुया नियागपडिवन्ना अमायं कुव्वमाणा वियाहिया, संतेगइया पाहुडिया उक्खित्तपुव्वा भवइ, एवं निक्खित्तपुव्वा भवइ, परिभाइयपुव्वा भवइ, परिभुत्तपुव्वा भवइ परिट्ठवियपुव्वा भवइ, एवं वियागरेमाणे समियाए वियागरेइ ?, हंता भवइ ॥ (सू० ८७)

अहिं कोइ वखत कोइ साधु वसति शोधवा माटे अथवा भिक्षा लेवा माटे गृहस्थने घरे जतां कोइ श्रद्धाळु श्रावक आ प्रमाणे कहे, के आ गाममां घणुं अन्न पाणी मळे छे, माटे अहियां आपे वसति याचीने रहेवुं योग्य छे,—

आ प्रमाणे कहेवाथी साधु कहे, के हे श्रावक ! पिंड (अन्न पाणी) प्रासुक (निर्दोष) दुर्लभ नथी पण ते मळवा छतां ज्यां बेसीने गोचरी करीए ते आधाकर्मादि दोष रहित उपाश्रय मळवो दुर्लभ छे, तेम 'उं छ' एटले छादन विगेरे उत्तर गुणना दोषथी पण रहित होय (ते मळवो दुर्लभ छे) तेज बतावे छे—

'अहेसणिज्ज' एटले मूळ उत्तर गुणोमां दोष न लगाडे ते एषणीय उपाश्रय होय छे, तेवो मळवो दुर्लभ छे. ते मूळ उत्तर गुणो आ प्रमाणे छे.

पट्टी वंसो दो धारणाओ चत्तारि मूलवेलीओ। मूलगुणेर्हि विसुद्धा एसा आहागडा वसही ॥ १ ॥

पीठनो वांस बे धारण चार मूळवेलीओ आवुं कांइ पण स्थान गृहस्थे पोताना माटे बनावेलुं होय, तो मूळ गुण विशुद्ध वसति जाणवी.

वंसगकडणोकंपण छायण लेवण दुवारभूमीओ परिकम्मविप्पमुक्का एसा मूलुत्तरगुणेसु ॥ २ ॥

वांसने कपाववा, ठोकठाक करवी, बारणानी भूमिने आच्छादन करवुं, लेपन करवुं, आ परिकर्मथी विप्रमुक्तमूळ उत्तर गुणो वडे विशुद्ध छे.

दूमिअधूमिअवासिअउज्जोवियबलिकडा अ वत्ता य। सित्ता सम्मट्ठावि अ विसोहिकोडीगया वसही ॥ ३ ॥

धोळेली, धुप करेली, सुगंधीवाळी बनावेली, उद्योत करेली, बलिपूजन करेली खुल्ली मुकेली, पाणीथी सिंचेली, संमृष्ट करेली, आ विशोधी कोटीमां गयेली वसति छे.

आ जग्याए प्राये उत्तर गुणोनो संभव होवाथी तेनेज बतावे छे, अने आ वसति आ कर्मना उपादान कर्मोवडे शुद्ध थती नथी ते बतावे छे.—

दर्भ विगेरेथी छायेल होय, छाण विगेरेथी लींपेल होय, अपवर्त्तक ने आश्रयी संस्तारक कर्यो होय, तथा बारणुं नानुं मोटुं

कर्युं होय, तथा कमाडने आश्रयी ढांकवुं, उघाडवुं विगेरे छे. वळी— पिंडपात एषणाने आश्रयी दोषो कहे छे.

कोइ स्थानमां साधु रहेला होय तो तेमने ते घरनो मालिक शय्यातर पोताना घरमां आहार लेवा प्रार्थना करे, तेना घरमां आहार लेवो न कल्पे. तेथी ना पाडवाथी तेने द्वेष थाय, विगेरे कारणे उत्तर गुणो युक्त उपाश्रय मळवो दुलर्भ छे, माटे बने त्यां सुधी साधुए शुद्ध उपाश्रय जोइने उतरवुं तेथी कह्युं छे के,—

मूलुत्तरगुणसुद्धं थीपसुपंडगविवज्जियं वसहिं । सेवेज्ज सव्वकालं विवज्जए हुंति दोसा उ ॥ १ ॥

मूळ उत्तर गुणथी शुद्ध तथा स्त्री पशु नपुंसकथी वर्जित मकान सर्व काळ सेवे, अने दोषोने दूर करे.

मूळ उत्तर गुण शुद्ध मळवा छतां भणवा विगेरेनी सगवडता युक्त तथा खाली मळवो मुश्केल छे, ते कहे छे–तेमां भिक्षाचर्यामां रक्त, निरोधना असहिष्णुपणायी संक्रमणना स्वभाववाळा (योग्य विहार करनारा) तथा स्थानरत ते कायोत्सर्ग करनारा, निषीधिकारत ते स्वाध्याय करनारा, शय्याने सर्वांग वडे सुखथी सुवाय, ते संस्तारक २॥ हाथ प्रमाणवाळो, अथवा शयन ते शय्या छे, तेने माटे संस्थारक (संथारो) ते शय्या संस्तारक रत ते मंदवाड विगेरेना कारणे सूता होय, तथा गोचरी मळेथी ग्रास एषणारत छे, आ प्रमाणे केटलाक साधुओ यथास्थित वसतिना गुण दोषो बतावनारा थाय छे, तेओ ऋजु छे, तथा नियागते संयम के मोक्ष छे, तेने पामेला छे, तथा तेओ माया (कपट) रहित होवाथी उत्तम गुणवाळा साधुओ छे. आ प्रमाणे गृहस्थोने वसतिना गुण तथा दोषो बतावीने साधुओ जाय, त्यारपछी निर्दोष वसति साधुओने आपवा योग्य न होय, तो श्रावको साधु माटे वसति बनावे, अथवा पूर्वे करेली अपूर्ण होय तो छादन विगेरेथी रहेवा योग्य बनावे, पछी उपदेश आपनारा अथवा बीजा साधुओ

आवेथी केटलाक श्रावको छळ करे छे, अने कहे के (प्राभृतिकानी पेठे प्राभृतिक वसति होय तेनो अर्थ आ छे के, दानने माटे कल्पेली राखेल छे.) वसति तेवी वसति पूर्वे साधुओने बतावेली होय, के तमे ज्यारे आवो त्यारे अहिं उतरजो, ते उत्क्षिप्त पूर्वा वसति छे, तथा एम कहे के अमे पूर्वे आ मारे रहेवा माटे बनावी छे, ते निक्षिप्त प्रपूर्वा छे, तथा "परिभाइ यपुव्व" ते अमे आ वसति पहेलांथी अमारा भत्रिजा विगेरे माटे कल्पेली छे, तथा बीजा गृहस्थोए पण आ रहेवानुं मकान वापर्युं छे, तथा ते गृहस्थ कहे छे के अमे एने प्रथमथी पाडी नांखवा राखेल छे, जो तमारे आ उपयोगमां न आवे तो अमे एने पाडी नाखीशुं, आ प्रमाणे भक्तिथी कोइ गृहस्थ छलना करे तो साधुए ठगवानुं नहि; पण दोषोने दूर करवा प्रयत्न करवो.

प्र०—आ प्रमाणे छलनाना संभवमां पण यथावस्थित वसतिना गुण दोषो गृहस्थे पूछतां साधु कहे तो शुं सम्यकज प्रकट करशे? अथवा एवुं प्रकट करतो साधु शुं सम्यक् प्रकट कहेनारो थशे? आचार्य कहे हा! (हंत! अव्यय शिष्यना आमंत्रणमां छे) ते सम्यकज कहेनारो थाय छे. हवे तेवा कार्यना वशथी चरक कार्पटिक विगेरे साथे उतरवुं पडे तो तेनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा खुड्डियाओ खुड्डदुवारियाओ निययाओ संनिरुद्धाओ भवन्ति, तहप्पगा० उवस्सए राओ वा वियाले वा निक्खममाणे वा प० पुरा हत्थेण वा पच्छा पाएण वा तओ संजयामेव निक्खमिज्ज वा २, केवली बूया आयाणमेयं, जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा छत्तए वा मत्तए दंडए वा लट्ठिया वा भिसिया वा नालिया वा चेलं वा चिलिमिली वा चम्मए वा चम्मकोसए वा चम्मछेयणए वा दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले भिक्खू य राओ वा वियाले वा निक्खममाणे वा २ पयलिज्ज वा २; से तत्थ पयलमाणे वा० हत्थं वा० लूसिज्ज वा ४ जाव

ववरोविज्ज वा, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठं जं तह० उवस्सए पुरा हत्थेण निक्ख० वा पच्छा पाएणं तओ संजयामेव नि० पविसिज्ज वा
ते भिक्षु आवो उपाश्रय जाणे, के नानी वसति छे, अथवा दरवाजा नाना छे, अथवा ते नीची छे, अथवा गृहस्थथी भराइ गइ छे, अने ते वसतिमां-साधुने उतरवानी जग्यामां शय्यातरे बीजा केटलाक दिवस रहेनार चरक विगेरेना साधुने उतरवा आपेल छे, अथवा साधुना आव्या पहेलां ते जग्यामां चरक विगेरे उतरेला छे, अने पाछळथी साधुने तेमां जग्या आपेल छे, तो रात्रे के परोडीए कारण वशे बहार जतां आवतां जेम चरक विगेरेना साधुना उपकरणने उपघात न थाय, अथवा तेना शरीरना अवयवनो उपघात न थाय, तेम प्रथम हाथ फेरवताजवुं अने यतनाथी जवा आववानी क्रिया करवी, जो तेम न करतां अयतनाथी चाले तो केवळी तेमां कर्म आदन बतावे छे. एटले त्यां श्रमण ब्राह्मणोना छत्रने मात्राने दंडने लाकडीने भिसिका नालिका वस्त्रने चिलिमिली (यमनिका—पडदो) ने चामडाने चर्मकोश पगमां तलीये पहेरवानी चामडानी खल्लक विगेरे चर्मछेदनक दुर्बद्ध दुर्निक्षिप्त वस्तु पडी होय, त्यां अनिष्कंप होय ते चलाचल थतां दोष लागे तेथी पोते न अथडाय तेम साधुए चालवुं, नहि तो तेना उपकरणने नुकशान थाय अथवा तेना हाथ पगने नुकशान थाय, माटे संभाळीने जवुं आववुं,

से आगंतारेसु वा अणुवीय उवस्सयं जाइज्जा, जे तत्थ ईसरे जे तत्थ समहिट्ठाए ते उवस्सयं अणुन्नविज्जा—कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिन्नायं वसिस्सामो जाव आउसंतो! जाव आउसंतस्स उवस्सए जाव साहम्मियाइं ततो उवस्सयं गिण्हिस्सामो तेण परं विहरिस्सामो ॥ (सू० ८९)

हवे वसतिनी याचनानी विधि कहे छे.

ते भिक्षु पूर्वे बतावेला आगंतार विगेरे स्वरुपवाळा रहेवा योग्य मकानमां प्रवेश करीने अने विचार करीने आ उपाश्रय

केवो छे? एनो मालिक कोण छे? विगेरे पूछीने उपाश्रयने याचे.

हवे जे घरनो स्वामी छे, अथवा घरना मालिके तेनी रक्षा माटे जेने सोंप्युं होय, तेनी पासे उपाश्रयनी याचना करे, ते आ प्रमाणे हे आयुष्मन्! तारी इच्छाथी तुं आज्ञा आपे तो अमुक दिवस आटला भागमां अमे रहीशुं. त्यारे ते वखते गृहस्थ कहे, के तमने केटला दिवस जरुर पडशे? त्यारे साधुए कहेवुं, के शीयाळे, उनाळे खास कारण विना एक मास अने चोमासुं होय तो चार मासनी जरुर छे, एम याचना करवी, त्यारे कदाच गृहस्थ कहे, के मारे तेटलो काळ अहीं रहेवुं नथी, अथवा तेटलो काळ वसति अपाय तेम नथी, त्यारे साधुए ते मकान लेवानुं कांइ खास कारण होय तो कहेवुं के ज्यां सुधी आप रहो त्यां सुधी अथवा आपना कबजामां होय त्यां सुधी अमे एमां रहीशुं, त्यार पछी अमे विहार करी जइशुं, पण गृहस्थ पूछे, के साधुनी संख्या केटली छे? तो कहेवुं, के अमारा आचार्य समुद्र जेवा छे, तेथी परिमाण नक्की नथी, कारण के कार्यना अर्थीओ केटलाक आवे, अने भणवा विगेरेनुं कृत्य थइ रहेतां केटलाक जाय छे, तेथी जेटला हाजर हशे, तेटला माटे याचना छे, अर्थात् साधुए घरधणी साथे साधुनुं परिमाण नक्की न करवुं, वळी—

से भिक्खू वा० जस्सुवस्सए संवसिज्जा तस्स पुव्वामेव नामगुत्तं जाणिज्जा, तओ पच्छा तस्स गिहे निमंतेमाणस्स वा अनिमंतेमाणस्स वा असणं वा ४ अफासुयं जाव नो पडिगाहेज्जा ॥ (सू० ९०)

ते साधु जेना घरमां निवास करे तेनुं प्रथम नाम गोत्र जाणी ले, त्यार पछी तेना घरमां निमंत्रणा करे, अथवा न करे तो पण चारे प्रकारनो अप्रासुक आहार ग्रहण न करे (नाम—गोत्र पूछवानुं कारण ए छे के आवेला साधु परोणाओ सुखेथी घर पूछता आवी शके.)

से भिक्खू वा० से जं० ससागारियं सागणियं सउदयं नो पन्नस्स निक्खमणपवेसाए जावऽणुचिंताए तहप्पगारे उवस्सए नो ठा०

ते भिक्षु एवुं जाणे के आ उपाश्रयमां गृहस्थ रहे छे. अथवा अग्नि बळे छे, अथवा पाणी (सचित) रहे छे, त्यां आगळ मज्ञसाधुए काउसग्ग करवा के ध्यान करवा के भणवा रहेवुं नहि. (त्यां निवास न करवो)

से भिक्खू वा० से जं० गाहावइकुलस्स मज्झमज्झेणं गंतुं पंथए पडिबद्धं वा नो पन्नस्स जाव चिंताए तह उ० नो ठा० ॥ (सू० ९२

जे उपाश्रयमां उतर्यां होय त्यां गृहस्थना घर मध्येनो मुख्य रस्तो होय त्यां बहु अपायनो संभव होवाथी तेवी जग्याए न रहेवुं

से भिक्खू वा० से जं०, इह खलु गाहावई वा० कम्मकरीओ वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा जाव उद्दवंति वा नो पन्नस्स०, सेवं नच्चा तहप्पगारे उ० नो ठा० ॥ (सू० ९३)

ते बुद्धिमान् साधु एम जाणे, के आ जग्यामां गृहस्थ अथवा तेना घरमां काइपण नोकर विगेरे परस्पर लडे छे. एक बीजाने उपद्रव करे छे, तेवुं जाणीने ते घरमां साधुए निवास न करवो, कारण के त्यां रहेतां भणवामां के समाधिमां विघ्न थाय छे.

से भिक्खू वा० से जं० पुण० इह खलु गाहावई वा कम्मकरीओ वा अन्नमन्नस्स गायं तिल्लेण वा नव० घ० वसाए वा अब्भंगेति वा मक्खेंति वा नो पण्णस्स जाव तहप्प० उव० नो ठा० (सू० ९४)

ते साधु एम जाणे के आ घरमां गृहस्थ अथवा नोकरडी विगेरे कोइपण परस्पर एक बीजाना शरीरने तेल, माखण, घी के चरबीथी चोळे छे, अथवा कल्क विगेरेथी उद्वर्त्तन करे छे, त्यां मज्ञसाधुने निवास करवो न कल्पे.

से भिक्खू वा० से जं पुण०—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ अन्नमन्नस्स गायं सिणाणेण वा क० लु० चु०

प० आघंसंति वा पघंसंति वा उव्वलंति वा उव्वट्टिंति वा नो पन्नस्स० ॥ (सू० ९५)

ते भिक्षु एम जाणे के आ घरमां गृहस्थो के घरनां माणसो परस्पर स्नान करे छे, अथवा शरीरे सुगंधी पदार्थो तेल चूर्ण विगेरे एकवार घसे छे, अथवा वारंवार घसे छे, तेवा मकानमां बुद्धिमान् साधुए न उतरवुं.

से भिक्खू० से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा, इह खलु गाहावती वा जाव कम्मकरी वा अण्णमण्णस्स गायं सिओदग० उसिणो० उच्छो० पहोयंति सिंचंति सिणावंति वा नो पन्नस्स जाव नो ठाणं० ॥ (सू० ९६)

ते भिक्षुने एम मालूम पडे के आ उपाश्रयमां गृहस्थना घरनां माणसो ठंडा पाणीथी के उना पाणीथी परस्पर छांटे छे, धुए छे, सिंचे छे, स्नान करावे छे, तेवा स्थानमां बुद्धिमान् साधुने उतरवुं न कल्पे.

से भिक्खू वा० से जं० इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा निगिणा ठिया निगिणा उल्लीणा मेहुणधम्मं विन्नविंति रहस्सियं वा मंतं मंतंति नो पन्नस्स जाव नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ॥ (सू० ९७

जे घरमां स्त्रीओ कपडां काढीने बेमर्याद पणे बेसे, अथवा संसारसंग संबंधी कंइ पण छानी वात एक बीजाने रात्रि संबंधी कहे अथवा कांइपण खानगी वात अकार्य संबंधी चिंतवे, तेवा स्थानमां साधुए निवास न करवो, कारण के त्यां रहेवाथी स्वाध्यायमां विघ्न थाय, अने चित्तमां कुवासना विगेरेना दोषो थाय छे. वळी—

से भिक्खू वा से जं पुण उ० आइन्नसंलिक्खं नो पन्नस्स० ॥ (सू० ९८)

ते भिक्षु एम जाणे के आ घरमां उत्तम शृंगाररसनां चित्रो छे, त्यां प्रज्ञसाधुए न उतरवुं, कारण के त्यां उतरवाथी भींतोनां

चित्रो जोवाथी भणवामां विघ्न थाय, तथा तेवां स्त्री संबंधी चित्रो जोवाथी पूर्वे भोगवेला संसार भोगो याद आवे, तथा न भोगवेला नवा साधुने कौतुक विगेरेनो संभव थाय छे. हवे फलहक विगेरे संस्तारक संबंधी कहे छे.

से भिक्खू वा० अभिकंखिज्जा संथारगं एसित्तए, से जं० संथारगं जाणिज्जा सअंडं जाव ससंताणयं, तहप्पगारं संथारं लाभे संते नो पडि० १ ॥ से भिक्खू वा से जं० अप्पंडं जाव संताणगरुयं तहप्पगारं नो प० २ ॥ से भिक्खू वा० अप्पंडं लहुयं अपाडिहारियं तह० नोप० ३ ॥ से भिक्खू वा० अप्पंडं जाव अप्पसंताणगं लहुअं पाडिहारियं नो अहाबद्धं तहप्पगारं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ४ ॥ से भिक्खू वा २ से जं पुण संथारगं जाणिज्जा अप्पंडं जाव संताणगं लहुअं पाडिहारिअं अहाबद्धं, तहप्पगारं संथारग लाभे संते पडिगाहिज्जा ५ ॥ (सू० ९९)

ते साधुने सुवा माटे पाटीउं जोइए ते संबंधी आ सूत्रमां पांचभांगा बताव्या छे.

(१) जो ते पाटीयामां घुण विगेरेना किडानां इंडा जाणवामां आवे, अर्थात् ते सडेलुं होय, काणां पडेलां होय, काणा पडेलां होय तेमां 'जीवात' ना कारणे संयम विराधनाथी ते न कल्पे, (२) जो ते पाटीयुं घणुं भारे होय तो वजनना लीधे उंचुं नीचुं करतां पोतानी आत्मविराधना थाय तेथी ते पण न कल्पे (३) ते पाटीयाने प्रतिहार (गृहस्थ पाछुं राखवा तैयार) न होय तो लेवुं-मुकवुं नकल्पे कारणके परठवतां दोष लागे, (४) सांधा बरोबर न जोड्या होय तो तेना सांधा नीकळी जवाथी पडी जवाय के अंगने नुकशान थाय. आ चारे भांगावाळुं पाटीउं दोषित होवाथी बुद्धिमान साधुए लेवुं नहिं, पण पांचमां भांगामां बतावेल तथा काणा विनानुं घणुं भारे नहि, पाछुं राखवा हा पाडे, तथा पाटीयांना के लाकडाना टुकडा जडेला होय, सांधा मजबुत कर्या होय तेवुं दोष

विनानुं पाटीयुं मळे तो साधुए लेवुं. हवे संथाराने उद्देशीने अभिग्रहोनुं विशेष कहे छे

इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइक्कम—अह भिक्खू जाणिज्जा इमाइं चउहिं पडिमाहिं संथारगं एसित्तए, तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा २ उद्दिसिय २ संथारगं जाइज्जा, तंजहा—इक्कडं वा कढिणं वा जंतुयं वा परगं वा मोरगं वा तणगं वा सोरगं वा कुसं वा कुच्चगं वा पिप्पलगं वा पलालगं वा, से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोति वा भ० दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं संथारगं? तह० संथारगं सयं वा णं जाइज्जा परो वा देज्जा फासुयं एसणिज्जं जाव पडि० पढमा पडिमा सू० १००

पूर्वे बतावेला घरोना दोषो तथा संथाराना दोषो दूर करीने तथा हवे पछीना पण संथाराना दोषो टाळीने संथारो लेवो. ते कहे छे ते भिक्षु एम जाणे, के आचार अभिग्रहनी प्रतिमाओ वडे संथारो शोधवानो छे, बतावे.

(१) उद्दिष्ट २ प्रेक्ष्य ३ तेना घरनोज ४ यथासंस्तृत छे. तेमां उद्दिष्टमां फलहक विगेरेमांथी कोइ पण एक लइश, पण बीजो नहि. आ प्रथम प्रतिमा छे,

(२) जेवी मनमां पूर्वे धारी छे, तेवी आंखे देखीश तोज लइश पण बीजी नहि.

(३) ते पण ते शय्यातरना घरमां तैयार हशे तोज लइश; पण बीजेथी लावीने सुइश नहि,

(४) ते पण संस्तारक फलहक विगेरे जेवो हशे तेवोज वापरीश. आ चार प्रतिमाओमां गच्छमांथी निकळेला जिन कल्पी विगेरेने प्रथमनी बे कल्पती नथी, पाछली बेमांथी कोइपण कल्पे छे, पण स्थविर कल्पीने चारे कल्पे छे, ते सूत्र वडे बतावे छे, तेमांनी पहेलीने उद्देशी उद्देशीने इक्कड विगेरे कोइपण लइश, तेने ते मल्या पछीथी बीजुं मळतुं होय तो प्रण ले नहि, इक्कड तथा

नीचलां पाथरणां घणी शरदी (भीनाश) वाळां देशमां साधु साध्वीओने पाथरवानी आज्ञा छे, ते इक्कड, कढिण (सादडी) जंतुक ने एक जातना घासनुं पाथरणुं छे, परक जेनावडे फुलो गुंथाय तेनुं बनावेलुं अथवा मोरनां पीछां गुंथीने बनावेल, तथा घासनुं, तथा शरना सांठानुं, दर्भना घासनुं, कूचडाना रेसानुं, पीपळाना पाननुं, तथा पराळना घासनुं होय, तेवुं कोइ पण पाथरणुं याचे, तेमांनुं कोइ पण पाथरणुं आपे, तो ते लेइने वापरे.

अहावरा दुच्चा पडिमा–से भिक्खू वा० पेहाए संथारगं जाइज्जा, तंजहा—गाहावइं वा कम्मकरिं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा–आउ०! भइ०! दाहिसि मे? जाव पडिगाहिज्जा, दुच्चा पडिमा २ ॥ अहावरा तच्चा पडिमा–से भिक्खू वा० जस्सुवस्सए संवसिज्जा जे तत्थ अहासमन्नागए, तंजहा—इक्कडे इ वा जाव पलाले इ वा तस्स लाभे संवसिज्जा तस्सालाभे उक्कुडुए वा नेसज्जिए वा विहरिज्जा तच्चा पडिमा ॥ ३ (सू० १०१)

प्रथमनी प्रतिमा करतां आ बीजीमां आटलुं विशेष छे, के आ संस्तारक नजरे देखे, तोज मागे, ते गृहस्थ स्वयं आपे, अथवा साधु याचना करे, अने आपे तो लइने वापरे.

त्रीजी प्रतिमा—जेने त्यां उतर्यो होय, तेना घरमांज तेवुं कंइ आसन मळे तो लेइने वापरे, पण जो न मळे तो ते गच्छमां रहेल अथवा जिनकल्पी विगेरे होय ते उत्कटुक आसने बेसीने अथवा पद्मासन (पलांठी वारीने) विगेरेथी रात्री पूरी करे

अहावरा चउत्था पडिमा–से भिक्खू वा अहासंथडमेव संथारगं जाइज्जा, तंजहा–पुढविसिलं वा कट्ठसिलं वा अहासंथडमेव, तस्स लाभे संते संवसिज्जा, तस्स अलाभे उक्कडुए वा २ विहरिज्जा, चउत्था पडिमा ४ ॥ (सू० १०२)

आ प्रतिमा धारी साधु ज्यां उतर्यो होय, त्यां पत्थरनी शिला अथवा लाकडानुं सुवा योग्य पाटीउं विगेरे मळे अने गृहस्थ पासे याचतां मळे तो वापरवुं, नहि तो उत्कटुक अथवा पलांठी वारीने रात पूरी करवी.

इच्चेया णं चउण्हं पडिमाणं अन्नयरं पडिमं पडिवज्जमाणे तं चेव जाव अन्नोऽन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति ॥ (सू० १०३)

आ चारे प्रतिमाओमांनी कोइ पण प्रतिमाने स्वीकारनारो साधु होय ते बीजी प्रतिमा स्वीकारनारने निंदे नहि, कारण के ते बधा जिनेश्वरनी आज्ञाने अवलंबीने समाधिथी रहे छे.

से भिक्खू वा० अभिकंखिज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए, से जं पुण संथारगं जाणिज्जा सअंडं जाव ससंताणयं तहप्प० संथारगं नो पच्चप्पिणिज्जा ॥ (सू० १०४) हवे संथारो पाछो आपवानी विधि कहे छे.

भिक्षु पाछो आपवानो संथारो ज्यारे पाछो आपवा चाहे त्यारे तेमां देखे के गरोळी विगेरेनां इंडांथी व्याप्त होय अने पडिलेहण करवा योग्य न होय तो ते पाछुं आपे नहिं.

से भिक्खू० अभिकंखिज्जा सं० से जं० अप्पंडं० तहप्पगारं० संथारगं पडिलेहिय २ प० २ आयाविय २ विहुणिय २ तओ संजयामेव पच्चप्पिणिज्जा ॥ (सू० १०५)

पछी ते अमुक वखत पछी जाणे के ते संस्थारमांनुं इंडुं जीव रहित थयुं छे तेवा संथारानी प्रतिलेखना करीने पुंजीने तडके तपावीने सेज साज जयणाथी झाटकीने गृहस्थने पाछो आपे. हवे वसतिमां वसवानी विधि कहे छे,

से भिक्खू वा० समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव पन्नस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहिज्जा,

केवली बूया आयाणमेयं—अपडिलेहियाए, उच्चारपासवणभूमीए, से भिक्खू वा० राओ वा वियाले वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेमाणे पयलिज्ज वा २, से तत्थ पयलमाणे वा २ हत्थं वा पायं वा जाव लूसेज्ज व पाणाणि वा ४ ववरोविज्जा, अह भिक्खू णं पु० जं पुव्वामेव पन्नस्स उ० भूमिं पडिलेहिज्जा ॥ (सू० १०६)

ते साधु—साध्वीए एक जग्याए रहेतां के विहार करतां प्रथमथी स्थंडिल मात्रानी जग्या जोइ लेवी, जो दिवस छतां जोइ न राखे तो केवळी प्रभु तेमां दोष बतावे छे, कारण के ते भिक्षु के साध्वी रात्रे के विकाले तेवा स्थानमां स्थंडिल मात्र परठवतां पग खसी जतां तेना हाथ पग भांगे, अथवा इंद्रियोने नुकशान थाय अथवा अन्य प्राणीना प्राण पण ले, एटला माटे साधु—साध्वीए प्रथमथी ठल्ला मात्रानी जग्या दिवस छतां जोइ लेवी.

से भिक्खू वा २ अभिकंखिज्जा सिज्जासंथारगभूमिं पडिलेहित्तए नन्नत्थ आयरिएण वा उ० जाव गणावच्छेएण वा बालेण वा वुड्ढेण वा सेहेण वा गिलाणेण वा आएसेण वा अंतेण वा मज्झेण वा समेण वा विसमेण वा पवाएण वा निवाणए वा, तओ संजयामेव पडिलेहिय २ पमज्जिय २ तओ संजयामेव बहुफासुयं सिज्जासंथारगं संथरिज्जा॥(सू० १०७)

ते साधुए प्रथमथी आचार्य उपाध्याय विगेरेथी गणावच्छेदक सुधीना अथवा बाळ वृद्ध नवा शिष्य, मांदा अथवा परोणानी जग्या छोडी दइने छेडेनी जग्या अथवा मध्यमां अथवा सम के विषम (खडबचडी) जग्या होय; पवन आवे न आवे, तो पण तेमां संतोष राखी पडिलेहणा प्रमार्जन करीने संथारो पाथरवो. हवे शयननी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० बहु संथरित्ता अभिकंखिज्जा बहुफासुए सिज्जासंथारए दुरुहित्तए॥ से भिक्खू० बहु० दुरुहमाणे पुव्वामेव

ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय २ तओ संजयामेव बहु० दुरूहित्ता तओ संजयामेव बहु० सइज्जा ॥ (सू० १०८)

ते साधु-साध्वीए बहु पासुक (निर्दोष) जग्यामां संथारो पाथरीने तेमांज पोते यतनाथी शयन करवुं पण ते साधु—साध्वी प्रथमथी ते शय्यामां सुवा पहेलां पगथी माथा सुधीनी जग्या पूंजीवी तथा पोतानुं आखुं शरीर तथा पग प्रमार्जीने बहु संभाळीने यतनाथी सुवुं.

हवे सुतेलानी विधि कहे छे,

से भिक्खू वा० बहु० सयमाणे नो अन्नमन्नस्स हत्थेण हत्थं पाएण पायं काएण कायं आसाइज्जा, से अणासायमाणे तओ संजयामेव बहु० सइज्जा ॥ से भिक्खू वा उस्सासमाणे वा नीसासमाणे वा कासमाणे वा छीयमाणे वा जंभायमाणे वा उड्डोए वा वायनिसग्गं वा करेमाणे पुव्वामेव आसयं वा पोसियं वा पाणिणा परिपेहित्ता तओ संजियामेव ऊससिज्ज वा जाव वायनिसग्गं वा करेज्जा ॥ (सू० १०९)

ते साधु विगेरेए पोते संथारामां सुता एक बीजा साधुने हाथ पगथी के कायाथी अडकवुं नहिं. ते प्रमाने अडक्या विना सुवुं (आमां सूचव्युं के साधुए बंनेना हाथ न पहोंचे तेटले दूर संथारो करवो) तथा साधुए श्वासोश्वासलेतां, खांसी आवतां, छींक खातां, बगासुं आवतां, ओडकार आवतां अथवा वायु संचार थतां प्रथम पोताना हाथ वडे यतनाथी मोढुं के ते जग्याने सहेज ढांकीने करवुं (आ सूत्रमां मोढुं उघाडुं राखी बगासुं खातां उडतां जंतु घुसी जवावाथी उलटी थाय, अथवा पोतानो खराब वास जोरथी नीकळतां बीजाने कलेश थाय, नी वली जग्या ढांकवानुं कारण जोरथी वा संचार थतां रोगादि कारणे कपडां खराब थतां अटके,)

हवे समान्यथी शय्याने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा० समा वेगया सिज्जा भविज्जा विसमा वेगया सि० पवाया वे० निवाया वे० ससरक्खा वे० अप्पससक्खा वे० सदंसमसगा वेगया अप्पदंसमसगा० सपरिसाडा वे० अपरिसाडा० सउवसग्गा वे० निरुवसग्गा वे० तहप्पगाराहिं सिज्जाहिं संविज्जमाणाहिं पग्गहियतरागं विहारं विहरिज्जा नो किंचिवि गिलाइज्जा, एवं खलु० जं सव्वट्ठेहिं सहिए सया जएत्तिबेमि (सू० ११०) २–१–२–२ ॥

ते साधुने संथारा माटे कोइ वखते सरखी कोइ वखते खरबचडी कोइ वखते पवनवाळी कोइ वखते हवा विनानी कोइ वखते धूळवाळी कोइ वखते विना धूळनी डांस मच्छरवाळी के डांस मच्छर विनानी अथवा रहेवाने उचित अथवा अनुचित उपसर्गवाळी के विना भयनी एवी विचित्र जातिनी जग्या मळे तो पण तेमां समभाव धारण करीने रहेवुं, पण ग्लानि के दीनताभाव के अहंकार लाववो नहि. आज साधुनुं सर्वस्व छे, माटे तेमां जयणाथी सदाए वर्त्ते.

शय्या नामनुं बीजुं अध्ययन समाप्त थयुं.

ईर्या नामनुं त्रीजुं अध्ययन.

बीजुं अध्ययन कहीने त्रीजुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, प्रथम अध्ययनमां धर्म शरीरनुं पालन करवा पिंड बताव्यो, ते पिंड आ लोक परलोकना अपायना रक्षण माटे अवश्ये वसति (मकान)मां वापरवो, तेथी बीजा अध्ययनमां वसतिनुं स्वरूप

बताव्युं; हवे ते पिंड तथा वसतिने शोधवा माटे गमन करवुं, ते आ प्रमाणे करवुं, आ प्रमाणे न करवुं, ते अहीं बताववानुं छे, आ संबंधे आवेला आ अध्ययनना चार अनुगममां नाम निक्षेपण माटे निर्युक्तिकार कहे छे.

नामं १ ठवणाइरिया २ दव्वे ३ खित्ते ४ य काल ५ भावे ६ य। एसो खलु इरियाए निक्खेवो छव्विहो होइ ॥३०५॥

नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्र काळ अने भाव एम छ प्रकारे इर्यानो निक्षेपो छे, तेमां नाम स्थापना सुगम छोडीने द्रव्य इर्या बताववा माटे कहे छे.

दव्वइरियाओ तिविहा सचित्ताचित्तमीसगा चेव। खित्तंमि जंमि खित्ते काले कालो जहिं होइ ॥ ३०६ ॥

तेमां द्रव्य इर्या सचित्त अचित्त मिश्र एम त्रण भेदे छे, अर्थात् इर्या, इरण, गमन त्रणे एक अर्थमां छे, तेमां सचित्त एवो वायु अथवा पुरुष होय तेनुं गमन ते सचित्त इर्या जाणवी, एज प्रमाणे परमाणु आदि द्रव्यनुं गमन ते अचित्त गमन छे. तथा मिश्र द्रव्य इर्या ते रथादि (जेमां अचित्त रथ सचित्त बळद के माणस) नुं गमन जाणवुं, क्षेत्रइर्या ते जे क्षेत्रमां गमन कराय, अथवा इर्यानुं वर्णन कराय ते क्षेत्रइर्या, तेज प्रमाणे जे काळमां गमन थाय. अथवा इर्यानुं वर्णन थाय ते काळइर्या जाणवी.

हवे भाव इर्या बताववा कहे छे.

भावइरियाओ दुविहा चरणरिया चेव संजमरिया य। समणस्स कहं गमणं निद्दोसं होइ परिसुद्धं ॥ ३०७ ॥

भाव विषयनी इर्या बे प्रकारनी छे, चरण इर्या, अने संयम इर्या तेमां संयम इर्या १७ प्रकारनुं संयम अनुष्ठान छे, अथवा असंख्य संयम स्थानमां एक संयम स्थानथी बीजा संयम स्थानमां जतां संयम इर्या थाय छे, पण चरण इर्या तो "अभ्र वभ्र मभ्र

चर" धातुनो गति अर्थ छे, चरतिनो भाव ल्युट रुप चरण तेज रुपे इर्या ते चरण इर्या छे. अर्थात् चरणनो अर्थ गति अथवा गमन छे. अने ते श्रमणनुं चरण कया प्रकारे भावरुप (निर्दोष) गमन थाय ? ते कहे छे.

आलंबणे य काले मग्गे जयणाइ चेव परिसुद्धं । भंगेहिं सोलसविहं जं परिसुद्धं पसत्थं तु ॥ ३०८ ॥

प्रवचन संघ गच्छ आचार्य विगेरेना माटे प्रयोजन आवतां साधु गमन करे, ते आलंबन छे, तथा साधुने विहरण योग्य अवसर छे, ते काळ छे, तथा जनो (माणसो) ए पगवडे खुंदेला मार्गे यतना ते युगमात्र दृष्टि राखवी तेज आलंबन काळमार्ग यतनानां पदोवडे एकेक पद व्यभिचारथी जे भंगो थाय ते प्रमाणे गणतां १६ भांगा थाय, तेमां जे परिशुद्ध होय तेज प्रशस्त छे, अने हवे ते बतावे छे.

चउकारणपरिसुद्धं अहवावि (हु) होज्ज कारणज्जाए । आलंबणजयणाए काले मग्गे य जइयव्वं ॥ ३०९ ॥

चार कारणोए साधुनुं गमन शुद्ध थाय छे, आलंबन वडे दिवसे मार्गवडे यतनाथी जाय छे, अथवा अकालमां पण ग्लान विगेरेना आलंबने यतनाथी जतां शुद्ध गमन होय छे, अने आवे मार्गे साधुए यत्न करवो, नामनिष्पन्न निक्षेपो कह्यो, हवे उद्देश अर्थाधिकारने आश्रयी कहे छे.

सव्वेवि ईरियविसोहिकारगा तहवि अत्थि उ विसेसो । उद्देसे उद्देसे वुच्छामि जहक्कमं किंचि ॥ ३१० ॥

सर्वे एटले आ त्रणे पण जो के इर्या विशुद्धकारक छे, तो पण त्रणे उद्देशामां कांइक विशेष छे, ते दरेकने यथाक्रमे किंचित् कहीशुं हवे प्रतिज्ञा प्रमाणे कहे छे.

पढमे उवागमण निग्गमो य अद्धाण नावजयणा या विइए आरूढ छलणं जंघासंतार पुच्छा य ॥ ३११ ॥

पहेला उद्देशामां वर्षाकाळ विगेरेमां उपागमन ते स्थान लेवुं, तथा निर्गम ते शरत्काळ विगेरेमां विहार जेवो होय, तेवो अत्रे कहेवाय छे, अने यतनाथी मार्गमां चालवुं आ त्रणे वातो पहेला उद्देशामां छे, बीजा उद्देशामां नाव विगेरेमां चडनारनुं छलन (प्रक्षेपण) वर्णवशे, अने जघासंतार पाणीमां यतना राखवी, तथा जुदा जुदा प्रश्नमां साधुए शुं करवुं ते अहीं कहे छे,

तइयमि अदायणया अप्पडिबंधो य होइ उवहिंमि । वज्जेयव्वं च सया संसारियरायगिहगमणं ॥ ३१२ ॥

त्रीजा उद्देशमां जो कोइ पाणी वगेरे संबंधी पूछे, ते जाणतो होय छतां न जाणवापणुं बताववुं ते अधिकार छे, तथा उपाधिमां अप्रतिबंधपणुं राखवुं, ते कदाच चोराइ जाय तो पण स्वजन पासे अथवा राजग्रहमां फरीयाद करवा न जवुं, हवे सूत्रानुगममां अस्खलित विगेरे गुणोवाळुं सूत्र उच्चारवुं ते आ प्रमाणे छे.

अब्भुवगए खलु वासावासे अभिपवुट्टे बहवे पाणा अभिसंभूया बहवे बीया अहुणाभिन्ना अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया जाव ससंताणगा अणभिक्कंता पंथा नो विन्नाया मग्गा सेवं नच्चा नो गामाणुगामं दूइज्जिज्जा, तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिइज्जा ॥ (सू० १११)

मुख्यत्वे वर्षाऋतु आवे छते अने वरसाद वरसे छते साधुए शुं करवुं, ते कहे छे. अहीं वर्षाकाळ अने वृष्टि आश्रयी चार भांगा थाय छे, तेमां साधुओने आज समाचारी छे. एटले निर्व्याघात ते अषाढ चोमासुं आव्या पहेलांज घास, फलक, ढगल, भस्म मात्रकादिनो परिग्रह करवो, अर्थात् चोमासुं बेसतां पहेलां पण वखारे वरसाद पडतां घणां नाना प्राणीओ इंद्रगोपक बीयावक गर्द-

भक विगेरे (संभूछिम जंतुओ) उत्पन्न थाय छे, तथा घणा नवा घासना अंकुरा प्रकट थाय छे, तेथी तेवे मार्गे जतां ते प्राणीओ तथा घासना अंकुराथी ते करोळीयाना समूह सुधी मार्गमां पथरायेला होय, तेथी रस्तो शोधवो मुश्केल पडे, तेथी ते जीवोना रक्षण माटे एक गामथी बीजे गाम न जाय, तेथी संयत (साधु) पोतेज समय जोइने अवसर आवतां चोमासुं करी ले. (आने माटे कल्पसूत्रमां खुलासो करे छे के अषाड चोमासा पहेलां वरसाद आवी जाय तो एक मास प्रथमथी पण चोमासुं करे, पण असाडमां तो अवश्ये स्थिरता करवी) हवे अपवाद मार्ग कहे छे.

से भिक्खू वा० सेज्जं गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा जाव राय० नो महई विहारभूमी नो महई वियारभूमी नो सुलभे पीढफलगसिज्जासंथारगे नो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे जत्थ वहवे समण० वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य अच्चाइन्ना वित्ती नो पन्नस्स निक्खमणे जाव चिंताए, सेवं नच्चा तहप्पगारं गामं वा नगरं वा जाव रायहाणिं वा नो वासावासं उवल्लिइज्जा ॥ भि० से जं गामं वा जाव राय० इमंसि खलु गामंसि वा जाव महई विहार-भूमी महई वियार० सुलभे जत्थ पीढ ४ सुलभे फा० नो जत्थ वहवे समण० उवागमिस्संति वा अप्पाइन्ना वित्ती जाव रायहाणिं वा तओ संजयामेव वासावासं उवलिज्जा ॥ (सू० ११२)

ते भिक्षु तेवी राज धानी विगेरे कोइपण स्थानमां आव्या पछी एम जाणे के विहार (स्वाध्याय) भूमी तथा विचार (स्थंडिल) भूमि उचित मळे तेवी नथी, तथा साधुने योग्य पीठ फलक शया संथारो विगेरे चोमासामां खास वापरवा योग्य उपकरणो के वस्तुओ मळवी दुर्लभ छे, तथा प्रासुक गोचरी मळवी दुर्लभ छे, तथा एषणीय आहार न मळे, तेज कहे छे–एटले साधुने उद्गम

विगेरे दोषरहित गोचरी लेवानी छे, ते न मळे, तथा ते नगर विगेरेमां घणा श्रमण, ब्राह्मणो, कृपण, वणीमग विगेरे आवीने भरायेला छे, अने बीजा आववाना छे, तेथी घणा मागण भरावाथी आकीर्ण वृत्ति छे, एटले भिक्षा माटे अटन तथा स्वाध्याय ध्यान करवा बहा जतां आवतां ते घणा भिक्षुक माणसोना भरावाथी ते गाम विगेरे संकोचायेल छे, त्यां जैनसाधुने जवुं आववुं तथा धर्म चिंतवन विगेरे क्रिया उपद्रव रहित न थाय. जो आवी अगवडो होय, तो तेवा क्षेत्रमां चोमासुं न करे, पण जो उपर बतावेली अगवडो न होय एटले भणवानी अने स्थंडिलनी जग्या होय, उचित उपकरण मळतां होय, पिंड शुद्ध मळतो होय, अन्य भिक्षुको सामान्य प्रमाणमा होय, जतां आवतां घणो समय न लागतो होय, तो त्यां चोमासुं करवुं. हवे वर्षाकाळ पुरो थये क्यारे विहार न करवो ते कहे छे.

अह पुणेवं जाणिज्जा–चत्तारि मासा वासावासाणं वीइकंता हेमंताण य पंचदसरायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गे बहुपाणा जाव ससंताणगा नो जत्थ बहवे जाव उवागमिस्संति, सेवं नच्चा नो गामणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ अह पुणेवं जाणिज्जा चत्तारि मासा० कप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गे अप्पंडा जाव ससंताणगा बहवे जत्थ समण० उवागमिस्संति सेवं नच्चा तओ संजयामेव० दूइज्जिज्ज ॥ (सू० ११३)

हवे आ प्रमाणे साधुओ जाणे, के चोमासा संबंधी चारमास पूरा थाय छे, अर्थात् कार्तिकी चोमासुं पूरुं थयुं छे, त्यां जो उत्सर्गथी वृष्टि न होय, तो एक मेज बीजे स्थळे जइने पारणुं करवुं, पण जो वृष्टि चालु होय तो हेमंत रुतुना पांच–दस दीवस गये थके विहार करवो, तेमां पण जो बीजे गाम जतां मार्गमां नानां जंतुनां इंडां पड्यां होय, गारो होय, करोळीयाना जाळां बाझी

गयेलां होय, अने ब्राह्मण श्रमण विगेरे मार्गण न आवेला होय, अथवा थोडा वखतमां आववाना न होय तो मागसर शुद १५ सुधी त्यां रहेवुं. त्यारपछी गमे तेम होय तोपण त्यां रहेवुं नहि, पण जो वृष्टि न होय, कादव न होय, मार्ग इंडां विनानो होय, श्रमण ब्राह्मण आव्या होय, आववाना होय, तो कार्तिकी पुर्णिमा पछी तुर्त विहार करवो. हवे मार्गनी यतना कहे छे—

से भिक्खू वा० गामणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ जुगमायाए पेहमाणे दट्ठूण तसे पाणे उद्धट्टु पादं रीइज्जा साहट्टु पायं रीइज्जावितिरिच्छं वा कट्टु पायं रीइज्जा, सइ परक्कमे संजयामेव परिक्कमिज्जा नो उज्जुयं गच्छिज्जा, तओ संजियामेव गामणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे अंतरा से पाणाणि वा बी० हरि० उदए वा मट्टिआ वा अविद्धत्थे सइ परक्कमे जाव नो उज्जुयं गच्छिज्जा, तओ संजया० गामा० दूइज्जिज्जा ॥ (सू० ११४)

ते भिक्षु बीजे गाम जतां मोढा आगळ युगमात्र (चार हाथ प्रमाण) गाडाना उर्द्धि (धसारा) ना आकारे भूभाग (जमीन) देखतो चाले, त्यां मार्गमां त्रस जीवो जे पतंग विगेरे छे, ते पगने अडकीने नीकळे, अथवा पगना तळीयां नीचे अडकीने नीकळे तो ते जीवोनी रक्षा खातर शरीरमां शक्ति होय त्यां सुधी बीजे मार्गे जवुं, पण बीजो रस्तो के जवानी शक्ति न होय, तो ते रस्ते जतां ज्यारे तेवां जंतुओ पग पासे आवे त्यारे ते त्यां पग संभाळीने मुकवो के ते चगदाइ न जाय, एटले ज्यारे सामे आवे त्यारे तेने पग पग साथे अथडावा देवां नहीं, पण जो पग नीचे दबाइ जाय तेम होयतो नीचे देखीने ते जग्याए पग न मुकवा, अथवा पगनी एडी मुकीने चालवुं, अथवा पग वांको करीने चालवुं, आ प्रमाणे एक गामथी बीजे गाम जीव जंतुनी रक्षा करतां जवुं.

वळी साधुने एक गामथी बीजे गाम जतां मार्गमां नाना जीव जंतु बीज हरियाणी (लीलुं घास) पाणी, माटी अथवा रस्तो

न पड्यो होय, तो तेवा सीधा मार्गे न जवुं, पर्ण जीव-जंतु विनांना तथा कादव माटी पाणी विनाना मार्गे चक्रावो खाइने ज्यांथी लोको जतां होय तेवा रस्ते साधुए जवुं, पण बीजो रस्तो न होय, अथवा जवानी शक्ति न होय, तो ते मार्गे यतनाथी चालवुं. वळी

से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे अंतरा से विरूवरूवाणि पच्चंतिगाणि दसुगाययाणि मिलक्खूणि अणायरियाणि दुसन्नप्पाणि दुप्पन्नवणिज्जाणि अकालालपडिबोहीणि अकालपरिभोईणि सइ लाढे विहाराए संथरमाणेहिं जाणवएहिं नो विहारवडियाए पवज्जिज्जा गमणाए, केवली बूया आयाणमेयं, तेणं बाला अयं तेणे अयं उवचरए अय ततो आगएत्तिकट्टु तं भिक्खुं अक्कोसिज्ज वा जाव उद्दविज्ज वा वत्थं प० कं० पाय० अच्छिदिज्ज वा भिंदिज्ज अवहरिज्ज वाप रिट्ठविज्ज वा, अह भिक्खूणं पु० जं तहप्पगाराइं विरू० पच्चंतियाणि दस्सुगा० जाव विहारवत्तियाए नो पवज्जिज्ज वा गमणाए तओ संजया गा० दू० ॥ (सू० ११५)

ते भिक्षुने बीजे गाम जतां एम मालुम पडे, के आ मार्गे जतां वचमां विरुप रुपवाळा महादुष्ट एवा चोरोनां स्थान छे, तथा बर्बर शबर पुलिंद विगेरे म्लेच्छथी प्रधान एवा अनार्य लोको जे गंगा सिंधुनी वचमाना २५॥ आर्य देश छोडीने बीजा देशोमां रहेला छे, तेओ दुःखेथी आर्योनी संज्ञा समजे छे, तथा महा कष्टे आर्य धर्मने समजे अने अनार्य संकल्पने छोडे, तथा अकाळमां पण भटकनारा छे. कारणके अडधी रात्रे पण शिकार विगेरे माटे जाय छे, तथा अकाळे (वखत विना) भोजन करनारा छे, माटे ज्यां सुधी बीजा देशोना सारां गामो विचरवाना होय त्यां सुधी तेवा अनार्य देशोना क्षेत्रमां हुं जइश, एवी प्रतिज्ञा साधुए न करवी, (अर्थात् त्यां जवुं नहि) त्यां जवाथी केवलीप्रभु तेमां दोष बतावे छे; कारण के त्यां जवाथी संयमनी विराधना थाय,

छे, तथा त्यां आत्मानी विराधनामां संयमनी विराधना पण थाय छे, ते बतावे छे, ते म्लेच्छ विगेरे अनार्यो आ प्रमाणे बोले छे, " आ चोर छे ! आ शत्रुनो चर तेना गामथी आवेलो दूत छे ! एम कहीने वचनथी तिरस्कार करे, दंडनी ताडना करे, अने छेवटे जीव पण ले, तथा वस्त्रो विगेरे पण खुंचवी ले, पछी साधुने काढी मुके, माटे साधुओने आ शीखामण छे, के तेमणे तेवा मार्गे जवुं नहि, पण तेवा मार्गने छोडीने संयत सारे मार्गे विहार करी ने बीजे गाम जाय.

से भिक्खू० दूइज्जमाणे अंतरा से अरायाणि वा गणरायाणि वा जुवरायाणि वा दोरज्जाणि वा वेरज्जाणि वा विरुद्धरज्जाणि वा सइ लाढे विहाराए संथ० जण० नो विहारवडियाए० केवली बूया आयाणमेयं, तेणं वाला तं चेव जाव गमणाए तओ सं० गा० दू० ॥ (सू० ११६)

ते भिक्षुने विहार करतां एम मालुम पडे के ते मार्गे राजा मरीगयो छे, सामंतोए राज्य ते वहेंची लीधुं छे, अथवा युवराजने गादी मळी नथी, बे राज्य थयां होय, वैर बध्यां होय, विरुद्ध (शत्रु) राजानुं जोर होय, तो तेवा लडाइ तोफानना उपद्रववाळा मार्गे बीजो सारो देश अथवा गामो विचरवानां होय तो तेवा मार्गे विहार न करवो, केवळीप्रभु तेमां कर्मादान बतावे छे, त्यां जतां ते विरुद्ध पक्षना माणसो ते साधुने चोर के जासुस मानीने पूर्वना सूत्रमां कह्या मुजब पीडा पमाडशे, उपद्रव करशे अथवा जीवथी पण हणशे, कपडां खुंचवी बुरा हाले काढी मुकशे, माटे तेवा मार्गे न जवुं,

से भिक्खू वा गा० दूइज्जमाणे अंतरा से विह सिया, से जं पुण विहं जाणिज्जा एगाहेण वा दुआहेण वा तिआहेण वा चउआहेण वा पंचाहेण वा पाउणिज्ज वा नो पाउणिज्ज वा तहप्पगारं विहं अणेगाहगमणिज्जं सइ लाढे जाव गमणाए,

केवली बूया आयाणमेयं, अंतरा से वासे सिया पाणेसु पणएसु वा बीएसु वा हरि० उद० मट्टियाए वा अविद्धत्थाए, अह भिक्खू जं तह० अणेगाह० जाव नो पव० तओ सं० गा० दू० ॥ (सू० ११७)

ते भिक्षु ग्रामांतर जतां एम जाणे के ते मार्गमां जतां मेदान उलंघवामां केटलाक दिवसो लागशे, एटले एक आखो दिवस अथवा बे त्रण चार पांच दिवसे ते मार्ग उलंघासे, तेवा मार्गे बीजो टुंको मार्ग मळतो होय तो तेवा उजड रस्ते जवुं नहि. कारणके तेवा मार्गे जतां केवळी ज्ञानीए अनेक दोषो बताव्या छे, जेमके वखते वरसाद आवे, तो पाणी भराइ जाय, लीलण फूलण इथ जाय, लीलाघासनां बीज अंकुरा फुटी नीकळे, रस्तो कादवथी (गाराथी) भराइ जाय, मार्ग सूझे नहि, माटे तेवा अनेक दिवसना मेदानवाळा मार्गे जवुं नहि. हवे नावने आश्रयी कहे छे—

से भि० वा गामा० दूइज्जिज्जा० अंतरा से नावासंतारिमे उदए सिया, से जं पुण नावं जाणिज्जा असंजए अ भिक्खुपडियाए किणिज्ज वा पामिच्चेज्ज वा नावाए वा नावं परिणामं कट्टु थलाओ वा नावं जलंसि ओगाहिज्जा जलाओ वा नावं थलंसि उक्कसिज्जा पुण्णं वा नावं उस्सिंचिज्जा सन्नं वा नावं उप्पीलाविज्जा तहप्पगारं नावं उड्ढगामिणिं वा अहेगा० तिरियगामि० परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए अप्पतरे वा भुज्जतरे वा नो दूरुहिज्जा गमणाए ॥ से भिक्खू वा० पुव्वामेव तिरिच्छसंपाइमं नावं जाणिज्जा, जाणित्ता से तमयाए एगंतमवक्कमिज्जा २ भण्डगं पडिलेहिज्जा २ एगओ भोयणभंडगं करिज्जा २ ससीसोवरीयं कायं पाए पमज्जिज्जा सागारं भत्तं पच्चाक्खइज्जा, एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा तओ सं० नावं दूरुहिज्जा ॥ (सू० ११८)

ते भिक्षु ग्रामान्तर जतां मार्गमां एम जाणे के आ वचमां आवेली नदी नाव विना उतराय तेम नथी तो नाव संबंधी तपास तपास करे के गृहस्थ खास भिक्षुक माटे नाव खरीद करे अथवा उछीती ले, अथवा अदलो बदलो करे, अथवा स्थळथी जळमां के जळथी स्थळमां लावे, भरेला वहाणने खाली करे, अथवा खुंची गयुं होय तो साधु माटेज बहार कढावे, तेवी नावने उंचे लइ जवा नीचे लइ जवा अथवा तीरछी दिशामां अथवा कोइपण दिशामां लइ जवी पडे तो एक जोजन मर्यादा माटे अडधा जोजन (बे गाउ) माटे अथवा थोडे घणे दूर जवा माटे साधुए तेवी नावमां बेसवुं नहि, पण साधु एम जाणे के नाव तेना मालिके पोतान प्रयोजनने तीरछी दिशामां हंकारी छे, तो ते वहाणमां जतां पहेलां पोताना उपकरणोने एकांतमां जइने पडिलेहवां गोचरीनां पात्रां तपासी लेवां तथा पोताना शरीरने पगथी माथा सुधी पुंजवुं, तथा सागारी अणसण करवुं (एटले आ जळथी बहार नीकळुं तो मने आहार पाणी वापरवुं कल्पे, नहितो नहिं.) पछी एक पग जळमां एक पग थळमां (पाणीनी उपर) मुकी साधुए नाव उपर चडवुं (आ सूत्रमां साधु माटे जो नाव पेलेपार लइ जाय तो बने त्यांसुधी तेवी नावमां न बेसवुं. पण गृहस्थोने माटे जवा आववा माटे नाव चालु थइ होय तेमां बेसवुं) हवे कारण पडे नावमां बेसवुं पडे तो नावमां चडवानी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० नावं दुरुहमाणे नो नावाओ पुरओ दुरुहिज्जा नो नावाओ मग्गओ दुरुहिज्जा नो नावाओ मज्झओ दुरुहिज्जा नो बाहओ पगिज्झिय २ अंगुलियाए उद्दिसिय २ ओणमिय २ उन्नमिय २ निज्झाइज्जा । से णं परो नावागओ नावागयं वइज्जा—आउसंतो ! समणा एयं ता तुमं नावं उक्कसाहिज्जा वा वुक्कसाहि वा खिवाहि वा रज्जूयाए वा गहाय आकासाहि, नो से तं परिन्नं परिजाणिज्जा, तुसिणीओ उवेहिज्जा । से णं परो नावागओ नावाग० वइ०—आउसं० नो

संचाएसि तुभं नावं उक्कसित्तए वा ३ रज्जूयाए वा गहाय आकसित्तए वा आहार एयं नावाए रज्जूयं सयं चेव णं वयं नावं उक्कसिस्सामो वा जाव रज्जूए वा गहाय आकासिस्सामो, नो से तं प० तुसि० । से णं प० आउसं० एअं ता तुमं नावं आलित्तेण वा पीढएण वा वंसेण वा वलएण वा अवल्लुएण वा वाएहि, नो से तं प० तुसि० । से णं परो० एयं ता तुमं नावाए उदयं हत्थेण वा पाएण वा मत्तेण वा पडिग्गहेण वा नावाउस्सिंचणेण वा उस्सिंचाहि, नो से तं० से णं परो० समणा ! एयं तुमं नावाए उत्तिंगं हत्थेण वा पाएण वा बाहुणा वा ऊरुणा वा उदरेण वा सीसेण वा काएण वा उस्सिंचणेण वा चेलेण वा मट्टियाए वा कुसपत्तएण वा कुविंदएण वा पिहेहि, नो से तं० ॥ से भिक्खू वा २ नावाए उत्तिंगेण उदयं आसवमाणं पेहाए उवरुवरिं नावं कज्जलावेमाणिं पेहाए नो परं उवसंकमित्तु एवं बूया—आउसंतो ! गहावइ एयं ते नावाए उदयं उत्तिंगेण आसवइ उवरुवरिं नावा वा कज्जलावेइ, एयप्पगारं मणं वा वायं वा नो पुरओ कट्टु विहरिज्जा अप्पुस्सुए अबहिल्लेसे एगंतगएण अप्पाणं विउसेज्जा समाहीए, तओ सं० नावासंतारिमे व्यउदए आहारियं रीइज्जा, एयं खलु सया जइज्जासि त्तिबेमि ॥ इरियाए पढमो उद्देशो (सू० ११९) २-१-३-१ ॥

ते साधुए नावमां बेसतां नावना अग्र भागे बेसवुं नहि, कारण के तेथी निर्यामक (खलासी) ने पोताना कार्यमां हरकत थाय; तथा बीजा लोकोने चडवा पहेलां पोते चढी न बेसे; कारण के वहाणने चालववाना अधिकरणनो दोप लागे, तेम नावना बरोबर मध्य भागमां चडी न बेसे, तेम वहाणनां (पडखां) पकडीने आंगळीओवडे ताकी ताकीने उंचा नीचा थइने जोवुं नहि.

नावमां चढेला साधुने नाववाळो कहे, के हे साधुओ ! आ नावने तमे खेंचो, आ दिशा तरफ वळो, अमुक वस्तु दरियामां

फेंको, अथवा दोरडेथी पकळीने खेंचो, ते प्रमाणे कहे तोपण साधुए तेम न करवुं, पण चूप बेसी रहेवुं.

वळी ते नाविक साधुने कहे, के हे साधुओ ! जो तमे नाव न खेंची शको, के समान न फेंकी शको, तो दोरडुं लावीने अमने आपो, एटले दोरडुं हाथमां आवतां अमे नावने खेंचीशुं, ते वचन पण मुनिए स्वीकारवुं नहि,—पण चूप रहेवुं.

ते नावमां चडेला साधुने नाविक कहे के हे साधु ! तमे नावने आलित्त वडे पीढ हलेसांवडे वांसवडे वळावडे अवल्लकवडे आगळ चलावो, ते वात पण साधुए स्वीकारवी नहि, पण चूप बेसी रहेवुं.

ते नावमां चडेला साधुने नाविक एम कहे, के—आ नावमां भराएला पाणीने हाथवडे पगवडे वासणथी के पांतरांथी अथवा नावना हथीआरथी काढी नांखो, पण ते साधुए करवुं नहि, पण मौन धारण करीने बेसवुं.

ते नावमां बेठेला साधुने नाविक कहे, के हे साधुओ ! तमे नावमां पडेला नांणाने हाथ, पग, बाहु, जांघ, उरु, पेट, माथा के कायावडे अथवा वहाणमां रहेला उस्सिचणवडे अथवा वस्त्र, माटी, कमळपत्र के कुरुविंद नामना घासवडे ढांकी, पण ते स्वीकारवुं नहि, मौन बेसी रहेवुं

ते भिक्षुए अथवा साध्वीए नावमां छिद्र पडतां पाणी भरातुं देखीने–उपर उपर नावमां पाणी चडतुं देखीने बीजा माणसोने एम कहेवुं नहि के हे गृहस्थ ! आ वहाणमां पाणी भराय छे, अने नाव डुबी जशे, आ प्रमाणे मनथी अने वचनथी संकल्प–विकल्प न करतां बरडा न पाडतां शांत रहेवुं, शरीर उपकरणनी उत्सुकता तथा बहारनुं ध्यान छोडीने एकांतमां आत्माने समाधिमां राखवो, अने जे प्रमाणे नाव पाणीमां चाले तेम चालवा देइ किनारे पहोंचवुं, आ प्रमाणे सदा यत्न

करवो अर्थात् नावना उपर ध्यान न राखतां आत्मसमाधिए वर्त्तवुं आज भिक्षुनी सर्व सामग्री छे.

त्रीजा अध्ययननो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशो.

पहेलो उद्देशो कहीने हवे बीजो उदेशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां नावमां बेठेला साधुनी विधि कही, अहीं पण तेज कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानु आ प्रथम सूत्र छे.

से णं परो णावा० आउसंतो ! समणा एयं ता तुमं छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं वा गिण्हाहि, एयाणि तुमं विरूवरूवाणि सत्थजायाणि धारेहि, एयं ता तुमं दारगं वा पज्जेहि, नो से तं० ॥ (सू० १२०)

ते नावमां बेठेला साधुने नाविक विगेरे गृहस्थ कहे, के तमे मारा छत्रने पकडो, अथवा चामडुं छेदवानुं हथीआर अथवा बीजा हथीआर पकडो, अथव आ मारा बाळकने पाणी पीवडावो, आवी प्रार्थना नाविक विगेरे करे तो तें स्वीकारवी नहि, पण मौन रहेवुं,

उपर प्रमाणे नाविकनुं कहेवुं न करवाथी ते क्रोधी थइने साधुने नावमांथी फेंकी दे तो शुं करवुं ते कहे छेः—

से णं परो नावागए नावगयं वएज्जा—आउसंतो ! एस णं समणे नावाए भंडभारिए भवइ, से णं बाहाए गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिविज्जा, एयप्पारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म से य चीवरधारी सिया खिप्पामेव चीवराणि उव्वेढिज्जा वा निवे, ढज्ज वा उप्फेसं वा करीज्जा, अह० अभिकंतकूरकम्मा खलु बाला बाहाहिं गहाय, ना० पक्खिविज्जा से पुव्वामेव वइज्जा

आउसंतो! गाहावई मा मत्तो बाहाए गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिवह, सयं चेव णं अहं नावाओ उदगंसि ओगाहिस्सामि, से णेवं वयंतं परो सहसा बलसा बाहाहिं ग० पक्खिविज्जा तं नो सुमणे सिया नो दुम्मणे सिया नो उच्चावयं मणं नियंछिज्जा नो तेसिं बालाणं घायाए वहाए समुट्ठिज्जा, अप्पुस्सुए जाव समाहीए तओ सं० उदगंसि पविज्जा ॥ (सू० १२१)

ते साधुने उद्देशीने नाविक बीजा माणसोने कहे, के आ साधु काम कर्या विना वहाणमां मात्र भांड अथवा उपकरणवडे बीजा रुप बेठो छे, माटे तेने बाहुथी पकडीने नदीमां फेंकी दो. आ प्रमाणे तेमनी पासे सांभळे, अथवा बीजा पासेथी ते वात जाणीने जिनकल्पी के स्थवीरकल्पी मुनि होय, तेमां स्थविरकल्पी मुनिए तुर्त पोतानी पासे बोजावाळां नकामां कपडां उतारीने जरुर जोगां हलकां वस्त्र उपधि विगेरेने शरीरे वींटी लेवां, अथवा माथे बांधी लेवां, आ प्रमाणे उपकरण वींटी लीधेलो साधु निर्व्याकुलताथी सुखेथी पाणीमां तरे छे, पछी तैयार थइ तेमने धर्मोपदेश आपे, साधुनो आचार समजावे, छतां एम नक्की जाणे के आ दुष्टो मने बाहुथी पकडीने पाणीमां नांखवानांज छे, तो नांखे ते पहेलां मुनिए कहेवुं के तमारे मने बाहुथी पकडीने पाणीमां नांखवानी जरुर नथी. हुं जातेज पाणीमां झंपलावुं छुं आवुं बोलवा छतां पण ते दुष्टो बाहुथी पकडीने साधुने पाणीमां नाखी दे, तो मुनिए मनमां रागद्वेष न करवो, तथा दीनता के संकल्प—विकल्प पण न करवा, तेम तेमने मारवा के दुःख देवा तैयार न थवुं, पण उत्सुकता रहित पाणीमां पडवुं. हवे उदकमां पडेलानी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० उदगंसि पवमाणे नो हत्थेण हत्थं पाएण पायं काएण कायं आसाइज्जा, से अणासायणाए आणासाय-

माणे तओ सं० उदगंसि पविज्जा ॥ से भिक्खू वा० उदगंसि पवमाणे नो उम्मुग्गनिमुग्गियं करिज्जा, मामेयं उदगं कन्नेसु वा अच्छीसु वा नक्कंसि वा मुहंसि वा परियावज्जिज्जा, तओ० संजयामेव उदगंसि पविज्जा ॥ से भिक्खू वा उदगंसि पवमाणे दुब्बलियं पाउणिज्जा खिप्पामेव उवहिं विगिंचिज्ज वा विसोहिज्ज वा, ना चेव णं साइज्जिज्जा, अह पु० पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ संजयामेव उदउल्लेण वा ससिणद्धेण वा काएण उदगतीरे चिट्ठिज्जा ॥ से भिक्खु वा० उदउल्लं वा २ कायं नो आमज्जिज्जा वा णो पमज्जिज्जा वा संलिहिज्जा वा निलिहिज्जा वा उव्वलिज्जा वा उवट्टिज्जा वा आयाविज्ज वा पया०, अह पु० विगओदओ मे काए छिन्नसिणेहे काए तहप्पगारं कायं आमज्जिज्ज वा पयाविज्ज वा तओ सं० गामा० दूइज्जिज्जा ॥ (सू० १२२)

ते मुनिए पाणीमां पड्या पछी हाथ साथे हाथ, पग साथे पग के शरीरवडे कोइ पण भागमां अपकाय विगेरेनी रक्षा माटे स्पर्श करवो नहि, तथा पाणीमां तणातां डुबकीओ मारवी नहि, कारण के डुबकी न मारवाथी कान आंख नाक मोढा विगेरेमां पाणी न भराय तेम पोते डुबी जाय नहि, पण ज्यारे पोताने डुबवा वखत आवे अने थाकी गयो होय, तो उपाधिनो मोह छाडी देवो, अथवा भारवाळी उपाधि छोडी देवी, पछी पोते जाणे के हुं किनारे जवा समर्थ छुं, त्यारे किनारे नीकळी आवे, अने पाणी टपकता शरीरे कीनारा उपर उभो रहे, अने इर्यावही पडिकमे.

पण ते मुनिए भिना शरीरने पाणी रहित करवा आमळवुं घसवुं दाबवुं छांटवुं के तपाववुं नहि, पण पाणीने पोतानी मेळे नीतरवा देवुं पण ज्यारे जाणे के पाणी नीतरी गयुं छे, भीनाश ओछी थइ गइ छे, त्यारपछी कायाने शरदी रहित करवा तडके

तपाववी, अने त्यां सुधी किनारेज उभा रहेवुं, अने शरीर सूकाया पछीज बीजा गाम तरफ विहार करवो, पण त्यां उभा रहेवाथी चोरनो भय लागतो होय तो तुर्त कायाने स्पर्श कर्या विनाज हाथ लांबा राखी गाम तरफ चाल्या जवुं.

से भिक्खू वा गामणुंगामं दूइज्जमाणे नो परेहिं सद्धिं परिजविय २ गामा० दूइ०, तओ० सं० गामा० दूइ० ॥ (सू० १२३)

मुनिए विहार करतां मळेला गृहस्थो साथे बहु बकवकाट करता जवुं नहि, पण शांतिथी चालवुं, हवे जंघा सुधीना पाणीमां उतरवानी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा गामा० दू० अंतरा से जंघासंतारिमे उदगे सिया, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिज्जा २ एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा तओ सं० उदगंसि आहारियं रीएज्जा ॥ से भि० आहारियं रीयमाणे नो हत्थेण हत्थं जाव अणासायमाणे तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए आहरियं रीइज्जा ॥ से भिक्खू वा जंघासंतारिमे उदए आहारियं रीयमाणे नो सायावडियाए नो परिदाहपडियाए महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसिज्जा, तओ संजियामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ संजयामेव उदउल्लेण वा २ काएण दगतीरए चिट्ठिज्जा ॥ से भि० उदउल्लं वा कायं ससि० कायं नो आमज्जिज्ज वा नो० अह पु० विगओदए मे काए छिन्नसिणेहे तहप्पगारं कायं आमज्जिजज्ज वा० पायविज्ज वा तओ सं० गामा० दूइ०

ते साधु विहार करी बीजे गाम जतां मार्गमां जांघ डुबे तेटलु पाणी होय. तो उपरनुं शरीर मुहुपत्तिथी तथा नाभी निचेनुं अडधुं शरीर ओघाथी पुंजीने पाणीमां प्रवेश करे, अने पाणीमा पेठा पछी एक जलमां मुकावो, बीजो पग उंचो करीने जवुं, पण

बे पग वडे पाणी डोळता जवुं नहि, पण जयणाथी पाणी उतरवुं, जेम सरलताथी जवाय तेम जाय, पण विकार करतो आम तेम जोतो न चाले.

ते भिक्षु जंघासुधीना पाणीमां उतरी जतां हाथ साथे हाथ पग साथे पग विगेरे, अपकायनी रक्षा माटे लगाडवां नहि, तेज प्रमाणे सुख मेळववा दाह मटाडवा. उंडापाणीमां—छाती सुधीना पाणीमां उतरवुं नहि, फकत जंघा सुधीना पाणीमांज उतरवुं, पण पाणीमां उतर्या पछी उपकरण सहित चालवा पोताने असमर्थ जुए अने डुबवानो वखत आवे तो बोजावाळां उपकरण त्यजी देवा. पण शक्तिवान होय तो उपकरण सहित उतरे, पछी किनारे जइने इर्यावहि करी पाणी नीतरी गया पछी कायानी भीनाश ओछी थाय पछी शरीर तपावीने विहार करे. हवे पणीमांथी नीकळ्या पछीनी गमन विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे नो मट्टियागएहिं पाएहिं हरियाणि छिंदिय २ विकुज्जिय २ विफालिय २ उम्मग्गेण हरियवहाए गच्छिज्जा, जमेयं पाएहिं मट्टियं खिप्पामेव हरियाणि अवहरंतु, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा, से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहिज्जा तओ० सं० गामा० ॥ से भिक्खू वा २ गामणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा फ० पा० तो० अ० अग्गलपासगाणि वा गड्डाओ वा दरीओ वा सइ परकमे संजयामेव परिक्कमिज्जा नो उज्जु०, केवली०, से तत्थ परक्कममाणे पयलिज्ज वा २, से तत्थ पयलमाणे वा २ रुक्खाणि वा गुच्छाणि वा गुम्माणि वा लयाओ वा वल्लीओ वा तणाणि वा गहणाणि वा हरियाणि वा अवलंबिय २ उत्तरिज्जा, जे तत्थ पाडिपहिया उवागच्छंति ते पाणी जाइज्जा २, तओ सं० अवलंबीय २ उत्तरिज्जा तओ सं० गामा० दू० ॥ से भिक्खू वा० गा० दूइज्जमाणे अंतरा से

जवसाणि वा सगडाणि वा रहाणि वा सचक्काणि वा परचक्काणि वा से णं वा विरूवरूवं सनिरुद्धं पेहाए सइ परकमे सं० नो० उ० से णं परो सणागओ वइज्जा आउसंतो ! एस णं समणे सेणाए अभिनिवारियं करेइ, से णं बाहाहे गहाए आगसह, से णं परो बाहाहिं गहाय आगसिज्जा, तं नो सुमणे सिया जाव समाहीए तओ० सं० गामा० दूइ० ॥ (सू० १२५)

ते भिक्षु नदीना पाणीमांथी नीकळेलो होय, ते वखते जो उन्मार्गे जइने गाराथी खरडेला पगे लीला घासने छेदीने के वांकुं वाळीने तथा खेंची काढीने पोताना पग साफ करवाना इरादाथी वनस्पतिने दुःख दे तो ए कपटनुं निंदित कार्य छे, माटे तेम न करवुं, पण प्रथमथी तद्दन ओछा घासवाळो मार्ग जोवो, अचित्त जग्यामां जइ प्रथम बताव्या प्रमाणे गारो दूर करवो पछी बीजे गाम विहार करवो.

साधुने विहार करतां मार्गमां वप्र (किल्लो) फलिह (खाइ) प्राकार (कोट) तोरण अर्गल अर्गलपासक खाडा गुफा (कोतर) ओळंगवाना आवे तो छती शक्तिए तेवा सीधा मार्गे न जवुं; पण दूरना खाडा विनाना रस्ते जवुं, कारणके त्यां जतां खाडा विगेरेमां पडतां सचित्त झाड विगेरेने पकडे, तो केवळी प्रभुए तेमां दोषो बताव्या छे, पण बीजो रस्तो न होय अने खास कारणे ते मार्गे जवुं पडे अने पग खसे तेवुं होय, तो झाड गुच्छा गुल्मलता वेला घास छोडवा अथवा जे पकडवा जोग हाथमां आवे, ते लइने उतरवुं, अथवा रस्तामां जता मुसाफरनी मदद मागीने हाथ पकडीने उतरवुं, पछी गाराथी के खाडाथी बहार आवी संभाळथी बीजे गाम विहार करवो.

ते भिक्षुने विहार करतां मार्गमां घउं जवनां खेतर आवे, गाडां रथ होय, के ते गामना राजानुं के बीजा राजानुं लश्कर

पडेलुं होय, तो वीजो रस्तो मळतां ते रस्ते न जवुं, कारणके त्यां जतां वहु अपायो छे, पण वीजो रस्तो न होय, शक्ति न होय, तो ते मार्गे जतां सेनानो अजाण्यो माणस साधुने न ओळखवाथी बीजा माणसोने कहे के "आ जासुस आवेलो छे, माटे धक्का मारीने वाहुमांथी पकडीने वहार काढो" अने ते प्रमाणे कदाच करे, तो पण तेमना उपर क्रोध न लावतां समाधिथी विहार करे,

से भिक्खू वा० गामां० दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा ते णं पडिवहिया एवं वइज्जा-आउ० समणा ! केवइए एस गामे वा जाव रायहाणी वा केवईया इत्थ आसा हत्थी गामपिंडोलगा मणुस्सा परि वसंति ! वहुभत्ते बहुउदए वहुजणे वहुजवसे से अप्पभत्ते अप्पुदए अप्पजणे अप्पजवसे ? एयप्पगाराणि पसिणाणि पुच्छिज्जा, एयप्प० पुट्ठो वा अपुट्ठो वा नो वागरिज्जा, एवं खलु० जं० सव्वटठेहिं० (सू० १२६) ॥ २-१-३-२

ते साधु साध्वीने मार्गे चालतां मुसाफरो मळे, तेओ आ प्रमाणे पूछे के हे साधुओ ! तमारा विहारमां आवेलुं गाम के राज्यधानी केवी मोटी छे ! तथा अहीं केटला घोडा हाथी गामना भीखारीओ के माणसो वसे छे, अथवा घणुं रांधेलुं अन्न पाणी के अनाज मळे छे ? के ओछुं भोजन पाणी के अनाज मळे छे ? एवा प्रकारना प्रश्नो पूछे, अथवा न पण पूछे, तो पण पोते बोलवुं नहि, (भाषातर वाळा आचारांगसूत्रमां पाठ विशेष छे. एतप्पा गाराणि पसिणाणि णो पुच्छेज्जा आवा प्रश्नो मुनिए पण मुसाफरने पूछवा नहि,)

आज साधुनुं सर्व साधुपणु छे.

त्रीजो उद्देशो.

बीजो उद्देशो कहीने हवे त्रीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गयामां गमनविधि बतावी, अहीं पण तेज कहे छे. आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

से भिक्खू वा गामा० दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा जाव दरीओ वा जाव कूडागाराणि वा पासायाणि वा नुमगिहाणि वा रुक्खगिहाणि वा पव्वयगि० रुक्खं वा चेइयकडं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा नो वाहाओ पगिज्झिय २ अंगुलिआए उद्दिसिय २ ओणमिय २ उन्नमिय २ निज्झाइज्जा, तओ सं० गामा० ॥ से भिक्खू वा० गामा० दू० माणे अंतरा से कच्छाणि वा दवियाणि वा नुमाणि वा वलयाणि वा गहणाणि वा गहणविदुग्गाणि वणाणि वा वणवि० पव्वयाणि वा पव्वयवि० अगडाणि वा तलागाणि वा दहाणि वा नईओ वा वावीओ वा पुक्खरिणीओ वा दीहियाओ वा गुंजालियाओ वा सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा नो वहाओ पगिज्झिय २ जाव निज्झाइज्जा, केवली०, जे तत्थ मिगा वा पसू वा पंखी वा वा सरीसिवा वा सीहा वा जलचरा वा थलचरा वा सहचरा वा सत्ता से उत्तसिज्ज वा वित्तसिज्ज वा वाडं वा सरणं वा कंखिज्जा, चारित्ति मे अयं समणे, अह भिक्खू णं पु० जं नो वाहाओ पगिज्झिय २ निज्झाइज्जा, तओ संजयामेव आयरिउवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ (सू० १२७)

ते भिक्षु बीजे गाम जतां वचमां जुए के खाइ, कोट, मेडावाळां घर, पर्वत उपरनां घर, भांयरां, वृक्षथी प्रधान घर, अथवा

झाड उपरनां निवासस्थान, गुफाओ, झाडना नीचे व्यंतरनां स्थळ, व्यंतर माटे करेली देरडीयो, मठो, भवनगृह विगेरे जे कंइ रमणीय स्थान होय, ते हाथ उंचा करी करीने अंगुलीथी उद्देशी उद्देशीने उंचा नीचा थइने जोवां नहि, तेम बीजाने बताववां पण नहि, तेमां दोषो आ छे के, ते स्थानमां आग लागे के चोरी थाय तो ते साधु उपर शंका आवे, तथा गृहस्थो एम जाणे के, आ उपरथी त्यागी छतां अंदरथी इंद्रियोथी परवश छे, तथा त्यां बेठेलो पक्षीनो समुदाय त्रास पामे, माटे साधु तेवुं न करतां शांतिथी विहार करे, तथा मार्गे विहारमां नीचली बाबतो होय, नदीना नीचाण भागमां वसेला (कच्छ) देशो अथवा मूळा वालोळनी वाडीओ, दवियाणि (बीड) जेमां राजा तरफथी घास माटे जमीन रोकेली होय छे ते, तथा नीचाणना खाडा (खीण) वलयो (नदीए वींटेला भूमीभागो) गहन उजाड प्रदेशे, अथवा पाणी विनानुं रण अथवा उजाड पहाळी किल्ला वन मोटां वन पर्वत पर्वतसमूह होय, तथा कुवा तळाव कुंड नदीओ वावडीओ कमळवाळी तथा लांबी वावडीओ गुंजालिका वांकी वावडीओ सरोवर सरोवरनी श्रेणि होय, जोडे जोडे तळावो होय, आ बधुं देखवा योग्य होय, छतां पण हाथ उंचा करीने के आंगळीथी इशारत करीने बताववुं नहि, तथा देखवुं नहि, केवळी प्रभु तेमां नीचला दोषो बतावे छे, कारण के तेमां रहेला मृगो बीजां पशु पक्षी साप सींह जलचर थलचर खेचर विगेरे जीवो होय, ते त्रास पामे, भडके, अथवा शरण लेवा आम तेम दोडे, तेथी तेनी नजीकमां रहेनार लाकोने साधु उपर शक आवे माटे साधुए मार्गमां चालतां तेम न करवुं, माटे शास्त्र जाणनारा एवा आचार्य उपाध्याय विगेरे गीतार्थ साधुओ साथे पोते विचरे. हवे आचार्य विगेरे साथे चालतां साधुनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा २ आयरिउवज्झा० गामा० नो आयरियउवज्झायस्स हत्थेण वा हत्थं जाव अणासायमाणे तओ संजयामेव

आयरिउ० सद्धिं जाव दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा आय० सद्धिं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा, ते णं त्ता एवं वइज्जा—आउसंतो! समणा! के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा गच्छिहिह?, जे तत्थ आयरिए वा उवज्झाए वा से भासिज्ज वा वियागरिज्ज वा, आयरिउवज्झायस्स भासमाणस्स वा वियागरेमाणस्स वा नो अंतरा भासं करिज्जा, तओ० सं० अहाराईणिए वा० दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा अहाराइणियं गामा० दू० नो राईणियस्स हत्थेण हत्थं जाव अणासायमाणे तओ सं० अहाराइणियं गामा० दू० ॥ से भिक्खू वा २ अहाराइणिअं गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा, ते णं पाडिपहिया एवं वइज्जा—आउसतो! समणा! के तुब्भे? जे तत्थ सव्वराइणिए से भसिज्जा वा वागरिज्ज वा, राइणियस्स भासमाणस्स वा वियागरेमाणस्स वा नो अंतरा भासं भासिज्जा, तओ संजयामेव अहाराइणियाए गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ (सू० १२८)

ते भिक्षु आचार्य विगेरेनी साथे विहार करतां गुरु विगेरेथी एटलो दूर उभो रहे, के हाथ विगेरेनो स्पर्श न थाय, तथा ते भिक्षु आचार्य विगेरेनी साथे जतां मुसाफरो पूछे के हे साधुओ! तमे कोण छो? क्यांथी आवो छो? क्यां जवाना छो? ते समये जे आचार्य उपाध्याय विगेरे जे मोटा होय, ते उत्तर आपे, अथवा खुलासाथी समजावे, पण आचार्यादि उत्तर आपे, तेमां पोते वचमां कंइ पण न बोले, तेमज जे रत्नाधिक (चारित्रपर्याये के ज्ञाने मोटा होय ते) आगळ चाले, पोते पछवाडे चाले, अने चार हाथनी दृष्टि राखी चाले, ते भिक्षु वळी जे आचार्यने बदले रत्नाधिक साथे चालतो होय, तेमने पण हाथ विगेरेथी स्पर्श न करे, अने रस्तामां मुसाफरो मळतां ते पूछे तो रत्नाधिके उत्तर आपवो, एटले सौथी मोटाए उत्तर आपवो, पण ते मोटा साधु बोलता होय,

त्यारे वचमां अन्य साधुए बोलवुं नहि, तेज प्रमाणे संयतोए मोटा रत्नाधिक साधुने आगळ करीने विहार करवो. वळीः—

से भिक्खू वा० दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा, ते णं पा० एवं वइज्जा—आउ० स०! अवियाइं इत्तो पडिवहे पासह, तं०-मणुस्सं वा गोणं वा महिसं वा पसुं वा पक्खिं वा सिरीसिवं वा जलयरं वा से आइक्खह दंसेह, तं नो आइक्खिज्जा नो दंसिज्जा, नो तस्स तं० परिन्नं परिजाणिज्जा, तुसिणिए उवेहिज्ज, जाणं वा नो जाणंति वइज्जा, तओ स० गामा० दू० ॥ से भिक्खू वा० गा० दू० अंतरा से पाडि० उवा०, ते णं पा० एवं वइज्जा—आउ० स०! अवियाइं इत्तो पडिवहे पासह उदगपसूयाणि कंदाणि वा मूलाणि वा तया पत्ता पुप्फा फला बीया हरिया उदगं वा संनिहियं अगणिं वा सनिखित्तं से आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे अंतरा से पाडि० उवा०, ते णं पाडि० एवं आउ० स० अवियाइं इत्तो पडिवहे पासह जवसाणि वा जाव से णं वा विरूवरूवं संनिविट्ठं से आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे अंतरा पा० जाव आउ० स० केवइए इत्तो गामे वा जाव रायहाणिं वा से आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा २ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, अंतरा से पाडिपहिया आउसंतो समणा! केवइए इत्तो गामस्स नगरस्स वा जाव रायहाणीए वा मग्गे से आइक्खह, तहेव जाव दूइज्जिज्जा॥(सू० १२९)

ते साधुने मार्गमां जतां कोइ मुसाफर पूछे के, हे साधु! तमे रस्तामां आवतां कोइ माणस जोयो? बळध भेंस पशु पंखी सरीसृप जलचर जे कंइ देख्युं होय ते कहो, अथवा बतावो, तो ते समये साधुए कंइ पण बोलवुं नहि, तेम बतावबुं नहि, तेनी ते वात साधुए कबुल राखवी नहि, मौन रहेवुं, अथवा जाणतो होय. तो पण नथी जाणतो, एम कहेवुं, तेज प्रमाणे समाधिथी विहार करवो.

तेज प्रमाणे साधुने मार्गमां पूछे, के जळमां थनारां कंद मूळ छाल पांदडां फूल फळ बीज हरित (भाजी) पाणी अथवा स्थापेला अग्नि होय तो बतावो, ते समये पण मौन रहेवुं, जाणवा छतां, 'नथी जाणतो' एम कहेवुं, अथवा पूछे के मार्गमां जव घउंनां खेतर अथवा जुदुं जुदुं जे जोयुं होय ते कहो, तोपण मौन रहेवुं, तेज प्रमाणे पूछे के अहींथी गाम अथवा राजधानी केटली दूर छे? तो पण मौन रहेवुं, अथवा अमुक गाम अथवा नगर के राज्यधानीए क्यो रस्तो जाय छे? विगेरे पूछे तो मौन रहेवुं, पण ते संबंधी उत्तर आपवो नहि.

से भिक्खू० गा० दू० अंतरा से गोणं वियालं पडिवहे पेहाए जाव चित्ताचिल्लडं वियालं प० पेहाए नो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छिज्जा नो मग्गाओ उम्मग्गं संकमिज्जा नो गहणं वा वणं वा दुग्गं वा अणुपविसिज्जा नो रुक्खंसि दूरुहिज्जा नो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसिज्जा नो वाडं वा सरणं वा सेणं वा सत्थं वा कंखिज्जा अप्पुस्सुए जाव समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू० गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया, से जं पुण विहं सिया, से जं पुण विहं जाणिज्जा इमंसि खलु विहंसि बहवे अमोसगा। उवगरणपडियाए संपिंडिया गच्छिज्जा, नो तेसिं भीओ उम्मग्गेण गच्छिज्जा जाव समाहीए तओ संजयामेव गामणुगामं दूइज्जेज्जा ॥ (सू० १३०)

ते भिक्षुने विहार करतां मार्गमां बळध के साप उन्मत्त थएलो जुए, सिंह चीतरो अथवा तेनुं बच्चुं जुए, तो तेना भयथी डरीने उन्मार्गे जवुं नहि, तेम उज्जड अरण्यमां घुसवुं नहि, तेम झाड उपर पण चडवुं नहिं, तेम पाणीमां पण पेसवुं नहि, तेम वाडामां पेसवु नहि, बीजानुं शरण चाहवुं नहीं, पण उत्सुकता राख्या विना शांतिथी जवुं आ सूत्र जिनकल्पी आश्रयी छे, पण

स्थविर कल्पीए तो साप विगेरेने बाजुए टाळी नीकळवुं, वळी ते मार्गे चालतां लांबी उजाड अटवी आवे, अने तेमां चोरो रहेता होय, अने ते चोरो उपधि लेवा आवता होय, तो पण तेना डरथी उन्मार्गे जवुं नहि, पण सीधे रस्ते शांतिथी विहार करता जवुं.

से भिक्खू वा० गा० दू० अंतरा से आमोसगा संपिंडिया गच्छिज्जा ते णं आ० एवं वइज्जा—आउ० सं० ! आहार एयं वत्थं वा० ४ देहि निक्खिवाहि, तं नो दिज्जा निक्खिविज्जा, नो वंदिय २ जाइज्जा, नो अंजलिं कट्टु जाइज्जा, नो कलुणपडियाए जाइज्जा, धम्मियाए जायणाए जाइज्जा, तुसिणीयभावेण वा ते णं आमोसगा सयं करणिज्जंतिकट्टु अक्कोसंति वा जाव उद्दविंति वा वत्थं वा ४ अच्छिंदिज्ज वा जाव परिट्ठविज्ज वा, तं नो गामसंसारणियं कुज्जा, नो रायसंसारियं कुज्जा, नो परं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो ! गाहावई एए खलु आमोसगा उवगरणपडियाए सयंकरणिज्जतिकट्टु अक्कोसंति वा जाव परिट्ठवंति वा एयप्पगारं मणं वा वायं वा नो पुरओ कट्टु विहरिज्जा, अप्पुस्सुए जाव समाहीए तओ संजयामेव गामा० दूइ० ॥ एय खलु० सया जइ० (सू० १३१) त्तिबेमि ॥ समाप्तमीर्याख्यं तृतीयमध्ययनम् ॥

भिक्षुने विहार करतां चोरो भेगा थइने उपकरण याचे, तो तेमने हाथमां अर्पण करवा नहि, बलथी ग्रहण करे तो जमीन उपर नांखी देवां, अने चोरे लीधा पछी तेने वंदन करीने याचवां नहि, तेम हाथ जोडीने दीनताथी पण याचवो नहि, पण धर्म समजावीने याचवां अथवा चुप रहीने उपेक्षा करवी, तथा ते चोरो पोताना कर्तव्य प्रमाणे आक्रोश करे, दंडथी मारे अथवा जीव ले, तो पण तेना सामे थवुं नहि, पण तेओ माल विनानां समजी पाछां फेंकी दे, फाडी नांखे तो पण तेमनी चेष्टा गाममां के राजकूळमां कहेवी, नहि, अथवा बीजा गृहस्थने पण एम न कहेवुं के आ चोरोए आ प्रमाणे कर्युं छे. तथा मनथी के वचनथी तेना

उपर दुर्भाव बतावबो नहि, पण उत्सुकता छोडी समाधिथी विहार करी बीजे गाम जवुं. आज साधुनी साधुता छे.

त्रीजुं अध्ययन समाप्त थयुं.

चोथुं अध्ययन भाषा जातम्

त्रीजुं अध्ययन कह्युं, हवे चोथुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, त्रीजा अध्ययनमां पिंडविशुद्ध माटे गमनविधि कही त्यां गयेलाए मार्गमां आ प्रमाणे बोलवुं आम न बोलवुं, ते बतावशे, आ संबंधे आवेला आ भाषा जात अध्ययनना चार अनुयोगद्वारा थाय छे, तेमां निक्षेपनिर्युक्ति अनुगममां भाषाजात शब्दोना निक्षेपा माटे निर्युक्तिकार कहे छे.

जह वक्कं तह भासा जाए छक्कं च होइ नायव्वं । उप्पत्तीए १ तह पज्जवं २ तरे ३ जायगहणे ४ य ॥ ३१३

वाक्य शुद्धि नामना अध्ययनमां जेम वाक्यनो पूर्वे निक्षेप कर्यो छे, ते प्रमाणे भाषानो पण करवो.

जात शब्दना निक्षेपानुं वर्णन.

पण जात शब्दनो छ प्रकारे निक्षेपो करवो, नाम स्थापना क्षेत्र काळ अने भाव छे, एमां नाम स्थापना सुगम छे, द्रव्य जात आगमथी अने नो आगमथी छे, तेमां व्यतिरिक्तमां निर्युक्तिकार पाछळनी अडधी गाथाथी कहे छे, ते चार प्रकारे उत्पत्तिजात, पर्यवजात, अंतरजात, अने ग्रहण जात छे. (१) तेमां उत्पत्तिजात ते जे द्रव्यो भाषा वर्गणानी अंदर पडेला कायसोगथी ग्रहण करेलां

ते वाग्योगवडे निसृष्ट थयेलां भाषा पणे उत्पन्न थाय, ते उत्पत्तिजात छे, अर्थात् जे द्रव्य भाषापणे उत्पन्न थाय ते. (२) तेज वाचाथी निसृष्ट भाषा द्रव्योवडे जे विश्रेणीमां रहेला भाषा वर्गणानी अंदर रहेलां निसृष्ट द्रव्यना पराघात वडे भाषा पर्यायपणे जे उत्पन्न थाय छे, ते द्रव्योपर्यवजात कहेवाय छे, (३) जे द्रव्यो अंतराले समश्रेणिमांज निसृष्ट द्रव्यनी साथे मिश्रित भाषा परिणामने भजे, ते अंतरजात छे. (४) वळी जे द्रव्यो समश्रेणिमां रहेला भाषापणे परिणमेलां कर्ण शष्कुली (कानमी अंदर)ना काणामां पेठेलां ग्रहण कराय छे, ते अनंत प्रदेशवाळां द्रव्यथी छे, तथा असंख्यप्रदेशवाळा अवकाशमां अवगाढेलां क्षेत्रथी छे, काळथी एक बे त्रणथी मांडीने असंख्यात समय सुधीनी स्थितिवाळां छे, भावथी वर्ण गंध रस स्पर्शवाळां छे, ते आवां द्रव्यो 'ग्रहणजात' छे, द्रव्यजात कह्युं,

क्षेत्रादिजात तो स्पष्ट होवाथी निर्युक्तिकारे कह्यां नथी, ते आ प्रमाणे छे, जे क्षेत्रमां भाषाजातनुं वर्णन चाले, अथवा जेटलुं क्षेत्र स्पर्श करे, ते क्षेत्रजात छे, एज प्रमाणे जे काळमां वर्णन चाले ते कालजात छे,

भावजात तो तेज उत्पत्ति पर्यव अंतर ग्रहण द्रव्य सांभळनारना कानमां जणाय, के "आ शब्द" छे, एवी बुद्धि उत्पन्न करे,

पण अहिं अधिकार द्रव्य भाषाजात वडे छे कारण के द्रव्यनी प्रधान विवक्षा छे,

द्रव्यनो विशिष्ट अवस्था भाव छे, ते माटे भाव भाषा जात वडे पण अधिकार छे,

उद्देशाना अर्थाधिकार माटे कहे छेः—

सव्वेवि य वयणविसोहिकारगा तहवि अत्थि उ विसेसो । वयणविभत्ती पढमे उप्पत्ती वज्जणा बीए ॥ ३१४ ॥

जो के बे उद्देशा पण वचन विशुद्धि करनारा छे, तो पण ते दरेकमां विशेष छे, ते आ छे, प्रथमना उद्देशामां वचननी विभक्ति छे, एटले एकवचनथी लइने सोळ प्रकारना वचननो विभाग छे. तथा आवुं वचन बोलवुं, आवुं नहि, तेनुं वर्णन छे बीजा उद्देशामां क्रोध विगेरेनी उत्पत्ति जेम न थाय, तेम बोलवुं, हवे सूत्र अनुगममां अस्खलितादि गुणयुक्त सूत्र छे, ते आ प्रमाणे छेः—

से भिक्खू वा २ इमाइं वयायाराइं सुच्चा निसम्म इमाइं अणायाराइं अणारियपुव्वाइं जाणिज्जा—जे कोहा वा वायं विउंजंति जे माणा वा० जे मायाए वा० जे लोभा वा वायं विउंजंति जाणओ वा फरुसं वयंति अजाणओ वा फ० सव्वं चेयं सावज्जं वज्जिज्जा विवेगमायाए, धुवं चेयं जाणिज्जा अधुवं चेयं जाणिज्जा असणं वा ४ लभिय नो लभिय भुंजिय नो भुंजिय अदुवा आगओ अदुवा नो आगओ अदुवा एइ अदुवा नो एइ अदुवा एहिइ अदुवा नो एहिइ इत्थवि आगए इत्थवि नो आगए इत्थवि एइ इत्थवि नो एति इत्थवि एहिति इत्थवि नो एहिति ॥ अणुवीइ निट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासिज्जा, तंजहा—एगवयणं १ दुवयणं २ बहुव० ३ इत्थि० ४ पुरि० ५ नपुंसगवयणं ६ अज्झत्थव० ७ उवणीयवयणं ८ अवणीयवयणं ९ उवणीयअवणीयव० १० अवणीयउवणीयव० ११ तीयव० १२ पडुप्पन्नव० १३ अणागयव० १४ पच्चक्खवयणं १५ परुक्खव० १६ से एगवयणं वइस्सामीति एगवयणं वइज्जा जाव परुक्खवयणं वइस्सामीति परुक्खवयणं वइज्जा, इत्थी वेस पुरि सोवेस नपुंसगं वेस एयं वा चेयं अन्नं वा चेयं अणुवीइ निट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासिज्जा, इच्चेयाइं आययणाइं उवातिकम्म ॥ अह भिक्खू जाणिज्जा चत्तारि भासज्जायाइं, तंजहा—सच्चमेगं पढमं भासज्जायं १ बीयं मोसं २ तईयं सच्चामोसं ३ जं नेव सच्चं नेव मोसं नेव सच्चामोसं असच्चामोसं नाम तं

चउत्थं भासजायं ४ ॥ से बेमि जे अईया जे य पडुप्पन्ना जे अणागया अरहंता भगवंतो सव्वे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइं भासिंसु वा भासंति वा भासिस्संति वा पन्नविंसु वा ३, सव्वाइं च णं एयाइं अचित्ताणि वण्णमंताणि गंधमंताणि रसमंताणि फासमंताणि चओवचइयाइं विप्परिणामधम्माइं भवंतीति अक्खायाइं ॥ सू० १३२)

साधुने आ अंतःकरणमां उत्पन्न थएला (इदम् आ प्रत्यक्ष समीप वाची शब्द वडे बतावेल होवाथी) तथा जोडाजोड वाणी संबंधी आचार ते वागाचार (वाणीना आचार) सूत्रकार बतावे छे, ते सांभळीने तथाहृदयमां जाणीने भाषा समिति वडे ते साधुए वचन बोलवुं. ते हवे विगत वार कहे छे.

तेमां प्रथम आवी भाषा न बोलवी, ते अनाचरित भाषानुं वर्णन करे छे, ते न बोलवा योग्य अनाचार कहे छे, एटले, जे क्रोधथी वाचा बोले छे, जेमके तुं चोर छे दास छे ! तथा केटलाक मानथी बोले छे, जेमके हुं उत्तम जातिनो छुं तुं अधम जातिनो छे, तथा मायाथी बोले छे जेमके हुं मांदो छुं. (पण मांदो होय नहि) अथवा बीजानो सावद्य (पापवाळो) संदेशो कोइ उपाय वडे कहीने पछी मिथ्यादुष्कृत करे छे, आ तो माराथी सहसा (उतावळथी) बोलाइ गयुं छे! तथा कोइ लोभथी बोले के आ वचन बोलवाथी हुं कंइक मेळवीश. तथा कोइनो दोष जाणतो होय, तेनो दोष उघाडवा वडे कठोर वचन बोले छे, अथवा अजाण पणे बोले छे, आ बधु उपर कहेलुं सघळुं क्रोधादिनुं वचन पाप सहित होवाथी (सावद्य छे माटे) ते वर्जवुं, अर्थात् विवेकी बनीने साधुए तेवुं वचन न बोलवुं.

तथा कोइ साथे साधुए बोलतां निश्चयात्मक वाचा न बोलवी के " अमुक वरसाद विगेरे बनशेज " तेवीज रीते अध्रुव पण

कोइ साधुने भिक्षा माटे कोइ ज्ञाति के कुलमां प्रवेश करतो जोइने तेने उद्देशीने बीजा
जाणवुं, (के आम नहिज बने) अथवा कोइ साधुने भिक्षा माटे कोइ ज्ञाति के कुलमां प्रवेश करतो जोइने तेने उद्देशीने बीजा
साधुओ आवुं बोले के आपणे खाइ लो, ते लइनेज आवशे, अथवा तेने माटे राखी मुको ते कंइ पण लीधा विनाज आवशे
अथवा त्यांज खाइने अथवा खाधा विनाज आवशे, तेवुं निश्चयात्मक वचन पण न बोलवुं, तथा आवी वाणी न बोलवी, के राजा
विगेरे आव्यो छेज, तथा ते नथीज आव्यो, अथवा आवेछेज, आववानो नथीज, तथा ते आवशेज, अथवा आवशेज नहि, ए प्रमाणे
पत्तन मठ विगेरे आश्रयी पण भूत विगेरे त्रणे काळ आश्रयी योजवुं, ते बधानो सार आ छे के जे अर्थने पोते बरोबर न जाणे
त्यां आगळ आ 'एमज छे' एम न बोलवुं,

सामान्यथी साधुने बधी जग्याए लागु पडतो आ उपदेश छे के विचारीने, सम्यग् रीते निश्चय करीने अथवा श्रुत उपदेश वडे
प्रयोजन वडे साधारण 'निश्चय आत्मक' बनीने भाषा समिति वडे अथवा रागद्वेष छोडीने सोळ वचननी विधि जाणीने भाषा बोले,
जेवी भाषा बोलवी ते सोळ प्रकारना वचननी विधिवाळी भाषा बतावे छे. **सोळ प्रकारनी भाषा.**

(१) एक वचन जेमके 'वृक्षः' (२) द्वि वचन 'वृक्षौ' (३) बहु वचन 'वृक्षाः' आ त्रण वचन थया.

त्रण प्रकारना लिंग आश्रयी कहे छे.

(४) स्त्री वचन वीणा, कन्या, (५) पुंवचन घटः, पटः (६) नपुंसक वचन पीठं, देवकुलं (देवळ) अध्यातम वचन.

(७) आत्मामां रहेलुं ते अध्यात्म (हृदयमां रहेलुं) तेना परिहार करवावडे अन्य बोलवा जतां बीजुंज (खरुं) सहसात्कारे
बोलाइ जाय. (८) उपनीत वचन ते प्रशंसानुं वचन जेम सुंदर स्त्री (९) तेथी उलटुं अपनीत निंदावाळुं वचन कुरुपवाळी स्त्री. (१०)

ऊपनीत अपनीत वचन कंइक प्रशंसा योग्य गुण बतावी निंदा आत्मकगुण बतावे जेमके आ स्त्री सुंदर छे, पण कुलटा छे. (११) अपनीत उपनीत वचन ते प्रथमथी उलटुं छे, जेमके आ स्त्री कुरुपा छे पण शीलव्रत पाळनारी सती छे. (१२) अतीत वचन कृतवान् कर्युं. (१३) वर्त्तमान वचन करे छे, (१४) अनागत वचन 'करशे' (१५) प्रत्यक्ष वचन आ देवदत्त छे. (१६) परोक्षवचन ते देवदत्त छे, आ प्रमाणे सोळ वचनो छे, आ सोळ वचनोमां साधुने जरूर पडे, त्यारे एक वचननी विविक्षामां एक वचन बोले, ते परोक्ष वचन सुधीमां ज्यां जवुं योग्य होय त्यां तेवुं बोले, तथा स्त्री विगेरे देखे छते आ स्त्रीज छे, अथवा पुरुष अथवा नपुंसक छे, जेवुं होय तेवुं बोले, आ प्रमाणे विचारी निश्चय करीने सत्य बोलनारो समितिवडे अथवा समपणे संयत भाषा बोले, तथा पूर्वे कहेलां अथवा हवे पछी कहेवाता दोषोनां स्थान छोडीने भाषा बोले, ते भिक्षु चार प्रकारनी भाषाओ जाणे, ते आ प्रमाणे—

(१) सत्यभाषाजात—ते यथार्थ वचन अवितथ (खरेखरुं) बोलवुं. गाय होय तो गाय अश्व होय तो अश्व कहेवो.

(२) एथी विपरीत ते मृषा (जूठ) बोलवुं–एटले गायने अश्व कहेवो, अश्वने गाय कहेवी.

(३) सत्यमृषा–जेमां थोडुं सत्य थोडुं असत्य. जेमके–देवदत्त घोडा उपर बेसीने जतो होय तो उंट उपर बेसीने देवदत्त जाय छे एम कहेवुं.

(४) बोलायेली भाषामां सत्य, जुठ के मिश्रपणुं न होय, ते आमंत्रण आज्ञापन विगेरेमां सत्य जुठ नथी ते असत्यामृषा चोथी भाषा छे, आ बधुं सुधर्मास्वामीए पोतानी बुद्धिथी नथी कह्युं तेथी कहे छे, के जे पूर्वे तीर्थंकर थाय, वर्त्तमानमां छे अने भविष्यमां थशे ते बधा तीर्थंकरोए कह्युं छे, हमणां कहे छे अने कहेशे, के आ बधांए भाषाद्रव्य अचित्त छे, वर्ण गंध रस फरस-

वाळां, चय, उपचय विगेरे विविध परिणाम धर्मवाळां छे, एवुं तीर्थंकरे कहेल छे, अहीं वर्ण विगेरे गुणो बतावत्राथी शब्दनुं मूर्त्त पणुं बताव्युं, पण अन्यलोक एवुं माने छे, के 'शब्द आकाशनो गुण' छे, ते आकाशने वर्ण विगेरे नथी माटे शब्द रुपी नहि पण अरुपी छे, तेम जैनो मानता नथी, तथा चय—उपचय धर्म बताववाथी शब्दनुं अनित्यपणुं बताव्युं; कारण के शब्दद्रव्योनुं विचित्रपणुं सिद्ध थाय छे. हवे शब्दोनुं कृतत्त्व प्रकट करवा कहे छे.

से भिक्खू वा० से जं पुण जाणिज्जा पुव्विं भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा भासा भासासमयवीइक्कंता च णं भासिया भासा अभासा ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण जाणिज्जा जा य भासा सच्चा १ जा य भासा मोसा २ जा य भासा सच्चामोसा ३ जा य भाषा असच्चऽमोसा ४, तहप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं फरुसं अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परियावणकरिं उद्दवणकरिं भूओवघाइयं अभिकंख नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण जाणिज्जा, जा य भासा सच्चा सहुमा जा य भासा असच्चामोसा तहप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूओवघाइयं अभिकंख भासं भासिज्जा ॥ (सू० १३३)

ते भिक्षु आ प्रमाणे शब्दने जाणे, के भाषा द्रव्य वर्गणाओनो वाक्‌योग निसरवाथी पूर्वे जे आ भाषा हती, ते वाक्‌योगवडे निसरवाथीज भाषा कहेवाय छे, आ कहेवाथी तालवुं ओठ विगेरेना व्यापारथी पूर्वे जे शब्द नहोता, ते ते उत्पन्न करवाथी खुलेखुलुं (प्रकट) कृतक (बनावटा) पणुं सूचव्युं छे. जेम माटीना पिंडमां प्रथम घडो नहातो, ते कुंभारे प्रयोजन आवतां दंडचक्रवडे घडाने बनाव्यो, तेम ते भाषा बोलाया पछी नाश पामती होवाथी शब्दोनुं बोलाया पछीना कालमां अभावपणुं छे, जेमके घडो फुटवाथी

ठीकरां थयां, त्यारे ते कपाळ (ठीकरुं—ठीब) नीअवस्थामां घडो ते अघडो थयो छे, आ वाक्योवडे शब्दोनो पूर्व अभाव तथा प्रध्वंस (नाश थवाथी) अभाव बताव्यो छे, हवे चारे भाषामांथी न बोलवा योग्य भाषाने कहे छे, ते भिक्षु आ प्रमाणे जाणे के १ सत्य २ मृषा ३ सत्यामृषा ४ असत्यामृषा एम भाषा चार भेदे छे. तेमां मृषा सत्यामृषा तो बोलवा योग्य नथी, पण सत्य वचन पण कर्कश विगेरे दुर्गुणवाळुं न बोलवुं, ते बतावे छे.

(१) अवद्य (पाप) सहित वर्त्ते, ते 'सावद्य भाषा' सत्य होय तो पण न बोलवी, (२) सक्रिय—ते जेमां अनर्थ दंडनी क्रिया प्रवर्त्ते, ते पण भाषा साधुए न बोलवी (३) कर्कश ते चावेला अक्षरवाळी (४) कटुक–ते चित्तने उद्वेग करनारी (५) निष्ठुर ते हक्क प्रधान (ठपका रुप) (६) परुषा ते पारकाना मर्म उघाडवा रुप (७) कर्मास्रव करनारी, तेज प्रमाणे छेदन भेदन ते ठेठ अपद्रावण करनारी सुधी जे जीवोने उपताप करनारी होय, ते मनथी विचारीने सत्य होय तो पण न बोलवी, हवे बोलवानी भाषा कहे छे. ते भिक्षु आ प्रमाणे जाणे, के जे भाषा सत्य छे, तथा कोमळ विगेरे गुणोवाळी जीवोने उपताप न करनारी भाषा छे, ते बोलवी, तथा कुशाग्रहबुद्धिवडे विचारीने जे सूक्ष्म भाषा बोलाय, ते वखते मृषा पण सत्य जेवी गुणकारी थाय, जेम के मृग देख्युं होय, छतां शिकारी आगळ ते मृगनी रक्षा खातर 'न देख्युं' कहे, तो सत्य जेवुंज गुणकारी छे, कह्युं छे के.

अलिअं न भासिअव्वं अत्थि हु सच्चंपि जं न वत्तव्वं । सच्चंपि होइ अलिअं जं परपीडाकरं वयणं ॥ १ ॥

जेम जूठ न बोलवुं, तेम सत्य पण जे परने पीडाकारक वचन होय ते जूठा जेवुं जाणीने बोलवुं नहि, तथा जे असत्यामृषा छे ते आमंत्रणी (आवो) आज्ञापकनी (काम करो) विगेरे पण जे असावद्य अक्रिय अकठोर जीवने दुःख न देनारी होय, ते मनथी

विचारीने हमेशां साधुए बोलवी—

से भिक्खू वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अपडिसुणेमाणे नो एवं वइज्जा—होलित्ति वा गोलित्ति वा वसुलेत्ति वा कुपक्खेत्ति वा घडदासित्ति वा साणेत्ति वा तेणित्ति वा चारिएत्ति वा माईत्ति वा मुसावाइत्ति वा, एयाइं तुमं ते जणगा वा, एअप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं जाव भूओवघाइयं अभिकंख नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अप्पडिसुणेमाणे एवं वइज्जा—अमुगे इ वा आउसोत्ति वा आउसंतारोत्ति वा सावगेत्ति वा उवासग्गेत्ति वा धम्मिएत्ति वा धम्मपिएत्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा ॥ से भिक्खु वा २ इत्थिं आमंतेमाणे आमंतिए य अप्पडिसुणेमाणे नो एवं वइज्जा-होली इ वा गोलिनि वा इत्थीगमेणं नेयव्वं ॥ से भिक्खू वा २ इत्थि आमंतेमाणे आमंतिए य अप्पडिसुणेमाणी एवं वइज्जा—अउसोत्ति वा भइणित्ति वा भोईति वा भगवईति वा साविगेति वा उवासिएत्ति वा धम्मिएत्ति वा धम्मप्पिएत्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा ॥ (सू० १३४)

ते साधु जरुर पडतां कोइ माणसने बोलावे, अथवा पूर्वे बोलाव्यो होय, पण ते माणसे लक्ष्य न आप्युं होय, तो तेने आवा कठोर शब्दो न कहेवा, के तुं होल, गोल (आ बंने शब्दो बीजा देशमां अपमान रुपे छे,) तथा वृषल अथवा कजात घटदास कुत्तो चोर, अथवा चारिकमायी मृषावादी अथवा तुं ! आवो अथवा तारां मावाप आवां छे ! आ भाषा कठोर होवाथी साधुए न बोलवी, पण तेथी विपरीत ते अकठोर भाषा बोलवी, एटले आमंत्रण कर्या छतां पेला पुरुषनुं लक्ष्य न होय, तो शांतिथी कहेवुं के हे भाइ ! आयुष्मन् ! अथवा बहु आयुष्मन्त श्रावक धर्म प्रिय—अर्थात् तेने प्रिय लागे, तेवुं वचन कहेवुं, तेज प्रमाणे स्त्रीने

आश्रयी पण होली गोली विगेरे कठोर वचन न कहेवां, पण तेनुं लक्ष्य खेंचवा आयुष्मती, बाइ भोगी भगवती श्राविका उपासिका धार्मिका धर्म प्रिया इत्यादि असावद्य वचन विचारीने बोलवुं. एज प्रमाणे अभाषणीय भाषाना बीजा प्रकारो बतावे छे.

से भि० नो एवं वइज्जा—नभोदेवित्ति वा गज्जदेवित्ति वा विज्जुदेवित्ति वा पवुट्ठदे० निवुट्ठदेवित्तिए वा पडउ वा वासं मा वा पडउ निप्फज्जउ वा सस्सं मा वा नि० विभाउ वा रयणी मा वा विभाउ उदेउ वा सूरिए मा वा उदेउ सो वा राया जयउ वा मा जयउ, नो एयप्पगारं भासं भासिज्जा ॥ पन्नवं से भिक्खू वा २ अंतलिक्खेत्ति वा गुज्झाणुचरिएत्ति वा संमुच्छिए वा निवइए वा पओ वइज्जा वुट्ठबलाहगेत्ति वा, एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जाइज्जासि त्तिबेमि २-१-४-१ ॥ भाषाध्ययनस्य प्रथमः ॥ (सू० १३९)

वळी ते साधु असंतने योग्य आवी जे भाषा छे तेने न बोले, जेमके नभोदेव, गर्जतोदेव, विजळीदेव प्रवृष्टदेव निवृष्टदेव (आमां वर्षाद वीजळी विगेरेने देव न कहेवो ते सूचव्युं छे.) तथा वर्षाद पडो अथवा न पडो, सूर्य उगो, अथवा न उगो, आ राजा जीतो अथवा न जीतो, आवी भाषा पण न बोले, पण कारण पडे वरसादने अंगे बोलवु पडे, तो संयत भाषाए आ प्रमाणे बोलवुं के अंतरीक्षमांथी वरसाद पडे छे. अथवा गुह्यानुं चरित छे, संमूर्छिम छे अथवा वादळां वरसे छे, आ प्रमाणे साधु साध्वीए खुशामत विनानुं सादुं वचन बोलवुं, तेज साधुनी साधुता छे, ते सर्व अर्थोवडे समजीने समिति सहितपणे बोलवामां प्रयत्न करवो. चोथो अध्ययननो १ लो उद्देशो पूरो थयो.

बीजो उद्देशो.

पहेलो कहीने बीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां वाच्य अवाच्यनुं विशेषपणुं बताव्युं, अहीं पण तेज बाकीनुं कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे,

से भिक्खू वा जहा वेगईयाइं रूवाइं पासिज्जा तहावि ताइं नो एवं वइज्जा, तंजहा—गंडी गंडीति वा कुट्ठी कुट्ठीति वा जाव मेहुमेहुणीति हत्थच्छिन्नं वा हत्थच्छिन्नेत्ति वा एवं पायछिन्नेत्ति वा नक्कछिण्णेइ वा कण्णछिन्नेइ वा उट्ठछिन्नेति वा, जेयावन्ने तहप्पगारा एयप्पगाराहिं भासाहिं बुइया कुप्पंति माणवा ते यावि तहप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा तहावि ताइं एवं वइज्जा—तंजहा—ओयंसी ओयंसित्ति वा तेयंसि तेयंसीति वा जसंसी जसंसीइ वा वच्चसी वच्चंसीइ वा अभिरूयंसी २ पडिरूवंसी २ पासाइयं २ दरिसणिज्जं दरिसणीयत्ति वा, जे यावन्ने तहप्पगारा तहप्पगाराहिं भासाइं बुइया २ नो कुप्पंति माणवा तेयावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा, तंजहा—वप्पाणि वा जाव गिहाणि वा, तहावि ताइं नो एवं वइज्जा, तंजहा—सुकडे इ वा सुट्ठुकडे इ वा साहुकडे इ वा कल्लाणे इ वा करणिज्जे इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जहा वेगईयाइं रूवाइं पासिज्जा, तंजहा—वप्पाणि वा जाव गिहाणि वा तहावि ताइं एवं वइज्जा, तंजहा—आरंभकडे इ वा सावज्जकडे इ वा पयत्तकडे इ वा पासाइयं पासाइए वा दरीसणीयं दरसणीयंति वा अभिरूवं अभिरूवंति वा पडिरूवं पडिरूवंति वा एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ॥ (सू० १३६)

ते भिक्षु कोइ पण रूपो जुए, तो पण तेवां रूपो बोले नहि, जेमके कोइने गंडमाळनो रोग थयो होय गंडीपद (गुमडांवाळा) तथा कोढीया अथवा पूर्वे बताव्या प्रमाणे १६ रोगवाळाने ते रोगवाळो कही चीडाववो नहि, ते छेवटे मधु मेही सुधी छे. आ रोगीओ सिवाय कोइने पाछळथी अंगमां खोड आवी होय, हाथ छेदायेलो होय, तेम पग नाक कान होठ विगेरे छेदायला होय, तथा काणो होय कुंट होय, तेवाने तेवा शब्दोए बोलाववाथी तेओ कोपायमान थाय छे, माटे तेवाने तेवा वचनथी बोलाववो नहि,

तेवाने जरुर पडतां केवी रीते बोलाववा ते कहे छे, ते भिक्षु कदाच गंडीपद विगेरे व्याधिवाळा माणसने जुए, अने तेने बोलाववो होय, तो तेनो कोइपण सारो गुण जोइने तेने उद्देशीने हे ओजस्वी ! हे तेजस्वी ! इत्यादि आमंत्रणे बोलाववो.

आ संबंधमां कृष्णावासुदेवनुं दृष्टांत छे.

एक सडेलो कुतरो राजमार्गमां पडेलो तेनी दुर्गंधथी कृष्णना माणसो आडे रस्ते उतर्या, पण कृष्णे पोते तेज रस्ते जइ तेनी दुर्गंधीनी उपेक्षा करी फक्त तेना मोढामां सुंदर दांतनी श्रेणी जोइ तेनी प्रशंशा करी, तेज प्रमाणे साधुए तेवा रोगामांथी कोइपण गुण शोधी तेने बोलाववो, एटले पराक्रमी तेजस्वी वक्ता यशस्वी सुरुप मनोहर रमणीय देखवा योग्य अथवा तेवो जे गुण होय, तेने उद्देशीने बोलाववो, के तेनाथी ते नाखुश न थाय.

तथा मुनिए कोट किल्ला घर विगेरे जोइने एम न कहेवुं के आ रुडा बनावेला छे, खुब बनाव्या छे, फायदाकारक छे, अथवा तमारे आवा करवा लायक छे, एवा प्रकारनी बीजी पण अधिकरणने अनुमोदनारी सावद्य भाषा बोलवी नहिं.

छतां जरुर पडे, तो कहेवुं, के महा आरंभथी आ करेल छे, तथा बहु महेनते करेल छे, तथा प्रासाद विगेरे रमणिक देखावा

योग्य छे, सरखी बांधणीवाळा शोभीता छे, विगेरे निरवद्य भाषा बोलवी.

से भिक्खू वा २ असणं वा० उवक्खडियं तहाविहं नो एवं वइज्जा, तं० सुकडेत्ति वा सुट्ठुकडे इ वा साहुकडे इ वा कल्लाणे

इ वा करणिज्जे इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा २ असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाय

एवं वइज्जा, तं०—आरंभकडेत्ति वा सावज्जकडेत्ति वा पयत्तकडे इ वा भद्दयं भद्देत्ति वा ऊसढं ऊसढे इ वा रसियं २

मणुन्नं २ एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ॥ (सू० १३७)

साधुए कोइ जग्याए रसोइ तैयार थएली जोइ होय तो एम न कहेवुं के पकवान्न सारां कर्यां छे, सारां तळ्यां छे, सुंदर

बनाव्यां छे, कल्याण करनारां छे, बीजाए आवां करवा योग्य छे, आवुं सावद्य वचन साधुए बोलवुं नहि.

पण जरुर पडतां तेवुं चारे प्रकारनुं अशन विगेरे जोइने कहेवुं के आरंभथी सावद्य प्रयासे बनावेलुं छे, तथा सारां होय तो

सारां ताजां होय तो ताजां रसवाळां मनोज्ञ एम निर्दोष भाषा बोलवी. फरीथी अभाषणीय बतावे छे—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं वा गोणं वा महिसं वा मिगं वा पसुं वा पक्खिं वा सरीसिवं वा जलचरं वा से त्तं

परिवूढकायं पेहाए नो एवं वइज्जा—थूले इ वा पमेइले इ वा वट्टे इ वा वज्झे इ वा पाइमे इ वा, एयप्पगारं भासं साव-

ज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं वा जाव जलयरं वा सेत्तं परिवूढकायं पेहाए एवं वइज्जा

परिवूढकाएत्ति वा उवचियकाएत्ति वा थिरसंघयणेत्ति वा चियमंससोणिएत्ति वा बहुपडिपुन्नइंदिइएत्ति वा, एयप्पगारं

भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा २ विरूवरूवाओ गाओ पेहाए नो एवं वइज्जा, तंजहा—गाओ दुज्झाओत्ति

वा दम्मेत्ति वा गोरहत्ति वा वाहिमत्ति वा रहजोग्गत्ति वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भि० विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एवं वइज्जा, तंजहा—जुवंगवित्ति वा धेणुत्ति वा रसवइत्ति वा हस्से इ वा महल्ले इ वा महव्वए इ वा संवहणित्ति वा, एअप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्वयाइं वणाणि वा रुक्खा महल्ले पेहाए नो एवं वइज्जा, तं०—पासायजोग्गाति वा तारणजोग्गाइ वा गिहजोग्गाइ वा फलिहजो० अग्गलजो० नावाजो० उदग० दोणजो० पीढचंगबेरनंगलकुलियजंतलट्ठीनाभिगंडीआसणजो० सयणजाणउवस्सयजोगाइं वा, एयप्पगारं० नो भासिज्जा ॥ से भिक्खु वा० तहेव गंतु० एवं वइज्जा तंजहा—जाइमंता इ वा दीहवट्टा इ वा महालया इ वा पाययसाला इ वा विडिमसाला इ वा पासाइया इ वा जाव पडिरूवाति वा एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ॥ से भि० बहुसंभूया वणफला पेहाए तहावि ते नो एवं वइज्जा, तंजहा—पक्का इ वा पायखज्जा इ वा वेलोइया इ वा टाला इ वा वेहिया इवा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू० बहुसंभूया वणफला अंबा पेहाए एवं वइज्जा; तं०—असंथडा इ वा बहुनिवट्टिमफला इ वा बहुसंभूयां इ वा भूयरुचित्ति वा, एयप्पगारं भा० असा० ॥ से० बहुसंभूया ओसही पेहाए तहावि ताओ न एवं वइज्जा, तंजहा—पक्का इ वा नीलीया इ वा छवीइया इ वा लाइमा इ वा भज्जिमा इ वा बहुखज्जा इ वा, एयप्पगा० नो भासिज्जा ॥ से० बहु० पेहाए तहावि एवं वइज्जा, तं०—रूढा इ वा बहुसंभूया इ वा थिरा इ वा ऊसढा इ वा गब्भिया इ वा पसूया इ वा ससारा इ वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासि० ॥ (१३८)

ते साधु के साध्वी रस्तामां माणश बळद मृग पशु पक्षी सरीसृप जलचर कोइ पण पुष्ट शरीरवाळुं देखे तो आवुं न बोलवुं, के "आ स्थुल ममेदुर वृत्त अथवा वध करवा योग्य अथवा वहन करवा योग्य छे, अथवा मारीने रांधवा योग्य छे, अथवा देवताने बळी आपवा योग्य छे."

पण माणसथी लइने जलचर सुधीनुं कोइ पण पशु पंखी के जंतु परिवृद्ध (जाडा) शरीरवाळुं देखीने जरुर पडतां आवी रीते बोलवुं के आ जाडा शरीरनो छे, उपचित (पुष्ट) कायवाळो छे, स्थिर संघयणवाळो छे, अथवा लोही मांसे पुष्ट छे, अथवा पांच इंद्रयो पुरी छे, आवी निर्दोष भाषा बोले.

तेज प्रमाणे जुदा जुदा रुपवाळी गायोने साधु देखे, तो तेणे आवुं न कहेवुं, के आ गायो दोहवा योग्य छे, अथवा दोहवानो वखत छे, अथवा आ गोधलो (जुवान बळद) वाहन करवा जेवो छे, अथवा रथने योग्य छे, आवी सवाद्य भाषा न बोलवी, पण जरुर पडतां जुदी जुदी गायोने जोइ आ प्रमाणे बोलवुं के आ युवान गाय छे, अथवा रसवती धेनु छे, आ नानो बळद छे, आ मोटो छे, अथवा महान्यय (मूल्य) वाळो छे, संवहन छे, आवो निरवद्य भाषा बोले.

तेज प्रमाणे साधु उद्यनमां जतां पर्वत वन विगेरेमां मोटां झाड देखीने आवुं न बोले के, आ महेल बनाववा योग्य, तोरण योग्य छे, घर योग्य, फलिहाने योग्य, अर्गला नाव के पाणी लाववाने परनाळ बनववा योग्य अथवा द्रोण बनाववा योग्य पीठ चंगबेर हळ कुलिकयंत्रनी लाकळी (घाणी) नाभि गंडि असाण विगेरे ओजारनी वस्तुओ बनाववा योग्य छे, तथा सुवानां पाटीआं गाडी गाडां उपाश्रय बनाववा योग्य छे. अथवा तेवुं कंइ पण बीजुं सावद्य वचन न बोले.

पण जरुर पडतां तेवां वृक्षो बतावत्रां पडे, तो आ उत्तम जातिनां वृक्षो छे, जाडा थडवाळा छे, मोटां झाड विशाळ शाखावाळां विस्तीर्ण शाखावाळां देखावा योग्य रमणीय छे, आवी निरवद्य भाषा बोले.

ते साधु मार्गमां घणां फळवाळां झाडो देखे, तो आवुं न बोले के आ पाकां फळ छे, गोटली बंधायेलां फळ छे. ते खाळामां नाखीने कोद्रव के पराळना घासथी पकावीने खावा योग्य छे. ताथ बरोबर पाकेलां होवाथी झाड उपरथी तोडी लेवा योग्य छे, कारणके हवे वधारे वखत उपर रही शके तेम नथी. 'टाल' ते गोटली बंधाया विनानां कोमळ फळ छे, तथा आ फळोए पेशी संपादन करवाथी चीरवा योग्य छे, आवी फळ संबंधी सावद्य भाषा साधुए न बोलवी, पण जरुर पडतां नीचे प्रमाणे बोलवुं—आ फळना भारथी असमर्थ झाडो छे, घणां फळवाळां छे, बहु संभूत छे, तथा भूतरुप ते कोमळ फळो छे, आवां आंबानां झाड प्रधान होवाथी तेनो दृष्टांत आपेल छे, आवी निरवद्य भाषा साधुए बोलवी.

तथा पाकेली औषधि देखीने एम न बोलवुं, के आ पाकी छे, अथवा नीली आर्द्रा पाणीवाळी छालवाळी धाणी बनावा योग्य रोपवा योग्य, आ रांधवा योग्य भंजन करवा योग्य बहु खावा योग्य अथवा पुंख बनाववा योग्य छे. पण जरुर पडतां आम बोले के आ रुढा औषधि छे, आवी निरवद्य भाषा बोलवी. वळी—

से भिक्खू वा० तहप्पगाराइं सद्दाइं सुणिज्जा तहावि एयाइं नो एवं वइज्जा, तंजहा—सुसदेत्ति वा दुसदेत्ति वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं नो भासिज्जा ॥ से भि० तहावि ताइं एवं वइज्जा, तंजहा—सुसद्द सुसद्दित्ति वा दुसद्दं दुसद्दित्ति वा, एयप्पगारं असावज्जं जाव भासिज्जा, एवं रूवाइं किण्हेत्ति वा गंधाइं सुरभिगंधित्ति वा २ रसाइं तित्ताणि वा ५ फसाइं

लेतां कहेवुं के हुं ते वस्त्रने वधे जोइ लउं, पण तेनी समक्ष एक छेडाथी बीजा छेडा सुधी जोया विना लेवुं नहि, कारण के जाया विना लेतां केवळी प्रभु तेमां दोष बतावे छे, कारण के तेमां कांइ पण कुंडळ, दोरो, चांदी, सोनुं, मणी, रत्नावळी विगेरे आभारण बांध्युं होय, अथवा सचित्त वस्तु, जंतु, बीज, भाजी होय तो दोष लागे, माटे साधुनी आ प्रतिज्ञा छे, के वस्त्र देखीने लेवुं

से भि० से जं० सअंडं० ससंताणं तहप्प० वत्थं अफा० नो प० ॥ से भि० से जं अप्पंडं जाव संताणगं अनलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं रोइज्जंतं न रुच्चाइ तह अफा० नो प० ॥ से भि० से जं अप्पंड जाव संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं रोइज्जंतं रुच्चाइ, तह० वत्थं फासु० पडि० ॥ से भि० नो नवए मे वत्थेत्तिकट्टु नो बहुदेसिएण सिणाणेण वा जाव पघंसिज्जा ॥ से भि० नो नवए मे वत्थेत्तिकट्टु नो बहुदे० सीओदगवियडेण वा २ जाव पहोइज्जा ॥ से भिक्खू वा २ दुब्भिगंधे मे वत्थित्तिकट्टु नो बहु० सिणाणेण तहेव बहुसीओ० उस्सि० आलावओ ॥ (सू० १४७)

ते भिक्षु लेवाना वस्त्रने नाना जंतुनां इंडावाळुं समजे, अथवा करोळीयाना जाळावाळुं समजे तो मळवा छतां पण ले नहि, कदाच इंडा विनानुं होय, पण घणुं हीन (नानुं) होय तो काम पुरतुं न थाय, माटे अनल कहेवाय ते लेवुं नहि. तथा अस्थिर (जीर्ण) होय, अथवा अध्रुव ते स्वल्पकाळनी अनुज्ञापना होय, तथा अप्रशस्त प्रदेशवाळुं होय, अथवा खंजर विगेरे कलंकवाळुं होय तो लेवुं नहि, तेज बतावे छे.

चत्तारि देविया भागा, दो य भागा य माणुसा । आसुरा य दुवे भागा, मज्झे वत्थस्स रक्खसो ॥ १ ॥
देवीएसुत्तमो लाभो, माणुसेसु अ मज्झिमो । आसुरेसु अ गेलन्नं, मरणं जाण रक्खसे ॥ २ ॥

चार देवता संबंधी भाग छे, अने बे भाग मनुष्य संबंधी छे, बे भाग असुर संबंधी छे, वस्त्रना मध्य भागमां राक्षसना भागो छे. (१) देविकमां उत्तम लाभ छे, मनुष्यमां मध्यम छे, आसुर भागमां मांदापणुं छे, अने राक्षस भागमां मृत्यु छे, एवुं जाण–तेनी स्थापना आ प्रमाणे छे—

लक्खण हीणो उवही, उवहणई नाणदंसण चरित्तं

लक्षणथी हीन जे उपधि छे, ते ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने हणे छे, तेथी हीन होय ते लेवुं नहि, तथा प्रशस्य मानवाळुं होय, पण ते आपतां दाता [देनार] नुं मन नाराज थतुं होय, तो ते साधुने कल्पे नहि.

आ प्रमाणे अनल अथिर अध्रुव अधारणीय ए चार पदोथी सोळ भागा थाय छे, तेमां प्रथमना पंदर अशुद्ध छे, पण चारे भांगे शुद्ध एवो सोळमो भांगोज काम लागे. माटे सूत्रमां अलं (समर्थ) स्थिर, ध्रुव धारणीय ए चार गुणवाळुं वस्त्र मळे तो लेवुं कह्युं छे.

हवे ते भिक्षु एम जाणे के मारुं वस्त्र नवुं नथी, माटे थोडा घणा पाणीथी सुगंधी द्रव्यथी थोडुं मसळीने के घणुं मसळीने सुगंधीवाळुं बनावे, अथवा मारुं वस्त्र नवुं न होवाथी थोडा पाणीथी धोइ लउं, एवुं पण न करे. अर्थात् आ बंने पाठो जिनकल्पीने आश्रयी छे. के भिक्षुने कपडुं मेलना लीधे गंधातुं होय तो पण ते मेल दूर करवा सुगंधी द्रव्यवडे के पाणीवडे धुवे नहि, पण स्थविरकल्पीने एटलुं विशेष छे के सुगंधीवाळुं बनाववा माटे नहि, पण लोकोनी निंद दूर करवा तथा रोगादिना कारणो दूर करवा प्रासुक पाणी विगेरेथी मेल दूर करवा यतनाथी धुवे पण खरो.

हवे धोयेलां कपडांने यतनाथी सुकाववानी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० अभिकंखिज्ज वत्थं आयावित्तए वा प०, तहप्पगारं वत्थं नो अणंतरहियाए जाव पुढवीए संतणए आया-

विज्ज वा प० ॥ से भि० अभि० वत्थं आ० प० त० वत्थं थूणंसि वा गिहेलुगंसि वा उसुयालंसि वा कामजलंसि वा अन्नयरे तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले नो आ० नो प० ॥ सेक्खू वा० अभि० आयावित्तए वा तह० वत्थं कुलियंसि वा भित्तंसि वा सिलंसि वा लेलुंसि वा अन्नयरे वा तह० अंतलि० जाव नो आयाविज्ज वा प० ॥ से भि० वत्थं आया० प० प० तह० वत्थं खंधंसि वा मं० मा० पासा० ह० अन्नयरे वा तह० अंतलि० नो आयाविज्ज वा० प० ॥ से० तमायाए एगंतमवक्कमिज्जा २ अहे झामथंडिल्लंसि वा जाव अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिल्लंसि पडिलेहिय २ पमज्जिय २ तओ सं० वत्थं आयविज्ज वा पया०, एवं खलु० सया जइज्जासि (सू० १४८) त्तिबेमि ॥ २-१-५-१ वत्थेसणस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥

ते भिक्षु अव्यवहित जग्यामां वस्त्र न सुकवे, वळी सुकववा इच्छे, तो थांभा उपर, उंबरा उपर, ऊखळी उपर तथा स्नान पीठ (नावाहना ओटला) उपर न सुकवे, तथा कुलिय भिंत, शिला, लेलु अथवा तेवा अधर स्थान उपर पडवाना भयथी सुकवे नहि, तथा स्कंध मांचो प्रासाद हवेली अथवा तेवा बीजा कोइ अधर भागमां पडवाना भयथी सुकावे नहि, पण जो सुकाववानी खास जरुर हो तो, एकांतमां जइने अचित्त जग्या जोइने ओघाथी पुंजीने आतापना विगेरे करे, आज भिक्षुनी सर्व सामग्री छे. (आमां कपडां सुकववानुं स्थान अचित्त जग्या बतावी, तथा अधर लटकतां राखवानी ना पाडी, तथा जमीन पर पडतां यतना न रहे, माटे जग्या पुंजीने एकांतमां सुकववां वधारे सारुं छे.)

पहेलो उद्देशो कहीने बीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां वस्त्र लेवानी विधि बतावी, अने आ उद्देशामां

पहेरवानी विधि कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे,

से भिक्खू वा० अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाइज्जा अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारिज्जा नो धोइज्जा नो रएज्जा नो धोयर त्ताइं वत्थाइं धारिज्जा अपलिउंचमाणो गामंतरेसु० ओमचेलिए, एवं खलु वत्थधारिस्स सामग्गियं ॥ से भि० गाहावइकुलं पविसिउकामे सव्वं चीवरमायाए गाहावइकुलं निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा, एवं बहिय विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा गामणुगामं वा दूइज्जिाज्जा, अह पु० तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए जहा पिंडेसणाए नवरं सव्वं चीवरमायाए ॥

ते साधु साधुपणाने योग्य कपडां याचे अने जेवां लीधां होय तेवांज पहेरे, पण तेमां कंइ पण शोभा करे नहि, ते कहे छे, लीधेला वस्त्रने धुए नहि, रंगे नहि तथा बकुशपणुं धारण करोने धोइने रंगेलां कपडां काइ आपे तो पण लेइने पहेरे नहि तथा तेवां साधुने योग्य कपडां पहेरीने बीजे गाम जतां वस्त्रोने छुपाव्या विना सुखथीज विहार करे, कारणके प्राये आ असार वस्त्रनो धारण करनारो छे, आज साधुनुं संपूर्ण साधुपणुं छे, के आवां सादां कल्पनीय वस्त्र पहेरवां.

वळी ते भिक्षु गोचरी जाय तो वस्त्रो बधां साथे लेइ जाय तेज प्रमाणे स्थंडिल जाय अथवा अभ्यास करवा बहार जाय तो पण लेइने जाय, पण एटलुं ध्यान राखवुं के पिंडएषणामां कह्या मुजब वरसाद के धुमस वरसतां होय तो जिनकल्पी बहार न जाय अने स्थविरकल्पी जोइए तेटलांज वस्त्र बहार लइ जाय, (आ सूत्रो जिनकल्पी आश्रयी छे, तेम वस्त्रधारीनुं विशेषण होवाथी स्थविरकल्पीने पण लागु पडे, तो तेमां विरुद्ध नथी, पिंडैषणामां उपधिने लेइ जवानुं कह्युं. आ सूत्रमां वस्त्रोने आश्रयी कह्युं छे,)

हवे वापरवा लीधेलुं वस्त्र वगळतां शुं करवुं ते कहे छे.

से एगइओ मुहुत्तगं २ पाडिहारिय वत्थं जाइज्जा जाव एगाहेण वा दु० ति० चउ० पंचाहेण वा विप्पवसिय २ उवागच्छिज्जा, नो तह वत्थं अप्पणो गिण्हिज्जा नो अन्नमन्नस्स दिज्जा, नो पामिच्चं कुज्जा, नो वत्थेण वत्थपरिणामं करिज्जा, नो परं उवसंकमित्ता एवं वइज्जा—आउ० समणा ! अभिकंखसि वत्थं धारित्तए वा परिहरित्तए वा ?, थिरं वा संतं नो पलिच्छिदिय २ परिट्ठविज्जा, तहप्पगारं वत्थं ससंधियं वत्थं तस्स चेव निसिरिज्जा नो णं साइज्जिज्जा ॥ से एगइओ एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा नि० जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं २ जाव एगाहेण वा० ५ विप्पवसिय २ उवागच्छंति, तह० वत्थाणि नो अप्पणा गिण्हंति नो अन्नमन्नस्स दलयंति तं चेव जाव नो साइज्जंति, बहुवयणेण वा भाणियव्वं, से हंता अहमवि मुहुत्तगं पाडिहारियं वत्थं जाइत्ता जाव एगाहेण वा ५ विप्पवसिय २ उवागच्छिस्सामि, अवियाइं एयं ममेव सिया, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करिज्जा ॥ (सू० १५०)

कोइ साधु बीजा साधु पासे बे घडी वापरवा माटे वस्त्र मागेतो अने मागीने कारण प्रसंगे बीजे गाम विगेरे स्थळे गयो त्यां एकथी पांच दिवस सुधी रह्यो अने त्यां एकलो होवाथी सुवामां ते वस्त्र बगडी गयुं, पाछळथी ते वस्त्र लावीने जेनुं हतुं तेने तेवुं वस्त्र पाछुं आपे, तो तेना पूर्वना स्वामीए लेवुं नहि, लइने बीजाने पण आपवुं नहि, तेम कोइने उछीनुं पण आपवुं नहि, के तुं आ हमणां ले अने थोडा दिवस पछी बीजुं मने पाछुं आपजे. तथा ते वस्त्रनो ते समये पण बदलो न करे, तेम बीजा साधु पासे जइने आवुं बोलवुं पण नहि—के हे आयुष्यमन् ! श्रमण ! तुं आवा वस्त्रने पहेरवा के वापरवा इच्छे छे के ? पण ते वस्त्र जो कोइ

बीजो साधु कारण प्रसंगे एकलो जवा इच्छतो होय तो तेने ते वस्त्र आपवुं; कदाच ते वस्त्र जो जीर्ण थइ गयेलुं होय, तो तेना झीणा झीणा टुकळा करीने परठवी देवुं, पण फाटेला वस्त्रने तेनो पूर्वनो स्वामी पहेरे नहि, पण ते बगाळनार साधुनेज पाछुं आपी देवुं अथवा कोइ एकलो जतो होय तो तेने आपी देवुं, आ प्रमाणे घणां वस्त्र आश्रयी (बहुवचनमां पण) जाणी लेवुं.

वळी ते साधुने आवीरीते वस्त्र पाछुं मळतुं जोइ बीजो साधु तेवी लालचथी उपरनो विषय समजीने हुं पण बीजानुं वस्त्र मुहूर्त माटे याचीने पांच दिवस सुधी वहार जइ वापरी आवीने बगाडी आवुं के ते वस्त्र पछी मारुंज थइ जाय! आ कपट छे, माटे साधुए तेवुं न करवुं.

से भि० नो वण्णमंताइं वत्थाइं विवण्णाइं करिज्जा विवण्णाइं न वण्णमंताइं करिज्जा, अन्न वा वत्थं लभिस्सामित्तिकट्टु नो अन्नमन्नस्स दिज्जा, नो पामिच्चं कुज्जा नो वत्थेण वत्थपरिणामं कुज्जा, नो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा-आउसो० ! समभिकंखसि मे वत्थं धारित्तए वा परिहरित्तए वा ?, थिरं वा संतं नो पलिच्छिंदिय २ परिट्ठविज्जा, जहा मेयं वत्थं पावगं परो मन्नइ, परं च णं अदत्तहारी पडिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स नियाणाय नो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छिज्जा, जाव अप्पुस्सुए, तओ संजियामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया, से जं पुण विहं जाणिज्जा इमंसि खलु विहंसि वहवे आमोसगा वत्थपडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा जाव गामा० दूइज्जेज्जा ॥ से भि० दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा पडियागच्छेज्जा, ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—आउस० ! अहारेयं वत्थं देहि णिक्खिवाहि जहा रियाए णाणत्तं वत्थपडियाए, एयं खलु० सया जइज्जासि

(सू० १५१) त्तिबेमि वत्थेसणा समत्ता ॥ २-१-५-२

ते भिक्षु रंगवाळां वस्त्र कारण विशेषथी लीधां होय, तो चोर विगेरेना भयथी रंग विनानां न बनावे, उत्सर्गथी तो एज अधिकार छे के तेवां वस्त्र लेवांज नहि अने लीधां होय तो तेने रंग उतरवाप्रयत्न न करवो, अथवा वर्ण (खराब रंगनां) होय तो सारा रंगवाळां बनाववां नहि.

अथवा आ सादा वस्त्रने बदले सारुं मेळवीश, एवी इच्छाथी बीजाने आपी देवुं नहि, तेम प्रामित्य करवुं नहि, तथा वस्त्रथी वस्त्रनु परिणाम करवुं नहि, तेम बीजा पासे जइने एवुं बोलवुं नहि, के हे आयुष्यमन् ! आ मारुं वस्त्र ओढवा पहेरवाने तुं इच्छे छे ? अथवा सारुं होय तो टुकडा करीने फेंकी देवुं नहि, के जेथी मारुं वस्त्र बीजो गृहस्थ एम जाणे के ए खराब हतुं (माटे फेंकी दीधुं छे) वळी मार्गमां चोरना भयथी वस्त्रना रक्षण माटे उन्मार्गे डरीने न जाय तथा दोडवानी उत्सुकता राखवा विना इर्यासमिति पाळतो जाय अने गाम गाम विहार करे.

वळी रस्तामां जतां उज्जड मेदान जाणे, ज्यां वस्त्र लुंटनारा बहु चोरो वसता होय, तो तेमना डरथी पण उन्मार्गे न जाय, पण यतनाथी विहार करे, कदाच ते रस्ते जतां चोरो आवे अने वस्त्र मागे, अथवा लुंटी ले, तो शांतिथी उपदेश आपवो. न माने तो बाजुए परठवी देवुं अने फरी उपदेश देतां आपे तो लेवुं, पण कोइने कहेवुं नहि, तेम चोरने पकडववा नहि, वगेरे बधुं पूर्व माफक जाणवु

पांचमुं अध्ययन समाप्त थयुं.

पात्राएषणा नामनुं छट्ठुं अध्ययन.

पांचमुं कहीने हवे छठुं अध्ययन कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. प्रथम अध्ययनमां पिंडविधि बतावी, ते आगममां कहेल विधिए वसतिमां आवीने वापरवुं, माटे बीजामां वसतिनी विधि बतावी, ते शोधवा माटे त्रीजामां इर्यासमिति कही, पिंडेषणामां नीकळेलाए केवी भाषा वापरवी, तेथी भाषासमिति कही, अने ते पडेला विना पिंड न लेवाय माटे पांचमामां वस्त्रएषणा कही, ते पिंडने पात्र विना लेवाय नहि, माटे आ संबंधवडे पात्र एषणा अध्ययन आव्युं, एना चार अनुयोगद्वारा थाय छे, तेमां नाम निष्पन्न निक्षेपामां पात्रएषणा अध्ययन छे, एनो निक्षेपो अर्थाधिकार एना पूर्वना अध्ययनमांज टुंकाणमां बताववा माटे निर्युक्तिकारे कहेलो छे, सूत्रानुगममां अस्खलितादि गुणयुक्त सूत्र उच्चारवुं जोइए ते आ छे.

से भिक्खू वा अभिकंखिज्जा पायं एसित्तए, से जं पुण पादं जाणिज्जा, तजहा–अलाउयपायं वा दारुपायं वा मट्टियापायं वा, तहप्पगारं पायं जे निग्गंथे तरुणे जाव थिरसघयणे से एगं पायं धारिज्जा नो बिइयं ॥ से भि० परं अद्धजोयणमेराए पायपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भि० से जं अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं ४ जहा पिंडेषणाए चत्तारि आलावगा, पंचमे बहवे समण० पगणिय २ तहेव ॥ से भिक्खू वा० अस्संजए भिक्खुपडियाए बहवे समणमाहणे० वत्थेसणाऽऽलावओ ॥ से भिक्खू वा० से जाइं पुण पायाइं जाणिज्जा विरुवरुवाइं महद्धणमुल्लाइं, तं०– अयपा याणि वा तउपाया० तंबपाया० सीसगपा० हिण्णपा० सुवण्णपा० रीरिअपाया० हारपुडपा० मणिकायकंसपाया०

संखसिंगपा० दंतपा० चेलपा० सेलपा० चम्मपा० अन्नयराइं वा तह० विरूवरूवाइं महद्धणमुल्लाइं पायाइं अफासुयाइं नो० ॥ से भि० से जाइं पुण पाया० विरूव० महद्धणबंधणाइं, तं०—अयबंधणाणि वा जाव चम्मबंधणाणि वा, अन्नयराइं तहप्प० महद्धणबंधणाइं अफा० नो प० ॥ इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइ कम्म अह भिक्खू जाणिज्जा चउहिं पडिमाहिं पायं एसित्तए तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खु० उद्दिसिय २ पायं जाइज्जाः तंजहा—अलाउयपायं वा ३ तह० पायं सयं वा णं जाइज्जा जाव पडि० पढमा पडिमा १ । अहावरा० से० पेहाए पायं जाइज्जा, तं०—गाहावइं वा कम्मकरीं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा, आउ० भ० ! दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं पादं तं०—लाउपायं वा ३, तह० पायं सयं वा पडि०, दुच्चा पडिमा २ । अहा० से भि० से जं पुण पायं जाणिज्जा संगइयं वा वेजइयंतियं वा तहप्प० पायं सयं वा जाव पडि०, तच्चा पडिमा ३ । अहावरा चउत्था पडिमा—से भि० उज्झियधम्मियं जाएज्जा जावऽन्ने बहवे समणा जाव नावकंखंति तह० जाएज्जा जाव पडि०, चउत्था पडिमा ४ । इच्चेइयाणं चउण्हं पडिमाणं अन्नयरं पडिमं जहा पिंडेसणाए से णं एयाए एसणाए एसमाणं पामित्ता परो वइज्जा, आउ० स० ! एज्जासि तुमं मासेण वा जहा वत्थेसणाए से णं परो नेता व०—आ० भ० ! आहारेयं पायं तिल्लेण वा० घ० नव० वसाए वा अब्भंगित्ता वा तहेव सीओदगाइं कंदाइं तहेव ॥ से णं परो ने०—आउ० स० ! मुहुत्तगं २ जाव अच्छाहि ताव अम्हे असणं वा उवकरेसु वा उवक्खडेसु वा, तो ते वयं आउसो० ! सपाणं सभोयणं पडिग्गहं दाहामो तुच्छए पडिग्गहे दिन्ने समणस्स नो सुट्ठु साहु भवइ, से पुव्वामेव आलोइज्जा— आउ० भइ० ! नो खलु मे कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा ४ भुत्तए वा०, मा उवकरेहि मा

उवक्खडेहि, अभिकंखसि मे दाउं एमेव दलयाहि, से सेवं वयंतस्स परो असणं वा ४ उवकरित्ता उवक्खडित्ता सपाणं सभोयणं पडिग्गहगं दलइज्जा तह० पडिग्गहगं अफासुय जाव नो पडिगाहिज्जा ॥ सिया से परो उवणित्ता पडिग्गहगं निसिरिज्जा, से पुव्वामे० आउ० भ० ! तुमं चेव णं संतियं पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि, केवली० आयाण० अंतो पडिग्गहगंसि पाणाणि वा बीया० हरि०, अह भिक्खूणं पु० जं पुव्वामेव पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडि० सअंडाइं सव्वे आलावगा भाणियव्वा जहा वत्थेसणाए, नाणत्तं तिल्लेण वा घय० नव० वसाए वा सिणाणादि जाव अन्नयरंसि वा तहप्पगा० थंडिलसि पडिलेहिय २ पम० २ तओ० संजर आमज्जिज्जा, एवं खलु० सया जएज्जा (सू० १५२) त्तिबेमि ॥ २-१-६-१

ते भिक्षु पात्र शोधवानी इच्छा करे, तो आ प्रमाणे प्रथम जाणे, के आ प्रमाणे पात्रां छे, तुंबडानां पात्र छे, लाकडानां पात्र छे, माटीनां पात्र छे, आमांथी कोइपण जातिनां पात्रां (मुख्यत्वे लाकडानां) होय, तो तरुण अने स्थिर संघयणवाळो बळवान साधु होय तो एक पात्र धारण करे, पण बे नहि, आ जिनकल्पी विगेरेने माटे छे, पण स्थविरकल्पी जुवान विगेरे शक्तिवान होय तोपण मात्र क सहित बीजुं पात्रुं धारण करे, तेमां संघाळामां रहेला साधुने एकमां आहार अने बीजामां पाणी लेवा काम लागे, अथवा आचार्य विगेरे माटे अशुद्ध वस्तु (मात्रु विगेरे) लेवा काम लागे. पोताना रहेवाना स्थानथी जरुर पडतां बे गाउ सुधी पात्रां लेवा जाय, पण वधारे नहि हवे ते गृहस्थ एक साधु घणी साध्वी एक साधु एक साध्वी, घणा साधु एक साध्वी, घणा साधु घणी साध्वीने उद्देशीने आरंभ करीने जो पात्रां तैयार कर्यां होय ते साधु साध्वीने सदोष होवाथी न कल्पे, पण जो श्रमण, माहण,

गामना भिखारी विगेरेने उद्देशीने बनावेलां होय तो पुरुषांतर थया पछी कल्पे, आ बधुं पिंडेषणामां बताव्या प्रमाणे जाणी लेवुं,

वळी ते भिक्षु एवी जातिनां जुदाजुदा रंगनां भारे मूल्यनां पात्रा जाणे ते न ले, ते दतावे छे.

लोढानां तथा त्रपु (कलाइना जेवी धातु) नां पात्रां, तांबाना पातरां, सीसानां, हिरण्य (चांदी) नां, सोनानां पातरां रीरिय हारपुड (बीजी जातिना लोढां) नां, मणिरत्ननां जडेलां के कांसानां पातरां संखसिंग हाथीदांत चेल सेल चामडानां तेवां बीजां कोइ पण जातिनां भारे मूल्यनां पातरां शोभीतां होय तो ते अपासुक जाणीने लेवां नहि. तेज प्रमाणे पातरानां बंधन उपर बताव्या प्रमाणे भारे मूल्यनां लोढाथी ते चामडा सुधीनां होय ते न लेवां, (प्रासुक होय छतां पण भारे मूल्यनां होवाथी ममत्व थाय, तथा चोरवाना कारणे असमाधि थाय, माटे साधुने तेवां पात्र तथा पात्र बंधननी मना छे.)

आ प्रमाणे पापस्थान निवारीने चार प्रतिमाओथी पात्रां शोधे. (१) अमुक पात्रुंज तुंबानुं, लाकडानुं के माटीनुं लइश, (२) देखेलुंज पातरुं याचीश (३) सगतिक ते पोते ते पात्राने वापर्युं होय तथा वेज्जयंतियं–ते बे त्रण पात्रामां पर्यायवडे वापर्युं होय तेवुं याचे (४) कोइ पण तेने न चाहे, तेवुं पोते ले.

आ प्रमाणे चार प्रतिज्ञामांनी कोइ पण प्रतिज्ञाए साधु पातरां शोधवा जाय त्यारे गृहस्थ कहे के हे साधु! तमे पातरां लेवा एकमास पछी आवजो, पातरां तमने आपीश त्यारे साधुए कहेवुं के तेवु मुदत करेलां पात्रां न कल्पे, त्यारे वस्त्र एषणामां बताव्या प्रमाणे ओछी मुदतनो वायदो करे, त्यारे पण तेज उत्तर आपवो, ते बे घडीनी मुदत सुधीनो पण वायदो न स्वीकारवो, त्यारे कहे, के आपणे आपणा माटे नवां बनावीशुं. तैयार तेमने आपी दो, आवुं धणी पोते पोताना घरना माणसोने–बेन दीकरीने

कहे त्यारे पण साधुए ना पाडवी.

वळी गृहस्थ पोतानी बेन विगेरेने कहे के कोरुं पातरुं न आप, पण ते पात्राने तेल घी माखण छासवडे घसीने आप, तथा पाणीथी धोइने अथवा काचु पणी के कंद विगेरे खाली करीने आप, अथवा कहे के हे साधु ! तमे बे घडी पछी फरीने आवो, तो अमे अशनपान खादिम स्वादिम तैयार करीए छीए, अथवा संस्कारवाळुं बनावीए छीए, तेथी हे आयुष्मन् ! हे साधु ! तमने भोजन पाणी सहित पातरां आपीशुं, एकला खाली पात्रां साधुने आपवाथी शोभा न वधे. आ सांभळीने साधुए कहेवुं के हे भव्यात्मन ! अमने अमारा माटे बनावेलुं के वधारे रांधेलुं भोजन पाणी खावा पीवाने काम लागतुं नथी, माटे तैयार न करो, न संस्कारवाळुं बनावो, जो पात्रां आपवानी इच्छा होय, तो एमने एमज आपो.

आवुं कहेवा छतां गृहस्थ हठ करी साधु माटे रांधीने के संस्कारी बनावीने पात्रां भरी आपवा मांडे तो अप्रासुक जाणीने साधुए लेवां नहि, कदाच एमने एम पात्रां बहार लावीने मुके, तो तेने कहेवुं के हे गृहस्थ ! हुं तमारा देखतांज आ पात्रां देखी लउं के तेनी अंदर नानां जंतुओ के बीज के वनस्पति होय तो केवळी प्रभु तेमां दोष बतावे छे, माटे साधुए प्रथम जोइ लेवां, अने जंतु विगेरेथी संयुक्त होय तो ते जीवो दूर करी शकाय तेम न होय तो अप्रासुक जाणीने पात्रां लेवां नहि, पण जो तेवां जंतु विगेरे न होय तो लेवां, (ते बधुं वस्त्रएषणा माफक जाणी लेवुं) आमां विशेष एटलुं छे के तेल घी नवनीत के वसा (छाश) थी धोइने ते चीकटवाळुं पात्रांनुं धोवण कोइ अचीत्त जग्या जोइने पडिलेही प्रमार्जीने परठवे, आज साधुनी साधुता छे के जयणाथी दरेक कार्य करे.

बीजो उद्देशो.

पहेला उद्देशा साथे आनो संबंध आ छे, के गया सूत्रमां पात्रांनु जोवुं बताव्युं, अने अहीं पण तेनुंज बाकीनुं बतावे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे.

से भिक्खू वा २ गाहावइकुलं पिंड० पविट्ठे समाणे पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहगं अवहट्टु पाणे पमज्जिय रयं तओ सं० गाहावइं० पिंड० निक्ख० प० प०, केवली०, आउ० ! अंतो पडिग्गहगंसि पाणे वा बीए वा हरि० परियावज्जिज्जा, अह भिक्खूणं पु० जं पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहं अवहट्टु पाणे पमज्जिय रयं तओ सं० गाहावइ० निक्खमिज्ज वा २ ॥

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गोचरी लेवां जतां पहेलां बरोबर रीते पात्रां तपासे, अने गोचरी लेतां पहेलां पण तपासे, अने कीडी विगेरे प्राणी चडेलुं जोए तो तेने संभाळीने वाजुए मुके, तथा रज पूंजीने साधु गृहस्थना घरमां पेसे, अथवा नीकळे, तेथी आवणा पात्रांनीज विधि छे, कारण के अहीं पण प्रथम पात्रां बराबर तपासीने पूंजीने पिंड लेवो, तेथी ते पण पात्रां संबंधीज विचार छे, प्र०—पात्रां शामाटे पूंजीने गोचरी लेवी ? उ—केवळी प्रभु पात्रां पूंज्या विना गोचरी लेतां कर्मबंध बतावे छे, ते आ प्रमाणे छे.

पात्रामां बेइंद्रिय विगेरे जीवो चडी जाय छे, अथवा बीजो अथवा रज होय तेवां पात्रामां गोचरी लेतां कर्मनुं उपादान थाय छे, माटेज साधुओने आ प्रतिज्ञा विगेरे पूर्व बतावेल छे के, प्रथम पात्रां देखीने जीव जंतु के रज होय तो दूर करीने गृहस्थना

घरमां जवुं आववुं. वळी—

से भि० जाव समणे सिया से परो आहट्टु अंतो पडिग्गहगंसि सीओदगं परिभाइत्ता नीहट्टु दलइज्जा, तहप्प० पडिग्गहगं परहत्थंसि वा परिपायंसि वा अफासुय जाव नो प०, से य आहच्च पडिग्गहिए सिया खिप्पामेव उदगंसि साहरिज्जा, से पडिग्गहमायाए पाणं परिट्ठविज्जा, ससिणिद्धाए वा भूमीए नियमिज्जा ॥ से० उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा पडिग्गहं नो आमज्जिजज्ज वा २अह पु० विगओदए मे पडिग्गहए छिन्नसिणेहे तह० पडिग्गहं तओ० सं० आमज्जिज्ज वा जाव पायाविज्ज वा से भि० गाहा० पविसिउकामे पडिग्गहमायाए गाहा० पिंड० पविसिज्ज वा नि० एवं बहिया विहाभूरमीं वा गामा० दूइज्जिज्जा, तिव्वदेसीयाए जहा विइयाए वत्थेसणाए नवरं इत्थ पडिग्गहे, एयं एलु तस्स० जं सव्वट्ठेहिं सहिए सया जएज्जासि (सू० १५४) त्तिबेमि ॥ पाएसणा सम्मत्ता ॥ २-१-६-२ ।

ज्यारे ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गोचरी पाणी माटे गयेलो होय, ते समये पाणी याचतां कदाच ते गृहस्थ भूलथी अथवा द्वेष बुद्धिथी अथवा भक्तिना कारणे अथवा विमर्ष पाणाथी घरमां रहीने बीजा पात्रांमां के पोताना वासणमां थंडुं पाणी जुदुं लइने बहार काढीने वहोरावे, ते समये तेवुं काचुं पाणी पारका (गृहस्थ) ना हाथमां के वासणमां जाणे तो अ प्रासुक जाणीने न ले, पण कदाच भूलथी के ओचींतु गृहस्थे नांखी दीधुं होय तो तेज समये पाणी आपनार गृहस्थना वासणमांज पाछुं नांखी देवुं, पण कदाच ते न ले तो, कुवा विगेरेमां ज्यां ते जातीनुं पाणी होय त्यां परठववानी विधिए परठववुं, पण तेवा पाणीनो अभाव होय अथवा दूर होय तो ज्यां छाया होय के खाडो होय त्यां परठववुं अथवा जो बीजो घडो होय, तो ते घडो के पाणीनुं वासण कोइने

ज्यां बाधा न थाय त्यां ते घडो पाणी सुधांज मुकी दे, पण पाणी पाछुं आप्या पछी के खाली कर्या पछी तेने जलदी सुकाववा लूसवो नहि, पण पाणी नीतर्या पछी थोडो सुकातां तडके मुकवो के लूंछी नांखवो.

वळी गृहस्थना घरमां गोचरी पाणी लेवा जतां पोतानां बीजां पात्रां साथे लइ जा, तेज प्रमाणे परगाम विहार करतां भणवा जतां स्थंडिल जतां पोतानां पात्रां साथे लइ जवां ए बधुं वस्त्र एसणा माफक जाणवुं, पण फक्त अहीं पात्रां संबंधी जाणवुं.

विशेष ए ध्यानमां राखवुं, के वरसाद के झाकळ पडतुं होय तो पात्रां साथे न जवुं. आज साधुनी सर्व सामग्री छे के हमेशां यतनाथी वर्त्तवुं. इति पात्र एषणा.

छठुं अध्ययन समाप्त थयुं.



सातमुं अध्ययन अवग्रह प्रतिमा.

छठुं अध्ययन कहीने सातमुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, पिंड शय्या वस्त्र पात्र विगेरेनी एषणाओ अवग्रहने आश्रयी थाय छे, तेथी आवा संबंधे आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोग द्वारा कहेवा जोइये, तेमां उपक्रमनी अंदर रहेल अर्थाधिकार आ छे, के साधुए आ प्रमाणे विशुद्ध अवग्रह लेवो, नामनिष्पन्न निक्षेपामां 'अवग्रह प्रतिमा' एवुं नाम छे, तेमां अवग्रहना नाम स्थापना निक्षेपा सुगम होवाथी छोडीने द्रव्य विगेरे चार प्रकारनो निक्षेपो निर्युक्तिकार बतावे छे.

दव्वे खित्ते काले भावेऽवि य उग्गहो चउद्धा उ। देविंद १ रायउग्गह २ गिहवइ ३ सागरिय ४ साहम्मी ॥ ३१६ ॥

द्रव्य अवग्रह क्षेत्र अवग्रह काळ अवग्रह अने भाव अवग्रह एम चार प्रकारनो अवग्रह छे.

अवग्रहनुं वर्णन.

अथवा सामान्यथी पांच प्रकारनो अवग्रह छे.

(१) देवेंद्रनो अवग्रह–ते लोकना मध्य भागमां रहेल मेरु पर्वतना रुचक प्रदेशथी दक्षिणना अर्ध भागमां रहेल जग्यानो. (२) राजा–ते चक्रवर्त्ती महाराजा के बादशाहनो भरत विगेरे क्षेत्र आश्रयी जे जग्या तेना वंशमां होय तेमां साधु विचरे ते. (३) गृहपति—ते गामडामां रहेनार महत्तर (पटेल) विगेरेनी पासे गामना महेल्ला विगेरेनो अवग्रह. (४) शय्यातर (घरधणी) नो तेनी खाली पडेली घंघशाळा विगेरेमां ज्यां साधु उतरे छे, ते (५) साधर्मिक ते साधुओ–जेओ मास कल्पवडे त्यां रह्या होय तेओनी पासे तेमनी मागेली जग्यामां उतरवुं ते वसति विगेरेनो अवग्रह १। जोजन छे, (बंने दिशामां २॥–२॥ गाउ जतां) चारे दिशामां जाय, आ प्रमाणे पांच प्रकारनो अवग्रह वसति विगेरे लेतां यथावसरे अनुज्ञा लेवा योग्य छे. हवे प्रथम बतावेल द्रव्यादि अवग्रह बताववा कहे छे–

दव्वुग्गहो उ तिविहो सचित्ताचित्तमीसओ चेव। खित्तुग्गहोऽवि तिविहो दुविहो कालुग्गहो होइ ॥ ३१७ ॥

द्रव्यनो अवग्रह त्रण प्रकारनो छे. शिष्य विगेरेनो सचित्त छे, रजोहरण विगेरेनो अचित्त अने शिष्य रजोहरण विगेरे साथे स्वीकारतां मिश्र अवग्रह छे, क्षेत्र अवग्रह पण सचित्त विगेरे त्रण प्रकारनोज छे, अथवा गाम नगर अरण्य भेदथी त्रण प्रकारनो छे,

काल अवग्रह ऋतुबद्ध (आठमास) तथा वर्षाकाळ (चारमास) नो अवग्रह एम बे भेदे छे–

हवे भाव अवग्रह बतावें छे–

मइउग्गहो य गहणुग्गहो य भावुग्गहो दुहा होइ । इंदिय नोइंदिय अत्थवंजणे उग्गहो दसहा ॥ ३१८ ॥

भाव अवग्रह बे प्रकारनो छे, मति अवग्रह अने ग्रहण अवग्रह छे, तेमां मति अवग्रह पण बे प्रकारनो छे, अर्थावग्रह अने व्यंजन अवग्रह छे, तेमां अर्थावग्रह इंद्रिय तथा नोइंद्रिय (मन) ना भेदथी छ प्रकारनो छे, अने व्यंजन अवग्रह चक्षु इंद्रिय अने मन छोडीने बाकी चार इंद्रियोनो अवग्रह छे, ते बधाए भेदवाळो दस प्रकारनो मतिभाव अवग्रह (मतिवडे पदार्थोनो जे समान्य बोध समजाय ते) छे, हवे ग्रहण अवग्रह बतावे छे–

गहणुग्गहम्मि अपरिग्गहस्स समणस्स गहणपरिणामो । कह पाडिहारियाऽपाडिहारिए होइ ? जइयव्वं ॥ ३१९ ॥

अपरिग्रहवाळो ते मुनि छे, तेने ज्यारे पिंड [गोचरी] वसति [स्थान] वस्त्र पातरां लेवानो विचार थाय, त्यारे ते ग्रहण भाव अवग्रह छे. ते वखते साधुने एवी बुद्धि होवी जोइए के केवी रीते ते वसति विगेरे मने शुद्ध मळी शके ? तथा प्रातिहारिक पाछुं अपाय ते पाट पाटला विगेरे अप्रतिहारक (पाछुं न अपाय ते गोचरी विगेरे) मने शुद्ध मळे तेमां यत्न करवो, अने प्रथम पांच प्रकारनो इंद्र विगेरेनो अवग्रह बताव्यो ते आ ग्रहण अवग्रहमां समजवो. आ प्रमाणे नाम निष्पन्न निक्षेपो थयो, हवे सूत्रानुगममां सूत्र कहे छे–

समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते ! अपसू परदत्तभोई पावं कम्मं नो करिस्सामित्ति समुट्ठाए सव्वं भंते !

अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, से अणुपविसित्ता गाभं वा जाव रायहाणिं वा नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जेहिवि सद्धिं संपव्वइए तेसिंपि जाइं छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं वा तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुन्नविय अपडिलेहिय २ अपमज्जिय २ नो उग्गिण्हिज्जा वा परिगिण्हिज्ज वा, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं जाइज्जा अणुन्नविय पडिलेहिय पमज्जिय तओ सं० उग्गिण्हिज्ज वा प० ॥ (सू० १५५)

श्रम सहन करे ते श्रमण [तपस्वी] छे, ते हुं आवी रीते बनुं, एम साधु विचारे ते कहे छे, 'अनगार' अग ते वृक्ष छे, तेनाथी जे बेने ते अगार [घर] छे, ते जेने न होय ते अनगार अर्थात् घरनो फांसो (ममत्व) जेणे छोड्यो होय, ते छे, 'अकिंचन' जेनी पासे कंइपण न होय ते अर्थात् निष्परिग्रह छे तथा 'अपुत्र' ते स्वजन बंधु रहित अर्थात् निर्मम छे एज प्रमाणे 'अपुश' ते बे पगवाळां चार पगवाळां विगेरेथी रहित छे, तथा परदत्तभोजी (गोचरी लावी खानारो) हुं बनीने पाप कर्म करीश नहि, आ प्रमाणे दीक्षा लइने पछी आवी प्रतिज्ञावाळो थाय ते बतावे छे, शिष्य गुरुने कहे छे. हे गुरु ! हुं सर्वथा अदत्तादाननुं पच्चक्खण करुं छुं. अर्थात् दांत शोधवा [खोतरवा] माटे जोइती सळी के तणखलुं पण पारकाए नहि आपेलुं नहि लउं–

अवां विशेषणो श्रमणनां लेवाथी बौध बावा विगेरेमां श्रमणपणुं वहारथी नाम मात्र होवा छतां गुणोना अभावे तेमनामां श्रमणपणुं लीधुं नथी, पण उपर बतावेल अदत्तादा न त्याग करनार जैन साधुज श्रमण छे.

एवो अकिंचण साधु गाम अथवा राजधानीमां जइने पोते अदत्त ग्रहण न करे, न बीजा पासे लेवडावे, अने बीजा ग्रहण करनारनी प्रशंसा न करे, वळी जे साधुओ साथे पोते दीक्षा लीधी होय अथवा उतरेल होय तेओनां उपकरण पण तेमनी आज्ञा

विना ले नहि ते बतावे छे,

छत्र ते माथानुं ढांकणुं वरसादमां स्थंडिल जतां माथा उपर वर्षाकल्प (कांबळो) विगेरे नांखे ते छत्रक छे, अथवा कुंकण देश विगेरेमां घणो वरसाद पडे छे, तेवा देशमां कारण प्रसंगे छत्री वापरवानी आज्ञा छे, ते छत्र लेवुं होय अथवा चर्म छेदनक विगेरे कोइ पण चीज विना पूछे ले नहि, एक वार पण न ले, अनेकवार पण ले नहि.

साथेना साधुओनी वस्तु लेवानी विधि—

प्रथम जेनी वस्तु होय तेने पूछी लेवुं, अने पछी आंखेथी जोइने अने रजोहरण विगेरेथी पूंजीने एकवार के अनेकवार ले.

से भि० आगंतारेसु वा ४ अणुवीइ उग्गहं जाइज्जा, जे तत्थ ईसरे जे तत्थ समहिट्ठए ते उग्गहं अणुन्नविज्जा–कामं खलु आउसो० ! अहालंदं अहापरिन्नायं वसामो जाव आउसो ! जाव आउसंतस्स उग्गहे जाव साहम्मिया एइतावं उग्गहं उग्गिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥ से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुन्ना उवागच्छिज्जा जे तेण सयमेसित्तए असणे वा ४ तेण ते साहम्मिया ३ उवनिमंतिज्जा, नो चेव णं परवडियाए ओगिज्झिय २ उवनि० ॥ (मू० १५६)

ते मुनि मुसाफरखानामां प्रवेश करीने अने विचार करीने यतिने योग्य क्षेत्र जोइने साधुओने जोइए तेटली वसति विगेरेनो अवग्रह याचे, कोनी पासे याचवुं ते कहे छे, जे घरनो मालिक होय अथवा मालिके जेने त्यां काम करवा राख्यो होय तेमनी पासे जइने क्षेत्र अवग्रह याचे, केवी रीते ? ते बतावे छे, साधु मालिक होय अथवा तेना गुमास्ता विगेरेने उद्देशीने कहे, हे आयुष्मन् !

तमारी इच्छा प्रमाणे तमे जेटलो काळ आज्ञा आपो, जेटली जग्या वापरवा आपो, ते प्रमाणे अमे अहीं रहीए, एटले हे गृहस्थ तमे जेटली जग्या वापरवा आपशो, तेटलो समय अमे तथा अमारा साधुओ आ जग्या वापरशुं, तेथी आगळ (पछी) विहार करीशुं,

पछी मालिके ते मकानमां उतरवानी जग्या आप्या पछी साधुए शुं करवुं ते कहे छे. ते जग्याए केटलाएक परोणा साधुओ एक समाचारी आचरनारा उद्युक्त विहारी आवे, तेमने पूर्वना मोक्षाभिलाषी साधुए उतरवा देवा, तथा विहार करता पोतानी मेळे त्यां तेवा उत्तम साधुओ आव्या होय तेमने अशन पान विगेरे चारे आहार लावीने तेमनी इच्छानुसार लेवा प्रार्थना करवी के आ हु आहार विगेरे लाव्यो छुं, आपनी इच्छा प्रमाणे लइने मारा उपर अनुग्रह करो. पण बीजा साधुना लावेला आहारनी परभारी निमंत्रणा पोते न करे, पण पोते जाते लावीने तेमनी इच्छानुसार आपे.

से आगंतारेसु वा ४ जाव से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ साहम्मिआ अन्नसंभोइआ समणुन्ना उवागच्छिज्जा जे तेण सयमेसित्तए पीढे वा फलए वा सिज्जा वा संथारए वा तेण ते साहम्मिए अन्नसंभोइए समणुन्ने उवनिमंतिज्जा नो चेवणं परवडियाए ओगिज्झिय उवनिमंतिज्जा ॥ से आगंतारेसु वा ४ जाव से किं पुण तत्थुग्गहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ गाहावईण वा गाहा० पुत्ताणं वा सूई वा पिप्पलए वा कण्णसोहणए वा नहच्छेयणए वा तं अप्पणो एगस्स अट्ठाए पाडिहारियं जाइत्ता नो अन्नमन्नस्स दिज्ज वा अणुपइज्ज वा, सयंकरणिज्जंतिकट्टु, से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा २ पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे कट्टु भूमीए वा ठवित्ता इमं खलु २ त्ति आलोइज्जा, नो चेव णं सयं पाणिणा परपाणिंसि पच्चप्पिणिज्जा ॥ (सू० १५७)

टीकाकारे आ सूत्रनो अर्थ पूर्व माफक होवाथी विशेष लख्यो नथी. ते साधु मुसाफरखाना विगेरेमां उतरेलो होय त्यां बीजा
उत्तम साधुओ आवे. पण जो तेमनी समाचारी जुदी होय तो गोचरीनो व्हेवार न होवाथी फक्त पीठ फलक विगेरेनी निमंत्रणा
करे, वळी ते घरमांथी घरधणी पासे के तेनो पुत्र पासेथी कारण विशेषे सूइ अस्त्रो कान खोतरणी अथवा नयणी पोताना
माटे याची होय, तो एके बीजाने आपवी नहि, तेम लेवी नहि, पण ज्यारे पोतानुं कार्य पूरुं थाय, त्यारे पोते जाते जइगे पोताना
हाथमां हथेळीमां राखीने कहे के आ तमारी वस्तु सूइ विगेरे लो, पण जो ते स्त्री विगेरे होय तो जमीन उपर मुकीने कहेवुं के आ
तमारी वस्तु लो, पण साधुए गृहस्थ के स्त्रीने हाथोहाथ आपवी नहि (वखते लागी जाय)

से भि० से जं० उग्गहं जाणिज्जा अणंतरहियाए पुढवी जाव संताणए तह० उग्गहं नो गिण्हिज्जा वा २ ॥ से भि०
से ज पुण उग्गहं थूणंसि वा ४ तह० अंतलिक्खजाए दुबद्धे जाव नो उगिण्हिज्जा वा २ ॥ से भि० से जं० कुलियंसि
वा ४ जाव नो उगिण्हिज्ज वा २ ॥ से भि० खंधंसि वा ४ अन्नयरे वा तह० जाव नो उग्गहं उगिण्हिज्ज वा २ । से
भि० से जं० पुण० ससागारियं० सखुड्डपसुभत्तपाणं नो पन्नस्स निक्खमणपवेसे जाव धम्माणुओगचिंताए, सेवं नच्चा
तह० उवस्सए ससागारिए० नो उवग्गहं उगिण्हिज्जा वा २ ॥ से भि० से जं० गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं पंथे
पडिबद्धं वा नो पन्नस्स जाव सेवं न० ॥ से भि० से जं० इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अन्नमन्नं अक्कोसंति
वा तहेव तिल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि निगिणाइ वा जहा सिज्जाए आलावगा, नवरं उग्गहवत्तव्वया ॥ से
भि० से जं० आइन्नसलिक्खे नो पन्नस्स० उगिण्हिज्ज वा २, एयं खलु० ॥ (सू० १५८) उग्गहपडिमाए पढमो उद्देशो

साधुए अवग्रह लेतां जोवुं के ते सचित्त जग्या न होय, तथा अधर जग्यो होय त्यां न उतरे, बाळक तथा पशुओने खावा पीवानुं अपातुं होय, तेवी जग्यामां धर्म ध्यान विगेरे पंडित पुरुषने न थाय, माटे तेवुं मकान न याचवुं तेमज ते मकानमां थइने जवानो रस्तो होय, अथवा घरनां माणसो नोकर—चाकर विगेरे त्यां लडतां होय तथा तेल मसळतां होय, तथा स्नान विगेरे ठंडा उना पाणीथी करतां होय, त्यां न उतरवुं. आ वधुं पूर्वे शय्याना अंगे कह्युं छे; ते प्रमाणे जाणवुं, पण अहीं विषय वसति अवग्रह संबंधी जाणवो.

इति प्रथम उद्देशः

बीजो उद्देशो.

पहेलो उद्देशो कह्यो, हवे बीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां अवग्रह बताव्यो अने अहीं पण तेनुंज बाकी रहेलुं कहे छे. तेनुं आ सूत्र छे.

से आगंतारेसु वा ४ अणुवीइ उग्गहं जाइज्जा, जे तत्थ ईसरे० ते उग्गहं अणुन्नविज्जा कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिन्नायं वसामो जाव आउसो ! जाव आउसंतस्स उग्गहे जाव साहम्मिआए ताव उग्गहं उग्गिण्हिस्सामो, तेण परं वि० से किं पुण तत्थ उग्गहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ समणाण वा माह० छत्तए वा जाव चम्मछेदणए वा तं नो

अंतोहिंतो बाहिं नीणिज्जा बहियाओ वा नो अंतो पविसिज्जा, सुत्तं वा नो पडिबोहिज्जा, नो तेसिं किंचिवि अप्पत्तियं पडिणीयं करिज्जा ॥ (सू० १५९)

ते साधु धर्मशाळा विगेरेमां उतरेलो होय, त्यां पूर्वे ब्राह्मण विगेरे ते गृहस्थनी रजा लइ उतर्यो होय, तेज स्थानमां बीजी जग्याना अभावे उतरवुं पडे, तो ते स्थानमां उतरेला ब्राह्मण विगेरेनुं छत्र विगेरे जे कंइ उपकरण होय, ते मकाननी अंदर पडयुं होय तो बहार लइ जवुं नहि तेम बहारथी अंदर लाववुं नहि, तेम सूतेला ब्राह्मण विगेरेने जगाडवा नहि, तेमज तेमना मनमां पण अप्रीति थाय तेम न करवुं तथा तेमनी साथे विरोधभाव पण न करवो.

से भि० अभिकंखिज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए जे तत्थ ईसरे २ ते उग्गहं अणुजाणाविज्जा—कामं खलु जाव विहरिस्सामो, से किं पुण० एवोग्गहियंसि अह भिक्खू इच्छिज्जा अंबं भुत्तए वा से जं पुण अंबं जाणिज्जा सअंडं ससंताणं तह० अंबं अफा० नो प० ॥ से भि० से जं० अप्पंडं अप्पसंताणगं अतिरिच्छछिन्नं अव्वोच्छिन्नं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा ॥ से भि० से जं० अप्पंडं वा जाव संताणगं तिरिच्छछिन्नं वुच्छिन्नं फा० पडि० ॥ से भि० अंबभित्तगं वा अंबपेसियं वा अंबचोयगं वा अंबसालगं वा अंबडालगं वा भुत्तए वा पायए वा, से जं० अंबभित्तगं वा ५ सअंडं अफा० नो पडि० ॥ से भिक्खू वा २ से जं० अंबं वा अंबभित्तगं वा अप्पंडं० अतिरिच्छछिन्नं २ अफा० नो प० ॥ से जं० अंबडालगं वा अप्पंडं ५ तिरिच्छच्छिन्नं वुच्छिन्नं फासुयं पडि० ॥ से भि० अभिकंखिज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे जाव उग्गहंसि० ॥ अह भिक्खू इच्छिज्जा उच्छुं भुत्तए वा पा०. से जं० उच्छुं जाणिज्जा सअंडं जाव नो

प०, अतिरिच्छछिन्नं तहेव. तिरिच्छछिन्नेऽवि तहेव ॥ से भि० अभिकंखि० अंतरुच्छुयं वा उच्छुगंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुसा० उच्छुडा० भुत्तए वा पाय०, से जं० पु० अंतरुच्छुयं वा जाव डालगं वा सअंडं नो प० ॥ से भि० से जं० अंतरुच्छुयं वा० अप्पंडं वा० जाव पडि० अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव ॥ से भि० ल्हसणवणं उवागच्छित्तए, तहेव तिन्निवि आलावगा, नवरं ल्हसुणं ॥ से भि० ल्हसुणं वा ल्हसुणकंदं वा ल्ह० चोयगं वा ल्हसुणनालगं वा भुत्तए वा २ से जं० लसुणं वा जाव लसुणबीयं वा सअंडं जाव नो प० एवं अतिरिच्छच्छिन्नेऽवि तिरिच्छछिन्ने जाव प० ॥ (सू० १६०)

ते भिक्षु कदाचित आम्र वनमां गृहस्थ पासे अवग्रह याचे, त्यां उतरीने कारण पडे आंबा (केरी) खावाने इच्छे, तो सडेला के कीडावाळा के करोळीयाना जाळांवाळा अप्रासुक होय ते लेवा नहि. तथा आंबा इंडां विनाना अने सड्या विनाना होय, पण जो तिरछा न छेद्या होय तथा अखंडित होय, तो तेने अप्रासुक जाणीने लेवा नहि, पण जो कीडा विनाना तीरछा चीरेला अने प्रासुक (अचित्त) होय तो कारण पडे ले, तेज प्रमाणे (अंबभित्ति) अळधां फाडीयां, (अंबपेसी) आंबानां नानां फाडीयां (अंबचोयग) आम्रछाल [सालग] रस, (डालग) केरीना झीणा टुकडा होय ते अचित्त होय तो लेवा.

आ प्रमाणे इक्षु सूत्रना त्रणे आलावा लेवा तथा अंतरुच्छु पर्वना मध्य भाग लेवा, आ प्रमाणे लसणनां त्रणे सूत्र लेवां, आमां जे वातो न समजाय ते निशीथ सूत्रना सोळमा उद्देशाथी जाणवी.

हवे अवग्रहना अभिग्रह संबंधी विशेष कहे छे.

से भि० आगंतारेसु वा ४ जावोग्गहियंसि जे तत्थ गाहवईण वा गाहा० पुत्ताण वा इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम्म अह

भिक्खू जाणिज्जा, इमाहिं सत्तहिं पडिमाहिं उग्गहं उग्गिण्हित्तए, तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से आगंतारेसु वा ४ अणुवीइ उग्गहं जाइज्जा जाव विहरिस्सामो पढमा पडिमा १। अहावरा० जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं अट्ठाए उग्गहं उग्गिण्हिस्सामि, अण्णेसिं भिक्खूणं उग्गहे उग्गहिए, उवल्लिसामि, दुच्चा पडिमा २। अहावरा० जस्स णं भि० अहं च० उग्गिण्हिस्सामि अन्नेसिं च उग्गहे उग्गहिए नो उवल्लिस्सामि, तच्चा पडिमा ३। अहावरा० जस्स णं भि० अहं च० ना उग्गहं उग्गिण्हिस्सामि, अन्नेसिं च उग्गहे उग्गहिए उवल्लिस्सामि, चउत्था पडिमा ४। अहावरा० जस्स णं अहं च खलु अप्पणो अट्ठाए उग्गहं च उ०, नो दुण्हं नो तिण्हं नो चउण्हं नो पंचण्हं पंचमा पडिमा ५। अहावरा० से भि० जस्स एव उग्गहे उवल्लिइज्जा जे तत्थ अहासमन्नागए इक्कडे वा जाव पलाले तस्स लाभे संवसिज्जा तस्स अलाभे उक्कुडुओ वा नेसज्जिओ वा विहरिज्जा, छट्ठा पडिमा ६। अहावरा स० जे भि० अहासंथडमेव व उग्गहं जाइज्जा, तंजहा—पुढविसिलं वा कट्ठसिलं वा अहासंथडमेव तस्स लाभे संते०, तस्स अलाभे उ० ने० विहरिज्जा, सत्तमा पडिमा ७। इच्चेयासिं सत्तण्हं पडिमाणं अन्नयरं जहा पिंडेसणाए ॥ (सू० १६१)

ते साधु धर्मशाळा विगेरेमां अवग्रह मागीने उतर्या पछी त्यां रहेनारा गृहस्थो विगेरेना पूर्वे बतावेला दोषो त्यजीने तथा हवे पछी जे कर्म उपादानना कारणो बतावसे ते छोडीने अवग्रह लेवाने समजे.

ते भिक्षु सात प्रतिमा [अभिग्रह विशेष] वडे अवग्रह ले, तेमां पहेली पडिमा आ छे के ते साधु धर्मशाळा विगेरेमां उतरवा पहेलां चिंतवी राखे के मारे आवो उपाश्रय मळे तोज उतरववुं ते सिवाय नहि.

बीजा साधुने आवो अभिग्रह होय छे के हुं बीजा साधुओ माटे अवग्रह याचीश अथवा बीजाए याचेला अवग्रहमां रहीश.

प्रथमनी प्रतिमामां सामान्य छे अने आ प्रतिमा तो गच्छमां रहेला उद्युक्त विहारीने होय, तेओ साथे गोचरी करता होय अथवा न पण करता होय–तो पण साथे उतरता होवाथी एक बीजा माटे वसति याचे छे.

त्रीजी प्रतिमावाळो साधु एमो विचार करे के हुं पोते बीजाने माटे अवग्रह याचीश, पण बीजाना याचेलामां रहीश नहि. आ प्रतिमा आहालंदिक साधुओने माटे छे. कारण के तेओ गच्छवासी आचार्य पासे सूत्र अर्थ भणता होवाथी आचार्य माटे मकान याचे छे.

चोथी प्रतिमामां ए अभिग्रह छे. के हुं बीजाने माटे अवग्रह याचीश नहि. पण बीजाए मागेला अवग्रहमां रहीश, आ अभिग्रह गच्छमां रहेला अभ्युदत विहारी गच्छमां रहीने जिनकल्पी थवाने माटेज अभ्यास करता होय तेमने माटे छे.

पांचमी प्रतिमा आ प्रमाणे छे के हुं पोतेना माटे अवग्रह याचीश, पण बीजा त्रण, चार, पांच माटे अवग्रह नहि याचुं, आ जिनकल्पी थवाने माटे अभिग्रह छे.

हुं अवग्रह याचीश पण त्यांज उत्कट विगेरे संथारो लइश; नहि तो उत्कुटुक अथवा बेठेलो के उभेलो आखी रात पुरी करीश. आ छट्ठी प्रतिमा जिनकल्पी विगेरेने छे.

सातमी प्रतिमा उपर प्रमाणे छे के हुं उपर बतावेल संथारो करवा शिलादिक विगेरे तैयार हशे तेज लइश. आमां विशेष एटलुं छे के तैयार होय तोज ले, नहि तो बेठे बेठे के उभे उभे रात्री पुरी करे. आ पण जिनकल्पी विगेरेनी छे.

आ साते प्रतिमा वहेनारा साधुओ जिनकल्पी विगेरे जिनेश्वरनी आज्ञामां होवाथी यथाशक्ति पाळता होवाथी वधारे पाळनारो होय ते पोताने उंचो न माने तेम बीजानी निंदा न करे. ए वधुं पिंडएषणा माफक जाणवुं.

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं पंचविहेउग्गहे पन्नत्ते, तं०—देविंदउग्गहे १ रायउग्गहे २ गाहावइउग्गहे ३ सागारियउग्गहे ४ साहम्मियउग्ग० ५ एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं (सू० १६२) उग्गहपडिमा सम्मत्ता ॥ अध्ययनं समाप्तं सप्तमम् ॥ २–१–७–२ ॥

सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे के भगवान महावीरे आ उद्देशामां बतावेलो देवेंद्र विगेरेनो अवग्रह सारी रीते समजीने साधुए पाळवो. (ए साधुनी साधुता छे) अवग्रह प्रतिमा नामनुं सातमुं अध्ययन समाप्त थयुं तथा आचारांगनी पहेली चूला समाप्त थइ.

सप्तसप्तिकाख्या द्वितीया चूला।

पहेली चूलिकानां सात अध्ययन कह्यां हवे बीजी चूलिका कहे छे तेनो पहेली साथे आ प्रमाणे संबंध छे. गइ चूलामां वसतिनो अवग्रह बताव्यो, ते स्थानमां रहीने केवा स्थानमां कार्योत्सर्ग तथा स्वाध्याय उच्चार पेसाब विगेरे करवा ते अहींआ बतावे छे. आ चूलामां सात अध्ययन छे एवुं निर्युक्तिकार बतावे छे.

सत्तिक्कगाणि इक्कस्सरगाणि पुव्व भणियं तहिं ठाणं। उद्धट्ठाणे पगयं निसीहियाए तहिं छक्कं ॥ ३२० ॥

सात अध्ययनोमां बीजा उद्देशा नथी, माटे एक सरवाळा छे. तेमां पहेलुं अध्ययन स्थान नामनुं छे. तेनी व्याख्या अहीं करे छे. आ संबंधे आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोगद्वार थाय छे, [ए पूर्वे बतावेल छे] उपक्रममां अध्ययननो अर्थाधिकार आ छे,

के साधुए केवा स्थानमां आश्रय लेवो, नाम निष्पन्न निक्षेपामां स्थान ए नाम छे. एना नाम विगेरे चार निक्षेपा थाय छे, तेमां अहीं द्रव्यने आश्रयी उद्धर्वस्थानवडे अधिकार छे. ते निर्युक्तिकार कहे छे. उद्धर्वस्थानमां प्रस्ताव छे. बीजुं अध्ययन निशीथिका छे. तेना छ प्रकारे निक्षेप छे, ते तेना स्थानमां कहीशुं. हवे सूत्र कहे छे.

से भिक्खू वा० अभिकंखेज्जा ठाणं ठाइत्तए, से अणुपविसिज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा, से जं पुण ठाणं जाणिज्जा सअंडं जाव मक्कडासंताणयं तं तह० ठाणं अफासुयं अणेस० लाभे संते नो प०, एवं सिज्जागमेण नेयव्वं जाव उदयपसूयाइंति ॥ इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम्म २ अह भिक्खू इच्छिज्जा चउहिं पडिमाहिं ठाणं ठाइत्तए, तत्थिमा पढमा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जिज्जा अवलंबिज्जा काएण विप्परिकम्माइ सवियारं ठाणं ठाइस्सामि पढमा पडिमा। अहावरा दुच्चा पडिमा— अचित्तं खलु उवसिज्जजेज्जा अवलंबिज्जा काएण विप्परिकम्माइ नो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि दुच्चा पडिमा। अहावरा तच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवस्सज्जेज्जा अवलंबिज्जा नो काएण विपरिकम्माइं नो सवियारं ठाणं ठाइस्सामित्ति तच्चा पडिमा। अहावरा चउत्था पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा नो अवलंबिज्जा काएण नो परकम्माइं नो सवियारं ठाण ठाइस्सामित्ति वोसट्ठकाए वोसट्ठकेसमंसुलोमनहे संनिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामित्ति चउत्था पडिमा, इच्चेयासिं चउण्हं पडिमाणं जाव पग्गहियतरायं विहरिज्जा, नो किंचिवी वइज्जा, एवं खलु तस्स० जाव जइज्जासि त्तिबेमि (सू० १६३) ॥ ठाणासत्तिकयं सम्मत्तं ॥ २-२-८ ॥

पूर्वे बतावेलो साधु जो स्थानमां रहेवाने इच्छे, तो गाम विगेरेमां प्रवेश करे. त्यां इंडावाळुं तथा करोळीयाना जाळावाळुं

मकान जो अप्रासुक मळे, तो मळतुं होय तो पण न ले, तेज प्रमाणे बीजां सूत्रो पण शय्या माफक समजी लेवां, ते ज्यां सुधी पाणी तथा कंदथी व्याप्त होय तो पण ते लेवां नहिं, हवे प्रतिमाना उद्देशने आश्रयी कहे छे, एटले पूर्वे बतावेला दोषोवाळां तथा हवे पछी कहेवाता दोषोवाळां पण स्थानो छोडीने चार प्रतिमाओ वडे साधु रहेवा इच्छे, ते कारणभूत अभिग्रह विशेष चार प्रतिमाओ छे तेनुं स्वरुप अनुक्रमे बतावे छे.

(१) कोइ साधुने आवोज अभिग्रह होय के हुं अचित्त उपाश्रयनुं स्थान याचीश, तेज प्रमाणे कोइ अचित्त भींत विगेरेने कायावडे टेको लइश, वळी परिस्पंद करीश, एटले हाथपग विगेरेथी आकुंचन विगेरे करीश, [लांबा पहोळा करीश,]

(२) बीजी प्रतिमामां विशेष आ छे, के आकुंचन प्रसारण तथा भींतनो टेको विगेरे लइश, पण पाद विहरण (पगेथी चालवानुं) मकानमां पण नहि करुं.

(३) त्रीजीमां आकुंचन प्रसारण करे, पण पाद विहरण के टेको लेवानुं न करे.

(४) लांबा पहोळा हाथ विगेरे न वरे, तेम न चाले, न 'टेको' ले, पण ते कायानो मोह सर्वथा मुकनारो थाय, तथा वाळ दाढी मूछ लोम नख विगेरे पण न हलावे. आवी रीते संपूर्ण कायोत्सर्ग करनारो मेरु पर्वत माफक निष्प्रकंप रहे, ते वखते जो कोइ आवीने तेना केश विगेरे खेंचे, तो पण स्थानथी चलायमान थाय नहि; आ चारमांनी कोइ पण प्रतिमा धारण करेलो बीजी प्रतिमा धारेलाने हलको न माने, तेम पोते अहंकारी न बने तेम एवुं वचन पण न बोले, के हुं श्रेष्ठ छुं, बीजो उतरतो छे.

आ प्रमाणे प्रथम अध्ययन समाप्त थयुं.

निषीथिका—'बीजुं अध्ययन'

पहेलुं अध्ययन कहीने बीजुं कहे छे, तेनो संबंध आ छे के गया अध्ययनमां स्थान बताव्युं, ते केवुं होय तो भणवाने योग्य थाय, अने ते स्वाध्याय भूमिमां शुं करवुं, शुं न करवुं, ते अहीं कहेशे. आ संबंधे आ अध्ययन आव्युं छे. एना चार अनुयोगद्वार थाय छे, तेनुं नाम निष्पन्ननिक्षेपामां "निषीथिका" एवुं नाम छे, आ निषीथिकानो नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्र काळ भाव छ प्रकारे निक्षेपो छे, नाम स्थापना पूर्व माफक छे, द्रव्य निषीथनो आगमथी ज्ञशरीर भव्यशरीर छोडीने जे द्रव्य प्रच्छन्न (छानुं) होय ते छे, [टीकाना संशोधके टीपणामां लख्युं छे के निशीथ निषीध बंनेनुं प्राकृतमां एक 'निसीह' शब्द वडे बोलतुं होवाथी एज प्रमाणे निक्षेपानुं वर्णन छे, तेज प्रमाणे निषीधिका निशीथिका बंने नामनुं एकपणुं छे. क्षेत्र निषीथ ते 'ब्रह्मलोक' नामना देवलोकमां रिष्ट विमाननी पासे 'कृष्ण राजाओ' जे क्षेत्रमां छे, ते तथा जे क्षेत्रमां निषीथनुं वर्णन चाले ते—काळनिषीथ ते कृष्ण [काळी अंधारी] रात्रिओ अथवा जे काळे निषीथनुं वर्णन चाले,

भावनिषीथ 'नो आगमथी' आ कहेवातुं सूत्रनुं अध्ययनज छे, कारण के ते आगमनो एक देश छे, नाम निष्पन्न निक्षेपो पुरो थयो, हवे सूत्रानुगममां सूत्र कहे छे,

से भिक्खू वा २ अभिकं० निसीहियं फासुयं गमणाए, से पुण निसीहियं जाणिज्जा—सअंडं तह० अफा० नो चेइस्सामि ॥ से भिक्खू० अभिकंखेज्जा निसीहियं गमणाए, से पुण नि० अप्पपाणं अप्पबीयं जाव संताणयं तह० निसीहियं फासुयं चेइस्सामि, एवं सिज्जागमेणं नेयव्वं जाव उदयप्पसूया० ॥ जे तत्थ दुवग्गा तिवग्गा चउवग्गा पंचवग्गा वा अभिसंधा-

रिंति निसीहियं गामणाए ते नो अन्नमन्नस्स कायं आलिंगिज्ज वा विलिंगिज्ज वा चुंबिज्ज वा दंतेहिं वा नहेहिं वा अच्छिदिज्ज वा वुच्छि०, एयं खलु० जं सव्वट्ठेहिं सहिए समिए सया जएज्जा, सेयमिणं मन्निज्जासि त्तिबेमि ॥ (सू० १६४) निसीहियासत्तिक्कयं ॥ २-२-९ ॥

ते उत्तम साधु रहेला स्थानमां अयोग्यताना कारणे बीजे स्थळे भणवानी जग्याए जवा इच्छे, तो त्यां इंडां वगेरे पड्यां होय तो अप्रासुक जाणीने न जाय, पण इंडां विनानी फासु जग्या होय ते ग्रहण करे, आ प्रमाणे बीजां सूत्रो पण शय्या माफक समजवां ते पाणीथी उत्पन्न थयेलां कंद विगेरे पड्यां होय तो ते जग्याए पण भणवा न बेसे. त्या गया पछीनी विधि कहे छे—त्यां गयेला बे त्रण के वधारे साधु होय तो परस्पर एकेकनी कायानो स्पर्श न करे, तेम जेनाथी मोहनो उद्य थाय तेम वळगे पण नहि, तथा कंदर्प प्रधान जेमां छे एवुं मुख चुंबन विगेरे न करे, (मोढाने मोढुं न लगाडे) आज वर्त्तन साधुनुं सर्वस्थ छे, अने तेथीज वधां परलोकना प्रयोजनवडे युक्त छे, तथा ते प्रमाणे वर्त्तनार पांच समिति पाळतो जींदगी सुधी संयम अनुष्ठान आचरे, अने आज परम कल्याण छे, एवुं उत्तम साधु माने.

निषीधिका नामनुं बीजुं अध्ययन समाप्त थयुं

उच्चार प्रश्रवण—त्रीजुं अध्ययन.

हवे त्रीजुं सप्तैकक अध्ययन कहे छे, तेनो पूर्वना अध्ययन साथे आ प्रमाणे संबंध छे, ते गया अध्ययनमां निषीधिका कही

निषीथिका—'बीजुं अध्ययन'

पहेलुं अध्ययन कहीने बीजुं कहे छे, तेनो संबंध आ छे के गया अध्ययनमां स्थान बताव्युं, ते केवुं होय तो भणवाने योग्य थाय, अने ते स्वाध्याय भूमिमां शुं करवुं, शुं न करवुं, ते अहीं कहेशे. आ संबंधे आ अध्ययन आव्युं छे. एना चार अनुयागद्वार थाय छे, तेनुं नाम निष्पन्ननिक्षेपामां "निषीथिका" एवुं नाम छे, आ निषीथिकानो नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्र काळ भाव छ प्रकारे निक्षेपो छे, नाम स्थापना पूर्व माफक छे, द्रव्य निषीथनो आगमथी ज्ञशरीर भव्यशरीर छोडीने जे द्रव्य प्रच्छन्न (छानुं) होय ते छे, [टीकाना संशोधके टीपणामां लख्युं छे के निशीथ निषीध बंनेनुं प्राकृतमां एक 'निसीह' शब्द वडे बोलतुं होवाथी एज प्रमाणे निक्षेपानुं वर्णन छे, तेज प्रमाणे निषीधिका निशीथिका बंने नामनुं एकपणुं छे. क्षेत्र निषीथ ते 'ब्रह्मलोक' नामना देवलोकमां रिष्ट विमाननी पासे 'कृष्ण राजाओ' जे क्षेत्रमां छे, ते तथा जे क्षेत्रमां निषीथनुं वर्णन चाले ते—काळनिषीथ ते कृष्ण [काळी अंधारी] रात्रिओ अथवा जे काळे निषीथनुं वर्णन चाले,

भावनिषीथ 'नो आगमथी' आ कहेवातुं सूत्रनुं अध्ययनज छे, कारण के ते आगमनो एक देश छे, नाम निष्पन्न निक्षेपो पुरो थयो, हवे सूत्रानुगममां सूत्र कहे छे,

से भिक्खू वा २ अभिकं० निसीहियं फासुयं गमणाए, से पुण निसीहियं जाणिज्जा—सअंडं तह० अफा० नो चेइस्सामि ॥ से भिक्खू० अभिकंखेज्जा निसीहियं गमणाए, से पुण नि० अप्पपाणं अप्पबीयं जाव संताणयं तह० निसीहियं फासुयं चेइस्सामि, एवं सिज्जागमेणं नेयव्वं जाव उदयप्पसूया० ॥ जे तत्थ दुवग्गा तिवग्गा चउवग्गा पंचवग्गा वा अभिसंधा-

रिंति निसीहियं गामणाए ते नो अन्नमन्नस्स कायं आलिंगिज्ज वा विलिंगिज्ज वा चुंबिज्ज वा दंतेहिं वा नहेहिं वा अच्छिदिज्ज वा वुच्छि०, एयं खलु० जं सव्वट्ठेहिं सहिए समिए सया जएज्जा, सेयमिणं मन्निज्जासि त्तिबेमि ॥ (सू० १६४) निसीहियासत्तिक्कयं ॥ २–२–९ ॥

ते उत्तम साधु रहेला स्थानमां अयोग्यताना कारणे बीजे स्थळे भणवानी जग्याए जवा इच्छे, तो त्यां इंडां वगेरे पड्यां होय तो अप्रासुक जाणीने न जाय, पण इंडां विनानी फासु जग्या होय ते ग्रहण करे, आ प्रमाणे बीजां सूत्रो पण शय्या माफक समजवां ते पाणीथी उत्पन्न थयेलां कंद विगेरे पड्यां होय तो ते जग्याए पण भणवा न बेसे. त्यां गया पछीनी विधि कहे छे—त्यां गयेला बे त्रण के वधारे साधु होय तो परस्पर एकेकनी कायानो स्पर्श न करे, तेम जेनाथी मोहनो उदय थाय तेम वळगे पण नहि, तथा कंदर्प प्रधान जेमां छे एवुं मुख चुंबन विगेरे न करे, (मोढाने मोढुं न लगाडे) आज वर्त्तन साधुनुं सर्वस्व छे, अने तेथीज बधां परलोकना प्रयोजनवडे युक्त छे, तथा ते प्रमाणे वर्त्तनार पांच समिति पाळतो जींदगी सुधी संयम अनुष्ठान आचरे, अने आज परम कल्याण छे, एवुं उत्तम साधु माने.

निषीधिका नामनुं बीजुं अध्ययन समाप्त थयुं

उच्चार प्रश्रवण—त्रीजुं अध्ययन.

हवे त्रीजुं सप्तैकक अध्ययन कहे छे, तेनो पूर्वना अध्ययन साथे आ प्रमाणे संबंध छे, ते गया अध्ययनमां निषीधिका कही

छे, त्यां केवी जमीन उपर स्थंडील मात्रुं (झाडो पेसाब) करवुं ते बतावे छे, एना नाम निष्पन्न निक्षेपामां उच्चार प्रश्रवण एवुं नाम छे, तेनी निरुक्तिने माटे निर्युक्तिकार कहे छे;

उच्चावइ सरीराओ उच्चारो पसवइत्ति पासवणं। तं कह आयरमाणस्स होइ सोही न अइयारो ? ॥ ३१२ ॥

शरीरमांथी जोरथी दूर करे. अथवा मेल साफ करे [खरे] ते उच्चार (विष्ठा) छे, तथा प्रकर्षथी श्रवे (नीकळे) ते पेसाब एकिका (आ शब्द केटली जग्याए तेज रुपे वपराय छे, एटले निशाळमां छोकराने पेशाब करवा जवुं होय तो मास्टरने कहे के मास्टर एकी जाउं ?) आ स्थंडिल तथा मात्रुं केवी रीते करे तो अतिचार न लागे ते पछीनी गाथामां बतावे छे,

मुणिणा छकायदयावरेण सुत्तभणियंमि आगासे। उच्चारविउसग्गो, कायव्वो अप्पमत्तेणं ॥ ३१२ ॥

छ जीव निकायना रक्षणमां प्रयत्न करनार साधुए हवे पछी कहेवाता सूत्र प्रमाणे स्थंडिलमां उच्चार प्रश्रवण अप्रमत्तपणे करवां. निर्युक्ति अनुगम पछी सूत्र अनुगम कहे छे,

से भि० उच्चारपासवणकिरियाए उब्बाहिज्जमाणे सयस्स पायपुंछणस्स असईए तओ पच्छा साहम्मियं जाइज्जा ॥ से भि० से जं पु० थंडिल्लं जाणिज्जा सअंडं० तह० थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ॥ से भि० जं पुण थं० अप्पपाणं जाव संतणयं तह० थं० उच्चा० वोसिरिज्जा ॥ से भि० से जं० अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स वा अस्सिं० बहवे साहम्मिया स० अस्सिं प० एगं साहम्मिणिं स० अस्सिंप० बहवे साहम्मिणीओ स० अस्सिं० बहवे समण० पगणिय २ समु० पाणाइं ४ जाव उद्देसियं चेएइ, तह० थंडिल्लं पुरिसंतरकड जाव बहियानीहडं वा अनी० अन्नयरंसि वा

तहप्पगारंसि थं० उच्चारं नो वोसि० ॥ से भि० से जं० बहवे समणमा० कि० व० अतिही समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं जाव उद्देसियं चेयइ, तह० थंडिलं पुरिसंतरगडं जाव बहियाअनीहडं अन्नयरंसि वा तह० थंडिलंसि नो उच्चारपासवण०, अह पुण एवं जाणिज्जा—अपुरिसंतरगडं जाव बहिया नीहडं अन्नयरंसि तहप्पगारं० थं० उच्चार० वोसि० ॥ से० जं० अस्सिपडियाए कयं वा कारियं वा पामिच्चियं वा छन्नं वा घट्ठं वा मट्ठं वा लित्तं वा संमट्ठं वा संपधूवियं वा अन्नयरंसि वा तह० थंडि० नो उ० ॥ से भि० से जं पुण थं० जाणेज्जा, इह खलु गाहावइ वा गाहा० पुत्ता वा कंदाणि वा जाव हरियाणि वा अंतराओ वा बाहिं नीहरंति बहियाओ वा अंतो साहरंति वा अन्नयरंसि वा तह० थं० नो उच्चा० ॥ से भि० से जं पुण० जाणेज्जा—खंधंसि वा पीढंसि वा मंचंसि वा मालंसि वा अट्टंसि वा पासायंसि वा अन्नयरंसि वा० थं० नो उ० ॥ से भि० से जं पुण० अणंतरहियाए पुढवीए ससिणिद्धाए पु० ससरक्खाए पु० मट्टियाए मक्कडाए चित्तमंताए सिलाए चित्तमंताए लेलुयाए कोलावासंसि वा दारुयंसि वा जीवपइट्ठियंसि वा जाव मक्कडासंताणयंसि अन्न० तह० थं० नो उ० ॥ (सू० १६५)

कोइ साधु कोइ वखते टट्टी पेसाब करवानी ताकीदे पीडातो होय अने रस्तामां तेवी छुटनी जग्या न मळे तो तेणे कुंडी अथवा तेवु योग्य साधन समाधि माटे मेळवी तेमां स्थंडिल जइ परठवी आववुं, पण जो पोतानी पासे हाजर न होय तो बीजा साधु पासे याचवुं अने तेनी प्रतिलेखना विगेरे करीने ते उपयोगमां लेवुं, आथी एम सूचव्युं के स्थंडिल पेसाबने रोकवा नहि, वळी शंका थाय पहेलांज वने त्यां लगी साधुए नीकळवुं, अने ज्यां स्थंडिल जाय त्यां प्रथम देखे के इंडा के नानाजंतु कीडीओ

के करोळीयानां जाळां वगेरे नथी, जो इंडां विगेरे होय तो त्यां टट्टी न जाय, हवे ते साधु एम जाणे के कोइ माणसे एक अथवा घणा साधु साध्वीने आश्रयी स्थंडिलनी जग्या बनावी होय, अथवा श्रमण माहण विगेरेने उद्देशीने बनावी होय, तो ते जग्याने बीजा पुरुषे स्वीकारी होय के न स्वीकारी होय तो पण मूल गुणथी दोषित होवाथी तेमां उच्चार प्रश्रवण न करवुं.

ते साधुए यावंतिक स्थंडिलमां अपुरुषांतर कृतमां स्थंडिल न जाय; पण बीजाए वापर्या पछी तेनो उपयोग पोते पण करे, वळी उत्तर गुण अशुद्ध ते खरीद करी होय, बदले लीधी होय विगेरे कारणे दोषित होवाथी तेमां स्थंडिल न जाय, अथवा स्थंडिलनी जग्यामाथी कंद विगेरेने छोकरां विगेरे बहार काढे, अथवा, ते जग्यामां कंद विगेरे नांखे तो तेमां साधुए स्थंडिल न जवुं तथा स्कंध पीढ माचडो माळो अट्टप्रासाद विगेरेनी अधर जग्या के उंची जग्या के भीची जग्या ज्यां समाधिथी न बेसाय तेवी जग्याए स्थंडिल न जवुं, तेज प्रमाणे सचित्त पृथ्वी विगेरे उपर स्थंडिल न जवुं भिनी होय, सचित्त रजवाळी होय, माटी करोळीयानां जाळां, सचित्त पत्थरनी शिला, माटीनां ढेफां, धुळना कीडावाळुं लाकडुं के नानां जंतुथी व्याप्त करोळीयाना जाळानां समुदायथी व्याप्त होय के तेवुं कंइ पण अप्रासुक स्थान होय त्यां स्थंडिल न जवुं.

से भि० से जं० जाणे०—इह खलु गाहावई वा गाहावइपुत्ता वा कंदाणि वा जाव बीयाणि वा परिसाडिंसु वा परिसाडिंति वा परिसाडिस्संति वा अन्न० तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० इह खलु गाहावई वा गा० पुत्ता वा सालीणि वा वीहीणि वा मुग्गाणि वा मासाणि वा कुलत्थाणि वा जवाणि वा जवजवाणि वा पइरिंसु वा पइरिंति वा पइरिस्संति वा अन्नयरंसि वा तह० थंडि० नो उ० ॥ से भि० २ जं० आमोयाणि वा घासाणि वा भिलुयाणि वा विज्जुलयाणि वा

खाणुयाणि वा कडयाणि वा पगडाणि वा दरीणि वा पदुग्गाणि वा समाणि वा २ अन्नयरंसि तह० नो उ० ॥ से भिक्खू० से जं० पुण थंडिल्लं जाणिज्जा माणुसरंधणाणि वा महिसकरणाणि वा वसहक० अस्सक० कुक्कुडक० मक्कडक० हयक० लावयक० वट्टयक० तित्तिरक० कवोयक० कविंजलकरणाणि वा अन्नयरंसि वा तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० जाणे० वेहाणसट्ठाणेसु वा गिद्धपट्ठठा० वा तरुपडणट्ठाणेसु वा० मेरुपडणठा० विसभक्खणयठा० अगणिपडणट्ठा० अन्नयरंसि वा तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० आरामाणि वा उज्जाणाणि वा वणाणि वा वणसंडाणि वादे वकुलाणि वा सभाणि वा पवाणि वा अन्न० तह० नो उ० ॥ से भिक्खू० से जं पुण जा० अट्टालयाणि वा चरियाणि वा दाराणि वा गोपुराणि वा अन्नयरंसि वा तह० थं० नो उ० ॥ से भि० से जं० जाणे० तिगाणि वा चउक्काणि वा चचराणि वा चउम्मुहाणि वा अन्नयरंसि वा तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० जाणे० इंगालदाहेसु खारदाहेसु वा मडयदाहेसु वा मडयथूभियासु वा मडयचेइएसु वा अन्नयरंसि वा तह० थं० नो उ० । से जं जाणे० नइयायतणेसु वा पंकाययणेसु वा ओघाययणेसु वा सेयणवहंसि वा अन्नयरंसि वा तह० थं० नो उ० ॥ से भि० से जं जाणे० नवियासु वा मट्टियखाणिआसु नवियासु गोप्पहेलियासु वा गवाणीसु वा खाणीसु वा अन्नयरंसि वा तह० थं० नो उ० ॥ से जं जा० डागवच्चंसि वा सागव० मूलग० हत्थंकरवच्चंसि वा अन्नयरंसि वा तह० नो उ० वो० ॥ से भि० से जं असणवणसि वा सणव० धायइव० केय-इवणंसि वा अंबव० असोगव० नागव० पुन्नागव० चुल्लगव० अन्नयरेसु तह० पत्तोवेएसु वा पुप्फोवेएसु वा फलोवेएसु वा बीओवेएसु वा हरिओ वेएसु वा नो उ० वो० ॥ (सू० १६६)

साधु साध्वीए नीचली जग्याए स्थंडिल न जवुं—ते वतावे छे–जे जग्यामां गृहस्था अथवा तेना पुत्रो विगेरे कंद बीज विगेरे त्रणे काळमां नांखता होय, तथा गृहस्थलोक अथवा तेना पुत्रो विगेरेए शाली चोखा व्रीही मग अडद कलथी जव जवजव वाव्यां होय, वावता होय अथवा वाववानो होय; अथवा ज्यां आमोक ते कचराना ढगला (उकरडा) मां घास भूमिराजीओ–भिलुक सूक्ष्मभूमिराजीओ विज्जल स्थाणु तथा कडय मगर्त्ता–मोटाखाडा, तथा दरीमदुर्ग भींतो तथा कील्ला बुरुज आ वतावेला स्थान वखते सम होय कोइ जग्याए विषम होय (माटी विगेरे पडवानो डर होय) तेथी तेवी जग्याए स्थंडिल जतां पोते पडी जाय तो आत्मविराधना थाय, अने बीजा जीवो नीचे चगदाइ जतां संयम विराधना थाय तथा माणसोने माटे रांधवानी जग्या (चूला) होय, अथवा भेंस वळध घोडा कुकडां माकडां (वांदरा) हय लावक वट्टय तितर कबुतर कपिंजल विगेरे पशु पक्षो माटे खावा पीवानुं अथवा शीखवानुं के तेवुं बीजुं कंइ पण कार्य थतुं होय तथा ते स्थानमां तेमने रखातां होय ते जग्याए स्थंडिल जवाथी लोक विरुद्ध मवचनना उपघात विगेरे थाय माटे त्यां न जवुं, वळी आपघात करवानां स्थान जेमां झाडे फांसो खाय लोक मरतां होय, अथवा झाड उपरथी नीचे कूदीने मरतां होय, अथवा झाड गीध विगेरे पक्षीओ पासे काया चुंथावी मरवा लोही चोपडी सुतां होय, झाड उपरथी नीचे कूदीने मरतां होय, अथवा झाड माफक स्थिर थइ अनशन वडे मरतां होय, मेरु (पर्वत) उपरथी पडीने मरतां होय, तथा विषभक्षण करी मरतां होय, अग्निमां बळी मरतां होय, अथवा तेवां बीजां मरवांनां स्थान होय, त्यां साधुए स्थंडिल न जवुं, तेज प्रमाणे आराम [जेमां काळो विशेष होय] उद्यान वन वनखंड देवल सभा परव विगेरेनी जग्यामां स्थंडिल न जाय, अट्टालक चरिय दरवाजा गोपुर अथवा तेवा गाम शहेरना कोट कील्लानां स्थान होय त्यां स्थंडिल न जवुं, तेज प्रमाणे त्रिकोण चतुष्क [ज्यां त्रण के चार रस्ता मळतां होय] के चांतारो

होय तेवा स्थानमां पण स्थंडिल न जवुं, तेज प्रमाणे अंगारा पाळवानी जग्या, खारो तैयार करवानी जग्या अथवा मळदां बाळवानी जग्या, ज्यां मळदानां पगलां होय, देरीओ होय. अथवा कबरो होय अथवा तेवा बीजा कोइ पण स्थानमां स्थंडिल न जवुं, तथा जे जग्याए पाणी पवित्र मानी लोक न्हातां होय तेवा लौकिक तीर्थ स्थानमां, तथा पंकायतन ज्यां माटी पवित्र मानी लोक आळोटतां होय, ओघायतन एटले परंपराथी ज्यां लोको पवित्र स्थान मानता होय अथवा जे रस्तेथी तळावमां पाणीनी नीको होय त्यां स्थंडिल न जवुं, तथा माटी खोदवानी नवी खाण होय, अथवा गायोनी महेलो अथवा खवडाववानुं स्थान होय, अथवा बीजी खाणो होय त्यां स्थंडिल न जवुं तथा डाग (पांदडांवाळुं शाख,) तथा बीजा शाख तथा मूळा थवानी जग्यामां हत्थंकरनी जग्यामां स्थंडिल न जवुं, तथा अशन वन शणनुं वन धावडीनुं वन केतकीनुं वन आंबानुं, अशोकनुं नाग पुन्नाग चुल्लक विगेरेनुं वन होय, तथा पांदडां फूल फळ बीज भाजी विगेरेथी युक्त स्थान होय त्यां साधुए स्थंडिल न जवुं

प्र० त्यारे केवी रीते स्थंडिल जवुं ? ते कहे छे—

से भि० सयपाययं वा परपाययं वा गहाय से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावायंसि असंलोयंसि अप्पपाणंसि जाव मक्कडासंताणयंसि अहारामंसि वा उवस्सयंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं वोसरिज्जा, से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावाहंसि जाव संताणयंसि अहारामंसि वा झामथंडिल्लंसि वा अन्नयरंसि वा तह० थंडिल्लंसि अचित्तंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा, एयं खलु तस्स० सया जइज्जासि (सू० १६७) त्तिबेमि ॥ उच्चारपासवणसत्तिकओ सम्मत्तो ॥

ते साधु पोतानुं के कारण प्रसंगे बीजानु पात्रुं (तृपणी के तुबडी पहोळा मोढानी) लइ जाय अने ज्या लोको न जुए अथवा

न आवे तथा जीवात न होय, तेवा आगम के रहेवाना मकानमां एकांतमां बेसी माटीनी कुंडी विगेरेमां टट्टी के पेशाब करीने ते कुंडी विगेरेने लइ ज्यां निर्जीव स्थान होय त्यां परठवे, आज साधुनुं सर्वस्थ अने समाधि छे के स्वपरने पीडा न थाय, तेम स्थंडिल जवुं.

"शब्द सप्तक"—चोथुं अध्ययन.

त्रीजा साथे चोथानो आ प्रमाणे संबंध छे, के पहेलामां स्थान, बीजामां स्वाध्याय, त्रीजामां स्थंडिल विगेरेनी विधि बतावी. ते त्रणेमां रहेला साधुने अनुकूल के प्रतिकूल शब्दो संभळाय तो ते सांभळीने साधुए राग द्वेष न करवो, आ संबंधे आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोग्यद्वारमां नाम निष्पन्न निक्षेपामां "शब्द सप्तक" एवुं नाम छे, एना नाम स्थापना सुगम निक्षेपाने छोडी द्रव्य निक्षेपो निर्युक्तिकार पाछली अडधी गाथावडे बतावे छे.

[दव्वं संठाणाई भावो वन्नकसिणं स भावो य] । दव्वं सद्दपरिणयं भावो उ गुण य कित्ती य ॥ ३२३ ॥

नो आगमथी द्रव्य व्यतिरिक्तमां शब्द पणे जे भाषा द्रव्यो परिणत थाय छे, ते अहिआं लेवां, भावशब्द तो आगमथी जेन शब्दोमां उपयोग होय, अने नो आगमथी अहिंसादि लक्षणवाळा गुणो समजवा, कारण के आ हिंसा जुठ विगेरेथी दूर रहेवुं, ते गुणोथी प्रशंसा पामे छे अने कीर्त्ति तो जे तीर्थंकर प्रभुने चोत्रीश अतिशय प्रकट थतां बीजा करतां अधिक रुप संपदायुक्त पोते थवाथी लोकमां आ अर्हन् देव छे, एम प्रसिद्ध थाय ते कीर्त्ति छे.

नियुक्ति अनुगम पछी सुत्त सूत्र आ अनुगममां सूत्र कहेवुं, ते छे.

से भि० मुइंगसद्दाणि वा नंदीस० झल्लरीस० अन्नयराणि वा तह० विरूवरूवाइं सद्दाइं विततांइं कन्नसोयणपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भि० अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तं— वीणासद्दाणी वा विपंचीसं० पिप्पी (बद्धी) सगस० तूणयसद्दा० वणयस० तुंबवीणियसद्दाणि वा ढुंकुणसद्दाइं अन्नयराइं तह० विरूवरूवाइं० सद्दाइं वितताइं कण्णसोयपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भि० अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तं–तालसद्दाणि वा कंसतालसद्दाणि वा लत्तियसद्दा० गोधियस० किरिकिरियास० अन्नयरा० तह० विरूव सद्दाणि कण्ण० गमणाए ॥ से भि० अहावेग० तं० संखसद्दाणि वा वेणु० वंसस० खरमुहिस० परिपिरियास० अन्नय० तह० विरूव० सद्दाइं झुसिराइं कन्न० ॥ (सू० १६८)

पूर्वे बतावेलो भिक्षु जो वितत, तत, घन पोकळ, एवा वाजींत्रना चार भेदवाळा मधुर शब्दोने सांभळे, (तो तेने राग थाय) ते सांभळवानी इच्छाथी पोते ते तरफ न जाय.

वितत एटले मृदंग नन्दी झालर विगेरे छे तथा वीणा विपंची बद्धीसक (सरणाइ) विगेरे तंत्रीनां वाजां छे. वीणा विगेरेनो भेद तंत्रीनी संख्याथी जाणवो.

घन एटले हस्तताल कांसी विगेरे छे. लत्तिकानो अर्थ कांसी छे अने गोहिका एटले काख अने हाथमां राखीने वगाळवानुं वाजुं छे.

किरिकिरिया ते वांस विगेरेनी कांबीनुं वाजुं छे, शुषिर ते शंख, वेणु विगेरे पोकल वाजां छे. पण खरमुही ते तोहाडिक छे अने पिरिपिरिचय ते कोलियकना पुटथी जडेली वांस विगेरेनी नळी छे. आवां कोइ पण वाजींत्र वागतां होय तो साधुए ते तरफ

न जवुं. वळी—

से भि० अहावेग० तं० वप्पाणि वा फलिहाणि वा जाव सराणि वा सागराणि वा सरसरपंतियाणि वा अन्न० तह० विरूव० सद्दाइं कण्ण० ॥ से भि० अहावे० तं० कच्छाणि वा णूमाणि वा गहणाणि वा वणाणि वा वणदुग्गाणि पव्वयाणि वा पव्वयदुग्गाणि वा अन्न० । अहा० तं० गामाणि वा नगराणि वा निगमाणि वा रायहाणाणि वा आसमपट्टणसंनिवेसाणि वा अन्न० तह० नो अभि० ॥ से भि० अहावे० आरामाणि वा उज्जाणाणि वा वणाणि वा वणसंडाणि वा देवकुलाणि वा सभाणि वा पवाणि वा अन्नय० तहा०सद्दाइं नो अभि० ॥ से भि० अहावे० अट्टाणि वा अट्टालयाणि वा चरियाणि वा दाराणि वा गोपुराणि वा अन्न० तह० सद्दाइं नो अभि० ॥ से भि० अहवे० तंजहा—तियाणि वा चउक्काणि वा चच्चराणि वा चउम्मुहाणि वा अन्न० तह० सद्दाइं नो अभि० ॥ से भि० अहावे० तंजहा—महिसकरणट्ठाणाणि वा वसभक० अस्सक० हत्थिक० जाव कविंजलकरणट्ठा अन्न० तह० नो अभि० ॥ से भि० अहावे० तंज० महिसजुद्धाणि वा जाव कविंजलजु० अन्न० तह० नो ॥ से भि० अहावे० तं० जूहियठाणाणि वा हयजू० गयजू० अन्न० तह० नो अभि० ॥ (सू० १६९)

ते साधु कदाच कोइपण जातना शब्दोने खांभळे के वप ते क्यारा छे एटले तेनी सुंदरतानुं वर्णन सांभळे अथवा ते खेतरना क्यारा विगेरेमां मधुर गायन विगेरे थतुं होय तो ते सांभळवानी इच्छाथी त्यां न जाय वमथी जाणवुं के तेज प्रमाणे फलिह सरोवर सागर तलावडीओ जोवा साधुए न जवुं तथा त्यां वाजींत्र वागतुं होय तो पण सांभळवा न जवुं. तेज प्रमाणे कच्छ,णूम गहन वन अथवा वनमांना पर्वतो अथवा पर्वतनाकिल्ला किल्ला पण जोवा न जवुं तथा गाम नगर निगम राजधानी आश्रम पाटण सन्निवेश

विगेरेमां मधुर शब्दो सांभळवा न जवुं तथा आराम उद्यन वन वनखंड देरां सभा परव विगेरेमां वाजां सांभळवा न जवुं तथा अट्ट अट्टालक चरित दरवाजा तथा नगरना दरवाजे शब्द सांभळवा न जवुं तथा त्रिक चौक चोतरो चोमुख स्थानमां न जवुं तथा पाडा बळद घोडा हाथी विगेरेनां.

ते कपिंजल सुधीनां कळा शीखववाना स्थानमां जोवा न जवुं तथा ज्यां तेमनुं मैथुन थतुं होय त्यां न जवुं, तेम तेमनुं युद्ध थतुं होय अथवा तेमनी क्रिया थती होय ते जोवा न जवुं

से भि० जाव सुणेइ, तंजहा–अक्खाइयठाणाणि वा माणुम्माणियट्ठाणाणि वा महताऽऽहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियपडुप्पवाइयट्ठाणाणि वा अन्न० तह० सद्दाइं नो अभिसं० ॥ से भि० जाव सुणेइ, तं०–कलहाणि वा डिंबाणि वा डमराणि वारज्जाणि वा वेर० विरुद्धर० अन्न० तह० सद्दाइं नो० ॥ से भि० जाव सुणेइ खुड्डियं दारियं परिभुत्तमंडियं अलंकियं निवुज्झमाणिं पेहाए एगं वा पुरिसं वहाए नीणिज्जमाणं पेहाए, अन्नयराणि वा तह० नो अभि० ॥ से भि० अन्नयराइं विरूव० महासवाइं एवं जाणेज्जा तंजहा–बहुसगडाणि वा बहुरहाणि वा बहुमिलक्खूणि वा बहुपच्चंताणि वा अन्न० तह० विरूव० महासवाइं कन्नसोयपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भि० अन्नयराइं विरूव० महूस्सवाइं एवं जाणिज्जा तंजहा–इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा डहराणि वामज्झिमाणि वा आभरणविभूसियाणि वा गायंताणि वा वायंताणि वा नच्चंताणि वा हसंताणि वा रमंताणि वा मोहंताणि वा विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुजंताणि वा परिभायंताणि वा विछड्डियमाणाणि वा विगोवयमाणाणि वा अन्नय० तह० विरूव० महु० कन्नसोय० ॥ से भि० नो इहलोइएहिं

सद्देहिं नो परलोइएहिं स० नो सुएहिं स० नो असुएहिं स० नो दिट्ठेहिं सद्देहिं नो अदिट्ठेहिं स० नो कंतेहिं सद्देहिं सज्जिज्जा नो गज्झिज्जा नो मुज्झिज्जा नो अज्झोववज्जिज्जा, एयं खलु० जाव० नएज्जासि (सू० १७०) त्तिबेमि ॥ सद्दसत्तिक्कओ ॥ २-२-४ ॥

तेज प्रमाणे ज्यां कथाओ कहेवाती होय, मापा तोल विगेरे थतुं होय अथवा तेनुं वर्णन थतुं होय त्यां न जवुं तथा मोटा अवाजे नाटक गीत वाजींत्र तंत्री त्रीतल ताल त्रुटेतथी थतुं होय त्यां सांभळवा न जवुं तथा कजीआ बालकोना खेल डमर अथवा बे राज्योनी लडाइ होय अथवा वहारवटीया राज्य विरुद्ध फरता होय, तेवुं सांभळे तो त्यां न जाय.

अथवा ते साधु एम सांभळे, के कोइ सुंदर बालिकाने आखा शरीरे स्नान करावी वस्त्राभूषणथी शणगारी घोडा उपर बेसाडेली छे तो त्यां न जवुं.

अथवा कोइ पुरुषने वध करवा लइ जता होय तेवुं अथवा दुःख देवा संबंधी बीजुं कंइ सांभळवा मळे त्यां न जाय,

अथवा ते साधु महा पाप आश्रवनां स्थान ते घणां गाडां रथो विगेरेथी युक्त म्लेच्छो अथवा हलका मकारना माणसो युक्त होय, त्यां कानने आनंद पमाडनार सांभळवानुं मळशे तेवी बुद्धिए न जाय,

तेज प्रमाणे ज्यां महोत्सवो होय के जेनी अंदर स्त्री पुरुष बुढा बाळक अथवा मध्यम वयनां माणसो सुंदर वस्त्रालंकार पहेरीने गायनो विगेरेनी क्रिया करे छे, त्यां सांभळवानी बुद्धिथी न जाय. हवे बधा परमार्थ टुंकमां समजावे छे.

ते साधु आलोक अने परलोकना महा दुःखना भयथी डरेलो एटले आ लोकमां सांभळवाना रसमां मनुष्य विगेरेथी भय छे,

अने परलोकमां परमाधामी (जमडा) ना मार खावा पडशे एम विचारीने मोह छोडे, अथवा आ लोक के परलोकना स्त्रीना के देवीना शब्दोमां न ललचाय, तथा तेवा शब्दो सांभळ्या होय, के नहि, अथवा साक्षात् मळ्या होय के नहि, तो पण तेमां राग न करे, तेमां गृद्धता न करे, तेमां मुंझाय नहि, न तल्लीन थाय, अर्थात् जे कानने कबजामां राखी मधुरमां आनंद न माने, हितना कडवा शब्दोमां खेद न माने. तेज तेनुं पूर्ण साधुपणुं छे.

जो तेम इंद्रियोने कबजामां न राखी शब्दो सांभळवा जाय, तो भणवुं गणवुं न थाय, तथा राग द्वेष थाय, ए प्रमाणे बीजा पण आ लोक परलोक संबंधी दुःखो जाणीने विचारवा.

रुप सप्तक नामनुं पांचमुं अध्ययन

चोथुं सप्तक कहीने हवे रुप सप्तक कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां श्रवण इंद्रिय आश्रयी रागद्वेषनी उत्पत्ति निषेधी. तेम अहीं आंखने आश्रयी निषेधशे, आ संबंधे आवेला अध्ययनना नाम नि—निक्षेपामां (रुप सप्तक एकक) नाम छे.

रुपना चार प्रकारे निक्षेपा छे—

नाम स्थापना सुगमने छोडीने द्रव्यभाव निक्षेपा कहेवा निर्युक्तिकार गाथा कहे छे.

दव्वं संठाणाई भावो वन्न कसिणं सभावो य । [दव्वं सद्द (रूव) परिणयं भावो उ गुणा य कित्ती य] ॥ ३२४ ॥

नो आगमथी द्रव्य व्यतिरिक्तमां पांचे स्थानो परिमंडळ (पूर्ण गोळो) विगेरे आकारो छे, अने भावरुप बे प्रकारे वर्णथी तथा स्वभावथी छे, तेमां वर्णथी वधा (पांचे) वर्णो छे अने स्वभाव रुप ते अंदरमां रहेला क्रोध विगेरेथी भापण चढावी कपाळमां सळ

पाडीने आंख लाल करीने अनुचित वचन बोलवां, एथी विपरीत प्रसन्न थइने रागनां वचन बोलवां, कह्युं छे के—

रुट्ठस्स खरा दिट्ठी उप्पलधवला पसन्नचित्तस्स। दुहियस्स ओमिलायइ गंतुमणस्सुस्सुआ होइ ॥ १ ॥

क्रोधीने आंख लाल होय, अने प्रसन्न थएलानी कमळ जेवी धोळी होय, दुःखी जीवनी मींचायला जेवी होय, अने जवा इच्छनारनी खांख उत्सुक होय.

से भि० अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं० गंथिमाणि वा वेढिमाणि वा पूरिमाणि वा संघाइमाणि वा कट्ठकम्माणि वा पोत्थकम्माणि वा चित्तक० मणिकम्माणि वा दंतक० पत्तछिज्जकम्माणि वा विविहाणि वा वेढिमाइं अन्नयराइं० विरू० चक्खुदंसणपडियाए नो अभिसंधारिज्ज गमणाए, एवं नायवं वा जहा सद्दपडिमा सव्वा वाइत्तवज्जा रूवपडिमावि ॥ (सू० १७१) पञ्चमं सत्तिकयं ॥ २-२-५ ॥

ते भाव साधु गोचरी विगेरेना कारणे वहार फरतां जुदी जुदी जातिनां रुपो जुए, तेमां मोह न करे, हवे ते रुपोनी विगत बतावे छे. फुलो विगेरेथी साथीओ विगेरे गुंथीने बनाव्यो होय, तथा वस्त्र विगेरे वींटीने पुतळी विगेरे बनावेल होय, तथा अमुक चीजो पुरीने पुरुष विगेरेनो आकार बनाव्यो होय, तथा कपडांना ककडा शीवीने कांचळी विगेरे बनावे—ते संघातिम छे, लाकडानां रथ विगेरे काष्ट कर्म छे. तथा पुस्तको, लेपनुं काम, चित्रो, तथा जुदां जुदां मणि रत्नोवडे साथीआ विगेरे बनावेल होय, हाथी-दांतनी पुतळी विगेरे होय, पांदडां छेदीने आकार बनाव्यो होय, आ प्रमाणे अनेक मनोहर वस्तुओ देखीने आंखने प्रसन्न करवानी इच्छाथी न जाय, अर्थात् जवुं तो दूर रहो पण मनमां अभिलाषा पण देखवानी न करे, तथा पूर्वे शब्दोना अधिकारमां बताव्युं ते

प्रमाणे अहीं पण योजवुं के आलोक संबंधी के परलोक संबंधी सांभळ्युं होय के न सांभळ्युं होय, देख्युं होय के नहि देख्युं होय, तो ते ते दरेक जातिना रुपमां राग गृद्धता, मोह के तल्लीनता न करवी, जो रुपमां राग विगेरे करशे तो आ लोकमां मनुष्य विगेरेथी अने परलोकमां परमाधामीना मार पडशे.

परक्रिया नामनुं छठुं अध्ययन.

रुप अध्ययन कहीने परक्रिया नामनुं छठुं अध्ययन कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे.

गयां बे अध्ययनमां रागद्वेषनी उत्पत्तिनां निमित्त मधुर शब्द अने रुपनो निषेध बताव्यो, तेनेज अहीं बीजे प्रकारे कहेशे, आवे संबंधे आवेला अध्ययनना नाम निष्पन्न निक्षेपामां परक्रिया एवुं आदान पदवडे नाम छे, तेमां प्रथम पर शब्दनो छ प्रकारनो निक्षेप अडधी गाथावडे कहे छे.

छक्कं परइक्किक त १ दन्न २ माएस ३ कम ४ वहु ५ पहाणे ६ ।

'पर' शब्दनो छ प्रकारे निक्षेपो छे, नाम स्थापना सुगम छे, अने द्रव्यादि पर पण एकेक छ प्रकारे छे.

१ तत्पर २ अन्यपर ३ आंदेशपर ४ क्रमपर ५ बहुपर ६ प्रधानपर छे. तेमां प्रथम द्रव्यपर तेजरुपे वर्त्तमानमां विद्यमान होय, जेमके एक परमाणुथी बीजो परमाणु जुदो छे अन्यपर ते अन्यरुपे पर छे, जेमके एक बे अणुवाळो, त्रण अणुवाळो तेमज बे अणुवाळो एक अणुवाळो के त्रण अणुवाळो छे, आदेशपर ते आदेश (आज्ञा) अपाय छे ते, जेमके कोइ कार्यमां मजुर विगेरेने रखाय छे ते आदेशपर छे, पण 'क्रमपर' तो चार प्रकारे छे, तेमां द्रव्यथी क्रम पर ते एक प्रदेशिक द्रव्यथी बे प्रदेशिक द्रव्य छे

ए प्रमाणे बे अणुकथी त्रण अणुक विगेरे छे. क्षेत्रना एक प्रदेशमां रहेल तेनाथी बे प्रदेश अवगाहमां रहेलुं छे, तथा काळथी एक समयनी स्थितिवाळाथी बे समयनी स्थितिवाळुं विगेरे छे, भावथी क्रम पर ते एक गुण काळथी बे गणुं काळुं विगेरे छे. ए प्रमाणे बधा रंगमां जाणवुं.

"बहु पर" ते बहुपणे पर एटले एकथी बीजुं बहु होय ते जाणवुं जेमके

जीवा पुग्गल समया दव्व पएसा य पज्जवा चेव । थोवाणंताणंता विसेसअहिया दुवेणंता ॥१॥

जीव सौथी थोडा छे तेवी पुद्गलो अनंतगुणा छे, तेनाथी समयो द्रव्यना प्रदेशो अने तेनां पर्यायो अनंत तथा विशेष अधिक छे. फक्त बेमां अनंतगणा छे.

प्रधानपर ते बे पगवाळामां तीर्थंकर छे तथा चोपगामां सिंह विगेरे अने अपदमां अर्जुन, सुवर्ण, फणस विगेरे झाडो छे, ए प्रमाणे क्षेत्रकाळ भाव पर विगेरेने पण तत्पर विगेरे छ प्रकारे क्षेत्र विगेरे प्रधानपणाथी पहेलांनी माफक पोतानी बुद्धिए योजवां

सामान्यथी तो जंबूद्वीपक्षेत्रथी पुष्कर विगेरे क्षेत्रो पर छे तथा काळ पर ते वरसादनी रुतुथी शरद रुतु छे, भावपर औदयिकथी औपशमिक विगेरे छे. हवे सूत्रानुगममां सूत्र उच्चारवुं जोइए ते आ छे.

परकिरियं अज्झत्थियं संसेसियं नो तं सायए नो तं नियमे, सिया से परो पाए आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे । से सिया परो पायाइं संबाहिज्ज वा पलिमद्दिज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे । से सिया परो पायाइं तिल्लेण वा घ० वसाए वा वा मक्खिज्ज पायाइं कुसिज्ज वा रइज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे । से सिया परो पायाइं

वा अब्भिंगिज्ज वा नो तं २। से सिय परो पायाइं लुद्धेण वा कक्केण वा चुन्नेण वा वण्णेण वा उल्लोढिज्ज वा उव्व-
लिज्ज वा नो तं २। से सिया परो पायाइं सीओदगवि यडेण वा २ उच्छोलिज्ज वा पहोलिज्ज वा नो तं०। से सिया
परो पायाइं अन्नयरेण विलेवण जाएण आलिंपिज्ज वा विलिंपिज्ज वा नो तं। से सिया परो पायाइं अन्नयरेण धूवण-
जाएण धूविज्ज वा पधू० नो तं २। से सिया परो पायाओ आणुयं वा कंटयं वा नीहरिज्ज वा विसोहिज्ज वा नो तं०
२। से सिया परो पायाओ पूयं वा सोणियं वा नीहरिज्ज वा विसो० नो तं० २। से सिया परो कायं आमज्जेज्ज वा
पमज्जिज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे। से सिया परो कायं लोद्रेण वा संवाहिज्ज वा पलिमदिज्ज वा नो तं० २।
से सिया परो कायं तिल्लेण वा घ० वसा० मक्खिज्ज वा अब्भंगज्ज वा नो तं० ३। से सिया परो कायं लुद्धेण वा ४
उल्लोढिज्ज वा उव्वलिज्ज वा नो तं० २। से सिया परो कायं सीओ० उसिणो० उच्छोलिज्ज वा प० नो तं० २।
से सिया परो कायं अन्नयरेण विलेवणजाएण आलिंपिज्ज वा २ नो तं० २। से० कायं अन्नयरेण धूवणजाएण धूविज्ज
वा प० नो तं० २। से० कायंसि वणं आमज्जिज्ज वा २ नो तं २। से० वणं संवाहिज्ज वा पलि० नो तं०। से० वणं
तिल्लेण वा घ० २ मक्खिज्ज वा अब्भं० नो तं० २। से० वणं लुद्धेण वा ४ उल्लोढिज्ज वा उव्वलेज्ज वा नो तं० २।
से सिया परो कायंसि वणं सीओ० उ० उच्छोलिज्ज वा प० नो तं० २। से० सि वणं वा गंडं वा अरइं वा पुलयं वा
भगंदलं वा अन्नयरेणं सत्थजाएणं अच्छिदिज्ज वा विच्छिदिज्ज वा नो तं० २। से सिया परो अन्न० जाएण आच्छि-
दित्ता वा विच्छिद्दित्ता वा पूयं वा सोणियं वा नीहरिज्ज वा वि० नो तं० २। से० कायंसि गंडं वा अरइं वा पुलयं

वा भगंदलं वा आमज्जिज्ज वा २ नो तं० २ । से० गंडं वा ४ संवाहिज्ज वा पलि० नो तं० २ । से० कायं० गंडं वा ४ तिल्लेण वा ३ मक्खिज्ज वा २ नो तं० २ । से० गंडं वा लुद्धेण वा ४ उल्लोढिज्ज वा उ० नो तं० २ । से गंडं वा ४ सीओदग २ उच्छोलिज्ज वा प० नो तं० २ । से० गंडं वा ४ अन्नयरेणं सत्थनाएणं अच्छिदिज्ज वा वि० अन्न० सत्थ० अच्छिदित्ता वा २ पूयं वा २ सोणियं वा नीह० विसो० नो तं सायए २ । से सिया परो कायंसि सेयं वा जल्लं वा नीहरिज्ज वा वि० नो तं० २ । से सिया परो अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहम० नीहरिज्ज वा नो २ नो तं० २ । से सिया परो दीहाइं वालाइं दीहाइं वा रोमाइं दीहाइं भमुहाइं दीहाइं कक्खरोमाइं दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पिज्ज वा संठविज्ज वा नो तं २ । से सिया परो सीसाओ लिक्खं वा जूयं वा नीहरिज्ज वा वि० नो तं० २ । से सिया परो अंकंसि वा पलियंकंसि वा तुयट्टावित्ता वा पायाइं आमज्जिज्ज वा पम०, एवं हिट्ठिमो गामो पायाइ भाणियव्वो । से सिया परो अंकंसि वा २ तुयट्टावित्ता हारं वा अद्धहारं वा उरत्थं वा गेवेयं वा मउडं वा पालंबं वा सुवन्नसुत्तं वा आविहिज्ज वा पिणहिज्ज वा नो तं० २ । से० परो आरामंसि वा उज्जाणंसि वा नीहरित्ता वा पविसित्ता वा पायाइं आमज्जिज्ज वा प० नो तं साइए ॥ एवं नेयव्वा अन्नमन्नकिरियावि ॥ (सू० १७२) ॥

अहीं साधुथी पर कोइपण गृहस्थ होय, ते कंइपण क्रिया साधुना अंग उपर करे, तो ते समये साधुए ते क्रियाने कर्मबंधननुं कारण जाणीने तेने मनथी पण इच्छे नहिं. तेम वचनथी के कायाथी पण न करवा दे.

आ पर क्रियाने खुलासाथी समजावे छे, कोइ अन्य श्रावक धर्म श्रद्धाथी साधुना पग उपर लागेली धुळने कर्पट विगेरेथी दूर

करे अथवा तेवुं बीजुं कंइ प्रमार्जन विगेरे करे तेने साधु मन, वचन, कायाथी सारुं न जाणे, तेम चोळे, मसळे, तो पण सारुं न जाणे तेम तेल विगेरेथी के बीजा पदार्थथी अभ्यंगन करे अथवा लोधर विगेरेथी उद्वर्त्तन करे तथा ठंडापाणी विगेरेथी छंटकाव करे तेम कोइ सुगंधी द्रव्यथी लेप करे तेम विशिष्ट धुपथी शरीर सुगंधी बनावे अथवा पगमां लागेलो कांटो काढे अथवा पगमांथी खराब परु के लोही काढे तो तेने सारुं मन वचन कायाथी न जाणे जेवी रीते पगनुं कहुं, ते प्रमाणे अंगनां पण कृत्य जाणी लेवां. तेज प्रमाणे गुमडां आश्री पण जाणवुं तथा शरीरमां नस्तर विगेरे मारीने के मलम विगेरे लगाडीने गुमडां विगेरे सारां करे तो ते मन वचन कायाथी अनुमोदे नहि.

अथवा शरीर उपरथी परसेवो के मेल दूर करे तो पण सारुं न माने तथा आंखनो काननो दांतनो के नखनो मेल दूर करे तो सारुं न माने, तेम माथाना के शरीरना वाळ रोम के भांपणाना के काखना वाळ के गुप्तभागना वाळ कापे के सरखा करे तो सारुं न माने वळी ते साधुने अंकमां अथवा पल्यंकमां तेज प्रमाणे हार अर्धहार कंठी गळचवो पहेरावे अथवा मुकुट के झुमखा पहेरावे. कंदोरो पहेरावे तेने सारुं न जाणे, ते वखते साधु आराम अथवा उद्यानमां होय त्यां गृहस्थ आवीने उपरनी क्रिया करे तो साधु तेने सारुं न जाणे.

से सिया परो सुद्धेणं असुद्धेणं वा वइबलेण वा तेइच्छं आउट्टे से० असुद्धेण वइबलेणं तेइच्छं आउट्टे ॥ सेसिया परो गिलाणस्स सचित्ताणि वा कंदाणि वा मूलाणि वा तयाणि वा हरियाणि वा खणित्तु कड्ढित्तु वाकड्ढावित्तु वा तेइच्छं आउट्टाविज्ज नो तं सा० कडुवेयणा पाणभूयजीवसत्ता वेयण वेइंति, एयं खलु० समिए सया जए सेयमिणं मन्निज्जासि

(सू० १७३) त्तिबेमि ॥ छट्टओ सत्तिक्कओ ॥ २-२-६ ॥

ते साधुने बीजो कोइ माणस शुद्ध अथवा अशुद्ध वचनवळ ते मंत्र विगेरेथी रोग समावे (विंछु विगेरे उतारे) तो पोते सारु जाणे नहिं तथा बीजो मांदा साधुनी दवा माटे कंदमूळ विगेरे खोदीने खोदावीने लावीने दवा करे तो तेने सारुं न जाणे बनी शके तो दुःख भोगवतां आवी भावना भाववी के पूर्वे जीवे कर्म कर्यां छे अने तेनां फळ भोगवे छे माटे बीजा कंदमूळ विगेरेने दुःख दइने तथा बीजा प्राणीओने शरीर मन संबंधी पीडा आपीने पोते फरीथी दुःख भोगवशे, कारणके प्राणी भूत जीव सत्त्वो छे, ते हाल दरेक पोताना पूर्वे करेला कृत्यना विपाकने भोगवे छे कह्युं छे के

पुनरपि सहनीयो दुःखपाकस्तवायं न खलु भवति नाशः कर्मणां सञ्चितानाम् । इति सहगणयित्वा यद्यदायाति सम्यक्,
सदसदिति विवेकोऽन्यत्र भूयः कुतस्ते ? ॥ १ ॥

हे साधु! तारे आ दुःखनो विपाक सहेवो जोइए; कारणके पूर्वे करेला कर्मोनो संचय करेलो छे ते समजीने हवे पछी जे जे सुख दुःख आवे ते समभावे सहन कर, ए सिवाय बीजे तारो विवेक क्यांथी होय? आ प्रमाणे छट्ठाथी तेरमा सुधी सात अध्ययन समाप्त छे.

पूर्वे कह्या प्रमाणे बीजाए करेली क्रिया अनुमोदवी नहिं. तेम अहीं सातमा अध्ययनमां अन्य अन्य क्रिया पण करवानी निषेध करे छे. आ प्रमाणे छट्ठा सातमा अध्ययननो संबंध छे, नाम नि. निक्षेपामां अन्यो अन्य क्रिया एवुं नाम छे तेनी बाकी रहेली अडधी गाथाने निर्युक्तिकार कहे छे.

अन्ने छक्कं तं पुण तदन्नमाएसओ नेव ॥ ३२५ ॥

अन्यना छ प्रकारे निक्षेपा छे. नाम–स्थापना सुगम छे. द्रव्य अन्य निक्षेपामां पर शब्दमां जे खुलासो कर्यो छे तेम अहीं पण जाणवुं. अहीं परक्रिया के अन्य क्रिया कारण प्रसंगे गच्छवासीने करवी पडे तेमां जयणा राखवी, गच्छमांथी नीकळेलाने औषध विगेरे क्रियानुं प्रयोजन नथी, ते निर्युक्तिकार बतावे छे.

जयमाणस्स परो जं करेइ जयणाए नत्थ अहिगारो । निप्पडिकम्मस्स उ अन्नमन्नकरणं अजुत्तं तु ॥ ३२६ ॥

सत्तिक्काणं निज्जुत्ती समत्ता ॥

साधुए जयणाथी काम करवुं करावबुं रागद्वेष न करवा, पण जीनकल्पीने ते घटतुं नथी, तेओ दवा विगेरेथी, दूर छे, से भिक्खू वा २ अन्नमन्नकिरियं अज्झत्थियं संसेइयं नो तं सायए २ ॥ से अन्नमन्नं पाए आमज्जिज्ज वा० नो तं०, सेसं तं चेव, एयं खलु० जइज्जासि (सू० १७४) त्तिबेमि ॥ सप्तमम् ॥ २–२–७ ॥

अन्यो अन्य एटले परस्पर क्रिया ते साधुए मांहो मांहे पण खास कारण विना चोळवुं चांपवुं दाबवुं विगेरे न करवुं. जरुर पडे करतां राग द्वेष न करवो.

आप्रमाणे बीजी चूलिका समाप्त थइ.

भावना नामनी त्रीजी चूलिका.

बीजी कहीने हवे त्रीजी चूलिका कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, के आ आचारांग सूत्रनो विषय प्रथम वर्धमान स्वामिए कर्यो, ते उपकारी होवाथी तेनी वक्तव्यता खुलासाथी कहेवा तथा पंचमहाव्रत लीधेला साधुए पिंड शय्या विगेरे (संयम शरीर

रक्षार्थे) लेवा, ते बे चूलिकामां बताव्युं. तेज प्रमाणे महाव्रतोने बराबर पाळवा माटे भावना भाववी, ते आ त्रीजी चूलिकामां कहेशे. तेथी आवा संबंधे आवेली आ चूलिका (चूडा) ना चार अनुयोग द्वार कहेवा, तेमां उपक्रम द्वारमां रहेलो आ अर्थाधिकार छे, के अप्रशस्त भावना त्यागीने प्रशस्त भावना भाववी, नामनि-निक्षेपामां 'भावना' ए नाम छे, तेना नाम स्थापना विगेरे चार प्रकारनो निक्षेप छे, नाम स्थाप्ना सुगमने छोडी द्रव्यादि निक्षेपो निर्युक्तिकार कहे छे.

दव्वं गंधंगतिलाइएसु सीउण्हविसहणाईसु । भावंमि होइ दुविहा पसत्थ तह अप्पसत्था य ॥ ३२७ ॥

नो आगमथी, द्रव्य भावना व्यतिरिक्तमां जोइ वगेरेना फूलो विगेरे गंधवाळा द्रव्यथी जे तेल वगेरे द्रव्य (पदार्थ) मां जे वासना (सुगंधी) लावे, ते द्रव्य वासना छे, तथा शीतमां उछरेलो माणस शीत (ठंड) सहे, उष्ण देशमां उछरेलो ताप सहे, तथा कसरत करनारो अनेक कायकष्ट सहे, तेज प्रमाणे बीजा कोइ पण पदार्थ वडे अथवा पदार्थनी जे भावना (धर्म समज्या विनानी) होय ते द्रव्य भावना छे, अने भाव संबंधी जे प्रशस्त अ प्रशस्त भेद वडे बे प्रकारनी भावना छे, तेमां प्रथम अप्रशस्त कहे छे,

पाणिवहमुसावाए अदत्तमेहुणपरिग्गहे चेव । कोहे माणे माया लोभे य हवंति अपसत्था ॥ ३२८ ॥

जीवहिंसा जूठ चोरी मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया अने लोभ ए नव पापोमां प्रथम शंकाथी अने पछी वारंवार निष्ठुर थइने निःशंकपणे वर्त्ते, ते अप्रशस्त भावना कह्युं छे के:—

करोत्यादौ तावत्सघृणहृदयः किञ्चिदशुभं, द्वितीयं सापेक्षो विमृशति च कार्यं च कुरुते । तृतीयं निःशङ्को विगतघृणमन्यत्प्रकुरुते, ततः पापाभ्यासात्सततमशुभेषु प्ररमते ॥१॥

सुज्ञपुरुषो भव्यात्माओने बचाववा उपदेश आपे छे के जीवहिंसा विगेरे पापो बाळक बुद्धिना माणसो प्रथम डरीने छुपां करे छे. के रखेने मारी लोकमां निंदा थशे, पण त्यां कुटेव न छुटे तो पछी अपेक्षा विचारी कुयुक्ति लगाडीने जाहेर पाप करे छे, त्यार पछी निःशंक थइने लज्जा दयाने छोडी नवां नवां पाप करे छे, अने छेवटे पापना अभ्यासथी हमेशां पापमांज रमे छे.

प्रशस्त भावना.

दंसणनाणचरित्ते तववेरग्गे य होइ उ पसत्था । जा य जहा ता य तहा लक्खण वुच्छं सलक्खणओ ॥ ३२९ ॥

दर्शन ज्ञान चारित्र तप वैराग्य विगेरेमां जे प्रशस्त भावना होय छे, ते प्रत्यकने लक्षणथी कहीश.

दर्शन भावना.

तित्थगराण भगवओ पवयणपावयणिअइसइड्ढीणं । अभिगमणनमणदरिसणकित्तणसंपूअणाथुणणा ॥ ३३० ॥

तीर्थंकर प्रभु बार अंग (जैन सिद्धांत) जेनुं बीजुं नाम गणिपिटक (भगवंतना वचन रुप रत्नोने राखवानो पेटारो) तथा प्रावचनि ते गणधरो तथा महान् प्रभाविक आचार्यो युग प्रधानो तथा अतिशय ऋद्धिवाळा केवळज्ञानी मनःपर्यव तथा अवधिज्ञानी तथा चौंदपूर्वी तथा आमर्श औषधि लब्धिधारक मुनिओ विगेरेनुं बहु मान करवा सामे जइने दर्शन करवुं तेमना उत्तम गुणोने प्रशंसवा. सुगंधथी पूजन स्तोत्र वडे स्तवन करवुं, (आमां देव मनुष्यने जे उचित होय ते करवु)

आ प्रमाणे हमेशां करवाथी दर्शन शुद्धि थाय छे,

जम्माभिसेयनिक्खमणचरणनाणुप्पया य निव्वाणे । दियलोअभवणमंदरनंदीसरभोमनगरेसुं ॥ ३३१ ॥

अट्ठावयमुज्जिंते गयग्गपयग्गपयए य धम्मचक्के य । पासरहावत्तनगं चमरुप्पायं च वंदामि ॥ ३३२ ॥

तीर्थंकरोनी जन्मभूमि, दीक्षा लेवाना वरघोडामां, चारित्र लीधुं ते जग्या, तथा केवळ ज्ञान तथा निर्वाण भूमि, तथा देवलोकमां मेरु पर्वत, नंदीश्वर द्वीप विगेरे तथा पाताळनां भवनोमां जे शाश्वता जिनेश्वरनां बिंबो छे, तथा अष्टापद गिरनार दशाणर्णकूटमां तथा तक्षशिलामां धर्म चक्रना स्थानमां, तथा अहिछत्रा नगरीमां ज्यां धरणेंद्रे पार्श्वनाथ प्रभुनो महिमा कर्यो छे, तथा रथावर्त्त पर्वत ज्यां वज्र स्वामिए पादपोपगमन अणशण कर्युं छे, तथ ज्यां वर्धमान स्वामीने आश्रयी चमरेंद्रे उत्पतन कर्युं छे. आ बधा स्थानोमां जइने यथायोग्यपणे वंदन पूजन स्तवन ध्यान करवाथी दर्शन शुद्धि थाय छे.

गणियं निमित्त जुत्ती संदिट्ठी अवितहं इमं नाणं । इय एगंतमुवगया गुणपच्चइया इमे अत्था ॥ ३३३ ॥

गुणमाहप्पं इसिनामकित्तणं सुरनरिंदपूया य । पोराणचेइयाणि य इय एसा दंसणे होइ ॥ ३३४ ॥

जैन सिद्धांतने जाणनारा जे महान साधुपुरुषो छे. तेमनामां गुणने आश्रयी आ बाबतो छे, जेमके बीजगणित विगेरेमां कोइ पार पामेलो होय तथा ज्योतिषना आठे अंगमां प्रवीण होय तथा दृष्टिवाद नामना बारमां अंगमां बतावेल तमाम दर्शनोनी बतावेली जुदी जुदी युक्तिओने पोते जाणे अथवा द्रव्यना संयोगोने अथवा हेतुओने जाणे.

तथा सम्यग् ("अविपरीत") दृष्टि होय के जेथी देवताओथी पण पोते चलयमान् न थाय.

तथा अवितथ जेनुं ज्ञान होय आवा पवित्र आचार्य विगेरेना गुणोनी प्रशंसा करतां पोताना आत्मानी श्रद्धा निर्मळ थाय छे, तेज प्रमाणे कोइ पण गुणनुं वर्णन करतां ते पवित्र पुरुषना गुणो मळे छे, तथा मंदबुद्धिवाळाने तेवा गुणोनुं कीर्तन न थाय तो

तेवा पूर्व महर्षिनां नामो छेवाथी पण धर्ममां श्रद्धा थाय छे, अथवा तेवा पुरुषने सुरनरना स्वामिओए पूज्या ते कथा सांभळतां अथवा पुराणां चैत्योने पूजवाथी के तेवी बीजी क्रिया करवाथी तेओने गुणोनी वासना मळवाथी दर्शन शुद्धि थाय छे, ते दर्शननी प्रशस्त भावना छे.

ज्ञान भावना.

तत्तं जीवाजीवा नायव्वा जाणणा इहं दिट्ठा । इह कज्जकरणकारगसिद्धी इह बंधमुक्खो य ॥ ३३५ ॥
बद्धो य बंधहेउ बंधणबंधप्फलं सुकहियं तु । संसारपवंचोऽवि य इहयं कहिओ जिणवरेहिं ॥ ३३६ ॥
नाणं भविस्सइ एवमाइया वायणाइयाओ य । सज्झाए आउत्तो गुरुकुलवासो य इय नाणे ॥ ३३७ ॥

जीनेश्वरनुं वचन जेवी रीते पदार्थो छे तेवी रीते संपूर्ण पदार्थोनुं वर्णन करे छे, तेथी ते प्रवचन कहेवाय छे. अने ते ज्ञान भणवाथी मोक्षनुं प्रधान अंग सम्यकदर्शन प्रगट करे छे. कारण के तत्त्वोनुं स्वरुप जाणीने तेमां श्रद्धा करवी तेज सम्यग दर्शन छे. जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, संवर बंध, निर्जरा अने मोक्ष ए नव तत्त्वो छे, ते नव पदार्थोने नवतत्त्व ज्ञानना अर्थीए बरोबर जाणवा जोइए अने ते जाणवानुं साधन जिनेश्वरना वचनमांज छे.

वळी आ जिनवचनमांज परमार्थ रुप छेवटनुं कार्य मोक्ष छे ते मोक्ष मेळववानी क्रिया करवामां महान उपकारक सम्यगदर्शन ज्ञान—चारित्र मुख्यपणे छे,

कारक (क्रिया करनारो) साधु सम्यग दर्शन विगेरेनुं अनुष्ठान बरोबर करनार छे अने ते प्रमाणे क्रिया करवाथी आज जैन दर्शनमां छेवटे मोक्षनी प्राप्ति छे तेज क्रियासिद्धि जाणवी तेने बतावे छे.

प्रथम कर्मबंधननुं स्वरूप जाणवुं अने तेमां विरक्त थवुं तेथी कर्मक्षय थतां मोक्ष प्राप्ति थाय, आवी क्रिया बौद्ध विगेरे दर्शनमां न होवाथी मोक्षनी क्रियासिद्धि पण अशक्य छे.

आ प्रमाणे प्रथम ज्ञान भणवाथी अने ते प्रमाणे वर्त्तवाथी ज्ञान भावना थाय छे तथा आठ प्रकारना कर्मना पुद्गलोथी जीव दरेक प्रदेशे बंधाएलो छे, तथा मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय अने योगो कर्म बंधनना हेतुओ छे अने आठ प्रकारना कर्मवर्गणानुं रुप पूर्वे कह्या प्रमाणे बंधन छे अने ते उदय आवतां एनुं फळ चार गतिवाळा संसारमां भ्रमण करीने सुख दुःखने भोगववानु छे. आ बधुं जिनवचमांज कहेलुं छे.

अथवा दुनियामां जे कंइ सुभाषित हितकारक वचन छे ते अहीं प्रवचनमां कहेलुं छे ते ज्ञानभावना छे. वळी आ जिनवचनमां आ संसारनुं जे विचित्र स्वरुप छे ते विस्तारथी कह्युं छे.

तथा हुं निर्मळ भावे भणीश तो मारुं ज्ञान वधारे निर्मळ थशे एवी ज्ञानभावना भाववी अर्थात् रोज रोज नवुं नवुं ज्ञान संपादन करवुं, आदि शब्दथी एकाग्रचित्त विगेरे गुणो आ ज्ञानथी थाय छे. वळी अज्ञानी जे कर्म करोडो वरसे खपावे छे तेने ज्ञानी एक श्वासोश्वासमां खपावे छे.

आवां कारणोथी ज्ञान भणवुं, एटले ज्ञाननो संग्रह थाय. कर्मनी निर्जरा थाय भूली न जवाय अने स्वाध्याय करतां चित्तमां आनंद रहे आ कारणोथी ज्ञानभावना वडे दरेक साधुने गुरुकुळवास थाय छे ते बतावनारी गाथा कहे छे.

" णाणस्स होइ भागी थिरयरओ दंसणे चरित्ते य। धन्ना आवकहाए गुरुकुलवासं न मुञ्चन्ति ॥ १ ॥ "

ज्ञाननो भागी थाय, श्रद्धा अने चारीत्रमां स्थिर चित्तवाळो थाय, आवां कारणोथी जेओ गुरुकुळवास नथी मुक्ता, तेवा पुरुषोने धन्य छे. आवी ज्ञाननी भावना जाणवी. हवे चारित्रनी भावना कहे छे.

साहुमहिंसाधम्मो सच्चमदत्तविरई य बंभ च । साहु परिग्गहविरई साहु तवो बारसंगो य ॥ ३३८ ॥

वेरग्गमप्पमाओ एगत्ता (ग्गे) भावणा य परिसंगं । इय चरणमणुगयाओ भणिया इत्तो तवो वुच्छं ॥ ३३९ ॥

अहिंसादि लक्षणवाळो जैनधर्म श्रेष्ट छे. आ पहेला व्रतनी भावना छे तथा आ जिनेश्वर वचनमां निर्मळ सत्य छे तेवुं बीजे नथी. आ बीजा महाव्रतनी भावना छे, त्रीजा व्रतनी भावनामां अहीं पारको माल न लेवानुं बरोबर बताव्युं छे, चोथा महाव्रतनी भावनामां ब्रह्मचर्यनी नववाडो पाळवानुं अहीं बताव्युं छे, पांचमां महाव्रतनी भावनामां जरुरनां उपकरण सिवाय परिग्रहनुं त्यागपणुं सर्वोत्तम जिन वचनमां बताव्युं छे

बार प्रकारनो तप पण अहीं इंद्रियोना विजय माटे तथा कर्मो खपाववा माटे अहीं बताव्यो छे.

वैराग्य भावनामां संसारनां देखीतां सुखो परिणामे तथा अंतरदृष्टिए जोतां दुःखरुप छे माटे विष्टा समान जाणीने दूरथी त्यागवा योग्य छे एम भाववुं.

अप्रमाद भावनामां जाणवुं के जे जीवो दारु विगेरेना कुव्यसनमां के क्रोधादि करीने के इंद्रियोने वश थइ केवां दुःख भोगवे छे ते विचारी पांचे प्रमादोने छोडवानुं अहीं छे. एकाग्रभावनामां आ गाथा विचारवी.

" एको मे सासओ अप्पा, णाणदंसणसंजुओ । सेसा मे बहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ १. ॥ "

जे कोइ संसारी जीव के साधु देखीता मनोहर विषयोथी मुंझाइने विह्वलथाय अथवा तेवा सुंदर विषयोना वियोगमां घेलो थाय तेवा पुरुषने चित्तामां अपूर्व शान्ति प्राप्त करवा आ उपदेश छे के तुं तारा हृदयमां आ प्रमाणे विचार, के मारो आत्मा निरंतर रहेनारा जन्म मरणथी मुक्त ज्ञान दर्शनना लक्षणवाळो छे, बाकीनुं जे कंइ शरीर विगेरे चलायमान देखाय छे ते कर्मना संयोगथी मने मळेलुं छे, हुं तेनाथी जुदो छुं मारुं स्वरूप चेतन छे अने शरीर विगेरे जड छे. (आ निश्चय नयनी भावना जाणवी.)

आ भावनाओ रुपिओनुं अंग छे अने चारित्रने आश्रयी (टेको आपनार) छे.

(हवे तपनी भावना कहे छे.)

किह मे हविज्जऽवंझो दिवसो ? किं वा पहू तवं काउं ?। को इह दव्वे जोगो खित्ते काले समयभावे ? ॥ ३४० ॥

साधुए निर्मळ चारित्र पाळवा हंमेशां चितवनकरवुं के विगइओ विगेरे त्यागीने मारो दिवस हंमेशां क्यारे सफळ थशे ? तथा हुं क्यो तप करवाने शक्तिवान छु ? तथा क्या द्रव्य विगेरेमां मारो निर्वाह थशे ? आवुं चिंतववु, तेमां बने त्यांसुधी साधुए द्रव्यमां उत्सर्गथी वाल चणा विगेरे वापरवा, क्षेत्रमां ज्यां घी दुध मळे के लुखा रोटला मळे तो पण संतोषथी विहार करवो, काळमां ठंडीमां के उनाळामां विहार करवो तथा भवमां हुं साजो होवाथी आ तप करवाने शक्तिवान छुं आवी रीते द्रव्य क्षेत्र काळ भावथी विचारी यथाशक्ति उपकरण विगेरे जोइतांज राखीने परिसहो सहेवा तप करवो. तत्त्वार्थसूत्रना छट्ठा अध्यायमां २३ मा सूत्रमां कह्युं छे के यथाशक्ति त्याग अने तप करवो.

उच्छाहपालणाए इति (एव) तवे संजमे य संघयणे । वेरग्गेऽणिच्चाई होइ चरित्ते इहं पगयं ॥ ३४१ ॥

तथा अणसर विगेरे तपस्यामां पोतानुं बळ अने वीर्य न गोपवतां उत्साह राखवो अने लीधेला तपने पुरो पाळवो.

" तित्थयरो चउनाणी सुरमहिओ सिज्झिअव्वयधुवम्मि । अणिगूहिअबलविरिओ सव्वत्थामेसु उज्जमइ ॥ १ ॥

किं पुण अवसेसेहिं दुक्खक्खयकारणा सुविहिएहिं । होइ न उज्जमिअव्वं सपच्चवायंमि माणुस्से ? ॥ २ ॥"

तीर्थंकर दिक्षा लेतांज चार ज्ञानी थाय छे, देवता पूजे छे, निश्चेमोक्षमां जवाना छे, आटलुं छतां पण पोतानुं घातीकर्म खपाववा बळ वीर्यने न गोपावतां अघोर तपश्चर्या करे छे. तो ते सिवायना बीजा सारा साधुओ दुःखनो क्षय करवा अने मनुष्य जीवन अनेक विघ्नोवाळुं छे तो तेमणे शामाटे पुरो उद्यम न करवो जोइए ? आवी तपनी भावना भाववी, संयम भावना इंद्रियो अने मनने वश राखवा माटे छे तथा संघयण ते वज्र रुषभ विगेरेमां तपनो निर्वाह थइ शके तेवी भावना भाववी.

आ प्रमाणे बार भावनाओ भाववाथी आत्म निर्मळ थाय छे, एम भावनानुं स्वरुप अनेक प्रकारे थाय छे ते शि योने जाणवा माटे लख्युं छे. पण चालु वातमां तो चारित्र भावना साथे प्रयोजन छे, माटे वीर प्रभुनुं चरित्र निर्युक्तिनो अनुगम कहीने सूत्रनुं उच्चारण करतां कहे छे.

महावीर प्रभुनुं चरित्र.

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे यावि हुत्था, तंजहा—हत्थुत्तराइं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहिरए हत्थुत्तराहिं जाए हत्थुत्तराहिं मुंडे भविता आगाराओ अणगारियं पव्वइए हत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुन्ने अव्वाघाए निरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने, साइणा भगवं परिन्वुए (सू० १७५)

ते काळ ते समय एटले विक्रम संवतना ४७० वरस पहेलां महावीर प्रभुनो जन्म थयो एवी हालनी गणतरी छे अने नव

महिना अने साडासात दिवस पहेलां महावीर स्वामि माताना उदरमां आव्या हता तेने जैनमतमां प्रभुनुं च्यवन थयुं विगेरे बावतो कहे छे.

जैनोमां दरेक तीर्थंकरनां पांच कल्याणक छे एटले च्यवन जन्म दिक्षा केवळज्ञान अने मोक्ष छे महावीर प्रभुने एक माताना गर्भमांथी बीजी माताना गर्भमां मुक्या तेने गर्भापहार कहे छे टुंकाणमां समजाववा प्रथम चद्रनक्षत्र कहे छे.

महावीर प्रभुने च्यवन गर्भापहार जन्म दिक्षा केवळज्ञान ए उत्तराफाल्गुनीमां थयां छे अने भगवानना मोक्ष स्वाति नक्षत्रमां थयो छे. ते विस्तारथी पछीना सूत्रमां छे.

समजे भगवं महावीरे इमाए ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए वीइक्कंताए समाए वीइक्कंताए सुसमदुस्समाए समाए वीइक्कंताए दूसमसुसम.ए समाए वहु विइक्कंताए पन्नहत्तरीए वासेहिं मासेहिं व अद्धनवमेहिं सेसेहिं जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे आसाढसुद्धे तस्स णं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेण हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं महाविजयसिद्धत्थपुप्फुत्तरवरपुंडरीयदिसासोवत्थियवद्धमाणाओ महाविमाणाओ वीसं सागरोवमाइं आउयं पालइत्ता आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं चुए चइत्ता इह खलु जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे दाहिणमाहकुंडपुरसंनिवेसंमि उसभदत्तस्स महाणस्स कोडालसगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरस्स गुत्ताए सीहुब्भवभूएणं अप्पाणेण कुच्छिसि गब्भं वक्कंते; समणे, भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए या वि हुत्था, चइस्सामित्ति जाणइ चुएमित्ति जाणइ चयमाणे न याणेइ, सुहुमे णं से काले पन्नत्ते तओ णं समणे भगवं महावीरे हियाणुकंपएणं देवेणं जीयमेयतिकट्टु जे से वासाणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे आसोयबहुले तस्स णं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं वासोहि

राइंदिएहिं वइक्कंतेहिं तेसीइमस्स राइंदियस्स परियाए वट्टमाणे दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेसाओ उत्तरखत्तियकुंडपुरसंनिवेसंसि नायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगुत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसगुत्ताए असुभाणं पुग्गलाणं अवहारं करित्ता सुभाणं पुग्गलाणं पक्खेवं करित्ता कुच्छिंसि गब्भं साहरइ, जेवि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भे तंपि य दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेसंसि उस० को० देवा० जालंधरायणगुत्ताए कुच्छिंसि गब्भं साहरइ, समणे भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए यावि होत्था—साहरिज्जिस्सामित्ति जाणइ साहरिज्जमाणे न याणइ साहरिएमित्ति जाणइ समणाउसो ! । तेणं कालेणं तेणं समएणं तिसलाए खत्तियाणीए अहऽन्नया कयाई नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीइक्कंताणं जे से गिम्हाण पढमे मासे दुच्चे पक्खे चित्तसुद्धे तस्स णं चित्तसुद्धस्स तेरसीपक्खेणं हत्थु० जोग० समणं भगवं महावीरं अरोग्गा अरोग्गं पसूया । जण्णं राइं तिसलाख० समणं० महावीरं अरोया अरोयं पसूयात ण्णं राइं भवणवइवाणमंतरजोइसियविमाणवासिदेवेहिं देवीहि य उवयंतेहिं उप्पयंतेहि य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देवसन्निवाए देवकहक्कहए अप्पिजलगभूए यावि हुत्था । जण्णं रयणिं० तिसलाख० समणं० पसूया तण्णं रयणिं बहवे देवा य देवीओ य एगं महं अमयवासं च १ गंधवासं च २ चुन्नवासं च ३ पुप्फवा० ४ हिरन्नवासं च ५ रयणवासं च ६ वासिंसु, जण्णं रयणिं तिसलाख० समण० पसूया तण्णं रयणिं भवणवइवाणमंतरजोइसियविमाणवासिणो देवा य य देवीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स सूइकम्माइं तित्थयराभिसेयं च करिंसु, जओ णं पभिइ भगवं महावीरे तिसलाए ख० कुच्छिंसि गब्भं आगए तओ ण पभिइ त कुलं विपुलेणं हिरन्नेणं सुवन्नेणं धन्नेणं माणिक्केणं मुत्तिएणं संखसिलप्पवालेणं अईव २

परिवड्ढइ; तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमट्ठं जाणित्ता निव्वत्तदसाहंसि वुक्कंतंसि सुइभूयंसि
विपुलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडाविंति २ त्ता मित्तनाइसयणसंबंधिवग्गं उवनिमंतंति मित्त० उवनिमंतित्ता बहवे
समणमाहणकिवणवणीमगाहिं भिच्छुंडगपंडरगाईण विच्छड्डंति विग्गोविंति विस्साणिंति दायारेसु पज्जभाइंति विच्छ-
ड्डित्ता विग्गो० विसाणित्ता दाया० पज्जभाइत्ता मित्तनाइ० भुंजाविंति मित्त० भुंजावित्ता मित्त० वग्गेण इममेयारूवं नाम-
धिज्जं कारविंति=जओ णं पभिइ इमे कुमारे ति० ख० कुच्छिंसि गब्भे आहूए तओ णं पभिइ इमं कुलं विपुलेणं हिरन्नेण०
संखसिलप्पवालेण अतीव २ परिवड्ढइ ता होउ णं कुमारे वद्धमाणे, तओ णं समणे भगवं महावीरे पंचधाइपरिवुडे, तं-
खीरधाईए १ मज्जणधाईए २ मंडणधाईए ३ खेलावणधाइए ४ अंकधा० ५ अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणे रम्मे मणिकुट्टि-
मतले गिरिकंदरसमुल्लीणेविव चंपयपायवे अहाणुपुव्वीए संवड्ढइ, तओ णं समणे भगवं० विन्नायपरिणय (मित्ते)
विणियबालभावे अप्पुस्सुयाइं उरालाइं माणुसगाइं पंचलक्खणाइं कामभोगाइं सद्दफरिसरसरूवगंधाइं परियारेमाणे
एवं च णं विहरइ ॥ (सू० १७६)

श्रमण भगवान महावीर आ अवसर्पिणीना चोथा आराने छेडे पंचोतेर वरसने साडाआठ महिना बाकी रहे छे, ते ग्रीष्मरुतुना
चोथे महिने आठमे पखवाडीए अषाढ शुद छठने दिवसे महाविजय सिद्धार्थ पुष्पोत्तर वर पुंडरिकदिशा सौवस्तिक वर्धमान नामना
महाविमानमांथी देवता संबंधी वीस सागरोपमनुं आयु पुरुं करीने भव तथा स्थितिनो क्षय थतां चवीने आ जंबूद्वीपना भरत
क्षेत्रना दक्षिण अर्धभरतमां दक्षिण ब्राह्मणकुंडस्थानमां कोडालगोत्री रुषभदत्त ब्राह्मणना घरमां जालंधर गोत्रनी देवानंदा ब्राह्मणीनी

कुखमां सिंहना बच्चानी माफक अवतर्या. ते समये श्रमण भगवान महावीर त्रण ज्ञान सहित हता तेथी देवलोकमां जाण्युं के हुं
च्यवीश गर्भमां अवतर्या पछी जाणे के हुं चव्यो, पण चववानो काळ थोडो होवाथी तेनुं ज्ञान थतुं नथी के हुं चवुं छुं.

त्यार पछी महावीर प्रभुने खरी भक्तिथी देवताए पोताना हंमेशना आचार प्रमाणे ८२ दिवस थया पछी आसो (गुजराती
भादरवो) तेरसना ते ब्राह्मणीना कुख मांथी त्यांथी थोडे दूर आवेला क्षत्रियकुंड नगरमां ज्ञातवंशीय काश्यप गोत्रना सिद्धार्थ
क्षत्रिय राजानी भार्या वाशिष्ट गोत्रनी त्रिशला क्षत्रियाणीनी कुखमां अशुभ पुद्गलो दूर करीने शुभ पुद्गलो मुकीने भगवानने आ
गर्भमां मुक्या अने त्रिशला क्षत्रियाणीनो गर्भ देवानंदानी कुखमां मुक्यो.

प्रभुने ज्यारे एक गर्भमांथी बीजे मुकवाना हता त्यारे त्रण ज्ञानवाळा होवाथी पोते जाणे के मने लइ जशे तेम लइ जतां न
जाणे के लइ जाय छे. अने त्यां लइ गया पछी मुके ते पण जाणे के मने मुक्यो. (अवधि ज्ञानीने आज जणाय छे. के आ
प्रमाणे अमुक देवता करे छे, करशे के कर्युं.) वळी गणधरो पोताना शिष्योने कहे छे, हे आयुष्यमन् श्रमण! ते काळ ते समयने
विषे ९ मास ने साडासात दिवसनी बंने गर्भ स्थानमां गर्भ स्थिति पुरी करीने ग्रीष्मऋतुमा पहेलो मास बीजुं पखवाडीयुं चैत्र शुद
१३ ना दिवसे निरोगी त्रिशला माताए निरोगी पुत्र श्रमण भगवान् महावीरने जन्म आप्यो.

प्रभुना जन्म समये मधरात पछी भुवनपति वानव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक देवदेवीओना आववाथी आकाशमां एक महान्
द्रव्य प्रकाश अने कोलाहळ थयो.

अने ते समये देवदेवीओए आवीने सुगंधी जळ, सुगंधी वस्तु, चुर्ण फुल सोनारुपानी अने रत्ननी वृष्टि करी.

जे रात्रीए भगवान जन्म्या ते समये देवदेवीए महावीर प्रभुनुं जन्म संबंधी सूतिकर्म विगेरे कर्युं अने मेरु पर्वत उपर प्रभुने लइ जइने जन्माभिषेक कर्यो.

वळी प्रभु माताना गर्भमां हता ते समये प्रभुना पुन्योदयथी देवताए तेमना मातापिताना घरमां नवारसीयुं धन लावीने नाख्युं तथा बीजी दरेक रीते मातपितानुं धन, सोनुं चांदी रत्न शंख माणेक मोती परवाळां बधी रीते वध्यां तेथी पूर्वे करेला विचार प्रमाते पुत्र जन्मनुं दस दिवसनुं सूति कार्य कर्या पछी बारमे दिवसे चार प्रकारनो आहार तैयार करावीने मित्र ज्ञाति स्वजन तथा संबंधी वर्गने बोलावीने तथा श्रमण ब्राह्मण भिक्षुक विगेरेने तथा आंधळां पांगळां विगेरे दरदीओने बोलावी तेमने इच्छित आपीने मन संतुष्ट करीने मातापिता ए बधांनी समक्ष पोताना पुत्रनुं नाम तेना गुण प्रमाणे एटले आ पुत्र वृद्धि करनार छे एवुं अनुभवेलुं अने विचार करी राख्या प्रमाणे जाहेर करीने वर्धमान राख्युं, त्यार पछी महावीर प्रभु माटे दुध धवरावनार स्नान करावनार शणगार करावनार खेलावनार खोळामां बेसाडनार एवी पांच धात्रमाताओ राखी अने ए पांच माताओ उपरात तेमना पुन्योदयथी मनोहर शान्त मुद्रावाळा प्रभुने जोइने प्रसन्न थइने अनेक स्त्रीओ पोताना खोळामां रमाडवा लेती आ प्रमाणे लोकोने आनंद पमाडता मणीरत्नोथी विभूषित घरमां जेम पर्वतनी गुफामां चंपकनुं झाड उछरे तेम मोटा थाय.

प्रभुनी युवावस्था.

धीरे धीरे बाळ अवस्था दूर थतां विशेष ज्ञान पामीने अनुभववाळा प्रभु उत्सुकता छोडीने मनुष्य संबंधी पांचे इंद्रियोनां सुंदर कामभोगने भोगवतां शब्द स्पर्श रस रुप गंध विगेरेने अनुभवे छे अने काळ सुखे निर्गमन करे छे.

समणे भगवं महावीरे कासवगुत्ते तस्स णं इमे तिन्नि नामधिज्जा एवमाहिज्जंति; तंजहा—अम्मापिउसंति वद्धमाणे १ सहसमुइए समणे २ भीमं भयभेरवं उरालं अवेलयं परीसह—सहत्तिकट्टु देवेहिं से नामं कायं समणे भगवं महावीरे ३, समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पिया कासवगुत्तेणं तस्स णं तिन्नि नाम० तं०—सिद्धत्थे इ वा सिज्जंसे इ वा जसंसे इ वा, समणस्स णं० अम्मा वासिट्ठस्सगुत्ता तीसे णं तिन्नि ना० तं०—तिसला इ वा विदेहदिन्ना इ वा पियकारिणि इ वा समणस्स णं भ० पित्तिअए सुपासे कासवगुत्तेणं, समण० जिट्ठे भाया नंदिवद्धणे कासवगुत्तेणं, समणस्स णं जेट्ठा भइणी सुदंसणा कासवगुत्तेणं, समणस्स णं भग० भज्जा जसोया कोडिन्नागुत्तेणं, समणस्स णं० धूया कासवगो त्तेणं तीसे णं दो नामधिज्जा एवमा०—अणुज्जा इ वा पियदंसणा इ वा, समणस्स णं भ० नत्तूइ कोसीया गुत्तेणं तीसे णं दो नाम० तं—सेसवई इ वा जसवई इ वा, (मू० १७७)

प्रभुना अने तेमना कुटुंबना नामो.

काश्यप गोत्रीय प्रभुनुं मातापिताए वर्धमान नाम पाड्युं, स्वभावीक गुणोथी श्रमण नाम पाड्युं अने भयंकर भूत विगेरेना तथा बीजा देव मनुष्योना बधाए परिसहो सह्या माटे देवोए श्रमण भगवान महावीर एवुं नाम पाड्युं.

भगवान महावीरना पिता काश्यप गोत्रना तेमनां त्रण नाम हतां—सिद्धार्थ, श्रेयांस, यशस्वी.

भगवानना माता वशिष्ट गोत्रनी; तेना त्रण नाम छे, त्रिशला, विदेहदिन्ना प्रियकारिणि.

भगवानना काका सुपार्श्व. मोटा भाइ नंदिवर्धन, मोटी बेहेन सुदर्शना ए बधा काश्यप गोत्रीय हता. भगवाननी भार्या यशोदा

कौडिन्य गोत्रनी हती. भगवाननी पुत्री काश्यप—गोत्रीनी तेना बे नाम छे—अनवद्या, प्रियदर्शना. भगवाननी दौहित्री कौशिक गोत्रनी तेना बे नाम—शेषवती, यशोमती.

समणस्स णं० ३ अम्मापियरो पासवच्चिज्जा समणोवासगा यावि हुत्था, ते णं बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पालइत्ता छण्हं जीवनिकायाण सारक्खणनिमित्तं आलोइत्ता निंदित्ता गरिहित्ता पडिक्कमित्ता अहारिहं उत्तरगुणपायच्छित्ताइं पडिवज्जित्ता कुससंथारगं वा दुरूहित्ता भत्तं पच्चक्खायंति २ अपच्छिमाए मारणंतियाए संलेहणासरीरए झुसियसरीरा कालमासे कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहित्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ना, तओ णं आउक्खएण भव० ठि० चुए चइत्ता महाविदेहे वासे चरमेणं उस्सासेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिसंति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सति (सू० १७८)

भगवानना मा बाप पार्श्व परंपराना श्रमणोना उपासक हता, तेओ घणां वर्ष श्रमणोपासकपणुं पाळी छ कायना जीवनी रक्षणार्थे (पापनी) आलोचना करी निंदी गर्ही पडिकमी यथायोग्य प्रायश्चित लइ दर्भ संस्तारक उपर बेसी भक्त प्रत्याख्यान करी छेल्ली मरण पर्यंतना शरीर—संलेखना वडे शरीर शोषी काल समये काल करी ते शरीर छोडी अच्युत कल्पमां देवपणे उत्पन्न थयां. त्यांथी आयु क्षय थतां चवीनेमहाविदेह क्षेत्रमां छेल्ले ऊसासे सिद्धबुद्ध मुक्त थइ निर्वाण पामी सर्व दुःखनो अंत करशे.

तेणं कालेणं २ समणे भ० नाए नायपुत्ते नायकुलनिव्वत्ते विदेहे विदेहजच्चे विदेहसूमाले तीसं वासाइं विदेहंसित्तिकट्टु अगारमज्झे वसित्ता अम्मापिऊहिं कालगएहिं देवलोगमणुपत्तेहिं समत्तपइन्ने चिच्चा हिरन्नं चिच्चा सुवन्नं चिच्चा बलं चिच्चा वाहणं चिच्चा धणकणगरयणसंतसारसावइज्जं विच्छड्डित्ता विग्गोवित्ता विसाणित्ता दायारेसु णं दाइत्ता परिभाइत्ता संवच्छरं

दुलइत्ता जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे मग्गसिरबहुले तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं हत्थुत्तरा० जोग० अभिनिक्खमणाभिप्पाए यावि हुत्था, संवच्छरेण होहिइ अभिनिक्खमणं तु जिणवरिंदस्स । तो अत्थसंपयाणं पवत्तई पुव्वसूराओ ॥१॥ एगा हिरन्नकोडी अट्ठेव अणूणगा सयसहस्सा । सूरोदयमाईयं दिज्जइ जा पायरासुत्ति ॥ २ ॥ तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीइं च हुंति कोडीओ । असिइं च सयसहस्सा एयं संवच्छरे दिन्नं ॥ ३ वेसमणकुंडधारी देवा लोगंतिया महिड्ढिया । बोहिंति य तित्थयरं पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ ४ ॥ बंभंमि य कप्पंमी बोद्धव्वा कण्हराइणो मज्झे । लोगंतिया विमाणा अट्ठसु वत्था असंखिज्जा ॥ ५ ॥ एए देवनिकाया भगवं बोहिंति जिणवरं वीरं । सव्वजगज्जीवहियं अरिहं ! तित्थं पवत्तेहि ॥ ६ ॥ तओ णं समणस्स भ० म० अभिनिक्खमणाभिप्पायं जाणित्ता भवणवइवा० जो० विमाणवासिणो देवा य देवीओ य सएहि २ रूवेहिं सएहिं २ नेवत्थेहिं सए० २ चिंधेहिं सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलसमुदएणं सयाइं २ जाणविमाणाइं दुरुहंति सया० दुरूहित्ता अहाबायराइं पुग्गलाइं परिसाडंति २ अहासुहमाइं पुग्गलाइं परियाइंति २ उड्ढं उप्पयंति उड्ढं उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगईए अहे णं ओवयमाणा २ तिरिएणं असंखिज्जाइंदीवसमुद्दाइं वीइक्कममाणा २ जेणेव जंबुद्दीवे दीवे तेणेव उवागच्छंति, २ जेणेव उत्तरखत्तिय कुंडपुरसंनिवेसे तेणेव उवागच्छंति उत्तरखत्तियकुंडपुरसंनिवेसस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए तेणेव झत्ति वेगेण ओवइया, तओ णं सक्के देविंदे देवराया सणियं २ जाणविमाणं पट्ठवेति सणियं २ जाणविमाणं पट्ठवेत्ता सणिय २ जाणविमाणाओ पच्चोरुहइ सणियं २ एगंतमवक्कमइ एगंतमवक्कमित्ता महया वेउव्विएणं समुग्घाएण समोहणइ २ एगं महं नाणामणिकणग-

रयणभत्तिचित्तं सुभं चारु कंतरूवं देवच्छंदयं विउव्वइ, तस्स णं देवच्छंदयस्स बहुमज्झदेसभाए एगं महं सपायपीठं नाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं सीहासणं विउव्वइ, २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पायाहिणं करेइ २ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ समणं भगवं महावीरं गहाय जेणेव देवच्छंदइ, तेणेव उवागच्छइ सणियं २ पुरत्थाभिमुहं सीहासणे निसीयावेइ सणियं २ निसीयावित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिंअभंगेइ गंधकासाईएहिं उल्लोलेइ २ सुद्धोदएण मज्जावेइ २ जस्स णं मुल्लं सयसहस्सेणं तिपडोलतित्तिएणं साहिएणं सीतेण गोसीसरत्तचंदणेणं अणुलिंपइ २ ईसिं निस्सासवायवोज्झं वरनयरपट्टणुग्गयं कुसलनरपसंसियं अस्सलालापेलवं छेयारियकणगखइयंतकम्मं हंसलक्खणं पट्टजुयलं नियंसावेइ २ हारं अद्धहारं उरत्थं नेवत्थं एगावलि पालंबसुत्तं पट्टमउडरयणमालाउ आविंधावेइ आविंधावित्ता गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणं मल्लेणं कप्परुक्खमिव समलंकरेइ २ त्ता दुच्चंपि महया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ २ एगं महं चंदप्पहं सिवियं सहस्सवाहणियं विउव्वति, तंजहा—ईहामिगउसभतुरनरमकरविहगवानरकुंजररुरुसरभचमरसदूलसीहवणलयभत्तिचित्तलयविज्जाहरमिहुणजुयलजंतजोगजुत्तं अच्चीमहस्समालिणीयं सुनिरूविय मिसिमिसिंतरूवगसहस्सकलिय ईसिं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं मुत्ताहलमुत्ताजालंतरोवियं तवणीयपवरलंबूसपलंबंतमुत्तदामं हारद्धहारभूसणसमोणयं अहियपिच्छणिज्जं पउमलयभत्तिचित्तं असोगलयभत्तिचित्तं कुंदलयभत्तिचित्तं नाणालयभत्ति० विरइयं सुभं चारुकंतरूवं नाणामणिपंचवन्नघंटापडायपडिमंडियग्गसिहरं पासाइयं दरिसणिज्जं सुरूवं—सीया उवणीया जिणवरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स। ओसत्तमल्लदामा जलथलयदिव्वकुसुमेहिं

॥ १ ॥ सिबियाइ मज्झयारे दिव्वं वररयणरूवचिंचइयं । सीहासणं महरिहं सपायपीढं जिणवरस्स ॥ २ ॥ आलइय मालमउडो भासुरबुंदी वराभरणधारी । खोमियवत्थ नियत्थो जस्स य मुल्लं सयसहस्सं ॥ ३ ॥ छट्ठेण उ भत्तेणं अज्झवसाणेण सुंदरेण जिणो । लेसाहिं विसुज्झंतो आरुहई उत्तमं सीयं ॥ ४ ॥ सीहासणे निविट्ठो सक्कीसाणा य दोहि पासेहिं । वीयंति चामराहिं मणिरयणविचित्तदंडाहिं ॥ ५ ॥ पुव्विं उक्खित्ता माणुसेहिं साहट्टु रोमकूवेहिं । पच्छा वहंति देवा सुरअसुरा गरुलनागिंदा ॥ ६ ॥ पुरओ सुरा वहंती असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि । अवरे वहंति गरुला नागा पुण उत्तरे पासे ॥ ७ ॥ वणसंडं व कुसुमियं पउमसरो वा जहा सरयकाले सोहइ कुसुमभरेणं इय गगणयलं सुरगणेहिं ॥ ८ ॥ सिद्धत्थवणं व जहा कणयारवणं व चंपयवणं वा । सोहइ कु० ॥ ९ ॥ वरपडहभेरिझल्लरिसंखसयसहस्सिएहिं तूरेहिं । गयणयले धरणियले तूरनिनाओ परमरम्मो ॥ १० ॥ ततविततं घणझुसिरं आउज्जं चउव्विहं बहुविहीयं वाइंति तत्थ देवा बहूहिं आनट्टगसएहिं ॥ ११ ॥ तेण कालेणं तेणं समएणं जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे मग्गसिरबहुले तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं हत्थुत्तरानक्खत्तेणं जोगोवगएणं पाईणगामिणीए छायाए बिइयाए पोरिसीए छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं एगसाडगमायाए चंदप्पभाए सिबियाए सहस्सवाहिणियाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणिज्जमाणे उत्तरखत्तियकुंडपुरसंनिवेसस्स मज्झंमज्झेणं निगच्छइ २ जेणेव नायसंडे उज्जाणे तेणे व उवागच्छइ २ ईसिं रयणिप्पमाणं अच्छोप्पेणं भूमिभाएणं सणियं २ चंदप्पभं सिबियं सहस्सवाहिणिं ठवेइ २ सणियं २ चंदप्पभाओ सीयाओ सहस्सवाहिणिओ पच्चोयरइ २ सणियं २ पुरत्थाभिमुहे सीहासणे निसीयइ आभरणालंकारं

ओमुअइ, तओ णं वेसमणे देवे भत्तुव्वायपडिओ भगवओ महावीरस्स हंसलक्खणेणं पडेणं आभरणालंकारं पडिच्छइ, तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, तओ णं सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स जन्नुवायपडिए वइरामएणं थालेण केसाइं पडिच्छइ २ अणुजाणेसि भंतेत्तिकट्टु खीरोयसागरं साहरइ, तओ णं समणे जाव लोयंकरित्ता सिद्धाणं नमुक्कारं करेइ २ सव्वं मे अकरणिज्जं पावकम्मंतिकट्टु सामाइयं चरित्तं पडिवज्जइ २ देवपरिसं च मणुयपरिसं च आलिक्खचित्तभूयमिव ठवेइ—दिव्वो मणुस्सघोसो तुरियनिनाओ य सक्कवयणेणं। खिप्पामेव निलुक्को जाहे पडिवज्जइ चरित्तं ॥ १ ॥ पडिवज्जित्तु चरित्तं अहोनिसं सव्वपाणभूयहियं। साहट्टु लोमपुलाया सव्वे देवा निसामिंति ॥ २ ॥ तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं खओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवनाणे नामं नाणे समुप्पन्ने अड्ढाइज्जेहिं दीवेहिं दोहि य समुद्देहिं सन्नीणं पंचिंदियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं मणोगयाइं भावाइं जाणेइ। तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइए समाणे मित्तनाइ सयणसंबंधिवग्गं पडिविसज्जेइ, २ इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—बारस वासाइं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जंति, तंजहा—दिव्वा वा माणुस्सा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे सम्मं सहिस्सामि खमिस्सामि अहिआसइस्सामि, तओ णं स० भ० महावीरे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता वोसिट्ठचत्तदेहे दिवसे मुहुत्तसेसे कुम्मारगामं समणुपत्ते, तओ णं स० भ० म० वोसिट्ठचत्तदेहे अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं एवं संजमेणं पग्गहेणं संवरेणं तवेणं बंभचेरवासेणं खंतीए मुत्तीए समिईए गुत्तीए तुट्ठीएठाणेणं कमेणं सुचरियफलनिव्वाणमुत्तिमग्गेण अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, एवं वा

विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जंति—दिव्वा वा माणुस्सा वा तिरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे अणाउले अव्वहिए अदीणमाणसे तिविहमणवयणकायगुत्ते सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहिआसेइ, तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स बारस वासा वीइक्कंता तेरसमस्स य वासस्स परियाए वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दुच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे तस्स णं वेसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगोवगएणं पाईणगामिणीए छायाए वियत्ताए पोरीसीए जंभियगामस्स नगरस्स बहिया नईए उज्जुवालियाए उत्तरकूले सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि उड्ढंजाणूअहोसिरस्स झाणकोट्ठोवगयस्स वेयावत्तस्स चेइयस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे सालरुक्खस्स अदूरसामंते उक्कुडुयस्स गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं सुक्कज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स निव्वाणे कसिणे पडिपुन्ने अव्वाहए निरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरनाण-दंसणे समुप्पन्ने, से भगवं अरहं जिणे केवली सव्वन्नू सव्वभावदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स पज्जाए जाणइ, तं-आगाइं गइं ठिइं चयणं उववायं भुत्तं पीयं कडं पडिसेवियं आविकम्मं रहोकम्मं लवियं कहियं मणोमाणसियं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावाइं जाणमाणे पासमाणे एवं च णं विहरइ, जण्णं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स निव्वाणे कसिणे जाव समुप्पन्ने तण्णं दिवसं भवणवइवाणमंतरजोइसियविमाणवासिदेवेहि य देवीहि य उवयंतेहिं जाव उप्पिंजलग-भूए यावि हुत्था; तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पन्नवरनाणदंसणधरे अप्पाणं च लोगं च अभिसमिक्ख पुव्वं देवाणं धम्ममाइक्खइ, तओ पच्छा मणुस्साणं, तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पन्ननाणदंसणधरे गोयमाईणं समणाणं पंच महव्व-

याइं सभावणाइं छज्जीवनिकाय आतिक्खति भासाइ परूवेइ, तं—पुढवीकाए जाव तसकाए, पढमं भंते ! महव्वयं पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं से सहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेव सयं पाणाइवायं करिज्जा ३ जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणसा वयसा कायसा तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि, तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति, तत्थिमा पढमा भावणा—

ते काले ते समये जगत्ख्यात, ज्ञात (सिद्धार्थ) पुत्र, ज्ञातवंशोत्पन्न, विशिष्ट देहधारी, (त्रीशला) पुत्र, कंदर्पजेता, गृहवासथी उदास एवा श्रमण भगवान् महावीरे त्रीश वर्ष घरवासमां वसी, मावाप कालगत थइ देवलोक पहोंचतां पोतानी प्रतिज्ञा समाप्त थइ जाणी सोनुं, रुपुं, सेनावाहन, धनधान्य; कनकरत्न, तथा दरेक कीमती द्रव्य छोडी (दानार्थे) अर्पण करी, दान दइ, शीयाळाना पेला मासमां पेले पक्षे मागसर वदि १०ना दिने उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रना योगे दीक्षा लेवानो अभिप्राय कर्यो.

ते पछी भगवाननो निष्क्रमणाभिप्राय जाणीने चारे निकायना देवो पोतपोताना रूप, वेष तथा चिन्हो धारण करी सघळी रुद्धि, द्युति, तथा बळ साथे पोतपोताना विमानोपर चडी बादर पुद्गलो पलटावी सूक्ष्म पुद्गलोमां परणमावी उंचे उपडी अत्यंत शीघ्रता अने चपळतावाळी दिव्य देवगतिथी नीचे उतरता तिर्यक्लोकमां असंख्याता द्वीप समुद्र उल्लंघीने ज्यां जंबूद्वीप छे, त्यां आवी क्षत्रियकुंड नगरना इशान कोणमां उतावळा आवी पहोंच्या.

त्यारवाद शक्र नामे देवना इंद्रे धीमे धीमे विमानने त्यां थापी, धीमे धीमे तेमांथी उतरी, एकांते जइ मोहोटो वैक्रिय समुद्घात करी एक महान् मणि—सुवर्ण तथा रत्नजडित, शुभ मनोहर रूपवाळुं देवच्छंदक (ओरडो) विकुर्व्युं (बनाव्युं) ते

आयारस्स भगवओ चउत्थ–चूलाइ एस निज्जुत्ती । पंचमचूलनिसीहं तस्स य उवरिं भणीहामि ॥ ३४४ ॥
सत्तहिं छहिं चउचउहि य पंचहि अट्ठट्ठ चउहि नायव्वा । उद्देसएहिं पढमे सुयखंधे नव य अज्झयणा । ३४५ ॥
इक्कारस तिति दोदो दोदो उद्देसएहिं नायव्वा । सत्तय अट्ठयनवमा इक्कसरा हुंति अज्झयणा ॥ ३४६ ॥
तथा महापरिज्ञा नामनुं अध्ययन विच्छेद जवाथी तेनी निर्युक्तिनुं विवरण टीकाकारे न करवाथी नीचे मुकी छे—

पाहण्णे महसद्दो परिमाणे चेव होइ नायव्वो । पाहण्णे परिमाणे य छव्विहो होइ निक्खेवो ॥ १ ॥
दव्वे खित्ते काले भावंमि य होती या पहाणा उ । तेसि महासद्दो खलु पाहण्णेणं तु निप्फन्नो ॥ २ ॥
दव्वे खेत्ते काले भावंमि य जे भवे महंता उ । तेसु महासद्दो खलु पमाणओ होंति निप्फन्नो ॥ ३ ॥
दव्वे खेत्ते काले भावपरिण्णा य होइ बोद्धव्वा । जाणणओवक्खणओ य दुविहा पुणेक्केका ॥ ४ ॥
भावपरिण्णा दुविहा मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य । मूलगुणे पंचविहदुहाविहा पुण उत्तरगुणेसु ॥ ५ ॥
पाहण्णेण उ पगयं परिण्णाएय तहय दुविहाए । परिण्णाणेसु पहाणे महापरिण्णा तओ होइ ॥ ६ ॥
देवीणं मणुईणं तिरिक्खजोणीगयाण इत्थीणं । तिविहेण परिच्चाओ महापरिण्णाए निज्जुत्ती ॥ ७ ॥

आचाराङ्गसूत्र समाप्त थयुं.

इति श्रीआचारांगसूत्रं समाप्तम्

श्रीमज्जैनसिध्धान्तवाचनाप्रकाशनकारिका

श्रीमती आगमोदयसमितिः

स्थापनाः—श्रीमल्लीतीर्थे वीर सं० २४४१ माघ शुक्लदशम्याम् ।



मूल्य ७०००

सं. १९८२

प्राप्तिस्थानः—

मास्तर विजयचंद मोहनलाल.

ठे० दे० ला० धर्मशाळा, गोपीपुरा—सुरत.

आगमोदय समितिना ग्रंथो.

नदीसूत्र	२–४–०
अनुयोगद्वार	२–८–०
स्थानांग उत्तरार्ध	४–०–०
भगवतिसूत्र तृतीयभाग.....	३–४–०
विचारसार प्रकरण .	०–८–०
निरयावली सूत्र .	०-१२-०
विशेपावश्यक गाथा, विषयाकारादि क्रम	०–५–०
गच्छाचार पयन्नो ..	०–६–०
धर्मबिंदु प्रकरण	०-१२-०
विशेषावश्यक भाष्य मूल तथा टिकानु गुजराती भाषान्तर भा. १ लो.	२–०–०
रायपसेणी....	१–८–०
जैन फीलोसोफी...	१–०–०
~~योग ,,~~	~~०-१४-०~~
कर्म ,,	०-१२-०

शेठ दे० ला० जै० पु० फडना ग्रंथो.

आनंद काव्य म० मौ०	४ थु	०-१२-०
,, ,,	५ मुं	०-१०-०
,, ,,	६ ठुं	०-१२-०
श्राद्ध प्रतिक्रमण सूत्र		२–०–०
सेन प्रश्न (प्रश्नोत्तर रत्नाकर)		१–०–०
आवश्यक टीप्पण		१-१२-०
जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति सटीक उत्तरार्ध		२–०–०
श्रीपालचरित्र संस्कृत		०-१४-०
सूक्त मुक्तावली		२–०–०
प्रवचन सारोद्धार सटीक पूर्वार्ध		३–०–०
तंदुल वैयालीय पयन्नो सटीक		१–८–०
विंशति स्थानक चरित पद्यबद्ध		१–०–०
कल्पसूत्र सुबोधिका		२–०–०
सुबोधा समाचारी		०–८–०
~~श्रीपाल चरित्र प्राकृत सावचूर्णिक~~		१–४–०